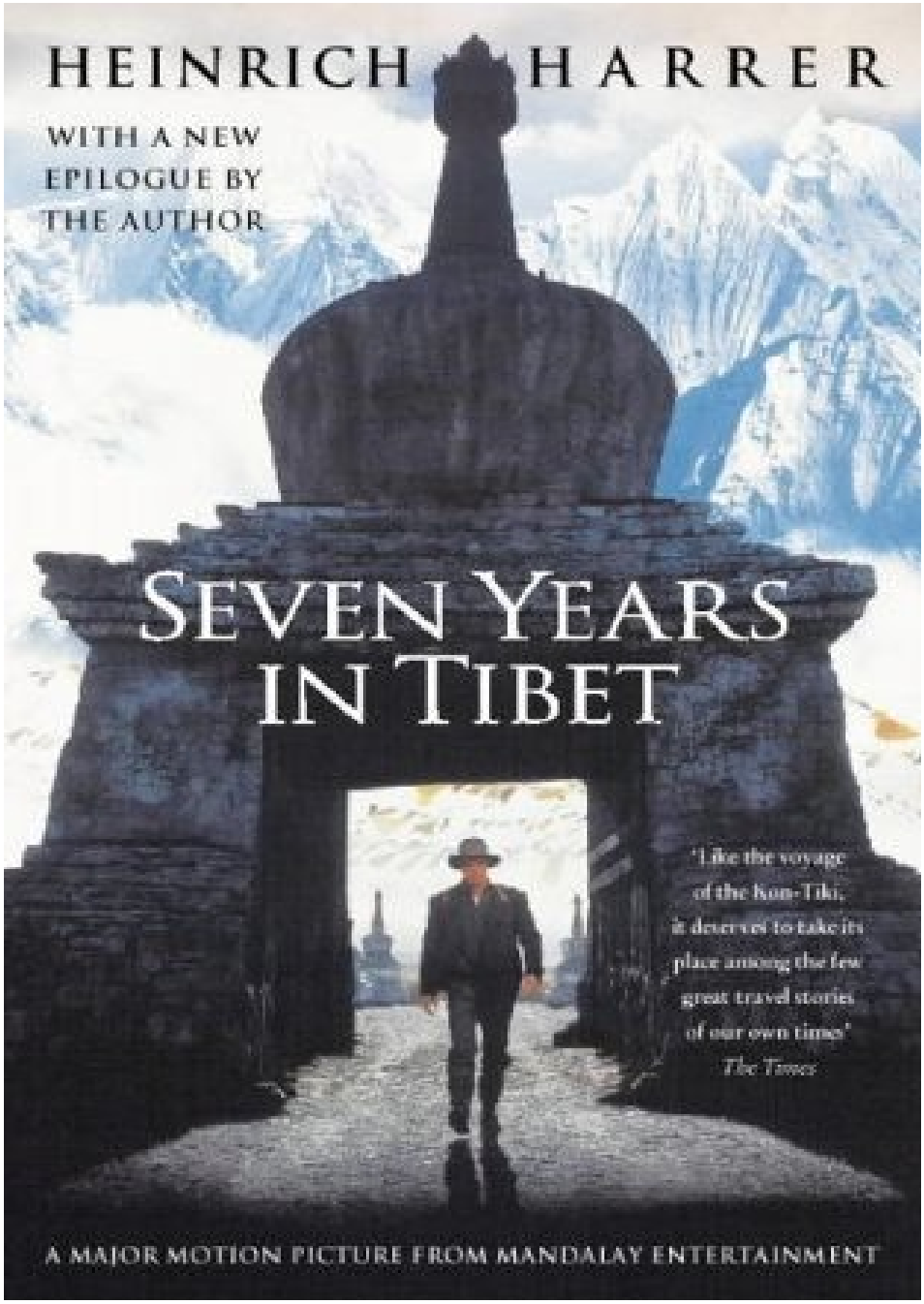

तिब्बत में सात वर्ष

अनुवादक

डॉ. वेद प्रकाश गुप्ता

HEINRICH HARRER

Translated from the German by
RICHARD GRAVES

With an Introduction by
PETER FLEMING

Most Tarcher/Putnam books are available at special quantity discounts for bulk purchases for sales promotions, premiums, fund-raising, and educational needs. Special books or book excerpts also can be created to fit specific needs. For details, write Putnam Special Markets, 375 Hudson Street, New York, NY 10014.

Jeremy P. Tarcher/Putnam
a member of
Penguin Putnam Inc.
375 Hudson Street
New York, NY 10014
www.penguinputnam.com

Copyright ©1953 by Heinrich Harrer
Copyright renewed 1981 by Heinrich Harrer
Epilogue copyright ©1996 by Heinrich Harrer
First Tarcher/Putnam Hardcover Edition 1997
All rights reserved. This book, or parts thereof, may not be reproduced in any form without permission.
Published simultaneously in Canada

Library of Congress Cataloging-in-Publication Data
Harrer, Heinrich, date.
Seven years in Tibet.
Translation of: Sieben Jahre in Tibet.
1. Tibet (China)—Description and travel. 2. Harrer, Heinrich, date. I. Title.
DS785.H273 1982 951'.504 81-23244
ISBN 0-87477-888-3 AACR2

Book design by Deborah Kerner

Printed in the United States of America
25 26 27 28 29 30 This book is printed on acid-free paper. ©

THE DALAI LAMA
THEKCHEN CHOELINS McLEOD GANJ 176219 KANGRA DISTRICT HIMACHAL PRADESH

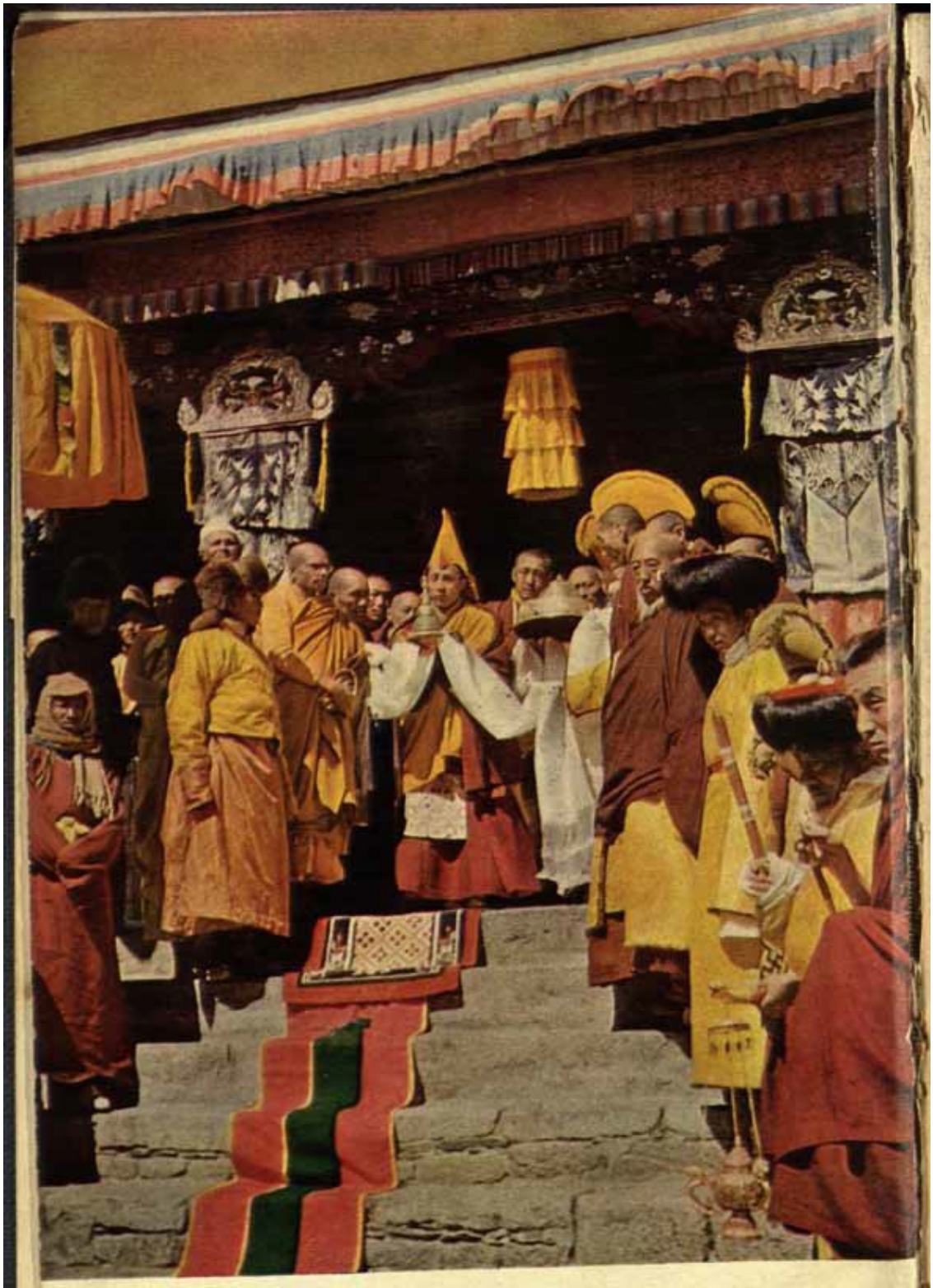

The Dalai Lama receives the sacred relic from the Indian delegation.

विषय सूची

	अनुवादक का निवेदन	ii
	प्राक्कथन	vi
	परिचय	vii
	प्रस्तावना	ix
1	बन्दी शिविर	1
2	पलायन	11
3	तिब्बत में प्रवेश	20
4	प्रसन्नता का गॉव	31
5	अभियान पर	42
6	सबसे कठिन यात्रा	52
7	वर्जित नगर	65
8	शान्त जल	74
9	शरण प्रदत्त	86
10	ल्हासा का जीवन–प्रथम	94
11	ल्हासा का जीवन–द्वितीय	105
12	विद्रोह का प्रयास	116
13	शासन में नियुक्ति	121
14	कष्ट के लिये तैयार तिब्बत	133
15	दलाईलामा का शिक्षक	143
16	आक्रमित तिब्बत	152
17	मेरा तिब्बत छोड़ना	160
18	उपसंहार : 1996	168

अनुवादक का निवेदन

प्रसिद्ध ऑस्ट्रिन पर्वतारोही (Austrian mountaineer) और अन्वेषक, प्रोफेसर हाइनरिक हेरर (6 जुलाई 1912–7 जनवरी 2006) की, मूलतः जर्मन भाषा में लिखी गयी सबसे पहली कृति, ''**Sieben Jahre in Tibet**'', जो सर्वप्रथम 1956 में प्रकाशित हुई, के अंग्रेजी अनुवाद, (Seven Years in Tibet)' से किया गया हिन्दी अनुवाद, ''तिब्बत में सात वर्ष'' आपके समक्ष प्रस्तुत है। इस पुस्तक ''(Seven Years in Tibet),'' के अनेक संस्मरण हो चुके हैं और यह विश्व की 53 भाषाओं में अनुवादित की जा चुकी है और उसकी चालीस लाख से अधिक प्रतियॉ बिक चुकीं हैं। हेरर ने 23 पुस्तकें लिखीं परन्तु उन्हें, उनकी पुस्तक 'तिब्बत में सात वर्ष' (1952) और 'द व्हाइट स्पाइडर (The White Spider) (1959)' के लेखक के रूप में सर्वाधिक ख्याति मिली। इस पुस्तक पर आधारित इसी नाम से 1997 में एक चलचित्र भी बनाया जा चुका है। हैरर ने चालीस से अधिक चलचित्रों का श्रेय प्राप्त किया, जिसमें ट्रायस्टार (Tristar) की फीचर फिल्म 'तिब्बत में सात वर्ष (Seven Years in Tibet)' शामिल है। वे एक प्रख्यात खिलाड़ी, नायक, भूगोलविद् और लेखक थे।

हेनरिक हेरर (Heinrich Harrer) का जन्म, ऑस्ट्रिया (Austria) के ह्यूटेनबर्ग (Hüttenberg) नामक स्थान में, 6 जुलाई 1912 को हुआ था। उनके पिता एक डाक कर्मचारी थे। हेरर ने 1933 से 1938 के बीच फ्रांसेन यूनिवर्सिटी (Franzen University) में भूगोल और खेलों का अध्ययन किया था। पर्वतारोहण, हेरर का वास्तविक शौक था और ये उस प्रसिद्ध चार सदस्यीय पर्वतारोही दल के सदस्यों में से एक थे, जिसने स्विट्रलैंड में आइगर (Eiger) पहाड़ी पर उत्तर दिशा की ओर से कठिन चढ़ाई की थी। वह स्विट्रलैंड के आल्पस (Alps) पहाड़ियों की आइगर चोटी पर उत्तरी दिशा से चढ़ने वाले प्रथम व्यक्ति थे। परंतु इनको विश्व में ख्याति, 'तिब्बत में सात वर्ष' के प्रकाशन के बाद ही प्राप्त हुई। वह अपने जीवनपर्यन्त तिब्बती जनता के हितों के समर्थन में लगे रहे। ये 1938 में नाजी पार्टी के सदस्य बने। इन्होंने अमेजन (Amazon), हिमालय और मध्य अफ्रीका में ''चंद्रमा के पर्वत (mountains of the moon)'' क्षेत्र में अनेक अभियानों का नेतृत्व किया।

हेरर का प्रमुख कार्यकाल, छै दशकों से अधिक और कार्यक्षेत्र, छै महाद्वीपों का है। उन्होंने विश्व प्रसिद्ध अन्वेषण और पर्वतरोहण किये और उन्होंने आइगर पर उत्तरी दिशा से चढ़ाई करके ख्याति पायी। उन्हें अपने अनेक अभियानों के लिए, आइगर का स्वर्ण पदक (Eiger Gold medal), हंबोल्ट का स्वर्ण पदक (Humbolt Gold medal), एक्सप्लोरर क्लब का स्वर्ण पदक (Explorer club Gold medal) जैसे विभिन्न सम्मान प्राप्त हुए। हैरर को प्राप्त पदकों की संख्या छै सौ से अधिक तक पहुॅचती है।

हेरर ने अपने अभियानों के संबंध में तेईस पुस्तकें लिखी हैं, जिनमें से कुछ में ऐसे फोटो सम्मिलित हैं, जो पारंपरिक सभ्यता के सबसे अच्छे अभिलेख माने जाते हैं। हेरर एक सर्वोंकृष्ट गोल्फ (Golf) खिलाड़ी थे, जिसने 1958 और 1970 में ऑस्ट्रिया की राष्ट्रीय चैंपियनशिप जीती। हैरर स्कीइंग (skiing) के ओलंपिक खिलाड़ी थे। हैरर को 1936 में आल्पाइन स्कींइग दल (Alpine skiing club) के लिए नामित किया गया। आल्पाइन के स्कीइंग दल ने इसका वहिष्कार किया, जिसके परिणामस्वरूप उन्हें स्कीइंग के व्यवसायिक प्रशिक्षक (professional trainer) के पद से वंचित कर दिया गया। फलस्वरूप हेरर इसमें भाग नहीं ले सके। 1937 में हेरर ने डाउनहिल इवेंट (downhill event) में विजयी हो कर, वर्ल्ड स्टूडेंट चैंपियनशिप (worl student championship) जीती। उसने मार्च 1938 में नाजी पार्टी को सार्जेंट के रूप में ज्वाइन किया। बाद में हेरर ने अपने नाजी पार्टी में शामिल होने को एक गलती बताया था।

हेरर ने 1939 में, चार सदस्यीय पर्वतारोही दल, जिसका नेतृत्व पीटर ऑफस्नाइटर (Peter Aufschnaiter) ने किया, के सदस्य के रूप में, इस उद्देश्य के साथ कि चोटी पर पहुॅचने का एक आसान सा रास्ता खोजा जाए, नागा पर्वत (Naga Parwat) पर चढ़ाई की थी। ये निष्कर्ष निकालते हुए कि ऐसा किया जाना संभव था, अगस्त में, चारों पर्वतारोही करॉची में रुके परंतु जहाज, जिससे उन्होंने फारस पहुॅचने का प्रयास किया, के आने में देर होने के कारण, उन्हें उससे कुछ सौ किलोमीटर दूर, करॉची के उत्तर–पश्चिम में ब्रिटेन के सैनिकों की सुरक्षा में रखा गया और सुरक्षा प्रदान करते हुए वापस करॉची लाया गया, जहॉ आउफस्नाइटर का दल ठहरा हुआ था। दो दिन बाद विश्वयुद्ध की घोषणा हो गई और तब 3 सितम्बर 1939 को, सभी को बंबई के पास

अहमदनगर के कॉटेदार तारों के भीतर, शिविर में, स्थानांनतरित कर दिया गया। तब उन्होंने पुर्तगाली राज्य, गोवा (अब भारत का एक राज्य) में भागने का विचार किया परंतु तभी उन्हें, वर्षों तक रोके रखने के लिए, दूसरे विदेशी शत्रुओं के साथ, देहरादून को स्थानंतरित कर दिया गया।

उन्हें तिब्बत अधिक चमत्कारी लगा। उनका अपना अंतिम लक्ष्य बर्मा, (वर्तमान म्यामार) या चीन में जापानी युद्ध क्षेत्र था। आउफस्नाइटर और हेरर, शिविर से भागे और अंतिम रूप से सफलता पूर्वक भागने से पहले कई बार पकड़े गये।

29 अप्रैल 1944 को हेरर और छै दूसरे लोग, जिनमें रॉल्फ मेगनर (Rolf Magner) और हॉइन्स बॉन हावे (Heins Van Have) (ब्रिटिश अधिकारी के छद्मवेश में, पीटर आउफस्नाइटर (Peter Aufschnaiter), साल्जबर्गर ब्रुनो ट्राइपेल (Salzburger Bruno Teipel) (आका ट्राइपल, aka Teipel) और बर्लिन के हॉन्स कॉप (Hans Kopp) तथा सैटलर (Sattler) (देशी भारतीय कामगारों के छद्मवेश में) शिविर से भागे। मेगनर और वॉन हावे ने कलकत्ता की रेलगाड़ी पकड़ी और वहॉ बर्मा (अब म्यांमार) में जापानी सेना तक पहुॅचने का अपना रास्ता लिया।

दूसरे लोग सीमा के समीप की तरफ चले। दस मई को सेटलर ने साथ छोड़ दिया। बाकी बचे चार, 17 मई 1944 को त्सांग चोक ला दर्रे (Tsang chok la) (19350 फुट) को पार करते हुए तिब्बत में प्रविष्ट हुए और उसके बाद 17 जून को दो समूहों में बॅट गये। हेरर और कॉप, तथा आउफस्नाइटर और ट्रिपेल। ट्रिपेल थक गया था, उसने एक घोड़ा लिया और सवार हो कर उतराई की तरफ चल दिया। अनेक महीनों बाद, जबकि बचे हुए तीनों के पास, अभी भी, तिब्बत का वीजा नहीं था, कॉप ने साथ छोड़ दिया और वह नेपाल की तरफ चला गया, जहॉ उसे कुछ दिनों के बाद ही ब्रिटिश सेना के हवाले कर दिया गया।

पवित्र कैलाश पर्वत से हो कर गुजरते हुए, दक्षिण–पश्चिम क्यिरोंग जिले में और उत्तरी चांगतांग पठार पर पश्चिमी तिब्बत को पार करते हुए, आउफस्नाइटर और हेरर, 15 जनवरी 1946 को, तिब्बत की राजधानी ल्हासा में पहुॅचे। 1948 में हेरर को तिब्बती सरकार में, विदेशी खबरों का अनुवाद करने और न्यायालीन फोटोग्राफी के लिए वैतनिक अधिकारी नियुक्त किया गया। हेरर, पहली बार, चौदहवें दलाईलामा को तब मिले, जब उन्हें पोटाला पैलेस बुलाया गया और बर्फ पर स्केंटिग, जो हेरर ने तिब्बत में प्रारंभ की थी, की एक फिल्म बनाने के लिए कहा गया। हेरर ने एक सिनेमा बनाया, जिसका प्रोजेक्टर जीप के इंजन द्वारा चलाया जाता था। हेरर को शीघ्र ही दलाईलामा को अंग्रेजी, भूगोल और कुछ विज्ञान पढ़ाने के लिए, निजी शिक्षक नियुक्त किया गया। हेरर आश्चर्य करते थे कि उनका शिष्य (दलाईलामा) पश्चिमी विश्व के ज्ञान को कितनी तेजी के साथ पचा लेता था। दलाईलामा और हेरर के बीच में प्रगाढ़ मित्रता विकसित हुई जो जीवनपर्यंत चली।

हेरर ने काफी बड़ी संख्या में फोटोग्राफ लिए। तिब्बत में ये फोटाग्राफ, 1948 –51 की अवधि में लिए गए।

1952 में हेरर वापस ऑस्ट्रिया लौटे, जहॉ उन्होंने अपने अनुभवों को ''तिब्बत में सात वर्ष'' (1952) तथा ''गुमा हुआ ल्हासा (The Lost Lhasa)" (1953) शीर्षक से दो पुस्तकें लिखी। मूल पुस्तकें जर्मन भाषा में लिखीं गईं थीं। 'तिब्बत में सात वर्ष,' तिरेपन भाषाओं में अनुवादित की गई और 1954 में अकेले अमेरिका में ही इसकी तीस लाख प्रतियॉ बिकी। इस पुस्तक के आधार पर इसी शीर्षक से दो चलचित्र बने। पहला 1956 में और दूसरा 1997 में जिसमें अभिनेता ब्रेड पिट (Brad Pitt) ने हेरर की भूमिका निभाई। अब तक तिब्बत पर चीन का आधिपत्य हो चुका था, अतः चीन ने अपनी भूमि पर इसका फिल्मांकन करने की इजाजत नहीं दी और फिल्म में पहाड़ों के सभी दृश्य, यूरोप के पहाड़ों में फिल्माने पड़े। अपनी पुस्तक ''तिब्बत में सात वर्ष'' में हेरर ने लिखा;

मैं कहीं भी रहूॅ, मैं तिब्बत को हमेशा याद करता रहूॅगा। मैं अक्सर सोचता हूॅ, मैं अभी भी, जंगली गधों की चीखने और पक्षियों और उनके पंख फड़फड़ाने की आवाजें, जब वे ल्हासा में साफ ठंडी चॉदनी में उड़ते है, सुन सकता हूॅ। मेरी हार्दिक अभिलाषा हैं कि मेरी कहानी, उस जनता के लिए, जिसकी इच्छा शांति और स्वतंत्रता में रहने की है, के लिए कुछ समझ पैदा कर सके, जो इस निर्मोही विश्व से, इतनी कम सहानुभूति अर्जित कर सकी है।

तिब्बत से लौटने के बाद, हेरर ने अलास्का (Alaska), एंडिस (Andis) और मध्य अफ्रीका (central Africa) में चंद्र पर्वत के लिए, मानव जाति सम्बन्धी (ethenographic) अनेक अध्ययनों तथा पर्वतारोही अभियानों में भाग लिया। उन्होंने बेल्जियम (Belgium) के पूर्व राजा लियोपोर्ड थर्ड (Leopord III) के साथ, अमेजन नदी के आसपास के क्षेत्र को भी खोजा। हेरर ने 1954 में जर्मनी मूल के अमेरिकी, फ्रेड बैके (Fred Beckey) के साथ,

अलास्का के देबोराह पर्वत (Mount Deborah) (12339 फुट), और हंटर पर्वत (Hunter) (14573 फुट), के ऊपर अपनी पहली चढ़ाई की। 1962 में वह उस चार सदस्यीय अभियान दल के नेता थे, जिसने इंडोनेशिया के पपुआ (Papua) में, ओसेनिया (Oceania) की सर्वोच्च चोटी, पंकाक जाया (Puncak Jaya) (कार्स तैंज पिरामिड) (16024 फुट) के ऊपर पहली चढ़ाई की। यह और नियोलिथिक पत्थर की खदानों (Neolithic Stone Axe Quaries) में उनके अग्रगामी अभियान, ''मैं पत्थर युग से आता हूँ (I come from the stone age)", या–ली–मे (Ya-Li-Me) में, उनके स्मृति भवन में लिखे गये हैं। 1996 में ओआरएफ और फिल्म निर्माता गैराल्ड लेहनर (Gerald Lehner) ने अमेरिकी आरकाइव (American Archive), 'या–ली–मे' की स्थापना की।

अपनी पुस्तक 'तिब्बत में सात वर्ष,' में, हेरर ने स्वेन हेडिन (Sven Hedin) (19 फरवरी 1865–26 नवम्बर 1952) की चर्चा की है। अतः स्वेन हेडिन के व्यक्तित्व और उनकी उपलब्धियों की चर्चा करना अप्रासंगिक नहीं होगा। हेरर को तिब्बत यात्रा की प्रेरणा, स्वेन हेडिन से मिली थी, जिनका जन्म स्टॉकहोम (Stolkhome), स्वीडन (Sweden) में हुआ था। उनके पिता का नाम अब्राहम लुडविक हेडिन था और वह एक नगर योजनाकार थे। स्वेन हेडिन, जिसे मध्य एशिया के अपने अभियानों के लिए जाना जाता है, एक अन्वेषक, भूगोलविद और यात्रावृतांत लिखने वाले लेखक भी थे। उन्होंने 1886 से 1888 के बीच, भूगर्भशास्त्री वाल्डेमर ब्रोगर (Waldemer Brogger) से भूगोल, खनन, प्राणीविज्ञान और लैटिन का अध्ययन किया। दिसम्बर 1888 में वह दर्शनशास्त्री बने। उन्होंने 1892 में, 28 पेज के शोध प्रबंध द्वारा, जिसका शीर्षक था, ''डामा–वैंड के व्यक्तिगत प्रेक्षण (Personal observations of Dama-Vand),'' डॉक्टर ऑफ फिलॉसफी की उपाधि प्राप्त की। स्वेन हेडिन को तीन पुरुस्कार, फाउंडर्स गोल्ड मेडल (Founders Gold Medal) 1898, लिविंग स्टोन मेडल (Living Stone Gold Medal) 1902, विक्टोरिया मेडल (Victoria Gold Medal) 1903, प्राप्त हुए थे।

स्वेन हेडिन ने, अपने अभियानों की श्रंखला में, न केवल ब्रह्मपुत्र, सिंधु, और सतलज नदियों के स्रोतों का पता लगाया, वल्कि प्राचीन ध्वस्त शहरों के कब्रिस्तानों के अवशेषों और तारित बेसिन (Tarit Basin) के मरुस्थलों में चीन की बड़ी दीवार (China Great Wall) के मानचित्र भी बनाये। अपनी जवानी से ही यात्राओं में रुचि रखने वाले हेडिन, जब उन्होंने आर्कटिक क्षेत्र के एक तरुण अन्वेषक, एडोल्फ एरिक नार्डिनस्कियोल्ड (Adolf Erik Nordenskiöld) का, उत्तरी महासागर के रास्ते से, अपने प्रथम खोजी अभियान से लौटने के बाद, होते हुए भव्य स्वागत को देखकर, अत्यधिक प्रभावित हुए थे। उन्होंने स्वयं खोजी बनने का संकल्प किया और एक जर्मन भूगोलविद् और चीन के संबंध में एक विशेषज्ञ, फर्डिनान्ड फ्राइहेर फॉन रिचतोफ्लेन (Ferdinand Freiherr von Richthoflen) के अधीन प्रशिक्षण प्राप्त किया। उन्नीसवीं शताब्दी के उतरार्द्ध में, उन्होंने मध्य एशिया के लिए अनेक अभियान किए, और मध्य एशिया के राष्ट्रों के संबंध में अपने यात्रावृतांतों के द्वारा और उनको वैज्ञानिक ढंग से लिपिबद्ध करने के द्वारा, पश्चिमी ज्ञान को बहुत बढ़ा दिया। उन्होंने तुर्किस्तान और तिब्बत के विषय विशेषज्ञ के रूप में मान्यता पाई और सर फ्रासिंस यंग हसबैंड (Sir Fransis Younghusband) और सर ऑरल स्टाइन (Sir Aural Stein) के साथ ब्रिटिश रूसी विवाद में मध्य एशिया के प्रभाव के कारण, हेडिन की प्रमुख भूमिका रही। उन्होंने विवाह नहीं किया और न उसके बच्चे हुए। इसलिए मृत्यु के समय पर, उन्होंने अपनी सारी पुस्तकों और व्यक्तिगत चीजों के सभी अधिकार, रॉयल स्वीडश अकेडमी (Royal Swedish Academy) को दे दिये थे। 1900 और 1901 के बीच, उन्होंने पूरे विश्व से अलगथलग और विदेशियों के लिये पूर्णतः वर्जित, तिब्बत के ल्हासा शहर में प्रवेश का प्रयास किया था। यद्यपि वह असफल रहे, तब वह लेह की तरफ चले गये और उन्होंने लाहौर, देहली, आगरा, लखनऊ, बनारस और कलकत्ता की यात्रायें की। इस अभियान में 1149 नक्शे बनाए गये। 1905 से 1908 के बीच, उन्होंने हिमालय पर्वत श्रंखला क्षेत्र के अगले अभियान में, मध्य फारस के मरुस्थल बेसिनों, तथा तिब्बत के पश्चिमी उच्चदेशीय क्षेत्रों (western High Lands) का पता लगाया। वह पवित्र मानसरोवर झील को शामिल करते हुए, कैलाश पर्वत क्षेत्र पर पहुँचने वाले पहले यूरोपियन यात्री थे। हेडिन के यात्रा वृतांतों ने, हेरर में हिमालय के तिब्बती क्षेत्र में विशेष अभिरुचि जाग्रत कर दी थी, जिसके कारण वह देहरादून के युद्धबन्दी शिविर से भागने को विवश हुये।

हेनरिक हेरर के साहसी और उद्यमी जीवन को ह्यूटेनबर्ग, ऑस्ट्रिया के 'हैरर संग्रहालय (Herrar Museum)' में प्रस्तुत किया गया है, जिसका औपचारिक उद्घाटन 1992 में दलाईलामा के द्वारा किया गया।

हेरर का निधन 7 जनवरी 2006 को फ्रीसाक नामक स्थान पर ऑस्ट्रिया में हुआ। दलाईलामा ने हेरर की विधवा पत्नी, केरेना को भेजते हुए, अपने शोक संदेश में पवित्रतम ने अपना गहरा दुख व्यक्त किया और

अंतर्राष्ट्रीय मंच पर, तिब्बती जनता की ओर से वकालत करने के लिए, इन शब्दों में अपना आभार व्यक्त किया :

मुझे अपने मित्र हेनरिक हेरर के निधन का समाचार सुनकर अत्यधिक दुख हुआ मैं आपको और आपके परिवार के सदस्यों को गहरी शोक संवेदना प्रकट करता हूँ।

मैं इस अवसर का उपयोग, अपने अत्यधिक आभार को व्यक्त करने के लिए करना चाहता हूँ और अपनी सुविख्यात पुस्तक, 'तिब्बत में सात वर्ष' और अनेक व्याख्यानों, जो उन्होंने अपने जीवनपर्यन्त दिये हैं, के माध्यम से तिब्बत तथा तिब्बती जनता के विषय में इतनी जागरूकता पैदा करने के लिए, उनकी सराहना करता हूँ। तिब्बती जनता के लिए उनका प्यार और आदर, उनके लेखन और व्याख्यानों में स्पष्टरूप से सुप्रकट है।

हम अनुभव करते है कि हमने पश्चिम के एक वफादार मित्र को खो दिया है। जिसे तिब्बत में, इससे पहले कि तिब्बत ने अपनी स्वतंत्रता खो दी, सात लंबे वर्षों के लिए, जीवन का अनुभव करने का अद्वितीय अवसर प्राप्त हुआ था। हम तिब्बती लोग हमेशा हेनरिक हेरर को याद करते रहेंगे और महानरूप से उनकी कमी अनुभव करेंगे।

मेरी प्रार्थनायें आपके और आपके परिवार के साथ हैं।

1980 के दशक के प्रारंभ में, हेरर ने फिर से तिब्बत की यात्रा की और ''तिब्बत में सात वर्ष'' का अगला क्रम (sequel) लिखा। जिसका शीर्षक था, ''तिब्बत में वापिसी (Return to Tibet)''। उन्होंने बाद में, अपनी आत्मकथा भी लिखी, जो 2007 में ''तिब्बत में सात वर्ष के परे (Beyod Seven Years in Tibet)'' के नाम से अंग्रेजी में प्रकाशित हुई। उन्होंने लगभग 40 डॉक्यूमेंट्री फिल्में बनाई। ह्यूटेनबर्ग, ऑस्ट्रिया में तिब्बत को समर्पित हेरर संग्रहालय बनाया। अक्टूबर 2002 में दलाईलामा ने हेरर को, तिब्बत की स्थिति को अंतराष्ट्रीय रंगमंच पर लाने के उनके प्रयासों के लिये, तिब्बत के अंतराष्ट्रीय अभियान, का ''सत्य का प्रकाश'' पुरुस्कार देकर सम्मानित किया। हैरर ने एक के बाद एक, तीन पत्नियों से विवाह किया। हेरर का निधन 7 जनवरी 2006 को फ्रीसाक ऑस्ट्रिया में 93 वर्ष की आयु मे हुआ।

प्रभुकृपा से मुझे महान हिमालय के भारतीय क्षेत्रों, बद्रीनाथ, गंगोत्री, हिमांचल, कुमायू, गढ़वाल, काश्मीर, लद्दाख एवं नेपाल क्षेत्रों में भ्रमण करने के मनमोहक सुअवसर प्राप्त हुए हैं। इस क्षेत्र के प्राकृतिक सौन्दर्य, और उसके निवासियों के सरल सहज स्वभाव ने, मुझे सदैव ही मोहित किया है और मैं बारबार हिमालय क्षेत्र में जाने की इच्छा रखता हूँ। हिमालयीन क्षेत्र में अपनी बढ़ती हुई रुचि के कारण, इस पुस्तक का अनुवाद करने का एक प्रयास मेरे द्वारा किया गया है। यद्यपि मैंने, भाषा की सहजता, सुबोधता और उसके सतत प्रवाह को यथासम्भव बनाये रखने का भरसक प्रयास किया है तथापि सम्भव है कि मेरे अल्पभाषा ज्ञान के कारण, अनेक त्रुटियॉ हुई हों, मैं उन्हें विनम्रतापूर्वक स्वीकार करते हुए पाठकों से निवेदन करता हूँ कि वे त्रुटियों को मेंरी जानकारी में लाने का कष्ट अवश्य करें ताकि उन्हें यथाशीघ्र सुधारा जा सके।

इस पुस्तक को अनुवादित और लिपिबद्ध करने में, मुझे अपने शुभचिंतकों, मित्रों, सहयोगियों का अमूल्य सहयोग प्राप्त हुआ है, मैं उन सभी का हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ। विशेषरूप से, श्री प्रगल्भ शर्मा, श्री प्रदीप सेन, कुमारी रागिनी मिश्रा, श्रीमती प्रीति गोयल, जिनके सहयोग के बिना यह प्रयास मूर्तरूप नहीं ले सकता था, हृदय से आभारी हूँ, और आशा करता हूँ कि ईश्वर कृपा एवं प्रेरणा, निरन्तर बनी रहेगी और मुझे भविष्य में आपकी सेवा करने का सुयोग प्राप्त होता रहेगा।

चैत्र कृष्णा द्वितीया, भाई दूज, सम्वत् 2073,
तदनुसार 14 मार्च 2017

फोनः मोवाइल 09831–67361
स्थानीय (0751) 2433425

email: drguptavp@gmail.com

डॉक्टर वेद प्रकाश गुप्ता
इंदिरा कालोनी, नया बाजार,
लश्कर, ग्वालियर, (मध्यप्रदेश)

प्राक्कथन

प्रोफेसर हाइनरिक हेरर, पश्चिम के उन लोगों में से एक हैं, जो तिब्बत को नजदीकी से जानते हैं। उनकी पुस्तक उस समय में आई, जबकि तिब्बत के जीवन और संस्कृति के बारे में अत्यधिक गलतफहमियॉ थीं– और अधिकांश उपलब्ध पुस्तिकें, तब निश्चितरूप से, इन गलत प्रभावों को स्पष्ट करने में मदद नहीं करती थीं।

दुर्भाग्यशाली परिस्थितियों के अंतर्गत, तिब्बत में आने को मजबूर किये जाते हुए, उन्होंने हमारे लोगों के बीच रहने का चयन किया और उनके जीवन के सरल ढंग को साझा किया, इस प्रकार उन्होंने अनेक मित्र बनाए और उन्हें प्रेम के साथ सम्मान दिया जाता हैं। मुझे प्रसन्नता है कि ये पुस्तक, ''तिब्बत में सात वर्ष,'' जो 1959 से पहले के तिब्बत का, एक सत्य और सजीव चित्रण प्रदान करती है, तब पुर्नमुद्रित की जा रही है, जब तिब्बत में अभिरुचि का नवीनीकरण हो रहा है।

जनवरी 29, 1982

परिचय

आवरण मोटा था, और जैसे–जैसे वर्ष गुजरे, ये अधिक पतला नहीं हो रहा था। उन्नीसवीं शताब्दी की समाप्ति ने, यूरोप की ऑखों को एशिया की तरफ घूमते हुए पाया। प्रारंभ से ही, अफ्रीका की भौगोलिक चुनौतियॉ, आवश्यकरूप से मिल रही थीं, और उन दिनों में, दक्षिणी अफ्रीका को छोड़ कर, उस महाद्वीप की राजनैतिक समस्याऐं, केवल यूरोपीय उच्चन्यायालयों, और राजधानियों में सुलझती हुईं दिखाई दीं। इसके विपरीत, एशिया में, अतिसूक्ष्म और विदेशी बल, सक्रिय थे। मध्य एशिया में रूस की विजय ने, उसे, जो उसकी भौगोलिक महात्वाकांक्षाओं का, मात्र पहला चरण समझा जाता था, पूरा कर दिया था; लॉर्ड कर्जन (Lord Curzon) और किपलिंग (Kipling) के विचारों में, उसके जॉच करने के नपे–तुले प्रयासों ने, दलबन्दी से जुड़ते हुए, पहाड़ी अवरोधों को, जिसने उनकी सेनाओं को भारत से अलग कर दिया था, भय पैदा किया कि वह घटना विषम सिद्ध हुई।

लेकिन यहॉ एशिया, दुबारा से परिदृश्य में आया, क्योंकि जब यंगहस्बेन्ड (Younghusband) ने पहली बार और तब तक के इतिहास में अंतिम बार, अपने तोपखाने को समुद्रतल से सत्रह हजार फुट ऊपर सक्रिय किया–वह तिब्बतियों को हरा रहा था, और कम समर्थन के साथ, जापान अपने तरीके से, मंचूरिया में रूसियों को हरा रहा था और इससे केवल तीन साल पहले, बक्सर के विद्रोह में, अंतर्राष्ट्रीय अभियान ने, पीकिंग खेमे में प्रतिनिधिमंडल होने पर एक अवरोध खड़ा किया।

एशिया के संबंध में यूरोप की उत्सुकताओं को बढ़ाने के लिए, तिब्बत ने तब, अथवा तब से, जितना वह पहले कर चुका था, उसकी तुलना में, अधिक कुछ भी नहीं किया। (प्रयासों को) बढ़ाते हुए, उसने उन्हें उत्तेजित करना लगातार जारी रखा; सीमा, जहॉ तक उसने उनके साथ आदान–प्रदान किया, अहितकर थी। एक बार, चार तिब्बती लड़के (आगे आने वाले पृष्ठों में, आप उस प्रशंसनीय, तर्कसंगत प्रयोग, जो कि तिब्बतियों ने दुबारा नहीं किया, के एकमात्र जीवित व्यक्ति से, संक्षिप्तरूप से मिलेंगे), रग्बी (Rugby) में पढ़ने के लिए भेजे गए थे; और जब तक कि चीनी साम्यवादी फौजों ने 1950 में, देश को अपने कब्जे में नहीं किया, (दूसरी चीजों के साथ) अंग्रेजी भाषा को सीखते हुए, भद्रजनों के बच्चे अक्सर भारत के स्कूलों में जाते थे। यूरोप ने, प्रसन्नतापूर्वक, तिब्बतियों का स्वागत किया होता, जैसे कि, वह दूसरे अन्य एशियाई देशों के यात्रियों और विद्यार्थियों का करता था, परंतु जहॉ तक–मोटेतौर से कहने का सवाल है–यूरोप दूसरी चीजों की तरह, तिब्बत जाना चाहता था, तिब्बत ने, कभी यूरोप जाने की न्यूनतम अभिलाषा भी व्यक्त नहीं की।

उसने, किसी भी गैरतिब्बती के लिए, वास्तव में, यूरोपीय लोगों के लिए, तथापि, उसके कागजात कितने भी निष्कलंक क्यों न हों, तिब्बती भूमि पर कदम रखना, जितना संभव था, उससे भी और अधिक, मुश्किल बना दिया था। गोपनीयता या शायद विशेषता का घूॅघट, जो यंगहस्बेन्ड द्वारा उठाया गया था, तब और ललचाने वाले अन्दाज में, फिर से डाल दिया गया था–पिछले पचास वर्षो में, प्रभावीरूप से काफी कम लोगों के द्वारा भेदा गया है और इनमें से ये कहना सुरक्षित होगा, कि किसी एक ने भी, उल्लेखनीय स्थिति को प्राप्त नहीं किया, कि इस पुस्तक के लेखक ने, ल्हासा में अपने पॉचवें वर्ष के निवास के अंत की ओर, स्वयं को, एक नौजवान दलाईलामा के परिचारक (entourage) के रूप में स्थान पाते हुए पाया।

यूरोपीय यात्री, एशिया को, या कैसे भी, एशिया के घने जंगलों को, ऊपर से देखने का अभ्यस्त है। इससे मेरा कहने का आशय ये है कि, यद्यपि कई बार उसकी स्थिति संदिग्ध हो सकती है और उसके स्रोत क्षीण हो सकते हैं, तथापि, यूरोपियन, देशी लोगों की तुलना में, जिनके क्षेत्र में हो कर वह गुजरता है, सामान्यतः एक अच्छे व्यवहार वाला, अच्छी आर्थिक स्थिति वाला होता है। उसके पास वे चीजें होती हैं, जो उन लोगों के पास नहीं होतीं–धन और हथियार, साबुन और दवायें, तम्बू और कट्टी का ढक्कन खोलने वाले, औरअधिक, उसके पास, ग्रह के दूसरे हिस्से में एक सरकार (होती है), जो कि मुसीबत पड़ने पर उसको बाहर निकालने का प्रयास करती है। इसलिए विदेशी लोग, ऊॅचे क्षेत्रों में, विशेषाधिकार सम्पन्न यद्यपि बहुत अधिक विश्वसनीय नहीं, घोड़ों और जंगलों को देखने और वहॉ के बाशिंदाओं को ऊपर से देखने हेतु, चढ़ाई करने के लिये तैयार रहते हैं।

ये, श्रीमान् हेरर (Harrer) के साथ अन्यथा था। 1943 में जब उसने, अपने देहरादून के नजरबंदी शिविर में से भाग जाने का तीसरा और सफल प्रयास किया और तिब्बत की ओर मुॅह किया, वह एशिया को नीचे से देख

रहा था। उसने पैदल यात्रा की, अपने बहुत थोड़े सामानों को अपनी पीठ पर लादा, और खुले में जमीन पर सोया। वह, पदवी के किसी अधिकार के बिना, कोई कागजात नहीं, और बहुत सीमित ढंग से, एक भगोड़ा था। चांगतांग पठार के आरपार, उसके चक्करदार सर्दी भरे पथ और नीचे ल्हासा की तरफ, एक सुसज्जित अभियान के लिए, एक प्रशंसनीय कार्य होता; जैसा कि हेरर और उसके साथी, आउफ्स्नाइटर (Aufschnaiter) ने किया, यात्रा, आश्चर्यचकित कर देने वाली, जबरदस्ती वाली थी। जब वे ल्हासा में पहुँचे, वे चिथड़ों में थे और उनके पास पाई भी नहीं थी।

यद्यपि, उनके तिब्बत की राजधानी में, वहाँ उपस्थिति बने रहने को उचित ठहराने लायक, लेशमात्र औचित्य भी नहीं था। वे वहाँ अत्यंत दया के साथ मिले और विभिन्न प्रकार के धोखे, बहाने जो उन्होंने रास्ते पर पड़ने वाले अधिकारियों के साथ उपयोग में लाये, नाराजगी के बजाय, आनंद प्रदान करते हैं। उनके पास, उनको देश से निष्कासित किए जाने की आशा करने का प्रत्येक कारण था, और हैरर ने माना कि, यद्यपि युद्ध समाप्त नहीं हुआ था, कमजोर आधारों पर उनका निष्कासन, भारत में कैद के रूप में परिणामित होगा। अब तक, जहाँ वह था, यद्यपि देशी लहजे के साथ, जो ल्हासा के भद्र पुरुषों को भौचक्क कर देती थी, वह बहुत अच्छी धाराप्रवाह तिब्बती भाषा बोल लेता था और उसने रुकने की आज्ञा पाने के लिए, और सरकार के लिए लाभदायी कार्य करने के लिए, चिरौरी करना कभी नहीं छोड़ा।

मैं श्रीमान् हेरर से मिला नहीं हूँ, परंतु आगामी प्रश्नों से, वह समझदार, नीरस, साधारण स्वाद, और ठोस स्तर वाला, अत्यधिक बहादुर व्यक्ति, उभरकर आता है। ये स्पष्ट है कि, तिब्बतियों ने प्रारम्भ से ही उसे पसंद किया, और मेरा ख्याल है ऐसा होना चाहिए था, ये उसके चरित्र की समग्रता थी, जिसने अपने पाँच वर्षों के ल्हासा पड़ाव में, यद्यपि कभी औपचारिकरूप से अधिकृत करने के लिए नहीं, अपितु मौन सहमति के लिये अधिकारियों को मनाया। इस अवधि में–ऐसा लगता है, वह अपनी प्रगतिवादी दृष्टि के बजाय–अपने आत्मविश्वास की प्रेरणा के कारण, अपनी–फटेहाल और विदेशी खनाबदोश होने से लगाकर, भलीभाँति पारितोषित पदों, जैसे कि चौदह साल की आयु के, शक्तिशाली, युवा दलाईलामा का शिक्षक और विश्वस्त बनने तक, हमेशा ऊपर उठा। हेरर, जो निश्चितरूप से, अपने किसी भी पूर्ववर्ती विदेशी की तुलना में, (संभवतः श्रीमान् चार्ल्स बेल (Charles Bell) के अपवाद के साथ), उनके अधिक करीब था, का एक आकर्षक और सहानुभूतिपूर्ण लेखाजोखा प्रदान करता है। जब 1950 में, चीनी साम्यवादियों ने तिब्बत में अतिक्रमण किया, स्पष्टरूप से हेरर की, इस अकेले, योग्य, और स्नेहपूर्ण नौजवान से बिदाई के समय, दोनों को ही विछुड़ने का दुःख था।)

ये असंभावित है कि उनके विजेता, चालाकी और अंधविश्वास के, सहनशक्ति और कठोर प्रथाओं के, इतने उत्सुकतापूर्वक गूढ़ज्ञान और आनंद से जुड़े हुए तिब्बत के चरित्र अथवा लक्षणों को बदलने में सफल होंगे; परंतु तिब्बती समाज, जो पराधीन किया जा रहा है, का पुरातन घिसा–पिटा ढाँचा, जिसके ऊपर दलाईलामा ने, अपने एक के बाद एक अवतारों में, अध्यक्षता की, कमियों और अराजकतावाद से पूरी तरह भरा हुआ है और अपने परंपरावादी स्वरूप में, आदर्शवादी तनाव में, मुश्किल से ही जीवित रहेगा। ये उन अवसरों में से, जो श्रीमान् हेरर को मिलने चाहिए थे, और जिनका इतना प्रशंसनीय उपयोग उसे कर लेना चाहिए था, सर्वाधिक सौभाग्यशाली हो सकता है। उन लोगों के साथ अभिन्न संबंधों के अध्ययन का अवसर, जिनके साथ अर्द्धविकसित संबंधों को, जो पहले अवशेष के रूप में थे, भी जिसे अब पश्चिम ने मना भी कर दिया है, किसी व्यक्ति को प्रदान करता है। जो कुछ उसने किया और जो कुछ उसने देखा, उसकी कहानी, अनोखेपन में, श्रीमान् हेयरडाल (Mr. Heyerdahl) की उनकी कोन–तिकी (Kon-Tiki) समुद्रीयात्रा के लेखे के समान है; और ऐसा कहा जाता है, मुझे कहते हुए प्रसन्नता है, उसी प्रकार की सरल, आडंबरहीन शैली में।

पीटर फ्लेमिंग (Peter Fleming)

प्रस्तावना

हमारे सभी स्वप्न जवानी में प्रारंभ हुए। बच्चे के रूप में, पुस्तक पठन की तुलना में, मैंने अपने समय के नायकों की उपलब्धियॉं, अत्यधिक प्रेरित करने वाली पायीं। लोग, जो नये देशों को खोजने के लिए बाहर गए, या कठिन परिश्रम और आत्मत्याग के साथ, स्वयं को खेलों के क्षेत्र में विजेता बनने के लिये व्यवस्थित कर दिया, या महान चोटियों के विजेता–ऐसे अनेक लोगों की नकल करना, मेरी महत्वाकांक्षाओं का लक्ष्य था।

परंतु मेरे पास, अनुभवी सलाहकारों की सलाह और (उनके) मार्गनिर्देशन की कमी थी और इस प्रकार, इससे पहले कि मैं महसूस करूँ कि किसी को, एक ही समय में, अनेक लक्ष्यों के पीछे नहीं पड़ना चाहिए, (मैंने) अनेक वर्ष व्यर्थ गवॉं दिए। मैंने बिना सफलता प्राप्त किए, विभिन्न प्रकार के खेलों में, जिन्होंने मुझे संतुष्ट किया होता, अपने हाथ अजमाये। इसलिए अंत में, मैंने दो चीजों–बर्फ पर फिसलने और पहाड़ों पर चढ़ने, जिन्हें मैं उनके प्रकृति से समीपी जुड़ाव के कारण, हमेशा प्रेम करता था, के ऊपर अपना ध्यान केन्द्रित करने का निश्चय किया।

मैंने अपने बचपन का अधिकांश भाग, आल्प्स (Alps) में बिताया था और स्कूल के अपने समय का अधिकांश भाग, गर्मियों में चढ़ाई और सर्दियों में बर्फ पर फिसलने में गुजारा था। मेरी महत्वाकांक्षा, छोटी छोटी सफलताओं के द्वारा उछलती गयी और कठोर प्रशिक्षण के बाद, 1936 में, मैं आस्ट्रिया की ओलंपिक टीम में अपना स्थान पाने के साथ सफल हुआ। एक साल बाद, मैं विश्व विद्यार्थी प्रतियोगिताओं में, पहाड़ी के नीचे की तरफ की दौड़ का विजेता बना।

इन संदर्भो में, मैंने गति के आनंद और विजय की एक भव्यतापूर्ण संतुष्टि, जिसमें कोई अपना सब कुछ, जो भी उसके पास हो, दे डालता है, का अनुभव किया। परंतु मानव प्रतिद्वंदियों पर विजय, और मेरी सफलता पर जनता की स्वीकृति ने, मुझे संतुष्ट नहीं किया। मैंने ये अहसास करना शुरू किया कि (मेरी) मूल्यवान महत्वाकांक्षा, केवल अपनी शक्ति को, पहाड़ों के विरुद्ध नापने की थी। इसलिए, जब तक कि मैं इतना समर्थ नहीं हो गया कि विजय न करने के योग्य कोई खतरनाक स्थिति मुझे दिखाई पड़े, एक साथ पूरे–पूरे महीनों के लिए, मैंने पहाड़ियों और बर्फ पर अभ्यास किए। परंतु एक बार जब मैं, एक सौ सत्तर फुट नीचे गिरा, मुझे अपनी परेशानियों के साथ संतुष्ट होना पड़ा और मुझे अपने अनुभवों के लिये भुगतान करना पड़ा, और ये केवल चमत्कार ही था कि, मैंने अपना जीवन नहीं खोया–और, वास्तव में, हल्के–फुल्के वबाल लगातार ही घटित होते रहे।

विश्वविद्यालय के जीवन में वापस आना, हमेशा एक बड़ा टेढ़ा काम था। परंतु मुझसे शिकायत करने की अपेक्षा नहीं की जाती थी; मुझे पर्वतारोहण और पर्यटन संबंधी कार्यों के, सभी प्रकार के अध्ययन के अवसर प्राप्त थे और जैसे ही मैंने इन पुस्तकों को चाव से पढ़ना शुरू किया, अनिश्चित और अस्पष्ट इच्छाओं की जटिलताओं में से, सभी पर्वतारोहियों के स्वप्नों की महत्वाकांक्षाओं को महसूस करने की–हिमालय के एक अभियान में हिस्सा लेने की–इच्छा मेरे मन में उभरी।

परंतु मेरे जैसा एक अज्ञात नौजवान, ऐसे महत्वाकॉक्षी स्वप्नों से खिलबाड़ करने का दुस्साहस किस प्रकार कर सकता था ? क्यों, हिमालय तक जाने के लिए किसी को या तो अत्यधिक धनाढ्य होना चाहिए था या किसी राष्ट्रनेता का बेटा, जिसे, उस समय सेवा में रहते हुए, भारत में भेजे जाने का अवसर मिलना चाहिए था। एक व्यक्ति के लिए, जो न तो अंग्रेज था और न ही धनाढ्य, केवल एक ही तरीका था। किसी को, बाहरी लोगों के लिए भी खुले हुए, उन बिरले अवसरों में से एक का, उपयोग करना पड़ता और कुछ ऐसा काम करना होता, जो किसी अन्य को उसके दावे को खारिज किये जाने से असंभव बना देता। परंतु इस वर्ग का कोई, अपनी किस प्रकार की कारगुजारी बताता ? आल्पस की हर चोटी, बहुत पहले ही चढ़ी जा चुकी थी और सबसे खराब चोटियों और चट्टानों के चेहरों ने भी, अविश्वसनीय कौशल और पर्वतारोहियों के दुस्साहस के सामने दम तोड़ दिया था। परंतु रुको! अभी वहॉं सबसे ऊँची और सबसे अधिक खतरनाक, एक खड़ी चट्टान–आइगर (Eiger) की उत्तरी दीवार –अविजित थी।

छः हजार सात सौ फुट ऊँचा यह नंगा चट्टानी चेहरा, कभी भी चोटी तक नहीं चढ़ा गया था। सभी प्रयास असफल हो गए थे और प्रयास में अनेक लोगों ने अपने जीवन गवॉं दिए थे। इस दैत्याकार पर्वत की दीवार के आसपास, किम्बदंतियों का एक गुच्छा, बुन लिया गया था और अंत में स्विट्जरलैंड की सरकार ने, आल्पस के पर्वतारोहियों को, उस पर चढ़ने के लिए वर्जित कर दिया था।

निःसंदेह यह वह साहसपूर्ण अभियान था, जिसकी मुझे तलाश थी। यदि मैं उत्तरी दीवार की कुंवारी रक्षा पंक्तियों को तोड़ सकूँ, तो जैसा होता है, मुझे हिमालय को जाने वाले अभियान दल में चुन लिए जाने का, कानूनी हक प्राप्त हो जायेगा। मैंने, इस लगभग निराशापूर्ण, अद्‌भुत प्रयास को करने के विचार के ऊपर, काफी लम्बा सोच विचार किया। 1938 में, मैंने अपने मित्रों, फ्रीत्ज कास्पारेक (Fritz Kasparek), ऐन्डेर्ल हेकमायर (Anderl Heckmair), और विगेर्ल वोर्ग (Wiggerl Vorg) के साथ, मैंने इस मारक दीवार पर चढ़ने में कैसे सफलता पाई, अनेक पुस्तकों में वर्णित की गई थी।

इस साहसपूर्ण अभियान के बाद, मैंने अपना हेमन्त का मौसम (autumn), हमेशा यह मन में रखते हुए कि मुझे नंगा पर्वत पर पर्वतारोहण के अभियान, जिसे 1939 के ग्रीष्म में किए जाने की योजना थी, के दल में शामिल होने के लिए मुझे आमंत्रित किया जायेगा, आशा के साथ, अपने प्रशिक्षण को जारी रखने में व्यतीत किया। ऐसा लगा मानो कि मुझे आशा करते हुए ही रह जाना पड़ेगा, क्योंकि सर्दियॉ आईं और कुछ नहीं हुआ। दूसरे लोग, काश्मीर में भाग्यशाली पर्वत के उस अन्वेषण के लिए चुन लिए गए और मेरे लिए, स्की (ski) फिल्मांकन में भाग लेने के एक अनुबंध पर, भारी दिल से हस्ताक्षर करने के अतिरिक्त, कुछ नहीं बचा।

जब मुझे अचानक ही टेलीफोन कर के बुलाया गया, पूर्वाभ्यास (rehearsals) जोरशोर से जारी थे। ये हिमालय अभियान में भाग लेने का बहुप्रतीक्षित बुलावा था, जो चार दिन में प्रारंभ होने वाला था। मुझे इसके ऊपर प्रतिक्रिया करने की कोई आवश्यकता नहीं थी। मैंने अपने अनुबंध को, एक क्षण की भी हिचकिचाहट के बिना, तोड़ दिया, ग्राज (Graz) में अपने घर की यात्रा की, अपने सामानों को पैक करने में एक दिन लगाया और अगले दिन मैं, पीटर आउफ्स्नाइटर (Peter Aufschnaiter), जो नंगा पर्वत अभियान के जर्मन दल का नेता था, के साथ, ऐन्टवेर्प (Antwerp) के मार्ग पर था, लुत्ज चिकिन (Lutz Chicken) और हंस लोबेनहोफर (Hans Lobenhoffer), उस दल के दूसरे सदस्य थे।

उस समय तक, पच्चीस हजार फुट ऊँचे इस पर्वत पर चढ़ने के चार प्रयास हो चुके थे। सभी असफल हुए थे। इसमें अनेक जीवनों की कीमत चुकानी पड़ी, और इसलिए ये तय किया गया कि, एक नये रास्ते से, ऊपर चढ़ा जाये। यह कार्य हमारे द्वारा किया जाना था और चोटी पर चढ़ाई करने की योजना, आगामी वर्ष के लिए बनाई गई थी।

नागा पर्वत के इस अभियान पर, मैं हिमालय के जादू पर मर मिटा। इन दैत्याकार पर्वतों की सुन्दरता, देशों की बहुलता, जिन पर से वे नीचे देखते थे, भारत के लोगों का अनोखापन–इन सभी ने, मेरे मन पर, एक मोहक की भॉति कार्य किया।

तब से, अनेक वर्ष गुजर गए, परंतु कभी मैं एशिया से अलग होने में समर्थ नहीं हुआ। ये सब कैसे हुआ, और इसने मुझे कहॉ ले जा कर छोड़ा, मैं इस पुस्तक में वर्णन करने का प्रयास करूँगा, और चूँकि मुझे लेखक के रूप में कोई अनुभव नहीं है, अनविभूषित तथ्यों के साथ, मैं स्वयं को संतुष्ट अनुभव करूँगा।

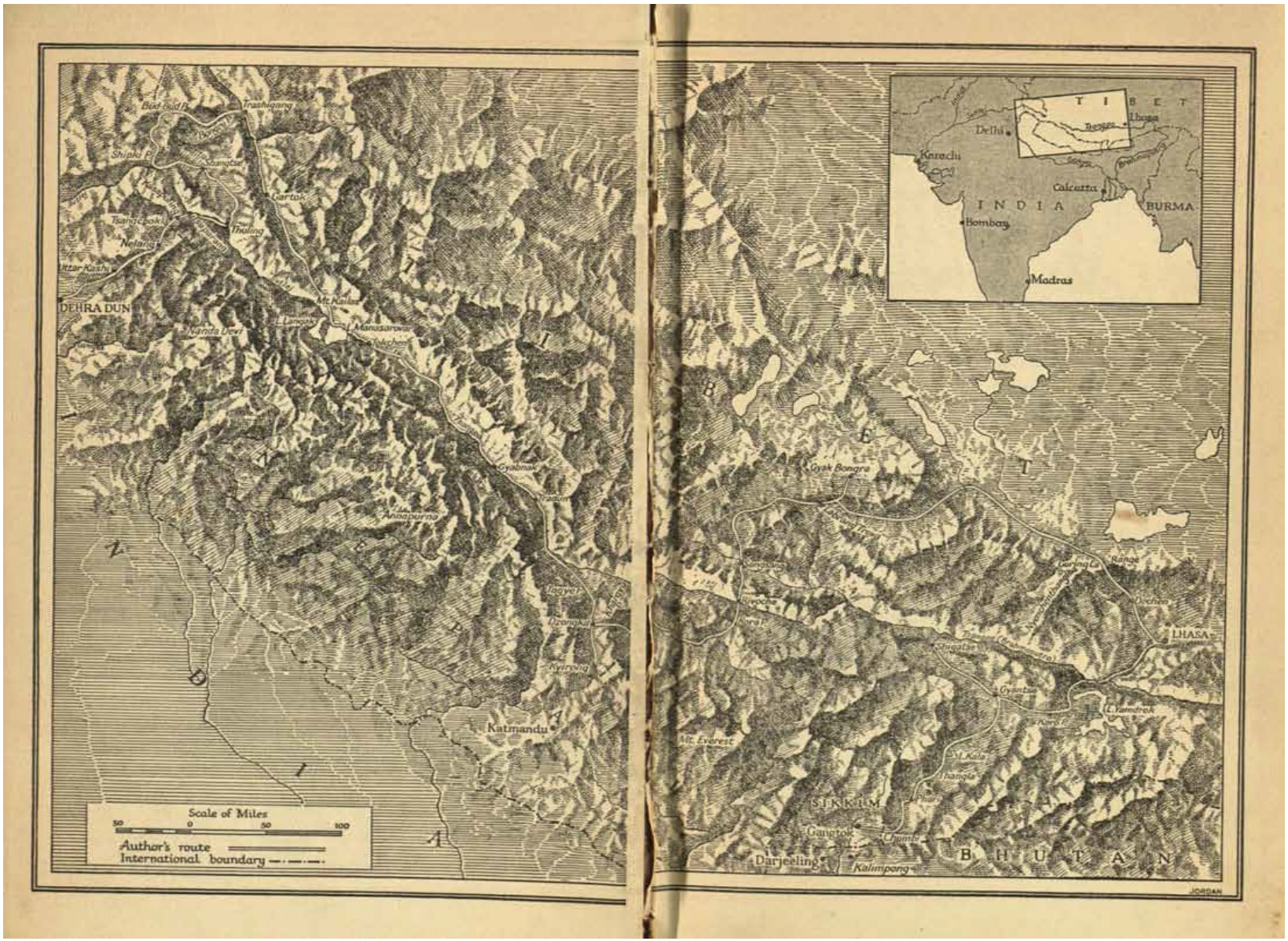

TIBET
INDIA
BURMA
Delhi
Karachi
Bombay
Calcutta
Madras
Lhasa
LHASA
DEHRA DUN
Katmandu
SIKKIM
Gangtok
Darjeeling
Kalimpong
BHUTAN
Scale of Miles
50 0 50 100
Author's route
International boundary

बन्दी शिविर

अगस्त 1939 के अंत तक, हमने अपनी प्राथमिक खोज पूरी कर ली थी, हमने, वास्तव में, पहाड़ पर चढ़ने का एक नया रास्ता खोज लिया था और अब हम करॉची में एक भाड़े वाले वाहन, जो हमको यूरोप वापस ला सके, की प्रतीक्षा कर रहे थे। हमारा जहाज पहले से ही काफी विलंब से था, और युद्ध के बादल और अधिक घने होते जा रहे थे। चिकिन (Chicken), लोबेनहॉफर (Lobenhoffer), और मैंने, अपने आपको, उस जाल से मुक्त करने के लिये, जो कि खुफिया पुलिस ने पहले से ही हमको फंसाने के लिए बुनना प्रारंभ कर दिया था और हमने, जहॉ कहीं से भी हमें निकलने की जगह मिले, तदनुसार फिसलने के–अपने विचार बनाये। केवल आउफस्नाइटर करॉची में रुकने के पक्ष में था। उसने प्रथम विश्वयुद्ध में भाग लिया था और उसे दूसरे के होने की आशा नहीं थी।

हम में से शेष लोगों ने, भाग कर फारस जाने और वहॉ से, घर के लिए, अपना रास्ता पकड़ने की योजना बनाई। हमें उस व्यक्ति से पीछा छुड़ाने में, जो हमारा पीछा कर रहा था, कोई असुविधा नहीं हुयी और अपनी जीर्णशीर्ण कार में, मरुस्थल में कुछ सौ मील पार जाने के बाद, हमने करॉची के उत्तर–पश्चिम में एक छोटी–सी रियासत, लास बेला (Las Bela) पहुॅचने की व्यवस्था की। परंतु, वहॉ हमारा भाग्य हमसे ऊपर निकल गया, और हमने सहसा ही अपने आपको, इस आधार पर कि हमको व्यक्तिगत सुरक्षा की आवश्यकता थी, आठ सैनिकों के प्रभार में पकड़ा हुआ पाया। हम वास्तव में, गिरफ्तारी में थे, यद्यपि जर्मनी और अंग्रेजी साम्राज्य, अभी भी, युद्ध में उतरे नहीं थे।

शीघ्र ही, हमको विश्वस्त सहायकों के साथ, वापस करॉची भेज दिया गया, जहॉ पीटर आउफस्नाइटर हमें मिला। दो दिन बाद, इंग्लैण्ड ने जर्मनी के खिलाफ, युद्ध की घोषणा कर दी। उसके बाद, हर चीज घड़ी की चाल की तरह चलती गई। युद्ध की घोषणा के कुछ मिनटों के बाद, अत्यधिक शस्त्रों से सुसज्जित, पच्चीस भारतीय सैनिक, एक रेस्त्रां के बाग में, जहॉ हम बैठे हुए थे, हमको पकड़कर वापस लाने के लिए भेजे गए। हमको एक पुलिस कार में बैठाकर, पहले से ही तैयार जेल के शिविर में लाया गया, जिसकी चारदीवारी पर कांटेदार तार लगे थे। परंतु यह, मात्र एक अस्थाई शिविर, में बदला गया था और एक पखवाड़े के बाद, हमें बंबई के पास अहमदनगर के एक बड़े बंदीशिविर में, स्थानांतरित कर दिया गया। वहॉ हमें, परस्पर विरोधी विचारों और उत्तेजित वार्तालापों के कोलाहल के बीच, भीड़ भरे तम्बुओं और झोपड़ियों में रखा गया। ''नहीं,'' मैंने सोचा, ''ये वातावरण सूर्य से प्रकाशित, हिमालय की एकांत ऊॅचाइयों से एकदम अलग है। स्वतंत्रता प्रेमी मनुष्यों के लिए, ये कोई जीवन नहीं है।'' इसलिए मैंने भाग जाने के रास्तों और साधनों की तलाश में, व्यस्त रहना प्रारंभ कर दिया।

वास्तव में, भागने की योजना बनाने वालों में, मैं अकेला नहीं था। समान विचार वाले साथियों की मदद से, मैंने दिक्सूचियॉ (compass boxes), धन और नक्शे एकत्रित किए, जिन्हें तस्करी करके, नियंत्रणों के बाहर लाया गया था। हमने चमड़े के दस्ताने और कंटीले तार को काटने वाले एक कटर को पा जाने की भी व्यवस्था की, जिनके भण्डार से गायब होने ने, एक कठोर परंतु निष्फल जॉच को प्रेरित कर दिया।

चूंकि, हम सभी विश्वास करते थे कि, युद्ध शीघ्र ही समाप्त हो जायेगा, हम अपने भागने की योजनाओं को लगातार स्थगित करते गए। परंतु एक दिन, अचानक ही, हमको दूसरे शिविर में भेज दिया गया। हमें, देवलाली के रास्ते पर, ट्रकों के एक काफिले पर लादा गया। हर ट्रक में, हम शिविर बंदियों में से अठारह, अपनी रखवाली के लिए एक अकेले भारतीय सैनिक, के साथ बैठे। संतरी की राइफल, एक जंजीर से, उसके कमर बेल्ट से बंधी हुई थी ताकि, कोई भी इसे छीन न सके। पंक्ति के शुरू और आखिर में, सैनिकों से भरा हुआ एक ट्रक था।

जब हम अहमदनगर के शिविर में थे, लोबनहोफर और मैंने, किसी नये शिविर, जहॉ ताजा मुश्किलें, हमारे भाग जाने के अवसरों को, खतरे में डाल सकती थीं, में बदली किए जाने से पहले, पलायन का निश्चय किया। इसलिए अब हम, ट्रक की पिछली वाली सीटों पर बैठे। सौभाग्यवश, हमारे लिये सड़क पूरी तरह घुमावों से भरी थी और हम बहुधा धूल के मोटे बादलों में घिर जाते थे–हमने देखा कि, इससे हमें बिना दिखे हुए, कूद जाने और जंगल में गायब होने का अवसर मिल सकता था। हमने ये आशा नहीं की थी कि, ट्रक का संतरी, चूंकि वह स्पष्टरूप से, ट्रक में सामने की ओर देखने में लगा था, हमको ढूंढ लेगा। वह, मात्र यदा–कदा ही, हमारी तरफ देखता था। एक या दूसरी तरह से, हमें ऐसा नहीं लगा कि, भागना अत्यधिक मुश्किल होगा और हमने प्रयास को,

अपने काफिले के रास्ते पर, एक विदेशी क्षेत्र में काफी समीप स्थित उदासीन पुर्तगाली राज्य में हो कर आने के अभिप्राय से, अंतिम संभव क्षण तक स्थगित किया।

अंत में (वह) क्षण आया। हम कूद पड़े और मैं सड़क से हटकर, बीस गज तक दौड़ा और मैंने अपने आपको एक झाड़ी के पीछे, एक छोटे से खोखले में फेंक दिया। तब मेरे भय के लिए, पूरा काफिला रुक गया। मैंने सीटियों और गोलियों की आवाजें सुनी और तब, दौड़ते हुए संतरी को सड़क के बगल से दूर तक देखते हुए देख कर मुझे कोई संदेह नहीं रहा कि, क्या हुआ। लोबेनहोफर को खोज लिया गया होगा और चूँकि वह हमारे पूरे सामान के साथ, हमारा पीठ पर लादने वाला पिट्ठू बैग लिए हुए था, मेरे करने के लिए, सिवाय इसके कि मैं अपने भागने की आशाओं को पूरी तरह छोड़ दूं, कुछ भी शेष नहीं रहा। सौभाग्यवश, मैं भ्रम के कारण, अपनी सीट पर वापस आते हुए, किसी भी सैनिक के द्वारा, बिना देखे बच जाने में सफल रहा। केवल मेरे साथी जानते थे कि मैं भागा था और स्वभावतः उन्होंने कुछ नहीं कहा।

तब मैंने लोबेनहोफर को देखा : वह बंदूकों की पंक्तियों की नोंकों का सामना करते हुए, अपने हाथ ऊँचे किए हुए खड़ा था। मैंने खुद को, अपनी असफलता पर, एकदम निराशा के साथ, टूटा हुआ महसूस किया। परंतु वास्तव में, मेरा दोस्त इसके लिए दोषी नहीं ठहराया जाना था। जब वह कूदा, वह हमारे भारी पिट्ठू बैग को अपने हाथ में लिये हुए था और ऐसा लगता है कि, इससे एक आवाज हुई, जो संतरी के द्वारा सुन ली गई; इसलिए इससे पहले कि वह जंगल में शरण पा सके, उसे पकड़ लिया गया। हम इस अभियान से, एक कड़वा परंतु लाभदायक पाठ सीखे कि, भागने की किसी भी संयुक्त योजना में, हर एक भागने वाले को, अपनी–अपनी आवश्यकता का सामान खुद ढोना चाहिए।

उसी साल में, हमको एक बार फिर, दूसरे शिविर में भेज दिया गया। इसबार हम रेल से, भारत के देहरादून शहर से बाहर, कुछ मील दूर, सबसे बड़े युद्धबंदी शिविर में भेजे गए। देहरादून के ऊपर मन्सूरी, अंग्रेज और धनाढ्य भारतीयों के ग्रीष्मकालीन आवास का पहाड़ी स्थान था। हमारा शिविर, सात बड़े अनुभागों का बना हुआ था, इनमें से प्रत्येक कंटीले तारों की दुहरी बाड़ से घिरा हुआ। पूरा शिविर दो, औरअधिक उलझे तारों की पंक्तियों से घेरा गया था, जिसके बीच में गश्त करते हुए सिपाही लगातार चलते रहते थे।

हमारे नये शिविर के हालातों ने, हमारे लिये पूरी परिस्थिति को बदल दिया। जब तक हम नीचे के मैदानों में रहे, हम हमेशा उदासीन पुर्तगाली क्षेत्रों में से एक में, भागने को निशाना बनाते रहे। वहाँ ऊपर, हमारे ठीक सामने, हिमालय था। किसी पर्वतारोही के लिए, दर्रों में हो कर तिब्बत को जीत लेने का विचार, कितना बड़ा आकर्षण था। अंतिम लक्ष्य के रूप में, कोई बर्मा या चीन में जापानी लाइनों बारे में विचार करता।

इन परिस्थितियों में और इन उद्देश्यों के साथ, भागने की योजनाऐं बनाने के लिये, सर्वाधिक आवश्यकता सावधानीपूर्ण तैयारी की थी। अब तक हम, युद्ध के तेजी से समाप्त होने की सभी उम्मीदें छोड़ चुके थे और इस प्रकार–यदि हम भागने की इच्छा रखते–इस सम्बंध में, व्यवस्थापूर्ण तरीके से प्राणालीबद्ध होने को छोड़ कर कुछ भी बचा नहीं था। अत्यधिक घनी आबादी वाले क्षेत्रों में से, भारत से भागना प्रश्न के बाहर था; क्योंकि उसके लिए, किसी को, बहुत सारे धन और अंग्रेजी के पूर्ण ज्ञान की आवश्यकता होती–और मेरे पास इन दोनों में से कुछ नहीं था। इसलिए ये अनुमान करना आसान था, कि मेरी प्राथमिकता तिब्बत के खाली स्थानों की ओर थी, और मैंने हिमालय पर होने के बारे में सोचा–और महसूस किया कि यदि मेरी योजनाऐं असफल भी हो जायें, तो भी ये, ऊँचे पहाड़ों में स्वतंत्र होने के विचार के लायक थीं।

अब मैंने थोड़ी–थोड़ी हिंदुस्तानी, तिब्बती और जापानी सीखना और एशिया के संबंध में, सभी प्रकार की पर्यटन सम्बंधी पुस्तकों, जिन्हें मैं पुस्तकालय में पाता, को चाव से पढ़ना प्रारंभ किया, विशेषरूप से वे, जो मेरे संभावित मार्ग के ऊपर पड़ने वाले जिलों के संबंध में थीं। मैंने इन कामों के सारांश बनाये और सर्वाधिक महत्वपूर्ण मानचित्रों की प्रतिलिपियॉ लीं। पीटर आउफस्नाइटर, जिसे भी देहरादून में रखा गया था, के पास भी, एशिया के अभियानों के संबंध में बताने वाली, अनेक पुस्तकें और नक्शे थे। उसने अथक ऊर्जा के साथ, इन पर कार्य किया, और मेरी सुविधा के लिये, उसने अपने सभी खाके और नोट्स बनाकर रखे। मैंने इन सबकी, दो प्रतियों में, जब मैं पलायन करता, एक प्रति अपने साथ रखने के लिए और दूसरी प्रति, उस स्थिति में सुरक्षा के रूप में, यदि मूल प्रति खो जाये, नकल बनाई।

रास्ते को, जिससे मैंने भागना प्रस्तावित किया था, ध्यान में रखते हुए, मुझे स्वयं को शारीरिक रूप से, जितना संभव हो स्वस्थ रखना, मेरे लिए उतना ही महत्वपूर्ण था। इसलिए मैंने अच्छे या बुरे मौसम पर समान रूप

से विचार न करते हुए, खुली हवा में व्यायाम करने के लिये, प्रतिदिन घण्टों लगाये, जबकि रात को, मैं बाहर लेटा करता था और सुरक्षाकर्मियों की आदतों का अध्ययन करता था।

मेरी प्रमुख चिंता थी कि मेरे पास अत्यंत कम धन था, क्योंकि यद्यपि, मैं हर चीज, जिसके बिना मेरा काम चल सकता था, बेच चुका था। तिब्बत में जीवन निर्वाह की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए, केवल रिश्वत और उपहारों के लिए, जो एशिया में मामूली बातें हैं, मेरी बचत काफी अपर्याप्त थी। मैं अपनी योजना पर व्यवस्थित तरीके से काम करता चला गया और एक मित्र से, जिसका खुद का भागने का, कोई इरादा नहीं था, सहायता प्राप्त की।

मैं प्रारंभ से ही अकेले भागने का इरादा रखता था ताकि, मुझे किसी साथी के ऊपर, जो पूर्वाग्रह के कारण मेरे अवसरों को सेंध लगा सकता था, विचार न करना पड़े। परंतु एक दिन मेरे मित्र, रोल्फ मेगेनर (Rolf Magener) ने मुझे बताया कि, इटली का एक जनरल भी, मेरी ही तरह का इरादा रखता है। मैं पहले ही इस व्यक्ति के बारे में सुन चुका था, इसलिए एक रात को मेगेनर और मैं, तार की बाड़ में हो कर, समीपवर्ती खण्ड में, जिसमें इटली के चालीस जनरल रखे गए थे, चढ़ गए। मेरे भावी साथी का नाम, मार्चिस (Marchese) तय किया गया था और बाहरी चेहरे–मोहरे से वह एक विशेष प्रकार का इटली निवासी दिखता था। वह लगभग चालीस वर्ष से अधिक आयु का, दुबली–पतली आकृति का, सहमत होने वाले शिष्टाचारों और विशेषरूप से अच्छे पहनावे वाला था; मैं उसकी शरीर रचना से विशेष रूप से प्रभावित था। प्रारंभ में हमें एक दूसरे को समझने में दिक्कतें हुई। वह जर्मन बिल्कुल नहीं बोलता था और मैं इटेलियन बिल्कुल नहीं बोलता था। हम दोनों केवल नाममात्र की अंग्रेजी जानते थे, इस प्रकार, हम एक मित्र की सहायता से, अटक–अटक कर, फ्रांसीसी भाषा में, बातचीत करते थे। मार्चिस ने मुझे ऐबीसीनिया (Abyssinia) में युद्ध के संबंध में और युद्धबंदी शिविर से भागने के एक पहले प्रयास, जो उसने किया था, के संबंध में बताया।

सौभाग्यवश, उसको एक अंग्रेज जनरल का वेतन मिलता था, और उसे धन की कोई समस्या नहीं थी। वह हमारे भागने के लिए, उन चीजों को प्राप्त करने में सक्षम था, जो मुझे कभी नहीं मिली होतीं। उसे जो आवश्यक था–वह था एक साझेदार, जो हिमालय से परिचित हो–इसलिए हम, इस आधार पर कि, मैं सभी प्रकार की योजना बनाने के लिए उत्तरदायी होऊँगा और वह धन और उपकरणों के लिए उत्तरदायी होगा, शीघ्र ही परस्पर संयुक्त हो गए।

मैं हर सप्ताह में कई बार, मार्चिस से विस्तार में बातचीत करने के लिए रेंगकर बाहर जाता और अभ्यास के द्वारा, उन कटीले तारों को पार करने में विशेषज्ञ हो गया। वास्तव में, वहॉ, भागने की अनेक संभावनाऐं थीं, परंतु एक वह, जो मुझे अत्यधिक भरोसेमंद और प्रखर दिखाई दी, इस महत्वपूर्ण तथ्य पर आधारित थी–कि कटीली बाड़ के बाहर की तरफ, हर अस्सी गज पर, छप्पर से छाई हुई छतें, जो संतरियों को भूमध्यरेखीय धूप से बचाने के लिए लगाई गई थीं, पूरा शिविर ढालू था। यदि हम इन छतों में से एक पर कूद सकते, हम कंटीले तारों की दोनों पंक्तियों को, एक ही बार में पार कर सकते थे। मई 1943 में हमने अपनी तैयारियॉ पूरी कर लीं। धन, किराना, दिग्सूचक सूची, घड़ियॉ, जूते, और पर्वतारोहियों का एक छोटा तंबू, सभी तैयार थे।

एक रात को हमने प्रयास करने का निश्चय किया। मैं बाड़ के बीच में हो कर, सामान्यरूप से मार्चीस के खण्ड में चढ़ा। वहॉ मुझे एक सीढ़ी, जो हमने उड़ाई थी और शिविर में लगी छोटी सी आग के बाद, छिपा दी थी, तैयार मिल गई। हमने इसे झोपड़ी की एक दीवार के साथ, झुका कर लगाया और परछाई में प्रतीक्षा की। ये लगभग मध्यरात्रि थी, और दस मिनट में संतरी बदले जाते। अपनी ड्यूटी समाप्त करके जाने वाले संतरी, धीमे–धीमे, ऊपर नीचे टहल रहे थे। कुछ मिनट गुजरे, जब तक कि वे उस स्थान तक नहीं पहुॅचे, जहॉ हम उन्हें चाहते थे, ठीक तभी, चंद्रमा चाय बागानों की चोटियों के ऊपर आया।

हम वहॉ थे। ये या तो अभी होना था, या कभी नहीं।

दोनों संतरी हमसे अधिकतम दूरी तक पहुॅच चुके थे। मैं छिपने–छिपाने की स्थिति में उठा और मैंने सीढ़ी के साथ, बाड़ की तरफ जाने की जल्दी की। मैंने इसे बाहर की तरफ लटकती हुई बाड़ की चोटी के विरुद्ध रखा, ऊपर चढ़ा, और तारों को, जो उस छाये हुए छप्पर तक पहुॅचने से वंचित करने के लिए आपस में गुंथाकर रखे गए थे, काट दिया। मार्चीस ने मुझे छत में हो कर फिसल जाने के लिए सक्षम बनाते हुए, एक लंबी नुकीली छड़ी से, तारों के गुच्छे को एक तरफ धकेला। यह तय किया गया था कि, इटलीवासी तुरंत मेरे पीछे आयेगा, जबकि मैं

अपने हाथों से तारों को अलग–अलग करके रखूँगा, परंतु वह नहीं आया। उसने थोड़ी भयावह सेकण्डों के लिए, ये सोचते हुए विलंब किया कि, वह अत्यधिक विलंबित हो चुका है और संतरी बीच में से ही वापस लौट रहे हैं–और वास्तव में, मैंने उनके कदमों को सुना। मैंने उसको आगामी प्रतिक्रिया के लिए कोई समय नहीं दिया परंतु उसे बांहों में पकड़ लिया और छत के ऊपर खींचा। वह रेंग कर पार आया और झटके के साथ, आजादी में, नीचे कूद गया।

परंतु ये सब घनी खामोशी में नहीं हुआ। खतरे की सूचना, निगरानी तेज कर दी गई और उन्होंने गोलीबारी शुरू कर दी, लेकिन जैसे ही उनकी गोलीबारी शुरू हुई, रात की शांति टूट गई, और हम जंगल में निकल गए।

पहली चीज, जो मार्चीस ने अपने गर्म दक्षिणी स्वभाव की अभिव्यक्ति के रूप में की, वह थी मुझे आलिंगन में लेना और चूमना, यद्यपि ये, आनंद के विस्फोट से निकलने के लिए, रास्ता पकड़ने का, मुश्किल से ही छोटा क्षण था। रॉकेट ऊपर गए और ये दिखाते हुए कि पीछा करने वाले हमारे रास्ते पर थे, हमारे समीप ही सीटियॉ बजने लगीं। हम अपना जीवन बचाने के लिए दौड़े और छोटे रास्तों का उपयोग करते हुए बहुत तेज दौड़े, जो मैंने शिविर में से बाहर जाने के समय में, बहुत अच्छी तरह से जान लिए थे। हमने सड़कों का कम उपयोग किया और गॉव के आसपास घूमते हुए, हमने अपना रास्ता पा लिया। प्रारंभ में, हमने मुश्किल से ही अपने सामान को देखा, परंतु बाद में, वे हमको भारी महसूस होने शुरू हो गए।

गॉवों में से एक में, वहॉ के निवासी, अपने ढोलों को बजा रहे थे और हमने सहसा ही समझ लिया कि वे खतरे की सूचना दे रहे थे। ये कठिनाइयों में से एक थी, जो कोई भी ला सकता था, जिसकी विशेषरूप से, हमारी श्वेत आबादी, मुश्किल से कल्पना कर सकती थी। एशिया में, साहब सदैव ही, अपने सेवकों के दल के साथ यात्रा करता है और अपने आप एक छोटा–सा पैकिट भी नहीं उठाता–इसलिए, यदि उन्होंने दो यूरोपियन लोगों को भार से लदे हुए, देहात में हो कर पैरों पर घसीटकर चलते हुए देखा, तो गॉव के लोग क्या सोचेंगे!

ये जानते हुए कि हिंदुस्तानी लोग, जंगली जानवरों के कारण, अंधेरे में जंगल में जाने से डरते हैं, हमने रात को चलने का निर्णय किया। शिविर में उपलब्ध समाचारपत्रों में, हमने नरभक्षी बाघों और चीतों की ये कहानियॉ पढ़ते हुए, विशेषरूप से अपने लिए, बहुधा, इस संभावना का लुत्फ नहीं उठाया।

जब भोर हुआ, हमने, थके हुए अपने आपको, एक बाड़ी में छिपा दिया और पूरा दिन वहॉ सोते हुए और जलती हुई धूप में, खाते हुए व्यतीत किया। हमने पूरे दिन में, केवल एक आदमी, तथा गायों के एक झुण्ड को देखा; सौभाग्यवश, उसने हमें नहीं देखा। सबसे खराब चीज ये थी कि, हम में से दोनों के पास, पानी की एक –एक ही बोतल थी, जो पूरे दिन के लिए पर्याप्त होनी थी। ये कोई आश्चर्य नहीं था कि, पूरा दिन शांति से गुजर जाने के बाद, जब शाम आयी, हम मुश्किल से ही अपनी नाड़ियों पर काबू रख सकते थे। हम जितनी तेजी से संभव हो, उतनी तेजी से चलते रहना चाहते थे और अपनी प्रगति के लिए, रातें हमें अत्यधिक छोटी दिखाई देती थीं। हमें हिमालय में हो कर तिब्बत के लिए, सबसे छोटे रास्ते तलाश करने पड़ते थे और इसका अर्थ होता था, हफ्तों की कठोर गति, इससे पहले कि हम अपने आपको सुरक्षित महसूस कर पाते।

अपने भाग जाने के बाद, शाम को, हमने पहले पुल को पार किया। हमने थोड़ी देर के लिए, चोटी पर विश्राम किया और तीन हजार फुट नीचे, अपने युद्धबंदी शिविर की, असंख्य झिलमिलाती हुई रोशनियों को देखा। रात को ग्यारह बजे, सभी रोशनियॉ, एक साथ बुझा दी गईं और शिविर के आसपास, केवल खोजबत्तियों (search lights) ने, उसके अत्यधिक बड़ी सीमाओं का आभास कराया।

ये मेरे जीवन का पहला अवसर था, जबकि मैं वास्तव में समझा कि, स्वतंत्रता पाने का क्या अर्थ है। हमने इस भव्य इच्छा का आनंद लिया और दो हजार युद्धबंदियों, जो तारों की दीवार के पीछे रहने के लिए मजबूर किए गए थे, के सम्बंध में सहानुभूति के साथ सोचा।

परंतु हमारे पास ध्यान लगाने के लिए काफी समय नहीं था, हमें यमुना की घाटी के नीचे की तरफ, अपना रास्ता खोजना था, जो हमें पूरी तरह से अज्ञात था। अपेक्षाकृत छोटी घाटियों में से एक में, हम एक इतनी तंग दरार में हो कर निकले कि, हम आगे बढ़ने के लिये मुश्किल से ही गुजर सके और हमें सुबह तक के लिए इंतजार करना पड़ा। वह स्थान इतना सूना और संरक्षित था कि, इस अवसर को, मैं किसी आशंका के बिना, अपने भूरे बालों और दाढ़ी को रंग कर काला करने के लिए, ले सकता था। मैंने अपने चेहरे और हाथों को भी परमेग्नेट

भूरे पेन्ट, और ग्रीस के मिश्रण की सहायता से रंगा, जिसने काली धाप (shade) उत्पन्न की। इस तरीके से, मैंने भारतीयों से मिलता–जुलता कुछ प्राप्त किया; ये महत्वपूर्ण था, जैसा कि हम लोगों ने तय किया था, यदि हमें कहने की चुनौती दी जाये, कि हम पवित्र गंगा की एक तीर्थयात्रा पर थे। मेरा साथी, चूँकि वह काफी गहरे रंग का था, दूर से नहीं पहचाना जा सकता था। स्वाभाविक रूप से, हमारा आशय, अदालती निरीक्षण से नहीं था।

इस शाम को, अंधेरा होने से पहले, हमने यात्रा प्रारंभ की परंतु शीघ्र ही, हमें अपनी जल्दबाजी पर पछताना पड़ा। एक ढलान को पार करने के लिए, हमने अपने आपको, धान को रोपने वाले, अनेक किसानों की उपस्थिति में पाया। वे आधे नंगे, दलदली पानी में चल रहे थे और दो लोगों को अपनी पीठ पर बोझा ढोते हुए देखकर वे अचंभित हो कर घूरने लगे। उन्होंने ऊँचे तीखे ढाल की ओर इशारा किया, जिसपर से कोई भी एक गॉव को देख सकता था, इसका अर्थ ये प्रतीत हुआ कि, उस खंदक में से बाहर जाने का ये एक मात्र रास्ता था। अजीब–गरीब प्रश्नों से बचते हुए, हम उस बताई गई दिशा में, जितना जल्दी संभव हो, उतना, सीधे चलते रहे। घण्टों की चढ़ाई और उतराई के बाद, हम अंत में यमुना नदी पर पहुँचे।

इस बीच रात घिर चुकी थी। हमारी योजना, जब तक कि हम इसकी सहायक नदियों में से एक, अगलर (Aglar) तक न पहुँच जाऐं, यमुना के साथ–साथ चलते जाने की और तब धाराप्रवाह के साथ आगे चलने की थी, जब तक कि हम बांध तक न पहुंच जायें। ये वहॉ से गंगा के लिए अधिक दूर नहीं हो सकता था, जो हमको बड़ी हिमालय श्रृंखला की ओर ले जाती। इस स्थान तक के लिए, हमारा अधिकांश रास्ता देहातों में हो कर था, और केवल पानी के यहॉ–वहॉ भरावों के साथ हमें वे रास्ते मिले थे, जो मछुआरों के परिचित थे। इस सुबह, मर्चीस बहुत–बहुत थक चुका था। मैंने उसके लिए, शक्कर और पानी के साथ, कोर्न फ्लेक्स (corn flex) तैयार किए और मेरे जोर देने पर, उसने थोड़े से खाये। दुर्भाग्यवश, जहॉ हमने खुद को पाया, वह स्थान, शिविर लगने के लिए बहुत अनुपयुक्त था। ये बड़ी–बड़ी चीटियों के झुण्डों से भरा हुआ था, जो किसी की खाल में, थोड़ा अंदर तक, काटती हैं और हम इस कारण सो नहीं सके। दिन पूरी तरह अंतहीन दिखाई दिया।

शाम होते–होते मेरे साथी की बेचेनी बढ़ी, और मैंने ये आशा करना प्रारंभ किया कि उसकी भौतिक अवस्था कुछ सुधर गई हो। वह भी, आत्मविश्वास से भरा हुआ था कि, वह अगली रात की थकान से पार पा सकता था। तथापि, आधी रात के तुरंत बाद, वह ठीक हो गया। साधारणतः वह, अत्यधिक भौतिक प्रयास, जो हमारे लिए आवश्यक थे, करने के लिए सक्षम नहीं था। मेरे कठोर प्रशिक्षण और हालातों ने, हम दोनों के लिए, ईश्वर द्वारा भेजा हुआ सिद्ध किया। मैं अक्सर, उसके पीठ के बोझ को, अपने खुद के बोझ के साथ बांधकर, ढोया करता था। मुझे कहना चाहिए कि, उठने वाले किसी भी संदेह से बचने के लिए, हमने अपने पिट्ठू थैलों (rucksack) को हिंदुस्तानी टाट के थेगड़ों से ढक रखा था।

अगली दो रातों में, हम अगलर नदी के किनारे के साथ–साथ होते हुए, जब तक कि हमारा रास्ता जंगल या पहाड़ियों के द्वारा, बंद नहीं हो गया, पैदल–पैदल ऊपर की तरफ चले। एक बार जब हम दो चट्टानी दीवारों के बीच में, नदी के किनारे पर आराम कर रहे थे, बिना हमारे ऊपर ध्यान दिए हुए, कुछ मछुआरे हमारे पास आये। दूसरे समय में, जब हम किसी मछुआरे, जिसको हम बचा नहीं सकते थे, के ऊपर गिर पड़े, हमने अपनी टूटी–फूटी हिन्दुस्तानी में मछली के सम्बंध में कुछ पूछा। हमारा छद्मभेष, पर्याप्तरूप से, उन्हें संतुष्ट करता हुआ सा लगा, क्योंकि उस आदमी ने हमें, बिना किसी प्रकार का अविश्वास करते हुए मछली बेची–वास्तव में, उन्होंने हमारे लिए–बातचीत करते हुए और उन छोटी बीड़ियों, जिन्हें यूरोप के लोग, इतने खराब स्वाद वाली समझते हैं, के धुंए को सूंघते हुए पकाया। मार्चीस (जो हमारे भागने के पहले, बड़ा धूम्रपान करने वाला था), एक बीड़ी मांगने के लिए, अपने आपको रोक नहीं सका परंतु उसने कुछ सुट्टे मारे, तब वह अचेत हो कर गिर गया, मानो वह जोर से पटक दिया गया हो! भाग्यवश, उसने शीघ्र ही सुधार कर लिया, और हम अपनी यात्रा को जारी रखने में सफल रहे।

बाद में, हम कुछ किसानों से मिले, जो शहर के लिए घी ले जा रहे थे। हम इस बीच, अधिक आत्म–विश्वस्त होते जा रहे थे और हमने उनसे, उसमें से कुछ को हमें बेच देने के लिए कहा। उनमें से एक, ऐसा करने के लिए सहमत हो गया परंतु जैसे ही उसने लगभग पिघले हुए घी को अपने काले गंदे हाथों से, कल्छी से बाहर अपने वर्तन में से हमारे बर्तन में निकाला, हम दोनों ने, लगभग घृणा के साथ उल्टी की।

अंत में, घाटी चौडी हो गई, और हमारा रास्ता धान और मक्का के खेतों में हो कर गुजरा। हमारे लिए,

दिन में छिपने का एक अच्छा स्थान पाना, कठिन से कठिनतर हो गया। एक बार हम, प्रातःकाल में ढूंढ लिए गये, और जैसे कि किसान हमको बेवकूफी भरे तरीके से तमाम प्रश्न पूछते रहे थे, हमने अपने असबाबों को बांधा और आगे की तरफ चलने की जल्दी की। अभी तक हमें छिपने का कोई नया स्थान नहीं मिला था, जब हम आठ आदमियों को मिले, जिन्होंने चिल्लाकर हमें रुकने के लिए कहा। हमारा भाग्य, अंत में ऐसा लगा कि, उसने हमें छोड़ दिया। उन्होंने हमें असीमित संख्या में प्रश्न पूछे, और मैं हमेशा वही उत्तर देता चला गया, विशेषरूप से, कि हम एक दूसरे, दूर के राज्य से आये हुए तीर्थयात्री थे। हमारे बड़े आश्चर्य के साथ, कैसे भी, हम इस परीक्षा में खरे उतरे, क्योंकि कुछ समय के बाद उन्होंने हमें अपने रास्ते पर जाने दिया। हम मुश्किल से ही उन पर विश्वास कर सकते थे कि, हमने उनसे निपट लिया और काफी देर बाद हम चलते बने, हमने सोचा कि हमने, अपना पीछा करते हुए कदमों की आवाज सुनी।

उस दिन, हर चीज जादुई प्रभाव में दिखी, और हम लगातार अव्यवस्थित हुए। अंत में हम, निराश करने वाले निष्कर्ष पर पहुॅचे कि हमने, वास्तव में, एक बांध को पार किया था परंतु हम अभी भी, यमुना की घाटी में ही थे–जिसका आशय था कि हम, अपनी समय सारणी से, कम–से–कम दो दिन पीछे थे।

इसलिए हमें चढ़ाई फिर से प्रारंभ करनी पड़ी, और शीघ्र ही हमने अपने आपको बुरुंश (rhododendron) के एक घने जंगल में पाया, वह इतनी पूरी तरह से त्यागा हुआ दिखाई दिया कि, हम एक शांत दिन और सोने के एक लंबे अवसर की आशा कर सकते थे। परंतु, गायों के कुछ झुण्ड हमारी निगाह में आये, और हमें अपना शिविर हटाना पड़ा और एक अच्छे दिन के विश्राम की संभावनाओं को अलविदा कहना पड़ा।

आगामी रातों के दौरान, हमने अपेक्षाकृत कम बसे हुए देहात में हो कर यात्रा की। हमने, अपने दुःख के लिए, मानवमात्र की अनुपस्थिति का कारण शीघ्र ही जान लिया। वास्तव में वहॉ, व्यावहारिकरूप से, पानी नहीं था। उस मौके पर, हम प्यास से इतना ज्यादा पीड़ित हुए कि मैंने एक बुरी गलती कर दी, जिसके सर्वनाशी परिणाम हो सकते थे। एक छोटे तालाब के पार आते हुए, मैंने अपने आपको नीचे गिरा दिया और बिना किसी प्रकार की सावधानी बरतते हुए, बहुतायत में, बड़े–बड़े घूंटों में पानी पीना प्रारंभ किया। परिणाम बहुत भयानक था। ऐसा पता लगा कि ये उन तालाबों में से एक था, जिसमें गर्म मौसम में, भैंसें लोरने की अभ्यस्त थीं और जिसमें पानी की तुलना में, गंदगी अधिक थी। मुझ पर खांसी का एक हिंसक आघात हुआ और उसके बाद उल्टियॉ हुईं और काफी देर बाद, मैं उस भयानक ताजगी से उबर पाया।

इस घटना के शीघ्र बाद, हमें प्यास से उबरना था और केवल इसी कारण से हम आगे नहीं चल सके और हमें लेटना पड़ा, यद्यपि भोर होने में अभी देर थी। जब सुबह हुई, मैं तीखे ढलान पर पानी की तलाश में अकेला उतरा, जो मुझे मिल गया। अगले तीन दिन और रातें थोड़ी अच्छी थीं; हमारा रास्ता फर के जंगलों में हो कर गुजरता था, जो इतने सूने थे कि हमें वहॉ, यदाकदा ही भारतीय दिखाई दिए और हम खोजे जाने की जोखिम से थोड़े बच पाये।

हमारे पलायन के बारहवें दिन, एक महान क्षण आया। हमने अपने आपको, गंगा के किनारे पाया। सर्वाधिक पवित्र हिन्दू, इस पवित्र धारा की नजर से, यहॉ से उतने अधिक नहीं चले होंगे, जितने कि हम चले थे। अब हम गंगा के ऊपर की तरफ–उसके स्रोत की तरफ–चढ़ाई के लिए, तीर्थयात्रियों के मार्ग का अनुगमन कर सकते थे और वह तेजी से, हमारी यात्रा की थकानों को घटा देगा, ऐसा हमने अनुमान किया। हमने तय किया कि अपनी रात्रि यात्रा की विधि से, इतने सुरक्षितरूप से और इतनी दूर आने के बाद, हमको किसी प्रकार का जोखिम नहीं उठाना चाहिए, इसलिए हम दिन में लेट गए और केवल रात को चले।

इस बीच हमें, निराशाजनकरूप से, किराने की कमी पड़ गई। व्यावाहारिकरूप से, हमारा खाना समाप्त हो चुका था, परंतु यद्यपि बेचारा मार्चीस, जो केवल खाल और हड्डियों के अतिरिक्त कुछ नहीं था, वह बर्दाश्त नहीं कर सका। मैं सौभाग्यवश, अभी भी अपेक्षाकृतरूप से, ताजा महसूस कर रहा था और मेरे पास अभी भी शक्ति का अच्छा भण्डार था।

हमारी सभी आशाऐं, चाय और किराना भण्डारों, जो तीर्थयात्रियों के पथ पर, हर जगह मिल जाते थे, पर केन्द्रित थीं। उनमें से कुछ, काफी देर रात तक खुले रहते थे और कोई भी उन्हें धुंधले टिमटिमाते हुए तेल के दीपकों के द्वारा पहचान सकता था। अपना श्रृंगार करने के बाद, मैं पहले इन भण्डारों में गया, जहॉ हम पहुॅचे और गालियों की चीख के साथ खदेड़ दिए गए। उन्होंने स्पष्टरूप से मुझे चोर समझा। ये अनुभव बहुत ही दुःखदायी था, इसका एक लाभ हुआ; कि मेरा छद्मभेष सहमत करार देने वाला था।

अगले भण्डार पर पहुँचने पर, मैं पैसे को अपने हाथ में पकड़े हुए, जितना संभव हो, दिखावा करते हुए चला। इसका एक अच्छा प्रभाव पड़ा। तब मैंने भण्डार मालिक को कहा कि, मुझे दस लोगों के लिए, किराना खरीदना है। कपटपूर्ण ढंग से, अपने आपको एक अफसर बताते हुए, मैंने चालीस पौंड खाना, शक्कर, और प्याज खरीदी।

दुकानदार लोगों ने, मेरे व्यक्तित्व की तुलना में, मेरे कागज के नोटों को जॉचने में अधिक रुचि ली और इस प्रकार थोड़ी देर बाद, किराने के भारी–भार के साथ, मैं दुकान को छोड़ने में सफल हुआ। अगला दिन, एक प्रसन्नता भरा दिन था। अंत में, हमारे पास खाने के लिए काफी था और देहात में काफी दूर पगडंडी पर चलने के बाद, हमें तीर्थयात्रियों की सड़क, एक सैरगाह मात्र दिखाई दे रही थी।

लेकिन हमारी संतुष्टि बहुत कम समय तक टिकी रह सकी। हमारे अगले पड़ाव पर, हमें लोगों द्वारा, जंगल में जाते हुए, परेशान किया गया। उन्होंने तेज गर्मी के कारण, मार्चीस को आधा नंगा लेटे हुए पाया। वह इतना पतला हो चुका था कि, कोई उसकी पसलियों को गिन सकता था और वह वास्तव में, बहुत बीमार दिखता था। हम वास्तव में, संदेह के पात्र थे, क्योंकि हम सामान्य तीर्थयात्रियों के लिये सड़क किनारे वाले घरों में नहीं थे। भारतीयों ने हमको अपने खेतों के घरों में बुलाया, परंतु हम ऐसा नहीं करना चाहते थे, इसलिए उनके साथ न जाने के लिए, हमने मार्चीस के खराब स्वास्थ्य का बहाना लिया। तब तो वे चले गए, परंतु शीघ्र ही वापस लौटे, और अब ये स्पष्ट था कि उन्होंने हमको भगोड़ा समझा था। उन्होंने हमें, ये कहते हुए कि पड़ोस में, आठ सिपाहियों के साथ एक अंग्रेज था, जो भागे हुए कैदियों के जोड़े की तलाश कर रहा था, गुमराह करने का प्रयास किया और यह भी कि, उन्होंने उन्हें, किसी भी प्रकार की सूचना, यदि वे उन्हें दे सकें, देने का वायदा किया था। परंतु यदि हम उन्हें धन दे दें, उन्होंने कुछ भी न कहने का वायदा किया। मैं दृढ़तापूर्वक खड़ा हुआ और जोर डाल कर कहा कि मैं, कश्मीर में एक डॉक्टर था और इसके प्रमाण में, मैंने उन्हें दवाईयों का अपना खजाना दिखाया।

या तो मार्चीस की पूरी तरह से वास्तविक कराह अथवा मेरी नाटकीय प्रस्तुति के परिणामस्वरूप, भारतीय वहॉ से फिर गायब हो गए। हमने अगली रात, लगातार उनके वापस आने के डर में गुजारी और एक अधिकारी के साथ, उनकी वापसी की आशा करते रहे। तथापि, हम सताये नहीं गए।

चीजें जैसी वे थी, उनके साथ हमारी शक्ति ने पुनः प्राप्ति में कुछ दिन लगाये और चूँकि हम लगातार तनाव की अवस्था में रहे थे, वास्तव में, मांसपेशियों के नहीं, परंतु नाड़ियों के तनाव ने, रातों की तुलना में, हमारे ऊपर अधिक जोर डाला। सामान्यतः, हमारी पानी की बोतलें दोपहर तक खाली होती थी और शेष बचा हुआ दिन, कभी समाप्त न होने वाला प्रतीत होता था। हर शाम को मार्चिस, नायक की भांति आगे चलता था, और वजन में गिरावट से पैदा हुई थकान के बावजूद, वह आधी रात तक चलता रहता था। उसके बाद, अगली यात्रा के लिए योग्य बनाने के लिए, उसे दो घण्टे के लिए सोना पड़ता था। सुबह के करीब तक, हम पड़ाव बना ले लेते थे और अपने शरणस्थल से नीचे, महान तीर्थयात्रियों की सड़क पर, तीर्थयात्रियों के लगभग अटूट प्रवाह के साथ, देख सकते थे। अनजानरूप से पकड़े हुए, जैसे वे अक्सर होते थे, हम उनसे ईर्ष्या करते थे। सौभाग्यशाली शैतान! उनके पास किसी से छिपने का कोई कारण नहीं था। हमने शिविर में सुन रखा था कि, गर्मियों के महीनों में, कुछ साठ हजार जैसे तीर्थयात्री, इस रास्ते से आते थे और हमने आसानी से इसके ऊपर विश्वास कर लिया।

हमारी अगली यात्रा लंबी थी, परंतु रात के करीब, हम मंदिरों के शहर, उत्तरकाशी पहुँचे। हमने अपने आपको, शीघ्र ही, पतली गलियों में गुमा दिया, इसलिए अपने सामान के साथ, मार्चीस एक अंधेरे कोने में बैठ गया और मैं अकेला ही, रास्ता तलाश करने का प्रयास करते हुए चला। कोई, मंदिरों के खुले दरवाजों में हो कर, ताकती हुई प्रतिमाओं के सामने जलते हुए दीपकों को, देख सकता था और मैं एक पवित्र स्थान से दूसरे को गुजरते हुए साधुओं के द्वारा देखे जाने से बचने के लिए, अक्सर छाया में कूद जाता। इससे पहले कि मैं अंत में, नगर के दूसरी तरफ की ओर बढ़ते हुए, तीर्थयात्रियों की सड़क को फिर से खोज पाया, इसने मुझे एक घण्टे से अधिक का समय लगाया। मैं यात्रा संबंधी अनेक पुस्तकों से, जो मैंने पढ़ीं थीं, जानता था कि, अब हमको तथाकथित, आंतरिक सीमाओं को पार करना पड़ेगा। ये रेखा, वास्तविक सीमा रेखा के समानान्तर, उससे साठ से एक सौ बीस मील की दूरी पर चलती है। सामान्य निवासियों के अपवाद के साथ, इस क्षेत्र में यात्रा करने वाले हर किसी से, एक परमिट रखने की अपेक्षा की जाती है। चूँकि हमारे पास परमिट नहीं था, पुलिस की चौकियों और गश्त से बचने के लिए हमें विशेष सावधानी रखनी थी।

हमारे रास्ते ने, घाटी में ऊपर की तरफ, नेतृत्व किया जैसे–जैसे हम आगे बढ़े, वह कम और कम आबादी वाली होती गई। दिन के समय में हमें समुचित शरणस्थल पाने में कोई परेशानी नहीं होती थी और मैं अक्सर, छिपने के स्थान को छोड़ कर, पानी की तलाश में चला जाता था। एक बार मैंने हल्की आग भी जलाई और थोड़ा दलिया जैसा पकाया–पहला गर्म खाना, जो हमने एक पखवाड़े में खाया।

अपने हम पहले से ही लगभग सात हजार फुट की ऊँचाई पर पहुँच चुके थे और रात के समय को अक्सर, भूतिया शिविरों में गुजारते थे। तिब्बती व्यापारी, जो गर्मियों में अपना व्यापार दक्षिणी तिब्बत में करते हैं और सर्दियों में, तिब्बत पार कर के भारत आ जाते हैं, उनमें से अनेक, गर्म मौसम में, लगभग दस हजार फुट ऊँचे तल पर स्थित, छोटे गॉवों में रहते हैं, जहॉ वे जौ पैदा करते हैं। उनके शिविरों में, शक्तिशाली और मारक तिब्बती कुत्तों के रूप में–मध्य आकार की प्रजाति का एक झबरा कुत्ता–ये एक बहुत असहमतिपूर्ण चीज होती थी, जिसका सामना अब हमें, पहली बार हुआ।

एक रात को हम, इन भूतिया गॉवों में से एक में, जो केवल गर्मियों में ही आबाद रहता था, पहुँचे। ये बहुत कुछ, पटरों से पटा हुआ और पत्थर की पटियों से ढकी हुई छतों वाले घर जैसा दिखाई दिया परंतु, इसके पीछे, तेजी से दौड़ते हुए जलप्रवाह के रूप में, जिसमें उसके किनारों तक बाढ़ आ गई थी और उसने लगे हुए क्षेत्र को दलदल में बदल दिया था, एक दुःख भरा आश्चर्य, हमारी प्रतीक्षा कर रहा था। इसे पार करना पूरी तरह से असंभव था। अंत में, हमने रास्ता पार करने का प्रयास छोड़ दिया और दिन होने तक की प्रतीक्षा करने और शरणगाह में से क्षेत्र को निरीक्षण करने का निश्चय किया क्योंकि, हम विश्वास नहीं कर सकते थे कि, तीर्थ यात्रियों की सड़क, इस स्थान पर कहीं थोड़ी आसपास ही टूटी होगी। अपने सर्वोच्च आश्चर्य के साथ, हमने अगले दिन पाया कि, तीर्थयात्रियों का जलूस अपने रास्ते पर चल रहा था और उसने, एक स्थान पर, जहॉ हमने रात को पार जाने का प्रयास करते हुए, व्यर्थ ही घण्टों खर्च किए थे, पानी को इतनी यथार्थता के साथ पार किया। दुर्भाग्यवश, हम नहीं देख सके कि उन्होंने इसका प्रबंध कैसे किया, चूँकि पेड़ों ने हमारे वास्तविक स्थान की दृष्टि को रोक दिया था। परंतु, समानरूप से वर्णनातीत, कुछ दूसरी चीज भी घटित हुई। हमने देखा कि बाद में एक सुबह, तीर्थयात्रियों का प्रवाह रुक गया। अगली शाम को हमने फिर से, उसे उसी स्थान से पार करने का प्रयास किया और फिर पाया कि ये असंभव था। अंत में मुझे ऐसा लगा कि हमारे सामने, गलते हुए बर्फ के पानी से पोषित होती हुई एक छोटी नदी है, जो अपने सबसे ऊँचा निकास, दोपहर से देर तक रात तक जारी रखती है। जल्दी सबेरे, पानी का तल निम्नतम होगा।

जैसा कि मैंने अनुमान किया था, वैसा ही हुआ। जैसे ही हम, भोर के पहले उजियारे में, धारा के बगल से खड़े हुए, हमने पेड़ के तने का, एक अत्यधिक अस्थाई प्रकार का, धारा में आधा डूबा हुआ पुल देखा, सावधानीपूर्वक, अपने आपको संतुलित करते हुए, हमने दूसरी तरफ को पार किया। दुर्भाग्यवश, वहॉ दूसरी धाराऐं भी थीं, जो हमको इसीप्रकार, परिश्रमपूर्वक ढंग से पार करनी पड़ीं। अभी मैंने, इनमें से सबसे अंतिम को पार ही किया था, कि तभी तने की चोटी पर, मार्चीस फिर फिसला और पानी में गिर गया–सौभाग्यवश या अन्यथा, वह तेज धारा के द्वारा बहा ले जाया गया होता। पूरी तरह भीगा हुआ और पूरी तरह थका हुआ वह, आगे चलने के लिए प्रेरित नहीं किया जा सका। मैंने उसे, कम–से–कम, छिपाव वाले स्थान तक जाने के लिए मजबूर किया परंतु उसने केवल, अपनी गीली चीजों को सुखाने के लिए फैला दिया और आग जलाना प्रारंभ किया। तब पहली बार मैंने खेद अनुभव करना प्रारंभ किया कि, मैंने उसे पीछे छोड़ देने और अकेले चलने की, बार–बार की उसकी प्रार्थनाओं को नहीं सुना था। मैंने हमेशा जोर डाला था कि, चूँकि हम साथ–साथ भागे हैं, हमें साथ–साथ रहना चाहिए।

जब हम बहस कर रहे थे, एक भारतीय हमारे सामने आकर खड़ा हुआ, जिसने जमीन पर फैलाई हुई, स्पष्टरूप से यूरोपीय मूल की, विभिन्न वस्तुओं पर एक नजर डालने के बाद, हमसे प्रश्न पूछना शुरू किया। केवल तभी, मार्चीस ने एहसास किया कि हम किसी खतरे में पड़ चुके हैं। उसने जल्दी से अपनी चीजों को फिर रखा, परंतु हम मुश्किल से कुछ कदम दूर ही चले होंगे, जबकि हमें एक दूसरे भारतीय द्वारा रोका गया। दस सैनिकों की एक टुकड़ी का नेतृत्व करता हुआ, लंबा–चौड़ा, एक अलग तरह से दिखता हुआ आदमी। अच्छी खासी अंग्रेजी में, उसने हमारे परमिट के सम्बंध में पूछा। हमने न समझ पाने का बहाना किया और कहा, हम कश्मीर के तीर्थयात्री थे। एक क्षण के लिए उसने, इसके ऊपर सोचा और तब एक हल निकाला, जिसने हमारे भागने की आशाओं की इतिश्री कर दी। उसने कहा, वहॉ पड़ोस के घर में दो कश्मीरी थे और यदि हम, अपने बारे में उन्हें

समझा सके, तो हम अपने रास्ते पर जा सकते हैं। परंतु शैतानी दुर्भाग्य ने, एक क्षण दूर ही, हमारे एकदम पड़ोस में, दो कश्मीरियों को ला दिया था ? हमने इस अन्यथा का केवल उपयोग किया था, क्योंकि इस क्षेत्र में कश्मीरियों का पाया जाना, ये सर्वाधिक असम्भावना थी।

जिन दो लोगों के सम्बंध में उसने कहा, वे बाढ़ का नुकसान संभालने वाले विशेषज्ञ थे, जो वहॉ कश्मीर से बुलाये गए थे। जैसे ही हम उनके सामने खड़े हुए, हमने महसूस किया कि, हमारे छिपाव के खुलने का समय आ चुका है। चूँकि हम इस मामले में सहमत हुए थे, मैंने मार्चीस के साथ फ्रांसीसी भाषा में बोलना शुरू किया, तभी फ्रांसीसी में बोलते हुए भी, तुरंत भारतीय अंदर टूट पड़ा और उसने हमें अपने सामानों को खोलने के लिए कहा। जब उसने मेरी अंग्रेजी–तिब्बती व्याकरण को देखा, उसने कहा, हम ठीक–ठीक बता दें कि हम कौन थे। तब हमने स्वीकार किया कि हम भागे हुए बंदी थे परंतु हमने अपने राष्ट्रीयता नहीं बताई।

इसके शीघ्र बाद, हम एक आरामदायक कमरे में चाय पीते हुए बैठे थे, परंतु पूरे समय में मैंने कड़वी निराशा महसूस की। ये हमारे भागने का अठारहवॉ दिन था और हमारी सभी वंचनाऐं और प्रयास, अकारण ही नष्ट हो रहे थे। वह आदमी, जिसने हमसे प्रश्न किए थे, टिहरी–गढ़वाल जिले में, वन विभाग का प्रमुख था। उसने वन विज्ञान, फ्रांसीसी और जर्मनी स्कूलों में अंग्रेजी में पढ़े थे, और वह तीनों भाषाओं को भलीभांति जानता था। ये पिछले सौ वर्षों के अंदर, बाढ़ के कारण, अपने आपमें एक सबसे भयंकर तबाही थी कि, वह इस क्षेत्र में निरीक्षण के लिए आया था। उसने ये जोड़ते हुए, अपनी उपस्थिति पर, मुस्कराते हुए, खेद व्यक्त किया कि हम लोगों की सूचना उसे मिल गई थी, और उसे अपना कर्त्तव्य पूरा करना था।

आज जब मैं उन परिस्थितियों की श्रृंखला के ऊपर विचार करता हूँ, जिन्होंने हमको पकड़वाया, तो मैं ये महसूस करते हुए असहाय पाता हूँ कि अपने सामान्य दुर्भाग्य की तुलना में, हम किसी बुरी चीज के शिकार थे और कि हम अपने भाग्य को उलट नहीं सकते थे। वैसे ही, मैं एक मिनट के लिए भी संदेह नहीं कर सका कि मैं दुबारा भाग सकूँगा। मार्चीस, तथापि, पूरी तरह शोषित हो जाने की ऐसी अवस्था में था कि उसने दूसरे प्रयास के विचार को ही पूरी तरह छोड़ दिया था। ये जानते हुए कि मेरे पास कितनी कमी थी, एक अत्यधिक सहयोगी के ढंग से, उसने मुझे अपने धन के अधिक भाग के लिए मनाया। मैंने थोपे गए अवकाश का, दिल से भरकर खाने मे सदुपयोग किया क्योंकि, पिछले कुछ दिनों में, हमने मुश्किल से ही कुछ खाया था। जंगल के अधिकारी के रसोइयों ने, हमको लगातार खाने की आपूर्ति की, जिसमें से आधा, मैं हमेशा अपने पिट्ठू बैग में डाल देता था। शाम में जल्दी ही, हमने कहा कि हम थक गए थे और सोना चाहते थे। हमारे शयनकक्ष का दरवाजा, बाहर से ताला डाल कर बंद कर दिया गया और जंगल के अधिकारी ने अपना बिस्तर, हमारी खिड़की के सामने, बरामदे में लगा लिया ताकि उस रास्ते से हमारे भागने के किसी प्रयास को, रोका जा सके। तथापि, वह बहुत थोड़े समय के लिए दूर हुआ, और मार्चीस और मैंने, एक नकली झगड़ा प्रारंभ करने के मौके का फायदा उठाया। ऐसा कहने के लिए, मार्चीस ने दोनों तरफ की भूमिकाऐं निभाईं, गालियॉ ऊँचे स्वर में और तब नीचे स्वर में चिल्लाते हुए, जबकि मैंने अपने आपको, पिट्ठू बैग और सब कुछ, जंगल के अधिकारी के बिस्तर पर पड़ा छोड़ते हुए, खिड़की में से बाहर कुदा दिया और तब बरांडे के आखिर तक दौड़ा। अंधेरा घिर आया था और कुछ सेकण्ड प्रतीक्षा करने के बाद, जब तक कि संतरी घर के कोने की तरफ गायब नहीं हुए, मैं आधारतल के बारह फुट नीचे तक गिर चुका था। जमीन, जिसमें मैं गिरा, कठोर नहीं थी और इससे बहुत कम आवाज हुई; एक क्षण में, मैं ऊपर उठा और बगीचे की दीवार के ऊपर और तब एकदम अंधेरे जंगल में गायब हो गया। मैं स्वतंत्र हो गया था।

हर चीज शांत थी। मेरी उत्तेजना के बावजूद, मैं इस विचार पर हॅस नहीं सका कि मार्चीस, अभी–भी, मुझे योजना के अनुसार गालियॉ दे रहा था, जबकि खिड़की के सामने अपने बिस्तर पर से, वन अधिकारी हमारे ऊपर नजर रखे हुए थे।

तथापि, मुझे भेड़ों के झुण्ड में से, जल्दी में चलते और दौड़ते रहना पड़ा। इससे पहले कि मैं वापस आ पाता, भेड़ों के रखवाले कुत्ते ने, मेरी पेन्ट के बैठने के स्थान पर, दॉत गढ़ा दिए और मुझे तब तक नहीं जाने दिया जब तक कि उसने, उसमें से एक टुकड़ा काट कर बाहर नहीं निकाल लिया। मैं अपने आतंक में, तेजी से दौड़ा परंतु पाया कि जो सड़क मैंने चुनी थी, वह मेरे हिसाब से अत्यधिक ढालू थी और इस प्रकार मुझे फिर वापस लौटना पड़ा और जब तक मैंने दूसरा रास्ता खोजा, मैं भेड़ों के आसपास ही रेंगता रहा। आधी रात के तुरंत बाद, मुझे स्वीकार करना पड़ा कि मैं फिर गलत चला हूँ। इसलिए एक बार फिर, मुझे श्वांसरहित शीघ्रता से, कुछ मीलों तक वापस जाना पड़ा। मेरे लक्ष्यहीन घूमने ने, अपने चार घण्टे बरबाद कर दिए थे और दिन पहले ही निकल

आया था। लगभग बीस गज दूर, एक कोने की ओर मुड़ते हुए, एक रीछ की निगाह, मेरे ऊपर पड़ी। सौभाग्य से, वह मेरे ऊपर ध्यान दिए बिना, जगह से चला गया।

जब पूरी तरह उजाला हो गया, यद्यपि देहात में आदमियों की बसाहट का कोई चिन्ह नहीं था, मैंने फिर से अपने आपको छिपाया। मैं जानता था कि तिब्बत की सीमा तक पहुॅचने से पहले, मुझे एक (ऐसे) गॉव तक आना चाहिए, जिसके दूसरी तरफ स्वतंत्रता हो। मैं अगली पूरी रात चलता रहा और धीमे–धीमे आश्चर्य करने लगा कि मैं उस भाग्य निर्णायक गॉव तक क्यों नहीं पहुॅचा। मेरे नोट्स के अनुसार, ये नदी के दूर के किनारे पर स्थित था और ये पुल के पास वाली बगल से जुड़ा हुआ था। मैंने आश्चर्य किया, क्या कहीं मैं इसे पहले छोड़ तो नहीं चुका परंतु इस विचार के साथ कि, कोई मुश्किल से ही किसी गॉव को चूक सकता था, मैंने स्वयं को सांत्वना दी। इसलिए मैं पूरी तरह सूर्य की रोशनी हो जाने के बाद भी, चिंतामुक्त हो कर बढ़ता चला गया।

ये मेरी बरबादी का कारण था। जैसे ही मैं बड़े पत्थर की चट्टानों के आसपास आया, मैंने अपने आपको ठीक, एक गॉव के एक घर के नीचे पाया, जिसके सामने इशारा करते हुए लोगों की भीड खड़ी थी। ये स्थान मेरे नक्शे पर गलती से दिखाया हुआ था और चूंकि मैं रात में दो बार अपने रास्ते को भूल चुका था, मेरा पीछा करने वाले लोगों को मुझ तक पहुॅचने का समय मिल गया। मुझे तत्काल ही घेर लिया गया और समर्पण करने के लिए कहा गया, जिसके बाद मैं एक घर में ले जाया गया और मुझे नाश्ता कराया गया। यहॉ मैं, एक वास्तविक तिब्बती नोमाड से पहली बार मिला, जो अपनी भेड़ों के झुण्ड और नमक के भारों के साथ, भारत में घूमने को जाते हैं और वहॉ से जौ लादकर लौटते हैं। मुझे तिब्बती मक्खन वाली चाय, त्सम्पा, इन लोगों के सहखाद्य (staple food), जिसके ऊपर मैं बाद में वर्षों तक जिंदा रहा, के साथ, दी गई। इसके साथ मेरे पहले संपर्क ने, मेरे पेट को अत्यधिक विरोधाभास में, प्रभावित किया।

मैंने निरर्थक रूप से, गॉव, जो नेलांग कहलाता था, में, पलायन के प्रयास का विचार करते हुए, कुछ रातें बिताईं, परंतु मैं भौतिकरूप से अत्यधिक थका हुआ था और अपनी क्रिया को अमली जामा पहनाने में मानसिक रूप से भी हताश था।

वापसी यात्रा, मेरी पहले यात्रा की तुलना में, एक आनंददायक यात्रा प्रतीत हुई। मुझे कोई गट्ठर नहीं लादना पड़ा और मेरी अच्छी तरह देखभाल की गई। रास्ते में, मैं मार्चीस को मिला, जो जंगलात के अफसर के साथ, एक अतिथि के रूप में उसके निजी बंगले में रुका हुआ था, मुझे उनके साथ मिलने का निमंत्रण दिया गया। और जब कुछ दिन बाद, हमारी कंपनी के युद्धबंदी शिविर में, दो दूसरे भगोड़े सदस्य–नंगा पर्वत अभियान में मेरा सहयोगी, पीटर आउफस्नाइटर और एक निश्चित कुलीनवर्ग पादरी अंदर लाये गए, मुझे आश्चर्य हुआ।

इस बीच, मैंने अपने मन को, एक बार फिर, पलायन की योजनाओं के साथ घेरना शुरू कर दिया था। मैंने एक भारतीय संतरी, जो हमारे लिए खाना पकाता था और आत्मविश्वास की प्रेरणा देता हुआ प्रतीत होता था, के साथ दोस्ती बनाई। मैंने अपने नक्शे, अपनी कम्पास (compass) और अपना धन उसे दे दिए, चूॅकि मैं जानता था कि, हमको शिविर में वापस भेजे जाने से पहले, हमारी तलाशी ली जायेगी और तब अपने साथ में इन चीजों की तस्करी करना असंभव होगा। इसलिए मैंने भारतीय को कहा कि, मैं आगामी बसंत में फिर आऊॅगा और अपने सामानों को उसके पास से वापस प्राप्त कर लूॅगा। शपथपूर्वक उसने ऐसा करने का वायदा किया। वह मई में जाने वाला था और मेरी प्रतीक्षा कर रहा था। इसलिए अब हमें शिविर में वापस जाना पड़ा और अब केवल एक बार फिर से स्वतंत्र होना, ये मेरा संकल्प था, जिसने मुझे अपनी निराशा की कटुता को झेलने योग्य बनाया।

मार्चीस अभी–भी बीमार था और चल नहीं सकता था, इसलिए उन्होंने हमें सबारी के लिए एक घोड़ा दिया। अपने रास्ते पर, टिहरी–गढ़वाल के महाराजा के द्वारा स्वागत किए जाने से, जिन्होंने हमारा अच्छा अतिथि सत्कार किया, सहमतिपूर्ण दूसरा व्यवधान मिला। तब हम, अपने उलझन भरे, कटीले तार वाले शिविर में वापस लौट आए।

मेरे भागने की घटना ने, व्यक्तिगतरूप से मेरे ऊपर, दिखने वाले प्रभाव छोड़े थे, जो तब प्रकट हुए, जब मैंने वापसी रास्ते पर, एक गर्म झरने में स्नान किया। वहॉ मैंने पाया कि, मेरे बाल एक ही बार में, पसों भरकर, मेरे हाथ में आ गए। ऐसा लगता है कि मैंने अपना भारतीय भेष छिपाने के लिए, जो रंजक (dye) उपयोग में लिया था, वह घातक था।

मेरे अनिच्छुक बाल झड़ने और सभी थकानों, जिसमें हो कर मैं गुजरा था, के परिणामस्वरूप, जब मैं शिविर में पहुॅचा, मेरे सहयोगियों ने मुझे पहचानना मुश्किल पाया।

पलायन

तुमने एक दुस्साहसपूर्ण पलायन किया। मुझे खेदपूर्वक, तुम्हें अट्ठाईस दिन देने पड़ रहे हैं,'' शिविर में हमारे वापस लौटने पर, अंग्रेज कर्नल ने कहा। मैंने अड़तीस दिनों की स्वतंत्रता का आनंद लिया था और अब मुझे केवल अट्ठाईस दिन नजरबंदी में गुजारने थे। ये भागकर बाहर जाने का नियमित दंड था। तथापि, चूँकि अंग्रेज ने मेरे साहसी प्रयास का, क्रीड़ात्मक दृष्टिकोण लिया था, मुझे कठोर सजा की अपेक्षा, कम सजा दी गई।

जब मैंने अपनी सजा की अवधि को समाप्त किया, मैंने सुना कि शिविर के दूसरे हिस्से में, मार्चीस ने भी वही भाग्य झेला था। बाद में हमको, अपने अनुभवों के ऊपर बातचीत करने के मौके मिले। मार्चीस ने मेरे भागने के अगले प्रयास में, मुझे मदद करने का वायदा किया परंतु मेरे साथ आकर जुड़ने का विचार नहीं बनाया। बिना कोई समय गंवाये, मैंने एक बार फिर, नये नक्शे बनाना और अपने पिछले पलायन से अनुभव और उनके निष्कर्ष निकालना शुरू कर दिया। मैं सहमत होता प्रतीत हुआ कि मेरा अगला प्रयास सफल होगा और इस बार, मैंने अकेले ही जाने का निश्चिय किया।

अपनी तैयारियों के साथ व्यस्त रहते हुए, मैंने सर्दियों को तेजी से गुजरते हुए पाया, अगले ''पलायन सत्र (escape season)'' के पहले तक, मैं पूरी तरह तैयार था। इस समय मैं जल्दी ही शुरू करना चाहता था, ताकि मैं नेलांग (Nelang) गॉव से गुजर सकूँ, जबकि यह अभी आबाद भी नहीं हो। और अपना सामान, जो मैंने भारतीय के पास छोड़ा था, के वापस लाने का विचार नहीं किया, इसलिए, जिनकी मुझे अत्यधिक आवश्यकता थी, उनकी मैंने स्वयं के लिए, नई चीजों की ताजी आपूर्ति प्राप्त की। मेरे साथियों की उदारता, उनके सहयोगी होने का एक और मर्मस्पर्शी प्रमाण था, उनमें से कई कठोर भी थे, जिन्होंने, मेरी पोशाक को सहयोग करने के लिए, मुक्तहस्त से अपना धन व्यय किया।

मैं अकेला युद्धबंदी नहीं था जो भागना चाहता था। मेरे दो सबसे अच्छे मित्र, रोल्फ मेगेनर (Rolf Magener) और हाइन्स वॉन (Heins von) भी भागने की तैयारियों में लगे हुए थे। दोनों धाराप्रवाह अंग्रेजी बोलते थे और उन्होंने, भारत में हो कर बर्मा के सीमान्त तक, अपने रास्ते पर काम करने का लक्ष्य किया था। वॉन, पिछली बार, दो साल पहले, एक साथी के साथ भाग चुका था और बर्मा लगभग पहुँच ही चुका था, परंतु सीमा से ठीक पहले पकड़ लिया गया। दूसरे प्रयास की अवधि में, उसके मित्र के साथ एक मारक दुर्घटना हुई। तीन या चार दूसरे युद्धबंदियों ने, जैसा उसने बताया, भागने की योजना बनाई। अंत में, हम पूरे सात लोग, एक साथ हो गए और जमीन को तोड़ कर, इस आधार पर एक साथ ही भागने का निर्णय किया, कि एक के बाद एक, व्यक्तिगत प्रयास, संतरियों की निगरानी को बढ़ा देते थे और जैसे–जैसे समय गुजरता जाता, भागने को कठिन से कठिनतर बना देते थे। यदि बड़े पैमाने पर ये पलायन सफल हो जाता, हम में से प्रत्येक, एक बार फिर, शिविर के बाहर होता, अपने–अपने अलग–अलग रास्ते पर होता। पीटर आउफस्नाइटर ने, इस बार अपना साझीदार ब्रूनो ट्राइपिल (Bruno Treipel), जो साल्जबर्ग (Salzburg) से था, को बनाया और बर्लिन से दो साथियों, हान्स कॉप (Hans Kopp) तथा सेटलर (Sattler), ने मेरी तरह से, तिब्बत में भागने की इच्छा की।

हमारा शून्यकाल, 29 अप्रैल 1944 को दोपहर 2 बजे निश्चित किया गया। हमारी योजना, अपने आपको, कांटेदार तार की मरम्मत करने वाले एक प्रभाग के रूप में छिपाने की थी। ऐसे काम करने वाले दल, सामान्य निगरानी में थे। उसका कारण ये था कि, सफेद चींटियॉ, ''दीमक'' बड़ी संख्या में खंभों को, जो तारों को साधते थे, हमेशा खाने में व्यस्त रहती थीं और उनको बदलकर लगातार नया करना पड़ता था। कामगार दल, एक अंग्रेज ओवरसियर के साथ, भारतीयों को मिला कर बनाया जाता था।

निश्चित किए हुए समय पर, हम न्यूनतम निगरानी किये जाने वाले तार के गलियारों में से एक में, एक छोटी झोपड़ी में मिले। यहॉ शिविर के भेष बदलने वाले विशेषज्ञों ने, हमको पल भर में ''भारतीयों'' के रूप में बदल दिया। वॉन हावे और मेग्नर को अंग्रेज अधिकारी की वेशभूषा मिल गई। हम भारतीयों के सिर मुडे हुए थे और पगड़ी बांधे हुए थे। जब हमने एक दूसरे की ओर देखा, जैसी स्थिति थी उसके अनुसार, हम गंभीर, हॅसने में सहायता नहीं कर सकते थे। हम एक मेले में जाने वाले की तरह से स्वांग कर रहे थे। हम में से दो, एक सीढ़ी को ले जा रहे थे, जो एक रात पहले, कटीले तार की बाड़ में, एक निगरानी विहीन स्थान पर ले जाई गई थी। हमने लंबे कंटीले तारों का एक रोल (roll) भी प्राप्त कर लिया था और उसे एक लट्ठे के ऊपर लटका दिया था

और हमारे सामान, बंडलों में, जो बुरे नहीं लगते थे, अपनी सफेद पोशाकों के अंदर सजा कर रखे गए थे जैसे कि भारतीय, हमेशा चीजों को अपने साथ ले जाते थे, हमारे दो ''अंग्रेजी अफसर'' अत्यधिक यथार्थता के साथ व्यवहार कर रहे थे। वे कच्चे नक्शों के रोल, अपनी बांहों में दबा कर अकड़ते हुए और अपने बेंतों को हिलाते हुए, ले जा रहे थे। हमने पहले से ही बाड़ में एक सेंध लगा दी थी, जिसमें हो कर, हम एक के बाद एक, बिना देखभाल किए गए मार्ग पर, जो शिविर के विभिन्न भागों को अलग करता था, खिसक रहे थे। वहॉ से मुख्यद्वार, लगभग तीन सौ गज दूर होगा। हमने किसी का ध्यान अपनी तरफ आकर्षित नहीं किया और केवल एक बार रुके, जबकि सार्जेंट मेजर, अपनी साईकिल पर सवार हो कर, मुख्य प्रवेशद्वार पर आया। हमारे ''अधिकारी'' ने इस क्षण को, तार को नजदीकी से जॉचने में लगाया। इसके बाद, बिना संतरियों की निगाह में आये हुए, चिमगादड़ की तरह, पलक झपकाते, हम दरवाजे में से गुजर गए। उन्हें चुस्ती के साथ सेल्यूट करते हुए और स्पष्टरूप से किसी के ऊपर संदेह न करते हुए देखना, आनंददायक था। हमारा सातवॉ आदमी, सेटलर जो अपनी झोपड़ी को छोड़ चुका था, हमारे भी थोड़ा बाद में आया। उसका चेहरा काला था और वह कोलतार के एक डिब्बे को जोर से हिला रहा था। संतरियों ने उसको भी जाने दिया और उसने हमको, केवल दरवाजे के ठीक बाहर पकड़ लिया।

जैसे ही हम संतरियों की निगाह के बाहर हुए, हम झाड़ियों में गायब हो गए और अपने छद्म भेषों से छुटकारा पा लिया। हमने अपनी भारतीय पोशाकों में, जब बाहर की यात्रा पर हों, अपनी सामान्य वेशभूषा, खाकी पहिन ली। हमने एक दूसरे को, कुछ शब्दों में, अलविदा कहा। वॉन हावे, मेग्नर और मैं, एक साथ कुछ मील दूर तक दौड़े और तब, हमारे रास्ते अलग–अलग हो गए। मैंने पिछली बार वाला वही रास्ता चुना और जितना तेजी से मैं चल सकता था, शिविर और अपने बीच, लंबी से लंबी संभव दूरी बनाते हुए, अगली सुबह तक चला। इस बार मैं, केवल रात में यात्रा करने और दिन में लेटे रहने के अपने संकल्पों से नहीं हटने पर दृढ़प्रतिज्ञ था। नहीं! इस बार मैं कोई जोखिम नहीं उठाना चाहता था। मेरे चार साथी, जिनके लिए भी, तिब्बत लक्ष्य था, एक दल के रूप में चले और उन्होंने मुख्य सड़क, जो मन्सूरी के रास्ते गंगा की घाटी में जाती थी, का उपयोग करने में पूरी शक्ति लगा दी। मैंने इसको अत्यधिक जोखिम भरा समझा और जमुना और अगलर घाटियों में हो कर, पहिले वाले रास्ते को ही पकड़ा। पहली रात्रि के दौरान मैं, अगलर को चालीस बार पार कर चुका होऊॅगा। जब सुबह हुई, मैं फिर वहीं ठीक उसी स्थान में लेट गया, जिसने पिछले साल, पहली बार में यहॉ पहुॅचने तक, मुझसे चार दिन लिए थे। स्वतंत्र होने पर प्रसन्न होते हुए, मैंने अपने क्रियान्वन पर, संतुष्टि अनुभव की, यद्यपि, मेरे पूरे शरीर पर खरोंचें और घसीटन थीं और अपने भारी भार के कारण, मैं एक अकेली रात में नये टेनिस शू पहिनकर चल रहा था।

मैंने अपने पहले दिन का शिविर, नदी के किनारे, दो बड़ी चट्टानों के बीच चुना परंतु, मैं मुश्किल से ही अपनी चीजों को खोल पाया, तभी बंदरों की एक सेना वहॉ आ धमकी। उन्होंने मुझे ताड़ लिया और ढ़ेलों के साथ मेरे ऊपर झपटने लगे। उनके शोर से परेशान हुआ मैं, तीस भारतीयों की एक जमात को देखने में असफल रहा, जो नदी के किनारे से दौड़ती हुई आ रही थी। मैं उन्हें केवल तभी देख पाया, जब वे मेरे छिपने के स्थान के, खतरनाक ढंग से, एकदम समीप पहुॅच चुके थे। मैं अभी भी नहीं जानता था कि क्या वे मछुआरे थे या हम भगोड़ों की तलाश में निकले हुए आदमी। किसी भी मामले में, मैं मुश्किल से ही विश्वास कर सकता था कि उन्होंने मुझे नहीं देख पाया, क्योंकि ज्यों ही वे मेरे पास से गुजरे, वे मुझसे केवल कुछ गज की दूरी पर थे। मैंने फिर से सांस ली, परंतु इसे चेतावनी के रूप में लिया और शाम तक, अंधेरा घिरने तक, बिल्कुल नहीं हिलते हुए, अपने शरणस्थल में ही बना रहा। मैंने पूरी रात अगलर का पीछा किया और अच्छी प्रगति की। मेरे अगले शिविर ने कोई उत्तेजना नहीं पैदा की, और एक अच्छी नींद के साथ, मैं अपने आपको तरोताजा करने में सफल हुआ। शाम के करीब मैं अधीर हो गया और शिविर को बहुत पहले ही तोड़ दिया। मैं केवल कुछ सौ गजों के लिए ही चल पाया होऊॅगा, जब मैं कुऐं के ऊपर एक भारतीय औरत से टकरा गया। वह डर से चीखी, उसने घड़े को गिर जाने दिया और पड़ोस के घरों की तरफ दौड़ी। उसकी तुलना में, मैं कोई कम भयभीत नहीं था और एक नाले में तेजी से दौड़ा। जहॉ मुझे सीधी, खड़ी चढ़ाई चढ़नी पड़ी और यद्यपि, मैं जानता था कि मैं सही दिशा में जा रहा था, मेरे घुमावदार मार्ग (diversion) ने एक दुःख भरा चक्कर प्रस्तुत किया, जिसने कई घण्टों बाद मुझे वापस वहीं ला दिया। मुझे नागतिब्बा (Nag Tibba) पर चढ़ना पड़ा, जो दस हजार फुट से अधिक ऊॅचा पहाड़ है, जो अपने ऊपरी क्षेत्र में पूरी तरह वीरान और जंगल से पूरी तरह भरा हुआ है। जब मैं भोर के अंधियारे में भटक रहा था, मैंने एक तेंदुऐ को अपनी तरफ देखते हुए पाया। चूॅकि मैं पूरी तरह असहाय था, मेरे हृदय ने धड़कना, लगभग बंद कर दिया। मेरा एकमात्र हथियार, एक लंबा चाकू था, जिसको शिविर के लुहार ने, मुझे जल्दी में बनाकर दिया

था। मैं उसे एक छड़ी के आवरण में रखकर लाया था। उछलने के लिए तैयार, तेंदुआ जमीन से पंद्रह या अधिक फुट की ऊँचाई पर, एक मोटी बैंच के ऊपर बैठ गया। मैंने बिजली की तेजी से सोचा कि सबसे अच्छी, करने लायक बात क्या हो सकती है; तब अपने डर पर पर्दा डालते हुए, मैं अपने रास्ते पर स्थिरता से चला। कुछ नहीं हुआ, परंतु एक लंबे समय के लिए, मेरे अंदर मेरी पीठ में, एक विशेष अहसास भरा रहा।

अब तक मैं नागतिब्बा की कगार पर चलता रहा था और अब अंत में, मैं फिर से सड़क पर उलट पड़ा। मैं बहुत दूर नहीं गया होऊँगा तभी मुझे दूसरा आश्चर्य मिला। रास्ते के बीच में–खर्राटे भरते हुए कुछ लोग लेटे हुए थे! वे पीटर आउफस्नाइटर और उसके तीन साथी थे। मैंने उन्हें झकझोर कर जगाया और हम सभी ने एक सुरक्षित शरणस्थल का आश्रय लिया, जहॉ हमने, फिर से उसका, जो कि हमारे साथ रास्ते में गुजरा था, पुनरावलोकन किया। हम सभी सर्वोत्कृष्ट अवस्था में थे और मानते थे कि हमें तिब्बत में हो कर जाना चाहिए। अपने मित्रों के साथ में दिन गुजर जाने के बाद, मैंने शाम को अकेला जाना मुश्किल ही पाया, परंतु मैं अपने संकल्प के प्रति दृढ़ बना रहा। उसी रात को मैं गंगा पर पहुँच गया। मैं पॉच दिन तक दौड़ता रहा था।

मंदिरों के शहर उत्तरकाशी में, जिसका मैंने प्रथम पलायन के सम्बंध में उल्लेख किया था, मुझे अपने जीवन के लिये दौड़ना पड़ा। मैं एक घर से ठीक गुजरा ही था, तभी दो आदमी आए और उन्होंने मेरे पीछे दौड़ना शुरू किया। मैं खेतों में हो कर सीधा भागता चला गया और गंगा के किनारे जा कर रुका और वहॉ अपने आपको दो बड़े–बड़े चट्टानी पत्थरों के बीच में छिपाया। सब कुछ शांत था और ये स्पष्ट था कि मैं अपने पीछा करने वालों से बच गया था, परंतु एक लंबे समय के बाद, मैंने अर्धरात्रि को तीखी चॉदनी में बाहर आने का दुस्साहस किया। मेरे लिए, इस स्थिति में एक परिचित रास्ते पर चलना आनंददायक था और ऐसी तेज प्रगति के ऊपर, मेरी प्रसन्नता ने मेरे भारी बोझ को, जो मैं लादे हुए था, भुला दिया। ये सही है कि मेरे पैर बहुत चोटिल हो गए थे, परंतु वे मुझे, दिन के समय में आराम की स्थिति में, फिर से सामान्य होते दिखे। मैं एक ही बार में, अक्सर दस घंटों के लिए सो जाता था।

आखिर में, मैं अपने भारतीय मित्र, जिसको मैं पिछले साल अपना धन और असबाब सौंप गया था, के खेत वाले घर पर पहुँचा। अब ये मई था, और हमने इस पर अपनी सहमति बताई थी कि, उसे इस महीने में, किसी भी दिन, अर्धरात्रि में, मेरी आशा करनी चाहिए थी। मैं जानबूझ कर सीधा उसके घर नहीं गया और कुछ भी करने से पहले, मैंने अपने पिट्ठू बैग को छिपा दिया, क्योंकि, धोखा दिये जाने की संभावना, संभावनाओं के परे भी नहीं थी।

चंद्रमा, खेत वाले घर पर पूरा चमक रहा था, इसलिए मैंने अपने आपको, पशुओं के बांधने के स्थान के अंधेरे में छिपाया और अपने मित्र का नाम नरमी से दो बार पुकारा। दरवाजा फटाक से खुल गया, और मेरा दोस्त दौड़ कर बाहर आया, जिसने अपने आपको जमीन पर पटक दिया और मेरे पैरों को चूमा। खुशी के ऑसू उसके गालों पर लुढ़क पड़े। वह मुझे घर से दूर, अपने कमरे की तरफ ले गया, जिसके दरवाजे में एक बड़ी चाबी लटक रही थी। यहॉ उसने चीड़ की लकड़ी की मशाल जलाई और लकड़ी का एक भण्डार खोला। जिसके अंदर मेरी सारी चीजें, सावधानीपूर्वक, एक सूती थैले में सिलकर बंद की हुईं थीं। उसकी बफादारी पर गहराई से प्रकाश डालते हुए, मैंने हर चीज को खोला और उसे इनाम दिया। आप अनुमान कर सकते है कि मैंने खाने का, जो उसने मेरे सामने रखा, आनंद लिया। मैंने उसे किराने का सामान और एक ऊनी कम्बल, अगली रात से पहले, लाने के लिए कहा। उसने ऐसा करने का वायदा किया और इसके साथ–साथ उसने मुझे, हाथ के बुने हुए दस्तानों का एक जोड़ा और एक शॉल भी भेंट किया।

अगले दिन, मैं पड़ोस के जंगल में सोया और शाम को अपनी चीजों को लेने के लिए आया। मेरे दोस्त ने मुझे दिलखुश खाना खिलाया और मेरे रास्ते पर कुछ दूर तक मेरे साथ गया। उसने मेरे सामान में से कुछ को ढोने के लिए अनुरोध किया, क्योंकि वह कम खाना खाये हुए था और मुश्किल से ही मेरे साथ चल पा रहा था, मैंने उसे शीघ्र ही वापस कर दिया और दोस्ताना बिदाई के बाद, मैंने अपने आपको फिर से अकेला पाया। ये लगभग अर्धरात्रि के थोड़ा बाद में ही हुआ होगा, जबकि मैं एक भालू से जा टकराया, जो मेरे मार्ग के बीच में, मेरे ऊपर गुर्राते हुए, अपने पिछले पैरों पर खड़ा हुआ था। इस समय गंगा के तेजी से दौड़ते हुए पानी की आवाज इतनी अधिक तेज थी कि, हमने एक दूसरे के समीप आने की आवाज नहीं सुनी। मैंने अपने पुराने बर्छे को उसके दिल में घोंपा, मैं कदम–कदम पीछे चलता गया, ताकि मैं उस पर अपनी निगाह जमा सकूँ। रास्ते के पहले मोड़ के आसपास, मैंने जल्दी से आग जलाई और जलती हुई लकड़ी को उठा लिया, मैंने इसे अपने सामने रखा और अपने दुश्मन को सामना करने के लिए आगे की ओर चला। परंतु कोने के आसपास आते हुए, मैंने रास्ता साफ

पाया और भालू भाग गया। बाद में तिब्बती किसानों ने मुझे बताया कि, भालू केवल दिन के समय आक्रामक होते है। रात में वे हमला करने से डरते हैं।

जब मैं नेलांग गॉव में, जहॉ पिछले साल, भाग्य ने मेरी आशाओं पर तुषारापात किया था, पहुॅचा, मैं पहले से ही, दस दिन की यात्रा पर था। इस बार, मैं एक महीना पहले आ गया था और गॉव अभी भी आबाद नहीं हुआ था परंतु, मेरी प्रसन्नता, शिविर के अपने चार साथियों को पा जाने की थी। जब मैं अपने भारतीय मित्र के साथ रुका हुआ था, उन्होंने मुझे आगे आकर पकड़ लिया था। हमने एक खुले घर में अपना ठिकाना बनाया और पूरी रात सोये। सैटलर, दुर्भाग्यवश, पहाड़ों की बीमारी से आक्रामित हुआ; वह दुःखी दिखाई दिया और उसने अपने आपको आगे के प्रयासों के लिए असहाय घोषित कर दिया। उसने वापस लौटने का निर्णय लिया परंतु तब तक समर्पण न करने का वायदा किया, जब तक कि दो दिन नहीं हो जाये, ताकि हमारा पलायन किसी खतरे में न पड़े। कॉप, जो पहलवान क्रेमर के साथ, पिछले साल, इस रास्ते से तिब्बत में घुस गया था, मेरे साथ, एक साझेदार के रूप में शामिल हुआ।

इसने हमारा चलने का सात दिन का, लम्बा समय लिया, तथापि, उससे पहले कि हम, अंतिमरूप से, दर्रे तक, जो भारत और तिब्बत के बीच सीमांत रेखा बनाता था, पहुॅचे। हमारी देरी हमारी गलत गणना के कारण हुई थी। तीरपानी (Teerpani), जो काफिलों का सुप्रसिद्ध केन्द्र है, छोड़ देने के बाद, हम तीन घाटियों पर अधिकांशतः पूर्व की ओर चले परंतु अंत में, हमें स्वीकार करना पड़ा कि हम अपना रास्ता भटक गये थे। अपनी लक्षित दिशा को पता करने के क्रम में, आउफस्नाइटर और मैं, पहाड़ी की चोटी पर, जहॉ से हम आशा करते थे कि, दूसरी तरफ के देहात का अच्छा दृश्य लिया जा सकेगा, चढ़ गए। यहॉ से, पहली बार, हमने तिब्बत को देखा, परंतु हम इस पूर्वानुमान का आनंद लेने के लिए अत्यधिक थक गये थे और लगभग अठारह हजार फुट की ऊॅचाई पर, हम ऑक्सीजन की कमी से पीड़ित हुए। अपनी विशाल निराशा के साथ, हमने तय किया कि, हमको तीरपानी वापस चले जाना चाहिए। वहॉ हमें पता लगा कि दर्रा, जिससे हम जाना चाहते थे, लगभग एक पत्थर उछालने की दूरी के बराबर, दूरी पर ही है। हमारी इस गलती ने तीन दिन गवॉ दिए और हमारे अंदर महानतम निराशा उत्पन्न की। हमें अपने राशन में कटौती करनी पड़ी और जब तक कि हम अगले आबादी रहित स्थान तक नहीं पहुॅच सके, विस्तार के आगे जाने की अपनी सामर्थ्य के संबंध में सर्वाधिक आशंका अनुभव की।

तीरपानी से हमारा रास्ता, धीमे से ऊपर चढ़े हरे–भरे चारागाहों में हो कर था, जिसमें हो कर गंगा की छोटी–छोटी धाराओं में से एक बह रही थी। एक क्रोधपूर्ण तेज धाराप्रवाह के रूप में घाटी के नीचे दौड़ता हुआ ये नाला, जो हमें एक हफ्ता पहले ज्ञात हुआ था, अब कोमलता से घास के मैदानों तक सीमित था। कुछ सप्ताहों में पूरा देहात, हरा–भरा हो जायेगा और आग से काले पड़े पत्थरों के द्वारा पहचानने योग्य, शिविर लगाने के अनेक स्थानों ने, स्वयं हम को, काफिलों के रूप में, जो गर्मियों के मौसम में भारत से तिब्बत के लिए दर्रों में हो कर गुजरते हैं, चित्रित किया। हल्के पैर वाले सांभर (chamois) की तरह की पहाड़ी भेड़ों का एक काफिला, हमारे सामने से गुजरा। वे शीघ्र ही हमें बिना देखे हुए, हमारी नजर से ओझल हो गईं। हाय! हमारे पेटों ने उनके लिये पश्चाताप किया। उनमें से किसी को हमारे खाना पकाने के बर्तनों में धीमे–धीमे उबाला जाना और इस प्रकार, पहली बार, हमें अपना पेट भर खाना खाने के लिए एक मौका देते हुए देखना, भव्य रहा होता।

दर्रे के आधार पर, हमने आखिरी बार भारत में शिविर लगाया। दिल भरे मांसाहारी रात्रिभोज, जिसका हम सपना देख रहे थे, के बदले में, हमने अपने आखिरी आटे के साथ पानी को मिलाते हुए और गर्म पत्थरों के ऊपर रखते हुए, बहुत कम मात्रा में टिकियों को भूना। ये एकदम कटु ठंड थी और घाटी में हो कर बर्फीली पहाड़ी तूफानों के विरुद्ध, जो हमारा एकमात्र बचाव बनी हुई थी, केवल एक पत्थर की दीवार थी।

अंत में सत्रह मई 1944 को, हम त्सांगचोपला (Tsangchokla) दर्रे की चोटी पर खड़े हुए। हम अपने मानचित्रों से जानते थे कि हमारी ऊॅचाई सत्रह हजार, दो सौ, फुट थी।

इस प्रकार, हम भारत और तिब्बत की सीमा पर थे, जहॉ तक हमारी इच्छाओं के स्वप्निल लक्ष्य थे।

यहॉ हमने, पहली बार, सुरक्षा के मामले में आनंद लिया, क्योंकि, हम जानते थे कि कोई भी अंग्रेज, हमको यहॉ गिरफ्तार नहीं कर सकता। हम नहीं जानते थे कि तिब्बती हमारे साथ कैसा व्यवहार करेंगे, परंतु चूॅकि हमारा देश, तिब्बत के खिलाफ युद्ध नहीं कर रहा था, हम विश्वासपूर्वक, किसी सौहाद्रतापूर्ण स्वागत की आशा रखते थे।

दर्रे की चोटी के ऊपर, पत्थरों और पवित्र बौद्धों द्वारा, अपने देवों को समर्पित किए गए प्रार्थनाध्वजों के ढेर

थे। यहॉ बहुत ठंड थी, परंतु हमने, एक लंबा विश्राम लिया और अपनी स्थिति को समझा। हमें भाषा की लगभग कोई जानकारी नहीं थी और बहुत थोड़ा धन हमारे पास था। खास कर के, हम भूखे मरने की कगार पर थे और हमको, जितना जल्दी संभव हो सके, मानवीय आबादी को तलाश लेना चाहिए था। परंतु जहॉ तक हम देख सके, वहॉ केवल पहाड़ी ऊॅचाईयॉ और वीरान घाटियॉ थीं। हमारे नक्शों ने निरर्थकरूप से इस क्षेत्र में, गॉवों की उपस्थिति बताई। हमारा अंतिम लक्ष्य, जैसा मैं पूर्व में उल्लेख कर चुका हूॅ–हजारों मील दूर, जापानी पंक्तियॉ थी। वह रास्ता, जिस पर हम चलने की योजना बनाई, हमको पहले पवित्र कैलाश पर्वत पर ले जाता था और वहॉ से ब्रह्मपुत्र के रास्ते होता हुआ, अंत में, हमको पूर्वी तिब्बत ले जाता था। कॉप, जो हमसे एक साल पहले तिब्बत में रहा था और जिसे देश से निकाला गया था, ने सोचा कि, हमारे नक्शों पर दिखाये गए संकेत, काफी कुछ हद तक सही थे।

एक तीखी उतराई के बाद, हम ओप चू (Op chu) के रास्ते पर पहुॅचे और दोपहर को वहॉ, लटकती हुई चट्टानी दीवारों पर, जो घाटी को एक केनियन (canyon) की भॉति बनाती थी, विश्राम किया। घाटी पूरी तरह से आबादी रहित थी और लकड़ी का एकमात्र खंभा प्रदर्शित कर रहा था कि, किसी समय आदमी वहॉ आऐ थे। घाटी एक प्रकार के भूसर पत्थर (sand stone) से बनी हुई थी, जिसपर हमको चढ़ना पड़ा। घाटी के दूसरी तरफ, पठार पर पहुॅचने से पहले, शाम हो चुकी थी और हमने बर्फीली ठंड में पड़ाव किया। पिछले कुछ दिनों में, कटीली झाड़ियों की शाखाऐं, जो हमें ढलान पर मिलती थीं, हमारा ईंधन रहीं थीं। वहॉ कुछ भी पैदा नहीं होता था, इसलिए हमें, परिश्रमपूर्वक इकट्ठे किए हुए, सूखे गोबर का उपयोग करना पड़ा।

अगले दिन दोपहर से पहले, हम अपने पहले तिब्बती गॉव, कासापुलिंग (Kasapuling) में पहुॅचे, जिसमें छै घर थे। स्थान पूरी तरह से वीरान दिखाई दे रहा था और जब हमने दरवाजे पर थपकी दी, कुछ नहीं हुआ। तब हमें पता लगा कि सभी ग्रामीण लोग, आसपास के अपने खेतों में जौ की बुबाई में व्यस्त थे। अपने पुट्ठों पर बैठते हुए, उन्होंने बीज के हर अलग–अलग दाने को नियमितता और मशीनों जैसी तेजी के साथ जमीन में गाड़ा। हमने उन्हें देखा और उसके साथ उनकी, इस अहसास के साथ कि, यदि कोलंबस, अपने पहले भारतीयों से मिला होता, तुलना की। क्या वे हमें मित्र अथवा शत्रु की तरह लेंगे ? एक क्षण के लिए, उन्होंने हमारे ऊपर ध्यान नहीं दिया। वहॉ, एक चुड़ैल की तरह दिखती हुई एक बुढ़िया औरत की चीख, एकमात्र ध्वनि थी, जो हमने सुनी। उन्होंने हमारी तरफ को निशाना नहीं साधा परंतु जंगली कबूतरों के झुण्ड की ओर देखा, जो नीचे की ओर, तत्काल रोपे गए दानों के ऊपर धावा बोल रहे थे। शाम तक गॉव वालों ने, मुश्किल से भी हमारे ऊपर नजर डालने की कृपा नहीं की। इसलिए हम चारों ने, एक घर के समीप, अपना शिविर लगाया और जब रात घिरी और लोग खेतों से आये, हमने उनके साथ व्यापार करने की कोशिश की। हमने उन्हें अपनी भेड़ों या बकरियों में से एक के लिए, धन देने का प्रस्ताव किया परंतु, उन्होंने इस व्यापार की ओर, अपने आप में कोई झुकाव प्रदर्शित नहीं किया। चूॅकि तिब्बत में कोई सीमांत चौकियॉ नहीं होती हैं, इसलिये पूरी आबादी को विदेशियों के विरुद्ध तैयार किया गया है और इसके लिए किसी भी तिब्बती पर, जो अपनी कोई भी चीज किसी भी विदेशी को बेचता है, गंभीर दण्ड लगता है। हम भूखे मर रहे थे और हमारे पास केवल उनको डराने के अलावा, कोई विकल्प नहीं था। यदि वे हमें आसानी से नहीं बेचते हैं, हमने उनके एक पशु को जबरदस्ती ले लेने की धमकी दी और हम चारों में से कोई भी, कमजोर नहीं दिखाई देता था। बहस करने का ये तरीका, अंतिमरूप से, सफल हुआ। इससे पहले कि उन्होंने, सबसे बूढ़ी एक बकरी को, व्यावहारिकरूप से बेशर्मीपूर्ण, ऊॅचे दामों पर हमें बेचा, एकदम घोर अंधकार हो चुका था। हम जानते थे कि हमको गुमराह किया जा रहा था, परंतु हमने इस पर हथियार डाल दिए, क्योंकि हम इस देश की सहृदयता को जीतने की इच्छा रखते थे।

हमने एक पशुशाला में बकरी को काटा और ये आधी रात तक भी नहीं हो पायी थी कि, हम आधे पके हुए मांस के ऊपर टूट पड़े।

हमने अगला दिन आराम करने और घरों को अधिक समीप से देखने में लगाया। ये सपाट छतों के साथ पत्थर के बने थे, जिन पर सुखाने के लिए ईंधन रखा गया था। तिब्बती, जो यहॉ रहते हैं, उनकी तुलना उन लोगों से, जो अंदरूनी भागों में रहते हैं, जिन्हें हमें बाद में जानने का मौका मिला, नहीं की जा सकती। तेज गर्मी, भारत से आने वाले काफिलों के परिवहन ने उन्हें खराब कर दिया था। हमने उन्हें गंदा पाया, गहरी खाल और कुटिल नेत्रों वाले, जिसके लिए उनकी प्रजाति प्रसिद्ध है, उस उत्सव का कोई चिन्ह नहीं। वे रूठकर, अपने दैनिक

कार्यों पर चले गए और तब किसी ने ये अनुभव किया कि उन्होंने इस वीरान देहात में, काफिलों से अपनी उपज का अच्छा पैसा कमाने के लिए ही, बसाहट की है। सीमांत के ये छः घर, जैसा मैं बाद में पुष्टि करने में सफल हुआ, बिना किसी बौद्धमठ के एक गॉव बनाते थे।

अगली सुबह, हमने इस सौहार्द्रताहीन इस स्थान को, बिना किसी अड़चन के छोड़ दिया। हम अभी तक अच्छी तरह से विश्राम पाये हुए थे, और कॉप के बर्लिन के मूल ठहाके ने, जो पिछले कुछ दिनों में ग्रहण से ग्रसित हो गया था, हमको फिर से हॅसा दिया। हमने पहाड़ी के नीचे जाने के लिए, एक छोटी घाटी में हो कर खेतों को पार किया। ऊपर की तरफ, अगले पठार के सामने की चढ़ाई के रास्ते पर, हमने अपने बोझों को हमेशा की तुलना में अधिक महसूस किया। शारीरिक थकान, मुख्यरूप से इस निराशा की प्रतिक्रियास्वरूप पैदा हुई थी, जो कि इस लंबे स्वप्नों के देश ने हमें दिए थे। हमें, सौहार्द्रतारहित लोगों के बीच, अवसाद की अवस्था में, जिसने हमको मुश्किल से ही तूफानों से बचाया, भूमि पर रात बितानी पड़ी।

अपनी यात्रा के एकदम प्रारंभ में, हमने अपने दल के प्रत्येक सदस्य को विशेष कर्त्तव्यों के बारे में विस्तारपूर्वक बता दिया था। पानी लाना, आग जलाना, और चाय बनाने का अर्थ कड़ा परिश्रम था। हर शाम को हम अपने पिट्ठू बैगों को, ठंड से अपने पैरों को बचाने के लिए खाली करते थे। जब उस शाम को मैंने अपने पैरों को बाहर हिलाया, वहॉ थोड़ा–सा बिस्फोट हुआ। तिब्बती पठार पर हवा की उच्च शुष्कता के प्रमाण के रूप में, मेरी माचिसों ने रगड़ के कारण आग पकड़ ली थी।

दिन के प्रकाश की पहली किरण के साथ ही, हमने उस स्थान की जॉच की, जहॉ हमने शिविर लगाया था। हमने देखा कि गड्ढा, जिसमें हमने डेरा डाला था, किसी आदमी के हाथ का बनाया होना चाहिए, चूॅकि ये पूरी तरह गोलाकार था और इसमें खड़ी दीवारें थीं। शायद यह मूलतः जंगली जानवरों को फंसाने के एक फंदे के रूप में बनाया गया था। हमारे पीछे, कामेट (Kamet) के पूर्ण बर्फीले पिरामिडों के साथ, हिमालय लेटा हुआ था; सामने पहाड़ी देश की वर्जना करते हुए। एक प्रकार की लिओस (leoess)[1] संरचना में हो कर हम पहाड़ी के नीचे गए और दोपहर के करीब, दुशांग (Dushang) गॉव में पहुॅचे। फिर हमें कुछ मकान मिले और एक स्वागत, जो उतना अच्छा नहीं था, जितना कि कासापुलिंग (Kasapuling) का था। पीटर आउफस्नाइटर ने व्यर्थ में ही, वर्षो में अध्ययन के फलस्वरूप प्राप्त की गई भाषा का अपना पूरा ज्ञान प्रदर्शित कर दिया और हमारे इशारे उतने ही बेकार सिद्ध हुए।

तथापि, पहली बार हमने यहॉ एक ठीकठाक तिब्बती बौद्धमठ को देखा। दुम्मट मिट्टी और गोबर के मिश्रण में दीवारों में फासला छोड़–छोड़ कर बनाये हुए काले छेद, और एक ढलान के ऊपर, हमने दैत्याकार इमारतों के खण्डहर देखे। किसी जमाने में यहॉ सैकड़ों भिक्षु रहे होंगे। अब यहॉ अधिक आधुनिक घरों में, केवल थोड़े से भिक्षु रह रहे थे परंतु उन्होंने कभी, स्वयं को हमें नहीं दिखाया। लामामठ के सामने, एक छत पर, समाधियों के लाल पुते हुए पत्थरों की, व्यवस्थित पंक्तियॉ थीं।

कुछ–कुछ अवसाद में आये हुए हम, अपने तंबुओं में लौटे, जो हमारे लिए, दिलचस्प परंतु विषम, भगोड़े विश्व के बीच में एक छोटा घर था।

दुशांग में भी–जब हम आये–वहॉ कोई अधिकारी, जिनको हम वहॉ रहने का या यात्रा करने का प्रार्थना पत्र दे सकते, नहीं थे। परंतु, यह भूल शीघ्र ही सुधारी जानी थी, क्योंकि अधिकारी पहले से ही, हमें ढूंढ़ने के लिए अपने रास्ते पर थे। अगले दिन, कॉप और मैं स्वयं, सामने, आउफस्नाइटर और ट्राईपेल (Triepel) हमारे थोड़ा पीछे रहते हुए, हमने अपनी यात्रा जारी रखी। सहसा हमने घंटियों के बजने की आवाज सुनी, और टट्टुओं (ponies) पर चढ़े हुए दो आदमियों ने हमको, स्थानीय भाषा में, उसी रास्ते से, जिससे हम आये थे, भारत लौटने का आदेश सुनाया। हम जानते थे कि बात करने से हमारा भला नहीं होगा और इसलिए उनके आश्चर्य के लिए, हमने उन्हें बगल से धक्का दे दिया। सौभाग्यवश, उन्होंने अपने हथियारों का कोई उपयोग, ये सोचते हुए कि निस्संदेह हम भी हथियार बंद थे, नहीं किया। हमें विलंबित करने के थोड़े से हल्के प्रयासों के बाद, वे सवार हो कर दूर चले गए और हम बिना किसी अवरोध के, अगली बसाहट तक, जिसे हम जानते थे कि वह एक स्थानीय राज्यपाल की पीठ थी, पहुॅच गए।

देश, जिसमें हो कर हम आज की यात्रा पर गुजरे, जलहीन और खाली था, कहीं भी जीवन का कोई चिन्ह

1 अनुवादक की टिप्पिणी : हवा के द्वारा जमा की गयी, महीन दानेदार मिट्टी और बालू की पट्टीरहित जमावट लिओस (Leoess) कहलाती है।

नहीं। इसका केन्द्र बिन्दु, त्सापारांग (Tsaparang) का छोटा सा नगर, केवल सर्दियों के महीनों में आबाद होता था और जब हम राज्यपाल की तलाश में गए, हमें पता चला कि वह, अपने ग्रीष्मकालीन निवास, शंगत्से (Shangtse) को जाने के लिए, अपने सामान को बांध रहा था। हमें ये जानकर थोड़ा–सा भी चकित नहीं होना पड़ा कि वह उन दो हथियार बंद आदमियों में से एक था, जो हमें रास्ते में मिले थे और जिन्होंने हमें वापस जाने का आदेश दिया था। उसका रवैया, तद्नुसार, स्वागतपूर्ण नहीं था, और हम उसको मुश्किल से ही, हमें दवाईयों के बदले में थोड़ा आटा देने की, थोड़ी–सी राहत देने के लिए, राजी कर पाये। हमारा दवाईयों का छोटा–सा खजाना, जो मैं अपने साथ बैग में लिए हुए था, मुक्तिदायक सिद्ध हुआ और अक्सर भविष्य में भी, हमें अच्छी सेवा प्रदान करेगा।

राज्यपाल ने, एक बार फिर हमको काफी विस्तार से ये बताते हुए कि, जिस सड़क से हम आये थे, उसी का उपयोग करते हुए, हमको तिब्बत छोड़ देना चाहिए, एक गुफा दिखाई, जहॉ हम रात गुजार सकते थे। हमने उसके निर्णय को स्वीकार करने से मना कर दिया और उसे स्पष्ट करने का प्रयास किया कि तिब्बत एक उदासीन राज्य था और हम उससे शरण पाने की अपेक्षा करते थे। परंतु, उसका दिमाग इस विचार को नहीं पकड़ सका और भले ही उसने इसे समझ लिया हो, वह स्वयं कोई निर्णय लेने में सक्षम नहीं था। इसलिए हमने उसे प्रस्तावित किया कि निर्णय को हमें, तिब्बत के किसी उच्चपद वाले अधिकारी, एक भिक्षु, जिसका आधिकारिक आवास, केवल पॉच मील दूर थुलिंग (Thuling) में था, के ऊपर छोड़ देना चाहिए।

त्सापारांग (Tsaparang) वास्तव में उत्सुकतापूर्ण था। मैंने पुस्तकों से, जो मैंने शिविर में पढ़ीं थीं, पढ़ा था कि तिब्बत में पहला कैथोलिक ईसाई मिशन स्टेशन, यहॉ सोलह सौ चौबीस में स्थापित किया गया था। पुर्तगाली, जेसूट ऐन्टोनियो डे एन्ड्राडे (Jesuit Antonio de Andrade) ने यहॉ एक ईसाई समुदाय बनाया था और कहा जाता है कि उसने एक गिरजाघर भी बनाया था। हमने इसके पहचान की तलाश की परंतु हमें कहीं भी ईसाई इमारत के अवशेष नहीं मिले। हमारे स्वयं के अनुभव ने हमें ये महसूस कराया कि, फादर एन्टोनियो के लिए, यहॉ अपना मिशन स्थापित करना, कितना कठिन रहा होगा।

हमने अगले दिन, अपना प्रकरण भिक्षु के सामने रखने के लिए, थुलिंग की ओर, अपनी यात्रा प्रारंभ की। वहॉ हमने, आउफस्नाइटर और ट्राईपेल को पाया, जिन्होंने दूसरे रास्ते का उपयोग किया था। हम सभी ने, मठबिहार के मठाध्यक्ष के साथ एकांत में बंद मुलाकात की, जो वही अधिकारी था, जिससे हम मिलना चाहते थे, परंतु हमें पूर्वी तरफ की यात्रा की आज्ञा देने के लिए, हमने उसे अपनी प्रार्थना के प्रति बहरा पाया। वह हमको केवल इसी शर्त पर, कि हम वापस शंगत्से जाने का वायदा करें, जो हमारे रास्ते पर भारत की ओर पड़ता था, किराना बेचने के लिये राजी हुआ। हमारे पास सहमत होने के अलावा कोई रास्ता नहीं था, क्योंकि हमारे पास खाना नहीं था।

थुलिंग में एक धर्मनिरपेक्ष (secular) अधिकारी भी था, परंतु हमने पाया कि वह और भी कम समायोजित होने वाला था। उसने गुस्से के साथ, उससे मिलने के सभी प्रयासों को मना कर दिया और उत्तेजित हो कर इतना आगे तक गया कि उसने लोगों की सौहार्द्रता भी हमारे विरोध में कर दी। हमें सड़े–सड़ाये मक्खन और कीड़े भरे हुए मांस के लिए बहुत ऊॅचे दाम देने पड़े। कुछ लकड़ियों का गट्ठर, हमें एक रुपये में मिला। मात्र सुखद स्मृति, जो हम थुलिंग से अपने साथ ले गए, अपनी सुनहरी नुकीली छत की सीमाओं से, सूर्य के प्रकाश में चमकते हुए एक मठ, जिसके नीचे सतलुज का पानी बह रहा था, की छत का चित्र था। ये पश्चिमी तिब्बत में सबसे बड़ा मठ है परंतु यह एक बहुत बड़ा निर्जऩ दृश्य है और हमने सुना कि दो सौ साठ में से केवल बीस निवास, वास्तव में, वहॉ उपयोग में आ रहे थे।

जब हमने अंतिमरूप से, शंगत्से लौटने का वायदा किया, उन्होंने हमें अपना सामान ढोने के लिए चार गधे दिए। पहले हमने, उनके द्वारा, बिना किसी प्रहरी के साथ, हमें जाने देने के ऊपर आश्चर्य किया और हमें केवल गधे वाले के साथ जाने दिया गया, परंतु हम शीघ्र ही इस निर्णय पर पहुॅचे कि तिब्बत में, निगरानी करने का सरलतम तरीका है, किन्हीं अनजान आदमियों, जिनके पास आज्ञापत्र न हो, को किराने की बिक्री से बंचित कर देना।

गधों की उपस्थिति ने, हमारी यात्रा में कोई आनंद नहीं बढ़ाया। इसने सतलुज को पार जाने के लिए, हमारा पूरा एक घण्टा लिया क्योंकि, जानवर एकदम थके हुए थे। हमें लगातार उन पर जोर डालना पड़ा ताकि, वे

अंधेरा होने से पहले, अगले गॉव तक पहुॅच सके। ये स्थान फाइवांग (Phywang) कहलाता था और इसमें थोड़े से निवासी थे, परंतु पर्वत के ऊपर की तरफ देखने पर, हमने देखा कि त्सापारांग में सैकड़ों गुफायें थीं।

हमने अपनी रात यहॉ गुजारी। शंगत्से यहॉ से पूरे दिन की यात्रा के बराबर दूरी पर था। अपने रास्ते पर अगले दिन, हमें हिमालय के उस उजाड़ परिदृश्य में, जिसके बीच हम अपने गधों को हॉक रहे थे, कुछ सीमातक हमारी क्षतिपूर्ति करते हुए सर्वाधिक भव्यतापूर्ण दृश्य मिले। इस पूरे विस्तार के ऊपर, हम पहले किआंग (Kiang), एक प्रकार का जंगली गधा, जो मध्य एशिया में रहता है और अपनी चाल की भव्यता के द्वारा यात्रियों को मोहित करता है, को मिले। ये जानवर, लगभग एक खच्चर के आकार का होता है। ये अक्सर उत्सुकता प्रदर्शित करता है और गुजरने वाले यात्रियों को देखने के लिए आ जाता है–और तब ये मुड़ता है और पूर्ण भव्य तरीके से धीरे–धीरे चला जाता है। किआंग घास खाता है और निवासियों के द्वारा शांति में छोड़ दिया जाता है। इसका एकमात्र शत्रु, भेड़िया होता है। चूॅकि मैंने उन्हें पहली बार देखा, ये बेझिझक, सुन्दर जानवर, स्वतंत्रता के संकेत के रूप में दिखाई पड़े।

शंगत्से, मौसम में सुखाये गए गारे और ईंटों तथा घास की घनात्मक (cubic) ईंटों से बने हुए, केवल आधा दर्जन घरों वाला, एक दूसरा छोटा गॉव था। हमने इस गॉव को, दूसरों की तुलना में, अधिक सौहार्द्रपूर्ण नहीं पाया। यहॉ हम त्सारापान के एक अमित्रवत् अधिकारी से मिले, जो अपने ग्रीष्मकालीन घरों में चला गया था। उसने बिना किसी विचार के, हमको तिब्बत में त्सारापान के और आगे जाने के लिए, परंतु हमें त्सारापांग या पश्चिमी पथ, शिप्की (Shipki) दर्रे में हो कर, (दोनों) मार्गों में से एक का चुनाव करके, भारत में जाने के लिए आज्ञा दे दी। केवल तभी, जब हम इनमें से एक रास्ते पर हो कर जाने के लिये सहमत हों, वह हमें किराना बेचने की सहमति प्रदान करेगा।

हमने शिप्की रास्ते का चयन किया, क्योंकि पहले तो ये हमारे लिए हमारा नया देश नहीं था और दूसरी बात, क्योंकि हमें अपने दिलों में कोई रास्ता निकल आने की आशा थी। एक क्षण के लिए, हम काफी, मक्खन, मांस, आटा हम जितना चाहें, खरीद सकते थे। इसके साथ–साथ, हमने अपने आपको, एक बार फिर कांटेदार तारों के पीछे जाने के बेजान भविष्य में, गिरा हुआ अनुभव किया। ट्राईपेल, जिसे तिब्बत के संबंध में कुछ भी आनंददायक नहीं लगा था, इसे छोड़ने और इस उजाड़ स्थान में रुकने के अगले सभी प्रयासों को बंद करने के लिए तैयार था।

हमने अगला दिन, अधिकांशतः, अपनी भूखों को संतुष्ट करने में खर्च किया। मैंने अपने दुग्धखाद्य पदार्थो को ताजा किया और अपने पुट्ठों की सूजन की ओर ध्यान दिया, जो मेरी रात्रि की यात्रा की जबरदस्ती से पैदा हुई थी। नजरबंदी में वापस जाने से पिण्ड छुड़ाने के लिए, मैं कोई भी जोखिम उठाने के लिए तैयार था और आउफस्नाइटर भी मेरे ही विचार का था। अगली सुबह, हमें स्थानीय राज्यपाल का सही चरित्र पता लगा। हमने मांस को तांबे के बर्तन में पकाया था और आउफस्नाइटर को थोड़ा विषाक्त हो गया, जिससे वह बहुत बीमार हो गया। जब मैंने राज्यपाल को, हमको थोड़ा और अधिक रुकने देने की अनुमति प्रदान करने को कहा, उसने हमें पहले की तुलना में, औरअधिक दुर्भावना बताई। मैंने उसके साथ, हिंसकरूप से प्रभावी, झगड़ा किया क्योंकि उसने अंतिमरूप से, आउफस्नाइटर को चढ़ने के लिए घोड़ा और हमारे विवेक पर हमारा सामान ढोने के लिए, वैसे ही दो याकों की आपूर्ति की सहमति दे दी।

याक के साथ, ये मेरा पहला परिचय था। बोझा ढोने के लिए, ये तिब्बतियों का नियमित पशु है और केवल ऊॅची–ऊॅचाई (high altitudes) वाले स्थानों में रह सकता है। लंबे बालों वाली लोमड़ियों की ये प्रजाति, इससे पहले कि आप उसका उपयोग कर सकें, काफी प्रशिक्षण चाहती है। बैलों की तुलना में, गायें विचारणीयरूप से छोटी होती हैं और बहुत बढ़िया दूध देती हैं।

सैनिक, जो हमारे साथ थे, शंगत्से से अपने साथ, हमारे सुरक्षित संचालन के पत्र लिए हुए थे और इसने हमें, हम जो कुछ भी सामान खरीदना चाहते थे, उसे खरीदने के लिए पात्र बना दिया था। इसने हमें अपने याकों को बिना किसी भुगतान के, हर रुकने वाले स्थान पर बदलने के लिए भी पात्र बना दिया था।

दिन के समय मौसम सुखदायक और तुलनात्मकरूप से गर्म, था परंतु रातें बहुत ठण्डी थीं। हमने काफी संख्या में गॉवों और बसी हुई गुफाओं को गुजर जाने दिया, परंतु लोगों ने हमारे ऊपर कम ही ध्यान दिया। हमारा गधा हांकने वाला, जो ल्हासा से आया था, अच्छा और हमारे लिए मित्रवत् था और गॉव में अंदर जाने और उसके

बारे में ढींग हांकने में आनंदित होता था। हमने आबादी को कम अविश्वस्त पाया; निस्संदेहरूप से, ये हमारे सुरक्षित संचालन का प्रभाव था। जब हम रोंगचुंग (Rongchung) जिले में हो कर पगडंड़ियों से यात्रा कर रहे थे, हमने कुछ दिन के लिए, अपने आपको, स्वेन हेडिन (Sven Hedin) के रास्ते पर चलते हुए पाया और चूँकि मैं इस अन्वेषक का बहुत बड़ा प्रसंशक था। उसके वर्णन की जीवंत स्मृतियॉ मेरे विचारों में चमक रही थीं। इलाका, जिसमें हो कर हम गुजरे, बहुत कुछ हद तक वैसा ही था। हम पठारों को लगातार पार करते रहे, नीचे गहरी घाटियों में उतरे और कष्टपूर्वक दूसरी तरफ चढ़े। अक्सर, ये इतनी संकरी होती थीं कि कोई उनके आरपार कह सकता था, परंतु इनको पार करने में घण्टों लगते थे। ये लगातार ऊँचे–नीचे, जो हमारी यात्रा की लंबाई को दूना कर देती थीं, किसी की नब्ज पर हाथ रखती थीं और हमने अपने खुद के विचारों को शांति में सोचा। हमने प्रगति की थी और हमें अपने खाने की चिंता करने की आवश्यकता नहीं पड़ी। एक बिन्दु पर जब हम, अपनी खाद्य सूची (menu) को बदलना चाहते थे, हमने अपना भाग्य मछली पकड़ने में आजमाया। दुर्भाग्यवश, कोई कांटे में नहीं फंसी, हमने कपड़े उतार दिये और साफ पहाड़ी नालों में हो कर पैदल चले तथा हमने मछलियों को अपने हाथ में पकड़ने का प्रयास किया। परंतु हमारे पकाने के बर्तन में अपना जीवन समाप्त करने के बजाय, भागने में, वे हमसे अच्छी दिखाई दीं।

इसलिए हम, धीमे–धीमे और दुःखपूर्वक, भारतीय सीमा पर, हिमालय श्रंखला के समीप पहुँचे। चूँकि हम औरअधिक, उतने ऊँचे नहीं थे, तापक्रम थोड़ा गर्म हो गया था। ये केवल यहीं था कि, सतलुज हिमालय में हो कर अपने रास्ते को तोड़ती है। इस क्षेत्र के गॉव, कुछ–कुछ मरुस्थल के बीच नखलिस्तान (oasis) जैसे दिखाई दिए। घरों के आसपास वहॉ, वास्तव में, खूबानी के बाग और वनस्पतियों के बगीचे थे।

शंगत्से से ग्यारह दिन बाद, हम शिप्की (shipki) के सीमांत गॉव में आये। तारीख थी 9 जून–हम तीन सप्ताह से भी अधिक समय तक तिब्बत में घूमते फिरते रहे थे। हमने बहुत कुछ देखा था और हमने कड़वे अनुभवों के द्वारा सीखा था कि तिब्बत में, निवास की अनुज्ञा के बिना, रहना संभव नहीं था।

हमने, खूबानी के पेड़ों के नीचे, जिनके फल, दुर्भाग्यवश अभी पके नहीं थे, रोमांस के साथ शिविर करते हुए, एक और रात, तिब्बत में गुजारी। यहॉ मैं, इस बहाने के साथ कि मुझे भारत में अपने सामान के लिये, एक लादने वाले पशु की आवश्यकता होगी, अस्सी रुपये में एक गधा खरीदने में सफल हुआ। तिब्बत के भीतरी भागों में, मैं कभी भी ऐसी व्यवस्था नहीं कर सकता था परंतु, सीमा के पास एक अलग बात थी और मैंने महसूस किया कि मेरी योजनाओं को सफलरूप से पूरा करने के लिए, लादने वाला जानवर एकदम आवश्यक था।

हमारे गधे हांकने वाले ने, हमको यहॉ छोड़ दिया और अपने जानवरों को अपने साथ ले गया। ''शायद हम ल्हासा में, फिर मिलेंगे,'' उसने मुस्कराहट के साथ कहा। ये उसने हमको, सुन्दर लड़कियों और अच्छी बीयर (beer), जो हमें राजधानी में मिलती, के बारे में उत्साह से कहा था। हमारी सड़क, दर्रे के ऊपर तक जा कर, जहॉ हम सीमा पर पहुँचे, समाप्त हो गई परंतु, यहॉ तिब्बती या भारतीय, कोई सीमांत चौकियॉ नहीं थीं। सभ्यता के प्रथम चिन्ह, सामान्य पत्थर के घेरों और प्रार्थनाध्वजों, और एक मील के पत्थर के सिवाय कुछ नहीं, जिसपर लिखा थाः शिमला दो सौ मील।

एक बार फिर, हम भारत में थे परंतु हम में से कोई भी, लंबे समय तक, इस स्थान में रहने का इरादा नहीं रखता था, जहॉ तारों की बाड़ वाले शिविर, हमारा स्वागत करने की प्रतीक्षा कर रहे थे।

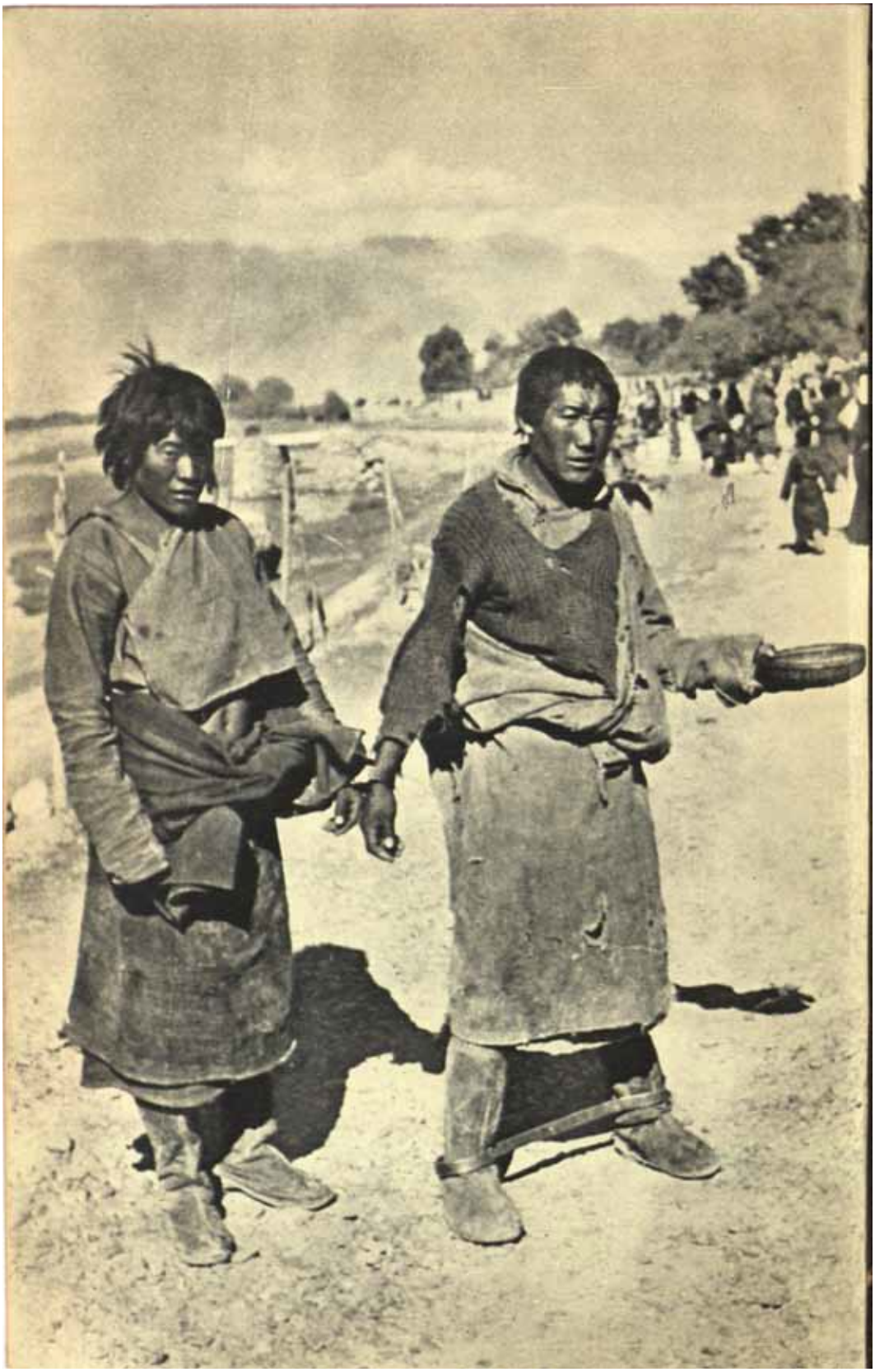

तिब्बत में प्रवेश

मेरी योजना पहले ही अवसर पर, फिर से, सीमा से तिब्बत में फिसल जाने के अवसर को पकड़ लेने की थी। हम सभी इस मत के थे कि छोटे अधिकारी, जिनसे अभी तक हमारा सामना हुआ था, सामान्यतः हमारे प्रकरण में निर्णय लेने के लिये सक्षम नहीं थे। इसबार हमको किसी उच्च अधिकारी तक पहुँच करनी पड़ी। हम जो चाहते थे, उसे पाने के लिए हमें, पश्चिमी तिब्बत की राजधानी गार्टोक (Gartok), जो उस क्षेत्र के राज्यपाल की पीठ थी, को जाना चाहिए।

इसलिए हम, अधिक उपयोग में लाये जाने वाले विशाल व्यापारी मार्ग पर, जब तक कि हम पहले भारतीय गॉव में आये, कुछ मील नीचे चले। ये नामज्ञा (Namgya) था। चूँकि हम तिब्बत से आये थे, भारत के मैदानों में से नहीं, हम बिना किसी संदेह को भड़काये हुए, यहॉ ठहर सकते थे। हमने अपने आपको, अमरीकी सैनिकों के रूप में प्रदर्शित किया, नई आपूर्तियॉ खरीदीं और जनता के विश्रामघरों में सोये। तब हम अलग हुए। आउफ स्नाइटर और ट्राइपेल, व्यापारियों की सड़क पर नीचे गए, जो सतलुज के बगल से थी, जबकि कॉप और मैंने अपने गधे को एक घाटी में चलाया और तब उत्तर की दिशा में, एक दर्रे की तरफ दौड़ा, जो तिब्बत की ओर ले जाता था। जैसा कि हम अपने नक्शों से जानते थे, पहले हमको स्पीती घाटी में हो कर जाना था, जो आबाद थी। मैं बहुत प्रसन्न था कि कॉप भी मेरे साथ जुड़ गया है, चूँकि वह एक चालाक, व्यावहारिक और प्रसन्नचित्त साथी था और उसकी बर्लिन में शिरायें (सम्बंध) अभी भी समाप्त नहीं हुईं थीं।

दो दिन के लिए हम ऊपर की तरफ, स्पीती नदी के किनारे पर भटकते रहे; तब हमने समीपवर्ती घाटियों में से एक को, जो स्पष्टरूप से हमको हिमालय के ऊपर ले जाती। ये क्षेत्र, हमारे नक्शों पर, अच्छी तरह चिन्हित नहीं था और हमको वहॉ के स्थानीय लोगों से पता लगा कि जब हमने साम्सांग (Samsang) नाम से जाने वाले, एक निश्चित पुल को पार किया था, हम पहले ही इस सीमांत से गुजर चुके हैं। अपनी यात्रा के इस पूरे भाग में, हमारे दाई ओर, रीवो फारग्युल (Rivo Fargyul), एक सुन्दर आकार का शिखर, जो हिमालय के शिखरों में, बाइस हजार फुट से अधिक ऊँचाई पर था। हम तिब्बत के, कुछ स्थानों में से एक में, जहॉ तिब्बत का क्षेत्र, हिमालय की पर्वत श्रेणियों में विस्तारित होता था, पहुँच चुके थे। वास्तव में, अब हम अधिक उत्सुक होते जा रहे थे और आश्चर्य कर रहे थे कि इसबार हम क्या करें। सौभाग्यवश, यहॉ हमें कोई नहीं जानता था और किसी भी दयाहीन अधिकारी ने, लोगों को हमारे विरुद्ध चेतावनी नहीं दी थी। पूछे जाने पर, हम ने कहा, हम पवित्र कैलाश पर्वत की ओर जाने वाले तीर्थयात्री थे।

पहला तिब्बती गॉव, जहॉ हम पहुँचे, क्यूरिक (Kyurik) कहलाता था। इसमें दो घर थे। अगला, दोत्सो (Dotso), विचारणीयरूप से बड़ा था। यहॉ हम, अनेक भिक्षुओं से मिले–सौ से अधिक–पोपलर के तनों की तलाश में, जिन्हें वे त्राशीगांग (Trashigang) के दर्रों की तरफ और मठ की इमारतों में से एक के लिए, जहॉ इसका उपयोग किया जाना था, ले जाने वाले थे। ये मठ त्सूरूबिन (Tsurubyin) प्रांत का सबसे बड़ा मठ था और उसका मठाध्यक्ष साथ–साथ सर्वोच्च धर्मनिरपेक्ष अधिकारी भी था। जब हम इस पदाधिकारी से मिले, हमें ये डर लगने लगा कि हमारी यात्रा अपरिपक्वरूप से बीच में ही समाप्त हो सकती है। तथापि, जब उसने हमसे प्रश्न किया, हमने कहा कि हम एक विशाल यूरोपीय सेना के अग्रिमदल के रूप में थे, जिसको ल्हासा में केन्द्रीय सरकार से तिब्बत में प्रवेश करने की औपचारिक अनुज्ञा मिल चुकी है। वह हमारे ऊपर विश्वास करता हुआ प्रतीत हुआ। और अधिक राहत पाते हुए, हमने अपनी यात्रा को जारी रखा। हमें एक दर्रे की ऊँची दुर्गम चढ़ाई चढ़नी पड़ी, जिसे तिब्बती लोग बुद–बुद–ला (Bud-Bud La) कहते थे। ये दर्रा अठारह हजार फुट से अधिक ऊँचा रहा होगा। हवा असुखद रूप से पतली थी और पड़ोसी हिम नदियों की बर्फीली जीभें, पूरे यात्रा पथ के ऊपर बाहर निकली हुईं थीं।

रास्ते में हम कुछ भूतियाओं से मिले, जो भी, आंतरिक प्रदेश में जाना चाहते थे। वे अच्छे, मित्रवत् लोग थे और उन्होंने हमें अपनी आग (चूल्हे) को साझा करने और बासे मक्खन वाली चाय का एक कप, अपने साथ पीने का निमंत्रण दिया। क्योंकि, हम अपने तंबू उनके समीप गाड़ चुके थे, वे हमारे लिए शाम को बिच्छू (nettle) के पेड़ की सुस्वाद पालक लाये।

क्षेत्र, जिसके बीच हम यात्रा कर रहे थे, पूरी तरह आबादी से विहीन था और अपनी यात्रा के अगले आठ

दिनों में, हमें केवल एक छोटा काफिला मिला। मुझे एक आदमी की, जिससे मेरा सामना सड़क के इस विस्तार पर हुआ, एक जीवंत स्मृति है। ये, भेड़ की खाल के एक लंबे कोट में दुबका हुआ और एक लंबी चोटी वाला, जैसे कि सभी तिब्बती लोग, जो भिक्षु नहीं हों, होते हैं, एक नौजवान नोमाड था। वह हमें, अपने काले तंबू की तरफ, जो याक के बालों से बना था, ले गया, जहॉ उसकी पत्नी उसकी प्रतीक्षा कर रही थी। वह हर समय हंसती रहने वाली, एक प्रसन्न जीव थी। तंबू के अंदर हमें एक खजाना, हिरण का एक पुट्ठा, मिला, जिसने हमारे मुॅह में पानी ला दिया। हमारे मेजबान ने, प्रसन्नतापूर्वक, इसके मांस का एक भाग हमें, एक अविश्वसनीय कम कीमत पर, बेच दिया। उसने हमें, उसके शिकार के बारे में कुछ नहीं कहने के लिए कहा अन्यथा वह, जीवन को लेने (नष्ट करने) की परेशानी में पड़ जाता। चाहे आदमी हो या जानवर, ये (जीवहत्या) बौद्धधर्म के विश्वास के विरुद्ध है और परिणामस्वरूप, शिकार करना वर्जित है। तिब्बत, जागीरदारी के ढंग से संचालित किया जाता है, जहॉ आदमी, जानवर और जमीन सब कुछ, दलाईलामा का होता है, उसके आदेश, कानून की तरह प्रभावशाली होते हैं।

मैंने पाया कि मैं इन किसान साथियों के द्वारा अच्छी तरह समझा जा सकता हूॅ और इस भावना कि मेरी भाषा का ज्ञान सुधर रहा था, ने मुझे बड़ा आनंद दिया। अगले दिन, हम साथ–साथ शिकार करते हुए आगे बढ़े और बीच–बीच में, अपने आपको, उस नौजवान जोड़े के तंबू में आराम से अनुभव किया। नोमाड और उसकी पत्नी, पहले प्रसन्नचित और मित्रवत् तिब्बती थे, जिन्हें हम मिले थे और मुझे उनको भूलना नहीं चाहिए। हमारे मेजबान की सोहार्द्रता की झलकी, जौ की शराब की एक लकड़ी की बोतल, पेश करने के रूप में प्रगट हुई। ये एक धुंधला दूधिया द्रव था, जिसकी उसके साथ, जिसे हम बीयर कहते है, कोई तुलना नहीं थी परंतु इसका प्रभाव समान था।

अगली सुबह, हम तीनों शिकार के लिए गए। हमारे नौजवान मित्र के पास, एक पुराना मजल लोडर (muzzle loader) था और छाती की एक जेब में, सीसे की गोलियॉ, बारूद का चूर्ण और एक जल्दी से जलाने वाली माचिस थी। जब हमने जंगली भेड़ों के पहले झुण्ड को देखा, उसने श्रमपूर्वक, एक चकमक पत्थर का उपयोग करते हुए, शीघ्र आग जलाने की व्यवस्था की। हम ये जानकर शंकित थे कि ये अजायबघर की बंदूक का यह नग (piece) कैसे कार्य करेगा। वहॉ बादलों की गड़गड़ाहट जैसी एक आवाज हुई और जब तक मैं धुंऐ से पार हो सकूं, भेड़ों का कोई नामोंनिशान नहीं दिखाई दिया। तब हमने झुण्ड को दूर भागते हुए देखा; इससे पहले कि वे चट्टानी चढ़ाईयों के ऊपर जा कर गायब हों, उनमें से कुछ, एक उड़ती नजर से, हमें देखने के लिए पीछे मुड़ीं। हम अपनी व्याकुलता पर, केवल हॅस सकते थे, परंतु खाली हाथ नहीं लौटने के विचार से, हमने जंगली प्याज को तोड़ा, जो पर्वती किनारों पर हर जगह उग आती है और हिरण के मांस के साथ, काफी अच्छी लगती है।

हमारे मित्र की पत्नी, शिकार के मामले में, स्पष्टरूप से, अपने पति के दुर्भाग्य के प्रति अभ्यस्त थी। जब उसने हमें बिना किसी शिकार के देखा, उसने हॅसी की चीख के साथ, और अपनी फटी हुई ऑखों से, जो उसकी खुशी में लगभग गायब हो गईं थीं, हमारा स्वागत किया। उसने, उस शिकार से, जो उसका पति ने कुछ दिन पहले किया था, सावधानीपूर्वक खाना तैयार किया और अब उद्यमपूर्वक, उसको पकाने लगी। हमने कामकाज के ढंग को देखा और कुछ हदतक आश्चर्यचकित हुए, जब वह अपने फर के ऊपरी आधे बड़े खोल से, एक भड़कीली रंगीन पट्टी में से, जिसको वह कमर के आसपास पहने हुई थी, शर्म के एक किसी चिन्ह के बिना, फिसल गई। भारी खाल ने, उसके शरीर के संचालन को छिपा दिया था, इसलिए वह कमर तक नंगी हो गई और प्रसन्नतापूर्वक चलती रही। बाद में हमारा अक्सर, प्राकृतिक सादेपन के, ऐसे ही दूसरे उदाहरणों से सामना हुआ। ये एक वास्तविक खेद के साथ था कि हम इस मित्रवत् जोड़े से जुदा हुए, जब पूरी तरह आराम करने और अपने पेट को पूरी तरह से अच्छे ताजे मांस से भरने के बाद, हम अपने रास्ते पर चले। जब हम यात्रा पर चले, हमने अक्सर, जंगली याकों की काली आकृतियों को, पर्वत की तरफ दूर चरते हुए देखा। उनके देखे जाने ने, हमारे गधे को स्वतंत्रता पाने का प्रयास करने के लिए, उत्तेजित कर दियाः वह एक जंगली जलप्रवाह की धारा की तरफ दौड़ा। इससे पहले कि हम उस तक पहुॅच पायें, उसने हमारे भारों को, अपनी पीठ पर से हिलाकर गिरा दिया। हमने उसे गालियॉ देते हुए, उसका पीछा किया और अंत में उसे पकड़ लिया।

तब, चूॅकि हम अपनी चीजों को सुखाने में व्यस्त थे, पानी के दूसरी तरफ, दो आकृतियॉ सहसा ही हमारी नजर में आई। हमने उसकी नियमित, धीमी, पर्वतारोही छलांग से–तुरंत ही पहचान लिया कि वह, एक भाड़े के सहायक के साथ, पीटर आउफस्नाइटर था। ये सोचा जा सकता था कि, ऐसे स्थान में, इस प्रकार मिलना, बहुत

दूर की बात लगती है, परंतु ये केवल निश्चित घाटियों और दर्रो के पास होता है कि कोई पर्वतश्रेणियों के ऊपर से आता है, और हम और पीटर दोनों ने, सबसे अधिक चालू रास्ता, चुना था।

गर्मजोशी के साथ अभिवादन करने के बाद, आउफस्नाइटर ने हमको बताना शुरू किया कि उसके साथ इस अवधि में क्या हुआ था। वह सत्रह जून को ट्राईपेल से चला था, जिसको उसने घोड़े पर सवार हो कर भारत की ओर आते हुए छोड़ दिया था, इसका अर्थ ये है कि उसने अपने आपको, एक अंग्रेज के रूप में गुजारा था। अपने अंतिम ढंग से, उसने घोड़े को खरीदा। आउफस्नाइटर स्वयं बीमार पड़ गया था, परंतु जब उसने अपने स्वास्थ्य को पुनः प्राप्त कर लिया, वह हमारे साथ चला। रास्ते में उसने, युद्ध की कुछ ताजा खबरों के बारे में सुना था, जिसके अनुसार, यद्यपि हम दूसरी दुनियॉ में रह रहे थे, हमने भी लोभ के साथ सुना। पहले, आउफस्नाइटर हमारे साथ गार्टोक नहीं जाना चाहता था, चूँकि उसका विश्वास था कि हमको फिर से देश के बाहर खदेड़ दिया जायेगा। उसने सोचा कि, सीधे मध्य तिब्बत की ओर बढ़ते जाना और वहॉ नोमाड लोगों के साथ जुड़ जाना, अक्लमंदी होगी। अंत में, हम साथ–साथ चले और आउफस्नाइटर और मैं, वर्षों तक दोबारा साथ में नहीं हो पाये। हम जानते थे कि यदि सब कुछ ठीक–ठाक चला, तो हमको गार्टोक पहुँचने में पॉच दिन लगेंगे। हमें एक दूसरा ऊँचा दर्रा, बोन्ग्रू ला (Bongru La) पार करना था। इन दिनों, शिविर लगाना आनंदमय नहीं था। रात को, यहॉ सत्रह हजार फुट की ऊँचाई पर, बहुत ठंड थी!

छोटी–छोटी घटनाओं ने विविधता प्रदान की। एक बार, एक जंगली गधों के बीच की लड़ाई का दृश्य था। दो लड़ाका प्रजनक गधे, शायद झुण्ड में, अपनी गधियों के ऊपर स्वामित्व स्थापित करने की लड़ाई में थे। घास के तिनके उड़े और उनके खुरों के नीचे से पृथ्वी हिली। पहलवान, अपने संघर्ष में इतने मशगूल थे कि, उन्होंने हम दर्शकों की ओर कोई ध्यान नहीं दिया। इस बीच गधियॉ, सनसनी के लोभ में, आसपास नाचने लगीं और अखाड़ा अक्सर धूल के घने बादलों के पीछे, छिप गया।

दो दर्रो के गुजर जाने के बाद, एक बार फिर, हिमालय हमारे पीछे था और मैं उनसे दूर जाता हुआ प्रसन्न था, चूँकि अंतिमरूप से, हम गर्मतर (warmer) क्षेत्रों में पहुँच रहे थे। सिन्धु घाटी में नीचे की तरफ आते हुए, हम भारत की ओर ऊन ले जाते हुए, याकों के अनेक काफिलों से मिले। हम इन जानवरों के आकार और उनकी शक्ति के ऊपर अटक गए। उनके चलाने वाले भी अच्छी तरह व्यवस्थित नौजवान थे, जो तीखी सर्दी के बावजूद, कमर तक नंगे थे। आदमी, औरतों दोनों ने, अंदर की पर्त को बाहर करते हुए, अपने फर के कोट पहने हुए थे, ताकि फर उनके शरीर के अंदर की तरफ हो गई। वे अपनी बॉहों को कोट की आस्तीनों से अलग रखते हैं, ताकि उनके चलने फिरने में किसी प्रकार का कोई व्यवधान न हो। हांकने वाले, याकों को, उन पर पत्थर फैंक कर (चलाना) शुरू करते हैं और उसी तरीके से वे, उन्हें रास्ते पर बनाये रखते हैं। किसी भी तरह से, वे हमें हमारे अंदर या हम विदेशियों के अंदर, रुचि लेते हुए नहीं दिखे और हम बिना किसी परेशानी के, अपने रास्ते पर चलते रहे।

इससे पहले कि हम गार्टोक पहुँचें, हम अगले पॉच दिनों तक, सिंधु नदी की ऊपरी धारा के साथ–साथ लगातार चलते रहे। दृश्य अविस्मणीय, भूला न जा सकने योग्य था। रंगों ने ऑखों को मोहित कर लिया, मैंने इतने सांमन्जस्यपूर्ण ढंग से मिलाये हुए सभी प्रकार के रंगों की धाप (hues) को, किसी चित्रकार की रंगपट्टी (palette) पर मुश्किल से ही कभी देखा होगा। सिंधु नदी के साफ पानी के आसपास, बसंत के समय के करीब, झरनों की निकलती हुई हरी शाखाओं के साथ, सुहागे के हल्के पीले क्षेत्र थे (क्योंकि इन क्षेत्रों में बसंत जून तक नहीं आता)। पृष्ठभूमि में बर्फ की चमकती हुई चोटियॉ थीं।

हिमालय के दूर की तरफ, एक गढ़ी के आसपास समूहित किए हुए, केवल कुछ घरों से बना हुआ, मानो मठ खाईयों से घिरा हुआ हो, पहला गॉव त्राशीगांग (Trashigang) है। यहॉ हमें फिर बेतरतीब आबादी मिली, परंतु उन्होंने हमें देखकर कोई आश्चर्य नहीं किया और कोई वास्तविक तकलीफ नहीं दी। इसबार, हम ठीक उस मौसम में आये थे, जिसमें भारतीय व्यापारी, अपनी ऊन की खरीद के लिए, देश में धाराप्रवाह रूप से प्रवेश करते हैं। हमें इन लोगों से, अपना किराने का सामान खरीदने में कोई परेशानी नहीं हुई। आउफस्नाइटर ने अपने सोने के कड़े को नगद में बदलने का व्यर्थ का प्रयास किया। यदि उसने ऐसा कर दिया होता, तो बिना गार्टोक को छुए हुए, वह सीधे ही आंतरिक तिब्बत में प्रवेश पाने में सफल हो गया होता। हमारी पूरी यात्रा में, हमको, धनाढ्य दिखने वाले, सवार तिब्बतियों द्वारा, बार–बार रोका जा रहा था, जो हमें पूछते थे कि हमें क्या बेचना है। चूँकि

हमारे पास कोई नौकर नहीं थे और हम एक लदे हुए गधे को खुद ही हॉक रहे थे, वे ये अनुमान नहीं कर सके कि, हम व्यापारी को छोड़ कर या व्यापारियों के अलावा, कुछ और भी हो सकते हैं। हमने प्रत्येक तिब्बती के बारे में स्वीकार कर लिया कि, भले ही वह गरीब हो या अमीर, वह एक जन्मजात व्यापारी होता है, और मोलभाव करना और चीजों को बदलना, उसकी सबसे बड़ी सनक होती है।

अपने अध्ययन से हमने जाना कि गार्टोक पश्चिमी तिब्बत की राजधानी थी और वायसराय की पीठ भी; हमारी भूगोल की पुस्तकों ने हमको बताया था कि, ये दुनियॉ का सबसे ऊॅचा नगर था। तथापि, तब हमने इस प्रसिद्ध स्थान पर, अंतिमरूप से, अपनी नजरें गड़ाईं, हम अपने आपको मुश्किल से ही हॅसने से रोक पा रहे थे। पहली चीज, जो हमने देखी, कुछ थोड़े से नोमाडों के, लंबे–चौड़े समतल पर, इधर–उधर छितराये हुए तंबू थे; तब हमारी नजर, ईंट–गारे की कुछ झोपड़ियों पर पड़ी, ये गार्टोक था। कुछ आवारा कुत्तों के अलावा, यहॉ जीवन का कोई चिन्ह नहीं था।

हमने अपना छोटा तंबू, सिंधु नदी की एक सहायक नदी, गारटांग त्चू (Gartang-Tchu) के किनारे पर गाड़ा। अंत में, कुछ उत्सुक व्यक्ति आये और हमें उनसे पता लगा कि दोनों उच्च अधिकारियों में से कोई भी, शहर में नहीं था और केवल ''द्वितीय वायसराय'' के प्रतिनिधि (agent), हमारा स्वागत कर सकते थे। हमने इस व्यक्ति के सामने, अपनी याचिका तुरंत ही प्रस्तुत करने का निर्णय लिया। उसके कार्यालय में जाते हुए, हमें नीचे झुकना पड़ा, क्योंकि वहॉ दरवाजे नहीं थे, केवल एक छेद था, जिसके सामने चिकनाई भरा एक पर्दा लटक रहा था। हम एक कम प्रकाशित कमरे में आये, जिसकी खिड़कियों में कागज चिपकाये गए थे। जब हमारी ऑखें उस अंधेरे की अभ्यस्त हो गईं, हमने अपने सामने मूर्ति की तरह बैठे हुए एक आदमी को, जो बुद्धिमान और विशिष्ट प्रतीत होता था, देखा। उसके बांये कान से, उसकी पद्वी को बताने वाले चिन्ह के रूप में, कम–से–कम छः इंच लंबी, एक बाली लटक रही थी। वहॉ एक औरत भी मौजूद थी, जो अनुपस्थित अधिकारी की पत्नी के रूप में पता चली। हमारे पीछे, बच्चों और नौकरों का झुण्ड, जो सहज उपलब्ध विशिष्ट विदेशियों को, समीप से देखना चाहता था, दबाब दे रहा था।

अत्यंत नम्रता के साथ, हमसे नीचे बैठ जाने का निवेदन किया गया और हमें तुरंत ही सूखा मांस, पनीर, मक्खन, और चाय प्रस्तुत की गयी। वातावरण सौहार्द्रपूर्ण था और उसने हमारे दिलों को गर्मजोशी से भर दिया और एक अंग्रेजी–तिब्बती शब्दकोश की सहायता और पूरक इशारों से वार्तालाप सुचारुरूप से चल पड़ा। हमारी आशाऐं तेजी से उठीं परंतु अपनी पूर्व धारणाओं के कारण, पहले साक्षात्कार में, हमने इसे रोक दिया। हमने कहा कि हम, आवारा जर्मन लोग थे और हम उदासीन तिब्बत की सौहार्द्रता की याचना करते थे।

अगले दिन, मैं प्रतिनिधि के लिए, उपहार के रूप में, कुछ दवायें लाया। वह बहुत प्रसन्न हुआ और उसने पूछा कि इनका उपयोग कैसे किया जाये, इस पर मैंने निर्देश लिख दिए। इस बिन्दु पर, हमने उससे पूछने का प्रयास किया कि, क्या वह हमें, यात्रा का एक परमिट प्रदान नहीं करेगा। उसने सीधे मना नहीं किया परंतु हमें अपने प्रमुख के आने तक, जो कैलाश पर्वत पर तीर्थयात्रा के लिए गया था और जिसकी कुछ दिनों में लौटने की आशा की जाती थी, प्रतीक्षा करने के लिए कहा।

मध्यांतर में, हमने एजेन्ट के साथ अच्छी दोस्ती बना ली। मैंने उसे एक आतशी शीशा (burning glass), एक चीज, जिसका कोई तिब्बत में अच्छा उपयोग कर सकता है, दिया। परंपरागत वापसी उपहार को आने में अधिक देर नहीं लगी। एक शाम को, कुछ मजदूर, मक्खन, मांस और आटा, हमारे तंबुओं में ढोकर लाये और उसके बहुत अधिक देर बाद नहीं, हमारी यात्रा का प्रत्युत्तर देने के लिए, नौकरों के ठाठबाट के साथ, ऐजेन्ट स्वयं आ गया। जब उसे देखा कि, हम अपने तंबुओं में, कितनी कम सुविधाओं के साथ रह रहे थे, वह अपने आश्चर्य के पार नहीं आ सका कि यूरोपियन भी, ऐसे सादा जीवनों में रह सकते होंगे।

तथापि, जैसे ही प्रमुख (चीफ) के लौटने का समय करीब आया, उसकी मित्रता उड़ने लगी और उसने अपने आपको, हमारे समाज से, लगभग वापस खींच लिया। उत्तरदायित्व ने उसको दबाना शुरू कर दिया था। वास्तव में, वह इस हद तक गया कि उसने हमको, किराना का सामान बेचने के लिए भी मना कर दिया; तथापि, भाग्यवश, यहॉ, अच्छे पैसे लेकर, कुछ भारतीय व्यापारी, हमको मदद करने के लिए तैयार थे।

एक सुबह, चूॅकि खच्चरों से चलने वाला एक बड़ा काफिला गॉव की तरफ पहुॅचा, हमने कुछ दूरी पर घंटियों की आवाजें सुनी। सैनिक सवार हो कर आगे चल रहे थे, पीछे नर और मादा नौकरों का झुण्ड और उसके बाद, सवार हुए तिब्बती भद्रसमुदाय के सदस्य भी, जिनको अब हमने पहली बार देखा। दोनों वायसरायों में से

वरिष्ठ ने, जिसको तिब्बत में वे गार्पोन (garpon) कहते हैं, पहुॅच रहा था। वह और उसकी पत्नी, भव्य रेशमी परिधान पहने थे और अपने कमरबंदों (girdles) में पिस्तौलें लटकाये थे। पूरा गॉव, (इस) दृश्य को देखने के लिए एकत्रित हुआ। पहुॅचने के तुरंत बाद, गार्पोन अपनी तीर्थयात्रा से सुरक्षित लौटने पर, अपने देवताओं को धन्यवाद देने के लिए, औपचारिक जुलूस के रूप में, बौद्धमठ में गया।

आउफस्नाइटर ने, सुनवाई की याचना करते हुए, एक संक्षिप्त पत्र तैयार किया। चूॅकि कोई उत्तर नहीं मिला, हम देर शाम को गार्पोन से मिलने के लिए चल दिए। उसका घर भी, मूलरूप से उसके ऐजेन्ट से अलग नहीं था परंतु अंदर से वह अधिक साफ और अधिक अच्छी गुणता वाला था। भद्रपुरुषों की परंपरा में चौथी पदवी के साथ, गार्पोन, एक उच्च अधिकारी, अपने मिशन की अवधि के लिए स्थापित किया जाता है। वह पॉच जिलों, जो पॉचवी, छठवीं और सातवीं पदवी के भद्रपुरुषों द्वारा प्रशासित किए जाते हैं, का प्रभारी होता है। अपने कार्यकाल की अवधि में, गार्पोन अपने जूड़ा बनाये हुए बालों में एक सुनहरी गंडा या कवच पहनता है, परंतु वह इस गहने को केवल तभी पहनता है, जब वह गार्टोक में अपने कर्तव्य पर हो। ल्हासा में, उसकी पदवी घटकर, पॉचवीं हो जाती है। तिब्बत में, सभी भद्रपुरुष सात वर्गों में पदवीकृत किए जाते हैं, पहली पदवी में केवल दलाई लामा आते हैं। सभी धर्मनिरपेक्ष अधिकारी, अपने सिरों पर बालों का जूड़ा बनाते हैं, भिक्षु सिर मुड़ाये होते हैं और सामान्य पुरुष चोटी रखते हैं।

अंत में, हम इस सक्षम (अधिकारी) के सामने उपस्थित हुए। हमने अपना प्रकरण पूरे विस्तार के साथ उसको समझाया और उसने मित्रवत् धैर्य के साथ उसे सुना। अक्सर, हम अपने आपको, अपनी खराब, टूटी–फूटी तिब्बती भाषा के ऊपर मुस्कराने से नहीं रोक सके, जबकि उसके लोग, हमारे ऊपर जोर से हॅस रहे थे। इस आनंद ने हमारे वार्तालाप में चटपटापन ला दिया और एक मित्रवत् वातावरण का सृजन किया। गार्पोन ने हमारे प्रकरण को सावधानी के साथ विचार करने और अपने सहयोगियों के प्रतिनिधियों के साथ, इस पर बात करने का का वायदा किया। सुनवाई के अंत में, हमको सौहार्द्रतापूर्ण व्यवहार दिया गया और हमको यूरोपीय ढंग से बनाई गई चाय मिली। उसके बाद गार्पोन ने हमारे तम्बुओं में उपहार भेजे और हमने (अपनी याचिका के) सुखद निपटान की आशा करना प्रारंभ कर दिया।

हमारी अगली सुनवाई, मानो कि अधिक औपचारिक, परंतु फिर भी सौहार्द्रतापूर्ण थी। यह एक नियमित आधिकारिक बैठक थी। गार्पोन, एक प्रकार के सिंहासन पर बैठा और उसके पड़ोस में थोड़ी नीची बैठक (seat) पर उसके सहयोगी का एक प्रतिनिधि था। एक नीची मेज पर, तिब्बती कागज पर लिखे हुए पत्रों की एक नस्ती (file) पड़ी थी। गार्पोन ने हमको सूचित किया कि वह हमें केवल न्गारी (Ngari) प्रान्त के लिए पास और यातायात का साधन दे सकता है। किसी भी अवस्था में, हमें तिब्बत के किसी भी आंतरिक प्रदेश में प्रवेश की आज्ञा नहीं दी गई। हमने शीघ्र ही आपस में सलाह की और ये सुझाव दिया कि वह हमें केवल नेपाल के सीमांत तक की यात्रा के लिए अनुज्ञापत्र दे दे। कुछ हिचकिचाहट के बाद, उसने हमारी प्रार्थना को, ल्हासा में, सरकार के पास भिजवाने का वायदा किया परंतु उसने हमें स्पष्ट कर दिया कि, इसका उत्तर अगले कुछ महीनों तक नहीं आ सकता है। हम पूरे समय गार्टोक में रुके रहकर, तब तक प्रतीक्षा करने के उत्सुक नहीं थे। हमने अभी तक, पूर्व से घुसने का विचार छोड़ा नहीं था और हम हर कीमत पर अपनी यात्रा को जारी रखने के इच्छुक थे। चूॅकि नेपाल, उस दिशा में, जहॉ हम जाना चाहते थे, स्थित एक उदासीन देश था, हमने अनुभव किया कि, हम बातचीत (negotiations) के परिणामों से संतुष्ट हो सकते हैं।

चूॅकि लदे हुए पशु और पथप्रदर्शक को ढूंढ़ा जाना था, तब गार्पोन ने कृपापूर्वक, हमसे कुछ दिनों के लिए उसके अतिथि के रूप में रहने के लिए कहा। तीन दिन बाद, हमारा यात्रा–पास हमें दे दिया गया। इसमें निहित था कि हमारा यात्रापथ निम्नलिखित स्थानों में हो कर गुजरना चाहिए – न्गाखू (Ngakhu), सरसोक (Sersok), मोंत्से (Montse), बार्गा (Barga), थोकशेन (Thokchen), ल्होलुंग (Lholung), साम्त्सांग (Samtsang), ट्रुकसुंग (Truksum), और ग्याबनाक (Gyabnak)। ये भी कहा गया था कि हमें दो याकों की मांग करने का अधिकार होगा। एक महत्वपूर्ण उपवाक्य (clause) ये मांग करता था कि वहॉ के निवासी, हमको स्थानीय मूल्यों पर किराना बेचेंगे और हमें, मुफ्त ईंधन और शाम के लिए सेवक प्रदान करेंगे।

हम इतनी सुविधाओं के प्राप्त होने पर बहुत अच्छी तरह से प्रसन्न थे। गार्पोन ने हमको विदाई के एक रात्रिभोज के लिए आमंत्रित किया, जिसके मध्य मैंने उसे अपनी घड़ी बेचने की व्यवस्था कर ली। बाद में उसने

हमें, अपने क्षेत्र में से ल्हासा नहीं जाने के लिए सम्मान सूचक शब्द कहे।

अंत में, 13 जुलाई को हमने गार्टोक को अलविदा कहा और अपने रास्ते पर चल पड़े। अब भले आकारों वाला हमारा छोटा काफिला, हमारे खुद के याकों और उनके हांकने वालों तथा मेरे एक छोटे गधे, जो अब अच्छी हालत में था और चाय की चायदानी से अधिक कुछ नहीं ले जा रहा था, से बना हुआ था। तब हमारा पथप्रदर्शक, घोड़े की पीठ पर सबार, नोरबू (Norbu) नाम का एक नौजवान तिब्बती, आया, जबकि हम तीनों यूरोपियन, नम्रतापूर्वक पीछे–पीछे पैदल आए। अब हम, दुबारा, हफ्तों के लिए, रास्ते पर थे। अगले पूरे महीने की अवधि में, हम किसी भी आकार के, किसी भी आबाद स्थान से नहीं गुजरे–केवल नोमाड के शिविर और इक्का–दुक्का तासाम (tasam)–सरायघर। ये सरायें हैं, जिनमें कोई अपने याकों को बदल सकता है और ठहरने का स्थान पा सकता है।

इन सरायों में से एक में, मैं अपने गधे को एक याक से बदलने में सफल हुआ। मैं इस सौदे पर बहुत गर्व अनुभव कर रहा था, जिसने मेरी परिसम्पत्तियों (assets) को कई गुना बढ़ा दिया था परंतु, मेरी संतुष्टि थोड़े समय के लिए ही रही–जानवर इतना अधिक अड़ियल (refractory) सिद्ध हुआ कि मैं उससे पीछा छुड़ाने पर प्रसन्न अनुभव करता। बाद में, मैं उसे वास्तव में, एक छोटे, नौजवान जानवर से, बदलने में सफल भी हुआ। इस प्राणी ने भी कष्ट दिया और ये केवल तभी हो पाया कि मैं केवल तभी, जब उसकी नाक छेदने के बाद और उसमें जूनीपर (juniper) की लकड़ी की एक नकेल डाल देने के बाद, उसे रस्से से बांधा गया, जो उसे सड़क पर बना कर रख सकता था। हम उसे आर्मिन (Armin) कहते थे।

देश, जिसके बीच हो कर हम कई दिनों से यात्रा कर रहे थे, में मूलतः कोई सुंदरता नहीं थी। छोटे–छोटे दर्रों के साथ, विस्तृत पहाड़ी मैदान, विस्तार से बिखरे हुए थे। हमको अक्सर, तेज चलते हुए बर्फीले ठंडे तालों में हो कर कोई रास्ता नहीं मिलता था। जब हम गारटोक में थे, हमें कभीकभार ओलों की बरसात भी हुई। अब मौसम, मुख्यरूप से सुहाना और गर्म था। इस समय तक, हम सबकी दाढ़ी घनी बढ़ गई थी, जो हमको धूप से बचाती थी। हमने काफी लंबे समय बाद, एक हिमनद (glacier) देखा था, परंतु जब हम बार्का (Barka) के तासाम (सराय) की तरफ पहुॅच रहे थे, धूप में चमकती हुई हिमनदों की श्रृंखला, हमारी निगाह में आई। परिदृश्य, पूरी तरह से, पच्चीस हजार फुट ऊॅची, गुर्ला मान्धाता (Gurla Mandhata) चोटी के वर्चस्व में था; कुछ कम प्रभाव वाला परंतु बहुत अधिक प्रसिद्ध, उससे तीन हजार फुट नीचा, पवित्र कैलाश (Kailash) पर्वत था, जो अपने शाही एकांत में, हिमालय की श्रृंखला से अलग, खड़ा हुआ था। जब हमने पहली बार इस पर नजर डाली, हमारे तिब्बतियों ने उसको दंडवत किया और प्रार्थना की। बौद्ध और हिन्दुओं के लिए, ये पर्वत उनके देवताओं का घर है और पवित्र लोगों की सबसे प्रिय अभिलाषा, अपने जीवन में एक बार, तीर्थयात्रा में जा कर इस पर घूमने की होती है। निष्ठावान, अक्सर यहॉ पहुॅचने के लिए हजारों मील दूर तक यात्रा करते हैं और यात्रा पर अनेक वर्ष व्यय करते हैं। अपनी यात्रा की अवधि में, वे भिक्षा पर आधारित रहते हैं और आशा करते हैं कि, उसका पारितोषिक, उनको भविष्य में उच्चजीवन के रूप में मिलेगा। कम्पास की सभी दिशाओं से आने वाली तीर्थयात्रियों की सड़कें, यहॉ आकर मिल जाती हैं। वे स्थान, जहॉ से पर्वत को पहली नजर में देखा जा सकता है, शताब्दियों से तीर्थयात्रियों की बच्चों जैसी ईश्वरभक्ति को व्यक्त करते हुए, दैत्याकार अनुपातों में बढ़ते हुए व्यवस्थित पत्थरों के ढेरों द्वारा, चिन्हित किये जाते हैं, जिनमें से प्रत्येक, प्राचीन परम्परा पर चलते हुए, उन ढेरों में ताजे पत्थर जोड़ता है। हमने भी, तीर्थयात्रियों के रूप में, पहाड़ों के आसपास यात्रा करना पसंद किया होता परंतु, काफिले के अमित्रवत् स्वामी ने, जब तक कि हम अपने रास्ते पर चलना जारी न रखें, हमारे भविष्य की यातायात सुविधाओं को रोकने की धमकी देते हुए, हमको बार्का पर रोक दिया।

हमें पूरे दो दिनों तक, देखने के लिए, हिमनद मिलते रहे। हम पर्वतारोही लोग, अधिक मजबूती के साथ शाही गुर्ला मांधाता के प्रति आकर्षित थे, जिसकी परछाई, स्वयं पर्वत की तुलना में, दर्पण की भांति, मानसरोवर झील के पानी में पड़ती है। हमने अपने–अपने तंबू, झील के किनारे गाड़ दिए और अपनी ऑखों को, इस बहुत बड़े पर्वत, जो झील में से निकल कर आता हुआ प्रतीत होता था, के अवर्णनीय सुंदर चित्र का खाना दिया। ये निश्चतरूप से, पृथ्वी के सबसे प्यारे स्थानों में से एक है। झील को पवित्र होना ही था और कोई, उसके आसपास अनेक छोटे मठ, जिसमें तीर्थयात्री रुक सकते हैं और अपनी अभ्यर्चना कर सकते हैं, पाता हैं। अनेक तीर्थयात्री झील के आसपास, अपने हाथों और घुटनों पर रेंगते हैं और बर्तनों को ढो कर, पवित्रजल घर ले जाते हैं। हर

तीर्थयात्री, इसके बर्फीले ठंडे पानी में स्नान करता है। हमने भी वैसा ही किया, यद्यपि पवित्रता के लिए नहीं। यहॉ मैं एक संकट के करीब आया। तट के कुछ दूर तक तैरने के बाद, मैं एक दलदल के स्थान में आया, जहॉ से मैं अपने आपका समाधान, केवल बहुत कठोर प्रयासों के बाद, पा सका था। मेरे सहयोगियों ने, दलदल में से बाहर आने के लिए, मेरे विराट संघर्ष को नहीं देखा था।

वर्ष के इस समय में, हम चूँकि तीर्थयात्रा के समय से थोड़ा आगे थे, अधिकांश लोग, जिन्हें हम मिले व्यापारी थे। हमने, अनेक संदेहास्पद दृष्टिवाले लोगों को भी देखा, क्योंकि यह क्षेत्र उपद्रवपूर्ण, लुटेरों के लिए, मानो स्वर्ग (El dorado) है, जो अक्सर, यहॉ के बाजारों में, व्यापारियों के ऊपर हमला करने के अपने लालच का प्रतिरोध करना मुश्किल पाते हैं। इस क्षेत्र का सबसे बड़ा बाजार ज्ञानयिमा (Gyanyima) का है। यहॉ एक बड़े शिविर में से सैकड़ों तम्बू, लगातार लिये और दिये जाते हैं। भारतीय लोगों के तंबू, सस्ते सूती माल से बने होते हैं, जबकि तिब्बती लोगों के याक की ऊन से बुनकर बनाए जाते हैं और इतने अधिक भारी होते हैं कि, ढोकर ले जाने के लिए एक या दो याकों की आवश्यकता होती है।

हम कुछ घण्टों तक, पूर्वी दिशा की ओर, झील के साथ–साथ घूमते रहे और ऐसा महसूस किया, मानो हम समुद्रतट की सैर पर हों। सौन्दर्य में हमारा आनंद, केवल छोटे मच्छरों द्वारा परेशान किये जाने से विक्षुब्ध किया गया था, जिनसे जब तक हम झील से बाहर नहीं हो गए, हमें छुटकारा नहीं मिला।

थोकचेन (Thokchen) की तरफ आगे बढ़ते हुए, हम एक महत्वपूर्ण दिखते हुए काफिले से मिले। ये ल्हासा से, अपने पद पर उपस्थित होने के लिए जा रहा, त्सारापांग (Tsarapang) का नया जिला राज्यपाल था। हम सड़क के बगल से खड़े हो गए और हमारे पथप्रदर्शक ने, जिसके साथ हम कभी भी, वास्तविकरूप से मित्रवत् सम्बंध में नहीं हो पाए थे, एक गंभीर दंडवत की और अभिवादनस्वरूप, अपनी जीभ को बाहर निकाला–विनम्रता का एक पूर्ण चित्र। उसने हमारी उपस्थिति को वहॉ स्पष्ट किया; हथियार, जिन्होंने हमें घबरा दिया था, उठाकर दूर रख दिए गए और हमको सूखे फल और मेवे उपहार में मिले।

अब हमारे व्यक्तित्व में, यूरोपीय होने का किसी प्रकार का कोई बेहतर चिन्ह नहीं था। हम नोमाडों की भांति रहते थे; पिछले तीन महीनों से, हम मुख्यरूप से, खुली हवा में सोते रहे थे और वहॉ की स्थानीय आबादी की तुलना में, सुखों के हमारे मानक, नीचे हो गए थे। मौसम चाहे जैसा हो, हम खुले में शिविर लगाते थे, खाना पकाते थे और अपनी खुद की आग जलाते थे, जबकि नोमाड लोग, अपने भारी–भारी तंबुओं में शरण और गर्माहट पा सकते थे। परंतु यदि हम ऐसे दिखाई देते, मानो हम इस दुनियॉ में आए हैं, हमारा मसखरापन अभी भोंथरा नहीं हुआ था और हमारे दिमाग लगातार व्यस्त बने हुए थे। काफी कम यूरोपियन लोगों ने इन क्षेत्रों को देखा था और हम जानते थे कि हर चीज, जो हमने प्रेक्षित (observed) की थी, बाद में मूल्यवान (सिद्ध) हो सकती थी। हमने तब भी सोचा कि हम कुछ निश्चित समय में, अपनी सभ्यता में लौटना चाहेंगे। सामान्य खतरों और संघर्षों ने हमको, सहयोगियों के मजबूत बंधनों में जोड़ दिया था; हर आदमी, दूसरे के मूल्यों और भावनाओं को समझता था और इस प्रकार हम, मन के अवसाद (depression) के अवसरों पर, एक दूसरे को सहायता करते थे।

जब तक कि हम ब्रह्मपुत्र, जिसे तिब्बती लोग त्सांगपो (Tsangpo) कहते हैं, के स्रोत तक पहुँचे, हम निचले दर्रों में हो कर आगे गए। एशिया के तीर्थयात्रियों के लिए, यह क्षेत्र न केवल धार्मिक महत्व का है बल्कि ये भौगोलिक दृष्टि से भी अत्यधिक दिलचस्प है, चूँकि इसमें सिंधु (Indus), सतलज (Sutlej), काक्सनाली (Kaxnali) और ब्रह्मपुत्र के उद्गमस्थल हैं। तिब्बती लोगों के लिए, जो इसको एक सांकेतिक धार्मिक त्याग, का अनुभव देने के अभ्यस्त हैं, इन नदियों के नाम पवित्र पशुओं–सिंह, हाथी, मोर, और अश्व के साथ जोड़े गए हैं।

अगले पखवाड़े में, हम त्सांगपो के साथ–साथ चले। समीपवर्ती हिमालय की अनेक धाराओं से पोषित होती हुई ये नदी, बढ़ती जाती है, हर समय बड़ी होती जाती है, और बड़ी हो जाती है और इसका धाराप्रवाह अधिक शांत हो जाता है। अब मौसम लगातार बदल रहा था, कोई कभी मिनटों में ही ठंड में जम रहा था या कभी धूप में तप रहा था। ओले वाला तूफान, बरसात और धूप, सीधे–सीधे, एक के बाद एक–तेजी से, एक दूसरे के पीछे चलते थे। एक सुबह हम, अपना बर्फ में गाड़ा हुआ तंबू ढूंढ़ने के लिए उठे, जो गर्म धूप में, कुछ घण्टों में पिघल गई थी। हमारे यूरोपीय कपड़े, तापमान के इन लगातार होने वाले परिवर्तनों के लिए अनुपयोगी थे और हमने तिब्बतियों के साथ, उनके व्यावहारिक, कमर में बैल्ट से बांधे हुए और भेड़ की खाल के, लंबी चौड़ी आस्तीनों, जो दस्तानों का स्थान भी लेती थीं, के लबादों के ऊपर ईर्ष्या की।

इन असुविधाओं के बावजूद, जब कभी रुकते हुए, हमने अच्छी प्रगति की, हम सड़क किनारे के एक घर में आए। समय–समय पर हमें हिमालय के दृश्य (देखने को) मिले, जो प्राकृतिक सौन्दर्य में किसी भी चीज, जो मैंने कभी देखी थी, से श्रेष्ठ थे। हमें कम, और अधिक कम, नोमाड मिले और मात्र जीवित प्राणी, जो हमने ब्रह्मपुत्र के दांए किनारे पर देखे, चिंकारा (gazelle) और एशियन जंगली गधे (onagers) थे। अब हम –हमारी यात्रा की अनुज्ञा में उल्लेख की गई सूची का अंतिम नाम–ग्याबनाक (Gyabnak) पहुॅच रहे थे। हमारे गार्टोक वाले मित्र के अधिकार, इसके आगे विस्तारित नहीं होते थे। निर्णय, कि आगे क्या किया जाना है, हमारे हाथों में से छीन लिया गया था, क्योंकि ग्याबनाक में हमारे ठहरने के तीसरे ही दिन, एक संदेशवाहक ट्राडून से, हांफता हुआ, जल्दी में आया और हमें तुरंत ही उस स्थान से चले जाने को कहा। दो उच्च अधिकारी हमसे मिलना चाहते थे। हमें ग्याबनाक, जो इतना छोटा था कि ये मुश्किल से ही एक स्थान कहने लायक था, छोड़ने का कोई खेद नहीं था। इसमें बोंग्पा, (Bongpa) प्रान्त के मठ के अधिकारी का, केवल एक घर था। सबसे अधिक पड़ोसी नोमाड का तम्बू, यहॉ से एक घण्टे चलने की दूरी पर था। हम तुरंत चलने के लिए तैयार हो गए और एकांत स्थान में, जिसमें केवल जंगली गधे आबाद थे, अपनी रात गुजारी।

मैं अगले दिन को, सबसे अधिक सुंदर अनुभवों में से एक के लिए, जो मुझे कभी मिला, हमेशा याद रखूॅगा। जैसे ही हम आगे बढ़े, थोड़े समय बाद हम, एक दूर जिले में बौद्धमठ की चमकती हुई सुनहरी मीनारों पर हमारी नजर पड़ी। उनके ऊपर, सुबह की धूप में बहुत अधिक शानदार ढंग से चमकती हुई बर्फ की अत्यधिक दीवारें थीं और हमने धीमे–धीमे अनुभव किया कि हम, धौलागिरि (Dhaulagiri), अन्नपूर्णा (Annapurna) और मनस्लू (Manaslu) की, एक दैत्याकार तिकड़ी (trio) देख रहे थे। चूंकि इस मठ की ट्राडुन (Tradun) और फिलिग्री (Filigree) मीनारें, पठार के दूर की तरफ पड़ती हैं, हमें अनेक घण्टे मिले, जिसमें हम इन शक्तिशाली पहाड़ों के दृश्य का आनंद उठा सकते थे। जमकर खाने की भी कोई आवश्यकता नहीं थी, त्साचू (Tsachu) ने बर्फीले ठंडे पानी के माध्यम से, हमारे उल्लास को तर कर दिया था।

ये शाम का वक्त था, जब हम चल कर त्राडुन में पहुॅचे। डूबते हुए सूर्य की आखिरी किरणों में, पर्वत की तरफ लाल मठ, अपनी सुनहरी छतों के साथ, एक स्वर्गिक स्थान दिखाई पड़ रहा था। निवासियों के घर, सामान्य गारे की ईंटों के निवास स्थान, उनको हवाओं से बचाने के लिए, पहाड़ी के पीछे बनाए गए थे। हमने पूरी आबादी को एक जगह जुड़े हुए और खामोशी के साथ अपनी प्रतीक्षा करते हुए पाया। हमको तत्काल ही एक घर में, जो हमारे लिए तैयार रखा गया था, ले जाया गया। मुश्किल से ही हम अपने सामान को उतार पाए होंगे, जबकि अनेक नौकर आ पहुॅचे और सर्वाधिक सौहार्द्रता के साथ, उन्होंने अपने स्वामियों के यहॉ आने के लिए आमंत्रित किया। अपेक्षाओं से भरे पूरे हम, उनके पीछे, उन दो उच्च अधिकारियों के घरों की तरफ चले।

फुसफुसाते हुए नौकरों की भीड़ में हो कर, हम एक बड़े आकार के कमरे में गये, जहॉ सबसे ऊॅची बैठक में एक मुस्कुराता हुआ, अच्छा खाया पिया भिक्षु और उसके साथ उसी स्थल पर उसका धर्मनिरपेक्ष सहयोगी बैठा हुआ था। उससे थोड़ा नीचे, ग्यावनाक के मठ से संबंधित अधिकारी, एक मठाध्यक्ष और नेपाल का एक व्यापारी बैठा था। व्यापारी ने अंग्रेजी के कुछ शब्द कहे और एक दुभाषिये की भॉति अभिनय किया। उन्होंने गद्दों के साथ, एक बैंच तैयार की थी ताकि, हमें तिब्बतियों की भांति पालथी मारकर, फर्श पर न बैठना पड़े। हमको चाय और चकतियॉ, दबाव देकर दी गईं और पूछताछ, नम्रतापूर्वक, थोड़े समय के लिए स्थगित कर दी गई। अंत में, हमको अपने यात्रा अनुज्ञापत्रों को दिखाने के लिए कहा गया। इसे प्रस्तुत किया गया और सभी उपस्थित व्यक्तियों द्वारा सावधानीपूर्वक, अध्ययन किया गया। तब वहॉ कठोर खामोशी का समय था। दोनों अधिकारी, धीमे–धीमे अपने अविश्वास से बाहर आए, क्या हम वास्तव में जर्मन हो सकते हैं ? ये सामान्यरूप से अविश्वसनीय था कि हम युद्ध के भगोड़े बंदी हो सकते हैं और ये अधिक संभावना थी कि, हम रूसी या अंग्रेज हों। उन्होंने हमें अपने सामान, जो खोल दिया गया था को लाने दिया और ऑगन में फर्श पर फैला दिया गया और तब उसे सावधानीपूर्वक, जॉचा गया। उनकी प्रमुख चिंता, ये विचार था कि, हमारे पास हथियार या कोई समाचार प्रसारण करने वाला रेडियो हो सकता है और उन्हें ये समझाना मुश्किल था कि, हमारे पास दोनों में से कुछ नहीं था। संदेह पैदा करने वाली केवल वस्तुयें, जो हमारे कब्जे में थीं, तिब्बती व्याकरण और इतिहास की एक–एक किताब।

हमारे यात्रा अनुज्ञापत्र में यह कहा गया था कि, हम नेपाल जाना चाहते थे। ये विचार, हमारे प्रश्न पूछने वालों को खुश करता प्रतीत हुआ और उन्होंने हर प्रकार से हमारी मदद करने का वादा किया। उन्होंने कहा कि

हम अगले दिन सुबह, (यात्रा) शुरू कर सकते हैं और कोरेला (Korela) दर्रे में से गुजरते–गुजरते, दो दिन में नेपाल पहुॅच जायेंगे। ये किसी प्रकार से हमको उचित नहीं लगा। हमने हर कीमत पर तिब्बत में रहने की कामना की और हम इस विचार को, बिना किसी संघर्ष के, नहीं छोड़ने के लिए दृढ़प्रतिज्ञ थे। हमने शरण पाने के अधिकार की याचना की, तिब्बत की उदासीनता के मुख्यबिन्दु पर वजन दिया और तिब्बत की स्थिति की स्विट्जरलैण्ड की स्थिति के साथ तुलना की। अड़ियल अधिकारी ने, सौहार्द्रतापूर्ण शर्तों पर, जो हमारे यात्रा अनुज्ञापत्रों में दर्शायी गई थीं, जोर डाला। तथापि, अपने तिब्बत में पड़ाव की अवधि में हम, एशिया के लोगों की मानसिकता से अधिक अच्छी तरह से परिचित हो गए थे और जानते थे कि, शीघ्र ही रास्ता निकालना, नियमों के विपरीत था। हमारी बातचीत का शेष भाग, पूरी तरह शांति में गुजरा। हम सभी ने असीमित संख्या में चाय के प्याले पिये और हमारे मेजबानों ने हमको नम्रता के साथ सूचना दी कि वे वहॉ, कर की उगाही के लिए यात्रा पर हैं और कि ल्हासा में वे इतने असाधारण व्यक्ति नहीं थे, जितने कि वे ट्राडुन में दिखाई देते थे। वे बीस नौकरों और बहुत बड़ी संख्या में लदे हुए जानवरों के साथ, यात्रा कर रहे थे ताकि किसी को यह प्रभाव मिले कि, वे कम से कम मंत्री स्तर के थे।

विदा होने से पहले, हमने साफ–साफ कहा कि हम ट्राडुन में कुछ दिन और रहना चाहते हैं। अगले दिन– चूॅकि सभी उच्चस्तरीय अधिकारी तिब्बत में बुलाए गए हैं, एक सेवक बोनपोओं की ओर से, लुंच्योन (luncheon) के लिए आमंत्रणपत्र लाया। हमने चीनी नूडल्स का बहुत बढ़िया खाना लिया और इससे निर्णय करते हुए कि उन्होंने हमारी प्लेटों में खाने की ढेर मात्राऐं भर दीं थीं, मैंने सोचा कि हम भूखे मरते हुए दिखाई दे रहे होंगे। हम उस कुशलता से, जिससे तिब्बती लोगों ने अपने चीनी कांटे का उपयोग किया, अत्यधिक प्रभावित थे और हमें ये देख कर कि उनसे वे चावल का एक–एक दाना उठा सकते थे, बहुत बड़ा आश्चर्य हुआ। पारस्परिक आश्चर्य ने मित्रतापूर्ण वातावरण बनाने में हमारी मदद की, और वहॉ बहुत जोर की दिलकश हॅसी–दिल्लगी हुई। समूहीकरण के आनंद को बढ़ाते हुए, खाने की समाप्ति पर, बीयर प्रस्तुत की गई। मैंने ध्यान दिया कि भिक्षुओं ने इसको नहीं पिया।

वार्तालाप, धीमे–धीमे, हमारी समस्याओं की ओर घूम गया, और हमने सुना कि हमारी तिब्बत में ठहरने की प्रार्थना पर आज्ञा प्राप्त करने के लिए, अधिकारियों ने ल्हासा की केन्द्रीय सरकार को, एक पत्र भेजने का निश्चय किया है। हमें अंग्रेजी भाषा में एक याचिका तैयार करने के लिए कहा गया, जिसको दोनों अधिकारियों ने अपने पत्र के साथ अग्रेषित करने की इच्छा व्यक्त की। यह हमने वहीं, तत्काल ही कर दिया, और हमारी याचिका के साथ, हमारी उपस्थिति में ही अधिकृतपत्र, जो पूर्व में ही तैयार किया जा चुका था, लगा दिया गया। इसको उचित समारोह के साथ बंद किया गया और संदेशवाहक को दे दिया गया, जो तुरंत ही ल्हासा की ओर चला गया।

हम अपने मित्रवत स्वागत के इस तथ्य को और जब तक कि ल्हासा से कोई उत्तर प्राप्त न हो, हमको ट्राडुन में ही रुकने की आज्ञा प्रदान की जाए, कदाचित् ही महसूस कर सकते थे। कनिष्ठ अधिकारियों के साथ हमारा अनुभव संतोषजनक नहीं रहा था, इसलिए हमने, ट्राडुन में अपने निवास की मौखिक स्वीकृति के लिखित पुष्टिकरण के लिए कहा, जो हमें प्राप्त हो गई। काफी देर बाद, हम खुशी–खुशी, कि सारे मामले इतनी अच्छी तरह से निबट गए, अपने क्वार्टरों पर वापस लौटे। हम मुश्किल से पहुॅचे ही थे कि दरवाजा खोला गया और बुरी तरह लदे हुए सेवकों का एक दस्ता, नियमित जलूस के रूप में, अंदर घुसा। वे हमारे लिए आटे के बोरे, चावल और त्सम्पा और साथ–साथ चार काटी हुई भेंड़ें लाए थे। जब तक कि मेयर ने, जो सेवकों के साथ था, हमें स्पष्ट नहीं किया कि ये दो उच्च अधिकारियों ने उन्हें भेजा था, हम नहीं जानते थे कि, उपहार किनकी ओर से प्राप्त हुए हैं। जब हमने उन्हें धन्यवाद देने का प्रयास किया, मेयर ने नम्रतापूर्वक, सभी श्रेय को नकार दिया और कोई भी इस उदारतापूर्ण कार्य के लिए, मानने को तैयार इच्छुक दिखाई नहीं दिया। बदले में, जैसे ही हम चले, आरामतलब तिब्बती लोगों ने कुछ कहा, जो मेरी अच्छी तरह सेवा करने के लिए था! यूरोपीय लोगों की जल्दी को, तिब्बत में कोई स्थान नहीं है। यदि हम लक्ष्य पर पहुॅचना चाहते थे, तो हमको धैर्य धारण करना सीखना चाहिए।

उपहारों को देखते हुए, जैसे ही हम तीनों अपने घर में अकेले बैठे, हम अपने भाग्य के परिवर्तन के ऊपर मुश्किल से ही विश्वास कर सकते थे। हमारी तिब्बत में रहने की प्रार्थना, ल्हासा के रास्ते पर थी, और हमारे पास महीनों तक पूरा करने के लिए, पर्याप्त आपूर्तियॉ थीं। हमारे पास, शरण लेने के लिए, पतले से तंबू के बजाय एक मोटी छत और आग को जलाने और पानी लाने के लिए, एक महिला नौकरानी थी–दुःख है, कि न तो वह जवान

थी और न ही सुंदर। हमें दुःख हुआ कि हमारे पास ऐसी कोई लायक चीज नहीं थी, जो हम अपने आभार प्रदर्शन के संकेत के रूप में बोन्पो को भेज पाते। उन्हें देने के लिए, हमारे पास थोड़ी सी दवाइयों को छोड़ कर, कुछ नहीं था, परंतु हम अपने धन्यवादों को उचित रूप से प्रस्तुत करने के एक अवसर के लिए आशान्वित थे। गार्टोक की भांति, यहॉ हमें ल्हासा के भद्रपुरुषों की सौहार्द्रता, जिसकी प्रशंसा में, मैंने श्रीमान् चार्ल्स वैल (Sir Charles Bell) की पुस्तकों में काफी अधिक पढ़ा है, को देखने के कई अवसर मिले।

चूँकि हमें यहॉ महीनों रुकना था, हमने समय गुजारने की योजनायें बनाईं। हमें बिना किसी असफलता के अन्नपूर्णा और धौलागिरि के क्षेत्रों में और उत्तर के पठारी भाग में अभियान करने चाहिए, परंतु थोड़े समय बाद, एक मठाध्यक्ष, जिसकी मदद को, मेयर ने हमारी तरफ से सूचीबद्ध करने का प्रयास किया था, हमें मिलने आया। उसने हमें बताया कि केवल इस प्रतिबंध के साथ कि, हम कभी भी नगर से एक दिन से अधिक दूरी से आगे दूर नहीं जायेंगे, हमारे ट्राडुन में रुकने का अनुमोदन हो गया है। हम जहॉ चाहें, बाहर घूमने भी जा सकते थे बशर्ते हम रात से पहले वापस लौटकर आ जाऐं। यदि हमने इन निर्देशों का पालन नहीं किया, तो उसे ल्हासा को सूचना देनी पड़ेगी, और जो निस्संदेह, हमारे पूरे प्रकरण को पूर्वाग्रह से ग्रसित कर देगी।

एक पहाड़ी के वर्चस्व में, जिस पर एक मठ खड़ा था, गॉव में लगभग बीस घर थे। मठ में केवल सात भिक्षु रहते थे। गॉव के घर कतार में थे और एक दूसरे के साथ सटे हुए थे, परंतु, तथापि, हर घर का अपना एक ऑगन था, जिसमें सामान जमा कर रखे गए थे। गॉव के सभी निवासी, किसी न किसी तरह से व्यापार या परिवहन से जुड़े हुए थे; वास्तविक नोमाड लोग पठार में छितरे हुए रहते थे। हमें अनेक धार्मिक उत्सवों में शामिल होने का अवसर मिला, जिनमें से सबसे अधिक प्रभावशाली था, फसल के प्रति धन्यवाद देने का। अब हम सभी निवासियों के साथ एक मित्रवत् स्थिति में थे और हम, विशेषरूप से, घाव और पेट के दर्द की अपनी सफलता के साथ, उनका इलाज किया करते थे।

और फिर उच्च अधिकारियों के आगमनों से, ट्राडुन में जीवन की एकरसता, अब बदल गयी थी और द्वितीयक गारपोन के अपने रास्ते पर चलते समय की सजीव स्मृति मेरे ध्यान में ज्वलंतरूप से आ गयी थी।

काफी पहले, उसके काफिले का कोई चिन्ह नहीं था, सैनिक उसके आने की घोषणा करने के लिए आ पहुँचे। तब उसका रसोइया आया, जिसने तत्काल ही उसके लिये खाना बनाना प्रारम्भ कर दिया, और अगले ही दिन, अपने काफिले और तीस नौकरों के ठाठवाट के साथ, गारपोन स्वयं आ पहुँचा। हमको शामिल करते हुए पूरी आबादी, भीड़ बनाकर, उसे वहॉ आते हुए देखने के लिए इकट्ठी हो गई। महान व्यक्ति और उसका परिवार, भव्य खच्चरों के ऊपर सवार हुआ और जानवर, जो उनके लिए तैयार था, की लगाम को पकड़कर क्वार्टर तक जाने में, गॉव के बड़े–बूढ़े, प्रत्येक ने, उसके परिवार के सदस्यों को चलने में सहायता दी। हम उसकी पुत्री की तुलना में, गारपोन से कम प्रभावित हुए। वह पहली सजीली नौजवान महिला थी, जिसको हमने 1939 के बाद देखा था और हमने उसको बहुत सुंदर पाया। उसके कपड़े असली रेशम के थे और उसके नाखूनों पर लाल पॉलिश लगाई गई थी। शायद उसने पाउडर और लिपिस्टिक का लेपन कुछ ज्यादा ही कर लिया था परंतु वह ताजगी और सफाई का प्रदर्शन कर रही थी। हमने उसे पूछा, क्या वह ल्हासा की सबसे सुंदर (महिला) है, परंतु उसने नम्रतापूर्वक, ना कहा, और ये घोषणा की कि, राजधानी में उससे अधिक सुंदर, अनेक (महिलाऐं) थीं। जब दल अगले दिन चला गया, हमें उसके मोहित करने वाले साथ से बिछुड़ते हुए काफी दुःख हुआ।

उसके तुरंत बाद, ट्राडुन में हमें एक नया अतिथि मिला। नेपाल से एक राजकीय अधिकारी, जो हमें देखने आया था परंतु एक यात्री के रूप में दिखावा कर रहा था। हमें महसूस हुआ कि, वह हमें हमारी इच्छाओं के विरुद्ध नेपाल जाने के लिए राजी करना चाहता था। उसने कहा कि, राजधानी काठमाण्डू में हमारा अच्छी तरह स्वागत होगा, और हम वहॉ व्यवसाय तलाश सकेंगे। हमारी यात्रा की व्यवस्था प्रशासन द्वारा की जायेगी और हमारे खर्चों के लिए, तीन सौ रुपये पहले से ही आबंटित किये जा चुके थे। ये सब बहुत अच्छा आकर्षक लगा–शायद अत्यधिक आकर्षक–क्योंकि हम जानते थे कि एशिया में ब्रिटेन का प्रभाव कितना बड़ा था। हमने उसकी सलाह नहीं मानी।

महीनों बाद, हमने धैर्य खोना और एक दूसरे की नब्ज टटोलना शुरू कर दिया। कॉप (Kopp) यह कहता रहा कि वह प्रसन्नता से नेपाल के जाने के आमंत्रण को स्वीकार कर लेगा। आउफस्नाइटर सामान्य की तरह अपने

रास्ते पर चला गया। उसने लदाऊ जानवरों के रूप में चार भेड़ें खरीदीं और चॉगथांग (Changthang)[2] को जाना चाहा। यह सत्य है कि यह हमारे ल्हासा से पत्र की प्रतीक्षा के मूल निर्णय के विरुद्ध था, परंतु हमने अपने पक्ष में आने वाले किसी उत्तर को प्राप्त होने में गहराई से संदेह किया।

एक शाम को, आउफस्नाइटर अपने धैर्य को खोते हुए, अपनी लदी हुई भेड़ों के साथ बाहर चला और उसने अपना शिविर, ट्राडुन से कुछ मील दूर जा कर लगाया। हमने उसके सामान को वहॉ ले जाने में मदद की और अगले दिन उसके यहॉ से जाने का इरादा बताया। कॉप ने भी अपना सामान बॉधना शुरू किया और स्थानीय अधिकारियों ने उसे यातायात के साधन देने का वायदा किया। वे बहुत प्रसन्न थे कि उसने नेपाल जाने का निर्णय लिया था, परंतु उन्होंने आउफस्नाइटर के व्यवहार को अनुमोदित नहीं किया। उस दिन के बाद, प्रहरी हमारे दरवाजे के आगे सोए, परंतु हमारे आश्चर्य के लिए, अगले दिन, आउफस्नाइटर अपने सामान के साथ, हमारे पास वापस आ गया। उसकी भेड़ों पर भेड़ियों ने हमला कर दिया था, जिन्होंने उनमें से दो को खा लिया था। इसने उसे वापस लौटने को मजबूर किया, इसलिए हम तीनों ने एक और शाम, एक साथ व्यतीत की।

अगले दिन सुबह, कॉप ने हमें विदाई पार्टी दी। पूरी आबादी उसको विदाई देने के लिए इकट्ठी हुई। हम सातों में से, जो बंदीशिविर में से तुड़ाकर भागे थे, जिनमें से पॉच तिब्बत की तरफ चले थे, केवल आउफस्नाइटर और मैं बचा। इस समूह में मात्र हम पर्वतारोही थे, और परिणामस्वरूप, इस उजाड़ देश में, अकेले और कठोर जीवन के लिए, शारीरिक और मानसिक रूप से, सर्वाधिक सही बैठते थे।

अब तक ये नवम्बर का उत्तरार्ध था, और काफिलों के रास्ते अधिक चालू नहीं थे। बौद्धमठ के अधिकारियों ने हमें कुछ भेड़ें और याक के कण्डों के बारह भार, ईंधन में रूप में–भेजे और चूँकि तापक्रम पहले से ही, माईनस बारह डिग्री सेन्टीग्रेड जा चुका था, हमें इसकी आवश्यकता थी।

2 अनुवादक की टिप्पिणी : चांगतांग, तिब्बत का अधिक ऊंचाई वाला पठार है, जो तिब्बत के पश्चिमोत्तरी भाग में, लद्दाख तक विस्तारित है। भौगोलिक रूप से, ये पूर्वी लद्दाख से लगभग 1600 किलोमीटर पूर्व की ओर, लगभग आधुनिक शंघाई तक का, तिब्बती पठार है। यहां की आबादी चांगपा या तिब्बती भाषा में नोमाड कहलाती है। इस क्षेत्र में लगभग पूरे वर्ष, बर्फ गिरी रहती है, जिससे यहां फसल या पैदावार बिलकुल नहीं होती और भेड़ एवं पशुपालन यहां का प्रमुख धंधा है, जिससे ऊन और मांस दोनों प्राप्त होते है। ऊन बहुत अच्छी गुणवत्ता वाली होती है, जो मुख्यतः काश्मीर को निर्यात की जाती है, जिससे कश्मीरी पश्मीना बनाया जाता है। चांगतांग क्षेत्र को, मुख्यतः तीन भागों में बांटा जाता है। नेपाली चांगतांग, लद्दाखी चांगतांग और तिब्बती चांगतांग। त्सो मोरीरी (Tso Moriri) नामक झील, इसी क्षेत्र में है, जो विश्व में सर्वाधिक ऊंचाई पर है। ये झील लगभग 120 वर्ग किलोमीटर क्षेत्रफल में फैली है। इसकी अधिकतम गहराई 130 फुट और समुद्र तल से ऊंचाई 14864 फुट है। इस क्षेत्र की दूसरी बड़ी झील पांगगोंग त्सो (Panggong Tso) है। समुद्र तल से इसकी ऊंचाई 13910 फीट और इसका क्षेत्रफल 134 वर्ग किलोमीटर है।

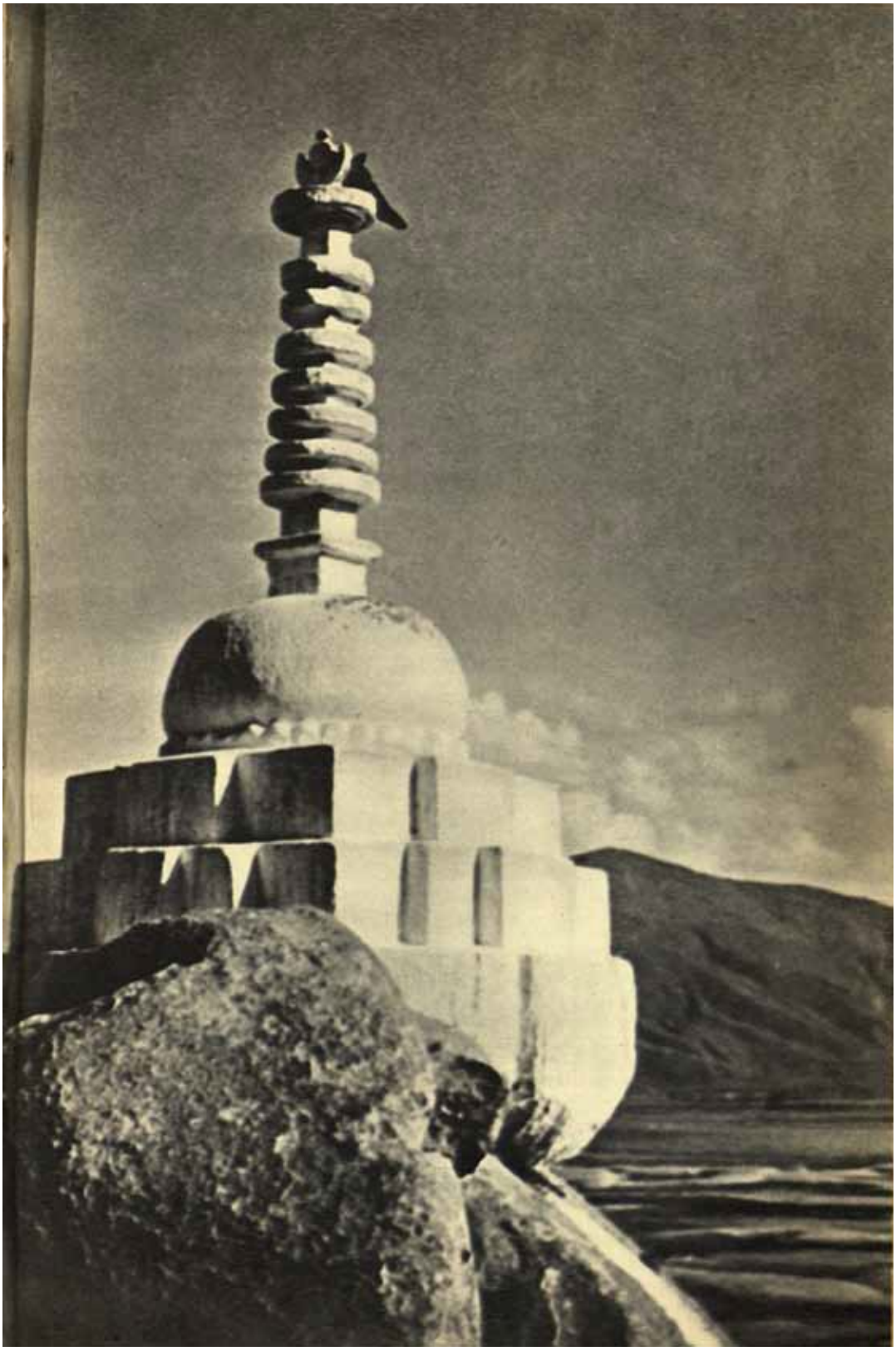

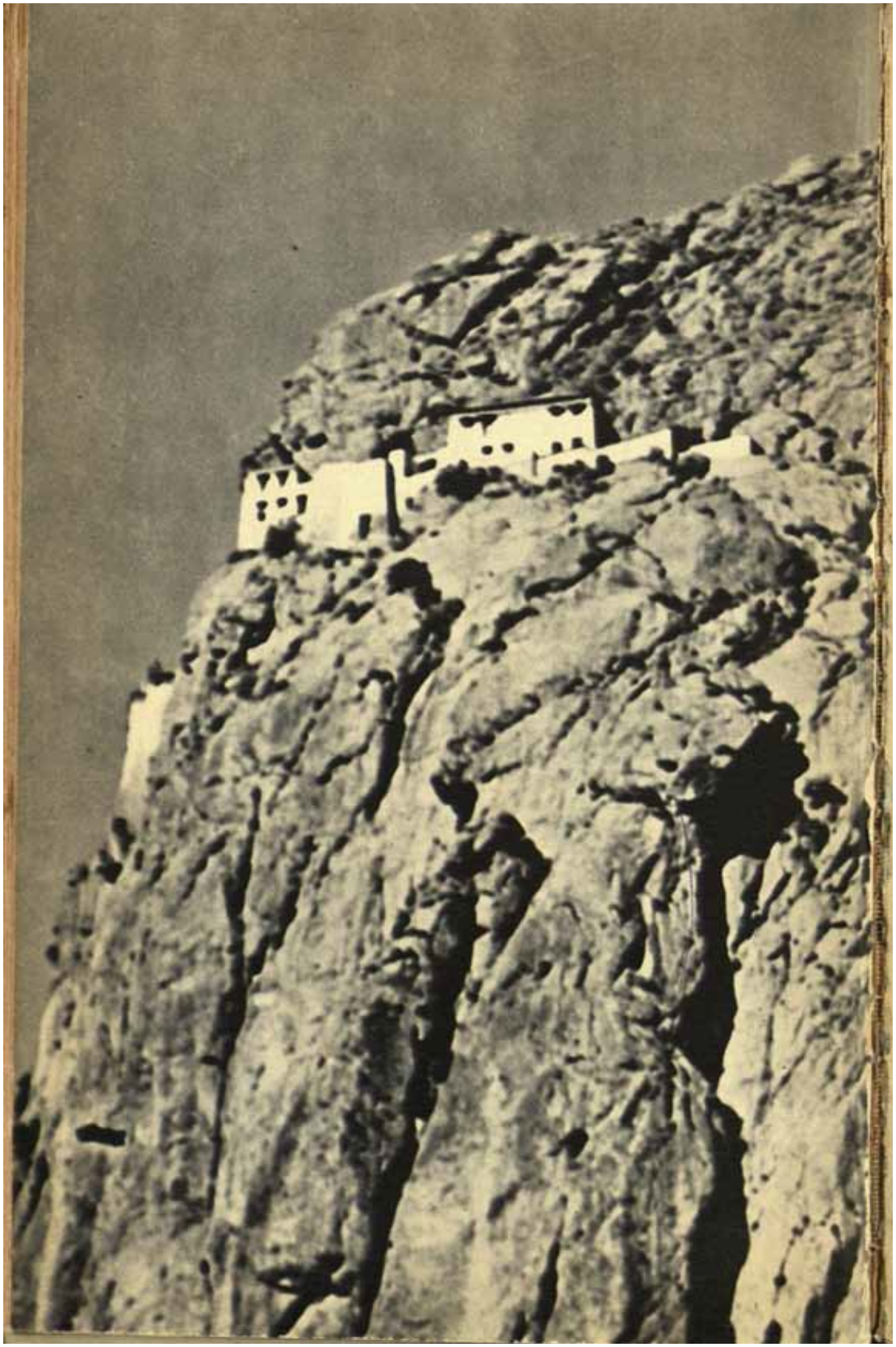

प्रसन्नता का गॉव

सर्दी भरे मौसम के बावजूद, हम अधिकारपत्र के बिना और उसके साथ भी, ट्राडुन को छोड़ने के लिए, हमेशा की तुलना में कहीं अधिक, बेताव थे। हमने किराने के सामान की जमाखोरी प्रारम्भ की और एक दूसरा याक खरीद लिया परंतु हमारी तैयारियों के बीच में ही, मठाध्यक्ष इस समाचार के साथ आया कि ल्हासा से चिरप्रतीक्षित पत्र आ चुका था। जिससे हम गुप्तरूप से डरे हुए थे, वह सत्य हो चुका था। हमको आंतरिक तिब्बत में यात्रा करने से रोक दिया गया था। पत्र को व्यक्तिगतरूप से हमें नहीं दिया गया। हमको केवल बताया गया कि हमको सबसे छोटे रास्ते से नेपाल चले जाना चाहिए, परंतु हम क्यिरोंग (Kyirong) तक तिब्बत के क्षेत्र में चल सकते थे। वहॉ से नेपाल की सीमा केवल आठ मील दूर थी और राजधानी काठमण्डू का रास्ता सात दिन का था। हमको यात्रा के लिए यातायात और नौकर दिये जाने थे। चूँकि हमारा रास्ता, हमको कुछ हद तक, तिब्बत में अंदर ले जायेगा, और जितना अधिक लंबे समय तक हम कानून के साथ बने रहें, उतना ही अच्छा होगा, हम इस निर्णय के लिए तुरंत ही राजी हो गये। सत्रह दिसम्बर को हमने ट्राडुन, जिसने हमको चार महीने तक शरण दी थी, छोड़ दिया। हमें तिब्बतियों के खिलाफ, हमको तिब्बत जाने देने की इजाजत न देने के लिए, कोई शिकायत महसूस नहीं हुई। हर आदमी जानता था कि, विदेशियों के लिए पारपत्र के बिना किसी देश में पैर टिकाना, कितना मुश्किल था। हमें उपहार देते हुए और यातायात के सामान उपलब्ध कराते हुए, तिब्बतियों ने, दूसरे देशों की तुलना में, परम्पराओं से बढ़चढ़ कर अपनी सौहार्द्रता दिखाई थी। यद्यपि, तब मैंने अपने भाग्य को उतना अच्छा नहीं समझा, जितना मैं अब समझता हूँ। आउफस्नाइटर और मैं, अभी भी, आठ महीनों के लिए, जो हमने कटीले तारों के बाहर गुजारे, धन्य महसूस कर रहे थे।

अब हम फिर से, आगे के रास्ते पर थे। हमारे काफिले में आउफस्नाइटर और मैं, दो नौकरों के साथ थे। इनमें से एक, पवित्र अवशेषों की भॉति लपेटे हुए शासकीयपत्र को, जो क्यिरोंग के जिला अधिकारी के लिए था, ले जा रहा था। हम सभी सवार थे और हमारे दो याक, चालक द्वारा चलाये जाते रखे गये। कोई भी, उन तीन खानाबदोशों, जिन्होंने कुछ महीनों पहले तिब्बत में आने के लिए हिमालय को पार किया था, से एकदम अलग, बहुत दूर से देख सकता था कि हमारा काफिला कुछ महत्वपूर्ण व्यक्तियों का था।

हमारी सड़क, हमको फिर से दक्षिण–पूर्व की तरफ, हिमालय के बांध के ऊपर ले गई। जब हमने इसे पार किया, त्सांगपो नदी पहले से ही जम चुकी थी और तम्बुओं में रात एकदम कड़वी ठण्डी थी।

एक हफ्ते तक सबारी के बाद, हम ड्जोंग्का (Dzongka) पहुँचे, जो एक गहरे धुंए के बादल की बजह से, जो घरों के ऊपर लटका रहता था, काफी दूर से दिखाई पड़ता था। ड्जोंग्का, वास्तव में, एक गॉव कहलाने लायक था। इसमें, एक बौद्धमठ के आसपास समूहित किये हुए, कच्चे गारे मिट्टी के, लगभग सौ घर थे और गॉव के आसपास खेत बोए गये थे। गॉव दो धाराओं, जो कोसी नदी को बनाती थीं और हिमालय में घुसते हुए, नेपाल में बहती थी, के मिलान बिन्दु पर स्थित था। वह स्थान तीस फुट ऊँचे परकोटे से घिरा हुआ था और लगभग बीस हजार फुट ऊँची भव्य चोटी, जिसे वहॉ के निवासियों द्वारा चोगुलहारी (Chogulhari) कहा जाता था, के द्वारा नियंत्रित था। जब हम ड्जोंग्का पहुँचे, ये क्रिसमस का दिन था–हमारा पहला क्रिसमस–जबसे हम भागे थे। हमको आश्चर्यजनकरूप से आरामदेह क्वार्टरों में ठहराया गया। पेड़ों की पंक्ति, हमसे केवल दो दिन दूर थी, और लकड़ी अब और अधिक मंहगी विलासिता नहीं थी; इसे भवनों के लिए और सभी घरेलू आवश्यकताओं के लिए उपयोग किया जा सकता था। स्टोव के आसपास टिन की बनाई हुई एक युक्ति, जिसमें हम जूनीपर की तड़कती हुई लकड़ी को जलाते थे, बहुत कुछ अच्छी लगती हुई, पूरे कमरे को गर्म रखती थी। जब शाम हुई हमने तिब्बती घी के कुछ दीपक जलाये, और उस दिन को उत्सव बनाने के लिए, अपने खाना पकाने के बर्तनों में, शीघ्र ही हमें सुअर की टॉग का मांस मिल गया।

दूसरे प्रत्येक स्थान की भांति, तिब्बत में, यहॉ सार्वजनिक सराय नहीं थी। अधिकारियों के आदेश पर यात्रियों को निजी घरों में रुकना होता था। ये रोटेशन (rotation) के द्वारा किया जाता था ताकि आबादी बहुत बुरी तरह से असुविधा में न पड़े, और ये व्यवस्था कर तन्त्र (taxation system) के एक हिस्से के रूप में बने।

हमने यहॉ अधिक रुकने की योजना नहीं बनाई, परंतु हमको तीव्र बर्फबारियों के द्वारा, ड्जोंग्का में पूरे एक महीने के लिए रखा गया। बर्फ की मोटीमोटी चकतियॉ, पूरे दिन गिरती रहतीं और संवाद बीच–बीच में टूटते

रहते। हम यहॉ आराम करके प्रसन्न थे, और हमने अपने आपको, भिक्षुओं की कुछ गतिविधियों में, दिलचस्पी के साथ जोड़ लिया और दर्शकों के रूप में, न्येनाम (Nyenam) से आने वाले नर्तकों के समूह के प्रदर्शन को देखते हुए मजा लिया।

यहॉ अभिजातीय अधिकारी (aristocratic officials) काफी संख्या में रहते थे, और हमने शीघ्र ही, उनके साथ मित्रता कर ली। अब तक हम अच्छी तिब्बती भाषा बोल लेते थे और लम्बे–लम्बे वार्तालाप कर लेते थे, जिनके द्वारा हम उनके ढंग और देश की परम्पराओं के संबंध में बहुत कुछ जान गये थे। सेन्ट सिल्वेस्टर की पूर्वसंध्या (St. Sylvester's Eve) बिना मनाये गुजर गई, परंतु हमारे विचार, हमेशा की तुलना में कहीं अधिक, अपने घर के आसपास घूमते रहे।

प्रतीक्षा की इस अवधि में, जब कभी हम कर सकते थे, हमने आसपास में, पर्वतारोहण के छोटे–छोटे अभियान किये और संतों को, जो इन गुफाओं में रहा करते थे, कोई संदेह न कराते हुए, अपने लिए दिलचस्पी की खान, चूँकि उनमें लकड़ी या मिट्टी की मूर्तियॉ या तिब्बती पवित्र पुस्तकों के पन्ने रखे हुए थे, बलुआ पत्थर की अनेक गुफायें पाईं।

एक बड़े याक के काफिले के साथ में हमारे प्रारम्भ करने के लिए, उन्नीस जनवरी को, सड़कें पर्याप्त रूप से गुजरने लायक थीं। हमारे आगे, कोई भार न ढोते हुए याकों का एक झुण्ड गया, जिसने बर्फ हटाने की मशीन के रूप में कार्य किया और मैं इस अभ्यास को करने में काफी आनन्द लेता दिखा। देश के आरपार घाटियॉ और खन्दकें थीं, और पहले दो दिनों में, उनके ऊपर, हमने बारह से कम पुल पार नहीं किये। मेरा याक, जो चॉगथांग से आता था, पुलों पर चलने के लिए अभ्यस्त नहीं था और जब उसे किसी को पार करना हो, अक्सर पीछे हट जाया करता था। ऐसा केवल उसको पीछे से धक्का देने और सामने से खींचने पर–एक प्रक्रिया, जिसमें चालक उद्यमशीलता के साथ हमारी सहायता करते थे– कि हम पार जा सकें, ही होती थी। मुझे पहले से ही, उसे क्यिरोंग न लाने की चेतावनी दे दी गई थी क्योंकि, वह क्यिरोंग की गर्मी के गरम मौसम को नहीं झेल सकेगा, परंतु मैं अपने भागने की योजना की दृष्टि से, जो हमने अभी छोड़ी नहीं थी, उसको पीछे नहीं छोड़ना चाहता था। इस पूरे समय में मेरा तापमापी (thermometer) अविचलरूप से माईनस तीस डिग्री सेन्टीग्रेड का तापक्रम दिखाता रहा। उपकरण में इससे और अधिक नीचे चिन्ह नहीं थे!

हम लौंगदा (Longda) गॉव के आसपास, एक चट्टानी मठ से, गम्भीररूप से प्रभावित हुए। घाटी से सात सौ फुट ऊँचा, जिसमें चट्टानों पर अनेक लालमंदिर और अगणित कोठरियॉ, चिड़ियों के घोसलों की तरह से संबद्ध थीं। बर्फीले तूफानों के खतरे के बावजूद, आउफस्नाइटर और मैं, अपने आपको चट्टानों के मुहाने पर चढ़ने से रोक नहीं पाये, और इस प्रकार हमने हिमालय का एक दूसरा आश्चर्यजनक नजारा प्राप्त किया। हम कुछ भिक्षुओं और भिक्षुणियों से भी मिले और उनसे ये जाना कि ये मठ प्रसिद्ध तिब्बती साधु और कवि, मिलारेपा (Milarepa)[3], जो

3 अनुवादक की टिप्पिणी : तिब्बती बौद्धधर्म की वज्रयान शाखा के महासिद्ध, महान योगी और कवि, मिलारेपा (1052 ईसवी–1135 ईसवी) के पिता का नाम मिला शेराब ग्याल्त्सेन (Mila Sherab Gyaltsen) और माता का नाम कारग्येन (Kargyen) था, जो न्याग (Nyag) के एक भद्र परिवार से थी। जब मिलारेपा का जन्म हुआ, उसके पिता व्यापारिक यात्रा पर बाहर गये हुए थे। पुत्र जन्म की सूचना देने के लिए एक संदेशवाहक को भेजा गया। समाचार पाकर पिता प्रसन्न हुए और उन्होंने बच्चे का त्योपा गा (Topa Ga) रखा, क्योपा का अर्थ होता है सुनना और गा का अर्थ होता है प्रसन्न। इसलिए उसके नाम मिलारेपा का अर्थ था, सुनने की प्रसन्नता या शुभ समाचार। जब मिलारेपा सात वर्ष के थे, उसके पिता काफी बीमार हो गये। ये अनुभव करते हुए कि वे बीमारी से उबरने वाले नहीं थे, उन्होंने अपने नजदीकी रिश्तेदारों, अपने चाचा और चाची, जो बच्चे की देखभाल के लिए नियुक्त किये गये, को बुलाया और इस बात की व्यवस्था की गई कि वे बाद में अपनी पैतृक संपति को प्राप्त कर सकें। इसी समय मिलारेपा की होने वाली पत्नी की व्यवस्था भी कर दी गई, जिसने बाद में उसके साथ शादी भी की। इस पत्र को लिखने के बाद सीलबंद कर दिया गया और चाचा और चाची ने उनकी वसीयत को निभाने का जिम्मा लिया। उसके बाद मिलारेपा के पिता गुजर गये। बाद में चाचा चाची ने धन संपत्ति, जो विश्वासपूर्वक सौंपी गई थी, को हड़प लिया गया और उसका उन्होंने अपने हित में प्रयोग किया। मिलारेपा, उसकी बहन, और उसकी मॉ को चाचा और चाची के यहॉ नौकरी करनी पड़ी। उनको वहॉ नौकरों से भी खराब खाना और कपड़े दिये जाते थे और काम के भारी बोझ से लाद दिया जाता था। गर्मियों में वे खेतों पर काम करते और सर्दियों में ऊन का काम करते। जब मिलारेपा पंद्रह साल का हुआ, उसकी मॉ ने काफी मात्रा में बीयर खरीदी और गॉव के लोगों को आमंत्रित किया। उसने घोषणा की कि अब मिलारेपा पंद्रह साल का हो चुका था। उसकी शादी उसकी मंगेतर जेसे के साथ की जानी थी। इसलिए उसने अपने चाचा–चाची से सारी संपत्ति, जो उन्हें सौंपी गई थी, उसे लौटाने के लिए कहा। चाचा ने उसकी मॉ को मारा और बहन को पीटा। उसकी मॉ रोई, गिड़गिड़ाई परंतु चाचा ने कुछ नहीं सुनी। मिलारेपा की मॉ ने, मिलारेपा को यारलुंग भेज दिया, जहॉ उसकी भेंट लामा यंगतंग त्रोग्येल (Yungton Trogyel) से हुई। गुरू से उसने धार्मिक तांत्रिक शिक्षायें पाई और अपनी दीनता की पूरी कहानी लामा को सुनाई। उसने दैत्यों को बस में करने की क्षमता विकसित की। अपने काले जादू के माध्यम से, उसने अपने चाचा के होने वाली शादी में विघ्न उपस्थित किया। मकान धराशाही हो कर गिर गया और उसमें 35 लोग दब कर मर गये। मिलारेपा की मॉ ने इस अवसर पर खुशियॉ मनाई और कहा कि हमारे शत्रुओं का अंत हो गया है। मेरा मन अंततः संतुष्ट है और मैं प्रसन्न हूँ। बदले की इस कार्यवाही से, जो काले जादू ने की थी, मिलारेपा को पश्चाताप हुआ। वह वापस अपने गुरू, मारपा (Marpa) के पास लौटा और अपने धर्म की शिक्षा ग्रहण की। बाद में, उसने ध्यान के माध्यम से आध्यात्मिक प्रगति की और विभिन्न प्रकार के चमत्कार दिखाये। तिब्बत में जादू और रहस्य (Magic and Mistries of Tibet) नामक पुस्तक में कहा गया है कि मिलारेपा ने कई दिनों में तय की जाने वाली दूरी को काले जादू के माध्यम से पलभर में तय कर लिया था। तिब्बत में यह किया, लंग–गोम–पा (Lung-gom-pa) कहलाती है और इसका अभ्यास करने

ग्यारहवीं शताब्दी में कभी वहॉ रहता था, के द्वारा स्थापित किया गया था। हम सरलता से समझ सकते थे कि भव्य आसपड़ोस और स्थान का एकाकीपन, विशेषरूप से, ध्यान लगाने और कविता करने के लिए अनुशीलित किया गया था। खेदपूर्वक, हमने इस स्थान को छोड़ दिया और किसी अगले दिन यहॉ दुबारा आने का निश्चय किया।

हर दिन हमें कम बर्फ मिली और पेड़ों की पंक्तियों पर पहुॅचने के बाद, जल्दी ही हमने अपने आपको वास्तविकरूप में भूमध्यरेखीय क्षेत्र (tropical region) में पाया। इस वातावरण में, तिब्बती शासन द्वारा हमें दिये गये गर्म कपडे, हमारे लिए काफी अधिक गर्म थे। अब हम विराम के अंतिम स्थान, क्यिरोंग, से पहले, ड्रोथांग (Drothang) में आये। मुझे याद है कि इस स्थान के सभी निवासियों में घेंघा (goiter), जो किसी को तिब्बत में विरला ही दिखाई देता है, अत्यधिक विकसित था। हमें क्यिरोंग तक जाने में एक हफ्ता लगा, जो यदि सड़क अच्छी हो, तो ड्जोंग्का (Dzongka) से केवल तीन दिनों की यात्रा होती है, और तीव्रगामी वाहन के द्वारा एक ही दिन में पहुॅचा जा सकता है।

क्यिरोंग नाम का अर्थ है, ''प्रसन्नता का गॉव,'' और ये वास्तव में इस नाम के लायक भी है। मैं इस स्थान के बारे में तरसते हुए, कभी सोचना बंद नहीं करूॅगा और यदि मैं चुनाव कर सकूॅ कि, अपने जीवन की शाम मुझे कहॉ गुजारनी है, तो ये क्यिरोंग ही होगा, जहॉ मैं अपने लिए देवदार की लाल लकड़ी का एक घर बनाऊॅगा और यद्यपि, यहॉ की ऊॅचाई नौ हजार फुट से ऊपर है, क्यिरोंग अट्ठाईसवें समानान्तर पर स्थित है, जिसमें अपने बगीचों में हो कर गुजरते हुए, दौड़ते हुए पहाड़ी झरनों से, हर तरह का फल उगेगा। जब हम जनवरी में पहुॅचे, तापक्रम जमाव बिन्दु के ठीक नीचे था; ये कभीकभार ही माइनस दस डिग्री सेन्टीग्रेड से नीचे जाता है। ये मौसम वैसा ही है जैसा कि हमें आल्पस (Alps) में मिलता है, परंतु वनस्पतियॉ निचले भूमध्यरेखीय क्षेत्र (lower tropical region) की हैं। कोई आदमी पूरे साल बर्फ पर फिसलता हुआ (skiing) चल सकता है, और गर्मियों में यहॉ बीस हजार चढ़ने वाले लोगों की भीड़ होती है।

यहॉ गॉव में, दो जिला राज्यपालों की, जो तीस गॉवों को प्रशासित करते हैं, पीठ है, लगभग अस्सी घर हैं। हमें बताया गया था कि हम पहले यूरोपियन थे, जो क्यिरोंग में आये थे और निवासियों ने अत्यधिक आश्चर्य के साथ, हमारे प्रवेश को देखा था। इस बार हमको, एक किसान के घर में रखा गया, जिसने हमको अपने प्रारम्भिक लोगों के घरों (Tyrolese) की याद दिला दी। सिवाय इसके कि चिमनियों के बजाय, घरों की छतें प्रार्थनाध्वजों के द्वारा, सजाई गई थीं, वास्तविकता के रूप में, पूरा का पूरा गॉव, मानो आल्पस से उखाड़कर यहॉ रोप (transplant) दिया गया हो। ये (प्रार्थनाध्वज) हमेशा ही पॉच रंगों में होते थे, जो तिब्बत में, जीवन के विभिन्न आयामों को प्रदर्शित करते थे।

आधारतल पर गायों और घोड़ों के लिए तबेले थे। ये एक मोटी छत के द्वारा, परिवार के रहने के कमरों से, जो आंगन में से सीढ़ियों के द्वारा चढ़ कर पहुॅचे जा सकते थे, अलग किये गये थे। भरे हुए मोटे गद्दे, हमारे लिए, बिस्तरों और आराम कुर्सियों की तरह थे, और उनके पास थीं, छोटी, नीची मेजें। घर के सदस्य, अपने कपड़ों को चटकदार रोगन की हुई अलमारियों में रखते थे, और अनिवार्यरूप से गढ़ी हुई लकड़ी की वेदियों के सामने, मक्खन के दीपक जल रहे थे। सर्दियों में पूरा परिवार, देवदार की लकड़ी के फर्श के तख्तों (deal floor boards) के ऊपर, एक बड़े खुले लम्बे डंडों की आग के आसपास बैठता था और अपनी चाय की चुस्कियॉ लेता था।

कमरा, जिसमें आउफस्नाइटर और मुझे रखा गया था मानो कि छोटा था, इसलिए मैं जल्दी ही घासफूस के खलियान के अगले दरवाजे में चला गया। आउफस्नाइटर, चूहे और खटमलों के साथ, अपने कभी समाप्त न होने वाले संघर्ष पर जारी रहा, जबकि मुझे चुहियों और जुंओं से मुकाबला करना पड़ा। मैं कभी भी कीड़ों के साथ अधिक अच्छा नहीं हो पाया परंतु हिमनदों के ऊपर के दृश्य और सदाबहार के जंगलों ने मेरी असुविधा की कमी को पूरा कर दिया था। हमें अपने लिए नियुक्त, एक नौकर मिला हुआ था, परंतु हम अपना खाना खुद ही बनाना अधिक पसंद करते थे। हमारे कमरे में आग जलाने का एक स्थान था और हमें जलाने के लिए लकड़ी दी गई

वाला, असाधारण गति से, बिना रुके, कईकई दिनों तक, ध्यानावस्था में दौड़ता चला जाता है। तिब्बत में, मिलारेपा को, विशेष रूप से तंत्र के लिए जाना जाता है। उसने अनेक कविताओं और संगीत की लयों की रचना की। तिब्बतियों के लिए, मिलारेपा, दैत्यों को बस में करने वाले धर्मगुरू के रूप में जाना जाता है। उसके महिला और पुरुष दोनों ही अनेक शिष्य थे। इस परंपरा में, गम्पोपा (Gampopa) उसका उत्तराधिकारी शिष्य था, जिसने उसकी परंपरा को आगे बढ़ाया। मिलारेपा ने अपने जीवन के अनेक वर्ष, नेपाल के न्यालम (Nyalam) के उत्तरी दिशामें लगभग 11 किलोमीटर दूर, मुस्तांग नदी के ऊपर एक गुफा, जिसे मिलारेपा गुफा कहा जाता है, में साधना में व्यतीत किये।

थी। हमने काफी कम धन व्यय किया; हमारा खाने पीने का सामान, हर महीने में, हमको दो पाउंड दस शिलिंग से अधिक कभी नहीं हुआ। मैंने एक पेन्ट बनवाई, और दर्जी ने आधा क्राउन (crown)[4] लिया।

इस क्षेत्र का सहखाद्य त्सम्पा है, वे इसे, इस प्रकार तैयार करते हैं। आप एक लोहे की कढ़ाई में, बालू को ऊँचे ताप तक गर्म करें और तब जौ को उस पर पलट दें। वे खिलते हुए थोड़े से फट जाते हैं, जहॉ से आगे आप जौ के फूले और बालू को एक महीन चलनी में रखते हैं, जिसमें हो कर बालू निकल जाती है; इसके बाद आप जौ के फूले को बहुत महीन पीस लेते हैं। परिणामी खाद्य को मक्खन वाली चाय या दूध या बियर के साथ, एक पेस्ट के रूप में मिलाया जाता है और तब खाया जाता है। तिब्बती लोगों को त्सम्पा के प्रति एक विशेष प्रकार की सनक होती है और इसको तैयार करने की अनेक विधियॉ हैं। हम शीघ्र ही इसके अभ्यस्त हो गये, परंतु कभी भी मक्खन वाली चाय, जो सामान्यतः बासी, सड़े मक्खन से बनाई जाती है और यूरोपीय लोगों को सामान्यतः अरुचिकर होती है, की अधिक चिंता नहीं की। तथापि, ये विश्व भर में सभी जगह पी जाती है और तिब्बतियों, जो एक दिन में अक्सर साठ कपों तक पी जाते हैं, के द्वारा प्रशंसा पाती है। क्यिरोंग के तिब्बती, मक्खन वाली चाय और त्सम्पा के अलावा चावल, कूटू (buckwheat) का आटा, मक्का, आलू, पालक, प्याज, सेम, मूलियॉ खाते हैं। मांस बिरले ही होता है, क्योंकि क्यिरोंग विशेषरूप से पवित्र स्थान है। यहॉ कभी किसी जानवर को काटा नहीं गया। मेज पर मांस केवल तभी दिखाई देता है, जब इसे कहीं दूसरे जिले से लाया जाता है या अक्सर, जब भालू और चीते अपने शिकार को खाने के बाद, इसके एक अंश को बिना खाया छोड़ देते हैं। मैं इस सिद्धान्त को, इस तथ्य के साथ कि हर बसन्त के अंत में, लगभग पन्द्रह हजार भेड़ें, क्यिरोंग में हो कर, नेपाल के कसाई खानों के लिए जाती हैं और तिब्बती उनके ऊपर, निर्यात कर वसूल करते हैं, कैसे सामंजस्य में बिठाया जा सकता था, कभी नहीं समझ पाया।

हमारे रुकने के ठीक प्रारम्भ में, हम जिला अधिकारियों से मिले। हमारी यात्रा के दस्तावेज, हमें एक नौकर के द्वारा दे दिये गये थे और बोन्पो ने सोचा था कि हम सीधे नेपाल में जायेंगे। किसी भी तरीके से, हमारा इरादा ऐसा नहीं था, और हमने उसे बताया था कि हम कुछ समय के लिए क्यिरोंग में रुकना चाहेंगे। उसने इसे अत्यधिक हल्केपन के साथ लिया और हमारी प्रार्थना पर, ल्हासा को सूचित करने का वायदा किया। हमने नेपाल के प्रतिनिधि से भी मुलाकात की, जिसने अत्यधिक आकर्षक शर्तों के साथ, अपने देश नेपाल का बर्णन किया था। इस बीच हमने जान लिया था कि कॉप को, थोड़े दिन राजधानी में रोकने के बाद, भारत में एक बंदी कैप में ठेल दिया गया था। वाहनों, साइकिलों और चलते–फिरते चलचित्रों के प्रलोभन ने, जो हमें कहा गया था, कि हमको काठमाण्डू में मिलेगा, हमारे ऊपर कोई प्रभाव नहीं डाला।

हम वास्तव में, ल्हासा से किसी आवासीय अनुज्ञा (residential permit) की आशा नहीं करते थे, और यदि हम नेपाल जाते तो हम आशा कर रहे थे कि हमको भारत को निष्कासित कर दिया जाता। तदनुरूप, जब तक कि हम भागने की कोई दूसरी योजना न बना लें, हमने इस परी जैसे गॉव में अपनी शक्ति को पुनः प्राप्त करने और तब तक रुकने का निश्चय किया। तब हम अनुमान नहीं कर सके थे कि हम क्यिरोंग में लगभग नौ महीने तक रुके रहेंगे।

हम बिल्कुल भी ऊबे नहीं। हमने तिब्बतियों के रंग–ढंग और उनके रीति रिवाजों पर, अपनी कापियॉ भर डालीं। अधिकांश दिनों में हम आसपडोस को खोजने चले जाते। आउफस्नाइटर, जो कभी म्यूनिख में हिमालयीन संस्थान (Himalyan Institute) का सचिव रहा था, ने इन अवसरों का उपयोग नक्शा बनाने के लिए किया। इस क्षेत्र के नक्शे पर, जो हम अपने साथ लाये थे, केवल तीन नाम थे, परंतु अब हमने इसमें दो सौ से अधिक भर लिये। वास्तव में, हमने अपनी स्वतंत्रता का न केवल आनंद लिया वल्कि हमने इसका व्यावहारिक उपयोग भी किया।

मनोरंजन की हमारी यात्रायें, जो पहले एकदम आसपड़ोस तक सीमित थीं, धीमे–धीमे आगे और आगे विस्तारित होती गईं। वहॉ के निवासी हमसे अच्छी तरह परिचित थे, और कोई हमारे काम में हस्तक्षेप नहीं करता था। वास्तव में, ये पहाड़ ही था, जिसने हमको सबसे ज्यादा आकर्षित किया, और उसके बाद, क्यिरोंग के आसपास के गर्म झरने। वहॉ उनमें से अनेक थे, उनमें से सबसे गर्म था, बांसों के जंगल में, बर्फ जैसी ठण्डी कोसी नदी के किनारे पर। पानी लगभग क्वथनांक (bioling point) पर, जमीन में से बुलबुले देता हुआ बाहर

4अनुवादक की टिप्पिणी : पॉच शिलिंग का सिक्का क्राउन कहलाता है।

निकलता था और जिसे एक कृत्रिम नाद में ले जाया जाता था, जहॉ अभी भी इसका तापक्रम लगभग 40 डिग्री सेन्टीग्रेड रहता था। मैं, एकान्तर क्रम से (alternately), हर दिन, गर्म तालाब और कोसी के हिमनद वाले जल में कूद जाया करता था।

बसंत में, यहॉ इस स्थान में, नियमित स्नान का एक मौसम होता है। तिब्बतियों के झुण्ड के झुण्ड, एक साथ आते हैं और क्यिरोंग से दो घण्टे की दूरी पर, सामान्यतः एकान्त स्थान में हर जगह, बांस की झोंपड़ियॉ उग आती हैं। आदमी और औरतें नंगे हो कर तालाब में कलाबाजी करते हैं, और पाखण्ड के कोई भी चिन्ह, उपहास की जोरदार आवाजों को उत्तेजित करते हैं। अनेक परिवार अपनी छुट्टियॉ इस स्पा (spa) में मनाते हैं। वे खाने पीने के सामान के पूरे भरे हुए बोरों और बियर की टंकियों के साथ, अपने घरों से यात्रा करते हैं और एक पखबाड़े के लिए यहॉ, इन बांस की झोंपड़ियों में बस जाते हैं। यहॉ उच्चवर्गीय लोग भी, यात्रा करने के अभ्यस्त हैं और वे बसन्त में यहॉ काफिलों और नौकरों के हजूम के साथ आ जाते हैं परंतु, चूॅकि पिघलती हुई बर्फ के कारण उफनती हुई नदी, झरनों के ऊपर बहने लगती है, छुट्टी का ये पूरा मौसम, केवल कुछ कम समय के लिए ही चलता है।

क्यिरोंग में, एक भिक्षु, जिसने ल्हासा में चिकित्सा के स्कूल में अध्ययन किया था, के साथ मैंने अपनी पहचान बनाई। वह अत्यधिक सम्मानित था और खाद्यानों पर, जो उसे उसकी सेवा के शुल्क के रूप में मिलते थे, धनी ढंग से रहने में समर्थ था। उसके इलाज करने के तरीके विभिन्न प्रकार के थे। उनमें से एक था, प्रार्थना के एक ठप्पे (prayer stamp) को प्रभावित बिन्दु के ऊपर दबाना, जो मिर्गी के रोगियों पर सफल होता दिखाई देता था। बुरे (गम्भीर) प्रकरणों में, उसने रोगियों को एक गर्म लोहे से दागा। मैं इस तथ्य की गवाही दे सकता हूॅ कि, इस प्रकार उसने एक निराश दिखते हुए मामले में, चेतना को पुनः स्थापित किया, परंतु ये इलाज, अनेक रोगियों को विपरीत ढंग से भी प्रभावित करता था। वह इस कठोर इलाज को पालतू जानवरों पर भी लागू करता था। चूॅकि मुझे एक आधे डॉक्टर के रूप में जाना जाता था और मैं दवाइयों से जुड़ी हुई हर चीज में बहुत दिलचस्पी रखता था, मैं इस भिक्षु के साथ लम्बे–लम्बे वार्तालाप किया करता था। उसने मेरे साथ स्वीकार किया कि, उसकी जानकारी सीमित थी, परंतु वह इस सम्बंध में इससे अनावश्यकरूप से चिंतित नहीं था और अपने स्थान को बदलते हुए, असुखद घटनाओं को जल्दी से भूल जाने में माहिर था। उसकी अंतरात्मा, इस तथ्य से पुनर्जीवन पाती थी कि, इन शंकापूर्ण इलाजों से कमाई गई फीस, उसकी तीर्थयात्राओं को आर्थिकरूप से मदद करती थी।

फरवरी के मध्य में, हमने अपना पहला तिब्बती नया साल मनाया। वर्ष को चन्द्र कलेण्डर (lunar calander) के आधार पर पहचाना जाता है और इसके दो नाम होते हैं एक जानवर का और दूसरा एक तत्व का। बुद्ध के जन्म और मृत्यु के दिनों के बाद, नये साल का उत्सव, साल की सबसे बड़ी घटना होता है। पिछली रात के दौरान, हम पहले से ही गाने वाले भिखारियों और भीख की तलाश में घर–घर जाते हुए घूमन्तू भिक्षुओं की आवाजों को सुना। सुबह चीड़ के ताजे काटे हुए तथा झण्डों के द्वारा सजाये गये पेड़ छतों पर रखे गये, धार्मिक पाठ पवित्रता के साथ गाये गये, और देवताओं को त्सम्पा की भेंट दी गई। लोग मंदिरों में मक्खन की भेंट लाये, और शीघ्र ही तांबे के बड़े–बड़े कढ़ाव ऊपर तक भर गये। देवता लोग, केवल तभी सजाये जाते हैं और नये साल में आर्शीवाद देने की कृपा करते हैं। जालियों के अन्दर वाली मूर्तियों के चारों ओर, आदर के एक विशेष प्रतीक के रूप में, सफेद रेशम के घूंघट (veils) पहनाये जाते हैं, और पूजा करने वाले, आदर सहित, उनके सामने अपने माथों को टिकाते हैं।

गरीब या अमीर, सभी भक्ति से परिपूर्ण और किसी आंतरिक माफी के बिना, वे अपनी भेंट को देवताओं के सामने चढ़ाते हैं और आशीर्वाद के लिए, उनसे प्रार्थना करते हैं। क्या वहॉ, अपने धर्म के साथ इतने समानरूप से जुड़े हुए और अपने दैनिक जीवन में इसके प्रति इतने आज्ञाकारी कोई लोग हैं ? मैं तिब्बतियों से, उनके सादे विश्वास के लिए, हमेशा ईर्ष्या करता था क्योंकि मैं अपने पूरे जीवन भर एक भक्त रहा था। यद्यपि मैंने, जब मैं एशिया में था, ध्यान करने का तरीका सीखा, परंतु जीवन की पहेली का पहला उत्तर अभी मेरे ऊपर प्रकट नहीं हुआ था। मैंने कम से कम, शान्ति के साथ, जीवन की घटनाओं के ऊपर चिंतन करना और परिस्थितियों के द्वारा, स्वयं को संदेहों के समुद्र में दायें–वायें उछलकूद करते हुए नहीं छोड़ना, सीख लिया था। साल के बदलने पर लोग केवल प्रार्थना ही नहीं करते थे, वे भिक्षुओं के शुभेच्छापूर्ण नेत्रों के सामने, सात दिन तक नृत्य करते थे, गाते

और पीते थे। हर घर में एक पार्टी होती थी, और हमको भी बुलाया जाता था।

ये याद करना दुःखपूर्ण होगा कि, एक दुःखमय घटना के कारण, हमारे घर में त्यौहारों के उत्सव अस्पष्ट हो गये। एक दिन मुझे अपने मेजबान की छोटी बहिन के कमरे में बुलाया गया। कमरा अंधेरा था, और केवल तभी, जब गर्म हाथों ने मेरे हाथों को पकड़ा, मैं ये अनुभव कर सका कि मैं उसके समीप खड़ा था। जब मेरी ऑखें अंधेरे के लिए अभ्यस्त हुईं, मैंने पलंग की तरफ देखा और भय के साथ शामिल हुआ मैं, अपने आपको मुश्किल से ही छिपा सका। वहॉ, बीमारी के कारण पूरी तरह बदली हुई, कोई वह, जो दो दिन पहले तक, एक सुंदर स्वस्थ लड़की थी, लेटी थी। यद्यपि एक अनाड़ी व्यक्ति, मैंने तत्काल ही देखा कि उसे चेचक निकली थी। उसका टेंटुआ (larynx) और जुबान पहले ही प्रभावित थी, और वह मोटी कुशलता के साथ केवल चिल्ला सकती थी कि वह मर रही थी। मैंने उसे बताने का प्रयास किया कि ऐसा नहीं था और तब कमरे में से उतनी तेजी से, जितना संभव हो, पूरी तरह से नहाने के लिए भागा। वहॉ करने के लिए कुछ नहीं था, और कोई केवल आशा ही कर सकता था कि इससे कोई महामारी न फूट पड़े। आउफस्नाइटर ने भी उसको देखा और मेरे रोगनिदान (diagnosis) से सहमत हुआ। दो दिन बाद वह मर गई।

इसलिए, उत्सव के आनन्द के बाद, इस शोकपूर्ण घटना ने हमको तिब्बत की मृतक संस्कार की विधियों से अवगत कराया। सजाया हुआ चीड़ का पेड़, जो छत पर खड़ा था, हटाया गया और अगले दिन भोर में लाश को सफेद गाढ़े कपड़े में लपेटा गया और उसे एक पेशेवर लाश ढ़ोने वाले के द्वारा पीठ पर लाद कर ले जाया गया। हम शोक प्रकट करने वाले समूहों के साथ चले, जो केवल तीन आदमियों का था। गॉव के पास, काफी दूर से मृतक संस्कार के स्थान के रूप में पहचाने जा सकने योग्य एक ऊॅचे स्थान पर, पक्षियों और कौओं की बहुतायत के द्वारा, जो इसके ऊपर उड़ रहे थे, आदमियों में से एक ने, एक कुल्हाड़ी से लाश को टुकड़ों में काटा। दूसरा, प्रार्थनाओं को गुनगुनाते हुए और एक छोटे ढोल को बजाते हुए, समीप ही बैठा रहा। तीसरे आदमी ने चिड़ियों को दूर भगाया और कुछ–कुछ समयों पर, उनको प्रसन्न करने के लिए, दूसरे दो लोगों को बीयर या चाय दी। मरी हुई लड़की की हड्डियॉ पीस कर चूरा की गईं, ताकि वे भी चिड़ियों के द्वारा उपयोग में लाई जायें और लाश का कोई चिन्ह, वहॉ न बचा रहे।

ये उत्सव, जैसा बर्बतापूर्ण ये दिखाई देता है, (वैसे ही) गहरे धार्मिक उद्देश्यों से प्रारम्भ होता है। तिब्बती लोग मृत्यु के बाद, अपनी लाश का कोई नामोनिशान छोड़ने की इच्छा नहीं करते, जो आत्मा के बिना, कोई महत्व नहीं रखता। भद्र पुरुषों और उच्चश्रेणी के लामाओं की लाशें जलाई जातीं हैं, परंतु सामान्य लोगों के बीच, उनके साथ व्यवहार करने का, उनके शरीर के टुकड़े–टुकड़े करने का, यही तरीका है। निष्पादन का ये तरीका अत्यधिक खर्चीला होता है, और केवल अत्यन्त निर्धन लोगों की लाशें ही, नदी में बहा दी जाती हैं। यहॉ मछलियॉ, गिद्दों के काम को पूरा करती हैं। जब गरीब लोग संक्रामक बीमारियों से मरते हैं, वे विशेष व्यक्तियों के द्वारा ठिकाने लगाये जाते हैं, जिन्हें शासन से वेतन मिलता हैं।

सौभाग्यवश, चेचक के मामले बहुत कम थे, और केवल अत्यन्त अल्प संख्या में लोग मरते थे। हमारे घर में उनन्चास दिनों के लिए शोक मनाया गया, और तब प्रार्थनाध्वजों के साथ ताजे पेड़, फिर छतों पर लगाये गये। इस उत्सव पर अनेक भिक्षु आये, जिन्होंने अपने विशिष्ट संगीत के साथ प्रार्थनायें कहीं। ये सब स्वाभाविक रूप से धन को व्यय करता है, और जब कभी परिवार में मृत्यु होती है, तिब्बती लोग, सामान्यतः अपने गहनों में से या स्वर्गवासी के कब्जे वाले सामान में से कुछ–कुछ बेचते हैं, जिससे प्राप्त होने वाला धन, भिक्षुओं द्वारा की गई अंत्येष्टि में खर्च किया जाता है और तेल को, उनके असंख्य छोटे दीपकों में उपयोग में लाया जाता है।

इस पूरे समय की अवधि में, हमने अपना दैनिक घूमना जारी रखा, और भव्य बर्फ ने हमको स्कियॉ बनाने का एक विचार दिया। आउफस्नाइटर को भोज के पेड़ के तनों के कुछ जोड़ मिल गये, जिस पर से उसने उनकी छाल उतारी और कमरे में आग के सामने उनको सुखाया। मैंने छड़ी और फीते बनाना शुरू किया, और एक बढ़ई की सहायता से हम अच्छी दिखने वाली स्कियों (skis) के दो जोड़े बनाने में सफल हुये। हम उनकी कारीगरी की दिखावट से प्रसन्न थे और उनको अत्यधिक उत्तेजना के साथ जांचते हुए, हमने सामने की तरफ देखा। तब साफ आकाश की बिजली की तरह से, हमको अपने आसपडौस में घमने फिरने के सिवाय, क्यिरोंग को छोड़ने से रोकते हुए, बोन्पो से एक आदेश आया। हमने पूरी शक्ति के साथ इसका विरोध किया, परंतु हमको कहा गया कि, जर्मनी एक शक्तिशाली राज्य था और यदि हमारे साथ पहाड़ों में कोई घटना होती है, तो ल्हासा में शिकायतें की

जायेंगी और इसके लिए क्यिरोंग के अधिकारी, जिम्मेदार ठहराये जायेंगे। बोन्पो, हमारी दण्डवत् से अडिग, (अप्रभावित) बना रहा और उसने हमें ये समझाने में कि, पहाड़ों में भालुओं, चीतों, और जंगली कुत्तों के हमलों से हम बड़े खतरे में होंगे, अपना सर्वोत्तम किया। हम जानते थे कि हमारी सुरक्षा के बारे में उनकी आशंका कुल धोखा थी, परंतु हमने यह अटकल लगाई कि उन्होंने अंधविश्वासी आबादी की प्रार्थना पर, जो संभवतः ये विश्वास करते थे कि, पहाडों की हमारी यात्रा, देवताओं को नाराज कर सकती है, बचाव में अपना रवैया अखत्यार किया है। एक क्षण के लिए, हम झुक जाने के अलावा कुछ नहीं कर सकते थे।

अगले कुछ हफ्तों की अवधि में, हमने आदेशों का पालन किया, परंतु तब हम बर्फ पर फिसलने (skiing) के अपने लोभ को रोक नहीं सके। बर्फ का आकर्षण और बर्फीले झुकाव हमारे के लिए बहुत कुछ थे, और एक दिन हमें एक तिकड़म का सहारा लेना पड़ा। मैंने अस्थायीरूप से अपना क्वार्टर, गर्म झरनों में से एक की तरफ, गॉव से केवल आधा घण्टा की दूरी पर, लिया। कुछ दिन बाद, जब लोग मेरी अनुपस्थिति के अभ्यस्त हो गये, मैंने अपनी स्की उठाईं और उन्हें चांदनी में, पहाड़ के बगल से कुछ दूर तक ले गया। अगली सुबह जल्दी ही, आउफस्नाइटर और मैं, पेड़ों की पंक्ति के ऊपर चढ़ गये और हमने भव्य बर्फीली सतह का आनन्द उठाया। लम्बे समय तक, इससे दूर रहने के बाद, बर्फ पर फिसलने के योग्य होने पर, हम दोनों विस्मित हुए। चूँकि हमको पहचाना नहीं गया, हम किसी दूसरे दिन फिर दूर चले गये, परंतु इस बार हमने अपनी स्कियों (skis) को तोड़ लिया और इन अजीब से उपकरणों के टूटे हुए अवशेषों को छिपा लिया। क्यिरोंग के लोग, कभी ये पता नहीं लगा पाये कि हम बर्फ पर चढ़ते रहे थे, जैसा वे इसे कहते थे।

बसंत ऋतु आई, खेतों में काम शुरू हुए, और अपनी सुन्दर हरी टहनियों में सर्दी के भुट्टे उगे। यहॉ, जैसे कि कैथोलिक देशों में होता है, मक्के के खेतों को पुजारियों के द्वारा आशीर्वाद दिया जाता है। भिक्षुओं का एक लंबा जुलूस, जिसके पीछे तिब्बती बाईबिल[5] के एक सौ आठ अंकों को लिये हुए, ग्रामीण चलते हैं, गॉव की परिक्रमा करते हुए, प्रार्थनाओं और पवित्र संगीत के साथ चलता है।

जैसे ही मौसम थोड़ा गर्म हुआ, मेरा याक (आर्मिन) बीमार पड़ गया। उसे बुखार आया और स्थानीय पशु चिकित्सक ने घोषणा की कि केवल भालू का पित्त (gall) ही इसको ठीक कर सकेगा। मुझे ये महंगा पड़ा। उसके गुणों में विश्वास के कारण नहीं, परंतु, ''डॉक्टर'' को संतोष देने के लिये, मैंने उस चीज को खरीदा। मुझे परिणामों के प्राप्त न होने पर आश्चर्य नहीं हुआ। तब मुझे भेड़ के पित्त और कस्तूरी का प्रयोग करने की सलाह दी गई, और अवचेतन मन से मैंने आशा की, कि बीमार याकों के इलाजों के संबंध में तिब्बती लोगों का लम्बा अनुभव, मेरे मूल्यवान पशु को बचा लेगा। तथापि, कुछ दिनों के बाद, चूंकि मैं कम से कम उसके मांस को बचाना चाहता था, मैं गरीब आर्मिन को कटने के लिए देने के लिए मजबूर था।

इन मामलों में लोग एक कसाई, एक व्यक्ति, जिसे समाज से बहिष्कृत माना जाता है और जिसे लुहारों, जिनकी कला तिब्बत में सबसे निचली श्रेणी की मानी जाती है, की तरह से, गॉव के बाहर रहने को बाध्य किया जाता है, का उपयोग करते हैं। भुगतान के रूप में, कसाई को पैर, सिर और याक की आंतें मिलती हैं। उस विधि की तुलना में, जो हमारे कसाई अपनाते हैं, मुझे वह विधि देखने को मिली, जिसमें मानवीय तरीके से और उतना जल्दी जितना जल्दी वह कर सकता था, उसने जानवर का निपटारा किया। एक तेज झटके के साथ, उसने लाश को फाड़ दिया, अपने हाथ को उसमें घुसाया, और उसे तत्काल मृत्यु प्रदान करते हुए, दिल की धमनी को फाड़ दिया। हमने मांस को लिया और इस प्रकार खाने के भण्डारण को, जो हमें तब आवश्यक होगा, जब हम अगली बार भागेंगे, आधार प्रदान करने के लिये खुली आग पर इसको पकाया।

इस समय के आसपास, त्सोंग्का (Dzongka) में काफी संख्या में मृत्यु दिलाती हुई एक महामारी फूट पड़ी। जिला अधिकारी, खतरे से बाहर भागने के लिए, अपनी मनमोहक नौजवान पत्नी और चार बच्चों के साथ क्यिरोंग आ गया। दुर्भाग्यवश, बच्चे अपने साथ बीमारी, एक प्रकार की पेचिश, के कीटाणु लाये थे, और एक–एक कर के इससे पीड़ित हुए। उस समय मेरे पास अभी भी, कुछ यात्रेन (Yatren), जो दस्तों की बीमारी में इलाज के लिए सबसे अच्छा माना जाता था, बचा था और इसलिए मैंने उसे परिवार को दिया। चूँकि हम इसकी कुछ खुराकें,

5 अनुवादक की टिप्पिणी : एक सौ आठ खण्डों वाले तिब्बती धर्मग्रन्थ, कानग्युर को तिब्बती बौद्ध धर्म की बाईबल भी कहा जाता है। मोटे तौर से कांगग्युर के दो प्रमुख भाग है। ''बुद्ध के शब्द (Words of Buddha) और ''उसके बाद की व्याख्यायें'' जो क्रमशः, कांगग्युर और तेंगग्युर कहलाती हैं। कांगग्युर या अनुवादित शब्द, में लगभग 108 खंड हैं, जो बुद्ध के द्वारा स्वयं कहे हुए माने जाते है। मूलतः, सभी संस्कृत भाषा में लिखे गये। जिन्हें बाद तिब्बती, चीनी और दूसरी भाषाओं में लिखा गया। तेंगग्युर या अनुवादित संक्षेप, में लगभग 224 खंड है।

आवश्यकता के समय में, अपने खुद के लिए बचा कर रखे हुए थे, ये आउफस्नाइटर और मेरे लिए, एक विचारणीय त्याग था। दुर्भाग्यवश, इसने कुछ अच्छा नहीं किया, और बच्चों में से तीन मर गये। चौथे के लिए, सबसे छोटा, जो दूसरों के बाद, सबसे बाद में बीमार पड़ा, (हमारे पास) यात्रेन बचा नहीं था। हम निराशापूर्ण तरीके से, उसको बचाने के लिए उत्सुक थे और हमने, ये पता करने के लिए कि उसे देने के लिए, कौन सी दवा ठीक थी, मल के नमूने के साथ, एक संदेशवाहक को शीघ्र ही काठमाण्डू भेजने के लिए, माता–पिता को सलाह दी। आउफस्नाइटर ने अंग्रेजी में इस उद्देश्य वाला एक पत्र लिखा, परंतु ये कभी भेजा नहीं गया। बच्चे का इलाज भिक्षुओं के द्वारा किया गया, जो एक दूर के स्थान से अवतारी लामा को बुलाने के लिए था। उनके सारे प्रयास निष्फल साबित हुए, और दस दिन बाद बच्चा मर गया। ये कार्य जैसा दुःखमय था, उसने हमको निर्दोष करार देते हुए, रास्ते में छोड़ दिया, क्योंकि यदि अंतिम बच्चा बच गया होता, तो हम पर इल्जाम लगाते हुए, दूसरों की मौतों के लिए, जिम्मेदार ठहराया जा सकता था।

इन बच्चों के माता–पिता और दूसरे अनेक लोग भी बीमार पड़े, परंतु ठीक हो गये। अपनी बीमारी के दौरान, उन्होंने जमकर खाया और शराब को बहुत बड़ी मात्रा में पिया, जो शायद उनके ठीक होने का कारण थी। बच्चों ने अपनी बीमारी के दौरान खाना लेने से मना कर दिया था और उनकी शक्ति तेजी से क्षीण हो गई थी।

बाद में, हम माता–पिता के काफी नजदीकी दोस्त बन गये, जिन्होंने यद्यपि कुछ हद तक अपने अवतार पर विश्वास के कारण, अपने नुकसान को बहुत गहराई के साथ महसूस किया, अपने आपको सांत्वना दी। वे कुछ समय तक, क्यिरोंग में, एक साधु की कुटी में टिके रहे और हम अक्सर उनको वहॉ मिलने जाते थे। पिता को बांगडुला (Wangdula) कहते थे और वह प्रगतिवादी तथा खुले विचारों का आदमी था। वह ज्ञान प्राप्त करने का बहुत उत्सुक था और उसने हमें तिब्बत के बाहर जीवन के संबंध में, कोई भी बात बताने के लिए कहा। उसकी प्रार्थना पर, आउफस्नाइटर ने अपने दिमाग में से दुनियॉ का एक नक्शा बना कर उसको दिया। उसकी पत्नी, तिब्बत की बाईस साल आयु की सुंदरी थी; वह धारा प्रवाह हिंदी बोलती थी, जो उसने भारत में एक स्कूल में सीखी थी। ये एक अति प्रसन्न जोड़ी थी।

कई वर्षों बाद, हमने उनके बारे में फिर सुना। उनका भाग्य दुःखपूर्ण रहा था। दूसरा बच्चा पैदा हुआ था, और बच्चों को जन्म देने में मॉ मर गई, दुःख के कारण वॉगडुला पागल हो गया। वह पसंद किये जाने वाले तिब्बतियों, जिनको मैं मिला, में से एक था, और उसकी खिन्नता की कहानी ने मुझे गहराई तक हिला दिया।

गर्मी में अधिकारियों ने फिर बुला भेजा और क्यिरोंग छोड़ने के लिए कहा। इस बीच में हमें व्यापारियों और समाचारपत्रों से पता चला कि युद्ध समाप्त हो चुका था। हमें ये मालूम था कि प्रथम विश्वयुद्ध के बाद, अंग्रेजों ने भारत में चलने वाले बंदी शिविर, युद्ध की स्थिति समाप्त होने के दो वर्ष बाद तक, बनाकर रखे थे। स्पष्टरूप से, अब हम अपनी स्वतन्त्रता को खोना नहीं चाहते थे और हम आंतरिक तिब्बत में घुसने का दूसरा प्रयास करने के लिए पूरी तरह अमादा थे। हमारे अंदर देश के प्रति मोह बढ़ रहा था, और उसे अच्छी तरह जानने की अपनी अभिलाषा को संतुष्ट करने के लिए, हम हर चीज दॉव पर लगाने के लिए तैयार थे। भाषा की हमारी जानकारी अच्छी नहीं थी, और हमने काफी अधिक अनुभव प्राप्त कर लिया था। हमें आगे जाने से रोकने वाला क्या था ? हम दोनों पवर्तारोही थे, और हमें यहॉ हिमालय का और नोमाड के जिलों का सर्वेक्षण करने का अद्वितीय अवसर मिला हुआ था। हम जल्दी घर वापस लौटने की सभी आशाओं को काफी समय पहले ही छोड़ चुके थे, और अब हम चीन में हो कर, तिब्बत के उत्तरी पठारों में घुसने का, और, हो सकता है, वहॉ काम पाने का भी इरादा रखते थे। युद्ध की समाप्ति ने, जापानी पंक्तियों में हो कर जाने की हमारी योजना को निरर्थक बना दिया था।

इसलिए हमने बोन्पोओं को, यदि वे बदले में हमें घूमने फिरने की आजादी दे दें, बसंत के अंत में (तिब्बत) छोड़ देने का वायदा किया। इसका अनुमोदन हो गया, और उस समय से हमारे घूमने फिरने का प्रमुख उद्देश्य, एक ऐसे दर्रे का पता लगाने का था, जिसमें हो कर हम त्सोंगका को बिना छुए हुए, तिब्बत के पठार पर पहुॅच सकें।

ग्रीष्म के इन अभियानों के दौरान, हम क्षेत्र की वनस्पति को जान गये। हम, बंदरों की प्रजातियों को शामिल करते हुए, जो शायद यहॉ कोसी नदी की गहरी घाटियों में हो कर आई होंगीं, जानवरों की बड़ी विविधता से हो कर गुजरे। कुछ समय के लिए चीते, बैलों और याकों को रात में मार दिया करते थे, और गॉव वाले उन्हें फंदों में फंसाने की कोशिश करते थे। भालुओं के विरुद्ध सावधानी के रूप में, मैं अपनी जेब में, लालमिर्च से भरी हुई एक सुंघनी रखता था। भालू, जैसा मैं उल्लेख कर चुका हूॅ, केवल दिन में ही, जब वह आदमी पर हमला

करता है, खतरनाक होता है। भालुओं का सामना करने के परिणामस्वरूप, लकड़ी काटने वाले अनेक लोगों के चेहरे पर बुरे निशान थे और एक आदमी, भालू के पंजे की मार के कारण, अंधा हो गया था। रात के समय, कोई आदमी, इनको एक पतली टॉर्च के द्वारा भी भगा सकता था।

एक बार फिर, मैंने पेड़ों की पंक्तियों पर, नई ताजी गिरी वर्फ के ऊपर, गहरे पॉव के निशान पाये, जिसका मैं कोई कारण नहीं पा सका। वे एक आदमी के बनाये हुए हो सकते थे, मुझसे ज्यादा कल्पनाशील आदमी ने, उन्हें घृणा योग्य हिममानव के रूप में बनाया होगा।

स्वयं को हमेशा स्वस्थ रखना, मैंने एक बिन्दु बना लिया था और श्रमसाध्य धंधों की कोई कमी नहीं थी। मैंने खेतों में, या अनाज के गहाने में, मदद की। मैंने पेडों को गिराया और उनमें से राजन (resin) भरी चीड़ की मशालों को काटा। तिब्बतियों की शारीरिक कठोरता, वातावरण के साथ सन्निकटता होने, और कठिन परिश्रम, जो वे करते हैं, के कारण होती है।

वे प्रतियोगितात्मक खेलों के भी अभ्यस्त होते हैं। क्यिरोंग में हर वर्ष खिलाड़ियों की एक सभा होती है, जो कई दिनों तक चलती है। इनकी प्रमुख घटनायें, घुड़सबारी, धनुर्विद्या, ऊँची और लम्बी शॉट, पैदल दौड़, और लंबी ऊँची कूदें होती हैं। वहॉ शक्तिशाली आदमियों के लिए, एक और खेल होता है, जिसमें उन्हें एक भारी पत्थर को कुछ निश्चित दूरी तक उठा कर ले जाना पड़ता है।

मैंने कुछ खेलों में भाग लेते हुए, जनता के आनन्द में योगदान किया। एक भगदड़ भरे प्रारम्भ के साथ, अधिकांश रास्ते भर आगे रहते हुए, मैंने दौड़ को लगभग जीत लिया, परंतु मैं स्थानीय लोगों के तरीकों को समझ नहीं पाया। दौड़ के अंतिम सिरे पर, सबसे गहरे प्रयास में, प्रतियोगियों में से एक ने, पीछे से मेरे पेन्ट को पकड़ लिया। मैं इतना अधिक आश्चर्यचकित हुआ कि मैं एकदम रुककर खड़ा हो गया और अपने आसपास देखा। यही वह घटना थी, जिसके लिए वह दुष्ट प्रतीक्षा कर रहा था। वह मुझसे आगे निकल गया और विजय स्थान पर मुझसे पहले पहुॅच गया। मैं इस तरह की चीज के लिए तैयार नहीं था और सबकी हॅसी के बीच, द्वितीय पुरुस्कार के रूप में, मुझे गुलदस्ता प्राप्त हुआ।

क्यिरोंग के जीवन में विविध रंग थे। गर्मी में, काफिले हर दिन आते थे। नेपाल में चावल की फसल के बाद, आदमी और औरतें टोकरियों में चावल लाते थे और नमक, जो तिब्बत का सबसे अधिक महत्वपूर्ण निर्यात है, के साथ उसकी बदली करते थे। इसे चांगतांग की झीलों से, जिनमें कोई निकास नहीं है, लाया जाता है।

चूॅकि सड़क संकरी खाईयों में हो कर गुजरती है और अक्सर इसमें सीढ़ियॉ होती हैं, क्यिरोंग से नेपाल का आवागमन, कुलियों के माध्यम से प्रभावशील होता है। अधिकांश कुली, अपने छोटे घाघरे के नीचे अपनी मजबूत मांसल टांगों को दिखाती हुई और सस्ती पोशाकों पहनने वाली नेपाली औरतें होती हैं। हम, जबकि नेपाली लोग शहद इकट्ठा करने के लिए आये थे, एक उत्सुकतापूर्ण नाटक के गवाह बने। तिब्बती सरकार ने अधिकारिक रूप से तिब्बतियों को शहद लेने से वर्जित किया हुआ है, क्योंकि उनका धर्म उन्हें इसकी, पशुओं को उनके खाने से वंचित करने की, इजाजत नहीं देता। तथापि यहॉ, दूसरे अनेक स्थानों की तरह, लोग कानून का पालन नहीं करना चाहते, इसलिए बोन्पो लोगों को शामिल करते हुए, तिब्बती लोग, उनके द्वारा संग्रहीत शहद को लेने के लिए, नेपालियों को आने देते हैं और वे उनसे वापस (शहद) खरीद लेते हैं।

शहद का लिया जाना, बहुत जोखिम भरा दुस्साहस है क्योंकि मधुमक्खियॉ, गहरी खाईयों में बाहर निकलती हुई चट्टानों के नीचे, शहद के छत्ते के नीचे छिपी रहती हैं। बांस की लम्बी सीढ़ियॉ गिराई जाती हैं, जिनमें से हवा में स्वतंत्र झूलते हुए, (कोई) आदमी कई बार, दो या तीन सौ फुट नीचे उतरता है। उनके नीचे कोसी नदी बहती है, और यदि रस्सा, जोकि सीढ़ी को पकड़े हुए है, टूटता है, तो इसका अर्थ है उनकी निश्चित मृत्यु। जब आदमी मधु के छत्तों को इकट्ठा करते हैं, वे क्रोधित मधुमक्खियों को दूर भगाने के लिए, धुंए के बादल अपने साथ रखते हैं। इसे एक दूसरे रस्से के द्वारा बर्तनों में रखा जाता है। चूॅकि नीचे की नदी की दहाड़ में, चीखने और सीटी बजाने की आवाजें गुम हो जाती हैं, पूर्ण और अच्छी तरह से पूर्वाभ्यास किये हुए जोड़े, इस कार्यप्रणाली की सफलता की एक शर्त है। इस अवसर पर ग्यारह आदमियों ने, एक खाई में, एक हफ्ते तक काम किया और मूल्य, जिस पर वे शहद को बेचते हैं, का इनके जोखिम भरे काम से कोई संबंध नहीं है। मुझे बहुत दुःख हुआ कि, मेरे पास सिनेमा वाला कैमरा, जिसके साथ मैं इस नाटकीय दृश्य का चित्र ले पाता, नहीं था।

जब ग्रीष्म की भारी बरसात समाप्त हो गई, हमने व्यवस्थित ढंग से लम्बी घाटियों को तलाशना शुरू किया। हम अक्सर, किराना लेते हुए, सामग्रियों और कम्पास को अपने साथ लिये हुए, कई दिनों के लिए बाहर

रुके रहते थे। इन समय में हम, गड़रियों, जो गर्मियों के महीनों को, अपने जानवरों को चराने में बिताते हैं, के आसपास, ऊँचे चारागाहों में अपना शिविर लगाते थे, जैसा कि वे आल्पस में आरामदेह पर्वतीय चारागाहों के ऊपर करते हैं। हिमनदों के संसार के बीच, चारागाह के ऊपर फैले हुए हरे चारे को खाती हुयीं, सैंकड़ों गायें और मादा याक थीं। मैं अक्सर उन्हें मक्खन बनाने में मदद करता था, और ताजे सुनहरे मक्खन का एक टुकड़ा, अपने श्रम के रूप में पाना, आनन्ददायक होता था।

सभी निवासी झोपड़ियों के पास तीखे, लड़ाकू कुत्ते पाये जाते हैं। अधिकांशतः ये जंजीर से बंधे होते हैं और वे रात को, अपने भौंकने के द्वारा, मवेशियों को चीतों, भेड़ियों, और जंगली कुत्तों से बचाते हैं। वे बहुत शक्तिशाली होते हैं, और दूध और बछड़ों के मांस की उनकी सामान्य खुराक, उन्हें जबरदस्त शक्ति देती है। वे वास्तव में, खतरनाक होते हैं, और उनके साथ, मेरी असहमति योग्य, अनेक आमने–सामने, हो चुके हैं। एक बार, जैसे ही मैं आया, इनमें से एक कुत्ता अपनी जंजीर से खुल गया और मेरे गले के ऊपर उछल पड़ा। मैंने उसके आक्रमण का बचाव किया और उसने अपने दांत, मेरी बांह में गड़ा दिये, और मुझे तब तक नहीं जाने दिया, जब तक कि मैंने उसे कुश्ती में नीचे नहीं गिरा दिया। मेरे कपड़े चिथड़े हो कर मेरे शरीर से लटकने लगे, परंतु कुत्ता जमीन पर हलचल विहीन पड़ा हुआ था। मैंने अपने घावों को, अपनी बची हुई कमीज से बांधा, परंतु अभी भी मेरी बांह के ऊपर, गूथ के गहरे दाग मौजूद हैं। गर्म झरनों में लंबे–लंबे स्नानों के परिणामस्वरूप, जो वर्ष के इस समय में, तिब्बतियों की तुलना में, सर्पों के द्वारा अधिक आम होते हैं, मेरे घाव बहुत तेजी से भर गये। गड़रियों ने मुझे बताया कि इस युद्ध में, अकेला मैं ही पीड़ित नहीं था। कुत्ता आराम से अपने कोने में पडा हुआ था और उसके बाद, एक हफ्ते तक, उसने कुछ नहीं खाया।

अपने बाहर घूमने के दौरान, हमने बहुत अधिक मात्रा में, जंगली स्ट्रॉवेरीज (strowberries) पाईं, परंतु जहॉ हमें वे सबसे अच्छी मिलीं, वहीं सबसे अच्छी जोंक भी थीं। मैं अपने अध्ययन से जानता था कि ये प्राणी, हिमालय की अनेक घाटियों में महामारी थे, और अब मैं अपने व्यक्तिगत अनुभव से सीख गया था कि उनके विरुद्ध, कोई किस प्रकार असहाय हो जाता है। वे पेड़ से, आदमियों और जानवरों पर गिरती हैं और किसी के कपड़ों में खुले स्थानों में से हो कर, यहॉ तक कि जूतों में फीते बांधने के सुराखों में हो कर भी रेंग जाती हैं। यदि कोई उन्हें फाड़ता है, तो वह उसकी तुलना में, जब वे अपने आप गिरती हैं, यदि उनको अपना पेट भरने के लिये खून पीने दिया जाये, अधिक खून का नुकसान उठाता है। घाटियों में से कुछ, जोंकों से इस हद तक प्रभावित होती हैं कि कोई उनके विरुद्ध, स्वयं को सादा तरीके से बचा नहीं सकता। उनको अलग रखने का एक ही तरीका है, मौजे पहनना और पेन्टों को नमक से भर कर रखना।

बाहर की हमारी यात्राओं ने, हमको नक्शा बनाने और खाका खींचने के अनेक अवसर दिये, परंतु हमें कोई दर्रा नहीं मिला, जिसने हमको पलायन का रास्ता उपलब्ध कराया हो। जैसा कि हमें होना चाहिए था, बुरी तरह लदे हुए, रस्से और दूसरे यांत्रिक उपकरणों के बिना, हम किसी भी ऊँचे पर्वत के कटावों को पार करने की उम्मीद नहीं कर सकते थे और हम में से कोई भी, त्सोंग्का की सड़क से हो कर, जिसे हम पहले से ही जानते थे, वापस लौटने के विचार के प्रति प्रयत्नशील नहीं था। हमने, ये निश्चित करने के लिए कि यदि हम वहॉ जायें, तो हमें ब्रिटेन की सरकार को दे दिया जायेगा या नहीं, नेपाल को इस तरह की याचिका भेजी परंतु, कोई उत्तर नहीं मिला। इससे पहले कि हमको क्यिरोंग छोड़ देना चाहिए, इस समय हमारे पास, अभी भी, दौड़धूप करने के लिए दो महीने थे। हमने अपने दिन अपनी यात्रा की तैयारियों में व्यतीत किये। अपनी पूंजी को बढ़ाने के लिए, मैंने इसे एक व्यापारी को तेतीस प्रतिशत ब्याज की सामान्य दर पर दे दिया। जब मेरे ऋणी ने वापसी में देर की, मुझे बाद में इसका पछतावा हुआ, और इसने हमारे प्रस्थान को लगभग रोक दिया।

शांतिप्रिय, उद्यमी गॉव वालों के साथ हमारा सम्पर्क अधिक, और अधिक, अभिन्न होता जा रहा था। वे अपने काम को घण्टों से नहीं पहचानते थे, परंतु अपने दिन के उजाले के कम होने के प्रत्येक मिनट को पहचानते थे। चूंकि वहॉ खेती के क्षेत्रों में श्रमिकों की कमी थी, भूख और गरीबी अज्ञात विषय थे। अनेक भिक्षु, जो निम्न प्रकार के कार्यों को नहीं करते थे और स्वयं को आध्यात्मिक मामलों में व्यस्त रखते थे, समाज के द्वारा समर्थित किये जाते हैं। किसान खुशहाल हैं और उनकी आलमारियों में, त्यौहार के दिनों में पहनने के लिए, पूरे परिवार के लिए पर्याप्त कपड़े व्यवस्थित होते हैं। औरतें अपना कपड़ा खुद बुनती थीं और सभी कपड़े घर पर ही बनाये जाते थे।

विश्व के हमारे पैमाने के अनुसार, वहॉ कोई पुलिस नहीं है। दोषियों को सार्वजनिक रूप से सजा दी जाती

है। दण्ड, अत्यधिक निदर्यतापूर्ण होते हैं, परंतु वे जनता की मानसिकता के अनुरूप दिखाई पड़ते हैं। मुझे एक आदमी के विषय में बताया गया, जिसने क्यिरोंग के मंदिरों में से एक से, सोने का एक दीपदान चुराया था। उसे इस दण्ड के लिए सजा दी गई, और जो कुछ हम सोच सकते थे, एक अमानवीय दण्ड, उसको दिया गया। शारीरिक रूप से, उसके हाथ काट दिये गये और उसे याक की एक गीली खाल में सीं दिया गया। इसके बाद उसे सूखने दिया गया, और उसे एक खड़ी चट्टान से फैंक दिया गया।

हमने इससे अधिक निर्मम सजा कभी नहीं देखी थी। जैसे–जैसे समय चलता गया, तिब्बती लोग धीमे–धीमे अधिक उदार होते दिखे। मुझे शारीरिक दण्ड का एक सार्वजनिक साक्ष्य याद है, जो मेरे ख्याल से अधिक गम्भीर नहीं था। निन्दित व्यक्ति, एक भिक्षु और एक सुधारे गये बौद्धमठ (reformed Buddhist church), जो ब्रम्हचर्य के ऊपर बल देता था, से जुड़ी हुई एक भिक्षुणी थी। भिक्षुणी ने भिक्षु के साथ समागम किया था और उससे उसे एक बच्चा पैदा हुआ, जो, जब वह पैदा हुआ, उसने मार दिया। दोनों की निंदा की गई और उनको कटघरे में सिर और हाथ डाल कर दण्ड दिया गया। सार्वजनिकरूप से दोष की घोषणा की गई और उनमें से हर एक को, सौ कोड़ों का दण्ड मिला। शारीरिक दण्ड के दौरान, निवासियों ने अधिकारियों से, उन्हें धन की भेंट देते हुए, दया करने की भीख मांगी। इसने सजा में थोड़ी कमी करा दी, जिससे देखने वाली जनता के ऊपर, राहत की कुछ आहें और सिसकियॉ सुनाई दीं। भिक्षु और भिक्षुणी को जिले से बाहर निकाल दिया गया और उनकी धार्मिक पदवी से वंचित कर दिया गया। पूरी आबादी द्वारा उनके प्रति दिखाई गई सहानुभूति, हमारे राष्ट्र के लिए, लगभग अकल्पनीय थी। पापियों ने धन और सामानों की अनेक भेटों को प्राप्त किया और तीर्थयात्रा पर जाने के लिए, अच्छी तरह भरे हुए बोरों के साथ क्यिरोंग को छोड़ दिया। सुधारा हुआ सम्प्रदाय, जिसके ये दोनों जन अनुयायी थे, तिब्बत में वर्चस्ववान (dominating) है, यद्यपि हमारे विशिष्ट पडौस में, अपने नियमों का पालन करने वाले मठों की एक बड़ी संख्या है। उनमें भिक्षु और भिक्षुणियॉ, आपस में एक पारिवारिक जीवन गुजार सकते हैं, और बच्चे मठों में रहते हैं। वे अपने खेतों में काम करते हैं, परंतु उनको कभी भी अधिकारिक पद, जो सुधारे हुए चर्च के सदस्यों के लिए सुरक्षित होते हैं, नहीं दिये जाते।

लामामठों के क्रमों (orders) की सर्वोच्चता, तिब्बत में कुछ अद्वितीय है। इसकी तुलना, एक कठोर तानाशाही के साथ, भलीभांति की जा सकती है। भिक्षु किसी भी बाहरी हस्तक्षेप, जो उनके अधिकारों को क्षीण कर सकता हो, पर विश्वास नहीं करते। वे विश्वास न करने के लिए इतने अधिक चालाक हैं कि उनकी शक्तियॉ असीमित हैं। परंतु वे किसी को भी, जो ये सुझाव देता हो कि ऐसा नहीं है, सजा दे सकते हैं। इस कारण से, क्यिरोंग के कुछ भिक्षुओं ने, गॉव वालों के साथ हमारे सम्पर्क को बहुत कुछ हद तक, अनुमोदित नहीं किया। हमारे व्यवहार ने, जो उनके किसी भी अंधविश्वास के प्रति, पूरी तरह से अप्रभावित रहा, तिब्बतियों को इस संबंध में सोचने के लिए कुछ दिया होगा। हम, बिना दैत्यों के द्वारा छेड़छाड़ किये हुये, रात को जंगल में जाया करते थे। यज्ञ की बलि दिये बिना, हम पहाड़ों पर चढ़ते थे और फिर भी हमें कुछ नहीं हुआ। कुछ खेमों में, हमने कुछ निश्चित आरक्षण देखा, जिसको केवल लामाओं के प्रभाव के कारण माना जा सकता है। मैं सोचता हूँ कि उन्होंने हमें अतिस्वाभाविक शक्तियों से भरे होने का श्रेय दिया होगा, क्योंकि वे स्वीकार कर चुके थे कि हमारा बाहर जाना आना, कुछ रहस्यमय उद्देश्य रखता था। वे हमें लगातार पूछते रहे कि हम जलधाराओं और चिड़ियों के पास, क्यों हमेशा जाते आते रहते हैं। कोई भी तिब्बती, बिना किसी विशेष उद्देश्य के कोई कदम नहीं उठाता और उन्होंने अनुभव किया कि हम जंगल में घूमते थे या ढ़ालों के किनारे बेठते थे। हम ऐसा बिना किसी उद्देश्य के नहीं कर रहे होंगे।

अभियान पर

इस बीच, बसन्त का अन्त हमारे सिर पर था और हमारे निवास का अनुज्ञप्त समय समाप्त होने आ रहा था। प्रकृति के इस स्वर्ग को छोड़ना बहुत मुश्किल था, परंतु हमें निवास की अनुज्ञा प्राप्त करने में सफलता नहीं मिली थी, और इसमें कोई संदेह नहीं था कि हमें छोड़ना ही पड़ेगा। पिछले अनुभव से, पर्याप्त मात्रा में किराने को जमा कर लेने के महत्व को, महसूस करते हुए, हमने त्सोंग्का सड़क पर, बारह मील दूर, एक भण्डार बनाया, जहॉ हमने त्सम्पा, मक्खन, सूखा मांस, शक्कर, और लहसुन जमा किया। ऐसा ही मामला रहा था, जब हम शिविर में से भागे थे, हमारे पास यातायात का कोई साधन नहीं था और अपने पूरे भण्डारों को हमें पीठ पर लादकर ले जाना था।

भारी बर्फबारी ने एक शुरुआती जाड़े को सूचित किया और हमारे अनुमानों में हस्तक्षेप किया। हम पहले से ही तय कर चुके थे कि, अधिकतम कितना बजन हम ले जा सकते थे, और अब हमें, हर एक को एक और दूसरा कम्बल लेने के लिए अपने मनों (minds) को तैयार करना था। सर्दी, वास्तव में, मध्य एशिया में, ऊॅचे पठारों को पार करने का एक अत्यधिक विपक्षीय मौसम होता है, परंतु हम क्यिरोंग में नहीं रह सकते थे। कुछ समय के लिए, हमने अपने आपको नेपाल में कहीं छिपाने और सर्दियॉ वहॉ गुजारने के विचार का नाटक किया, परंतु चूॅकि नेपाली सीमा रक्षक अपनी अच्छी कार्य कुशलता के लिए जाने जाते थे, हमने इसे छोड़ दिया।

जब हमारा भण्डार तैयार हो गया, हमने एक उठाऊ (portable) दीपक की योजना बनाना शुरू कर दिया। ये स्पष्ट था कि, गॉव वाले जानते थे कि हम कहीं तक पहुॅचे हैं, और लगातार हमारी जासूसी की जा रही थी; इसलिए अपने उस दीपक को तैयार करने के लिये, हम एक दिन के लिए, पहाड़ों में घूमने के लिए गये, जहॉ हमने तिब्बती कागज और एक किताब की जिल्द से एक प्रकार की लालटेन बनाई, जिसके अंदर हमने ज्योति को जलाये रखने के लिए, मक्खन से भरा हुआ सिगरेट का एक डिब्बा रखा। चूॅकि हम, जहॉ तक हम आबाद देश में हों, रात को यात्रा करने का लिए निर्णय कर चुके थे, हमको एक प्रकाश स्रोत, कितना भी मंद क्यों न हो, की आवश्यकता थी। अब मैं अपने धन, जो मैंने उधार दिया था, के वापस आने की प्रतीक्षा कर रहा था। मैं उसे अगले दिन पाने की आशा रखता था और हम काम के लिए तैयार खड़े थे।

सुनियोजित कारणों से ये सहमति बनी कि बाहर घूमने के बहाने से, आउफस्नाइटर पहले जायेगा। 6 नवम्बर 1945 को, अपनी पीठ पर पैक को लादे हुए, उसने दृढ़ता के साथ दिन में गॉव को छोड़ दिया। उसके साथ, ल्हासा के एक भद्रपुरुष के द्वारा दी गई एक भेंट, मेरा लम्बे वालों वाला तिब्बती कुत्ता, भी गया। इस बीच में मैंने अपना पैसा वापस लेने का प्रयास किया परंतु भाग्य नहीं था। मुझसे ऋण लेने वाला संदेह में था और मुझे तब तक वापस नहीं करना चाहता था जब तक कि आउफस्नाइटर लौट कर न आये। ये कोई आश्चर्य नहीं था कि हमें पलायन करने की योजना बनाते हुए, संदेह के घेरे में रखा गया था। यदि हम वास्तव में नेपाल जाना चाहते, तो वहॉ छिपाने की कोई आवश्यकता नहीं थी। यदि हम आंतरिक तिब्बत में, अंदर जाने में सफल हो गये, अधिकारी, शासन के साथ कष्ट में आने से डरे हुए थे। इसलिए उन्होंने गॉव वालों को हमारे खिलाफ भड़का दिया था। गॉव वाले लगातार भय में थे, स्थानीय अधिकारियों से डरे हुये थे और जो उन्हें कहा जाता था वही करते थे।

आउफस्नाइटर की तलाश की व्यवस्था की गई और मुझे बलपूर्वक घसीटा गया और प्रश्न पूछे गये। अधिकारी, उन्हें ये समझाने के मेरे इस हल्के से प्रयास से प्रभावित नहीं थे कि, वह अपने सामान्य बाहरी यात्राओं में से एक पर गया है। अपने धन के लिए मुझे अगले दिन का इंतजार करना पड़ा और तब केवल इसका एक हिस्सा प्राप्त हुआ। ये आउफस्नाइटर के लौटने के पहले कभी भी पूरा वापस नहीं किया जायेगा।

मैं आठ नवम्बर की शाम को–यदि आवश्यक हो, बलपूर्वक तोड़ कर भागने का दृढ़ संकल्प कर चुका था। जहॉ कहीं भी मैं गया, मेरा पीछा किया गया। घर के बाहर और अंदर जासूस थे। मैंने, ये आशा करते हुए कि वे सो जायेंगे, रात को दस बजे तक निगरानी की, परंतु उन्होंने ऐसा करने का कोई चिन्ह प्रदर्शित नहीं किया। तब मैंने, ये कहते हुए कि घर के लोगों के व्यवहार ने मेरा वहॉ रहना एकदम असंभव बना दिया है और मुझे सोने के लिए जंगल में जाना चाहिए, बहुत गुस्सा करने का नाटक करने का एक दृश्य बनाया। चूंकि वे मेरी निगरानी कर रहे थे, मैंने सामान बांधना शुरू किया। मेरी मेजबान और उसकी मॉ दौड़कर अंदर आई और जब उसने देखा कि क्या हो रहा है, उसने अपने आपको, मेरे सामने जमीन पर फैंक दिया और आंसुओं के साथ मुझे नहीं जाने के

लिए मनाया। उन्होंने कहा कि यदि मैंने ऐसा किया तो उन्हें कोड़े मार कर गॉव से बाहर निकाल दिया जायेगा और कानून से बाहर कर दिया जायेगा और उन्हें अपना घर छोड़ना पड़ेगा। उन्हें मेरे द्वारा ऐसा किये जाने की आशा नहीं थी। बूढ़ी मां ने मुझे, मेरे प्रति अपनी श्रद्धा के प्रतीक के रूप में, एक सफेद रूमाल दिया और जब उसने देखा कि उसकी प्रार्थनाओं से मेरा हृदय मुलायम नहीं हुआ है, उसने मुझे धन का प्रस्ताव दिया। मैंने उन दोनों औरतों के प्रति खेद प्रकट दिया और उन्हें ये समझाने का प्रयास किया कि यदि मैं भाग गया तो उन्हें कुछ नहीं होगा। दुर्भाग्यवश, उनकी चीख पुकार ने पूरे गॉव को जगा दिया, और मुझे अचानक, नाटक करना पड़ा, मानो ये पहले से ही अत्यधिक देर नहीं थी।

मैं अभी भी, चीड़ की चमकती हुई मशालों के द्वारा, मक्खन से सने हुए उनके मंगोल चेहरों को अपनी खिड़कियों में ताकते हुए देख सकता था और अब दोनों मेयर, बोन्पो के एक संदेश के साथ, कांपते हुए ये कहते हुए कि यदि मैं सुबह तक रुकूँ, तो मैं जहॉ चाहूँ, वहॉ जा सकता हूँ, आ पहुँचे। मैं जानता था कि ये मुझे रोकने की एक चाल थी और मैंने इसका कोई उत्तर नहीं दिया। इसलिए वे अपने मुखियाओं को लाने के लिए दौड़ पड़े। मेरी मेजबान, ये कहते हुए कि मैं उसके खुद के बच्चों जैसा हूँ और मुझसे उसके लिए कोई कष्ट पैदा करने की अपेक्षा नहीं की जाती है, मुझसे चिपक गई। मेरी नाड़ियॉ तनावग्रस्त हो गईं। कुछ होना है। मैंने पक्के निश्चय के साथ अपने पैक को कंधों पर लादा और घर के बाहर चला। मैं आश्चर्यचकित था कि दरवाजे के पास इकट्ठी हुई भीड़ ने मुझे हस्तक्षेप नहीं किया। उन्होंने कहा, :''वह जा रहा है, वह जा रहा है,'' परंतु किसी ने मुझे छुआ तक नहीं– उन्होंने देख लिया होगा कि मुझे वास्तव में काम से मतलब है, कुछ नौजवान मुझे रोकने लिए, एक दूसरे के साथ आये परंतु वे इसे कहने से आगे नहीं गये। मैं बिना छुए जाते हुए, भीड़ में से, जिसने मेरे सामने रास्ता छोड़ दिया, निकल गया।

परंतु जब मैं अंधेरे में से मशाल की रोशनी के सामने से गुजरा, मैं प्रसन्न था। मैंने संभावित पीछा करने वालों को धोखा देने के लिए, थोड़े समय के लिए, नेपाल की तरफ की सड़क पर जाने की जल्दी की, परंतु मैंने गॉव के आसपास का एक मोटा चक्कर लगाया और सुबह तक, मैं अपने भण्डार तक पहुँच चुका था। आउफस्नाइटर, सड़क के बगल से बैठा हुआ था, और मेरा कुत्ता मेरा स्वागत करने के लिए मेरे ऊपर उछला। दिन भर छिपने के लिए, एक अच्छा स्थान पाने की तलाश में, हम थोड़ा सा चले।

हमने वर्षों तक के लिए, अंतिम बार, जंगल में शिविर लगाये। अगली रात को हम घाटी में ऊपर की तरफ चले और शीघ्र ही हम पेड़ों की पंक्तियों के ऊपर आ गये। अपने बाहर घूमने फिरने के कारण, हम पहले से ही पर्वतीय रास्ते को अच्छी तरह से जानते थे और हमारी मंद लालटेन ने अपना काम किया। फिर भी, कभी कभार हम रास्ते से भटक जाते थे। हमको नदी के ऊपर लकड़ी के संकरे पुलों को पार करने में बहुत सावधान रहना था। वे बर्फ के जमने से चमकने हो गये थे और कसे हुए रस्सों पर चलने वालों की तरह, हमें अपने आपको संतुलित बनाये रखना था। हमने अच्छी प्रगति की, यद्यपि हम में से हर एक, लगभग नब्बे पोंड का वजन लाद कर ले जा रहा था। दिन होने तक हम, आराम करने के लिए, हमेशा अच्छा परिचित स्थान पा लेते थे परंतु उतने अधिक ठण्डे तापक्रम में आनन्ददायक शिविर लगाना अत्यधिक मुश्किल था।

एक सुन्दर दिन, हमने पाया कि हम चल नहीं सके। एक चढ़ न पाने योग्य चट्टान का चेहरा हमारे सामने आया। रास्ते ने हमको यहॉ तक पहुँचाया और दीवार में आ कर समाप्त हो गया। अब हम क्या करें ? अपनी पीठ पर लादे हुए, अपने भारी सामानों के साथ, हम कभी भी इससे ऊपर नहीं जा सकते थे। इसलिए हमने वापस लौटने का निश्चय किया और एक झरने की धारा, जो अनेक शाखाओं में विभाजित थी, में हो कर, पैदल जाने का प्रयास किया। ठण्ड अत्यधिक थी–शून्य से पन्द्रह डिग्री नीचे। जब हम पैदल पार करने के लिए, अपने मौजों और जूतों को उतार लेते, मिट्टी और कंकड़ हमारे पैरों में जम जाते थे और अपने जूतों को दुबारा से पहनने से पहले उन्हें पहिनना एक कष्टदायक कार्य था और तब फिर से नई ताजी धाराओं से हमारा सामना होता। चूँकि काफिले उस रास्ते से गुजरे थे, ये निकास का एक रास्ता रहा होगा परंतु हम नहीं देख सके, कहॉ ? इसलिए हमने रात, जहॉ हम थे वहीं, गुजारने और अगले दिन, अपने छिपे हुए स्थान से निगरानी करने और ये देखने कि इस स्थिति से काफिले किस प्रकार निपटते थे, का निश्चय किया। तत्काल बाद ही, एक काफिला चलता हुआ आया, चट्टान के मुहाने के सामने रुका, और तब (हम मुश्किल से ही अपनी ऑखों पर विश्वास कर सके) भारी लदे हुए कुली, सांवर मृग की तरह से, एक के बाद एक–चट्टानी रास्ते पर तेजी से चढ़ गये, जबकि याक, पीठ पर बैठे हुए अपने चालकों के साथ, धारा में पैदल चले। हमारे लिए, हम कठोर पर्वतारोहियों के लिए–एक सीख।

हमने दुबारा प्रयास करने का निश्चय किया, और एक दिन के बाद, जो हमें अंतहीन दिखाई दिया, रात आई, और हमने कठिन चढ़ाई को जैसे–तैसे पार किया। देखने के लिए वहॉ चॉदनी थी, जो हमारे लिए, हमारी छोटी लालटेन की तुलना में, अधिक सहायक थी। यदि हमने कुलियों को उस चट्टानी दीवार पर आते जाते नहीं देखा होता तो हमने इसे फिर छोड़ दिया होता, परंतु हमने इसकी व्यवस्था की और हमने किया।

दो रात और चलने के बाद, हमने त्सौंग्का को लघुपथित (byepass) कर दिया और अपने आपको एक अज्ञात देश में पाया। हमारा अगला लक्ष्य था, ब्रह्मपुत्र नदी, जो हमारी पुस्तक में, हमारे सामने एक अत्यन्त गम्भीर प्रश्नचिन्ह लगा रही थी। हम इसे कैसे पार कर सकते थे ? हमने आशा की कि ये पहले से ही जमी हुई नदी थी। हमें एक सड़क की, जो नदी तक जाती थी, झूठी दिलासा मिली हुई थी, परंतु हमने आशा की कि ये हमें गम्भीर रुकावटें प्रस्तुत नहीं करेगी। उतनी तेजी से, जितना कि संभव हो, आगे जाना और उन सभी स्थानों को छोड़ देना, जिनमें से दौड़ते हुए, हम चलते हुए अधिकारियों से टकरा सकते थे, एक बड़ी चीज थी। त्सौंग्का में से गुजरने के तुरंत बाद ही, हमने एक गुफा में शिविर किया, जहॉ हमें मिट्टी की हजारों छोटी–छोटी मूर्तियॉ मिलीं। यह स्थान, पूर्व में किसी साधु की कुटी रही होगी। अगली रात को हम, दर्रे में हो कर गुजरने की आशा में, एक ही चढ़ाई में, तीखे ऊपर चढ़े। परंतु हमने अपनी शक्ति का अधिक मूल्यांकन किया था; पतली हवा में, सोलह हजार फुट से अधिक ऊॅचाई पर, हॉफते हुए और थके हुए चलने के कारण, हमें बर्फ से जमे हुए एक शिविर में रुकना पड़ा। हम फिर से हिमालय के जल विभाजक की तरफ जा रहे थे। चाख्युंग ला (Chakhyung la) दर्रे की चोटी से दृश्य निराशाजनक था; हमें ये सोचने का संतोष था कि हम इसे पार करने वाले, शायद पहले यूरोपियन हैं, परंतु आनन्द अनुभव करने के लिए या किसी चीज पर गर्व करने के लिए, मौसम अत्यधिक ठण्डा था।

इस बर्फीले, खराब रेगिस्तान में, हमने दिन में चलने की जोखिम उठाई। हमने अच्छी प्रगति की, और जमते हुए शिविर में रात गुजारने के बाद, अगली सुबह हमको, अपने नीचे रहती हुई, बड़ी, गहरी–नीली झील, पेलगू त्सो (Pelgu Tso), के एक भव्य दृश्य का पारितोषिक मिला। पठार, जिस पर हम थे, चमचमाते हुए हिमनदों की श्रृंखला से अंगूठी की भॉति घिरा हुआ था; हमें चोटियों में से दो, गोसेन्थान (Gosainthan) (छब्बीस हजार फुट) और लापची कांग (Lapchi Kang), के नामों को जानने पर गर्व अनुभव हुआ। जिनके लिए कोई कह सकता था कि हिमालय की अधिकांश चोटियों में से, दोनों ही अभी तक अविजित थीं। हमारी उॅगलियॉ ठण्ड से अकड़ गईं, परंतु हमने अपनी नक्शे वाली पुस्तक को बाहर निकाला, कलम के कुछ झटकों के साथ, इन पहाड़ियों का नक्शा बनाया। हमारी अपनी कम्पास के साथ, आउफस्नाइटर ने सर्वाधिक महत्वपूर्ण चोटियों का जायजा लिया, और आकृतियों को, जो किसी दिन उपयोगी हो सकती थीं, लिख डाला। हम इस स्वप्न जैसी सर्द पृष्ठभूमि से, झील के किनारे तक नीचे गये, जहॉ हमें बरबाद हुई, काफिले की एक सराय (caravansary) मिली, और हमें एक बार फिर, एक और रात, बर्फ में गुजारनी पड़ी।

हम, तथ्यात्मकरूप में, आश्चर्यचकित थे कि हम इतनी ऊॅचाई पर कैसे ठीक खड़े रह सकते थे और हमने अपने भारी बोझों को ध्यान में रखते हुए, कितनी तेजी से प्रगति की। परंतु हमारा बेचारा कुत्ता कष्ट में था। वह आधा भूखा मर रहा था। रात को वह हमारे पैरों में लेटता और यदि आवश्यक होता, हमें गर्म रखने का प्रयास करता, क्योंकि वहॉ बाइस डिग्री का कुहरा रहा होगा।

अगले दिन, हम जीवन का एक चिन्ह पाने पर कितने खुश थे ! कुछ गड़रियों, जो मोटे बरसाती कपड़ों में लिपटे हुए थे, के पीछे चलता हुआ भेड़ों का एक झुण्ड, धीमे से हमारी तरफ आया, उन्होंने इशारे से बताया कि अगली बस्ती कहॉ पड़ती है, और उसी शाम हम, पहाड़ी पगडण्डियों पर चलने वाले लोगों के गॉव में पहुॅच गये, जो काफिले के रास्ते से थोड़ा हटकर था। चूॅकि हमारे किराने के सामान खाली हो चुके थे, मानव प्राणियों के साथ दुबारा होना, यद्यपि ये हमारे लिए सबसे अधिक महत्वपूर्ण समय था। फिर भी, मानो हम गिरफ्तार हो जाते!.....

ये छोटी बस्ती, निश्चितरूप से गॉव कहलाने लायक थी। इसमें एक मठ, जो पहाड़ी के ऊपर की तरफ, सबसे ऊपर बना था, के साथ लगभग चालीस घर थे। गारटोक की तुलना में सैंकड़ों फुट ऊपर, एक अच्छा दिखने वाला स्थान। वास्तव में, हमने यहॉ, एशिया का और शायद सम्पूर्ण विश्व का, आबादी वाला, सबसे ऊॅचा स्थान, ढूंढ़ लिया था।

निवासियों ने हमको भारतीय समझा और हमको मुक्त रूप से किराना बेचा। एक घर में सौहार्द्रता के साथ हमारा स्वागत किया गया, काफी लम्बी–लम्बी दूरी बर्फ में हो कर चलने के बाद, हमने गरमाने की विलासिता का

आनन्द लिया! अच्छी तरह खाते और अपने कुत्ते को खिलाते हुए, हमने एक दिन और एक रात के लिये, यहॉ विश्राम किया। चूंकि बोम्पो ने अपना घर ताला लगा कर बंद कर दिया था और हमको अनदेखा किया था, हमने स्थानीय अधिकारियों से मिलने से परहेज किया। शायद, वह जिम्मेदारी से बच रहा था।

चूॅकि हमारे कपड़े तिब्बतीय मौसम के अनुसार नहीं थे, मजबूरी में हमें, भेड़ की दूसरी खाल खरीदनी पड़ी और मजेदार, लम्बे मोलभाव के बाद, हमने एक याक को खरीदा। ये आरमीन की पंक्ति में चौथा था, और सिवाय इसके कि शायद, यह अधिक नटखट था, ये दूसरों से बिल्कुल अलग नहीं था।

यहॉ से हम यागुला (Yagula) दर्रा पार करने के लिए गये, रास्ते में हमें कोई नहीं मिला। तीन दिन बाद, हम खेती वाली जमीन पर आये, जो एक बड़े गॉव, मेन्खाप मे (Menkhap Me) की थी। हमने अपने आपको, फिर से, भारतीयों के रूप में परिचित कराया, और खुद के लिए त्सम्पा और अपने याक के लिए भूसा खरीदा। यहॉ के लोग, अत्यन्त कठिन जीवन जीते हैं। उनके जौ और मसूर के खेत, बिखरे हुए पत्थरों से भरे होते हैं और इस गरीब फसल को उगाने के लिए कड़ी मेहनत की अपेक्षा करते हैं, परंतु वे प्रसन्न और मित्रवत् लोग हैं, शाम को हम उनके साथ बैठे और बियर पी। गॉव के आसपास ढलान पर, वहॉ कुछ छोटे मठ हैं, जिन्हें गॉववाले, अपने कठोर जीवन के बावजूद, जिसे वे, शील और आत्म–बलिदान की अपनी सामान्य भावना के साथ जीते हैं, बनाये रखते हैं। हमने, साक्ष्य प्रदान करते हुए कि यह क्षेत्र, अच्छे समयों को देख चुका था, हर तरफ, आश्चर्यजनक आकार के अवशेष पाये। हम ये निश्चय नहीं कर सके कि, ये पतन युद्धों की बजह से हुआ था या मौसम के परिवर्तन के कारण।

जब हम तिंगरी (Tingri) के एक बड़े पठार पर निकल कर आये, हम एक घण्टे तक चलते रहे, और पीछे–हमने अपनी सांस को थाम़ा–दुनियॉ का सबसे ऊॅचा पर्वत, एवरेस्ट पर्वत (Mount Everest) खड़ा था और हमने उस शक्तिशाली चोटी को उद्यम, भय तथा आश्चर्यों से परिपूर्ण देखा। अनेक अभियानों के बारे में सोचा, जिनमें बहादुर आदमियों ने चोटी को जीतने का प्रयत्न करने में अपने जीवन व्यर्थ गंवाये थे। हमने पहाड़ के कुछ खाके (sketches) बनाये, जो निश्चितरूप से, कभी भी, किसी यूरोपियन ने, जहॉ हम खड़े थे, वहॉ से नहीं देखे होंगे।

इस भव्य दृश्य से मुड़ना मुश्किल था, परंतु हमको अपने अगले लक्ष्य, अठारह हजार फुट ऊॅचे कोराला (Korala) दर्रे, जो उत्तर की तरफ था, की तरफ जाना था। चढ़ाई प्रारम्भ करने से पहले, हमने अपनी रात, दर्रे की तलहटी में, एक छोटी सी बस्ती में, जिसको खारग्यू (Khargyu) कहा जाता था, गुजारी। इस बार, क्योंकि गॉव वाले (पहले से ही) बहुत सारे यूरोपियन लोगों को देख चुके थे, हम अपने आपको, भारतियों के रूप में, आसानी से नहीं गुजरवा सकते थे। पड़ोस में तिंगरी गॉव था, जहॉ एवरेस्ट के सभी ब्रिटिश अभियान दल, अपने कुलियों को भाड़े पर लिया करते थे। निवासी, हमसे, हमारी प्रशंसा करते हुए से दिखे और पहले ही हमको पूछा कि क्या हम सुत्सो (Sutso) में बोन्पो को मिलेंगे। तब हमने महसूस किया कि बड़ा घर, जो हमने उस स्थान में देखा था, अधिकारी का निवास स्थान रहा होगा। हमने देखा था कि घर, चूंकि ये एक पहाड़ी पर था और पूरे गॉव के दृश्य के ऊपर निगाह रखता था, काफी ठीक था। सौभाग्यवश, हम किसी प्रकार अनदेखे बचे रहे।

अब हमें सावधान रहना था। हम मामले को अधिक समर्थन नहीं दे पाये परंतु हमने तीर्थयात्री होने की अपनी कहानी को दोहराया। गॉव वाले संतुष्ट होते हुए से प्रतीत हुए और उन्होंने हमें सड़क, जिस पर हमें जाना चाहिए, जो उनके ख्याल से अच्छी सड़क थी, के बारे में बताया।

देर शाम को हम दर्रे के शिखर पर पहुॅचे। अंत में हम फिर से, पहाड़ी से नीचे की ओर चल रहे थे। कुछ समय के लिए हमने दुःखदायी चढ़ाई को समाप्त कर लिया था और हम इससे प्रसन्न थे। तथापि, हमारे याक ने दूसरी तरह सोचा। वह रस्सा तुड़ा कर, वापस दर्रे की तरफ, पहाड़ी के ऊपर की ओर दौड़ा। असीम कठिनाई के साथ, हम उसे पकड़ने में कामयाब हो सके, परंतु हम उसे चला नहीं सके और एक अत्यन्त सौहर्द्रताहीन स्थान, जहॉ हम आग नहीं जला सकते थे, पर शिविर लगाने के लिये मजबूर थे–इसलिए हमने अपने सूखे त्सम्पा और कच्चे मांस को खा लिया। एकमात्र सांत्वना, जो हमें थी, वह, छिपते हुए सूरज की रोशनी में, दूरी पर स्थित एवरेस्ट शिखर का दृश्य था।

अगले दिन आरमीन ने, फिर से हमें मुसीबत पैदा करना शुरू किया। हमने उसके सींगों से एक रस्सा बांधा और उसे दर्रे से ऊपर की तरफ चलाया, परंतु उसने गड़बड़ करना जारी रखा। हम आरमीन चार, से काफी दुःखी हो गये थे और अगली बार अवसर मिलते ही, उसे किसी दूसरे जानवर से अदला बदली करने का निश्चय

किया।

हमें शीघ्र ही अवसर मिल गया। अगले गॉव में मैंने वह सौदा किया, जो मेरे ख्याल से अच्छा सौदा था और मैंने उसे अच्छे दिखने वाले एक बहादुर के साथ, बदल दिया। हम हद से ज्यादा प्रसन्न थे और हम ऊॅची भावना के साथ अपने रास्ते पर गये।

उसी दिन हम एक चौड़ी घाटी में पहुॅचे, जिसमें हो कर, बर्फ के छोटे टुकड़ों के साथ, हरे पानी की धारा दौड़ रही थी। यह त्सांग पो (ब्रह्मपुत्र) थी। इसने, नदी को जमी हुई पाने और बर्फ के ऊपर चल कर पार करने के हमारे स्वप्न को निपटा दिया। परंतु हम निराश नहीं हुए। सामने वाले किनारे पर हमने कुछ मठ और कुछ संख्या में घर देखे और ये समझा कि वहॉ नदी के पार जाने का कोई साधन होगा। हमने एक नाव की सोची, और हम इसकी तलाश कर रहे थे, तभी मैंने रस्से के झूले वाले, एक पुल का खम्बा देखा। जब हम इस पर आये, हमने निष्कर्ष निकाला कि हमारे पार करने के लिए तो पुल ठीक ठाक था परंतु हमारे घोड़े के लिए अच्छा नहीं था। जानवरों को तैरना पड़ता, यद्यपि, कई बार, कुली लोग लहराते हुए रस्से के पुल के ऊपर, अपने गधों को अपनी पीठ पर लादते हुए पार करने की व्यवस्था करते हैं। हमने अपने घोड़े को पानी में चलाने का प्रयास किया, परंतु वह बिल्कुल भी नहीं हिला। अब तक हम, अपने जानवरों से दुःखों को झेलने के काफी अभ्यस्त हो चुके थे, इसलिए मैंने दुःखी हो कर, गॉव वापस जाने और फिर से अदला बदली करने का प्रयास करने का मन बनाया। आरमीन को वापस पाने में मुझे धन देना पड़ा और कठोर वचन सुनने पड़े परंतु मैंने उसे पा लिया। मुझसे दुबारा मिलने पर, उसने आनन्द या दुःख का कोई चिन्ह प्रदर्शित नही किया।

जब मैं उसे वापस पुल तक लाया, तब तक अंधेरा हो चुका था। उस समय तक, उसे पार कराने के लिए बहुत देर हो चुकी थी, इसलिए मैंने उसे नजदीक ही खूंटे से बांध दिया। इस बीच आउफस्नाइटर ने हमारे लिए एक विश्रामगृह खोज लिया था, और हमने कपडों को ओढ़ कर, एक सुखद गर्म रात, गुजारी। गॉव वाले, व्यापारियों को गुजरने में सहायता देने के अभ्यस्त थे और उन्होंने हमारे ऊपर थोड़ा ही ध्यान दिया।

अगले दिन सुबह, जब हमने उसे पानी में जाने के लिए राजी करने की व्यवस्था कर ली, मैंने आरमीन को उसके सभी दुर्व्यवहारों के लिए माफ कर दिया। उसने अपने आपको, एक भव्य तैराक के रूप में प्रदर्शित किया। वह अक्सर, दौड़ते हुए पानी के द्वारा डुबा दिया जाता था और लहरों के द्वारा कुछ नीचे ले जाया जाता था, परंतु इससे वह परेशान हुआ। वह स्थिररूप से तैरा और जब वह दूसरी तरफ को आया, हमने उस बहादुर तरीके की प्रशंसा की, जिसमें उसने गहरे किनारे का सामना किया था और पानी को अपनी लम्बी खाल से हिला दिया था। हमने बाकी दिन गॉव, जिसे चुंग रिवोचे (Chung Rivoche) कहा जाता था– एक प्रसिद्ध मठ के साथ बहुत ही मजेदार स्थान, में बिताया। ये इमारत, जिसमें उनके दरवाजों पर, चीनी खुदाई के साथ खुदे हुए चीनी अक्षरों के साथ काफी संख्या में मंदिर थे, जो उन चट्टानी दीवारों से उठे थे, नदी के एक किनारे खड़ी थीं। इस मठ के संबंध में उल्लेखनीय चीजों में से एक ये थी कि इसमें (कुलदेवता की शक्ल में) एक बहुत बड़े आकार की, शायद सत्तर फुट ऊॅची मढ़ी थी, जो उस स्थान की पवित्रता की साक्षी थी। इसके आसपास, एक बहुत बड़ी संख्या में –मैंने आठ सौ तक गिनती की–प्रार्थनाचक्र समूहित (grouped) थे, जो अपने ड्रम के साथ, जिनमें देवताओं से आशीर्वाद पाने की कामना करते हुए, कागज की पट्टी पर लिखी हुई प्रार्थनायें भरी थीं, लगातार घूमते थे। ये महत्वपूर्ण है कि वे लगातार गति में बने रहें, और मैंने एक भिक्षु को उनके आसपास जाते हुए और उनके अक्षों में ग्रीस (grease) डालते हुए देखा। कोई भक्त आदमी, जो चक्रों के पास से गुजरता है, उन्हें घुमाये बिना नहीं रहता। थोड़े से बूढ़े आदमी और औरतें अक्सर, पूरे–पूरे दिन, उन्हें समर्पण के साथ लगातार घुमाते हुए और भगवान, जो उनका समर्थन करते हैं, से प्रार्थना करते हुए कि वे दूसरी तरफ, उन्हें उच्च पद में जन्म प्रदान करें, इन दैत्याकार ड्रमों के आसपास बैठे रहते हैं। दूसरे, जब वे तीर्थयात्रा पर जाते हैं, हाथ के छोटे चक्रों को अपने साथ रखते हैं। चूॅकि हमने सभी पर्वतीय दर्रों के ऊपर टीले और प्रार्थनाध्वज पाये, ये प्रार्थनाचक्र और बालकों जैसी मानसिकता, जिसे वे प्रदर्शित करते हैं, तिब्बत की एक खासियत है।

चूंकि हम अपने निवास से बहुत अधिक प्रसन्न थे और उन सभी दिलचस्प चीजों पर, जो हमने यहॉ देखीं, अत्यधिक मोहित थे, हमने एक और रात, यहॉ रहने का निर्णय लिया। यह इसके लायक ही था, चूंकि हमें एक अच्छा दिलचस्प यात्री, एक तिब्बती, जो बाईस साल तक भारत में, ईसाई मिशन में रह चुका था और अब घर की याद के कारण, तिब्बत में वापस आया था, मिला। हमारी तरह से वह भी, दर्रों के ऊपर हो कर, जाड़े की बर्फ में हो कर, अकेला घूमा था परंतु जहॉ संभव हो सकता था, उसने अपने आपको काफिलों के साथ जोड़ लिया था।

उसने हमें सचित्र अंग्रेजी अखबार दिखाये और उनमें हमने पहली बार बमबारी किये हुये शहरों को देखा और युद्ध की समाप्ति के विषय में पढ़ा। हमारे लिए, ये हिला देने वाले क्षण थे और हम और अधिक सुनने के लिए उत्सुक थे। निराश करने वाली खबरों के बावजूद, जो उसने हमें दी, हम किसी को मिल कर प्रसन्न थे, जिसने हमको, बाहरी दुनियॉ से–हमारी दुनियॉ से, हवा की सांस दिलाई। जो कुछ उसने हमें बताया, उसने मध्य एशिया में अपनी यात्रा जारी रखने के हमारे संकल्प को मजबूत किया। उसे अपने साथ यात्रा के साथी के रूप में लेकर हम केवल अत्यधिक प्रसन्न ही हो सकते थे परंतु न तो हम उसे सुरक्षा दे सकते थे और न हीं सुख। वह अपने लिए कुछ पेंसिलें और कुछ कागज लाया था ताकि वह हमारी डायरियों में से, अपनी डायरी में कुछ लिखना जारी रख सके, तब हमने उसे अलविदा कहा और अकेले यात्रा पर चल दिये।

हमारे पथ ने हमको ब्रह्मपुत्र से दूर पहुॅचा दिया। दूसरे दर्रे से हो कर, हमने इस पर यात्रा की, और दो दिनों में सांगसांग गेवू (Sangsang Gevu) पहुॅच गये और एक बार फिर हम, गारटोक से ल्हासा जाने वाली काफिले वाली सड़क पर जा मिले, जहॉ से हम, एक वर्ष पहले, दूसरी ओर, क्यिरोंग के रास्ते पर, हो गये थे। सांगसांग गेवू में स्थित बोन्पो के प्रतिनिधि ने, हमें तमाम प्रश्न पूछे परंतु हमारे साथ दयापूर्ण व्यवहार किया। हमने महसूस किया कि, ट्रेडुन के दो अधिकारियों ने हमारे साथ जिस सभ्य तरीके से व्यवहार किया था, वह सांगसांग तक, आसपास के स्थानों को ज्ञात हो चुका था और उसने दूसरे अधिकारियों के लिए एक उदाहरण प्रस्तुत किया था। सौभाग्यवश, इस अधिकारी को कोई पता नहीं था कि हम निर्देशों के विपरीत, यहॉ पर थे।

हमारे लिए ये ईश्वर का आशीर्वाद ही था कि उसने हमारे रास्ते में, हमारे लिए अत्यधिक परेशानियॉ, जैसे कि हमें पहले से चिंताऐं थीं, खड़ी नहीं कीं। इस तरफ या उस तरफ, हमें एक निर्णय लेना पड़ा। हमारे पास, केवल अस्सी रुपये और एक सोने का टुकड़ा, बचे हुए थे। बाकी सब, किराना खरीदने और अपने सबसे आखिरी आरमीन को बदलने के लिये, पॉचवॉ याक खरीदने में जा चुका था। जब हम नगरों में पहुॅचे, हमने यहॉ कीमतें अधिक पायीं और स्पष्टरूप से, हमारे लिए, अधिक धन, जो हमारे नहीं पास था, के बिना, यहॉ की चीनी सीमा को पार करने की सोचना भी, असंभव था। चीन पहुॅचने से पहले, अभी हमें हजारों मील तय करने थे परंतु हमारा धन हमको ल्हासा तक लाने के लिए पर्याप्त था। एक बार फिर, ''वर्जित शहर (Forbidden city)'' का प्रलोभन और हमारे स्वप्नों के उद्देश्य को पहचानने और उसे प्राप्त करने की एक संभावना, अब लगभग हमारी मुट्ठी में थी। कैसे भी, हम वहॉ जाने की अपनी इच्छा को रोक नहीं सके, और ये नया उद्देश्य, हमें इस योग्य दिखाई दिया कि हम किसी भी त्याग को कर सकते थे।

जब हम बंदी शिविर में थे, हमने लोभ के साथ, उस हर पुस्तक को पढ़ लिया था जो कि, ल्हासा के संबंध में बताती थी और हमें प्राप्त हो सकती थी। वहॉ इनमें से थोड़ी सी ही थीं, और सभी अंग्रेज लोगों द्वारा लिखी गईं थीं। हम यह पढ़ चुके थे कि, 1904 में एक छोटे दल के साथ, एक दमनात्मक अभियान, राजधानी तक भेजा गया था और कि पिछले बीस सालों में, अनेक यूरोपियन वहॉ की यात्रा कर चुके हैं। उस समय से, विश्व में, केवल ल्हासा की सतही जानकारी है। अन्वेषक के लिए, दलाईलामा के घर की तुलना में, और कोई भी दूसरा लक्ष्य इतना आकर्षक नहीं है और हम, उससे इतनी कम दूरी पर थे। क्या हमें वहॉ जाने की इच्छा नहीं करनी चाहिए ? धूर्तता और युक्तियों के साथ, हमने हर प्रकार की परेशानियों को, दूसरे किस उद्देश्य के लिए, उठाया, अपने आपको भौतिकरूप से, अपने झेलने की अंतिम सीमा तक परेशान किया और देश की भाषा को बोलना सीखा ? इसके बारे में, हम जितना अधिक सोचते थे, हमारा संकल्प उतना ही मजबूत होता जाता, और ल्हासा की तरफ होना, हमारा उद्देश्य था। हमारा अनुभव हमें बता चुका था कि व्यवहार करने के लिए, अधीनस्थों की तुलना में, उच्चअधिकारी अधिक आसान थे। हमने महसूस किया कि जब हम ल्हासा पहुॅचें, हमको एकदम ठीक होना चाहिए। मैंने एक प्रखर उदाहरण, जिसका हम अनुसरण कर सकते थे, वह फादर जौहान ग्यूबर (Father Johann Grueber) का था, जिसने तीन सौ वर्ष पहले, अपने आपको एक काफिल के साथ, तस्करी से ल्हासा पहुॅचाया था, और यहॉ सौहर्द्रता के साथ उसका स्वागत किया गया था, के संबंध में सोचा।

इसलिए हमें अपने लक्ष्य के संबंध में, कोई संदेह नहीं था परंतु हम उतने अधिक सुनिश्चित नहीं थे कि वहॉ पहुॅचा कैसे जाये। हम वास्तव में, सड़क किनारे बने घरों वाली, चालू, ऊॅची सड़कों के द्वारा अधिक आकर्षित थे। इसके साथ–साथ जाते हुए, कुछ हफ्तों में ही, हमें ल्हासा तक पहुॅच जाना चाहिए, परंतु हमें खोजे जाने और गिरफ्तार किये जाने की जोखिम थी। फिर भी, यदि हम, तिब्बत के दूसरे सबसे बड़े शहर, शिंगस्ते को लघुपथित कर देते हैं, तो रास्ते में हमें, अनेक दूसरे प्रशासकीय केन्द्र मिलेंगे, इनमें से हर एक हमारे अवसरों को घात लगा

सकता है। इस रास्ते में जोखिम बहुत ज्यादा थी। इसलिए हमने उत्तरी पठारों, जिन्हें वे चांगतांग (Changthang) कहते हैं, में हो कर यात्रा करने का निर्णय किया। ये जिला, पूरी तरह से नोमाडों, जिनके साथ हम सुरक्षितरूप से जुड़ सकते थे, की आबादी वाला है। तब, हमने सोचा कि हम उत्तर पश्चिम के, इस रास्ते से ल्हासा पहुॅच सकते थे। कोई भी इस दिशा से, विदेशियों के आने की आशा नहीं कर सकता था, और हमारे लिए शहर में खिसक लेना, अपेक्षाकृत आसान होगा। स्वेन हैडिन (Sven Hedin)[6] ने चालीस साल पहले ऐसी ही योजना बनाई थी, परंतु वह कुछ स्थानीय अधिकारियों की जिद के कारण असफल रहा। ल्हासा में पहुॅचने की उसकी असफलता, व्यक्तिगतरूप से उसके लिए, बहुत बड़ा दुर्भाग्य प्रतीत हो सकती थी, परंतु उसने, उसे इस पूरी तरह से अज्ञात क्षेत्र को ढूंढने के योग्य बना दिया। कोई नक्शे या रास्ते का कोई हिसाब नहीं था, जिससे हम समझ सकें: हमको सरल तरीके से, हमेशा उत्तर–पूर्व की ओर लक्ष्य करते हुए अपने आपको, अज्ञात स्थान में धकेल देना था। हम शायद, अपने रास्ते पर, यहॉ–वहॉ नोमाडों से मिल सकते थे और दिशाओं और दूरियों के बारे में, उनकी समझदारी का उपयोग करते हुए आगे बढ़ सकते थे।

सांगसांग (Sangsang) में रहते हुए, हमने अपनी योजनाओं के संबंध में कुछ नहीं बताया परंतु केवल ये कहा कि हम उत्तर में, नमक के भण्डारों की ओर जाना चाहते थे। लोग इस विचार पर डरे हुए थे और उन्होंने हमें रोकने की पूरी–पूरी कोशिश की। देहात इतना असत्कारशील था कि केवल दिमाग से पागल आदमी ही वहॉ जाने की इच्छा करेगा। परंतु हमारे धोखे ने, किसी भी संदेह को हटा देने का कि हम ल्हासा की तरफ जा सकते हैं, वांछित परिणाम दिया। हमारी योजना, असलियत में, बड़े बड़े खतरों को शामिल करती थी, और बर्फ भरे तूफानों ने, जो हमें सांगसांग में मिले, हमें एक विचार दिया कि आगे क्या अपेक्षा की जानी चाहिए।

फिर भी, हम 2 दिसम्बर 1945 को चल दिये, जबकि सांगसांग में रहते हुए, हमने कुछ शेरपाओं को अपना मित्र बना लिया था। ये लोग तिब्बती हैं, जो अधिकांशतः नेपाल में रहते हैं और उन्होंने हिमालय में, पथप्रदर्शकों और कुलियों के रूप में अपना नाम कमा लिया है। उनका पुकारने का छोटा नाम होता है ''हिमालय के शेर (The tigers of Himalayas)।'' उन्होंने हमको, अपनी तैयारियों के संबंध में एक मूल्यवान सलाह दी और चूॅकि जब हमने इन प्राणियों में से एक को खरीदा, हम यहॉ ठगे जा रहे थे, एक नया याक पाने में मदद की, जो वास्तव में हमारे लिए एक सही सेवा थी। हमने संतोष के साथ ये ध्यान दिया कि हमारा नया याक एक अच्छे व्यवहार वाला पशु था। वह एक शक्तिशाली सांड़ था, कुछ सफेद धब्बों के साथ काला, और उसकी लंबी झूलती हुई खाल, जमीन को लगभग साफ करती थी। उसके सींग जवानी में हटा दिये गये थे और ऐसा प्रतीत होता था कि ऑपरेशन ने, बिना उसकी शक्ति को घटाये हुए, उसके स्वभाव को सुधारा होगा। वह सामान्य नकेल पहने हुए था। उसकी औसत गति दो मील प्रतिघंटा से अधिक से चलने के लिए, कोई थोड़ी सी हिम्मत के साथ, उस पर सवार हो सकता था। चूॅकि हमने, हमेशा कम से कम आठ दिन का राशन अपने पास रखने का, एक नियम बना लिया था, गरीब शैतान के पास, ढ़ो कर ले जाने के लिए काफी सामान था।

सांगसांग के बाहर हमारा पहला दिन, बिना किसी परेशानियों के गुजर गया। हमारा रास्ता एक धीमे–धीमे चढ़ती हुई घाटी में हो कर गुजरता था। जैसे ही सूर्य नीचे गया और दौड़ कर काटने वाली ठण्ड हमारे वस्त्रों में घुसने लगी, हमने नोमाड का एक काला टेन्ट, मानो हमने इसका आदेश दिया हो, देखा। इसे पत्थरों से घिरे हुए, *इहेगा (Ihega)* नामक एक शरणस्थल पर गाडा गया था। चूॅकि नोमाड हमेशा ही नये चारागाहों की ओर चलते रहते हैं, कोई इस तरह के अनेक खोलों को, पूरे तिब्बत के ऊपर छितराया हुआ पा सकता है, और जब वे जाते हैं, वे अपने तम्बुओं के चारों ओर पत्थर की बाढ़ लगा जाते हैं। इहेगा, उनके जानवरों को ठण्ड के विरुद्ध और भेड़ियों के आक्रमण से बचाने में मदद भी करते हैं। जैसे ही हम तम्बू के समीप पहुॅचे, भौंकते हुए कुछ कुत्ते हमारी तरफ लपके। शोरगुल ने, एक नोमाड को अपने तम्बू से बाहर निकाल दिया। जब हमने उससे एक रात की शरण के लिए पूछा, वह बहुत सहमत नहीं था और उसने हमको, अपने तम्बू में रहने देने के लिए साफ तौर से मना कर दिया परंतु बाद में वह हमारे लिए याक का कुछ सूखा हुआ याकोबर लाया, जिससे हम आग जला सकते थे। हमें खुले में शिविर करना पड़ा, परंतु अंत में हमने अपने आपको काफी आराम में बना लिया; हमने काफी बड़ी मात्रा में जूनीपर की टहनियॉ इकट्ठी कीं, जिनके साथ हम रात भर आग जलाने में सफल हुए।

इसके बावजूद भी, मैं सो नहीं सका। मुझे, आइगर (Eiger) की उत्तरी दीवार को पार करते समय हुए, इस पहले संज्ञान का ध्यान दिलाते हुए, मेरे पेट के गड्ढे में, मेरे अंदर एक अहसास था। निश्चितरूप से, ये एक

6 अनुवादक की टिप्पिणी : स्वेन हेडिन के संबंध में अधिक जानकारी के लिए 'अनुवादक का निवेदन' खंड में देखें।

अच्छी चीज थी, जिसे हम नहीं जानते थे कि हमारे सामने क्या है। यदि शायद, पहले से हमें इसका हल्का सा भी अनुमान होता, तो हम निश्चित रूप से वापस हो लिये होते। हम एक अन्वेषक की अभिलाषाओं के द्वारा चुम्बक की तरह खींचे हुए, नक्शे पर केवल खाली स्थानों के द्वारा चिन्हित किये हुए, अनजान स्थानों में, कहीं भी यात्रा कर रहे थे।

अगले दिन, हम दर्रे के शिखर पर पहुँचे और ये पाकर कि वहाँ कोई उतार नहीं था, आश्चर्यचकित हुए, हम सीधे–सीधे एक ऊँचे पठार पर आ पहुँचे थे। असीम पठार का दृश्य निराश करनेवाला था। कोई अनन्त का सामना करता हुआ दिखाई देता था, और बड़े स्थान को पार करने में, निश्चित रूप से, महीनों लग सकते थे। जितनी दूर तक हम देख सके, जीवन का कोई चिन्ह नहीं था, और बर्फ के ऊपर बर्फीली ठण्डी हवा बह रही थी।

हमने अगली रात, आग जलाने के लिए याक का काफी याकोबर पाते हुए, वहाँ उन त्यक्त इहेगाओं में गुजारी। स्पष्टरूप से, गर्मियों में नोमाड यहाँ रहे थे, और काफिले यहाँ, इस क्षेत्र में से हो कर गुजरे थे। निस्संदेह तब, बर्फ के पठार वहाँ, हरे–भरे आल्पस के चारागाह थे–और उनके विचार ने हमको याद दिलाया कि हमने अपनी यात्रा के लिए साल का सबसे अच्छा समय नहीं चुना था।

तब हमारा दिन सौभाग्यशाली था। हम दौड़ कर एक तम्बू में गये और एक बूढ़े विवाहित युगल और उनके लड़के से, जो यहाँ कई महीनों से शिविर लगा कर रह रहा था, गर्मजोशी के साथ स्वागत पाया। उन्हें काफी मुश्किल समय गुजारना पड़ा था और आठ हफ्ते पहले के भारी हिमपात के बाद से, वे अपने तम्बू को मुश्किल से ही छोड़ पाये थे। उनके अनेक याक और भेड़ें मर गई थीं, क्योंकि गहरी बर्फ ने, इस चारागाह को उनका दफनगाह बना दिया था। शेष बचे हुए, उदासीन रूप से, समीप के तम्बू में थे या चारा पाने की आशा में बर्फ को अपने खुरों से धकिया रहे थे, खरोंच रहे थे। मध्य एशिया में ऐसे भारी हिमपात, बिरले ही होते थे और जीवन के सामान्य खतरों में नहीं माने जाते थे।

हमारे मेजबान, आदमियों के चेहरों को दुबारा देख कर प्रसन्न दिखाई दिये। ये पहली बार था कि हमको नोमाड के तम्बू में आमंत्रित किया गया और रात को रुकने के लिए कहा गया। हमको भारतीय समझा गया और कोई संदेह पैदा नहीं हुआ। वहाँ, काफी जानवरों का, जो मारने पड़े थे, काफी मांस था। हमने एक *सांग (Sang)* में, याक की एक टाँग खरीदी और खाना बनाने के लिए, सहसा ही, एक कुकरी की सहायता से, एक बड़ा टुकड़ा काट लिया। रास्ते के बारे में सुनकर, जिसे हम लेने के लिए प्रस्तावित कर रहे थे, हमारे मेजबान बहुत भयाक्रान्त हो गये और जोरदारी से, हमें उसे छोड़ देने की सलाह दी। तथापि, बातचीत के दौरान उन्होंने बताया कि हमको अपनी सड़क पर, दूसरे नोमाड मिलेंगे और इस सूचना ने, हमारे आगे बढ़ने के निश्चय को, और अधिक मजबूती प्रदान की।

अगले दिन यात्रा प्रारम्भ करने के तुरंत बाद, हम एक गहरे बर्फीले कटाव में दौड़ गये। अपने अपर्याप्त जूतों में चलते हुए, शीघ्र ही एक यातना पैदा हुई। बर्फ की ऊपरी चोटी जोखिम भरी थी और हम और हमारा याक अक्सर बिछुड़ जाते थे। वहाँ कुछ स्थानों में, बर्फ के नीचे बहती हुई धारायें थीं, और हमने अपने आपको, बर्फीले ठण्डे पानी में ठुंसा हुआ पाया, जिसे हम महसूस कर सकते थे परंतु देख नहीं सकते थे, और हमारे जूते और मौजे शीघ्र ही जम कर कड़े हो गये। हमें एक बहुत थकाऊ दिन गुजारना पड़ा और केवल कुछ मील आगे तक चल पाये। शाम के करीब, हम एक दूसरे नोमाड तम्बू को देख कर, वास्तव में प्रसन्न हुये। इस बार रहवासी ने हमको अंदर आने के लिए आमंत्रित नहीं किया परंतु वे अमित्रवत् भी नहीं थे और उन्होंने हमारे लिए, याक के ऊन वाला एक छोटा सा तम्बू गाड़ा। अपने टीस मारते हुए पैरों में से, कम से कम अपने जूते उतार पाने के लिए, मैं प्रसन्न था। मेरे पैरों की उँगलियों में से कुछ ने, बर्फीले तूफान से कटे हुए होने के चिन्ह दिखाए, परंतु मैंने उन्हें लम्बे समय के लिए रगड़ा और तब कम से कम, रक्तप्रवाह वापस आया।

इस दिन की, दिन भर की पैदल यात्रा की परेशानियाँ और बर्फ के जख्मों की चेतावनी ने हमें आशंकित कर दिया था, और आउफस्नाइटर और मैंने एक लम्बी और यकीन भरी बातें कीं। हम अभी भी लौट सकते थे, और हमने गम्भीरता से ऐसा करने का विचार किया। हम अपने याक के सम्बंध में चिंतित थे, जिसने कई दिनों से ठीक तरह से खाना नहीं खाया था, और हम अपनी उँगलियों पर गिन सकते थे कि वह कितने दिनों तक चलेगा, परंतु हम उसके बिना जाने की सोच भी नहीं सकते थे। लम्बे समय के लिए, हमने आगे–पीछे तर्क किये और अंत में, एक समझौते वाले सुझाव पर आये। हम एक और दिन के लिए अपनी पैदल यात्रा जारी रखेंगे और तब तय करेंगे। हमारा निर्णय बर्फ की अवस्थाओं के ऊपर निर्भर करेगा।

अगले दिन, जब तक कि हम एक दर्रे पर आए, हम बेचैन करने वाले देहात में हो कर गुजरे। इसे पार करने पर, कोई बर्फ नहीं थी, जो हमारा आश्चर्य था! परमात्मा ने हमारे पक्ष में निर्णय लिया था।

हम शीघ्र ही, नोमाड के एक तम्बू की ओर दौड़े, जहॉ हमारा अच्छा स्वागत किया गया और हमारे याक को जी भर कर चरने दिया गया। इस बार हमारी मेजबान, एक नौजवान महिला थी। उसने शीघ्रता से हमारे लिए एक कप मक्खन वाली चाय बनाई, और पहली बार, मैंने इस पेय को स्वाद के साथ पिया। हमारे जमे हुए शरीरों में गर्मी दौड़ी और हमारे अन्दर फिर से जीवन लायी। केवल तब, हमने ये ध्यान दिया कि हमारी नौजवान मेजबान ने कितनी चित्रमय आकृति बनाई थी। अपनी नंगी त्वचा पर, वह भेड़ की खाल का एक लवादा पहने थी, जो जमीन तक नीचे पहुॅचता था। उसकी अपनी लम्बी काली चोटी में, उसने शैल के शंकु, चॉदी के विविध सिक्के, विदेशों से आयतित विभिन्न प्रकार के सस्ते गहने पहन रखे थे। उसने हमें बताया कि उसके दो पति, जानवरों को चराने के लिए बाहर गये हैं। उसने बताया कि उनके पास एक हजार पॉच सौ भेड़ें और एक बड़ी संख्या में याक थे। हमें यहॉ बहुपति प्रथा, जो नोमाड लोगों के बीच अभ्यास में लाई जाती है, पाये जाने पर काफी आश्चर्य हुआ। हमें केवल तभी, जब हम ल्हासा में थे, सभी प्रकार के वे जटिल कारण, जानने को मिले, जोकि तिब्बत में एक ही समय में, बहुपति (Polygamy) और बहुपत्नी प्रथा (Polyandry) के अस्तित्व की ओर ले जाते थे।

दोनों आदमियों ने, जब वे घर आये, हमारा गर्मजोशी के साथ, जैसे कि उनकी पत्नी कर चुकी थी, स्वागत किया। बहुत अच्छा खाना तैयार किया गया और हमें कुछ दही भी पीने को मिला। ये एक आनन्द था, जो हमने तब से, जब हम क्यिरोंग में मक्खन बनाने वालों को मदद किया करते थे, नहीं उठाया था। हम काफी लम्बे समय तक, आराम से आग के पास बैठे रहे और हमने स्वयं को, सड़क की कठिनाइयों के लिए इनाम प्राप्त, महसूस किया। हम हॅसे और काफी ठिठोली की, जो जबकि मण्डली कई लोगों और एक अकेली सुंदर नौजवान महिला की हो, एक सामान्य बात है, महिला ने छेड़छाड़ का अपना हिस्सा लिया।

हमने नये सिरे से चलना शुरू किया और अगले दिन विश्राम किया, और हम उस बर्फीले परिदृश्य वाले, वीरान स्थान को, अपने पीछे छोड़ देने पर प्रसन्न थे। हमने यहॉ–वहॉ जीवन के चिन्ह देखे। ढ़लान पर, जंगली भेड़ों के झुंड दिखाई दिये और कई बार इतने करीब आ गये कि एक पिस्तौल ने, हमको हमारे रात्रिभोज के लिये मांस की टिक्की दे दी होती। दुर्भाग्यवश हमें वह नहीं मिली।

जैसे ही शाम हुयी, और अधिक मित्रवत् नोमाडों को पाना, एक सुखद आश्चर्य था। जैसे ही हम सभी पहुॅचे, उन्होंने अपने कुत्ते बुला लिये और उनके उपजाऊ चारागाह के ऊपर, अपने याक को चरने का एक मौका देने के लिए, हमने उनके साथ एक और दिन के लिए, विश्राम करने का निर्णय लिया।

अपने सामान्य जीवन को जीते हुए, सर्दी में नोमाड लोगों के पास, करने के लिए कुछ अधिक नहीं होता। वे अपने आपको विभिन्न घरेलू उबाऊ कार्यों में व्यस्त रखते हैं और मनोरंजन के लिए, अपनी ऐतिहासिक टोपीदार बंदूकों के साथ, शिकार के लिए जाते हैं। औरतें याक के याकोबर को इकट्ठा करती हैं और अक्सर जब वे काम करती हैं, अपने बच्चों को अपने आसपास संभाले रखती हैं। शाम को झुंड अंदर लाये जाते हैं और गायों का दूध निकाला जाता है–यद्यपि ये उसकी तुलना में कम होता है, जो वे सर्दियों में देती हैं। जैसी कोई कल्पना कर सकता है, नोमाडों के खाना पकाने के तरीके सरलतम हैं। विशेष रूप से सर्दियों में, वे लगभग अधिकाधिक संभव चरबी वाला मांस खाते हैं। वे विभिन्न प्रकार के सूप–त्सम्पा, कृषि के जिलों का सहखाद्य, जो एक विरलता है, भी खाते हैं।

नोमाडों की पूरी जिंदगी इस तरह से व्यवस्थित होती है कि प्रकृति उनको जीने के लिए, जो कुछ न्यूनतम सहायतायें उपलब्ध कराती है, उसमें से अधितम उपयोग किया जा सके। रात को वे, जमीन के ऊपर बिछाई हुई खालों के ऊपर और खोलियों में घुसते हुए, भेड़ की खाल के अपने लवादों को बिस्तर के रूप में उपयोग में लाते हुए, सोते हैं। प्रातः जागने से पहले, वे आग में फूंक मार कर, अभी भी सुलगते हुए अंगारों को सुलगाते हैं और पहली चीज, जो वे करते हैं, वह है चाय बनाना। आग, घर का हृदय स्थल होती है और उसे कभी बुझने नहीं दिया जाता। कोई, हर किसान के घर में, प्रत्येक तंबू के अंदर एक वेदी पाता है, जो सामान्यतः एक साधारण एकत्रीकृत कोष होता है, जिस पर एक गण्डा लगाया होता है या बुद्ध की एक प्रतिमा बनी होती है। वहॉ निरपवाद रूप से दलाईलामा का एक चित्र होता है। एक छोटा मक्खन का दिया वेदी पर जलता रहता है, और ऑक्सीजन की कमी के कारण, ठण्ड के कारण, सर्दियों में आग की लौ लगभग अदृश्य होती है।

नोमाडों के जीवन में, बर्ष भर की सबसे बड़ी घटना, ग्यानयिमा (Gyanyima) का एक वार्षिक बाजार होता

है, जिसके लिए, वे अपने झुंड को चला कर ले जाते हैं और अनाज के बदले, कुछ भेड़ों का आदान–प्रदान करते हैं और वे वहॉ घरेलू सामान, सुईयॉ, एल्युमिनियम के बर्तन और तश्तरियॉ, और औरतों के लिए, चमकते हुए रंगदार गहने खरीदते हैं।

घरेलू जीवन की कुछ झलकियॉ देखने के बाद, हमें सड़क पर होने का दुःख हुआ। इन लोगों की सौहार्द्रता के भुगतान के रूप में, हमने कुछ करने की इच्छा की होती। हमने उन्हें रंगीन धागों और पिसी हुई लाल मिर्च के चूर्ण की छोटी भेटें दीं–वही, जो कुछ हमारे पास था।

इसके बाद, कुछ समय के लिए, हमने अपने रास्ते पर प्रतिदिन, मौसम के अनुसार, दस से बीस मील की दूरी तय की, हमको तम्बू मिले या नहीं। अक्सर, काफी पड़ाव हमको खुले में करने पड़े। उन समयों में, इसने हमारा पूरा समय एवं हमारी ऊर्जा को याक के याकोबर को इकट्ठा करने में व्यय कराया।

हम अपने हाथों से, जो ठण्ड के कारण हमेशा कड़े थे, अधिक पीड़ित हुए, क्योंकि हमारे पास दस्ताने नहीं थे और इसके बदले में हमने मोजों (socks) का एक जोड़ा उपयोग किया था। दिन में एक बार, हमने मांस पकाया और जलते हुए सॉस की कढ़ाई से, ग्रेवी को सीधे ही बाहर निकाला। यहॉ कोई इसे, अपनी जीभ को जलाने वाले किसी डर के बिना, कर सकता था चूंकि क्वथनांक बहुत कम था। हमने रात को खाना पकाया, और जो कुछ भी पहले बचा था, उसको गर्म किया। हमने सुबह यात्रा प्रारम्भ की। हम बिना रुके, पूरे दिन पैदल चलते रहे।

जब हम, ठण्ड और असंख्य जूंओं की बजह से, जो हमको सताती थीं, अक्सर सोने में असमर्थ रहने के कारण, पासपास लेटते थे, रातों के अपने कष्टों के ऊपर, मैं एक अध्याय लिख सकता था। पाठक को यह अनुमान लगाना चाहिए कि हम कितने परेशान हुए।

तेरह दिसम्बर को, हम, मात्र एक घर की एक ''बस्ती'', लाबरांग ट्रोवा (Labrang Trova) पहुॅचे। परिवार, जिसका वह घर था, उसे केवल शिविर के लिए उपयोग में लाता था और अपने तम्बुओं में रहता था, जो उन्होंने पड़ोस में गाड़ रखे थे। जब हमने उन्हें पूछा, क्यों ? तो उन्होंने जवाब दिया कि तम्बू अधिक गर्म थे। हमने उनकी बातचीत से समझा कि हम एक कृत्रिम निवास में रुके हैं। बोन्पो बाहर था, परंतु उसकी ओर से, उसका भाई कार्य कर रहा था। पश्चात्वर्ती ने हमको प्रश्न पूछना शुरू किया, परंतु शीघ्र ही वह हमारी तीर्थयात्रियों वाली कहानी से संतुष्ट प्रतीत हुआ। हमने पहली बार स्वीकार किया कि, हम ल्हासा जाना चाहते थे, क्योंकि इस बिन्दु पर, हम काफिले के रास्ते से सुरक्षित दूरी पर थे। हमारे आदमी ने भय में अपना सिर हिलाया और हमें ये समझाने का प्रयास किया कि ल्हासा के लिए, सबसे अच्छा और जल्दी वाला रास्ता, शिंगस्ते से हो कर था। मेरे पास उत्तर तैयार था। हमने इस कठिन रास्ते को चुना था ताकि हमारी तीर्थयात्रा अधिक पुण्य की हो। वह इस स्पष्टीकरण से प्रभावित हुआ और उसने प्रसन्नता से हमें भली सलाह दी।

उसने कहा कि हमारे पास चुनने के लिये दो रास्ते हैं। पहला, उस रास्ते पर चलना था, जो बहुत मुश्किल था। इसमें हमें अनेक दर्रे और वीरान देहात की पगडंडियॉ पड़ेंगीं। दूसरा रास्ता आसान था परंतु इसका अर्थ था, खम्पाओं के देहात के मध्य से हो कर गुजरना। एक बार फिर, ''खंपा (Khampa)'' का नाम रहस्यमय सुर के साथ आया। खंपा का अर्थ है, तिब्बत के पूर्वी राज्य, जिसे खाम (Kham) कहा जाता है, का एक निवासी। परंतु आपने ये नाम, कभी भी डर और उल्लिखित चेतावनी के प्रच्छन्न भाव के बिना, नहीं सुना होगा। अंत में हमने महसूस किया कि इसका अर्थ ''लुटेरे'' के समानार्थी था।

दुर्भाग्यवश, हमने चेतावनी को हल्के रूप में लिया और आसान रास्ते का चयन किया। दुर्भाग्यवश, बोन्पो के परिवार के साथ, हमने उनके टेन्ट में, दो रातें व्यतीत कीं। उनके तंबू में, अतिथि के रूप में नहीं, चूॅकि गर्वयुक्त तिब्बती, हम गरीब भारतीयों को, ऐसे आदर के योग्य नहीं समझते थे परंतु, बोन्पो का भाई एक बहुत ही प्रभावशाली व्यक्ति था। वह गम्भीर विचार वाला और भाषण में अल्पभाषी था, परंतु जब उसने कुछ कहा, तो इसका कुछ अर्थ था। वह अपने भाई की पत्नी को साझा करता था और उसके परिवार के साथ रहता था। परिवार अच्छा खासा खुशहाल दिखाई दिया, और अधिकांश नोमाडों की तुलना में, वे काफी बड़े तम्बू में रहते थे। हम अपने भण्डारों को पूरा करने में सक्षम थे और हमारी खरीददारी के लिए, सामान्य तरीके से धन स्वीकार किया गया।

सबसे कठिन यात्रा

हम कुछ समय तक ही रास्ते पर चले थे कि तभी कपड़े पहने हुए एक व्यक्ति, हमारी तरफ आया और असामान्य रूप से हमें टकराया। वह किसी बोली, जो स्थानीय नोमाडों से अलग थी, में बोला। उसने उत्सुकता से हमसे पूछा, इधर को ? और कहॉ से ? और हमने अपनी तीर्थयात्री की कहानी उसे बतायी। उसने हमें बिना परेशान किये छोड़ दिया और अपने रास्ते पर चला गया। हमें ये स्पष्ट था कि हम पहले खंपा के साथ पहचान बना चुके थे।

कुछ घंटों बाद, हमने उसी प्रकार के कपड़े पहने हुए दो आदमियों को, दूरी पर, छोटे खच्चरों के ऊपर देखा। हमने धीमे–धीमे असहज अनुभव करना प्रारम्भ किया और उनकी प्रतीक्षा किये बिना आगे चलते गये। अंधेरा होने के काफी देरी बाद, हम एक तंबू के पास आये। यहॉ हम भाग्यशाली थे, चूंकि ये एक किसान नोमाड परिवार द्वारा आबाद था, जिसने सौहार्दतापूर्वक हमको अंदर आने के लिए आमंत्रित किया और हमारे लिए एक विशेष अलाव प्रदान किया।

शाम को हमने लुटेरों के बारे में बातें करना प्रारम्भ किया। ऐसा लगा, वे एक नियमित महामारी थे। हमारा मेजबान, उनके संबंध में एक महाकाव्य बनाने के लिए, काफी लम्बे समय तक जिले में रहा था। उसने गर्व के साथ, हमको एक मेनलिचर (Mannlicher) रायफल दिखाई, जिसके लिए उसने एक खंपा को सौभाग्य–पॉच सौ भेड़ें, कोई कम नहीं, दिया था परंतु इलाके के लुटेरों के गेंग ने, इस भुगतान को एक श्रंद्धाजलि के रूप में लिया और तब से उसे हमेशा शान्ति में बने रहने के लिए छोड़ दिया।

उसने हमें लुटेरों के जीवन के संबंध में कुछ बताया। वे समूह बना कर, तीन या चार तम्बुओं में रहते हैं, जो उनके अभियानों के लिए मुख्यालय की तरह होते हैं। ये इस प्रकार संचालित किये जाते हैंः रायफलों और तलवारों से पूरी तरह सुसज्जित, वे, जबरदस्ती अपना मार्ग, नोमाड के तंबू में बनाते हैं और उपलब्ध सर्वाधिक खर्चीले आधार पर, सौहार्द्रतापूर्ण आयोजन की मॉग करते थे। नोमाड, भय में वह सारी चीजें बाहर निकाल देता है, जो उसके पास हों। खंपा लोग, अपने पेटों और अपनी जेबों को भरते हैं और अतिरिक्त अंश के रूप में, कुछ मवेशियों को अपने साथ ले जाते हैं, और विस्तृत खुले स्थानों में गायब हो जाते हैं। वे, जब तक कि पूरा क्षेत्र, पूरी तरह लूटकर खाली न कर दिया जाय, हर दिन, दूसरे टेंट पर इसी प्रकार की कार्यप्रणाली को अंजाम देते हैं। तब वे अपने मुख्यालय को बदल लेते हैं और वही चीज दूसरी जगह करते हैं। नोमाड, जिनके पास कोई हथियार नहीं हैं, अपने आपको, भाग्य भरोसे छोड़ देते हैं, और शासन उन्हें, इन दूर के क्षेत्रों में सुरक्षा देने में शक्तिहीन है। तथापि, कभी–कभी, यदि कोई जिला अधिकारी किसी झड़प में, इन लुटेरों को पा जाता है, वह इस से घाटे में नहीं रहता क्योंकि, उसके पास इस पूरी लूट को अपने कब्जे में कर लेने का अधिकार है। उन दोषियों को बर्बर दण्ड, जो सामान्यतः उनकी भुजाओं को काटना होता है, दिया जाता है, परंतु इससे खंपाओं के विधिहीन होने का कोई इलाज नहीं हुआ। क्रूरता, जिससे साथ वे अपने शिकार को मारते हैं, की कहानियॉ कही जाती हैं। वे तीर्थयात्रियों, घुमक्कड़ भिक्षुओं, और भिक्षुणियों का, बध तक कर देते हैं। हमारे लिये हैरान करने वाला एक वार्तालाप! अपने मेजबान की मैनलिचर बन्दूक को खरीदने के लिए, हम क्या नहीं दे देते! परंतु हमारे पास पैसा नहीं था और सबसे अधिक प्रारंभिक हथियार तक भी नहीं थे। तंबू बांधने की खूटियॉ, जो हम ले जा रहे थे, वे भेड़ों के रखवाले कुत्तों तक को प्रभावित करने लायक नहीं थीं।

अगली सुबह हम अपने रास्ते पर चले, बिना किसी आशंका के नहीं, जो बढ़ती गई, जब हमने एक आदमी, जो पहाड़ी के बगल से हमारा पीछा करता हुआ दिखाई देता था, को बंदूक के साथ देखा। फिर भी, हम अपने रास्ते पर सीधे चलते रहे, और अंत में, आदमी गायब हो गया। शाम को हमें और अधिक तंबू दिखाई दिये– पहले एक अकेला और तब दूसरों का समूह।

हमने पहले तंबू के आदमी को पुकारा। नोमाडों का परिवार बाहर आया। उन्होंने आतंक की अभिव्यक्ति के साथ, हमें प्रवेश कराने से मना कर दिया और अन्यमनस्क ढंग से दूसरे तंबुओं की तरफ इशारा किया। वहॉ कुछ करने लायक नहीं था, केवल चलते जाना था। हम अगले तंबू पर एक मित्रवत् स्वागत को पाकर कम चकित नहीं हुए। हर आदमी बाहर निकल कर आया। उन्होंने हमारी चीजों पर उंगलियॉ घुसाईं और हमें उतारने में मदद की–एक चीज, जो किसी भी नोमाड ने कभी नहीं की थी –और सहसा हमें ऐसा लगा कि वे खाम के लोग थे।

हम उनके जाल में, चूहों की तरह आकर, फंस गये थे। तम्बू में रहने वाले, दो आदमी तथा एक औरत और एक अधेड़ आयु का जवान था। हमें उनके सामने, खराब परिस्थितियों में अच्छा चेहरा बना कर रखना पड़ा। कम से कम हम अपनी सुरक्षा कर सकते थे और आशा करते थे कि नम्रता, दूरदर्शिता, और कूटनीति, हमें इस घपले में से बाहर निकालने का रास्ता पाने में सहायता देगी।

हम मुश्किल से ही आग के पास बैठे थे, कि तभी आसपड़ोस के तंबुओं में से, हम अनजानों को देखने के लिए आने वाले आगंतुकों का, तंबू में भरना शुरू हो गया। हमारे हाथ, अपने सामान को पूरी तरह कस कर जकड़े हुए थे। लोग, दबाने वाले और जिप्सियों की तरह घुमक्कड़ थे। जब उन्होंने सुना कि हम तीर्थयात्री थे, उन्होंने तत्काल ही, उन आदमियों में से एक, ल्हासा की यात्रा पर, हमारे साथ विशेषरूप से एक अच्छे पथप्रदर्शक को, अपने साथ लेने की सलाह दी। उसने हमें, हमारे रास्ते से कुछ दक्षिण की तरफ, और जो उसके अनुसार, यात्रा के लिए अधिक आसान था, एक सडक़ से ले जाना चाहा। हमने नजरें मिलाईं, आदमी छोटा और शक्तिशाली था, और अपने कमरबंद में लंबी तलवार साथ लिये हुये था। ये आत्मविश्वास को प्रेरणा देने वाला ढंग नहीं था। तथापि, हमने उनके प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया और उसके वेतन के ऊपर सहमत हो गये। वहॉ और कुछ करने को नहीं था, क्योंकि यदि हम उनके विरोध में दूसरी तरफ जाते, तो वे वहीं हमारा कत्ल कर सकते थे।

दूसरे तंबुओं में से आये हुए आगंतुक, धीरे–धीरे चलते गये और हमने सोने की तैयारी की। हमारे मेजबानों में से एक ने, मेरे पिट्ठू बैग को, तकिये के रूप में उपयोग करने के लिये जोर डाला, और मुझे इसको अपने पास रखने में अत्यन्त कष्ट था। उन्होंने शायद सोचा था कि इसमें पिस्तौल होगी। यदि उन्होंने ऐसा सोचा तो ये हमारे लिये उपयोगी होगा और मैं अपने व्यवहार से, उनकी शंका को बढ़ाने की आशा रखता था। कम से कम उसने, मुझे परेशान करना बंद कर दिया। हम जागते रहे और पूरी रात अपनी सुरक्षा पर तैनात रहे। यद्यपि हम बहुत थके हुये थे, ये बहुत मुश्किल नहीं था, क्योंकि औरत ने बिना बंद किये, कुछ प्रार्थनाओं को बुदबुदाया। मुझे ऐसा लगा कि वह, अपने पति द्वारा किये जाने वाले अपराध, जो वह अगले दिन हमारे साथ करने वाला था, को क्षमा किये जाने के लिए, अग्रिमरूप से प्रार्थना कर रही थी। जब दिन फूटा, हम प्रसन्न थे। सबसे पहले, हर चीज शांतिमय दिखाई दी। मैंने याक के कुछ मगजों के साथ, एक जेबी दर्पण की अदलाबदली की, जो हमने नाश्ते में पकाया। तब हमने जाने की तैयारी शुरू की। हमारे मेजबानों ने, ऑखें तरेरते हुए चेहरे के साथ, हमारी गतिविधियों को समझ लिया और देखा मानो, वे मेरे ऊपर हमला करना चाहते थे, जब मैंने तंबुओं में से आउफस्नाइटर को देने के लिए अपने सामान को टेंट के बाहर निकाला। तथापि, हमने उनसे हाथ मिला कर विदाई ली और अपने याक को लादा। हमने अपने पथप्रदर्शक का पता किया, परंतु हमारे संतोष के लिए वहॉ कोई भी दिखाई नहीं दिया। खंपा परिवार ने हमको तत्काल ही, दक्षिण वाले रास्ते पर जाने की सलाह दी, चूॅकि उस क्षेत्र के नोमाड, ल्हासा के लिए एक काफिला तैयार कर रहे थे। हमने ऐसा करने का वायदा किया और बहुत तेजी से चलना प्रारम्भ कर दिया।

हम कुछ सौ गज की दूरी पर ही गये होंगे, तब मैंने देखा कि मेरा कुत्ता वहॉ नहीं था। वह सामान्यतः बिना बुलाये, हमारे पीछे दौड़ता हुआ आता। जैसे ही हमने अपने आसपास देखा, हमने तीन आदमियों को अपने पीछे आते हुए देखा। वे शीघ्र ही हम तक पहुॅच गये और हमसे कहा कि वे भी नोमाडी तीर्थयात्रियों के तंबुओं की तरफ जा रहे थे और दूरी पर धुंए के उठते हुए स्तम्भ की ओर इशारा किया। वह हमें अत्यन्त संदेहपूर्ण दिखा चूंकि हमने इससे पहले धुंए का स्तम्भ, नोमाड तंबुओं के ऊपर कभी नहीं देखा था। जब हमने कुत्ते के बारे में पूछा, उन्होंने कहा कि वह तंबू में पीछे रह गया है। हम में से एक जा सकता था और उसे ला सकता था। अब हमने उनकी योजना को देखा। हमारे जीवन दॉव पर थे। चूॅकि वे हम दोनों पर एक साथ हमला करने का साहस नहीं कर सके, उन्होंने आउफस्नाइटर और मुझको अलग करने का एक अवसर पाने के लिए, हमारे कुत्ते को पीछे रोक लिया था, और शायद, उनके साथी उस स्थान पर, जहॉ धुंआ उठ रहा था, प्रतीक्षा कर रहे हों। यदि हम वहॉ जाते, हम अनेक लोगों द्वारा बुरी तरह से दबा दिये जाते, और वे हमें आसानी से विदा कर सकते थे। हमारे गायब होने के संबंध मे, कोई कभी भी, कुछ भी नहीं जान पाता। हमें भले आशय वाले नोमाडों की चेतावनी को नहीं सुनने का, बहुत दुःख हुआ।

यद्यपि हमने किसी के ऊपर शंका नहीं की, हम एक दूसरे के साथ जल्दी बातें करते हुए, उसी दिशा में, एक छोटे रास्ते पर गये। दोनों आदमी, अब हमारे दोनों तरफ थे, जबकि लड़का पीछे चल रहा था। एक नजर बांयी ओर को डालते हुए, हमने अपने अवसरों का अनुमान किया, यदि ये एक युद्ध लड़ना पड़े। दोनों आदमी, भेड़ की खाल के दुहरे लबादों को पहने हुए थे, जैसा कि लुटेरे, अपने आपको चाकू घोंपे जाने से बचने के लिए करते

हैं, और लम्बी तलवारें उनके कमरबंद से बंधी हुई थीं। उनके चेहरे के ऊपर, मेमने जैसा भोलेपन का प्रभाव था।

कुछ चीज होनी थी, आउफस्नाइटर ने सोचा कि हमको पहले अपनी दिशा बदलनी चाहिए, ताकि हम अंधे हो कर उनके जाल में न फसें। कहने से पहले उसे कर लिया गया। फिर भी बोलते हुए, हम अचानक ही मुड़ गये।

एक क्षण के लिए, खंपा लोग आश्चर्य में रुके, परंतु अगले ही क्षण, हमारे साथ आ मिले और हमारे रास्ते पर चलने लगे, हमें पूछते हुए, किसी मित्रवत् सुर में नहीं, कि हम कहॉ जा रहे थे। ''कुत्ते को लेने के लिए'' हमने जल्दी से जवाब दिया। हमारा कहने का ढंग, उनको धमकाता हुआ सा प्रतीत हुआ। उन्होंने देखा कि हम किसी भी दूरी तक जाने के लिए तैयार थे और इसलिए उन्होंने हमें जाने दिया और हमारे पीछे चलना शुरू करने के बाद, थोड़ी देर के लिए, शायद अपने सहअपराधियों को सूचित करने के लिए, वे जल्दी से अपने रास्ते पर गये।

जब हम तंबुओं के पास पहुॅचे, एक डोरी से बंधे हुए कुत्ते को लाते हुए, औरत हमसे मिलने को आई। एक मित्रवत् अभिवादन के बाद, हम चलते गए, परंतु इसबार हमने वह रास्ता लिया, जिससे हम लुटेरों के शिविर तक आये थे। अब वहॉ आगे जाने का कोई प्रश्न नहीं था–हमको अपने कदम वापस लेने पड़े। निहत्थे, जैसे कि हम थे, आगे जारी रखने का अर्थ होता, निश्चित मौत। एक मजबूरी के यात्रा के बाद, हम शाम को उस मित्रवत् परिवार के घर पर, जिसके साथ पहले हम दो रात ठहर चुके थे, पहुॅचे। वे हमारे अनुभव को सुन कर चकित नहीं हुए और हमें कहा कि खंपाओं का शिविर वाला इलाका, ग्याक बोंगरा (Gyak Bongra) कहलाता था, एक नाम, जो पूरे देहात में, भय की प्रेरणा देता था। इस अभियान के बाद, एक शांतिमय रात को, इन मित्रवत् लोगों के साथ गुजारने के योग्य होना, ये एक वरदान था।

अगली सुबह हमने अपनी नई यात्रा की योजना बनाई। उस कड़ी सड़क पर जाने के सिवाय, जो हमको वीरान देहात में हो कर ले जाती, इस संबंध में कुछ नहीं था। हमने नोमाडों से अधिक मांस खरीदा, चूॅकि हम संभवतः, किसी आत्मा को देखने से, एक हफ्ता पहले हो सकते थे।

लाबरांग त्रोबा वापस जाने से बचने के लिए, हमने श्रमसाध्य, अपरिहार्य और तीखी उतराई का, एक छोटा रास्ता लिया, परंतु जैसी हम आशा करते थे, वह हमको उस रास्ते पर ले जाता, जहॉ हम जाना चाहते थे। तीखी ढ़लान की आधी दूरी पर, हम दृश्य देखने के लिए रुके और हमने अपने आतंक के लिए, थोड़ी दूरी पर, दो आदमियों को अपना पीछा करते हुए देखा। निस्संदेह, वे खंपा थे। ये शायद, नोमाड को मिलने आये थे और उन्हें ये बता दिया गया था कि हमने कौन सी दिशा ली थी।

अब हम क्या करते ? हमने कुछ नहीं कहा। परंतु बाद में, एक दूसरे के साथ स्वीकार किया कि हमने चुपके से, अपने जीवनों को, जितना महंगा संभव हो सके उतना महंगा, बेचने के विचार बना लिये थे। हमने पहले अपनी चाल को बढ़ाने का प्रयत्न किया, परंतु हम अपने याक से अधिक तेज नहीं चल सकते थे, जो हमको आलसी मनुष्य की गति से चलता हुआ दिखाई देता था। हमने पीछे देखना जारी रखा, परंतु ये सुनिश्चित नहीं कर सके कि हमको पकड़ने के लिए, हमारे पीछा करने वाले आ रहे थे या नहीं। हमने पूरी तरह से अनुभव कर लिया कि हथियारों के बिना, हम कितनी बुरी तरह से असहाय थे। हमारे पास, केवल तंबू गाड़ने की खूंटियॉ थीं और उनकी तीखी तलवारों के विरुद्ध अपने आपको बचाने के लिए पत्थर थे। एक अवसर लेने के लिए, हमें अपनी तत्काल बुद्धि के ऊपर निर्भर रहना चाहिए .....। इसलिए हम एक घंटे तक, जो हमें थकान से हांफते हुए और लगातार पीछे मुड़ते हुए अनन्त प्रतीत हुआ, चलते रहे। तब हमने देखा कि दोनों आदमी बैठ गये। हमने, ये दिखाते हुए कि हम एक स्थान पर गये थे, जो यदि आवश्यक हो, लड़ाई का एक अच्छा मैदान भी हो सकता था, शिखर की ओर चढ़ाई की जल्दी की। दोनों आदमी, आपस में सलाह मशविरा करते हुए खड़े हुए, और तब हमने उन्हें मुड़ते हुए और पीछे जाते हुए देखा। हमने दुबारा सांस ली और अपने रास्ते पर याक को चलाया ताकि, हम शीघ्र ही, पहाड़ के दूसरी तरफ और दूर, उनकी नजर से ओझल हो जायें।

जब हम चट्टान की ऊॅची चोटी के शिखर पर पहुॅचे, हम समझ गये कि हमारा पीछा करने वाले दो लोगों ने वापस जाना क्यों ठीक समझा। हमारे सामने एक ऐसा नितान्त वीरान भूपरिदृश्य था, जो मैंने शायद ही कभी देखा हो। बर्फ भरे पहाड़ियों की ऊॅचाईयों का समुद्र, आगे अनन्तरूप से विस्तारित था। बहुत दूरी पर, हिमालय का दूसरा सिरा था और दांतों की पंक्तियों के खाली स्थानों की तरह से दर्रे थे, जो हमने हिसाब लगाया, हमको उस सड़क पर ले जायेंगे जहॉ, हमारा उद्देश्य था। स्वेन हेडिन द्वारा बनाये गये पहले नक्शे पर, ये दर्रा, सेलाला (Sela la)– शिंगस्ते को जाता था। अनिश्चित होने के कारण कि क्या खंपा लोगों ने, वास्तव में, पीछा करना छोड़ दिया

था, हम रात हो जाने के बाद भी, चलते गये। सौभाग्यवश, चन्द्रमा ऊपर आ गया था और बर्फ के साथ, हमको पर्याप्त प्रकाश दे रहा था। हम दूर की श्रेणियों को भी देख सकते थे।

मैं उस रात की यात्रा को कभी नहीं भूलूँगा। मैं कभी ऐसे अनुभव से हो कर नहीं गुजरा, जिसने शरीर और आत्मा के ऊपर, मुझे इतना तनाव दिया हो। खंपाओं से हमारा पलायन, उजड़े हुए क्षेत्र की वजह से, जिसको पार पाने की प्रकृति ने, हमारे सामने नयी बाधायें खड़ीं कीं, के कारण से था। ये एक अच्छी चीज थी कि मैंने काफी पहले अपना तापमापी फैंक दिया था। वह यहॉ निश्चित रूप से ऋण (minus) तीस डिग्री बताता, जो कि रिकॉर्ड करने के लिए निम्नतम होता, परंतु ये निश्चितरूप से यथार्थ से अधिक होता। स्वेन हेडन ने, वर्ष के इस मौसम में, यहॉ के आसपास, इसको ऋण (minus) चालीस डिग्री सैल्सियस पंजीकृत किया था।

हम, अनछुई बर्फ के ऊपर, घंटों तक उछलते कूदते रहे, और जैसे ही हम चले, हमारा दिमाग, अपनी खुद की यात्रा पर, दूर चला गया। मैं एक गर्म, सुखद कमरे, सुस्वाद गर्म खाने और भाप देते हुए गर्म पेयों के सपनों के द्वारा सताया हुआ था। पर्याप्त उत्सुकता पूर्वक, ये मेरे विद्यार्थी जीवन के एक सामान्य स्थान, ग्रात्स (Graz) में बुफे की पूर्ण रचना थी, जिसने मुझे लगभग पागल बना दिया था। आउफस्नाइटर के विचार, दूसरी दिशा में थे। वह लुटेरों के विरुद्ध बदला लेने की अंधी योजना का विचार बनाये हुये था और उसने हथियारों और एक मैगजीन के साथ, वापस लौटने की कसम खाई। सभी खंपाओं के लिये विषाद!

अंत में हमने अपनी पैदल यात्रा को छोड़ दिया, अपने याक पर से सामान उतारा और लिहाफ में घुस गये। हमने अपना त्सम्पा का थैला और कुछ कच्चा मांस बाहर निकाला क्योंकि हम बहुत बुरी तरह से भूखे थे, परंतु जैसे ही हमने सूखे खाने का एक चम्मच अपने मुँहों में रखा, धातु हमारे ओठों में चिपक गया और दूर नहीं हुआ। हमें गालियों और कसमों के बीच, इसे फाड़ कर ढीला करना पड़ा। इस कष्टपूर्ण अनुभव के द्वारा मौथरी हुई भूख के साथ, हम अपने कम्बलों में एक साथ इकट्ठे हो गये और चुभने वाली सर्दी के बावजूद, एक लदी हुई थकान की नींद में गिर गये।

अगले दिन हम दुःखपूर्वक, अपने शानदार याक के पदचिन्हों में पैर घसीटते और मुश्किल से ही ऊपर देखते हुए आगे बढ़े। दोपहर बाद, हमने सहसा सोचा कि हम फाटा मोरगाना (Fata Morgana) को देख रहे थे क्योंकि, काफी दूर क्षैतिज पर, फिर भी, पूरी तरह से, अच्छी तरह से खाका खिंचे हुए, हमें याकों के तीन काफिले, उस बर्फीले दृश्य के बीच में हो कर जाते हुए दिखाई दिये। वे बहुत धीमे धीमे आगे बढ़ रहे थे और तब वे रुकते हुए दिखाई दिये–परंतु वे गायब नहीं हुये। इसलिए ये कोई मृगतृष्णा (miraj) नहीं थी। इस दृश्य ने हमको नया साहस दिया। हमने अपनी पूरी शक्ति को फिर से इकट्ठा किया, अपने याक को आगे चलाया, और तीन घंटे की पैदल यात्रा के बाद, उस स्थान पर पहुँचे जहॉ काफिले ने शिविर बनाया था। वहॉ काफिले में–आदमी और औरतें–कुछ पन्द्रह लोग थे और जब हम पहुँचे, उनके तंबू पहले ही गाड़े जा चुके थे। वे हमें देख कर आश्चर्य में पड़ गये परंतु उन्होंने कृपा पूर्वक हमारा अभिवादन किया और गर्म करने के लिए, हमें अंदर अलाव के पास लाये। हमें पता लगा कि वे कैलाश पर्वत की तीर्थयात्रा और व्यापार की मिलीजुली यात्रा से, नामत्शो (Namtsho) झील के समीप अपने घरों की ओर अपने घरों को लौट रहे थे। जिला अधिकारियों के द्वारा उनको बदमाशों के संबंध में, चेतावनी दी गई थी और इसीलिये उन्होंने, उस क्षेत्र को, जो खंपाओं से प्रभावित था, छोड़ देने के लिए, इस अलग रास्ते को चुना था। वे पचास याकों और लगभग दो सौ भेड़ों को घर ला रहे थे। उनके शेष झुंड, माल से बदल लिये गये थे और ये उन लुटेरों के लिए के लिए एक धनी उपहार होता। ऐसा इसलिये था, क्योंकि तीन समूह, आपस में, एक साथ मिल गये थे, और उन्होंने हमें अपने साथ चलने के लिए आमंत्रित किया था। यदि फिर से खंपाओं का सामना हो जाए तो साथ मिल कर प्रबल होना, उनके लिये उपयोगी हो सकता था।

एक बार फिर, आग के पास बैठना और गर्म सूपों को पीना, ये कितना सुखद था। हमने महसूस किया कि ये बैठक, परमात्मा के द्वारा आदेशित की गई थी। हम अपने साहसी आरमिन को नहीं भूले क्योंकि हम जानते थे कि हम उसके कितने एहसानमंद थे, और हमने काफिले के नायक को, अपना सामान उनके एक खाली याक के ऊपर लादने के लिए, जिसके लिए उन्हें हम एक दिन का भाड़ा देंगे, कहा, जिससे कि हमारा जानवर भी, आराम का थोड़ा सा आनन्द ले सके।

दिन के बाद दिन, हम काफिलों के साथ घूमते रहे और हमने पर्वतारोहियों के अपने छोटे तंबू को, उनके साथ–साथ गाड़ा। हम, तूफानों के बीच, जो इन क्षेत्रों में अक्सर चलते हैं, अपने तंबुओं को गाड़ने में बुरी तरह से पीड़ित हुए। याक के ऊन के भारी तंबुओं के विपरीत, जो हवाओं का प्रतिरोध कर सकते हैं, हमारे हल्के कैनवास

के झौंपड़े, इस खराब मौसम में खड़े नहीं हो सकते थे, और हमको कई बार, खुली हवा में पड़ाव करना पड़ता था। हमने कसम खाई कि यदि हम इस तिब्बत के अभियान पर दुबारा फिर आये, हम अपने साथ तीन याक, एक चालक, एक नोमाडों का तंबू, और एक रायफल लेकर आयेंगे!

इन काफिलों के साथ शामिल होने की रजामंदी मिलने के बाद, हमने अपने आपको अत्यधिक भाग्यवान समझा। केवल चीज, जिसने हमें परेशान किया था, वह थी हमारी प्रगति का अत्यधिक धीमापन। अपनी पिछली पैदल यात्राओं की तुलना में, हम एकदम धीमे, चहलकदमी करते हुए प्रतीत हुए। नोमाड, सुबह जल्दी प्रारम्भ कर देते हैं, और तीन या चार मील चल लेने के बाद, अपने तंबू दुबारा गाड़ते हैं और अपने जानवरों को, चरने के लिए, बाहर छोड़ देते हैं। रात घिरने से पहले, वे उन्हें ले आते हैं और उन्हें अपने तंबुओं के आसपास रखते हैं, जहॉ वे भेड़ियों से सुरक्षित होते हैं और शान्ति से जुगाली करते रहते हैं।

केवल अब, हम समझे कि हमने अपने गरीब आरमीन को कितना लादा था! उसने हमें पागल समझा होगा कि जैसे कि तिब्बती करते थे, जब हमने उसे क्यिरोंग के आसपास, दिनभर की पहाड़ों की चढ़ाई पर भेजा। अपने आराम के लंबे समय की अवधि में, हमने अपनी डायरियों, जिनकी हमने अभी तक उपेक्षा कर रखी थीं, को भरने में, अपना अधिक समय लगाया। हमने, काफिले में लोगों से, ल्हासा की सड़क के संबंध में, व्यवस्थित ढंग से सूचनाओं को इकट्ठा करना प्रारम्भ किया। हमने उनसे अलग–अलग प्रश्न पूछे और धीमे–धीमे उनको, स्थानों के नाम से, एक निश्चित क्रम में इकट्ठा किया। चूँकि ये हमको, बाद में, नोमाडों से, एक स्थान से दूसरे स्थान का रास्ता पूछने के लिए, कहने में दक्ष बना देगा, अतः ये हमारे लिए अत्यधिक मूल्यवान था। हम काफी लंबे समय से ही सहमत हो चुके थे कि हम छोटे रास्ते पर चलते हुए, अपने जीवन का व्यय करते नहीं रह सकते थे। हमको निकट भविष्य में, काफिले को छोड़ देना चाहिए। हमने अपने मित्रों से, क्रिसमस की शाम को क्षमा मांगी और फिर से अकेले चलना प्रारम्भ किया। हमने ताजा और आराम किया हुआ महसूस किया, और पहले दिन में, चौदह मील से अधिक, तय किया। बाद में, शाम को हम एक चौड़े पठार पर आये, जिस पर कुछ छितरे हुए कुछ अलग–अलग तंबू लगे थे। उनके निवासी, बहुत कुछ हद तक, अपनी–अपनी सुरक्षा में दिखाई दिये, क्योंकि जैसे ही हम पहुँचे, बुरी तरह शस्त्रों से सुसज्जित थोड़े से जंगली जैसे दिखते हुए आदमी, हमारे पास आये। वे हमारे ऊपर रुखाई के साथ चीखे और हमें राक्षस के पास वापस जाने के लिए कहा। हम पीछे नहीं हटे, परंतु ये दिखाने के लिए कि हम शस्त्रधारी नहीं थे, अपने हाथ उठा दिये और उन्हें ये समझाया कि हम हानिरहित तीर्थयात्री थे। अपने काफिले के बाकी दिनों के बावजूद, हमने अपना मासूम सा चेहरा प्रस्तुत किया। एक थोड़े छोटे वार्तालाप के बाद, बड़े तंबू के मालिक ने, हमको रात अपने साथ गुजारने के लिए कहा। हमने आग के पास बैठकर, अपने आपको गर्म किया और हम प्रत्येक को मक्खन वाली हरी चाय और एक बिरला सुस्वाद मिष्ठान–सफेद रोटी का टुकड़ा, दिया गया। ये पत्थर की तरह कड़ा था, परंतु जंगली तिब्बत में, क्रिसमस की पूर्वसंध्या पर ये छोटा सा तोहफा, हमारे लिए अच्छे पकाये हुये क्रिसमस के रात्रिभोज, जो हमने कभी घर पर किया हो, की तुलना में अर्थपूर्ण लगता था।

हमारे मेजबान ने, पहले हमारे साथ रूखा व्यवहार किया। जब हमने उन्हें बताया कि किस रास्ते से हम ल्हासा पहुँचना चाहते थे, उसने सूखेपन से कहा कि यदि हम अब तक वहॉ नहीं मारे गये होते, तो हम अगले कुछ दिनों में निश्चितरूप से मार दिये गये होते। देहात पूरी तरह से खंपाओं से भरा हुआ था। उनके लिए, बिना हथियारों वाले हम, अच्छे शिकार हो सकते थे। उसने इसे भाग्यवादी सुर, जैसे कि कोई स्वयंसिद्ध सत्य को कहता है, में कहा। हमारा दिल बहुत टूट गया और हमने उसकी सलाह मांगी। उसने हमें सलाह दी कि हमको शिंगस्ते की सड़क पकड़नी चाहिए, जिस से हम एक हफ्ते में पहुँच सकते हैं। हमने उसके बारे में नहीं सुना। उसने थोड़े समय के लिए सोचा और तब हमें उस क्षेत्र के जिला अधिकारी, जिसका तंबू केवल कुछ मील दूर था, को प्रार्थना करने की सलाह दी। यदि हम उस पर, उन लुटेरों के इलाके में हो कर जाने का, एकदम दवाब डालें, अधिकारी, हमको एक अनुरक्षक (escort) देने में सक्षम होगा।

उस शाम को, हमारे पास बातचीत करने के लिए इतना कुछ अधिक था, कि हम, अपने खुद के घरों में क्रिसमस के संबंध में, मुश्किल से ही विचार कर सके। अंत में हम, एक अवसर लेने और बोन्पो से मिलने के लिए सहमत हुए। इसने उसके तंबू तक पहुँचने में, हमारा केवल कुछ घंटे का समय लिया, और हमने इसे एक अच्छा चिन्ह माना कि उसने मित्रवत् तरीके से हमारा स्वागत किया और हमारी इच्छानुसार, हमारे लिये एक तंबू लगा दिया। तब उसने अपने सहयोगियों को बुलाया और हम चारों एक गोष्ठी में बैठे। इस बार हमने भारतीय तीर्थयात्री होने की अपनी कहानी को छोड़ दिया। हमने अपने आपको, यूरोपीय लोगों के रूप में प्रस्तुत किया और डाकुओं के

विरुद्ध सुरक्षा मांगी। स्वाभाविकरूप से, हम शासन की आज्ञा के अनुरूप यात्रा कर रहे थे और ठण्डेपन से, मैंने अपने यात्रा के पुराने अनुज्ञापत्र को उसको दिया, जिसको गारपोन ने, पहले ही हमको गारटोक में दिया था, (इस दस्तावेज के पीछे एक कहानी है। हम तीनों ने सिक्का उछाल कर यह तय किया था कि इसे कौन अपने साथ रखेगा, और कॉप जीत गया था। परंतु जब वह हमसे अलग हुआ, मुझे एक अंतःप्रेरणा हुई और मैंने उसे, उससे खरीद लिया और अब वह समय आ चुका था) दोनों अधिकारियों ने मोहर की जॉच की और स्पष्टरूप से दस्तावेज से सन्तुष्ट थे। वे अब सहमत थे कि हमारे पास तिब्बत में रहने का अधिकार है। केवल एक प्रश्न, जो उन्होंने पूछा वह था कि दल का तीसरा सदस्य कहॉ था। हमने स्पष्ट किया कि वह बीमार पड़ गया है और ट्रेडुन के रास्ते से भारत को वापस लौट गया है। इसने बोन्पो को संतुष्ट करा दिया, जिसने हमको एक अनुरक्षक देने का वायदा किया; वे विभिन्न चरणों में, नये आदमियों के द्वारा बिदा कर दिये जायेंगे, और हमको वहॉ उत्तरी मुख्य सड़क तक ले जायेंगे।

ये हमारे लिये क्रिसमस की वास्तविक शुभकामनायें थीं! और अब अंत में, हमने एक भोज रखना चाहा। विशेषरूप से इस अवसर के लिये, हमने थोड़ा सा चावल क्यिरोंग में जमा कर लिया था। हमने इसे तैयार किया और दोनों बोन्पो को शामिल होने और साथ देने के लिये आमंत्रित किया। वे अपने साथ सभी प्रकार की अच्छी चीजों को लेते हुए आये, और हमने साथ–साथ, अच्छी मित्रवत् शाम गुजारी।

अगले दिन, एक नोमाड अगले शिविर तक के लिए, हमारे साथ चला और हमें वहॉ ''सौंप दिया (delivered)'' गया। हमें छड़ी के रूप में रखते हुए, ये एक प्रकार की रिले (relay) दौड़ जैसी थी। हमारा मार्गदर्शक हमें दूसरे को सौंप कर वापस चला गया। अपने अगले मार्गदर्शक के साथ, हमने आश्चर्यजनक प्रगति की और तब हमने महसूस किया कि एक साथी को साथ रखना, जो वास्तव में रास्ते को जानता था, कितना उपयोगी था। फिर भी, वह हमें डकैतों के विरुद्ध बहुत अच्छी सुरक्षा प्रदान नहीं कर सका।

हवायें और ठण्ड, हमारे स्थायी साथी थे। हमें ऐसा प्रतीत हुआ मानो पूरा विश्व, ऋण (minus) तीस डिग्री सेन्टीग्रेड तापक्रम के साथ एक बर्फीला तूफान था। अपर्याप्त कपड़े पहनने के कारण, हमें काफी छींकें आईं और मैं टेन्ट के एक निवासी से, भेड़ की खाल को पुराने ओवरकोट को पाने में सक्षम होने के लिये सौभाग्यशाली था। ये मेरे लिये कसा हुआ था और आधी बॉह वाला था, परंतु ये मुझे केवल दो रुपये में मिला। हमारे जूते टेड़ेमेड़े हो गये थे और अब अधिक नहीं चल सकते थे; और जहॉ तक दस्तानों का सवाल है, हमारे पास कोई नहीं थे। आउफस्नाइटर के हाथों को बर्फ द्वारा काट दिया गया था, और मेरे पैरों में तकलीफ थी। हमने अपनी पीड़ाओं को खराब उदासी के साथ झेला, और मीलों के अपने दैनिक कोटे को पूरा करने के लिये, हमें काफी ऊर्जा की आपश्यकता थी। हम, एक नोमाड के गर्म तंबू में, कुछ हफ्तों तक विश्राम करने पर कितने खुश रहे होते। नोमाडों के कठोर और दरिद्रतापूर्ण जीवन भी, जैसेकि ये होते हैं, अक्सर हमें लुभाते हुए, विलासी दिखाई देते हैं। परंतु हम, उससे पहले कि हमारा किराना खत्म हो जाये, पूरी तरह से खाली हो जायें, ल्हासा में पहुॅचना चाहते थे, इसलिये हमने विलंबित होने का साहस नहीं किया। और तब ? ठीक है, हमने भविष्य के बारे में अनुमान न लगाने को प्राथमिकता दी।

हमने अक्सर, सुदूर दूर में प्रसन्नतापूर्वक, घोड़े की पीठ पर आदमियों को देखा, जिन्हें असामान्य प्रकार के कुत्तों से, जो उनके साथ चल रहे थे, हमने खम्पाओं के रूप में समझा। ये प्राणी, सामान्य तिब्बती कुत्तों की तुलना में, कम बाल वाले, पतले, हवा की तरह तेज, और अवर्णनीयरूप से भद्दे होते हैं। हमने ईश्वर को धन्यवाद दिया कि हमें न तो उनसे और न उनके स्वामियों से, समीप से मिलने का कोई अवसर मिला।

अपनी यात्रा के इस चरण में, हमने एक जमी हुई झील खोजी जो, बाद की तलाश में, हमें किसी नक्शे पर नहीं मिली। आउफस्नाइटर ने तुरंत ही हमारे नक्शे पर इसका खाका खींचा। स्थानीय निवासी, इसको योचाब्त्सो, (Yochabtso) कहते हैं, जिसका अर्थ है, ''त्याग का जल (water of sacrifice)''। ये हिमनदों की एक श्रृंखला की तलहटी में स्थित है। हमारे मुख्य सड़क पर आने से पहले हमें आधुनिक यूरोपियन रायफलों को ले जाते हुए कुछ सशस्त्र लुटेरे मिले, जिनके विरुद्ध कोई भी साहस, हमारी मदद नहीं कर सकता था। उन्होंने तथापि, हमें निस्संदेह, अकेला छोड़ दिया– क्योंकि हम इतने थके हुए और मरियल दिखाई देते थे। कई समय हैं, जब दिखने वाली गरीबी ने अपना लाभ प्रदान किया।

पॉच दिन की पैदल यात्रा के बाद, हम प्रसिद्ध तासम (Tasam) रोड पर पहुॅचे। हमने हर बार ये कल्पना की थी कि ये एक नियमित उच्चपथ होगा, जिस पर एक बार पहुॅचे तो यह, हमारी यात्रा के सारे कष्टों को दूर

करते हुए, अंत तक ले जायेगा। हमारी निराशा का अनुमान लगायें, जब हम एक पगडण्डी तक का रास्ता भी नहीं ढूंढ सकते थे! देहात किसी भी प्रकार से, उससे, जिसमें हो कर हम हफ्तों तक घूमते रहे थे, अलग नहीं था। ये सत्य है, कि वहॉ कुछ खाली तंबू थे, जिन पर काफिले रुक सकते थे, परंतु व्यवस्थित रास्ते के, कोई दूसरे चिन्ह नहीं थे।

अंतिम चरण के लिये, दो दबंग औरतों ने हमारा साथ दिया, जिन्होंने एक मर्मस्पर्शी विदाई के बाद, हमको तासम की सड़क पर, दूसरों को दे दिया। हमने अपने आपको, खाली तंबुओं में से एक में टिकाया और आग को जलाया, इसके बाद हमने अपनी स्थिति का जायजा लिया। हमारे पास, वास्तव में, संतुष्टि के कुछ आधार थे। हमारी यात्रा का सबसे अधिक मुश्किल भाग, हमारे पीछे छूटा पड़ा था, और अब हम एक चलते हुए रास्ते पर थे, जो सीधा ल्हासा को जाता था, आगे केवल पन्द्रह दिन की पैदल यात्रा थी। इस जानकारी के साथ कि हम अपने लक्ष्य के इतने समीप थे, हमसे खुश होने की अपेक्षा की जाती थी परंतु, एक तथ्य के रूप में, हमारी भयानक थकानों ने हमको इस हद तक नीचे दबा दिया था कि हम आनन्द लेने के योग्य भी नहीं थे। बर्फ के जख्म, और धन और खाने का अभाव, हमने आशंका को छोड़ कर कुछ भी अनुभव नहीं किया। हमने अपने पशुओं के बारे में सबसे अधिक चिंता की। मेरा बफादार कुत्ता, अब हाड़मांस का पुतला रह गया था। हमारे पास मुश्किल से ही, अपने आपको जिंदा रखने भर के लिये खाना था और हम उसके लिए, केवल बहुत थोड़ा सा ही निकाल सकते थे। उसके पैर इतनी भयानक स्थिति में थे कि वह हमारे साथ नहीं चल सकता था, और अक्सर उसके आने के पहले, हमें घंटों तक शिविर में इंतजार करना पड़ता था। याक का दर्द, कुछ हक तक ठीक था। उसके लिये हफ्तों तक, चरने के लिए पर्याप्त घास नहीं थी और वह भयानक रूप से कमजोर हो गया था। ये सत्य है कि योचाब्त्सो झील को छोड़ने के बाद, हमने बर्फ को अपने पीछे छोड़ दिया था, परंतु घास बहुत कम और सूखी थी, और चरने के लिए समय थोड़ा ही था।

वैसे ही, अगले दिन हमें आगे जाना पड़ा; और इस तथ्य ने कि, अब हम काफिले के मार्ग पर थे, और अब हमें मार्को पोलोओं (Marco Polos) की भॉति अज्ञात में, स्वयं के सम्बंध में विचार नहीं करना पड़ा, हमारे मनोबल को बढ़ा दिया था।

तासाम के रास्ते पर हमारा पहला दिन, वीरान देहात में यात्रा के चरण से, थोड़ा सा ही भिन्न था। हमें कोई आत्मा नहीं मिली। बर्फ को आगे चलाते हुए एक क्रोधित तूफान, और कुहरे के गुब्बारों ने, हमारी यात्रा को नर्क बना दिया। सौभाग्यवश, तूफान हमारे पीछे था और हमें आगे धकेल रहा था। यदि ये हमारे सामने होता, हम एक कदम आगे नहीं बढ़ा सकते थे। शाम को, जब हमने सड़क के किनारे के तंबुओं को देखा, हम चारों बहुत प्रसन्न थे। उस रात को, मैंने अपनी डायरी में ये टिप्पिणी लिखी : दिसम्बर 3, 1945। धुंध के साथ भारी बर्फीला तूफान–पहला धुंध, जो हमें तिब्बत में मिला। तापक्रम : लगभग –तीस डिग्री। आज की तारीख तक, अपनी यात्रा का सबसे अधिक थका देनेवाला दिन। याक का भार फिसलता रहा, और हम, लगभग जमे हुए हाथों से, उसे व्यवस्थित करते रहे। एक बार रास्ता भूले और हमें दो मील पीछे लौटना पड़ा। शाम के करीब, रास्ते के पड़ाव न्यात्सांग (Nyatsang) पर पहुँचे। आठ तंबू। एक तंबू, पथ के अधिकारी और उसके परिवार द्वारा घेर लिया गया। (हमारा) स्वागत अच्छी तरह किया गया।

इस प्रकार, तिब्बत में, ये हमारे नये साल की, दूसरी पूर्व संध्या थी। इस पूरे समय में, जो हमने पाया था, उसके सम्बंध में सोचते हुए, किसी को हताश कर दिया। हम अभी भी ''अवैध'' यात्री थे–दो फटीचर, आधे भूखे, घुमक्कड़, अधिकारियों को धोखा देने के लिए मजबूर, अभी भी, एक स्वप्निल उद्देश्य–वर्जित शहर, जो हमें प्राप्ति योग्य नहीं दिखा, से बंधे हुए। ऐसी एक रात को, किसी के विचार, एक भावुक दिशा में, पीछे की ओर, परिवार की ओर, मुड़ जाते हैं। परंतु, ऐसे स्वप्न, हमको जीवित बनाये रखने के संघर्ष की कठोर सत्यता, जिसे हमारी पूरी शारीरिक और आध्यात्मिक शक्ति की आवश्यकता थी, से विचलित नहीं कर सके। यदि, हमारे घरों की सुरक्षा में, हमको नए साल के उपहार के रूप में, एक दौड़ने वाली कार दी गई होती, तो उसकी तुलना में, गर्म तंबू में एक शाम, हमारे लिये अधिक महत्वपूर्ण थी।

इस प्रकार, हमने सेंट सिलवेस्टर का दिन (St. Sylvester's day), अपने खुद के ढंग से मनाया। अपने आपको सामान्य बनाने के लिये, और अपने जानवरों को एक दिन का आराम देने के लिये, हम यहॉ कुछ लंबे समय तक रुकना चाहते थे। हमारे 'यात्रा के पुराने कागजों ने' यहॉ भी, इस काम को किया, सड़क का अधिकारी मित्रवत् था और उसने, हमको पानी और ईंधन भेजते हुए, अपने सेवकों को हमारे विवेकानुसार काम पर लगा

दिया।

हमने इसे आसानी से लिया और विलम्ब से सोये। जब हम, दोपहर से थोड़ा पहले, कुछ नाश्ता कर रहे थे, तंबुओं के सामने कुछ खलबली हुई। लोमड़ी की खाल के टोप को पहने हुए, बोन्पो का एक रसोइया, अपने मालिक के आने, और उसके लिये तैयारी करने की घोषणा करने के लिये वहॉ पहुँचा। वह आसपास दौड़ा और उसने अपने भार को ठीक तरह से उतारा।

एक उच्चअधिकारी का पहुँचना, हमारे लिये महत्वपूर्ण हो सकता था, परंतु हम, ये जानने के लिये कि ''उच्च अधिकारी'' की पदवी, एक आपेक्षिक विचार है, काफी लंबे समय से एशिया में थे। क्षण भर के लिये हमने अपने आपको उत्तेजित नहीं किया। परंतु चीजें ठीक होती गईं। सेवकों की भीड़ से घिरा हुआ, घोड़े की पीठ पर सबार, बोन्पो, शीघ्र ही आ पहुँचा। वह शासन की सेवा में, एक व्यापारी था और वर्तमान में, कई सैकड़ा चीनी के भारों, और कपास को ल्हासा लाने में व्यस्त था। हमारे बारे में सुन कर, स्वाभाविक रूप से, उसने हमसे प्रश्न पूछने चाहे। एक अच्छा प्रभाव दिखाते हुए मैंने अपने यात्रा के कागजात उसे दिये, जिसका सामान्य प्रभाव अच्छा पड़ा। और अधिक कठोर अधिकारी की भॉति भूमिका अदा नहीं करते हुए, उसने हमें अपने काफिले के साथ यात्रा करने के लिये आमंत्रित किया। ये अच्छा दिखाई दिया, चूँकि काफिला शाम को ही चलने वाला था, इसलिए हमने अपने विश्राम के दिन को छोड़ दिया और अपने सामानों को बांधना शुरू किया। चालकों में से एक ने, जब उसने एक वास्तविक हड्डियों के ढांचे, आरमीन को देखा, अपना सिर हिलाया और तासाम के एक याक के ऊपर हमारे सामान को लादने के लिये, अंतिम रूप से एक छोटी राशि का प्रस्ताव किया और हमारे पशु को, हमारे साथ खाली चलने दिया। हम खुशी से इसके लिये राजी हुए। तब जल्दी से हमने यात्रा प्रारम्भ की। हमें काफिले के साथ पैदल चलना पड़ा, जबकि बोन्पो और उसके सेवक, जिन्होंने कई चरणों में अपने घोड़ों को बदल लिया था, बाद में शुरू हुए। उन्होंने काफी लम्बे जाने से पहले ही हमको पकड़ लिया।

अपने विश्राम के दिन को छोड़ देना, और बारह मील लंबी एक यात्रा पर पैदल चल देना, ये एक त्याग था। हमारे साथ चलने के लिये, मेरा बेचारा कुत्ता भी बहुत अधिक थका हुआ था इसलिये मैंने उसे आबादी में पीछे ही छोड़ दिया, जो उसके लिये, सड़क पर मर जाने की तुलना में, अच्छा था।

काफिले के साथ चलते हुए, हमने हर दिन लंबी दूरियॉ तय की। हम बोन्पो के संरक्षण से लाभान्वित हुये और हमारा हर जगह अच्छी तरह स्वागत किया गया। ये केवल ल्होलाम (Lholam) पर था कि सड़क के अधिकारी ने, हमारे ऊपर सन्देह किया। उसने हमको ईंधन भी नहीं दिया और ल्हासा जाने के अपने परमिट को दिखाने के लिये जोर डाला। दुर्भाग्यवश, हम उसे आभारित (oblige) नहीं कर सके। तथापि, हमारे ऊपर एक छत थी और हमें इसके ऊपर प्रसन्न होना था, क्योंकि हमारे पहुँचने के बाद, शीघ्र ही, संदेहयुक्त दिखने वाले सभी प्रकार के चरित्र, तम्बुओं के आसपास जुड़ने लगे थे। हमने उन्हें तुरंत ही, खंपाओं के रूप में पहचान लिया परंतु, हम इतने अधिक थके हुये थे कि हम उनके सम्बंध में परेशान भी नहीं हो सके और स्थिति का सामना करने के लिये, हमने अपने शेष दल को छोड़ दिया। कम से कम हमारे पास, चुराने लायक कोई चीज नहीं थी। उनमें से कुछ ने, हमारे टेन्ट में आने का प्रयास किया, परंतु हम उनके ऊपर जोर से चीखे चिल्लाये और वे भाग गये।

अगले दिन सुबह, हमारे याक हमसे बिछुड़ गये। रात से पहले, हमने उसे रस्सी से बांधा था और सोचा था कि वह कहीं आसपास चर रहा होगा, परंतु आउफस्नाइटर और मैं, कहीं उसका अतापता नहीं पा सके। बदमाश, जो एक रात पहले तक वहॉ था, वह भी गायब हो गया था, और इस प्रकार दोनों के बीच का संबंध स्पष्ट था। हमारे लिये, याक का खो जाना, एक गम्भीर झटका था, और ये कहते हुए कि जानवर के खो जाने के लिए वह जिम्मेदार था, हम तसाम अधिकारी के टेन्ट में घुस पड़े और मैंने अपने गुस्से में, उसकी काठी (packsaddle) और उसके कपड़े, उसके पैरों में फैंक दिये। हम आरमीन–5 से बहुत अधिक जुड़ चुके थे, केवल वही एक याक था, जिसने हमें भली भॉति सेवा दी थी, परंतु हमारे पास इस नुकसान पर शोक मनाने के लिए समय नहीं था। हमें काफिले को पकड़ना था, जो कुछ घंटे पहले, हमारे सामान के साथ आगे निकल चुका था।

हम पहले से ही, कई दिनों तक, पर्वतों की बड़ी श्रंखला की तरफ, पैदल चलते रहे थे। हम जानते थे कि वे न्येनशेन थांग ला (Nyenchen thang la) की पहाड़ियॉ थीं। उनमें हो कर केवल एक ही रास्ता था और वह एक दर्रा था, जो सीधा ल्हासा को ले जाता था। पर्वतों की तरफ अपने रास्ते पर, हम निचली पहाड़ियों में हो कर गुजरे। देहात पूरी तरह वीरान था, और हमने जंगली गधों तक को भी नहीं देखा। मौसम अच्छी तरह साफ हो गया था, और दृश्यता इतनी अच्छी थी कि, हम छैः मील दूर पर, अपने अगले रुकने के स्थान को भी देख सकते

थे, जो हमारे ठीक सामने ही जैसा ही दिखाई देता था।

अगला पड़ाव, एक स्थान जिसे तोकर (Tokar) कहा जाता था, पर था। यहॉ से हमने पहाड़ों में चढ़ाई प्रारम्भ की, और अगला नियमित पड़ाव पॉच दिन बाद था। हम ये सोचने का दुस्साहस नहीं कर सके कि तब तक हम कैसे जारी रख सकते थे। किसी भी तरह, हमने वह किया, जो हम अपनी शक्ति को बनाये रखने के लिये कर सकते थे और हमने अपने आप को जिंदा बनाये रखने के लिये पर्याप्त मात्रा में मांस खरीदा।

दिन अंतहीन दिखाई दिये और रातें और ज्यादा लंबी थीं। हमने असंभाव्य (impossibly) सुन्दर भूदृश्य में हो कर यात्रा की और दुनियॉ की सबसे बड़ी झीलों में से एक–नाम त्सो (Nam Tso) या टेंगरी नॉर (Tengri Nor) पर आये। परंतु हमने मुश्किल से ही इसकी तरफ देखा, यद्यपि हमने, इस जोरदार देशी समुद्र को देखने के लिये इसके आगे बहुत दूरी तक देखा। एक बार की लम्बी–चूँकि हमारी निष्ठुरता के आगे दृष्टि नहीं हिल सकती थी, विरली हवा वाली चढ़ाई ने हमें लगभग अस्वस्थ बना दिया था, और आने वाली लगभग बीस हजार फुट की ऊँचाई वाली चढ़ाई, हमको लकवाग्रस्त बना रही थी। हमने आश्चर्य के साथ, समय–समय पर, और भी अधिक ऊँची चोटियों को देखा, जो हमारे रास्ते से दिखाई देती थीं। अंत में, हम अपने दर्रे की चोटी, गूरिंग ला (Guring la), पर पहुँचे। हमसे पहले, इस दर्रे से केवल एक यूरोपियन गुजरा था। ये एक अंग्रेज–लिटिलडेल (Littledale) था, जो यहॉ 1895 में आया था। स्वेन हेडिन ने इसे (दर्रे को) लगभग बीस हजार फुट ऊँचा होने का अनुमान लगाया था और इसको हिमालय के आसपड़ौस के क्षेत्र में, सबसे ऊँचा दर्रा बताया था। मेरा ख्याल है कि मैं ये कहने में ठीक हूँ कि, ये दुनियॉ का सबसे ऊँचा दर्रा है, जो पूरे वर्ष भर, गुजरने योग्य रहता है।

यहॉ हमें, फिर से, विशेष प्रकार के टीले और उनके ऊपर लहराते हुए चमकदार रंगों के, जो अभी तक मैंने देखे थे, प्रार्थनाध्वज मिले। उनके पास में, पत्थरों की मेजों की एक पंक्ति थी, जिन पर खोद कर, प्रार्थनायें लिखी गई थीं–आनन्द की कभी नष्ट न होने वाली अभिव्यक्ति, जो हजारों तीर्थयात्रियों के द्वारा अनुभव किया गया जब, अपने लम्बे और थका देने वाली पैदल यात्रा के द्वारा, उन्होंने पवित्रतम शहरों की ओर जाने वाली सड़क के लिये, इस दर्रे का रास्ता देखा।

यहॉ, भी, हम अपने दूर स्थित घरों की ओर लौटते हुए तीर्थयात्रियों की आश्चर्यजनक भीड़ से मिले। सड़क पर अक्सर, समय से सम्मानित प्रार्थनाओं के सूत्र, ''ओम मनी पद्मे हुम,'' के शब्दों की गूंज उठती थी, जिसे सभी बौद्ध लोग उपयोग में लाते हैं और तीर्थयात्री, ये आशा करते हुए कि यह, उससे उनकी रक्षा करेगी, जिसका उन्हें विश्वास है कि यह जहरीली गैस है और हम जानते थे कि यह ऑक्सीजन की कमी है, दूसरी चीजों के साथ साथ, अपने मन में असीम रूप से गुनगुनाते रहते हैं। वे अपने मुँह को बंद रखना अच्छा समझते थे! समय–समय पर, हमने सड़क की खतरनाक प्रकृति के गवाह बनते हुए, अपने नीचे, ढ़ाल पर, जानवरों के कंकाल देखे। हमारे चालक ने हमको बताया कि लगभग हर सर्दियों में तीर्थयात्री अपने प्राणों को, इस पर्वत श्रृंखला को पार करने में, बर्फीले तूफानों में, गंवा देते थे। हमने अच्छे मौसम के लिये भगवान को धन्यवाद दिया, जिसने सात हजार फुट की अपनी चढ़ाई के दौरान, हमारा पक्ष लिया था।

हमारी उतराई का प्रथम भाग, हमें एक हिमनद के ऊपर ले गया। हमारे पास, इस असामान्य चीज पर आश्चर्य करने का एक नया कारण था, बर्फ के बीच अपना रास्ता तलाशने की याकों की निश्चित पैदल चाल। जैसे ही हम चूक जाते और मैं अपने आपको ये सोचते हुए मदद नहीं कर पाता था कि इन चिकनी, बिना दरार वाली सतहों पर, स्काई पर फिसलना, कितना आसान होगा। मैं समझता हूँ कि आउफस्नाइटर और मैं ही केवल वे लोग थे, जिन्होंने ल्हासा की तीर्थयात्रियों वाली सड़क पर बर्फ पर फिसलने के संबंध में बात की थी।

जब हम साथ–साथ चल रहे थे, एक नौजवान जोड़ा आकर हमसे मिला। वे लम्बी दूरी से आये थे, और हमारी तरह, ल्हासा जा रहे थे। वे काफिले के साथ मिलकर प्रसन्न थे और हम उनके साथ वार्तालाप में सम्मिलित हुए। उनकी कहानी उल्लेखनीय थी।

अपने गुलाबी गालों और मोटी काली चोटी वाली, ये सुन्दर नौजवान औरत, अपने तीन पतियों के साथ प्रसन्नतापूर्वक और संतुष्टि के साथ रह रही थी। वे तीनों भाई थे–जिनके साथ वह चांगतांग में नोमाड के तंबू में एक घर बनाए हुए थी। एक शाम को एक नौजवान अजनवी आया और उसने टिकने के लिए कहा। उस समय के बाद से, हर चीज बदल गई। निश्चितरूप से ये, ''पहली ही दृष्टि में प्रेम'' इस प्रसिद्ध प्रकार का मामला रहा होगा। नौजवान लोगों ने बिना कुछ शब्द कहे हुए, एक दूसरे को समझा और अगले दिन सुबह साथ–साथ भाग गये। ठण्डे पठार के ऊपर भागते हुए, उन्होंने कोई चिन्ह नहीं छोड़े। अब वे यहॉ पहुँचकर प्रसन्न थे, और ल्हासा

में, अपना जीवन नये तरीके से शुरू करना चाहते थे।

मैं इस नौजवान औरत को, उन कठोर और भारी दिनों में, एक चमकीली धूप के रूप में याद करता हूँ। एक बार जब हम आराम कर रहे थे, उसने अपना बटुआ निकाला और मुस्कुराते हुए, हम में से हर एक को, एक सूखी खुरमानी दे दी। ये साधारण सा उपहार, हमारे लिए उतना ही मूल्यवान था, जितनी कि सफेद रोटी, जो क्रिसमस की रात को नोमाड ने हमको दी थी।

अपनी यात्रा के चरण में, मैंने महसूस किया कि तिब्बती औरतें, कितनी मजबूत और सहनशील होती हैं। ये विशिष्ट नौजवान महिला, सरलतापूर्वक हमारे साथ रही और आदमी के साथ–साथ अपने सामान को ढ़ोया। उसे अपने भविष्य के बारे में चिन्ता करने की आवश्कता नहीं थी। ल्हासा में वह, दैनिक मजदूरी करने वाले नौकर के रूप में कहीं काम कर लेगी और मजबूत देहाती–लड़की के स्वास्थ्य होने के साथ, आसानी से अपनी जीविका कमा लेगी।

हम, तम्बुओं में बिना जाये, अगले तीन दिनों तक लगातार चलते रहे। तब हमने काफी दूरी पर, धुंए का एक बड़ा स्तम्भ आकाश में उठता हुआ देखा। हमें आश्चर्य हुआ कि क्या वह एक चिमनी से आ रहा है या एक जलते हुए घर से, परंतु जब हम पास पहुँचे हमने देखा कि यह एक गर्म झरने में से उठती हुई भाप थी। हम जल्दी ही एक महान प्राकृतिक सौन्दर्य के दृश्य पर घूर रहे थे। जमीन में से काफी संख्या में झरने फूट रहे थे, और भाप के बादलों के बीच में, पन्द्रह फुट ऊँचा, भव्य, छोटा गीजर (geyser) फूट पड़ता था। पद्य के बाद गद्य! हमारा अगला विचार, उसमें नहाने का था। हमारे नौजवान जोड़े ने इसका अनुमोदन नहीं किया, परंतु ये हमको रोक नहीं सका। पानी, जब वह जमीन से बाहर आता, उबल रहा था परंतु, ठण्डी कोहरे भरी हवा के द्वारा ये शीघ्र ही, सहने करने योग्य ताप तक ठण्डा हो जाता। हम जल्दी से, इसके आनन्द! के साथ, एक सुखदायक नहाने के टब, एक तालाब की ओर मुड़े। चूँकि हमने गर्म झरनों को क्यिरोंग में छोड़ दिया था, हम अभी तक नहाने या धोने में सफल नहीं हो पाये थे, और हमारे बाल और दाढ़ियॉ जम कर कड़ी हो गई थीं। नाले में, जो गर्म झरने से फूट कर बाहर निकलता था, वहॉ बड़े आकार की बहुत सारी मछलियॉ थीं। भूख से व्याकुल हमने, आपस में बहस की कि उन्हें कैसे पकड़ा जाये–हम उन्हें झरने में, पर्याप्त आसानी से उबाल सकते थे–परंतु हमें कोई तरीका नहीं मिला और इस प्रकार, काफी तरोताजा हो कर, हमने काफिले को पकड़ने के लिये जल्दी की।

हमने अपनी रात, याक के चालकों के साथ, उनके तम्बुओं में गुजारी। वहॉ, अपने जीवन में पहली बार, मुझे स्याटिका (sciatica) का बुरा दौरा पड़ा। मैं इसे हमेशा, बुढ़ापे की खराबी के कष्टदायक शिकायत के रूप में, समझता था और कभी मैंने सपने में भी नहीं सोचा था कि मुझे इतनी जल्दी, इसके साथ पहचान बनानी पड़ेगी। मैंने ऐसा अनुमान किया कि शायद, ये हर रात को जमीन पर सोने का परिणाम था।

एक सुबह मैं जग नहीं सका। भयानक दर्द से पीड़ित होने के अलावा, मैं इस विचार से जम गया था कि मैं आगे नहीं चल पाऊँगा। मैंने अपने दांत भींच लिये और अपने आपको पैरों के ऊपर उठा दिया और थोड़े से कदम चले। इस गति ने मेरी मदद की, परंतु, उस समय से आगे तक, हर दिन अपनी पैदल यात्रा के शुरू के कुछ मीलों की अवधि में, मैं काफी अधिक परेशान हुआ।

चौथे दिन की शाम को, दर्रे को पार करने के बाद, हम सामसार (Samsar), जहॉ सड़क पर पड़ाव था, पहुँचे। अन्त में हम, मठ और एक किले सहित, बने हुए घरों वाले, एक आबाद स्थान में पहुँचे। ये तिब्बत के अत्यधिक महत्वपूर्ण सड़कों के चौराहों में से एक है। यहॉ पॉच रास्ते आकर मिलते हैं, और यहॉ काफिलों का आना–जाना जीवन्त बना रहता है। सड़क के मकान भीड़ भरे रहते हैं, और जानवरों को विश्राम देते हुए, उन्हें अस्तबलों में से बदला जाता है। हमारा बोन्पो पॉच दिन पहले से ही यहॉ था, परंतु यद्यपि, वह एक शासकीय कार्य से जा रहा था उसे यहॉ नये याकों के लिये पॉच दिन इंतजार करना पड़ा। उसने हमारे लिये एक कमरा, ईंधन, और एक नौकर दिया। एक क्षण के लिये, परिवहन काफी तेज था और कहने के लिये, एक लम्बी प्रतीक्षा के लिये, हमें अपना मन बनाना पड़ा क्योंकि, हम अकेले नहीं जा सकते थे।

हमने अपने एक दिन के इस फालतू समय का, कुछ गर्म झरनों पर, जो हमने दूरी पर भाप निकालते हुए देखे थे, बाहरी मौजमस्ती में उपयोग किया। ये एक अद्वितीय प्राकृतिक घटना दिखाई दी। हम एक नियमित झील पर आये, जिसका काले बुलबुले देता हुआ पानी, एक साफ नाले के रूप में बह कर जा रहा था। वास्तव में, हमने नहाने का निश्चय किया, और एक स्थान पर, जहॉ ये सुविधाजनक रूप से गर्म था, पानी में उतर गये। चूँकि हम झील की तरफ, उल्टे चल रहे थे, यह गर्म और अधिक गर्म होता जा रहा था। आउफस्नाइटर ने पहले हथियार

डाल दिये, परंतु यह आशा करते हुए कि गर्मी मेरे स्याटिका के लिये अच्छी होगी, मैं चलता रहा। मैंने गर्म पानी में लोटें लगायीं। मैं अपने साथ, क्यिरोंग से साबुन का अपना अंतिम नग लाया था, और मैंने उसे भरपूर साबुन के नहाने के अपने चरम आकर्षण के रूप में आगे देखते हुए, अपने बगल से किनारे के स्थान पर रख दिया। दुर्भाग्यवश, मैं ये नहीं देख पाया कि एक कौआ मुझे दिलचस्पी के साथ देख रहा था। उसने अचानक ही नीचे डुबकी लगाई और मेरे खजाने को ले उड़ा। मैं एक कसम खाते हुए, किनारे के ऊपर उछल पड़ा, परंतु एक क्षण में वापस गर्म पानी में आ गया, मेरे दांत ठण्ड से बज रहे थे। तिब्बत में, कौए उतने ही चोर होते हैं, जितने कि हमारे यहॉ नीलकंठ पक्षी (Magpie)।

अपने वापसी रास्ते पर, हमने पहली बार, एक तिब्बती टुकड़ी–पॉच सौ सैनिकों, को अभ्यास करते हुए देखा। चूॅकि सैनिकों को, जो कुछ वे चाहते हैं, उसे प्राप्त करने का अधिकार होता है, इसलिये आबादी, इन सैनिक अभ्यासों के प्रति, उतनी उद्यमशील नहीं हैं। वे अपने अपने तंबुओं में रुकते हैं, जो बहुत व्यवस्थित ढंग से गाडे जाते हैं, और इस प्रकार वहॉ फौज को घर नहीं देने होते हैं, परंतु स्थानीय लोगों को, उन्हें यातायात के साधन और चढ़ने वाले घोड़े प्रदान करने पड़ते हैं।

जब हम रुकने के स्थान पर वापस आये, एक आश्चर्य हमारी प्रतीक्षा कर रहा था। उन्होंने हमें, कमरे का एक साथी दिया, जो अपने घुटनों पर एक बेड़ी पहनता था और वह बहुत छोटे कदम ही ले सकता था। उसने मुस्कराते हुए हमें बताया, और मानो कि ये एक पूरी तरह सामान्य चीज हो, कि वह एक हत्यारा और लुटेरा था और पहले उसको दौ सौ कोड़े खाने पड़े और उसके बाद शेष जीवन के लिये बेड़ियॉ पहननी पड़ीं। इसने मेरे मांस (शरीर) में सिहरन पैदा कर दी। क्या हमको पहले से ही, हत्यारों के रूप में वर्गीकृत किया गया था, तथापि, हमने शीघ्र ही ये जाना कि, तिब्बत में एक सजायाफ्ता अपराधी को आवश्यक रूप से नीची निगाह से नहीं देखा जाता है। हमारे इस आदमी को किसी प्रकार का सामाजिक नुकसान नहीं था; वह हर एक के साथ वार्तालाप में शामिल होता था और भिक्षा पर जीवित रहता था और वह बुरी तरह नहीं रहता था।

आसपास ये बात फैल गई थी कि हम यूरोपियन थे और उत्सुक लोग हमेशा हमको देखने के लिये आते रहते थे। इनमें एक सुन्दर नौजवान भिक्षु भी था, जो ड्रेबुंग के मठ के लिए कुछ सामान ला रहा था और अगले दिन उसे छुट्टी मिलने वाली थी। जब उसने सुना कि हमारे पास केवल सामान का एक भार है, और हम अपनी यात्रा को जारी रखने के अत्यधिक उत्सुक थे, उसने अपने काफिले में से, एक याक को हमें देने का प्रस्ताव किया। उसने हमारी यात्रा के परमिट के संबंध में कोई प्रश्न नहीं पूछे। जैसे कि हमने पहले ही जान लिया था कि, जैसे–जैसे हम राजधानी के पास आते जाते हैं, हमारे कष्ट उतने ही कम हो जाते हैं–तर्क ये था कि विदेशी, जो पहले ही तिब्बत में अंदर इतनी यात्रा कर चुके हैं, निश्चितरूप से उनके पास एक परमिट होना ही चाहिए। फिर भी, हमने एक स्थान में बहुत अधिक लम्बे समय तक नहीं रुकने का सोचा, ताकि हम अनावश्यक उत्सुकता को आमंत्रित न करें।

हमने भिक्षु के प्रस्ताव को तत्काल ही स्वीकार कर लिया और अनेक आभार प्रदर्शनों के द्वारा, अपने बोन्पो को विदाई दी। आधी रात के बहुत अधिक देर बाद नहीं, हमने एकदम अंधेरे में चलना प्रारम्भ किया। यांगपाशेन (Yangpachen) के जिले को पार करने के बाद, हम एक घाटी में प्रविष्ट हुए, जो ल्हासा के पठार पर जा कर निकालती थी।

ल्हासा के इतने पास! नाम ने ही हमको रोमांच दे दिया था। अपनी कष्टपूर्ण पैदल यात्रा और ठण्ड भरी बर्फीली रातों में, हम इस पर चुपके थे और हमने इससे नई शक्ति प्राप्त की थी। अत्यधिक दूरी के प्रान्त से आने वाला कोई भी तीर्थयात्री, पवित्र शहर में आने की, जितनी हमने की उससे अधिक जिज्ञासा नहीं कर सकता था। हम स्वेन हेडिन की तुलना में, पहले से ही ल्हासा के काफी निकट आ चुके थे। उसने इस क्षेत्र से, जिसमें हो कर हम आ चुके थे, गुजरने के दो प्रयास किये थे, परंतु हमेशा चांगतांग में, न्येनशेन थंग ला के ढलान द्वारा रोक दिया गया था। हम दोनों बेचारे घुमक्कड़, स्वाभाविक रूप से, उसके काफिले की तुलना में, कम विख्यात थे और कपटपूर्ण चालवाजियों, जिन्हें उपयोग करने के लिये हमें मजबूर होना पड़ा, के अतिरिक्त, तिब्बती भाषा की जानकारी, हमें मददगार थी; इसलिये कुछ चीजें हमारे पक्ष में थीं।

अगली सुबह, जल्दी ही, हम अगले स्थान, देशेन (Dechen), जहॉ हमें अपना दिन गुजारना था, में पहुॅचे। हमें ये विचार अच्छा नहीं लगा। वहॉ दो जिला अधिकारी रहते थे, और हम उनसे ये आशा नहीं करते थे कि वे हमारे यात्रा के प्रपत्र नहीं मांगेंगे।

हमारा मित्र, भिक्षु अभी तक नहीं पहुँचा था। वह अपने आपको एक रात की ठीक नींद लेने में सफल रहा था, और चूँकि वह घोड़े पर सवार हो कर आया, निस्संदेह, उसने उस समय के करीब चलना शुरू किया होगा, जब हम देशेन में पहुँचे।

हमने सावधानीपूर्वक, रुकने की एक जगह तलाशना शुरू किया और एक आश्चर्यजनक अवसर, हमको मिल गया। हमने एक जवान लेफ्टिनेट के साथ पहचान बनाई और चूँकि उसे दोपहर के करीब छोड़ना था, उसने हम पर कृपा करते हुए, अपने कमरे का प्रस्ताव दिया। वह सैनिक सेवाऐं दिये जाने के एवज में भुगतान करने के लिए, आसपड़ोस में चंदे का पैसा इकट्ठा कर रहा था। हमने उससे पूछने का साहस किया कि क्या वह हमारे सामान को अपने काफिले में नहीं ले जा सकता। वास्तव में, हम इसके लिए भुगतान करेंगे। वह तुरंत राजी हो गया, और कुछ घंटों बाद, हम हल्के मन से, काफिले के पीछे, गॉव से बाहर चल रहे थे।

हमारा संतोष अपरिपक्व था। ज्यों ही हम अंतिम मकानों के पास से गुजरे, कोई हमसे मिलने आया, और जब हम पीछे मुड़े, हमने अपने आपको, एक खास रूप से दिखने वाले भद्रपुरुष को, महँगी रेशमी पोशाक में देखा। वह बिना गलती किये हुए, बोन्पो था। उसने नम्रता से, परंतु अधिकार के स्वर में पूछा कि हम कहॉ से आये थे और हम कहॉ जा रहे थे। केवल हाजिर जवाबी ने हमको बचाया। झुकते हुए और गुटकते हुए, हमने कहा हम थोड़ा टहलने के लिये जा रहे थे और अपने कागज पीछे छोड़ आये थे। वापस लौटने पर हम अपने आपको सौंप देंगे, उसकी हाजिरी में प्रतीक्षा का आनन्द। चाल सफल हुई, और हम बाहर निकल गए।

हमने अपने आपको, झरनों के दृश्यों के बीच चलता हुआ पाया। जैसे जैसे हम चलते जा रहे थे, चारागाह की जमीन हरी होती जा रही थी। खेती वाले स्थान में चिड़ियॉ चहक रही थीं, और भेड़ की खाल के अपने लवादे में, हमने अपने आपको काफी गर्म महसूस किया, यद्यपि ये अभी केवल जनवरी का मध्य था।

ल्हासा, केवल तीन दिन दूर था। पूरे दिन आउफस्नाइटर और मैं अकेले भटकते रहे और हमने केवल शाम को ही लेफ्टिनेट और उसके छोटे काफिले को पकड़ लिया। इस क्षेत्र में, यातायात के लिये–गधे, घोड़े, गाय, और बैल, सभी प्रकार के जानवर काम में लाये जाते थे। चूँकि किसानों के पास, उनके झुण्डों को चराने के लिये, काफी चारागाह नहीं थे, कोई केवल काफिले में ही, याकों को देख सकता था। हमने हर जगह, गॉव वालों को अपने खेतों की सिंचाई करते हुए देखा। बसन्ती तूफान बाद में आयेंगे, और यदि मिट्टी अधिक, अत्यधिक सूख जाये, तो वह धूल के रूप में उड़ा दी जायेगी। लगातार पानी देने के बाद, जमीन को उपजाऊ बनाने में, अक्सर पीढ़ियॉ की पीढ़ियॉ खत्म हो जाती हैं। सर्दियों के बीजों को बचाने के लिए, यहॉ अत्यन्त कम बर्फ होती है और किसान, एक फसल से, ज्यादा नहीं उगा सकते और स्वाभाविक रूप से, खेती के ऊपर ऊँचाई का प्रभाव अधिक है। सोलह हजार फुट ऊपर, केवल जौ फल सकता है और आधे किसान नोमाड हैं। कुछ क्षेत्रों में, जौ साठ दिन में पक जाता है, और समुद्रतल से बारह हजार फुट ऊँची, तोलूंग (Tolung) घाटी में, जिसमें हो कर अब हम गुजर रहे थे, यहॉ पर वे, जड़ें, आलू, और सरसों उगाते हैं।

हमने ल्हासा आने से पहले, एक रात किसान के घर में गुजारी। वहॉ आकर्षक जैसा कुछ नहीं था, क्यिरोंग की तरह से अच्छी शैली वाले मकान। इन भागों में, लकड़ी बहुत कम है। छोटी मेजों और लकड़ी के पलंगों, के अपवाद के अलावा, यहॉ विशेषरूप से, कोई फर्नीचर नहीं होता। घर, गारे और ईंटों से बनाये जाते हैं, उनमें कोई खिड़कियॉ नहीं होती; प्रकाश केवल दरवाजे और छत में बने हुए धुंए के छिद्र में से हो कर आ सकता है।

हमारे मेजबान, खाते–पीते किसान परिवार के थे। जैसा कि सामंतवादी व्यवस्था के समाज में हो सकता है, किसान अपने मालिक की सम्पत्ति की देखभाल करते हैं और उन्हें बाद वालों (मालिकों) के लिये, अपना मुनाफा खुद निकालने से पहले, इतना पैदा कर लेना चाहिए। हमारे मेजबान परिवार में तीन लड़के थे, जिनमें से दो, सम्पत्ति पर काम करते थे, जबकि तीसरा, एक भिक्षु होने की तैयारी कर रहा था। परिवार में गायें, घोड़े, कुछ थोड़ी चिड़ियाऐं और सुअर–जो मैंने पहली बार तिब्बत में देखे, थे। इनको खाना नहीं खिलाया जाता है परंतु ये मल अथवा विष्टा या जो कुछ भी वे खेतों में से उखाड़ सकें, के ऊपर जीवित रहते हैं।

हमने, अगले दिन के बारे में सोचते हुए, जो हमारे भविष्य को तय करेगा, बेचैनी की एक रात काटी। अब सबसे बड़ा प्रश्न सामने आयाः यद्यपि मानो कि हमने अपने आपकी, शहर में तस्करी करने की व्यवस्था कर ली थी, क्या हम वहॉ रुकने के काबिल होंगे ? हमारे पास कोई धन नहीं बचा था। तब, हम कैसे, जिंदा रहने वाले हैं ? और हमारा दिखावा! हम यूरोपियनों की तुलना में, चांगतांग के रहने वाले डकैत अधिक दिखते थे। अपने धब्बे पड़े

हुए ऊनी पेन्टों और फटी हुई कमीजों के साथ, हम तेल भरी हुई भेड़ की खाल की पोशाक को पहनते थे, जो बहुत दूर से भी, प्रदर्शित करती थी कि हम उनमें कैसे आये थे। आउफस्नाइटर, अपने पैरों में, भारतीय सेना के जूतों के अवशेष पहने हुए था, और मेरे जूते फटे हुए थे। हम दोनों, जूते पहनने की तुलना में नंगे पैर अधिक थे। नहीं, निश्चितरूप से, हमारा प्रदर्शन हमारे पक्ष में नहीं था। शायद, हमारी दाढ़ियॉ, हमारी सबसे अधिक चौकाने वाले लक्षण थीं। सभी मंगोलों की तरह, तिब्बतियों के सिरों, चेहरों या शरीरों पर बाल लगभग नहीं होते, जबकि हमारे पास लम्बे और उलझे हुए बाल थे और उलझी हुईं, समृद्ध दाढ़ियॉ थीं। इस बजह से हमको अक्सर कजाक (Kazak), जो केन्द्रीय एशिया की एक जाति है, जिसके सदस्य, युद्ध के समय में, झुण्डों के रूप में, सोवियत रूस से तिब्बत को भाग कर आये थे, समझ लिया जाता था। लुटे हुए, वे अपने परिवारों के साथ पैदल आये और भीड़ के साथ और यहॉ–वहॉ, दांये–बांये, बस गये, और तिब्बती फौज, उन्हें भारत में भगाने के लिये उत्सुक थी। कजाक लोग, अक्सर साफ खाल और नीली ऑखों वाले होते हैं और उनकी दाढ़ियॉ, सामान्य रूप से उगी होती हैं। ये आश्चर्यजनक नहीं है कि, हमें उनके स्थान पर समझ लिया गया था, और अनेक नोमाडों के द्वारा, ठुल्ले के रूप में हमारा स्वागत किया गया था।

अपनी दिखावट के संबंध में, करने को कुछ नहीं था। ल्हासा में जाने के पहले, हम अपने लिये ठाटबाट का लिवास नहीं पहन सकते थे, यदि हमारे पास पैसा भी होता, तो भी हम कपड़े कहॉ से खरीदते ?

नांगत्से (Nangtse)–अंतिम गॉव का नाम–छोड़ने के बाद, हमको अपनी खुद की युक्तियों पर छोड़ दिया गया था। लेफ्टीनेंट, सवार हो कर ल्हासा में चला गया था, और हमें, अपने यातायात के साधन और सामानों के लिए, अपने मेजबान के साथ मोलभाव करना पड़ा था। उसने हमें एक गाय और एक नौकर उधार दे दिया था और जब हमने उसे पैसा दिया, हमारे पास डेढ़ रुपया, और कपड़े के अंदर सिला हुआ सोने का एक टुकड़ा, बचा था। हम तय कर चुके थे कि यदि हमें कोई यातायात नहीं मिला, तो हम अपने सामान को पीछे छोड़ देंगे। अपनी डायरियों, नोट्स, और नक्शों के सिवाय, हमारे लिये कोई चीज मूल्यवान नहीं थी। कोई भी चीज, हमको वापस करने वाली नहीं थी।

The youngest sister of the Dalai Lama, on horseback.

The Dalai Lama's elder brother, Lobsang Samten.

वर्जित नगर

ये 15 जनवरी 1946 का दिन था, जब हमने अपनी अंतिम पदयात्रा प्रारम्भ की। तोलुंग से हम क्यीचू की विस्तृत घाटी में आये। हम थोड़ा कोने में मुड़े और दलाईलामा के सदियों के निवास और सर्वप्रसिद्ध ल्हासा की सीमा के चिन्ह, पोटाला की सुनहरी छतों को, दूरी पर चमकते हुए देखा। इस क्षण ने, बहुत कुछ हद तक, हमारी क्षतिपूर्ति कर दी। हम तीर्थयात्रियों की तरह से, अपने घुटनों पर चल कर जाने और जमीन को अपने माथे से छूते हुए जाने के लिये तैयार थे। क्यिरोंग को छोड़ने के बाद, हम सदैव से अपने मन की ऑखों में बसे हुए इस आश्चर्यजनक शहर के स्वप्न के साथ, लगभग छै सौ मील की दूरी तय कर चुके थे। हम सत्तर दिन तक पैदल चले थे और बीच में केवल पॉच दिन विश्राम किया था। इसका अर्थ था, प्रतिदिन लगभग दस मील की, औसत पैदल यात्रा। चांगतांग को पार करने में, हमारी यात्रा के–कठिनाई से भरे हुए और ठण्ड, भूख और खतरे के विरुद्ध, कभी न समाप्त होने वाले संघर्ष के पैंतालीस दिन गुजर गये थे। जैसे ही हमने, उन सुनहरी सीमाओं को – छै मील और दूरी पर देखा, अब वह सब भूला जा चुका था और हम अपने लक्ष्य पर पहुॅच गये थे।

हम टीले के पास बैठे, जिसे यात्री लोग पवित्र नगर की पहचान के चिन्ह के रूप में अपनी पहली नजर में रखते हैं। इस बीच, हमारे चालक ने अपनी भक्ति पूरी की। चलते हुए, हम ल्हासा से पहले, अंतिम गॉव शिंगदोनका (Shingdonka) आये। गाय वाले ने और आगे आने से मना कर दिया, परंतु अब हमें कोई भी चीज निराश नहीं कर सकी। हम बोन्पो को ढूंढने के लिये गये और ठण्डे से उसे सूचित किया कि हम एक शक्तिशाली विदेशी व्यक्ति के अग्रिम दल के रूप में थे, जो ल्हासा जा रहा था और हमें जितना जल्दी हो, उतना जल्दी शहर में पहुॅचना था, ताकि हम अपने स्वामियों के लिये ठिकाना तलाश सकें। बोन्पो को हमारी कहानी जॅच गई और उसने हमें एक गधा और एक चालक दे दिया। वर्षो के बाद ये कहानी अभी भी लोगों को हंसाने के लिए, पार्टियों में ल्हासा के संदर्भ में, मंत्रियों के घरों में भी, चलती है। तथ्य यह है कि तिब्बती लोग, विदेशियों को अपने देश के बाहर रखने की, अपनी व्यवस्था के लिए बहुत गर्व करते हैं और उन्होंने वह तरीका, जिसमें हम उनके बेरियरों में न केवल ध्यानाकर्षण करने वाले, परंतु ऊॅचे हास्य के साथ सेंध लगाकर आ गये थे, ढूंढ लिया है। ये सब हमारे हित के लिए था, क्योंकि तिब्बती लोग हॅसी पसन्द करने वाले लोग हैं।

सड़क के आखिरी छैः मीलों के दौरान, हम तीर्थयात्रियों और काफिलों की धारा में मिल गये। समय–समय पर हमने सभी प्रकार के सुस्वाद मिष्ठान, सफेद रोटी, और अखरोट प्रदर्शित करती हुई छोटी–छोटी दुकानों के सामने से भी गुजरे–जिन्होंने लगभग हमारी ऑखों में ऑसू ला दिये। हमारे पास धन नहीं था। हमारा आखिरी रुपया हमारे चालक का था।

हमने शीघ्र ही, शहर के सीमा चिन्हों, जिनके सम्बंध में हमने अक्सर पढ़ रखा था, को पहचानना शुरू कर दिया। वहॉ ऊपर, चांगपोरी पहाड़ी, जिसके ऊपर दो प्रसिद्ध चिकित्सीय स्कूलों में से एक स्थित है, होगी और यहॉ हमारे समाने, ड्रेबुंग था, जो विश्व का सबसे बड़ा मठ है, जिसमें दस हजार भिक्षु रहते हैं और जो पत्थर के अपने अनेक घरों के साथ, और सैकड़ों मठों के ऊपर, ऊपर की ओर इशारा करती हुई भव्य पराकाष्ठाओं के साथ, स्वयं में एक शहर है। कुछ नीचे, दूसरे लामामठ, नेचुंग (Nechung), जो कि शताब्दियों तक, तिब्बत के महानतम रहस्यों का घर रहा है, के गलियारे थे। यहॉ, रक्षा करने वाले देव की भव्य उपस्थिति मानी जाती है, जिसके गोपनीय ज्योतिषी, तिब्बत के भाग्य का मार्गदर्शन करते हैं और कोई भी महत्वूपर्ण निर्णय लेने से पहले, शासन द्वारा उनकी सलाह ली जाती है। अभी हमें पॉच मील और जाना था और हर कुछ कदम के बाद, वहॉ देखने के लिये कुछ नई चीज थी। हम, अच्छी तरह बनाये गये, फर के पेड़ों के घिरे हुए घास के विस्तृत मैदानों में, जिसमें दलाईलामा अपने घोड़ों को चराते हैं, हो कर गुजरे।

हमारी सड़क, पत्थर की लम्बी दीवाल के बगल से, लगभग एक घंटे तक चली, और हमें बताया गया कि स्वर्णिम राजा का ग्रीष्मकालीन महल, इसके पीछे है। उसके आगे, हमने ब्रिटेन के दूतावास को गुजारा, जो फर के पेड़ों के द्वारा आधा छिपा हुआ, शहर के ठीक बाहर है। ये सोचते हुए कि यही हमारा लक्ष्य होना चाहिए, हमारा चालक वहॉ जाने के लिए मुड़ा, और सीधे वहॉ जाने से, उसका पीछा करने में, हमें कुछ कष्ट हुआ। वास्तव में, वहॉ जाने के संबंध में, एक क्षण के लिए हम खुद हिचकिचाये परंतु बंदी शिविरों की स्मृति, अभी भी हमारे दिमाग में थी, और हमने सोचा कि, कुल मिलाकर, हम तिब्बत में थे और ये तिब्बती लोगों के हक में था कि हम उनसे

सौहार्द्रता के लिए कहते।

किसी ने हमें रोका नहीं या किसी सम्बन्ध में परेशान नहीं किया। हम इसे समझ नहीं सके, परंतु अंत में, महसूस किया कि कोई भी, कोई भी यूरोपियन, संदेह में नहीं था, क्योंकि बिना किसी पारपत्र के, कोई भी कभी ल्हासा तक नहीं आया था।

जैसे ही हम पहुँचे, हमेशा से ऊँचा पोटाला, हमारे सामने मीनार के रूप में खड़ा हुआ था, फिर भी, हमें शहर का, जो पहाड़ियों के पीछे था, जिस पर राजमहल और चिकित्साओं का स्कूल बना हुआ था, खुद का कुछ नहीं दिखा। तब हमने तीन मठियों के मुकुटों से सजाया हुआ, एक बड़ा दरवाजा देखा, जो दोनों पहाड़ियों के बीच की खाली जगह को भरता है और शहर का प्रवेश द्वार बनाता है। हमारी उत्तेजना बहुत तीव्र थी। अब हमें निश्चित रूप से, अपने भाग्य को जानना चाहिये। ल्हासा के बारे में, लगभग हर पुस्तक कहती है कि पवित्र शहर की सुरक्षा करने के लिये, यहाँ संतरी तैनात रहते हैं। हम धड़कते हुए दिलों से वहाँ पहुँचे परंतु वहाँ कुछ नहीं था। कोई सैनिक नहीं, कोई नियंत्रण–चौकी नहीं–अपने हाथों को भीख के लिए फैलाये हुए, केवल थोड़े से भिखारी। हम, लोगों के एक समूह के बीच में मिल गये और बिना छिपे, महाद्वार में प्रवेश करते हुए, शहर में चले। हमारे चालक ने हमें बताया कि हमारे बांयी तरफ का घरों का समूह, केवल एक प्रकार से उपनगर जैसा था, इसलिए हम बिना बने क्षेत्र की ओर चलते चले गये, जो शहर के मध्य के समीप आता था। हमने कोई शब्द नहीं कहा, और आज के दिन तक, मैं, ये बताने के लिये कि हमारे संज्ञान कितने अविभूत (overhelming) थे, किन्हीं पदों (terms) को नहीं पा सका। कठिनाइयों से थके हुए हमारे मन,, इतने सारे झटके और इतने अधिक शक्तिशाली प्रभावों को एक साथ नहीं झेल सके।

हम शीघ्र ही, कछुआ–छत वाले पुल के सामने थे और ल्हासा के कैथेड्रल (cathedral) की मीनारों को पहली बार देखा। सूर्य छिप गया और पूरा दृश्य, अपार्थिव प्रकाश में नहा गया। ठण्ड से काँपते हुए, हमें एक सराय की तलाश करनी थी, परंतु ल्हासा के किसी घर में घुस जाना, चांगतांग के तम्बू में घुस जाने के समान, उतना आसान नहीं है। हमारे बारे में शायद तुरंत ही, अधिकारियों को सूचित कर दिया गया होता। परंतु हमें प्रयत्न करना था। पहले घर में हमें एक बहरा नौकर मिला, जिसने हमको नहीं सुना। अगले दरवाजे पर, केवल एक नौकरानी थी, जिसने सहायता के लिये तब तक चीख निकाली, जब तक कि उसकी मालिकिन नहीं आ गई और उसने हमें कहीं दूसरी जगह चले जाने के लिए कहा। उसने बताया कि यदि उसने हमारा स्वागत किया, तो उसे घर से बाहर निकाल दिया जायेगा। हमने ये विश्वास नहीं किया कि सरकार इतनी कठोर भी हो सकती है, परंतु हम उसके लिए परेशानी नहीं खड़ी करना चाहते थे और तब फिर हम बाहर गए। हम पतली गलियों में हो कर घूमे और हमने अपने आपको, पहले से ही, शहर के दूसरे तरफ पाया। वहाँ हम, जो हमने अभी तक देखे थे, उनकी तुलना में, ऑगन में अस्तबल के साथ, अधिक बड़े और सुन्दर दिखने वाले घर में पहुँचे। हमने नौकरों के सामने पड़ने से पहले जल्दी की, जिन्होंने हमें गालियाँ दीं और चले जाने के लिए कहा। हमें जाने नहीं दिया और हमारे गधों को खाली नहीं करने दिया। हमारा चालक, पहले से ही, हमको उसे घर जाने देने के लिए दवाब बना रहा था। उसने देख लिया था कि हर चीज ठीक नहीं है। हमने उसका पैसा दिया, और वह आराम की एक आह के साथ चला गया।

नौकर, जब उन्होंने देखा कि हम वहाँ ठहरने के लिये आ चुके हैं, निराश हो गये थे। उन्होंने हमसे चले जाने के लिए अनुनय–विनय की और इशारा किया कि जब उनका मालिक लौटेगा, वे भयानक कष्ट में पड़ जायेंगे। हम भी, बलपूर्वक मेहमानी करने के इस विचार के ऊपर, सुख से अधिक परे दिखाई दिये, परंतु हम नहीं हिले। शोरगुल से खिंचे हुए, अधिक और अधिक, लोग आते गए। इस दृश्य ने मुझे, क्यिरोंग से प्रस्थान के समय के दृश्य का ध्यान दिला दिया। हम सभी विरोधों के प्रति बहरे बने रहे। थकान से मरे हुए और आधे भूखे, और इस बात से बेखबर कि हमारे साथ क्या हो सकता है, हम अपने गट्ठों के साथ जमीन पर बैठ गये। हम केवल बैठना, आराम करना और सोना चाहते थे।

भीड़ की, गुस्से की चीखें, अचानक ही रुक गईं। उन्होंने हमारे सूजे हुए और छाले पड़े हुए पैर, देख लिये थे और खुले दिल वाले सरल समाज ने, जैसे कि वे थे, हमारे ऊपर दया दिखाई। एक औरत ने इसकी शुरूआत की। यह वही औरत थी, जिसने हमें अपने घर से बाहर जाने के लिए प्रार्थना की थी। अब वह हमारे लिए मक्खन वाली चाय लाई और वे हमारे लिए सब प्रकार की चीजें–त्सम्पा, किराना, और ईंधन लाये। लोग अपने असौहार्द्रतापूर्ण स्वागत के ऊपर, प्रायश्चित कर रहे थे। हम भूखे, खाने पर टूट पड़े और क्षणभर के लिए, किसी भी

दूसरी चीज को भूल गए।

सहसा हमने, स्वयं को एकदम सही ॲंग्रेजी में पुकारे जाते हुए सुना। हमने ऊपर देखा और यद्यपि वहॉ आसपास देखने के लिए, अधिक रोशनी नहीं थी, तथापि हमने पहचान लिया कि अच्छी पोशाक पहने हुए एक तिब्बती, जिसने हमसे बात की थी, एक सर्वोच्च स्थिति का व्यक्ति होना चाहिए। विस्मित और प्रसन्न, हमने उससे पूछा क्या संयोगवश, वह उन चार भद्रपुरुषों में से एक नहीं था, जो रगबी (Rugby) के स्कूल को भेजे गये थे। उसने कहा कि वह नहीं था, परंतु उसने भारत में कई वर्ष गुजारे हैं। यह बताते हुए कि हम जर्मन थे और अंदर आने की प्रार्थना करते हुए, हमने उसे संक्षेप में बताया कि हमारे साथ क्या हुआ था। उसने एक क्षण के लिए सोचा और तब कहा कि नगर दण्डाधिकारी के अनुमोदन के बिना, वह हमें अपने घर में अंदर नहीं आने दे सकता, परंतु वह उस अधिकारी तक जायेगा और आज्ञा पाने के लिए कहेगा।

जब वह चला गया, दूसरे लोगों ने हमें बताया कि वह एक महत्वपूर्ण अधिकारी था और वह बिजली के कार्यों का प्रभारी था। जितना उसने कहा था, हम उससे अधिक इकट्ठा करने का दुस्साहस नहीं कर सके, परंतु फिर भी, हमने, रात के लिए, नीचे व्यवस्थित होने की शुरूआत की। इस बीच, हम अलाव के सामने बैठे और लोगों से, जो आते–जाते रहे थे, बातचीत की। तब एक नौकर हमारे पास आया और उसने हमें अपने पीछे चलने को कहा, श्रीमान् थांगमे (Thangme) ''बिजली के स्वामी,'' ने अपने घर में हमें आमंत्रित किया है। उन्होंने उसे आदरपूर्वक ''कुंगो (Kungo)'' कहा, जो कि ''राजघराने की उपाधि, महाराज,'' के समतुल्य है, और हम उसके पीछे चले।

थांगमे और उसकी नौजवान पत्नी ने हमारा हार्दिक स्वागत किया। उनके पॉच बच्चे, हमारे आसपास खड़े हो गए और उन्होंने खुले मुॅह से हमारी ओर देखा। उनके पिताजी के पास, हमारे के लिए, एक अच्छा समाचार था। दण्डाधिकारी ने, एक रात के लिए, हमको अपने घर में आने देने के लिए इजाजत दे दी थी परंतु आगामी व्यवस्थायें मंत्रिपरिषद के द्वारा तय की जानी थी। हमने भविष्य के संबंध में अपने दिमाग में कोई चिंता नहीं रखी। कुल मिला कर, हम ल्हासा में थे और एक भद्रपुरुष के मेहमान थे। लोहे के एक छोटे चूल्हे के साथ, जिसने हमको अच्छी तरह गर्माया, परिवार ने हमारे लिए, एक सुन्दर, आरामदायक कमरा, पहले से ही तैयार करा दिया था। सात साल बाद, हमने कोई चूल्हा देखा था! ईंधन के रूप में जूनीपर (juniper) की लकड़ी थी, जो बहुत अच्छी सुगंध देती थी और वास्तव में, एक विलासिता थी, क्योंकि इसको याकों की पीठ पर लादकर ल्हासा तक लाने में हफ्तों की आवश्कता होती थी। हमने अपने फटे हुए कपड़ों में, गलीचे से ढ़के अपने साफ बिस्तर के ऊपर बैठने का, मुश्किल से ही दुस्साहस किया। वे हमारे लिए एक भव्य चीनी खाना लाए, और जब हम खा रहे थे, वे सभी हमारे सामने खड़े रहे और उन्होंने हमसे, बिना रुके हुए, बात की। हम कैसे पार हुए होंगे! वे मुश्किल से ही विश्वास कर सके कि, हमने चांगतांग को सर्दी में पार किया और न्येनचेन थांग ला श्रृंखला के ऊपर चढ़े। तिब्बती भाषा के हमारे ज्ञान ने उनको आश्चर्यचकित किया। परंतु उस सभ्य वातावरण के बीच, हम स्वयं कितने गंदे और दीनहीन दिखते थे। शीघ्र ही, हमारी यात्रा के लिए, हमारे अत्यावश्यक सामान ने, अचानक ही उनके आकर्षण को समाप्त कर दिया और हमने अनुभव किया कि उनसे छुटकारा पा कर हम प्रसन्न होंगे।

अंत में, एकदम थके हुए और मन में भ्रमित, हम बिस्तर पर गए, परंतु हम सो नहीं सके। हम, कठोर जमीन के ऊपर, किसी भी चीज के बिना, अत्यधिक रातें गुजार चुके थे परंतु भेड़ की खाल के हमारे लबादे और एक फटा हुआ कम्बल, हमें ढ़कने के लिए, हमारे पास था। अब हमारे पास, एक नर्म बिस्तर और अच्छी तरह गर्म कमरा था, परंतु हमारे शरीर, अपने आपको परिवर्तनों के लिए, शीघ्रता से अभ्यस्त नहीं कर सके और हमारे विचार, हमारे दिमाग में, चक्की के पहिये की तरह से घूमने लगे। बंदी–शिविर और साहस, और हमारे पलायन के बाद से इक्कीस महीनों की कठिनाईयॉ, जो कुछ हमारे साथ हुआ था, वह हमारे दिमाग में भीड़ मचाने लगा, और हमने अपने सहयोगियों और अपने जीवन की अटूट एकरसता का विचार किया, चूॅकि, यद्यपि, युद्ध बहुत पहले समाप्त हो चुका था, बंदी अभी भी अधीनता में थे परंतु, इस मामले में, हम अब स्वतंत्र थे?

इससे पहले कि हम ठीक से जगें, हमने एक नौकर को मीठी चाय और चकतियों के साथ, अपने बिस्तरों के समीप खड़ा हुआ देखा। तब वे हमारे लिए गर्म पानी लाए और हमने अपने उस्तरे से, अपनी लम्बी दाढ़ी पर हमला बोल दिया। हजामत बनाने के बाद, हम अच्छे सम्मानीय दिखे परंतु, हमारे लम्बे बाल, एक गम्भीर समस्या थे। हमारे शेरों की गर्दन जैसे बालों को साफ करने के लिए, एक मुसलमान नाई को बुलाया गया। कुछ हद तक परिणाम सम्मोहक था, परंतु उसने सजीव प्रशंसा को उत्तेजित किया। तिब्बतियों को, अपने केशविन्यास के साथ

कोई परेशानी नहीं होती, या तो वे चोटीवाले होते हैं, या मुड़े हुए सिरों वाले।

हमने थांगमे को दोपहर तक नहीं देखा, जब वह विदेश मंत्री से मिलने के बाद, अधिक आराम में आया हुआ, घर आया, वह हमारे लिए शुभ समाचार लाया था और उसने हमें बताया कि हम अंग्रेजों को नहीं सौंपे जायेंगे। हम कुछ समय के लिए, ल्हासा में रह सकते हैं परंतु उसने नम्रतापूर्वक प्रार्थना की कि, जब तक कि उच्चाधिकारी, जो तागलुंग (Taglung) से वापस लौट रहा था, हमारे भविष्य का निर्णय करता है, हम घर के अंदर ही रहें। हमें ये समझाइश दी गई कि ये, पुरानी घटनाओं, जिसमें पगलाये हुए भिक्षु शामिल हो गये थे, से सुझाया गया, एक सावधानीपूर्ण तरीका था। सरकार हमको पोषण और पहनावा देने के लिए तैयार थी। हम बहुत खुश हुए। थोड़े दिन का विश्राम, जो हम चाहते थे, जिसकी हमें आवश्यकता थी, ठीक था। हमने उत्साह के साथ, पुराने समाचार–पत्रों के पहाड़ के ऊपर हमला किया, यद्यपि समाचार, जो हमने इकट्ठे किए, ठीकठीक उतने उत्साहबर्द्धक नहीं थे। पूरा विश्व अभी भी कॉप रहा था, और हमारा देश कठिन समयों में हो कर गुजर रहा था।

उसी दिन, नगर दण्डाधिकारी द्वारा भेजा हुआ एक अधिकारी, हमसे मिलने आया। उसके साथ पुलिस के छै सिपाही थे, जो गंदे और अविश्वसनीय दिखते थे परंतु, हमसे मिलने आने वाले अत्यधिक नम्र दिखते थे और उन्होंने हमारा सामान जॉचने के लिए कहा। हम आश्चर्यचकित हुए कि वह, इतने सहीपन के साथ, अपना कार्य कर रहे होंगे। उसके साथ क्यिरोंग से आई हुई रिपोर्ट थी, जो उसने, हमारे बंदी शिविर की तारीखों से मिला कर देखी। हमने उससे ये पूछने का साहस किया, कि क्या सभी अधिकारी, जिनके जिलों से हो कर हम गुजरे थे, वास्तव में, दण्डित किये जायेंगे। ''पूरा मामला मंत्रिपरिषद के समक्ष आयेगा,'' उसने विचारपूर्वक कहा, ''और अधिकारियों को दण्डित किये जाने की आशा की जानी चाहिए।'' इसने हमको पूरी तरह परेशान कर दिया, और उसके आनन्द के लिये, हमने उसे बताया कि हमने जिला अधिकारियों को कैसे चकमा दिया था और कैसे अक्सर, हमने उन्हें धोखा दिया था। जब उसने हमारे लिए घोषणा की कि, इससे पहले शाम को, वह ल्हासा में जर्मन घुसपैंठ की आशा कर रहा था, अब हंसने की हमारी बारी थी। ऐसा लगा कि प्रत्येक वह व्यक्ति, जिससे हमने बात की थी, दण्डाधिकारी को सूचित करने के लिए दौड़ गया था। उनके ऊपर ऐसी छाप थी कि जर्मन सेनायें, मार्च करती हुई शहर में आ रहीं हैं!

कैसे भी, हम पूरे नगर में चर्चा का विषय बने। हर कोई हमको देखना और हमारे साहस की कहानी को, अपने खुद के कानों से सुनना चाहता था, और चूँकि हमको बाहर नहीं जाने दिया गया था, लोग हमसे मिलने आते रहे। श्रीमती थांगमे ने अपने हाथों को खुला रखा और आगन्तुकों का स्वागत करने के लिए अपनी सर्वोत्तम चाय तैयार की। हमको उत्सव की चाय पार्टियों में मिलाना प्रारम्भ किया गया। चाय की सेवा के मूल्य और सुन्दरता से अतिथियों के लिए आदर प्रदर्शित किया जाता है। मेज अक्सर, सोने या चांदी की एक चादर की बनी होती है, जिसके ऊपर चाय के चीनी प्याले रखे जाते हैं। मैंने चाय के, अक्सर सैकड़ों साल पुराने, अति सुन्दर चीनी सेट देखे।

हर दिन, महत्वपूर्ण अतिथि, थांगमे के घर आये। वह स्वयं पॉचवी श्रेणी का भद्रपुरुष था, और चूँकि यहॉ शिष्टाचार को अत्यधिक नजदीकी से निभाया जाता है, उसने समान स्तर वाले या निम्नश्रेणी के लोगों का, आने वाले आगन्तुकों का स्वागत किया परंतु, अब ये अत्यधिक ऊँची नियुक्ति वाले व्यक्ति थे, जो हमसे मिलना चाहते थे, उन लोगों में से सर्वाधिक सम्मानीय, एक मंत्री का पुत्र त्सारोंग और उसकी पत्नी थे। हमने पहले से ही, उसके पिता के संबंध में बहुत कुछ पढ़ रखा था। नरम परिस्थितियों में पैदा हुआ वह, तेरहवें दलाईलामा का अतिप्रिय व्यक्ति बन गया, अति उच्च आदरणीय पद तक उन्नत हुआ, और उसने अपनी उद्यमिता और प्रखरता के कारण, अपने लिए अत्यधिक सौभाग्य प्राप्त किया। चालीस वर्ष पूर्व, दलाईलामा, उन्हें चीनियों के सामने, भारत में भगाने के लिए कृतज्ञ थे और तब त्सारोंग ने अपने स्वामी को अमूल्य सेवा दी थी। अनेक वर्षों तक वह मंत्रिपरिषद में मंत्री रहा था और लामा का प्रथम पसन्दीदा होने के कारण, उसे राज्य के हाकिम (Regent) की अकल्पनीय शक्तियॉ मिली हुई थीं। उसके बाद, एक नये पसंदीदा, जिसका नाम खुन्पेला (Khunpela) था, ने त्सारोंग को अधिकार की अपनी स्थिति से बेदखल कर दिया था। तथापि वह, अपने पद और भव्यता को को बचाने में समर्थ रहा। त्सारोंग अब भद्रता के तीसरे क्रम में था और टकसाल का स्वामी था।

उसका पुत्र छब्बीस साल की आयु का था। उसका पालन पोषण भारत में हुआ था और धारा प्रवाह अंग्रेजी बोलता था। अपने महत्व के प्रति सचेत, वह अपनी चोटी में स्वर्ण का एक ताबीज पहनता था, चूँकि मंत्री के पुत्र को ऐसा करने का अधिकार था।

जब ये नौजवान भद्रपुरुष मिलने के लिए आया, नौकरों ने उसको चाय दी और शीघ्र ही वार्तालाप जीवन्त हो गया। नौजवान आदमी, तकनीकी मामलों में विशेषरूप से रुचि रखने वाला मंत्री का बेटा, अविश्वसनीय रूप से चंचल था। उसने हमसे नवीनतम आविष्कारों के संबंध में पूछा और हमें बताया कि उसने खुद ही, रेडियो का अपना सेट बनाया है और अपने घर की छत के ऊपर, हवा से चलने वाले जनरेटर को लगाया है।

हम अंग्रेजी में, एक तकनीकी वार्तालाप के मध्य में थे, जब उसकी पत्नी ने हॅसते हुए, हमको बीच में टोका और कहा कि वह कुछ प्रश्न पूछना चाहती है। यांगचेनला (Yangchenla), जैसे वह कहलाती थी, ल्हासा की सुन्दरियों में से एक थी; वह अच्छे कपड़े पहने हुए और बहुत सुशील, और स्पष्टरूप से, पाउडर, रूझ और लिपिस्टिक के उपयोग से परिचित थी। वह शर्मीली बिल्कुल नहीं थी, जो उसके सजीले ढंग से, जिसमें उसने हमारी यात्रा के संबंध में हमसे तिब्बती में प्रश्न पूछे, स्पष्ट था। अब फिर, वह तीखे संकेतों द्वारा और हंसी ठट्टे के साथ, हमारे स्पष्टीकरण पर टूट पड़ी। वह, हमारे समाप्त हुए यात्रा परमिट के हमारे तरीकों से, जो हमने अधिकारियों के ऊपर थोपे थे, विशेषरूप से आनन्दित थी। हमारे, तिब्बती में धारा प्रवाह होने पर, वह आश्चर्यचकित दिखाई दी, परंतु हमने ध्यान दिया कि न तो वह और न हमारे आगन्तुकों में से अधिकांश, समय–समय पर, हमारे ऊपर उसके हंसने को सहन कर सके। बाद में, हमारे मित्रों ने हमें बताया कि हमने सामान्य प्रकार की, जो कोई किसानों की बोली सोच सकता है, में बात की। ये वियना की बैठक (Viennese drawing room) में जगह बनाते हुए, विदेशी भाषा में बोलते हुए, सर्वाधिक दूर की आल्पस की घाटी के पिछबाड़े के जंगल के लोगों की अधिक दिखती थी। हमारे आगन्तुक अत्यधिकरूप से आनन्दित थे परंतु हमें सुधारने में अत्यधिक नम्र थे।

जब ये नौजवान दंपत्ति गये, हम उसके साथ दोस्ती कर चुके थे। वे अपने साथ अच्छे स्वागत योग्य उपहार लाये थे–लाइनन, पूरी बाहों के स्वेटर और सिगरेट, और जब हमें किसी चीज की आवश्यकता हो, उन्हें स्पष्ट रूप से बताने के लिए कहा। मंत्री के बेटे ने, हमको मदद करने का वायदा किया और बाद में, यदि सरकार हमको अनुमोदन प्रदान कर देती है, हमें आमंत्रित किये जाने और अपने साथ ठहरने के लिए, अपने पिता का एक संदेश दिया। ये सब बहुत सांत्वनापूर्ण प्रतीत हुआ।

और अधिक आगन्तुक, अंदर आकर इकट्ठे होने लगे। हमारा अगला (आगन्तुक) था, तिब्बती सेना एक जनरल, जो हमसे रोमेल[7] (Rommel) के संबंध में, हर संभव चीज को सीखने के लिए, बुरी तरह तैयार था। वह जर्मन जनरल के पूरे उत्साह के साथ बोला और उसने बताया कि उसने अंग्रेजी की अपनी मित्रमंडली की सहायता से, उसके संबंध में हर चीज, जो उसको समाचार–पत्रों में उपलब्ध थी, पढ़ी है। इस मामले में, ल्हासा बिल्कुल भी अलग–थलग नहीं है। पूरी दुनियॉ के समाचारपत्र, भारत होते हुए वहॉ आते हैं। भारतीय दैनिक समाचारपत्र, वहॉ नियमितरूप से, प्रकाशन के एक सप्ताह बाद आते हैं। वहॉ शहर में कुछ ऐसे लोग भी हैं, जो ''लाइफ (Life) (पत्रिका)'' लेते हैं।

आगन्तुकों का जलूस जारी रहा। उनमें थे उच्चस्तरीय भिक्षु, जो सौहार्द्रतापूर्वक हमारे लिए उपहार लाये थे, बाद में, उनमें से कुछ, मेरे मित्र बन गये। तब चीनी दूतावास का एक प्रतिनिधि और उसके बाद, सिक्किम में ब्रिटेन की एजेन्सी से जुड़ा हुआ एक अधिकारी, आया।

हम, तिब्बती सेना के प्रमुख कमाण्डर, जनरल कुनसांगत्से (Kunsangtse), जिसने एक मित्रवत् मिशन पर, चीन और भारत की यात्रा के लिये, तिब्बत छोड़ने से पहले, हमारे मिलने पर जोर दिया, विशेषरूप से सम्मानित किये गये। वह विदेश मंत्री का छोटा भाई और असामान्यरूप से अच्छी तरह जानकारी रखने वाला व्यक्ति था। जब उसने आश्वासन दिया कि ल्हासा में हमारे रुकने की आज्ञा, निश्चितरूप से, अनुमोदित कर दी जायेगी, उसने हमारे मन पर से काफी बोझा उतार दिया।

हमने धीमे–धीमे घर जैसा महसूस करना प्रारम्भ किया। थांगमे और उसकी पत्नी के साथ हमारे सम्बंध, एक सौहार्द्रपूर्ण मित्रता में विकसित हुए। हमारी मातृवत् देखभाल की गई और हमें अच्छी तरह खिलाया पिलाया गया, और हर आदमी ये देखकर प्रसन्न था कि हमारी भूख बहुत अच्छी हैं। तथापि, निस्संदेह कठिनाइयों

7 अनुवादक की टिप्पिणी : रोमेल (15 नवम्बर 1891– 14 अक्टूबर 1944), जो मरुस्थली–लोमड़ी (The Desert Fox) के नाम से लोकप्रिय है, का जन्म हाइडेनहाइम (Heidenheim, German Empire), जर्मनी साम्राज्य में हुआ था। उसने 1916 में लूसिया मारिया मौलिन्स (Lucia Maria Mollin) से शादी की। वह 1911 से 1944 तक सेना में रहा। द्वितीय विश्वयुद्ध में, वह नाजी जर्मनी में प्रभावशाली फील्ड मार्शल था। उसने प्रथम विश्वयुद्ध में भी अनेक महत्वपूर्ण पद धारण किये थे। उसे (Iron Cross First Class, Iron Cross Second Class) जैसे अनेक महत्वपूर्ण सम्मान पदक प्राप्त हुए।

और अत्यधिक थकान की प्रतिक्रिया के फलस्वरूप, हमें सभी प्रकार की छोटी छोटी शिकायतों की पीड़ाओं को झेलना पड़ा। आउफस्नाइटर पर बुखार का आक्रमण हुआ, और मेरे सियाटिका के दर्द ने मुझे काफी कष्ट दिया। थांगमे ने चीनी दूतावास के डॉक्टर, जिसने बर्लिन (Berlin) और बोर्डाक्स (Bordeaux) में पढ़ाई की थी, को बुला भेजा। उसने अनुमोदित यूरोपियन तरीके से, हमारा परीक्षण किया और विभिन्न दवायें लिखीं।

सम्भावना है कि विश्व में कोई भी दूसरा देश, बेचारे दो भगोड़े लोगों का वैसा स्वागत नहीं करेगा, जैसा कि तिब्बत ने हमारा किया था। सरकार का उपहार, कपड़ों का हमारा पार्सल, इस तथ्य के कारण पैदा हुई देरी के लिए, कि हम तिब्बतियों की तुलना में, औसत से अधिक लम्बे थे और हमारे लिए, हमारे नाप के कपड़े तैयार नहीं थे, इसलिए, हमारे सूट और जूते, हमारे नाप के बनाये गये, खेदव्यक्ति के साथ आ पहुॅचा था। हम बच्चों की तरह खुश थे। अंत में, हम अपने खराब, फटे पुरानों को फैंकने में समर्थ हुए। हमारे नये सूट, यद्यपि अत्यधिक ऊॅचे दर्जी के स्तर के नहीं थे, परंतु सुन्दर और सही और हमारे लिए पर्याप्तरूप से बहुत अच्छे थे।

अपनी अनेक यात्राओं के मध्यान्तर में, हमने अपनी कॉपियों और डायरियों के ऊपर काम किया और हमने शीघ्र ही, थांगमे के बच्चों से दोस्ती कर ली, जो हमारे जगने से पहले, पहले से ही स्कूल जा चुके थे। शाम को उन्होंने हमें अपना गृहकार्य दिखाया, जिसने, चूॅकि मैं लिखित भाषा सीखने में कुछ कष्ट उठ रहा था, मुझमें काफी अधिक अभिरुचि जगा दी। आउफस्नाइटर इसे काफी लम्बे समय से पढ़ता रहा था, और हमारे घूमने के दौरान, उसने मुझे कुछ सिखाया था, परंतु कमोवेश मुझे, धाराप्रवाह तिब्बती भाषा लिखने में वर्षों लगे। अलग–अलग अक्षर मुझे कोई कष्ट नहीं देते थे, परंतु जब वे वाक्यांश में जुड़ जाते थे तो ये आसान नहीं था। अक्षरों में से अनेक, पुरानी भारतीय लिपियों में से लिये गये हैं, और तिब्बतीय लेखन, चीनी की तुलना में, हिन्दी की तरह अधिक दिखाई देता है। सुन्दर, टिकाऊ चमड़े की खाल जैसे (parchmentlike) कागज, और चीनी स्याही का उपयोग किया जाता है। यहॉ तिब्बत में, उच्च श्रेणी की अनेक मिलें हैं, जहॉ जूनीपर की लकड़ी से कागज बनाया जाता है। इसके अतिरिक्त, नेपाल और भूटान से, प्रतिवर्ष कागज की हजारों गांठें आयात की जाती हैं, जहॉ इस सामान को, तिब्बती तरीके से बनाया जाता है। मैं, क्यी चू नदी के किनारों पर, कागज बनाने के तरीके को अक्सर, ध्यान से देखता हूॅ। तिब्बतीय कागज की मुख्य कमी यह है कि इसकी सतह उतनी पर्याप्त चिकनी नहीं होती, जो लेखन को मुश्किल बना देती है। सामान्यतः, बच्चों को, उनके अभ्यास के लिए, लकड़ी की तख्ती दी जाती है और उनको सरकण्डे के कलम और पानी वाली स्याही दी जाती है। लिखे हुए को, बाद में, गीले कपड़े से मिटाया जा सकता था। थांगमे के बच्चों को, अपने अभ्यासों को ठीक होने से पहले, अक्सर, बीस बार रगड़ना पड़ता था।

शीघ्र ही हमारे साथ घर के सदस्यों की तरह से व्यवहार किया गया। श्रीमती थांगमे अपनी समस्याओं पर हमारे साथ विचार विमर्श करती थीं, और जब हम उन्हें, उनके अच्छे प्रदर्शन और अच्छे स्वाद के लिये शुभकामनायें देते थे, प्रसन्न होती थीं। एक बार उन्होंने हमें अपने कमरे में आने के लिए और अपने रत्नों को देखने के लिए आमंत्रित किया। इनको वह, या तो छोटे नगीनों के बक्सों में या सुन्दर रेशमी लपेटों में, अपनी बड़ी तिजोरी में रखती थीं, जिसमें उनके खजाने भण्डारित किये जाते थे। उनका खजाना देखने लायक था। उनके पास मूंगों, नीलम और मोतियों का एक भव्यतापूर्ण मुकुट और अनेक अंगूठियॉ, साथ–साथ हीरे के कुण्डल और कुछ थोड़े से तिब्बती ताबीज, गण्डे, जो नीलम की एक जंजीर के द्वारा गले में लटकाये जाते हैं, थे। अनेक औरतें अपने लोकेट को कभी नहीं उतारतीं। गण्डा, जो वे पहनती हैं, एक तलिस्मान की तरह से काम करता है, जो उनका विश्वास है कि उनको बुराईयों से बचाता है।

हमारे द्वारा, उसके खजाने की, तारीफ किये जाने पर, हमारी मेजबान प्रसन्न हुई। उसने हमें बताया कि हर आदमी के लिये, अपनी श्रेणी के अनुसार, अपनी पत्नी को भेंट देना आवश्यक था। श्रेणी में तरक्की होने पर, उसके आभूषणों में इजाफा होना आवश्यक था! परंतु केवल धनवान होना ही पर्याप्त नहीं था, क्योंकि मात्र सम्पत्ति ही, कीमती जवाहरातों को पहनने का अधिकार प्रदान नहीं करती। वास्तव में, लोग अपनी पत्नियों के दावों के संबंध में बड़बड़ाते थे, मिथ्या अभिमान करते थे, क्योंकि यहॉ, पश्चिम की भॉति, हर औरत अपनी प्रतिद्वन्दी से ऊपर चमकना चाहती थी। श्रीमती थांगमे, जिसके नग हजारों पाउण्ड की कीमत के रहे होंगे, ने हमें बताया कि, चूॅकि सामाजिक महिलाओं के ऊपर दस्युओं के हमले होना, एक सामान्य बात थी, वह बिना किसी नौकर को साथ लिए कभी बाहर नहीं गईं।

आठ दिन गुजर गये, जिसमें हम कर्तव्यनिष्ठ हो कर घर के अंदर रहे। अचानक, जब एक दिन, हमको दलाईलामा के मातापिता के घर की यात्रा करने का आमंत्रण देते हुए, सेवकगण आये और हमें तुरंत ही चलने के

लिए कहा, हमारे लिये ये अत्यधिक आश्चर्यजनक था। चूँकि हमने अपने आपको, घर को न छोड़ने के वायदे से बाध्य समझा, इसलिये हमने अपने मेजबान से परामर्श किया। वह डरा हुआ था कि हमने कुछ अवहेलना कर दी होगी; इस प्रकार का आमंत्रण, किसी भी दूसरे आदेश को रद्द कर देता है। दलाईलामा या किसी रीजेन्ट से बुलावा, सभी प्रकार के दूसरे विचारों के ऊपर होता है। कोई भी, हमको रोकने या बाद में इस सम्बंध में कुछ बताने के लिए बुलाने का दुस्साहस नहीं करेगा। इसके विपरीत, आदेश को मानने की हिचकिचाहट, एक गम्भीर अपराध होगी। हम इस सलाह को जान कर प्रसन्न थे, परंतु तब हमने, अपने बुलावे के कारण के संबंध में उदास होना शुरू किया। क्या ये हमारे अच्छे भविष्य का संकेत था ? कैसे भी, हम अपने आपको पहली बार नये कपड़े और तिब्बती जूते पहनाते हुए, यात्रा के लिए जल्दी से तैयार हुए। हम भलीभांति उपस्थिति देने योग्य दिख रहे थे। थांगमे ने, हममें से हरएक को, सफेद रेशमी रूमाल (खाका) का एक जोड़ा दिया और हम पर जोर ड़ाला कि जब हमें सुनवाई के लिए बुलाया जाए, हम इसे उपहार में दें। हमने इस रिवाज को, पहले ही क्यिरोंग में समझ लिया था और ध्यान से देखा था कि ये लोगों के द्वारा काफी सीमा तक निभाया जाता है। किसी से मिलने या उच्चपदासीन व्यक्ति के समक्ष याचिका दाखिल करने के लिए या बड़े त्यौहारों पर, किसी से रूमालों को भेंट देने की आशा की जाती है। ये रूमाल सभी प्रकार की गुणताओं और सभी प्रकारों में मिलते हैं और दिये जाने वाले रूमाल का प्रकार, देने वाले की हैसियत के अनुसार होना चाहिए।

दलाईलामा के मातापिता का घर बहुत दूर नहीं था। शीघ्र ही, हमने अपने आपको, एक बड़े दरवाजे के सामने खड़ा हुआ पाया, जिसके सामने दरबान पहले से ही हमारी प्रतीक्षा में था। जब हम पहुँचे तो उसने सम्मान के साथ हमें नमन किया। जब तक कि हम महल तक आए, हमें एक बड़े उद्यान, जो गमलों और फरों के भव्य गुच्छों से भरा हुआ था, में हो कर ले जाया गया। हमको ऊपर पहली मंजिल तक ले जाया गयाः एक दरवाजा खुला और हमने अपने आपको ईश्वरीय राजा की मॉ की उपस्थिति में पाया, जिसको हमने आदर से नमन किया। वह, नौकरों से घिरी हुई, एक बड़े चमकदार कमरे में, छोटे से सिंहासन पर बैठी हुई थी। वह एक वैभवशाली गरिमा की चित्र दिखाई देती थी। कुछकुछ नम्र भय, जिसको तिब्बती ''पवित्र मां के लिए'' अनुभव करते हैं, हमारे लिए अंजान है परंतु हमने इस क्षण को देवीय माना।

जब हमने पूरी लम्बाई तक अपनी बांहों को फैलाते हुए, जैसे कि थांगमे ने हमको निर्देश दिये थे, रूमालों को गहरी श्रद्धा के साथ उन्हें दिया, पवित्र मॉ हमारे ऊपर मुस्कराईं और प्रत्यक्ष रूप से प्रसन्न दिखाई दीं। उसने उन्हें हमसे लिया और अपने नौकरों में से एक को दे दिया। तब, तिब्बती रिवाजों के विपरीत, एक विशेष अभिव्यक्ति के साथ, उसने हमसे हाथ मिलाये। उस क्षण, एक गरिमामय प्रौढ़ व्यक्ति–दलाईलामा के पिताजी–अंदर आये। हमने फिर से नमन किया और उन्हें उचित समारोह के साथ रूमाल भेंट किये, इसके बाद उन्होंने हमसे अधिकांशतः स्वाभाविक रूप में हाथ मिलाये। यूरोपियन लोग, यदाकदा, घर में आते रहते थे और मेजबान तथा महिला मेजबान, कुछ हद तक यूरोपीय रिवाजों से परिचित थे और उन्हें इस तथ्य का तनिक भी अभिमान नहीं था।

तब हम सभी चाय के लिए बैठे। चाय, जो हमने पी, उसमें एक अनजान स्वाद और गंध था, और वह सामान्य तिब्बती पेय के अतिरिक्त, किसी दूसरे तरीके से बनाई गई थी। हमने इसके संबंध में पूछा, और प्रश्न ने चुप्पी तोड़ी क्योंकि इसने हमारे मेजबानों को, उनके पहले के घरों के संबंध में बताने के लिए राह प्रदान की। जब तक कि उनका बेटा, दलाईलामा के अवतार के रूप में पहचाना नहीं गया, वे आमडो (Amdo) में, साधारण किसान की तरह से रहते थे। आमडो, चीन के शिंघाई प्रांत में है, परंतु उसके लगभग सभी निवासी तिब्बती हैं। वे अपनी चाय को अपने साथ ल्हासा लाये थे और अब उन्होंने उसे, वैसे नहीं, जैसेकि तिब्बती, मक्खन के साथ बनाते हैं परंतु दूध और नमक मिलाते हुए बनाया था। वे अपने पुराने घर से कुछ और चीजें भी लाये थे–बोली, जो वे बोलते थे। वे दोनों पतोइस (Patois), जो मध्यप्रान्त की भाषा के समान है, परंतु वैसी नहीं हैं, का उपयेग करते थे। दलाईलामा के चौदह वर्षीय भाई ने बीच में हस्तक्षेप किया। वह ल्हासा में, बच्चे के रूप में आया था और शीघ्र ही, उसने शुद्ध तिब्बती बोलना सीख लिया था। अब वह आमडो की बोली को केवल अपने मातापिता के साथ बोलता था।

जब हम उनके साथ बातचीत कर रहे थे, हमें अपने मेजबानों को देखने का मौका मिला। उनमें से प्रत्येक ने हमारे ऊपर अच्छी छाप छोड़ी। उनका नम्र मूल अपने आप में, एक आकर्षक सरलता बताता था, परंतु उनकी सहनशक्ति और व्यवहार, राजशाही थे। दूर प्रान्त के एक छोटे किसान के घर से, राजधानी में नवाबी के पद का, ये एक बड़ा कदम था। अब वे महल, जिसमें वे रहते थे, और देश की महान सम्पदा के स्वामी थे। परंतु वे

अपने जीवन में, सहसा क्रांति से, विनाशरहित, बचे हुए, दिखाई दिए।

लड़का, जिससे हम मिले, लोबसांग सामटेन, एक जीवन्त और पूरी तरह सजग था। वह, हमारे बारे में, उत्सुकता से भरा हुआ था और उसने हमारे अनुभवों के बारे में, सभी ढंग के प्रश्न पूछे। उसने हमें बताया कि उसके ''देवीय'' छोटे भाई ने, उसे ठीक–ठीक सूचित करने का, ये प्रभार दिया है। हम आनन्दपूर्वक उत्तेजित दिखाई दिये कि दलाईलामा हमारे प्रति रुचि ले रहे थे, और हम उनके बारे में अधिक जानना चाहते थे। हमें बताया गया था कि तिब्बत में दलाईलामा नाम का शब्द बिल्कुल भी उपयोग में नहीं लाया जाता। ये मंगोल अभिव्यक्ति है, जिसका अर्थ है ''विस्तृत सागर''। सामान्यतः दलाईलामा को ''ग्यालपो रिम्पोचे (Gyalpo Rimpoche),'' के रूप में संदर्भित किया जाता है, जिसका अर्थ है, ''खजाने वाला राजा,'' उसके मां, बाप और भाई, उनसे बात करने के लिए दूसरा पद उपयोग में लाते हैं। वे उसे ''कुन्दुन (Kundun) कहते हैं'' जिसका साधारण अर्थ है, ''उपस्थिति''।

पवित्र मातापिता के, कुल मिला कर छै बच्चे थे। सबसे बड़ा लड़का, दलाईलामा की खोज से काफी पहले, बुद्ध के अवतार के रूप में पहचाना गया था और लामा की गरिमा के साथ, ताग्त्सेल (Tagtsel) के बौद्धमठ में बैठा दिया गया था। वह भी एक प्रकार से, रिम्पोचे की शैली में था, एक प्रकार की पुकारने की शैली, जो सभी लामाओं के लिए लागू होती है। दूसरा लड़का, ग्यालो थुन्ड्रप (Gyalo Thundrup), चीन के स्कूल में था। हमारा परिचित, नौजवान लोबसांग, मठ के जीवन के लिए दे दिया गया था। दलाईलामा स्वयं ग्यारह वर्ष की आयु के थे। अपने भाईयों के अलावा, उनकी दो बहिनें थीं। उसके बाद, पवित्र मां ने, एक और अवतार, न्गारी रिम्पोचे (Ngari Rimpoche), को जन्म दिया था। तीन अवतारों की मां के रूप में, बौद्ध विश्व का रिकॉर्ड उनके पास था।

हमारी यात्रा ने, इस अनुशीलित, चतुर महिला के साथ सौहार्द्रपूर्ण सम्बन्धों को आगे बढ़ाया, जो उससे पहले, जब तक कि वह चीन की लाल सेनाओं के भारत की तरफ अतिक्रमण के बाद पलायन नहीं कर गयीं, जारी रहना था। हमारी मित्रता को, उस भावातीत उपासना, जो पवित्र मां दूसरों से पाती थी, के साथ कुछ लेना देना नहीं था परंतु, यद्यपि आधिभौतिकीय (metaphysical) मामलों के प्रति मेरा रवैया, काफी शंकापूर्ण था, मैं व्यक्तित्व और आस्था की शक्ति, जो उनमें निवेशित की गयी थी, को छोड़ कर, अन्य कुछ नहीं पहचान सका।

धीमे–धीमे हमें ये स्पष्ट हो गया कि ये आमंत्रण, कितना विशिष्ट था। किसी को ये नहीं भूलना चाहिए कि उनके परिवार, और मठाध्यक्ष की पदवी धारण करने वाले थोड़े से निजी नौकरों के अपवाद के साथ, किसी को भी देवीय राजा को सम्बोधित करने का अधिकार नहीं है। तथापि, अपने आप में विश्व से पृथक्कृत, उनने हमारे भाग्य में दिलचस्पी लेने की कृपा की। जब हम चलने के लिए उठ कर खड़े हुए, हमें पूछा गया कि क्या हमें कुछ चीज चाहिए। हमने अपने मेजबानों का धन्यवाद दिया परंतु नम्रतापूर्वक, कुछ नहीं कहना पसंद किया, जिसके बदले में, खाने और त्सम्पा के बोरे, मक्खन का एक भार, और कुछ सुंदर नर्म ऊनी कम्बलों के साथ, नौकरों की एक लाइन चली। ''कुंदुन की निजी इच्छा के अनुसार,'' पवित्र मॉ ने मुस्कराते हुए कहा, और सौ सांग का एक नोट, हमारे हाथों में दबा कर, दिया। ये सब इतने स्वाभाविक ढंग से किया गया था और मानो कि ये सामान्य तरीका था कि हमें इसको स्वीकार करने में कोई शर्म महसूस नहीं हुई।

धन्यवाद की अनेक अभिव्यक्तियों और गम्भीर श्रद्धा और कुछ भौंचक्केपन के साथ, हमने कमरे को छोड़ दिया। मित्रता के अंतिम प्रमाण के रूप में, लोबसांग ने, अपने मातापिता की ओर से, जैसे ही हम उनके प्रति झुके, रूमालों को एक बार फिर हमारी गर्दन पर बांधा। तब वह हमें बगीचे में ले गए और हमको मैदान और अस्तबल दिखाए, जहॉ हमने, उनके पिता के गर्व, सोलिंग (Soling) और ही (Hi) से, कुछ भव्य घोड़े देखे। वार्तालाप की अवधि में, उसने सुझाव को डाल दिया कि मैं उन्हें, पश्चिमी ज्ञान की कुछ शाखाओं के सम्बन्ध में, कुछ पाठ पढ़ाऊॅ, जो मेरी खुद की, गुप्त अभिलाषाओं के साथ मेल खा गया। मैंने अक्सर ये सोचा था कि मैं अपने लिये, भद्र परिवारों के बच्चों को पढ़ाने की व्यवस्था कर सकूॅगा।

उपहारों से लदे हुए और नौकरों के द्वारा छुडवाये गये हम, थांगमे के घर वापस लौटे। हम ऊॅची भावना में थे और हमने महसूस किया कि हमारा भाग्य, अब सुधार पर था। हमारे मेजबान, उत्तेजना में, अधीरतापूर्वक हमारी प्रतीक्षा कर रहे थे। हमें उन्हें, हर चीज, जो हुई थी, को बताना पड़ा, और हमारे आगामी आगंतुक, आदर, जो हमें दिया गया था के सम्बंध में, विस्तार के साथ सूचित किए गए। हमारा भाव काफी ऊॅचा चढ़ गया था!

अगले दिन, जब दलाईलामा के भाई हमसे मिलने आए, हमारी मेजबान ने, श्रद्धा के कारण, पहले अपने आपको छिपाया और केवल तभी प्रकट हुई, जबकि पूरा का पूरा घर, अभिवादन के लिए उनके सामने प्रस्तुत हो

चुका था। अब पच्चीस साल आयु के, नौजवान लामा, रिम्पोचे, वास्तव में, हमें अपने मठ से मिलने आये। आशीर्वाद में, परिवार के हर सदस्य के ऊपर, उन्होंने अपना हाथ रखा। वह पहले अवतारित लामा थे, हम जिनके परिचय में आए। लोग, सभी तिब्बती भिक्षुओं को, लामा के रूप में सोचने के अभ्यस्त हैं। वास्तव में, ये नाम केवल अवतारों और थोड़े से दूसरे भिक्षुओं, जो अपने पवित्र जीवन या उनके द्वारा किये गये चमत्कारों के द्वारा, दूसरों से अलग पहचाने जाते हैं, को दिया जाता है। सभी लामाओं को, अपना आशीर्वाद देने का अधिकार होता है और वे संत के रूप में आदरित किये जाते हैं।

Huge banner in the Monastery of Tra-Yerpa.

One of the monk policemen, bearing his heavy staff.

शान्त जल

हमारे पहुँचने के दस दिन बाद, हमें विदेश मंत्रालय से शब्द प्राप्त हुए कि हम स्वतंत्रता पूर्वक आसपास घूम सकते हैं। उसी समय, हमको मेमने की खाल के, पूरी लम्बाई के भव्य लबादे, जिनके लिए हमें बाद में नापा गया था, प्राप्त हुए। इनमें से प्रत्येक के लिए, साठ खालें उपयोग में लाई गई थीं। उसी दिन, हम घूमने के लिए शहर में गए और हमने अपने तिब्बती चोगों में, किसी का भी ध्यान आकर्षित नहीं किया। हम हर चीज देखना चाहते थे। आंतरिक नगर, दुकानों को छोड़ कर, अन्य किसी का बना हुआ नहीं है। दुकानें, अटूट श्रृंखला में फैली हुईं हैं और व्यापारी गलियों में उमड़ते फिरते हैं। यहाँ, हमारे पश्चिमी विश्व की अभिव्यंजना के अनुसार, प्रदर्शन खिड़की (shop window) वाली कोई दुकानें नहीं हैं। किसी को, सामान्य भण्डार बहुतायत में मिलते हैं, जिनमें सुई से लगाकर रबर के जूतों तक, सामानों और उनके पास कपड़ों और रेशम को बेचने वाली तेज दुकानों की बड़ी श्रृंखला मिलती है। स्थानीय उत्पादों के साथ–साथ, किराना स्टोरों में अमरीकन मक्का मिश्रित मांस, ऑस्ट्रेलिया का मक्खन, और अंग्रेजी व्हिस्की मिलते हैं। वहाँ ऐसी कोई चीज नहीं है, जिसे कोई खरीद न सके, या कम से कम आदेश न दे सके। किसी को वहाँ ऐलिजावेथ आर्डेन (Elizabeth Arden)[8] की विशिष्टतायें भी मिल सकती हैं और वहाँ उनके लिए एक अच्छी खासी माँग है। याक के मांस के जोड़ों और मक्खन के टुकड़ों के बीच, पिछले युद्ध की तारीखों वाले अमरीका के बड़े जूते प्रदर्शित किये जाते हैं। आप सिलाई मशीनों, रेडियो सेटों, और ग्रामाफोनों का ऑर्डर भी दे सकते हैं और अपनी आगामी पार्टी के लिए बिंग क्रॉसवी (Bing crosby)[9] के नवीनतम रिकॉर्डों की तलाश कर सकते हैं। उल्लासपूर्वक कपड़े पहने हुए दुकानदारों की भीड़, मोलभाव करती है और शोर मचाती है। वे मोलभाव में एक खास तरह का आनन्द, जो जितना लम्बा चल सके, आनन्द लिया जाना चाहिए, लेते हैं। यहाँ आप, एक नोमाड़ को, अपने याक की ऊन को, बुकनी से बदलते हुए और पड़ोस में नौकरों की भीड़ से घिरी हुई एक सामाजिक महिला को, घंटों तक रेशम और उभरी हुई कसीदाकारी के पहाड़ में लड़खड़ाते हुए देख सकते हैं। अपने प्रार्थनाध्वजों के लिए भारतीय सूती कपड़ों को चुनने में, नोमाड महिलायें कम विशिष्टतापूर्ण नहीं हैं।

आम लोग, सामान्यतः, शुद्ध ऊन की घर में बुनी हुई, फीते वाली एक बेल्ट, नाम्बू (nambu), जो व्यावहारिकरूप से न फटने योग्य होती है, पहनते हैं। ये बेल्ट या कमरबंद, लगभग आठ इंच चौड़ी होती है। इन नाम्बुओं के लिए कच्ची सामिग्री की गांठें, भण्डारों में प्रदर्शन के लिये रखी जाती हैं। ऊन या तो शुद्ध सफेद या हल्के बैगनी रंग की रंगी हुई, आसमानी से रंग की थोड़ी मिलावट और हल्की जामुनी होती है। चूँकि रंगों का अभाव, गरीबी का प्रतीक माना जाता है, सिवाय गधा चलाने वालों के, सफेद नाम्बू मुश्किल से ही पहनी जाती है। चूँकि नापने के लिए फीते उपयोग में नहीं लाये जाते, यहाँ वे कपड़े की लम्बाई को अपनी भुजाओं से नापते हैं। मेरी लम्बी भुजाओं को धन्यवाद, मैं इस रिवाज से हमेशा फायदे में रहा हूँ।

तब हमने, यूरोपियन नम्दे की टोपियों से भरे हुए अनगिनित भण्डार देखे, जो ल्हासा में चरम संकट हैं।

---

8 अनुवादक की टिप्पिणी : फ्लोंरेस नाइटेंगल ग्राहम (Florence Nightingale Graham) (31 दिसम्बर 1878–18 अक्टूबर 1966), जो बाद में अपने एलिजाबेथ आर्डेन (Elizabeth Arden) के व्यापारिक नाम से मशहूर हुई, कैनाडा मूल की अमरीकी महिला व्यापारी थी, जिसका जन्म बुडब्रिज (Woodbridge), ओन्टारियो (Ontario), कैनाडा में हुआ था। उसके पिता ग्राहम (Graham), स्कॉटी नागरिक और मां सुसान (Susan), एक कॉर्निश (Cornish) (ब्रिट्रेन का एक अल्प संख्यक समुदाय) महिला थीं। 1918 में एलिजाबेथ आर्डेन ने थॉमस लुईस नामक अमरीकी से विवाह किया, और उसी के माध्यम से अमरीकी नागरिकता प्राप्त की। लुईस ने, 1935 में तलाक होने तक, अपनी पत्नी की कम्पनी में, मेनेजर के रूप में सेवायें दीं। तलाक के बाद, लुईस ने, हैलेना रूबिन्स्टाइन (Helena Rubinstein) के स्वामित्व वाली दूसरी प्रतियोगी कम्पनी में नौकरी कर ली। एलिजाबेथ आर्डेन ने अपने पति को कभी अपनी कम्पनी में शेयर नहीं खरीदने दिये उसने एलिजाबेथ आर्डेन के नाम से, संयुक्त राज्य अमेरिका में, अपना सौंदर्य प्रसाधन (cosmatics) का साम्राज्य स्थापित किया। 1929 तक उसके स्वामित्व में, संयुक्त राज्य अमेरिका, दक्षिणी अमेरिका, आस्ट्रेलिया, और यूरोप में लगभग 150 उच्चस्तरीय सैलून थे। उसके उत्पादों की संख्या 1000 से अधिक थी और उसका वैश्विक बाजार 22 देशों में फैला हुआ था। सैलूनों पर, नाजियों के द्वारा उनके उपयोग किये जाने के आरोप भी लगे। अपने जीवन के उच्च शिखर पर वह दुनियाँ की सबसे अधिक धनाढ्य महिला थी। वह घोड़ों और घुड़दौड़ की शौकीन थी, उसके एक घोड़े ने 1947 में कैंटुकी डर्बी (Kantucky Derby) में पुरुस्कार भी प्राप्त किया था।

9 अनुवादक की टिप्पिणी : हैरी लिलिस बिंग क्रोसबी जूनियर (Harry Lillis Bing Crosby Jr.) (2 मई 1903–14 अक्टूबर 1977), एक अमेरिकी गायक और अभिनेता था। उसका जन्म टकोमा (Tacoma) वाशिंगटन में हुआ था। उसकी आवाज ने उसे बीसवीं शताब्दी का सर्वाधिक लोकप्रिय गायक बना दिया। उसके रिकॉर्डों (records), टेपों (Tapes), सी डी (compact discs) तथा अन्य डिजीटल उत्पादों की ब्रिकी, अरबों की संख्या को पार कर गई थी। वह पारंपरिक पॉप (Pop) संगीत और जाज (Jazz) संगीत का गायक था। 1963 में उसे ग्रेमी ग्लोबल अचीवमेंट अवार्ड (Grammy Global Achievement Award) प्रदान किया गया। वह हॉलीवुड के वाक आफ फेम (Hollywood Walk of Fame) से तीन सितारे (thee stars) पाने वाले, मात्र 33 लोगों में से एक था। अभिनय में लोकप्रियता के आधार पर, वह क्लार्क ग्लेबल (Clark Gable) और जॉन वेन (John Wayne) के बाद तीसरे स्थान पर था। 1950 में, फायरसाइड थियेटर (Fireside Theater), बिंग क्रोसबी का पहला टेलीविजन उत्पादन था।

तिब्बती परिधान के ऊपर, नम्दे का एक छोटा टोप, निश्चितरूप से खराब दिखता है, परंतु तिब्बती लोग, धूप से बचने के लिए, चौड़ी किनारी वाले यूरोपियन टोपों को मूल्यवान समझते हैं। यहॉ धूप से जले हुए चेहरे आकर्षक नहीं माने जाते। तिब्बती ड्रेस के साथ देशी तिब्बती टोप, काफी अच्छे लगते हैं और सड़क पर अधिक आकर्षक दिखाई देते हैं, और वास्तव में, किसी की व्यक्तिगत स्वतंत्रता के साथ हस्तक्षेप करने के विचार से नहीं, परंतु परिधानों की देशी शैली की सुंदरता को बचाये रखने के क्रम में, सरकार उस समय उस यूरोपियन पहनावे के रंग ढंग को अंदर आने से रोकने का प्रयास कर रही थी।

तिब्बती लोग छाते, और धूप से बचाने वाले शेड़ों (shades) के भी अभ्यस्त हैं, जिन्हें आप सभी आकारों, गुणवत्ताओं और रंगों में पा सकते हैं। भिक्षु, इन चीजों के सबसे अच्छे ग्राहक होते हैं, क्योंकि सिवाय उत्सव मनाने के, वे हमेशा नंगे सिर होते हैं।

जब हम घर लौटे, हमने पाया कि ब्रिटिश दूतावास का सचिव हमारी प्रतीक्षा कर रहा था। व्यक्तिगत रूप से, वह थांगमे का मित्र था, और उसका आना, किसी भी प्रकार से आधिकारिक अथवा औपचारिक नहीं था। उसने बताया कि उसने हमारे बारे में बहुत कुछ सुना था और वह हमारी यात्रा और हमारे अनुभवों के बारे में, बहुत हद तक रुचि रखता था। वह स्वयं गार्टोक में ब्रिटेन का व्यापार प्रतिनिधि रह चुका था और वह उस देहात के बारे में कुछ जानता था, जिसमें हो कर हमने यात्रा की थी। चूँकि हम, अच्छी तरह से, घर पर अपने परिचित लोगों को, जिन्होंने हमको गुमशुदा मानकर लम्बा समय पहले छोड़ दिया होगा, खबर भेजना चाहते थे, हमने इसे एक उपयुक्त आगन्तुक समझा। चूँकि तिब्बत, विश्व डाक संघ का सदस्य नहीं था और इसकी डाक व्यवस्था कुछ हद तक जटिल थी, केवल ब्रिटेन का प्रतिनिधि, बाहरी दुनियॉ से सीधा सम्पर्क रखता था।

हमारे आगंतुक (visitor) ने, इस मामले में सहायता प्राप्त करने के लिए, हमको व्यक्तिगत रूप से प्रार्थना करने के लिए प्रेरित किया और इसलिए हम अगले दिन, हम दूतावास में गए, जिसको हमने, शहर में आते वक्त, रास्ते पर पहले ही देख लिया था। हमें पहले, बगीचे में, अपने सुबह के काम को करता हुआ वायरलेस का संचालक (operator) रेगीनाल्ड फौक्स (Reginald Fox), और लाल वर्दी में नौकर दिखाई दिए। फौक्स बहुत लम्बे वर्षों तक ल्हासा में रहा था, और उसने एक तिब्बती महिला के साथ शादी की थी। उनके, सुंदर और लम्बे काले बाल, तथा बादामी ऑखों वाले, चार मोहक बच्चे थे। बड़े दो, भारत में आवासीय स्कूल में थे।

फॉक्स अकेला आदमी था, जिसके पास एक विश्वसनीय मोटर थी, और दूतावास में अपने कर्तव्यों के अलावा वह, शहर भर के रेडियो की सभी बेटरियों को चार्ज करने में नियमितरूप से व्यस्त रहता था। वह बेतार के टेलीफोन द्वारा, भारत के साथ सम्पर्क कर सकता था और अपनी योग्यताओं और सज्जनता के कारण, ल्हासा में उसकी अधिक प्रशंसा की जाती थी।

इस बीच, नौकरों ने हमारे लिए घोषणा की, और हमको भवन के पहले प्रथम तल पर ले जाया गया। ब्रिटेन के दूतावास ने हमारा हार्दिक अभिनंदन किया और हमें एक अच्छे अंग्रेजी नाश्ते के लिए, जो बरामदे में तैयार किया जा चुका था, आमंत्रित किया। ऐसा लगा कि कितने लम्बे समय बाद, हम आरामदायक कुर्सियों पर बैठे और हमने मेज की सजावट, फूलदान में फूल, और वास्तविक यूरोपियन पद्धति से जमाई गई पुस्तकों को देखा। हमने अपनी ऑखों को, खामोशी के साथ, कमरे में चारों ओर घूमने दिया। किसी प्रकार से ऐसा लगा, कि हम घर आ गये हैं। हमारे मेजबान ने, हम जो सोच रहे थे, उसे समझ लिया। जब उसने हमें, अपनी किताबों के ऊपर देखते हुए देखा तो उन्होंने हमें, कृपापूर्वक, अपने पुस्तकालय का उपयोग करने देने के लिए प्रस्ताव दिया। शीघ्र ही, हमने खुले दिल से बात करना शुरू कर दिया। प्रश्न, जिसने हमको सबसे ज्यादा परेशान किया, क्या वह हमें अभी भी युद्धबंदी मानेंगे, युक्तिपूर्ण तरीके से छोड़ दिया गया। अंत में, हमने स्पष्ट रूप से पूछा, क्या हमारे सहयोगी अभी भी कांटेदार तारों के पीछे थे। वह कुछ नहीं कह सका परंतु उसने भारत से सूचना प्राप्त करने का वायदा किया। उसने हमारी स्थिति के बारे में साफसाफ कहा और हमें बताया कि उसे हमारे भागने और उसकी बाद की यात्रा की, जानकारी विस्तार से दी गई है और उसने निष्कर्ष निकाला कि उसने तिब्बती सरकार से जाना है कि हम शीघ्र ही, भारत वापस जा रहे होंगे। ये सम्भावना, हमने कहा, हमें अच्छी नहीं लगी, इसलिए उसने हमें पूछा, क्या हम सिक्किम में कुछ काम तलाशने के लिए इच्छुक होंगे। हमने तिब्बत में रुकने की अपनी गुप्त इच्छा उसे नहीं बताई, परंतु ये कहा कि यदि ये संभव न हो तो हम प्रसन्नता से उसके प्रस्ताव को स्वीकार करेंगे।

जिन प्रश्नों पर हम चर्चा कर रहे थे, उनके महत्व ने हमारी भूख को खराब नहीं किया, और अपने मेजबान के द्वारा उत्साहित हो कर, हमने अच्छे खाने के साथ, जो हमें प्रस्तावित किया गया, अधिक न्याय किया। जब हमने

खाना समाप्त कर लिया, हमने सोचा कि अपने समाचारों को अपने परिवारों में पहुॅचाने की अपनी प्रार्थना के निवेदन करने का समय आ चुका है। हमारे मेजबान ने रेडक्रॉस (Red Cross) के माध्यम से हमारे संदेश को भेजने की व्यवस्था करने का वायदा किया। बाद में, हमको, यदाकदा, दूतावास के माध्यम से, पत्र भेजने की स्वीकृति मिल गई, परंतु अधिकांश भाग के लिए, हमें अपने पत्रों को, सीमान्त तक भेजने के लिये, दुहरे लिफाफों का, बाहर वाला, जिसपर तिब्बती डाक टिकट लगाये जाते थे, जटिल तिब्बती डाक का उपयोग करना पड़ता था। सीमान्त पर, बाहर के लिफाफे को हटाने के लिए, अंदर वाले पर भारतीय डाक टिकट लगाने के लिए और उसे डाक में डालने के लिए, हमने एक आदमी की व्यवस्था की। सौभाग्यवश, एक पत्र ने यूरोप तक पहुॅचने में केवल एक पखबाड़े का समय लिया। तिब्बत में, डाक, धावकों द्वारा ले जाई जाती है, वे चार–चार मील के रिले पर काम करते हैं। सभी ऊॅची सड़कों पर झौंपड़ियॉ हैं, जिनमें रहकर, धावक आने वाले धावकों को, जैसे ही वे आते हैं, कार्यमुक्त करने की प्रतीक्षा करते हैं। डाक के धावक, अपने साथ, अपने साथ एक भाला, घंटी बांध कर रखते हैं, जो उनके कार्यालय को इंगित करता है। भाले को, यदि आवश्यक हो, हथियार के रूप में काम में लाया जा सकता है, और घंटी, रात के वक्त जंगली जानवरों को डराने के लिए काम में आती है। डाक टिकट पॉच भिन्नभिन्न मूल्यों के छापे जाते हैं और डाकखानों में बिक्री के लिए उपलब्ध होते हैं।

ब्रिटेन के दूतावास में हमारे जाने ने, हमारे मनों को काफी कुछ हद तक हल्का कर दिया था। वहॉ हमारा स्वागत किया गया और हमारे पास ये आशा करने के कारण थे कि अंग्रेज अब इस बात को महसूस करते थे कि हम हानिरहित थे।

अपने रास्ते पर वापस लौटते हुए, हमको कुछ नौकरों के द्वारा रोका गया, जिन्होंने हमें बताया कि उनका स्वामी चाहता है कि हम उससे मिलें। जब हमने पूछा कि उनका स्वामी कौन था, हमें बताया गया कि वह शासकीय सेवा में, चार में से एक, उच्चस्तरीय मठ, ट्रन्यी शेमो (Trunyi Chemo), का अधिकारी, जिसके हाथों में तिब्बत के सभी भिक्षुओं के ऊपर अधिकार केन्द्रित हैं, था।

हमको निष्ठा पूर्वक साफ और अच्छी तरह रखरखाव वाले एक बड़े राजशाही भवन में ले जाया गया। कोई पत्थर के फर्शों को, वास्तव में, खा सकता था। सभी नौकर, भिक्षु थे और एक अधेड़ महापुरुष द्वारा, हमारा दयापूर्ण अभिनंदन किया गया और हमको चाय और टिक्कियॉ दी गईं। सामान्य सौहार्द्रता के बाद, हम वार्तालाप में शामिल हुए और जल्दी ही इस कारण से अवगत हो गए कि हमारा मेजबान हममें क्यों रुचि ले रहा था। उसने साफ–साफ कहा कि तिब्बत एक पिछड़ा हुआ देश था और वह आदमी हमारा अच्छा उपयोग करना चाहता था। दुर्भाग्यवश, हर एक उसी प्रकार की राय नहीं रखता था। तथापि, वह देखेगा कि वह क्या कर सकता है और हमारे लिए अच्छी राय देगा। इस बीच, उसने हमें पूछा कि हमारे अपने देश में, हमारे व्यवसाय क्या हैं और हमने क्या–क्या विषय पढ़े हैं। वह विशेष रूप से इस तथ्य में दिलचस्पी ले रहा था कि आउफस्नाइटर एक कृषि अभियंता था। तिब्बत में, कोई भी इस शाखा में विशेषज्ञ नहीं था, और इस महान देश में इसकी क्या सम्भावनायें थीं!

अगले दिन, हमने मंत्रिपरिषद के चारों मंत्रियों से अलग–अलग औपचारिक भेंट की, जो केवल शासकीय उच्चाधिकारी के प्रति उत्तरदायी थे। ये लोग तिब्बत में, सर्वोच्च अधिकारों को निरूपित करते हैं। उनमें से तीन गरिमामय नागरिक हैं और चौथा एक मठ का अधिकारी। वे सभी सर्वोच्च परिवारों से आते हैं और भव्य शैली में रहते हैं।

हमने आश्चर्य किया कि हमें किसके साथ शुरूआत करनी चाहिए। हमसे मंत्री भिक्षु के साथ शुरूआत करने की अपेक्षा की जाती थी, परंतु हमने शिष्टाचार को दरकिनार करने का निश्चय किया और सबसे छोटे मंत्री से पहले मिले, जिसका नाम सुरखांग (Surkhang) था। वह बत्तीस साल की आयु का था और अपने सहयोगियों से अधिक प्रगतिशील समझा जाता था। हमने एक नौजवान आदमी से सलाह करने और समझने की आशा की।

उसने खुले दिल से हमारा स्वागत किया, और हम तत्काल ही अच्छे सम्बन्धों में आ गए। वह, बाहरी विश्व की घटनाओं के संबंध में आश्चर्यजनकरूप से अच्छा ज्ञान रखता था। उसने राजशाही रात्रिभोज पर हमारा स्वागत किया और तब हमने उससे विदाई ली। हमने अनुभव किया कि हम एक दूसरे को वर्षों से जानते हैं।

अगला मंत्री, जिससे हम मिले काबशोपा (Kabshopa) था, एक स्थूलकाय और कुछ हद तक स्वयं महत्वपूर्ण, सज्जन पुरुष था, जिसने हमारे साथ निश्चित सौजन्य के साथ व्यवहार किया। उसने हमें अपने सामने वाले आरामदायी सिंहासन की दो कुर्सियों पर बैठाया और तब हमें वाक्पटुता की बाढ़ के साथ पूरी तरह भर दिया।

उसने अपने गले को, आवाज के साथ साफ करते हुए, अपने सर्वाधिक प्रभावशाली गद्यांश पर विराम चिन्ह लगाये, जिस पर एक नौकर दौड कर आगे आया और उसे एक सोने का पीकदान (spitton) दिया। तिब्बत में, थूकना शिष्टाचार भंग करना नहीं है, हर मेज पर छोटे–छोटे थूकदान रखे जाते हैं, परंतु, थूकने वाले को, एक नौकर के द्वारा थूकदान पेश किया जाना, हमारे लिए इसको देखना नया था।

इस पहली मुलाकात में, हमारे लिए ये जानना मुश्किल था कि काबशोपा का क्या किया जाए। वह आगे रुका, और हमने ठीक समय पर उसकी वाक्पटुता, उसकी नम्रता का सौहार्दतापूर्वक जवाब देते हुए, निष्क्रियता के साथ निवेदन किया। हमने एक उदाहरण के ढंग से चाय के उत्सवपूर्ण कप को पिया। चूँकि उसने ये अनुभव नहीं कर पाया था कि हम तिब्बती बोलते हैं, उसके भतीजे को दुभाषिया बनने के लिए कहा गया था। नौजवान आदमी के अंग्रजी ज्ञान ने, उसको विदेश मंत्रालय में एक पद दिलवा दिया था, और हम बाद में, बहुधा उससे व्यवहार करते थे। वह नवीन पीढ़ी का एक विशेष उदाहरण था। वह भारत में पढ़ा था और तिब्बत को सुधारने की अनेक योजनाओं से भरा हुआ था, यद्यपि भिक्षुओं की उपस्थिति में, उसने अभी तक अपने सिद्धान्तों के समर्थन में खड़े होने का साहस नहीं किया था। एक बार जब हम अकेले थे, उसने मुझे टिप्पणी की कि आउफस्नाइटर और मैं, यदि तिब्बत में कुछ वर्षों के समय के बाद आए होते, क्योंकि तब वह और उस जैसे दूसरे राजशाही, मंत्री होते तो हमारे लिए, वहॉ कुछ करने के लिए बहुत अधिक मात्रा में काम होता।

मंत्री भिक्षु, जो पॉच मील लम्बी तीर्थयात्रियों की सड़क, जो ल्हासा के चारों ओर चलती है, पर लिंगखोर (Lingkhor) में, रहता था, ने कम औपचारिकरूप से हमारा स्वागत किया। अब वह जवान नहीं था और उसकी छोटी, हल्की सफेद दाढ़ी थी, जिसके ऊपर वह बहुत गर्व करता था, क्योंकि तिब्बत में दाढ़ियॉ विरली ही होती हैं। सामान्यतः वह काफी कुछ हद तक विरक्त दिखाई दिया, और दूसरे मंत्रियों के विपरीत, उसने किन्ही भी निश्चित मतों को व्यक्त करने से बचना चाहा। उसका नाम रम्पा था, और वह कुछ अधिकारी भिक्षुओं में से एक था, जो राजशाही से सम्बन्धित थे। राजनैतिक परिस्थितियॉ जिस ढंग से विकसित हो रही थीं, वे उसे गुप्त आशंका उत्पन्न कर रहीं होंगी। वह हमारे रूस की नीतियों से सम्बंधित विचारों में अधिक रुचि रखता था और उसने हमें बताया कि प्राचीन धर्मग्रन्थों में ये भविष्यवाणी की गई थी कि धर्म का नाश करते हुए, उत्तर की ओर से एक शक्ति, तिब्बत पर अतिक्रमण करेगी और अपने आपको पूरी दुनियॉ का स्वामी बना लेगी।

अंत में हम, चार मत्रियों में सबसे अधिक वृद्ध, पुंखांग (Punkhang) से मिले। वह कमजोर नजर के कारण, मोटे मोटे लैंसों के चश्मों को पहनने के लिए मजबूर, एक छोटा आदमी था। तिब्बत में, जहॉ चश्मे, ''गैरतिब्बतियों'' की भॉति अनुमोदित नहीं किये जाते, ये बहुत कुछ असामान्य था। किसी भी अधिकारी को, उनका उपयोग करने की इजाजत नहीं थी और उनको घर के अंदर पहना जाना भी निरुत्साहित किया जाता था। हमारे मंत्री ने, दलाईलामा से, इनको कार्यालय में पहनने की विशेष आज्ञा प्राप्त की थी। महत्वपूर्ण उत्सवों में, उसकी कमजोर निगाह, उसको एकदम असहाय बना देती थी। जब उसने हमारा स्वागत किया, पुंखांग की पत्नी उपस्थित थी। ये सत्य है कि वह पत्नी की तुलना मे, उच्चश्रेणी का था, परंतु इसे देखने के लिये अधिक तीखेपन की आवश्यकता नहीं थी कि ये वह महिला थी, जो पेन्ट पहनती थी। अभिनंदन के प्रथम शब्दों के बाद, पुंखांग ने मुश्किल से एक वाक्य ही कहा, जबकि इस महिला ने हमारे ऊपर प्रश्नों की झड़ी लगा दी।

बाद में, उसने हमें अपनी घरेलू मढ़ी दिखायी। वह उन परिवारों में से एक का वंशज था, जिन्होंने एक दलाईलामा को उत्पन्न किया था और जो अपने ऊपर गर्व करता था। अपनी धुंधली और धूल भरी मढ़ी में, उसने हमें पवित्रतम की एक आकृति दिखाई।

समय के अंतराल में, मेरी पुंखांग के पुत्रों से पहचान हुई। उनमें से सबसे बड़ा, ग्यांत्से (Gyantse) का राज्यपाल था और सिक्कम की एक राजकुमारी से विवाहित था, जो तथापि, वंशानुक्रम में तिब्बती थी। वह अपने पति की तुलना में अधिक दिलचस्प थी और सर्वाधिक सुंदर महिलाओं, जो मैंने पहले कभी देखी थीं, में से किसी को भी पीछे छोड़ सकती थी। उसमें, एशियाई महिलाओं का अवर्णनीय आर्कषण और युगों पुरानी पूर्वीय सभ्यता की छाप थी। साथ–साथ, वह चतुर, सुशिक्षित, और पूर्णरूप से आधुनिक, और भारत के अच्छे स्कूलों में से एक में पढ़ी हुई भी थी। तिब्बत में, अपने पति के भाईयों के साथ विवाह से मना करने वाली वह पहली महिला थी, क्योंकि ये उसके सिद्धान्तों के अनुकूल नहीं था। बातचीत में, वह किसी भी चतुर महिला, जिससे आप किसी यूरोपीय सेलून में मिलना पसंद करते हों, के बराबर थी। वह राजनीति में, और जो कुछ विश्व में घट रहा था, उसमें रुचि रखती थी। वह अक्सर, औरतों के समान अधिकारों के लिए बात करती थी ..... परंतु इस बिन्दु पर पहुॅचने के लिये,

तिब्बत अभी बहुत पीछे था।

जब हमने पुंखांग को अलविदा कहा, हमने उससे तिब्बत में रहने की अपनी प्रार्थना पर, स्वीकृति पाने के लिए समर्थन करने की विनय की। उसने वास्तव में, अपनी शक्ति के अनुसार, हमें भरपूर मदद करने का वायदा किया परंतु हम, ये जानते हुए कि यहॉ कोई भी आदमी, किसी भी चीज को साफ–साफ मना नहीं करता, बहुत लम्बे समय से एशिया में रहे थे।

हमने अपनी स्थिति को सभी तरह से सुनिश्चित करने के लिए, चीनी दूतावास के साथ अच्छे सम्बन्ध बनाने का प्रयास किया। प्रभारी अधिकारी ने नम्रता के साथ हमारा स्वागत किया, जिसके लिए वहॉ की जनता प्रसिद्ध है, और जब हमने उससे चीन में प्रवेश करने, और वहॉ कोई धंधा तलाशने की संभावना के संबंध में पूछा, उसने हमारे प्रश्न को, सरकार को निवेदित करने का वायदा किया।

इन तरीकों से हमने, सभी तरफ से समर्थन पाने और लोगों को अपनी हानिहीनता के सम्बन्ध में राजी करने के लिए, जो कुछ भी हम कर सकते थे, किया। अक्सर ऐसा हुआ कि, जब हम टहलने के लिए बाहर निकले हुए थे, अजनबी लोगों ने हमको पुकारा और हमसे विशेष, अत्यन्त विशेष प्रश्न पूछे। एक दिन, एक चीनी ने हमारा एक आशुचित्र (snap) फोटो लिया। तिब्बत में, कैमरा कुछ बहुत असामान्य था, और इस घटना ने हमारे विचारों को पोषण प्रदान किया। हम पहले ही सुन चुके थे कि ल्हासा में, विदेशों को सूचना देने वाले लोग, काफी संख्या में हैं। शायद हम, भी, विदेशी शक्तियों के आदमी माने जाते थे। केवल अंग्रेज लोग समझते थे कि हम कितने भोले थे, क्योंकि वे जानते थे कि हम कहॉ से आये थे, और वे हमारे कथनों की सत्यता की जॉच करने की स्थिति में थे। हमारे बारे में इतनी अधिक जानकारी न रखने वाले दूसरे लोग, सब प्रकार की चीजें सोचते थे। वास्तव में, हमारी कोई राजनैतिक अभिलाषा नहीं थी। हमने केवल शरण के लिए और जब तक समय आए, तब तक काम के लिए, जब हम यूरोप को वापस लौट सकें, कहा।

इस बीच, चटकदार सुन्दर गर्म मौसम को लाते हुए, बसन्त ऋतु आ चुकी थी, यद्यपि ये अभी फरवरी का प्रारम्भ ही था। ल्हासा, कैरों[10] (Cairo) के दक्षिण में है, और ऊॅची ऊॅचाईयों में सूर्य की किरणें तेजी से चुभती हुई लगती हैं। हमें काफी अच्छा महसूस हुआ, परंतु हमने नियमित धंधे की कामना की। चूॅकि हमें पशुओं की कुछ अनुवांशिक विलक्षणताओं की भॉति, हाथों–हाथ लिया गया, हमारे लिए दैनिक निमंत्रण, और यात्रायें तथा दावतें, जो घंटों चलती थीं, बहुत थीं। हम इस आलसी जीवन से शीघ्र ही थक गए और काम और खेल के लिए परेशान हुए। ल्हासा में, बास्केट बॉल (basket ball) के एक छोटे समूह के परे, खेलों के लिये कोई प्रावधान नहीं था। नौजवान तिब्बती और चीनी, जो बास्केट बॉल खेलते थे, जब हमने उनके साथ खेलने का प्रस्ताव किया, अत्यन्त प्रसन्न हुए। चौराहों पर नहाने के लिए गर्म पानी के झरने थे, परंतु झरने का एक अकेला स्नान, दस रुपये का पड़ता था–एक बहुत बड़ी कीमत, जबकि किसी का विचार है कि भेड़ें उतनी महंगी नहीं होतीं।

हमने सुना, कुछ सालों पहले, नगर में एक फुटबॉल का मैदान रहा था। ग्यारह टीमें बनाई गईं और कप–टाई मैच खिलाये गए। एक दिन, मैच के दौरान, एक ओलों भरा तूफान आया और उसने बहुत नुकसान किया। इसके परिणामस्वरूप, फुटबॉल को वर्जित कर दिया गया। शायद, राज्य अधिकारी ने इस खेल को अनुमोदित नहीं किया और चूॅकि लोग खेल के लिये अधिक जोश में थे और सेरा (Sera) तथा ड्रेबुंग के अनेक भिक्षु, मैचों को देखने में लिप्त पाये जाते थे, ऐसा सोचा गया कि इसके कारण धर्म के प्रभावित होने का खतरा अधिक सम्भावित था। कैसे भी, तूफान को एक प्रतीक के रूप में कि, देवताओं ने इस तुच्छ खेल को अनुमोदित नहीं किया, व्यक्त किया गया और फुटबॉल समाप्त कर दिया गया।

इस कहानी के सम्बन्ध में, हमने अपने मित्रों से पूछा कि क्या वास्तव में, कुछ ऐसे लामा थे, जो इन ओलों की बरसात को थाम सकते या बरसात की झड़ी को रोक सकते थे, क्योंकि ये विश्वास तिब्बत में पूरी तरह गहराई से जमा हुआ है। सभी क्षेत्रों में, चढ़ावे के रूप में सीपियॉ (shells) जमा कर रखी हुई पत्थरों की छोटी–छोटी मीनारें हैं, जिनमें, जब तूफान आता है, अगरबत्ती जलाई जातीं हैं। वास्तव में, अनेक गॉव वाले, नियमितरूप से मौसम बनाने वालों को रखते हैं। ये मौसम की व्यवस्था करने में अपनी विशेष दक्षता के लिए सुविख्यात, आदरणीय

10 अनुवादक की टिप्पिणी : कैरो (Cairo) मिस्र का सबसे बड़ा शहर और राजधानी है, जो विश्व के सबसे बड़े शहरों में पन्द्रहवें क्रम पर आता है। विश्व प्रसिद्ध गीजा (Giza) के पिरामिड यहीं हैं। नील नदी के मुहाने के समीप स्थित आधुनिक कैरों, ईसापूर्व 969 में फाटीमिड राजवंश (Fatimid dynasty) के जवहर अल सिकिली (Jawhar al-Siqilli) द्वारा बसाया गया था। इस्लामी वास्तुकला के प्रतीक इस शहर को 'हजार मीनारों का शहर' होने का खिताव मिला। अरब लीग (Arab League) का मुख्यालय केरों में है। इसकी लगभग 70 लाख आबादी, 453 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में रहती है। यहॉ अनेक विश्वस्तरीय शिक्षा संस्थान तथा कैरों का अंतर्राष्ट्रीय विमानन अड्डा है। वायु प्रदूषण कैरों की बड़ी समस्या है।

भिक्षु होते हैं, वे अपने जादू के उद्देश्य से शंख फूँकते हैं, जो कंपन करती हुई ध्वनि पैदा करते हैं। जब तूफान समीप आता है, हमारे अनेक पर्वतीय गॉवों में, चर्च की घंटियॉ बजाई जाती हैं और इन शंखों के प्रभाव की तुलना, घंटियों के कम्पनों के प्रभाव से की जा सकती है। परंतु, वास्तव में, तिब्बती किसी भौतिक स्पष्टीकरण को नहीं समझते–उनके लिए सब कुछ जादू, देवताओं के आशीर्वाद और खेल हैं।

हमने तेरहवें दलाईलामा के समय से चली आ रही एक सुंदर कहानी सुनी। वास्तव में, उनकी अदालत में, एक मौसम बनाने वाला होता था, जो अभी तक का जाना माना, सर्वाधिक प्रसिद्ध जादूगर होता था। जब कोई तूफान समीप आये, दैवीय राजा के ग्रीष्मकालीन उद्यान को बचा कर रखना, उसका विशेष कार्य था। एक सुंदर दिन, एक भारी ओलों वाला तूफान आया और उसने सभी फूलों को गिरा दिया और सभी पके हुए फलों को बरबाद कर दिया। मौसम बनाने वाले को सजीव बुद्ध के रूप में दलाईलामा के सामने पेश किया गया, जो बड़बड़ाता हुआ सिंहासन के सामने बैठा और तब घबराये हुए जादूगर के सामने, अचानक ही, एक चमत्कार प्रस्तुत करने के लिए प्रस्ताव किया गया अन्यथा, उसे बर्खास्त कर दिया जायेगा और दण्डित कर दिया जायेगा। आदमी ने स्वयं दण्डवत् की और एक छलनी के लिए कहा–मात्र एक साधारण छलनी। तब उसने पवित्रतम से पूछा कि क्या वह संतुष्ट होंगे यदि छलनी में डाला गया पानी उसमें से बाहर न निकले। दलाईलामा ने हामी भरी और आश्चर्य से निहार कर देखा! छलनी में डाला गया पानी उसी में बना रहा। जादूगर की इज्जत बच गई और वह अपने अच्छे वेतन वाले पद को बनाये रख सका।

यदि हम ल्हासा में रुके रहे, हम इस पूरे समय में, अपने मस्तिष्क पर, अपनी आजीविका के किसी साधन की तलाश पर, जोर डाल रहे थे। एक क्षण के लिए, त्सम्पा के पैकेट, खाना, मक्खन और चाय पाते हुए, हमारे साथ उत्सुकतापूर्ण व्यवहार किया गया। काबशोपा के भतीजे द्वारा, हमें विदेश मंत्रालय से भेंट के रूप में, पॉच सौ रुपये दिया जाना, एक सुखद आश्चर्य था। अपने धन्यवाद के पत्र में हमने कहा कि यदि वे हमें खाने और रहने की सुविधा प्रदान करें, तो हम सरकार की सेवा करने के लिए तैयार थे।

पिछले तीन सप्ताहों तक, हम थांगमे की सौहार्द्रता का आनन्द लेते रहे। अब धनाढ्य त्सारंग ने हमको अपने साथ ठहरने के लिए आमंत्रित किया, और हमने आभार पूर्वक स्वीकार किया। थांगमे के चार बच्चे थे और उसे हमारे कमरे की आवश्यकता थी। उसने हमको, सड़क पर पड़े, बेचारे घुमक्कड़ों के रूप में लिया था और अपने आपको एक सच्चा मित्र दिखाया था। हमने उसकी दयालुता को कभी नहीं भुलाया, वह हमसे नववर्ष पर, सफेद रूमाल पाने वाला पहला व्यक्ति था और बाद में, जब मेरा खुद का घर बना, वह मेरी क्रिसमस पार्टियों में आने वाला नियमित अतिथि था।

त्सारंग के घर में, हमें यूरोपीय फर्नीचर, एक मेज, आरामकुर्सियों, बिस्तरों, और सुंदर गलीचों के साथ, एक बड़ा कमरा दिया गया था। हमारे पास अगले दरवाजे से लगा हुआ एक छोटा कमरा, नहाने धोने के लिए था। हमें वह भी मिला जो हम अब तक चूक रहे थे, मलमूत्र से मुक्ति पाने के लिए एक छोटी कोठरी। इस मामले में तिब्बतियों की आदतें, अधिकांशतः अंतिम श्रेणी तक आकस्मिक होती हैं, कोई भी स्थान शौचालय के रूप में उचित समझा जाता है।

त्सारोंग अनेक रसोइयों को रखना बर्दाश्त कर सकता था। उसका रसोइया, कलकत्ता के सबसे अच्छे होटल में वर्षों तक रहा था और यूरोपियन खाने को अच्छी तरह समझता था। उसके भुने हुए मांस, बहुत अद्भुत होते थे, और मिठाई बनाने में वह पेस्ट्री (pastry) बनाने वाले रसोइये के रूप में सर्वोत्कृष्टता रखता था। रसोइयों में से दूसरा, चीन भेजा गया था और चीनी खाने के खजाने के साथ वापस लौटा था। त्सारोंग अपने अतिथियों को अज्ञात सुस्वादों से आश्चर्यचकित करना पसन्द करता था। हमें ये देखकर आश्चर्य हुआ कि अच्छे घरों में, कभी भी, औरतों को रसोइयों के रूप में नौकरी पर नहीं रखा जाता था वे केवल रसोइये की सहायक हो सकतीं थीं।

तिब्बतियों के खाने के समय, ठीक हमारे जैसे नहीं होते। कोई भोर में और वास्तव में अक्सर पूरे दिन, मक्खन वाली चाय पीता है। मैंने लोगों के बारे में सुना है, जो एक दिन में दो सौ कप पी जाते हैं, यद्यपि मैं दुस्साहस पूर्वक कहता हूँ कि ये अतिशयोक्ति है। दिन में दो मुख्य खाने होते हैं, एक दस बजे और दूसरा सूर्य छिपने के बाद। इनमें से पहला, त्सम्पा और कुछ कतरनों के भोजनों से भरा होता है, जो हमने अपने कमरे में लिया। शाम के खाने में, हमको अक्सर अपने मेजबान के साथ शामिल होने के लिए आमंत्रित किया जाता था। पूरा परिवार, एक बड़ी मेज के चारों ओर बैठता था। कई दौर चलते, और ये खाना, जिस पर घर का हर आदमी इकट्ठा होता, दिन भर का केन्द्र बिन्दु होता और दिन भर की घटनायें चर्चा में आतीं।

रात्रि के भव्य भोज के बाद, हम सभी रहने वाले कमरे में बैठे, जो अनेक कम्बल, खजाने और तस्वीरों से भीड़ भरा दिखता था। यहॉ हम सिगरेट और बीयर पीते। हमको अपने मेजबान के नवीनतम अभिग्रहीत संग्रहों की प्रशंसा करने के अवसर भी मिले, क्योंकि वह हमेशा कुछ नया खरीदते रहते थे। उनके पास एक आश्चर्यजनक रेडियो सेट था, जो किसी को, विश्व के सभी स्टेशनों को सुनाता था। उससे आवाज की प्राप्ति बहुत अच्छी थी, ''विश्व की छत (roof of the world)'' के ऊपर कोई वायुमण्डलीय विक्षुब्धियॉ नहीं होती हैं। तब वहॉ, चलाने के लिए नवीनतम रिकॉर्ड्स, निरीक्षण के लिये एक मूवी कैमरा, देखे जाने वाले फोटो के प्रवर्द्धन के लिए एक नया उपकरण, होते और एक शाम को, उसने एक थियोडोलाइट (theodolite) को खोला! त्सारोंग, इन सभी उपकरणों से पूरी तरह से परिचित था। मेरा ख्याल है कि इस शहर में किसी भी दूसरे की तुलना में उसको और भी शौक होंगे। हम उसकी तुलना में अधिक अच्छे घर की इच्छा नहीं कर सके। वह डाक टिकटों को इकट्ठा करता था और विश्व के सभी भागों में, लोगों के साथ पत्रव्यवहार रखता था–इस सबमें उसका पुत्र, जो एक भाषा विज्ञानी था, उसकी मदद करता था–और उसके पास, एक भली–भाँति चुनी हुई पश्चिमी पुस्तकों के एक सुन्दर जखीरे को शामिल करते हुए, पुस्तकालय था, इनमें से अनेक, उपहार थे क्योंकि हर युग का व्यक्ति, जो ल्हासा आया, इस घर में रुका, और उनमें से अधिकांश ने, अपनी यात्रा की स्मृति के रूप में पुस्तकों को छोड़ा।

त्सारोंग, सबसे अलग, एक उत्तम व्यक्ति था। उसने लगातार सुधारों को लागू करने का प्रयास किया और जब कभी भी सरकार अपनी महत्वपूर्ण समस्याओं में व्यस्त होती, उसे सलाह देने के लिए बुलाया जाता। वह देश भर में एक मात्र लोहे के पुल के लिए उत्तरदायी था। ये उसने भारत में बनवाया और जोड़ा था। तब इसे टुकड़ों में तिब्बत लाया गया और याकों और कुलियों के द्वारा टुकड़े–टुकड़े करके ढोया गया था। त्सारोंग, सर्वाधिक आधुनिक ब्राण्डों का, स्वयं बना हुआ (self made) एक व्यक्ति था और उसकी योग्यताओं ने उसे पश्चिमी देशों में भी एक अति विशिष्ट व्यक्ति बना दिया होगा।

उसका पुत्र जॉर्ज–उसने अपने पिताजी के चरणचिन्हों का अनुगमन करते हुए, अपने भारतीय स्कूल के नाम को रखा था। हमारी पहली मुलाकात में, हम उसकें ज्ञान और उसकी अभिरुचियों की विविधता से प्रभावित हुए थे। इस समय, फोटोग्राफी उसकी सनक थी और चित्र, जो उसने लिए, देखने लायक थे। एक शाम को, अपनी रंगीन फिल्म, जो उसने खुद बनाई थी, को दिखाते हुए उसने हमें आश्चर्य में डाल दिया। ये इतनी सफल और इतनी शोर रहित थी कि पहली बार में, कोई भी, प्रथम श्रेणी के एक सिनेमाघर में बैठे होने की कल्पना कर सकता था। तथापि, उसमें बाद में मोटर और पुली (pulley) के साथ कुछ अड़चन आ गईं, जिसको ठीक करने में आउफस्नाइटर और मैंने मदद की।

त्सारोंग के साथ हमारे भव्य रात्रिभोज, और पुस्तकों, जो हमने उससे और ब्रिटेन के दूतावास से उधार लीं थीं, ने हमें अपनी तरह से, शाम के मनोरंजन को उपलब्ध कराया। ल्हासा में सिनेमा या नाटकघर और कोई होटल या सार्वजनिक स्थान नहीं थे। सामाजिक जीवन, पूरी तरह से निजी घरों में कैद था।

चूँकि हम डरे हुए थे कि हमको प्रत्येक चीज को देखने से पहले छोड़ना न पड़े, हमने अपने दिनों को प्रभावों को इकट्ठा करने में व्यतीत किया। हमारे पास माफ किये जाने के कोई बड़े आधार नहीं थे, परंतु हमने अनुभव किया कि हम परेशानी के समय समर्थन के लिए, पूर्णतः अपने मित्रों के ऊपर निर्भर नहीं रह सकते थे, भले ही वे कितने भी अधिक उदार क्यों न रहे हों। हमने कई बार एक कहानी सुनी थी, जो हमें चेतावनी की तरह प्रतीत होती थी। सरकार द्वारा, एक अंग्रेज शिक्षक को, ल्हासा में एक यूरोपियन प्रकार का स्कूल प्रारम्भ करने के लिए कहा गया था और उसे एक लम्बा अनुबंध प्रस्तावित किया गया था। छः महीने बाद, उसने अपनी सम्पत्तियों को समेट लिया और भाग गया। प्रतिक्रियावादी भिक्षुओं ने उसके कार्य को असम्भव बना दिया था।

हमने दैनिक भेंटों को जारी रखा–इसलिए अनेक लोग हमसे मिलने आते थे–और इस प्रकार हमें विशिष्ट तिब्बतियों के घरेलू जीवन की अनेक अच्छी जानकारियॉ प्राप्त हुईं। एक बिन्दु था जिसमें हम, ल्हासा के लोगों की, अपने खुद के शहरों के निवासियों के साथ, उनके पक्ष में तुलना कर सकते थे। उनके पास हमेशा समय था।

तिब्बत अभी तक, आधुनिक जीवन की सबसे खराब चीज, कभी समाप्त न होने वाली भागदौड़ से दूषित नहीं हुआ था। यहॉ कोई सिर से ऊपर काम नहीं करता। अधिकारियों का जीवन आसान होता है। वे अपने कार्यालय में सुबह देर से आते हैं और शाम को जल्दी ही अपने घरों को वापस चले जाते हैं। यदि किसी अधिकारी के यहॉ अतिथि हैं या न आने का दूसरा कोई कारण है, वह अपने सहयोगियों को बुलाने और अपना प्रभार उन्हें देने के लिए, केवल अपने नौकर को भेज देता है।

महिलायें समान अधिकारों के सम्बन्ध में कुछ नहीं जानतीं और वे अति प्रसन्न हैं कि वे हैं। वे अपने चेहरों का श्रृंगार करने के लिए, मोती के अपने नेकलेसों को दुबारा पोने के लिए, नई सामग्री का चुनाव करने के लिए, पोशाकों के लिए, और अगली पार्टी में श्रीमती अमुक से किस प्रकार अधिक चमक कर आया जाए, ये सोचने में घंटों खर्च करती हैं। वे घर के रखरखाव, जो सबका सब नौकरों द्वारा किया जाता है, के सम्बन्ध में बिल्कुल चिंता नहीं करती। परंतु ये प्रदर्शन करने के लिए कि वह इस घर की मालकिन, एक महान महिला है, हमेशा चाबियों का एक बड़ा गुच्छा अपने आसपास, अपने साथ लिये रहती है। ल्हासा में हर एक तुच्छ वस्तु, ताले में रखी जाती और उस पर दुहरे ताले लगाये जाते हैं।

तब वहॉ माह–जोंग (mah-jongg) होता है। किसी समय ये खेल, एक सर्वव्यापी शौक था। सामान्यतः लोग इसके प्रति दीवाने थे और वे किसी भी दूसरी चीज–अधिकारिक कर्तव्यों और घर के रखरखाव और परिवार को भुलाते हुए, इसे रात–दिन खेलते थे। गॉव अक्सर बहुत ऊॅचे होते थे और हर आदमी–नौकर भी, जो कई बार, जिसको जमा करने में उन्हें वर्षों लगे थे, चंद घन्टों में ही गॅवा देने की कल्पना करते थे, खेलता था। अंत में, सरकार ने इसे अत्यधिक अच्छी चीजों में नहीं पाया। उन्होंने इस खेल के ऊपर पाबंदी लगा दी, माह–जोंग के सभी सेटों को खरीद लिया, और गुप्त दोषियों को भारी–भारी जुर्मानों और कठिन श्रम से दण्डित किया और उन्होंने इसे बंद कर दिया! मैंने इसके ऊपर कभी विश्वास नहीं किया होता, परंतु यद्यपि, हर एक इसको दुबारा खेलने के लिए तरसता और ललचाता था, उन्होंने मनाही का सम्मान किया। माह–जोंग को रोक दिये जाने के बाद, धीमे धीमे ये स्पष्ट होने लगा कि इस महामारी के दौरान, हर दूसरी चीज किस प्रकार उपेक्षित की गई थी। आराम के दिन, शनिवार को, लोग अब शतरंज या हालमा (halma) (एक खेल, जिसमें खिलाड़ी अपने मोहरों को, विरोधी खिलाड़ी के घर में घुसाते हैं) खेलते थे या अपने आपको शब्दों की हानिरहित पहेलियों और खेलों में व्यस्त रखते थे।

सोलह फरवरी को हमें ल्हासा में एक महीना हो गया, हमारा भाग्य अभी भी अनिर्णीत था; हमारे पास कोई काम नहीं था और हमें अपने भविष्य की चिंता थी। उस खास दिन, विदेश मंत्रालय से एक भेजे गये राजदूत के रूप में, औपचारिक दिखता हुआ काबशोपा हमारे पास आया। हम उसके हावभाव से समझे कि उसके पास हमारे लिए कोई बुरी खबर है। उसने हमें बताया कि सरकार ने, तिब्बत में हमारे लगातार निवास को अनुमोदित नहीं किया है और हमको भारत में आगे की ओर चल देना चाहिए। हमने अपने खुद के विचारों में, इस सम्भावना का हमेशा ही विचार किया था परंतु हम यथार्थ के द्वारा घबराये हुए थे। हममें विरोध प्रदर्शन शुरू किया, परंतु काबशोपा ने अपने कंधे झटकाये, और कहा हमको इसे उच्चालयों (higher quarters) में करना चाहिए।

इस दुःखभरी खबर के प्रति हमारी अगली प्रतिक्रिया थी, पूर्वी तिब्बत के सभी नक्शों को, जो हम ल्हासा में पा सकें, इकट्ठा करना। शाम को, हमने एक मार्ग चिन्हित करने और योजनाओं को बनाने का काम शुरू किया। हम एक ही चीज पर अड़िग थे– हमारे लिए, अब कांटेदार तार और अधिक नहीं! हम फिर भी भाग जायेंगे और अपने भाग्य को चीन में आजमायेंगे। हमारे पास कुछ धन था और हम अच्छी तरह से युक्तियों से युक्त थे। किरानों के भण्डारों में पड़े रहना मुश्किल नहीं होगा परंतु मुझे अपनी सियाटिका के बारे में सोचना था, जो अच्छी नहीं हो रही थी। आउफस्नाइटर को, ब्रिटेन के दूतावास में मुझे देखने के लिए, पहले ही एक डॉक्टर मिल गया था। उसने कुछ चूर्ण सुझाये थे और मुझे सुइयॉ लगाई थीं, परंतु उन्होंने कुछ अच्छा नहीं किया। क्या ये सब हमारी योजनाओं को तोड़ने वाली, बेकार की शिकायत थी ? मैंने निराश जैसा महसूस किया।

अगले दिन, टूटे हुए दिल से, जैसा मैं था, लंगड़ाता हुआ दलाईलामा के मातापिता के घर की तरफ चलने लगा। हमने सोचा कि उनका हस्तक्षेप हमारे लिए सहायक होगा। पवित्र मां और लोबसांग सामटेन ने हमको युवा देवराज को पूरी कहानी सुनाने का वायदा किया और ये अनुभव किया कि वह हमारे लिए कुछ सुनिश्चित अच्छे शब्द कहेंगे। उन्होंने वास्तव में ऐसा किया, और यद्यपि युवा दलाईलामा के पास, अभी तक कोई कार्यकारी शक्तियॉ नहीं थीं, परंतु उनकी शुभेच्छा, निश्चितरूप से हमारे लिए उपयोगी थी। इस बीच, आउफस्नाइटर, सभी चीजों को चलाये रखने के उद्देश्य से और किसी भी सावधानी को नहीं चूकते हुए, एक परिचित से दूसरे परिचित तक गया। हमने अंग्रेजी में एक याचिका तैयार की, जिसमें हमको तिब्बत में बने रहने की आज्ञा दिये जाने के अपने सभी तर्कों को, अपने पक्ष में प्रस्तावित किया।

भाग्य, हमारे साथ, हमारे विरुद्ध षडयंत्र रचता प्रतीत हुआ, क्योंकि मेरी सियाटिका सहसा इतनी खराब हो गई कि मैं हिल नहीं सकता था। भयंकर दर्द हुआ और मुझे बिस्तर में रहना पड़ा, जबकि आउफस्नाइटर, जब तक

कि उसके पैर नहीं सूज गये, पूरे शहर के आसपास घूमा। ये बहुत आतंक के दिन थे।

इक्कीस फरवरी को हमारे दरवाजे पर कुछ सैनिक दिखाई दिए। वे हमसे मिले, जैसा कि उन्हें हमें भारत में छोड़ देने के लिए अपने सामान को बांधने में सहायता करने का आदेश दिया गया था। हमको अगले दिन जल्दी ही प्रारम्भ करना था। ये सभी चीजों का अंत प्रतीत हुआ, परंतु मैं कैसे यात्रा करूंगा ? मैं बिल्कुल नहीं चल सकता था, खिड़की तक भी नहीं जा सकता था, जैसेकि मैंने उसके लेफ्टिनेंट को प्रदर्शित करने का प्रयास किया। उसने एक असहाय प्रभाव डाला, सभी सैनिकों की तरह से उसे भी आदेशों को मानना पड़ा, उसे स्पष्टीकरण स्वीकार करने की पात्रता नहीं थी। अपने आपको साथ खींचते हुए, मैंने उसे अपने उच्चतर अधिकारी को यह बताने के लिए कि जब तक कि मुझे ले जाया न जाए, मैं ल्हासा को नहीं छोड़ सकता था, कहा। सैनिक मुक्त हो गए।

हमने तत्काल ही, त्सारोंग से सलाह और सहायता देने की प्रार्थना की, परंतु उसके पास हमें बताने के लिए ताजा कुछ नहीं था। उसने कहा कि कोई भी आदमी सरकार के आदेशों का प्रतिरोध नहीं कर सकता। अपने कमरे में अकेले मैंने, अपने सियाटिका को कोसा। यदि मैं स्वस्थ होता, तो मुझे कोई चीज भागने से रोक नहीं सकती थी, और हम उस विशेष रात को भाग गये होते। हमने कांटेदार तारों के पीछे, अधिकतम आराम के घरों में रहने की बजाय, परेशानियों और खतरों को मंजूर किया। हमारे लिए कल चलना उतना आसान नहीं होगा, और मैंने कड़वेपन से, एक निष्क्रिय प्रतिरोध के रवैये को धारण करना तय किया।

परंतु अगले दिन सुबह कुछ नहीं हुआ–कोई सैनिक नहीं आए, और कोई खबर नहीं थी। हमने आशंका के साथ काबशोपा को बुलाया, वह व्यक्तिगतरूप से आया और सन्न रहता दिखाई दिया। आउफस्नाइटर ने स्पष्ट किया कि मैं कितना बीमार था और हमारी समस्या पर चर्चा करना शुरू किया। उसने एक गम्भीर मुद्रा के साथ कहा कि क्या, ''एक किसी सुलहनामे पर पहुॅचना, सम्भव नहीं होगा?''

इस बीच, हम इस संदेह पर पहुॅचे कि शायद, इस पूरे कार्य के पीछे ब्रिटेन के लोग थे और उन्होंने तिब्बत को हमें देने के लिए कहा होगा।

हमने महसूस किया कि तिब्बत एक छोटा देश था और उसके अपने पड़ौसियों के साथ, अच्छे सम्बन्ध बनाये रखना उसके हित में था। इंग्लैण्ड के साथ, जर्मन के शिविर बंदियों के जोड़े जैसे, इतने छोटे से मामले के ऊपर, गलतफहमी की जोखिम उठाने में क्या लाभ था। इसलिए आउफस्नाइटर ने प्रस्तावित किया कि अंग्रेज डॉक्टर, जो उस समय दूतावास में, प्रभारी अधिकारी के रूप में काम कर रहा था, से मेरी हालत के सम्बन्ध में एक प्रमाण–पत्र देने के लिए, प्रार्थना की जानी चाहिए। काबशोपा ने ऐसे उत्साह के साथ इस सुझाव को स्वीकार किया, कि हमने एक दूसरे के ऊपर, चोरी से एक नजर मारी और ये सुनिश्चित महसूस किया कि हमारे संदेह युक्तिसंगत थे।

दिन के समय, डॉक्टर मुझसे मिलने आया और उसने मुझे सूचित किया कि हमारे जाने की तिथि पर निर्णय लेना, सरकार के हाथों में सौंप दिया गया है। उसने मुझे रोक पत्र दिये, जिन्होंने मेरा कोई भला नहीं किया। मुझे त्सारोंग से ऊष्मारोधी ऊन की एक भेंट के रूप में अधिक सुख मिला।

मैंने अब अपनी बीमारी से उबरने की शुरूआत कर दी थी, जिसके लिए मैं दृढ़ निश्चयी था, जो हमारी योजनाओं को अब और अधिक आड़ा–तिरछा नहीं कर सकेगी। अपनी संकल्प की शक्ति पर पूरी तरह जोर ड़ालते हुए, मैंने प्रतिदिन खुद व्यायाम करने के ऊपर बल दिया। एक लामा ने मुझे अपनी पीठ पर, आगे और पीछे, मेरे पैर के तलवों से लगा कर ऊपर तक, एक बेलन को घुमाने की सिफारिश की थी। इसे मैंने एक कुर्सी में बैठ कर प्रतिदिन घंटों तक किया। व्यायाम अत्यधिक कष्टदायी था, परंतु धीमे–धीमे इसने मेरी हालत को सुधार दिया और अंत में, मैं उद्यान में जाने, और अपने आपको एक बूढ़े आदमी की तरह, बसन्त की धूप में गरमाने के लिए सक्षम हुआ।

अब हम पूरे बसन्त में थे। मार्च आ चुका था और महीने की चार तारीख को नववर्ष–सभी तिब्बती त्यौहारों में सबसे बड़ा, जो तीन हफ्तों तक चलता है, के उत्सव प्रारम्भ हुए। दुःख! मैं इसमें भाग नहीं ले सका। मैंने दूरी पर ढ़ोल और तुरहियॉ बजती हुई सुनीं और घर में आधिपत्यमयी उत्तेजना के साथ देखा कि ये सब कितना महत्वपूर्ण था। त्सारोंग और उसका पुत्र, हर दिन मुझसे मिलने और अपनी नई भव्य रेशमी पोशाकों और कसीदाकारी का प्रदर्शन करने के लिए आये। आउफस्नाइटर, वास्तव में, हर जगह गया और शाम को इस सबके सम्बन्ध में मुझे बताया।

ये वर्ष ''अग्नि–श्वान वर्ष (Fire-Hound year) था'' चार मार्च (या इसके आसपास की कोई तारीख, चूँकि–हमारे ईस्टर की भाँति, तिब्बती नववर्ष लचीला होता है।), नगर का दण्डाधिकारी, अपने अधिकारों को, लोगों की धर्म निरपेक्षता के प्रदर्शन के सांकेतिकरूप में भिक्षुओं को–जिनके ये मूलरूप से थे, दे देता है। ये एक कठोर और विकट राज्य की शुरूआत है। प्रारम्भ करने के लिए, पूरा का पूरा स्थान व्यवस्थित किया जाता है और इस अवधि में ल्हासा को उसकी सफाई के लिए जाना जाता है–जो एक सामान्य स्थिति नहीं है। इसी समय, एक प्रकार की नागरिक शांति प्रकट होती है। सभी झगड़े समाप्त हो जाते हैं। सरकारी कार्यालय बंद रहते हैं, परंतु आनन्दमय जुलूस की अवधि को छोड़ कर, गली के मोलभाव करने वाले व्यापारियों की चहचहाहट, हमेशा से अधिक होती है। जुआ सहित सभी अपराध और आक्रमण, विशेष कठोरता के साथ दण्डित किये जाते हैं। भिक्षु, निर्मम न्यायाधीश होते हैं और भयानक मारपीट तथा कोड़े लगाने की सजा देने के अभ्यस्त होते हैं, जो कभी–कभी शिकार को मृत्यु तक पहुँचा देती है। (यद्यपि ये सत्य है कि ऐसे प्रकरणों में, राज्य का उच्च अधिकारी हस्तक्षेप करता है और उत्तरदायी व्यक्तियों के प्रति व्यवहार करता है।)।

उत्सवों के मध्य में, हम भुलाये गए जैसे प्रतीत हुए और हमने चिंता की कि हम इस पर दूसरे लोगों का ध्यानाकर्षण, न होने दें। सरकार शायद, अंग्रेज डॉक्टर के निर्णय से कि मैं यात्रा करने के लिए, अभी भी, ठीक नहीं था, संतुष्ट थी। हमको बहुमूल्य समय मिल रहा था। ठीक होना, मेरे लिए यह बड़ी बात थी, और तब शायद हम चीन के लिए अपने पलायन को महसूस कर सकते थे।

बाग में बढ़ती हुई गर्मी का आनन्द लेते हुए, दिन पर दिन, मैं अपने आपको धूप खिलाता रहा, इसलिये कुल मिला कर मुझे तब अधिक आश्चर्य हुआ, जब मैं एक सुबह, बर्फ की गहराई में, बसन्त की पूरी हरियाली को पाने के लिए उठा। ये कभी–कभार ही होता है कि वर्ष में, ल्हासा में इतनी देरी से बर्फ गिरती है, जो एशिया के हृदय में इतने गहरे होते हैं कि वायुमण्डलीय दबाव मुश्किल से ही यहॉ तक पहुँचते हैं। सर्दियों में भी, बर्फ बहुत देर तक बची नहीं रहती। इस अवसर पर ये शीघ्र ही पिघल गई। इसने कुछ अच्छा किया था क्योंकि रेत और धूल को दलदल में बदल देने के द्वारा, इसने बाद की धूल भरी ऑधियों से होने वाली परेशानियों को घटा दिया था।

ऐसे तूफान, नियमितरूप से, हर बसन्त में वहॉ आते हैं और लगभग दो महीने तक जारी रहते हैं। वे सामान्यतः शहर में दोपहर बाद, शाम के करीब पहुँचते हैं। कोई उन्हें, भयानक तेजी के साथ, बड़े काले बादलों के रूप में देख सकता है। पोटाला महल अदृश्य हो जाता है और हर कोई सहसा घर की तरफ दौड़ता है। गली का जीवन रुक जाता है, और खिड़कियॉ खड़खड़ाती हैं, और खेतों में जानवर विरक्त की भाँति, अपनी पूंछों को हवा की तरफ मोड़ लेते हैं और तब तक धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा करते हैं जब तक कि वे दुबारा फिर से चरना प्रारम्भ न कर सकें। साथ–साथ, असंख्य आवारा कुत्ते, कोनों में भागने की जल्दी करते हैं। (सामान्यतः वे उतने शान्त नहीं होते। एक दिन आउफस्नाइटर फटे हुए लबादे के साथ घर आया–उसके ऊपर कुत्तों ने हमला किया था, जिन्होंने एक घोड़े को मार डाला था और मरते हुए घोड़े को लालच से हड़प लिया था; जानवर ने खून का स्वाद ले लिया था)

धूल भरे तूफानों का समय, वर्ष का सबसे खराब समय होता है। चूँकि ल्हासा में दुहरी खिड़कियॉ नहीं हैं, किसी के घर में बैठे रहते हुए भी, उसके दांतों के बीच में बालू आ जाती है। केवल एक रचनात्मक सुख, जो इन बसन्ती तूफानों से कोई पा सकता है, वह है इस बात की जानकारी कि सर्दियॉ वास्तव में, समाप्त हो गई हैं। सभी बागवान जानते हैं कि अब डरने के लिए अधिक कुहरा नहीं है। इस मौसम में चराई के मैदान, नहरों के साथ–साथ हरियाली की अपनी पहली श्वांस पाते हैं और बुद्ध के बाल फलने–फूलने प्रारम्भ हो जाते हैं। ये वही है, जिसे वे कैथेड्रल के दरवाजे पर, फर के पेड़ का प्रसिद्ध रोना कहते हैं। बसन्त के समय में, पीले रंग के बढ़िया फूलों के साथ पतली सी लटकती हुई शाखायें, इस काव्यात्मक नाम को सार्थक बनाती हैं।

जब मैं लंगड़ा कर आसपास चलने के योग्य था, मैं अपने आपको, एक या दूसरे तरीके से उपयोगी बनाने के प्रति आशंकित था। त्सारोंग ने अपने बगीचे में, नये फलों के सैकड़ों पेड़ लगाये थे। वे सभी, बीजों से उग कर बड़े हो गये थे और लेकिन अभी तक उनमें फल नहीं आये थे। जॉर्ज (मेजबान के पुत्र) के साथ, अब मैं उन्हें व्यवस्थित ढंग से रोपने के अपने काम पर जाने के लिए तैयार हुआ। इसने घरेलू कामकाज पर हॅसने के लिए, कुछ नयापन दिया। कलम लगाना, तिब्बत में, व्यावहारिकरूप से अज्ञात है और इसके लिए वहॉ कोई शब्द नहीं है। उन्होंने इसे ''विवाह कराना (marrying)'' कहा और इस सब को अत्यधिक आनन्दप्रद पाया।

तिब्बती लोग, बचकाने हास्य से भरे हुए, प्रसन्न, छोटे लोग होते हैं। वे हॅसने का कोई भी मौका पाकर कृतज्ञ होते हैं। यदि कोई चूकता है या भूलता है, वे घंटों तक अपने आप इसका आनन्द लेते हैं। दूसरों के दुर्भाग्य में आनन्द, लगभग सार्वभौमिक है, परंतु कैसे भी, इसका कोई दुराशय नहीं होता। वे किसी भी चीज की और हर एक की नकल उतारते हैं। चूॅकि वहॉ समाचार पत्र नहीं होते, वे गानों और कटाक्ष के माध्यम से, अपने आलोचना, अभद्र घटनाओं या आपत्तिजनक व्यक्तियों में शामिल होते हैं। लड़के और लड़कियॉ, शाम को, नवीनतम कविताओं को गाते हुए, पारखोर में हो कर टहलते हैं। सर्वोच्च व्यक्तियों की भी, उन्हें तोड़ने के लिए, खिंचाई की जाती है। कई बार, सरकार किसी विशेष गाने को गाने से मना करती है, परंतु इसको गाने के लिए, किसी को भी दण्डित नहीं किया जाता। अब ये सार्वजनिक गाना नहीं रहता, परंतु निजी रूप में ये काफी हद तक सुना जाता है।

पारखोर, नव वर्ष पर अधिकांशतः भीड़ भरा रहता है। ये गली कैथेड्रल के चारों ओर एक वृत में घूमती है और शहर का अधिकतम जीवन इसमें केन्द्रित रहता है। अधिकांश बड़े व्यापार गृह यहीं हैं, और यहॉ सभी धर्मों के जुलूस और सैन्य जुलूस प्रारम्भ तथा समाप्त होते हैं। शाम के करीब, विशेष रूप से सार्वजनिक छुट्टियों में, पवित्र नागरिक अपनी प्रार्थनाओं को गुनगुनाते हुए, पारखोर पर भीड़ लगा लेते हैं और अनेक स्वामिभक्त, एक के बाद एक दण्डवतों से, पूरी दूरी को तय करते हैं। परंतु ये केवल पारखोर में प्रदर्शित की जाने वाली कर्तव्यपरायणता नहीं है। आप अपनी नई फ्रॉक का प्रदर्शन करते हुए और भद्र पुरुषों के नये खून के साथ, थोड़ा सा आनन्द लेते हुए, सुंदर औरतें भी पा सकते हैं। सरल मूल्यों की महिलायें भी, यहॉ व्यवसायिक हो जाती हैं।

एक शब्द में, पारखोर, व्यापार, सामाजिकता, और अदाकारी का केन्द्र है।

पहले तिब्बती महीने की पन्द्रह तारीख तक, मैं इतना अच्छा हो गया था कि मैं भी उत्सवों में शामिल हो सकता था। पन्द्रहवॉ दिन, महान दिनों में से एक है। वहॉ एक भव्य जलूस निकलता है, जिसमें दलाईलामा भाग लेते हैं। त्सारोंग ने, पारखोर पर देखने के लिए, हमें अपने घरों में से, एक खिड़की उपलब्ध कराने का वायदा किया था। चूॅकि किसी भी आदमी को, भद्र व्यक्तियों के प्रमुख, जो नपे तुले कदमों के साथ गलियों में चलते हैं, से अधिक ऊॅची ऊॅचाईयों पर रहने की आज्ञा नहीं है, हमारे स्थान आधारतल पर थे। ल्हासा का कोई भी घर, दो मंजिल से अधिक ऊॅचा नहीं हो सकता, चूंकि इसे कैथड्रल या पोटाला के प्रति निंदा के रूप मे समझा जाता है। इस नियम का कड़ाई से पालन किया जाता है और जब दलाईलामा या कोई राज्य अधिकारी जलूस में भाग लेता है, लकड़ी की मढ़इयॉ–जिन्हें आसानी से टुकड़ों में तोड़ा जा सकता है–जिसे भद्र पुरुषों में से कुछ, गर्म मौसम में अपनी छतों पर रख लेते हैं, जादू की तरह गायब हो जाती हैं।

जब गलियों में हो कर, चटकदार रंगों में भीड़ प्रवाहित हुई, हम श्रीमती त्सारोंग के साथ अपनी खिड़की पर बैठे। हमारी मेजबान, एक मित्रवत् बूढ़ी महिला थीं, जिन्होंने हमें हमेशा मॉ की परवरिश दी थी। हम, आसपड़ोस, जो हमारे लिए एकदम अनजान था, में उनके साथ से बहुत प्रसन्न थे, और उनके मित्रवत् परिचित सुरों ने हमको उन भद्र निगाहों को, जो हमारी नजरों से मिलीं, समझाया।

हमने जड़े हुए अजीब ढॉचों को, कई बार आधार से तीस या अधिक फीट की ऊॅचाई तक उठते हुए देखा। उन्होंने हमें बताया कि ये मक्खन की आकृतियों के लिये थे। मक्खन से बनी हुई ये कलाकृतियॉ, सूर्य छिपने के तुरंत बाद, भिक्षुओं के द्वारा, साथ लायी जाती हैं। मठों में विभाग होते हैं, जहॉ विशेषरूप से (ईश्वरीय) उपहार प्राप्त भिक्षु, अपने अपने क्षेत्रों के वास्तविक कलाकार, गूंथते हैं और मक्खन से विभिन्न रंगों की आकृतियों के प्रारूप बनाते हैं। ये कार्य, जिनमें असीम अथक धैर्य की आवश्कता होती है, अक्सर सुन्दरतम सोने के महीन तारों में होता है। चूॅकि सरकार सबसे अच्छे के लिए इनाम देती है, और एक अकेली रात की तैयारी में, इन अच्छी वस्तुओं की प्रतियोगिता होती है। पिछले अनेक वर्षों तक, ग्यू (Gyu) का मठ विजेता रहा है। शीघ्र ही, पारखोर की गली का पूरा का पूरा सामना, इन चटकदार रंगों के मक्खन के पिरामिडों के पीछे छिप चुका था। उनके सामने लोगों का एक अंतहीन समूह था, और हमने आश्चर्य किया कि क्या हम हर चीज को देख पायेंगे। जब ल्हासा की छावनियॉ, तुरहियों और नगाड़ों की आवाज के साथ मार्च करती हुई आईं, अंधेरा बढ़ता जा रहा था। वे गली में पंक्तिबद्ध खड़ी हो गईं और देखने वालों को, सड़क को खाली बनाये रखते हुए, पीछे की ओर दबा दिया गया।

शीघ्र ही, रात घिर आई, परंतु शीघ्र ही, दृश्य चटकदार रोशनियों के झुण्ड से प्रकाशित हो गया। वहॉ मक्खन के हजारों दीपक टिमटिमा रहे थे और उनके साथ, अपने तीव्र चमकते हुए प्रकाश वाली पेट्रोलियम की दवाब वाली कुछ लालटेनें भी थीं। कार्यवाहियों पर अधिक प्रकाश को फैंकता हुआ चन्द्रमा, छतों के ऊपर आया।

तिब्बत में महीने चन्द्रमास होते हैं, इसलिए पन्द्रहवीं तारीख को, यह एक पूर्ण चन्द्रमा था। हर चीज तैयार थी और मंच व्यवस्थित था और बड़ा त्यौहार, अब प्रारम्भ हो सकता था। प्रत्याशा में, भीड़ की आवाजें शान्त थीं। महान क्षण आ चुका था।

कैथेड्रल के दरवाजे खुले, और दांये बांये दो मठाध्यक्षों द्वारा समर्थित नौजवान दैवीय राजा, धीमे–धीमे बाहर आया। लोगों ने आदर में नमन किया। उत्सव के कठोर नियमों के अनुसार उन्हें स्वयं ही दण्डवत् करना चाहिए था, परंतु आज स्थान की कोई गुंजाइश नहीं है। जैसे ही वह पहुँचे, जैसे कि मक्का का खेत हवाओं के सामने झुक जाता है, उन लोगों ने नमन किया। कोई भी ऊपर देखने का दुस्साहस नहीं कर सकता था। दलाई लामा ने, नपे–तुले कदमों से, पारखोर की अपनी परिक्रमा प्रारम्भ की। समय–समय पर वे मक्खन की आकृतियों के सामने रुके और उनको घूर कर देखा। उनके पीछे, सभी उच्च गरिमामय लोगों और भद्रों का एक चमकदार ठाटवाट चल रहा था। अधिकारी, उनके पीछे, अपने पद के क्रम में चल रहे थे। जलूस में, हमने अपने दोस्त त्सारोंग को पहचान लिया, जो दलाईलामा के समीप ही, उनके पीछे चल रहा था–सभी भद्रों के समान, उसके भी हाथ में एक धुंआ देती हुई अगरबत्ती थी।

भयाक्रान्त भीड़ शान्त बनी रही। केवल भिक्षुओं का संगीत सुना जा सकता था–नफीरियॉ (oboes), तुरहियॉ (tubas), पतीली के ढोल (kettledrums), और चिनेल्स (chinels)। ये किसी दूसरे विश्व के दृश्य, एक अनजानी अवास्तविक घटना जैसा था। खिलखिलाते हुए दीपकों की पीली रोशनी में, ढ़ाले गये मक्खन की महान आकृतियॉ जीवित होती हुई प्रतीत हुईं। हमने इसकी प्रशंसा की। हमने अपने आप को अनजान फूलों को देवताओं की ओर उछालते हुए देखा और देवताओं की पोशाकों को रगड़ खाते हुए सुना। इन अनिष्टसूचक आकृतियों के दैत्याकार चेहरे, विरूपण के साथ विकृत कर दिये गये थे। तब दैवीय शासक ने आशीर्वाद के रूप में अपना हाथ उठाया।

अब जीवन्त बुद्ध समीप आ रहा था। वह हमारी खिड़की के काफी नजदीक से हो कर गुजरा। औरतें गहरी श्रद्धा के साथ खड़ी हो गईं और उन्होंने मुश्किल से ही सांस लेने का दुस्साहस किया। भीड़ जम गई थी। गहराई से चलते हुए, हमने मानो कि, अपने आपको इस शक्ति के जादू वाले वृत में खींच लिये जाने के भय से, अपने आपको औरतों के पीछे छिपा लिया।

हम अपने आपसे से कहते रहे, ''ये केवल बच्चा है।'' वास्तव में एक बच्चा, परंतु हजारों केन्द्रीकृत आस्थाओं का दिल, उनकी प्रार्थनाओं का, इच्छाओं का, आशाओं का सार। भले ही ये ल्हासा हो या रोम–सभी एक आशा के ऊपर केन्द्रित हैं : ईश्वर को पाना और उसकी सेवा करना। मैंने अपनी ऑखें बंद कर लीं और गुनगुनाई जाने वाली प्रार्थनाओं और बज रहे संगीत तथा शाम के आकाश में ऊपर उठती हुई मधुर सुगन्ध पर ध्यान दिया।

शीघ्र ही, दलाईलामा ने पारखोर के आसपास की अपनी यात्रा पूरी कर ली और तुग लग खान (Tug Lag Khan) में गायब हो गये, सैनिकों ने अपने बैण्ड के संगीत की धुनों के ऊपर मार्च किया।

मानो सम्मोहन की निद्रा से जगे हुए, लाखों दर्शक, व्यवस्था से भगदड़ में बदल गये। ये परिवर्तन अतिरेकपूर्ण और सहसा था। भीड़ में से उन्मादपूर्ण आवाजें और जंगली ढंग के संकेत, हावभाव आए। एक क्षण पहले, वे रो रहे थे और प्रार्थना कर रहे थे या एक चित्राकर्षक ध्यान में डूबे हुए थे, और अब वे पागलों की भीड़ हैं। रक्षक भिक्षुओं ने अपने कार्य प्रारम्भ किये। अपने कंधों पर गद्दियॉ बॉधे और खुद को और अधिक भयानक प्रदर्शित करने के लिए, काले किये हुए चेहरों के साथ, वे लम्बे–चौड़े व्यक्ति होते हैं। वे अपने कोड़ों के साथ आसपास घूमते हैं, परंतु भीड़ उन्हें पागलपन से, मक्खन की आकृतियों के आसपास दबाती है, जो अब उलट जाने के खतरे में होती हैं। जो चोट खाये हुए होते हैं, वे भी मैदान में वापस लौट आते हैं। कोई सोचता है कि उनको दैत्यों ने कब्जे में कर रखा था। क्या वे वास्तव में वे ही व्यक्ति हैं, जो ठीक अभी, एक बच्चे के सामने दण्डवत् कर रहे थे।

अगली सुबह गलियॉ खाली थीं। मक्खन की आकृतियॉ कहीं ले जाई गई थीं, और आदर की मूर्छा या पहले वाली रात का कोई भी चिन्ह, वहॉ शेष नहीं रहा था। बाजार की दुकानें, चबूतरों, जिन पर मूर्तियॉ रखी थीं, का स्थान ले चुकी थीं। चटकीले रंगों से बनाई गई संतों की मूर्तियॉ पिघल चुकी थीं और अब, ईंधन के रूप में दीपकों के उपयोग में लाई जायेंगी–या जादुई दवाईयॉ बना दी जायेंगीं।

शरण प्रदत्त

अनेक लोग, हमको देखने आये। दूर और पास से, सब तरफ से, तिब्बती लोग, नव वर्ष का उत्सव देखने के लिए यात्रा करके ल्हासा में आए। उनमें वे लोग भी थे, जिनको हम अपनी यात्रा के कारण जानते थे। उनके लिए हमें ढूंढना मुश्किल नहीं था, क्योंकि हम अभी भी, बहुत चर्चित लोगों में थे, और हर बच्चा जानता था कि हम कहॉ रहते थे। हमारे लिए कुछ सूखे मांस की भेंट, जिसकी ल्हासा में अति सराहना होती है, लाए। इसके अलावा, हमने लोगों से जाना कि अधिकारी, जिनके जिलों से हम गुजरे थे, सरकार के द्वारा गम्भीररूप से दोषी ठहराये गये हैं। हमें ये महसूस करके दुःख हुआ कि जिन लोगों ने इतने अच्छे मैत्रीपूर्ण ढंग से हमारा स्वागत किया था, उन लोगों ने हमारे कारण ऐसा असुखद कष्ट उठाया है। परंतु ऐसा दिखाई दिया कि उन्होंने इसे बिना असंतोष के झेला। हम एक बोन्पो को मिले, जिसको हमने यात्रा के अपने पुराने परमिट से धोखा दिया था, और वह केवल हॅसा और हमें दुबारा देख कर प्रसन्न दिखाई दिया।

इस वर्ष नव वर्ष के उत्सव, बिना किसी दुर्घटना के समाप्त नहीं हुए। एक दुर्घटना, जिसने अधिक ध्यानाकर्षित किया, पारखोर में हुई।

हर वर्ष, वे ऊॅचे–ऊॅचे झण्डों के डंडों को, भारी पेड़ के तनों से बना कर, एक दूसरे के साथ जोड़ कर लगाते हैं। ये दूर के स्थानों से लाये जाते हैं और उन्हें ल्हासा तक लाना, एक बड़ा काम होता है। ये बहुत ही घटिया तरीके से व्यवस्थित किया जाता है, और मुझे तब नाराजगी हुई, जब मैंने पहली बार, अंदर आते हुए एक जुलूस को देखा। इसने मुझे वोल्गा (Volga) के नाविकों की याद दिला दी। लोग लगभग हर तने को खींच रहे थे, जो उनकी कमर के साथ, रस्से से बंधा हुआ था। वे मेहनत के साथ धीमे चलते, एक दूसरे के साथ कदम से कदम मिलाते हुए, एक नीरस से गाने को गाते थे। वे पसीना बहाते थे और दुःखी थे, परंतु उनका मेठ, जो उनका नेतृत्व कर रहा था, उन्हें आराम के लिए समय न देने के लिए गाता था। ये बंधुआ मजदूरी, लगान के बदले में, उसका एक भाग होती है। ढोने वालों को सड़क किनारे के गॉव से चुना जाता है और जब वे अगली बस्ती तक आ जाते हैं, तब उन्हें बर्खास्त किया जाता है। नीरस गाने, जिनके साथ वे अपने बोझ को खींचते हैं, अपने काम की गुरुता को घटाने के लिए, उनके दिमागों को विचलित करने के लिए, गाये जाते हैं। मैंने सोचा कि अपनी सांस बचाए रखने के लिए, उनको कुछ अच्छा करना चाहिए। एक प्रकार का मारक त्याग, जिसके साथ वे अपने आपको इस कमरतोड़ कर के रूप में देते थे, मुझे हमेशा क्रोधित करता था। अपने आधुनिक काल के उत्पाद के रूप में, मैं नहीं समझ सका कि तिब्बत के लोग, किसी भी प्रकार की प्रगति का, इतने दृढ़तापूर्वक विरोध क्यों करते थे। उन्हें आदमियों के द्वारा ढोये जाने के बजाय, वहॉ इन भारी बोझों को लाने का, स्पष्टरूप से कुछ अच्छा तरीका होना चाहिए। चीनी लोगों ने हजारों साल पहले पहिए को खोजा और उसका उपयोग किया। परंतु तिब्बती इसके लिए कुछ नहीं करेंगे, यद्यपि इसका उपयोग उनके यातायात और वाणिज्य को एक तगड़ा समर्थन देगा, और देश भर में जीवनस्तर को ऊॅचा उठा देगा ।

बाद में, जब मैं सिंचाई के कार्यों में लगाया गया, मैंने विभिन्न खोजें कीं, जिन्होंने मेरे विश्वास को मजबूती दी कि अनेक शताब्दियों पहले तिब्बती पहियों को जान चुके थे और उनका उपयोग कर चुके थे। हमने कपड़ों की अलमारियों जितने बड़े, पत्थरों के सैकड़ों खण्ड ढूंढ कर निकाले। ये दूरस्थ खदानों से, जहॉ वे गड़े हुए थे, यांत्रिक तरीकों को छोड़ कर, किसी और तरीके से वहॉ नहीं लाये जा सके होंगे। जब मेरे कर्मियों ने ऐसे खण्ड को एक स्थान से दूसरे स्थान तक ढोकर लाना चाहा, पहले उन्होंने इसे आठ टुकड़ों में चीरा।

मैं अधिक, और अधिक कायल हुआ कि तिब्बत के महान दिन, अतीत से सम्बन्धित थे। वहॉ, 763 ई0 पू0 का, पत्थर का एक चौकोर स्मारक है, जो मेरे सिद्धान्त का गवाह है। इसमें ये तथ्य लिखा गया है कि उस साल में, तिब्बती सेनायें, चीन की राजधानी के प्रवेश द्वारों तक पहुॅच चुकीं थीं और उन्होंने चीनी लोगों से, शांति की अपनी शर्तों को मनवाया, जिसमें चीनी रेशम की पचास हजार गांठों का वार्षिक शुल्क शामिल था।

और तब वहॉ पोटाला का महल है, जो तिब्बत की महानता के समय से ही रहा होगा। ऐसी इमारत को अब खड़ा करने के लिए, कोई भी आदमी, आज सोच भी नहीं सकता। मैंने पत्थर का काम करने वाले एक कारीगर से, जो मेरे लिए काम कर रहा था, एक बार पूछा था कि ऐसी इमारतें बाद में क्यों नहीं बनाई जा सकीं। उसने क्रोध सहित क्षोभ से उत्तर दिया कि पोटाला, देवताओं का किया हुआ काम था। आदमी कभी भी, इस प्रकार

की चीज को प्राप्त नहीं कर सकते। इस आश्चर्यजनक इमारत पर, भली आत्मायें और अधिप्राकृतिक (supernatural) प्राणी, रात को काम करते थे। इस विचार में मैंने, प्रगति और महत्वाकाक्षाओं के प्रति उदासीनता का दूसरा उदाहरण पाया, जिसने आदमियों, जो कि पेड़ के तनों को खींचते थे, के रवैयों को इतना लाक्षणिक बना दिया था।

अपनी कहानी पर वापस लौटें। जब लगभग सत्तर फुट ऊॅचा, एक मोटा ध्वज स्तम्भ बनाने के लिए, पेड़ों के तने, ल्हासा में लाये जाते हैं, वे याक की खाल की पट्टियों से आपस में बांध दिये जाते हैं। तब छपी हुई प्रार्थनाओं वाला और ध्वज स्तम्भ की चोटी से उसके निचले सिरे तक विस्तारित, एक बड़ा झण्डा, इस खम्भे के ऊपर कीलों से गाड़ा जाता है। इस अवसर पर, क्योंकि पूरा खम्भा अपने छोटे भागों में टूट गया, सम्भवतः तने, याक की खाल की पट्टियों के लिए अत्यधिक भारी थे, जिसमें तीन दर्शक दब कर मर गये और दूसरे अनेक घायल हुए। पूरे तिब्बत ने इसको अपशकुन के रूप में लिया और लोगों ने, देश के लिए एक अंधेरे भविष्य की भविष्यवाणियॉ कीं। भूकम्प और बाढ़ जैसी आपदायें पहले से बताई जाती हैं। आदमी युद्ध की बात करते हैं और अर्थपूर्ण ढंग से चीन की ओर देखते हैं। हरएक, वह भी, जिसने अंग्रेजी शिक्षा प्राप्त की थी, अंधविश्वास का शिकार होता था।

फिर भी, इस घटना में घायल लोगों को, वे अपने लामाओं के पास नहीं, परंतु ब्रिटेन के दूतावास में, जहॉ तिब्बतियों के लिए काफी संख्या में बिस्तरों वाला एक अस्पताल था, ले गये। एक अंग्रेज डॉक्टर ने काफी काम किया। हर सुबह, वहॉ उसके दरवाजे के सामने, प्रतीक्षा करते हुए मरीजों की लम्बी कतार होती थी और शाम को वह शहर में अपने मरीजों के घर जाता था। भिक्षुओं ने, अपनी सीमाओं में इस घुसपैंठ को, खामोशी से सहन किया। वे मुश्किल से ही कुछ अन्यथा कर सकते थे, क्योंकि डॉक्टर की सफलता को भुला देना असम्भव था।

चिकित्सा के सम्बन्ध में सरकार की नीति, आधुनिक तिब्बत के इतिहास में एक अंधकारपूर्ण अध्याय होगा। पैंतीस लाख लोगों की आबादी के ऊपर, ब्रिटिश दूतावास के डॉक्टर ही, वहॉ पात्रता या विशेषज्ञता प्राप्त चिकित्सा अधिकारी थे। डॉक्टर को, तिब्बत में गतिविधियों के लिये एक भरापूरा क्षेत्र उपलब्ध था परंतु विदेशियों को वहॉ चिकित्सा करने के लिये, सरकार कभी अपनी सहमति नहीं देती थी। पूरी शक्तियॉ, भिक्षुओं के हाथ में थीं, जो सरकारी अधिकारियों की भी, जब वे अंग्रेजी डॉक्टर से मिलने आते थे, आलोचना करते थे।

जब आउफस्नाइटर को एक उच्च भिक्षु अधिकारी के द्वारा बुलाया गया और एक सिचाई की नहर बनाने के लिए काम पर लगाया गया, ये हमारे भविष्य का आशापूर्ण संकेत था। हम आनन्द के साथ अवाक् रह गये! ये ल्हासा की तरफ व्यवस्थित अस्तित्व का हमारा पहला कदम था, और ये भिक्षु ही थे, जिन्होंने हमको सड़क पर ला दिया था।

आउफस्नाइटर ने तुरंत ही, अपना नापतौल का काम करना शुरू कर दिया। चूॅकि उसके पास कोई प्रशिक्षित सहायक नहीं था, मैंने उसे मदद करनी चाही। इसलिए मैं उसके काम के स्थान, लिंगखोर पर चला जाता था। एक अवर्णनीय दृश्य हमारी प्रतीक्षा कर रहा था। वहॉ, अपनी लाल पोशाकों और लाल टोपियों को पहने हुए सैकड़ों नहीं बल्कि हजारों भिक्षु, पालथी मार कर बैठे हुए और कुछ करने में व्यस्त, जिसके लिए निजता, सामान्यतः अत्यावश्यक समझी जाती है। मैंने आउफस्नाइटर से, उसके कार्य के स्थान पर, कोई ईर्ष्या नहीं की। हम दांये बांये न देखते हुए, परंतु अपने आपसे जितना जल्दी हो सके, पड़ोस में से चलने की प्रतिज्ञा करते हुए हठ पूर्वक अपने कार्य पर गए।

आउफस्नाइटर ने अच्छी प्रगति की और वह एक पखवाड़े में खुदाई शुरू कराने के लिए तैयार था। एक सौ पचास श्रमिक, उसके विवेक पर लगाये गये थे, और हमने ये महसूस करना शुरू किया कि हम महत्वपूर्ण ठेकेदार हैं। परंतु अभी तक हम इस देश में व्यवहार में लाया जाने वाला काम का तरीका नहीं सीख पाये थे।

इस बीच मुझे भी एक काम मिल गया। मैं अभी भी अपंग था और मेरी जैसी स्थिति वाले आदमी के लिए त्सारोंग का बगीचा सर्वोत्तम स्थान था; परंतु मैं आश्चर्य करता रहा कि मैं इसे सुंदर बनाने के लिए और क्या कर सकता हूॅ। तब मुझे एक प्रेरणा मिली। मैं एक फुहारा बनाऊॅगा।

मैंने नापतौल की और उसकी ड्रॉइग (drawing) बनाई और शीघ्र ही, मैंने एक सुंदर योजना बना ली। त्सारोंग उद्यमी था। उसने उन नौकरों को चुना, जो मुझे सहायता करने वाले थे, और मैं आराम से धूप में बैठा और मैंने अपने गेंग को निर्देशित किया। जमीन के अंदर पाइप जल्दी ही डाल दिये गये और एक तालाब खोदा गया। त्सारोंग ने सीमेन्ट के काम में व्यक्तिगतरूप से हाथ बंटाने पर जोर दिया। लोहे के प्रसिद्ध पुल को बनाने के

बाद से, प्रबलित किये हुए कांक्रीट के मामले में, वह एक विशेषज्ञ था। तब फुहारे को पानी की आपूर्ति करने के लिए, हमें उसके घर की छत पर, एक टंकी बनानी पड़ी। टंकी में पम्प के द्वारा पानी भरना, काफी कड़ा काम था परंतु मैंने आवश्यकताओं के अनुसार मूल्यांकन किये और अपनी मांसपेशियों को प्रशिक्षण देने के लिए, हैण्ड पम्प का उपयोग किया।

अंत में, महान क्षण आ पहुँचा और पहली बार, मेरे फुब्बारे से, घर की ऊँचाई के बराबर ऊँचाई वाला, पानी का एक फुब्बारा फूटा। हम सब, बच्चों की भाँति खुश थे। तब, तिब्बत में, यह एकमात्र फुब्बारा था और तब से आगे ये त्सारोंग की उद्यान पार्टियों में एक असामान्य चीज थी।

नवीन प्रभावों और असामान्य गतिविधियों ने हमें अपनी चिंता करना लगभग भुला दिया। एक दिन थांगमे हमारे लिए तिब्बती भाषा का एक समाचार–पत्र लाये और हमारे अपने बारे में, हमको एक समाचार दिखाया, जिसने अत्यन्त मैत्रीपूर्ण भावना के साथ, हमको सम्बन्धित किया था कि हमने पर्वतीय बाधाओं में हो कर कैसे अपने रास्तों को तोड़ा और ल्हासा पहुँचे, और अब हम, इस निरपेक्ष, पवित्र देश के साथ, कैसे संरक्षण की याचना कर रहे थे। हमने सोचा कि ये एक मित्रतापूर्ण पंक्तियॉ हमारे लिए जनसाधारण की राय के ऊपर, एक समर्थनकारी प्रभाव छोड़ सकती हैं और आशा की कि वे हमें हमारी याचिका में कुछ समर्थन देंगी। ये सत्य है कि प्रश्न में निहित समाचार–पत्र का, यूरोप में बहुत कम प्रभाव था। ये महीने में एक बार प्रकाशित होता था और कलिंगपोंग, भारत से प्रकाशित होता था। इसकी ग्राहक संख्या भी पॉच सौ से अधिक नहीं थी, परंतु फिर भी ये ल्हासा में, कुछ निश्चित समूहों में, विस्तार से पढ़ा जाता था, और पूरे विश्व में, तिब्बती बोलने वालों को, व्यक्तिगत अंक भेजे जाते थे।

नववर्ष के उत्सव, अभी अंत की ओर नहीं थे, यद्यपि सर्वाधिक महत्वपूर्ण उत्सव किये जा चुके थे। अब त्सुग लाग खांग (Tsug Lag Khang) के सामने, पारखोर में, धावकों के एकत्रीकरण का समय आया। एक पुराना धावक होने के नाते, मैं विशेषरूप से रुचि ले रहा था, और प्रतिदिन सूर्योदय के समय, मैं खेलों में, जो सुबह जल्दी ही शुरू होते थे, शामिल होता था। हम, चीनी दूतावास के द्वितीय तल पर, एक खिड़की में स्थान प्राप्त करने में पर्याप्त सौभाग्यशाली थे, जहॉ से हम, पर्दे के पीछे भली भॉति छिपे हुए रह कर, देखते थे। शासन के उच्चाधिकारी, जो त्सुग लाग खांग के प्रथम तल पर, एक मलमल के पर्दे के पीछे, सिंहासन पर बैठता था, की उपस्थिति में, किसी भी प्रकार से आधार तल से ऊपर बैठना वर्जित कराने वाले आदेश से बचने का, हमारा ये एकमात्र तरीका था।, मंत्रिमण्डल के चार मंत्री, खिड़कियों में से देखते थे।

पहली प्रतियोगिताऐं थीं, कुश्ती करते हुए मुक्केबाजी। मैं अपना मन नहीं बना पाया कि क्या कुश्ती का ये तरीका, बहुत कुछ हद तक, यूनानी–रोमन प्रकार का या पकड़ो जैसे पकड़ सकते हो, शैली का था। स्पष्टरूप से उनके खुद के नियम थे। यहॉ, जब पैरों को छोड़ कर शरीर का कोई भी भाग, जमीन को छू जाए एक पतन (fall) दिया जाता है। यहॉ प्रतियोगियों की कोई सूची नहीं होती और न कोई पूर्व घोषणा। नम्दे का एक गलीचा बिछा दिया जाता है, और भीड़ में से लोग आते हैं और एक दूसरे को खींच लेते हैं, बुला लेते हैं। पहलवान केवल एक लंगोटी पहनता है और जाड़े की सुबह की ठण्डी हवा में कांपता है। वे सभी पूर्ण विकसित, मांसल साथी होते हैं। वे अजीब संकेतों के साथ, अपने विरोधियों की नाकों के नीचे उछलते हैं और इतराते हुए साहस की एक हवा बनाते हैं परंतु उन्हें कुश्ती की कला की कोई पहचान नहीं है और वे एक वास्तविक कुश्तीबाज के द्वारा आसानी से परास्त किये जा सकते हैं। प्रतियोगितायें शीघ्र ही समाप्त हो जाती हैं और एक नया जोड़ा दृश्य पर उभरता है। कोई भी, विजय के लिए, गहरा संघर्ष करता हुआ कभी नहीं दिखता। विजयी लोगों का कोई विशेष परिचय नहीं दिया जाता, परंतु हारने और जीतने वाले दोनों ही, सफेद रूमाल प्राप्त करते हैं। वे बोन्पो, जो उन्हें शुभेच्छापूर्ण मुस्कान के साथ एक रूमाल देता है, के सामने नमन करते हैं, और वे राज्य अधिकारी के सम्मान में, उसके सामने तीन बार दण्डवत् करते हैं; इसके बाद, वे फिर से, अपने अच्छे मित्रों की भीड़ में मिल जाते हैं।

अगली आयी भारोत्तोलन की प्रतियोगिता। भार, एक भारी और चिकना पत्थर होता है, जिसने नव वर्ष के सैकड़ों उत्सव देखे होंगे। इसे उठाना होता है और उसे लेकर ध्वजदण्ड के चारों ओर घूमना पड़ता है। केवल कुछ ही लोग, इस काम को कर पाते हैं। जब कोई प्रतियोगी, आत्मविश्वास के साथ पत्थर को उठाने की अकड़ दिखाते हुए ढींग हॉकता है और वह पाता है कि वह मुश्किल से ही उसे जमीन से ऊपर उठा सका, या जब वह उसकी उँगलियों को कुचलने के भय के साथ धमकी देता हुआ, उसके हाथों से फिसल कर गिर पड़ता है, गिरने पर बहुत हॅसी होती है।

तब कोई सहसा बहुत दूरी पर घोड़ों की टापों की आवाज को सुनता है। भारोत्तोलन समाप्त हो जाता है। घोड़ों की दौड़ आश्चर्यजनक होती है। यहॉ, जानवर धूल के मोटे बादलों के बीच आते हैं। इन दौड़ों में, यहॉ दॉव लगाने वाली दौड़ नहीं होती। सवार सहित घोड़े, अक्सर भीड़ में हो कर, जिसको सैनिक भिक्षु, अपनी लाठी या गदा से रास्ते से अलग हटाने का प्रयास कर रहे होते हैं, अपनी खुद की पंक्ति बनाते हैं। इन दौड़ों को दूसरी प्रतियोगिताओं के समान समझना मुश्किल है। सवार रहित पशु, शहर से कुछ मील दूर, एक साथ प्रारम्भ कर देते हैं और उत्तेजित जनता के बीच, जो अनिच्छुकरूप से दौड़ के पथ से हट जाती है, ताकि उनको विजय स्तम्भ की तरफ, अपने रास्ते पर निकलने दिया जाये, आ फूटते हैं। केवल तिब्बत में पैदा हुए घोड़े ही इसमें प्रवेश लेते हैं, और हर घोड़ा, कपड़े पर लिखा हुआ अपने मालिक का नाम, अपनी पीठ पर लगाता है। अस्तबलों के बीच में गहरी स्पर्धा होती है, परंतु जब दलाईलामा या कोई मंत्री, घोड़े को दौड़ा रहा होता है, ये स्पष्ट है कि उसे ही प्रथम आना है। जब ऐसा लगता है कि कोई बाहरी घोड़ा एक ''अधिकारी'' घोड़े को हराने वाला है, इससे पहले कि वह विजय स्तम्भ पर आये, साईस दौड़कर उसे रोक देते हैं। दौड़ के बाद, बहुत उत्तेजना होती है। दौड़ने वालों को प्रोत्साहित करने के लिए, भीड़ और मालिकों के नौकर गरजते हैं और चीखते हैं, जबकि भद्र स्वामी, जो उन जानवरों के मालिक हैं, अपने आपको गरिमामय दिखाने का प्रयास करते हैं। पूरा क्षेत्र, तूफानी पागलपन से विजय स्तम्भ, जो नगर के थोड़ा पीछे की तरफ होता है, की ओर बढ़ जाता है।

घोड़ों की टापों से उड़ाये गये धूल के बादल को, इससे पहले कि पैदल दौड़ने वालों में से पहला धावक हॉफता हुआ वहॉ आये, बैठ जाने के लिए, मुश्किल से ही समय मिला। और वे कैसी भीड़ बनाते हैं! बूढ़े आदमियों से लगाकर छोटे बच्चों तक, पैदल दौड़ में, कोई भी भाग ले सकता है। यहॉ वे छाले भरे पैरों से, उखड़ी हुई सांस के साथ, विकृत चेहरों के साथ, खून बहाते हुए आते हैं। कोई भी देख सकता है कि वे कई जीवनों तक, कभी भी, प्रशिक्षण में नहीं रहे हैं। अपने प्रयासों से, दर्शकों की हॅसी के सिवाय कुछ भी न पाते हुए, अनेक, पॉच मील लम्बे दौड़ के रास्ते को पूरा करने से काफी पहले ही, अलग हट जाते हैं।

धावकों में से पीछे वाले, अभी भी लंगड़ा कर चलते हैं, जबकि अगली प्रतियोगिता शुरू हो गयी है। इस बार ये ऐतिहासिक परिधानों को पहने हुए, घुड़सबारी किये हुये, सबारों की दौड़ होती है। उनका, जोशखरोश और चीखों के साथ स्वागत किया जाता है और अपने जानवरों से अंतिम बूंद तक निकाल लेने के लिए, वे खुले तौर से अपने कोड़ों का उपयोग करते हैं। भीड़ अपने हाथ हिलाती है और शोर करती है, घोड़ा उछलता है और उसका सबार, दर्शकों के बीच, एक चाप (arc) के रूप में उड़ जाता है। कोई चिंता नहीं करता। ये खिलाड़ियों की, इस सभा की अंतिम प्रतियोगिता है, और इसके बाद इनाम जीतने वाले आगे आते हैं, हर एक एक लकड़ी का वर्ग (square) हाथ में लिये हुए, दिखाते हुए कि वह किस क्रम में विजय स्तम्भ पर पहुॅचा था। यहॉ, लगभग सौ धावक और लगभग उतनी ही संख्या में दोनों प्रतियोगिताओं के सवार होते हैं। वे निर्णायकों से रंगीन या सफेद रूमाल प्राप्त करते हैं, परंतु वहॉ दर्शकों के द्वारा कोई तालियॉ या शाबाशी नहीं दी जाती।

कार्यवाही को समाप्त करने के लिए, ल्हासा के बाहर एक बड़े खेत में, एक व्यायामशाला रखी जाती है। हमने भीड़ के साथ–साथ जल्दी की और एक भद्र के द्वारा, अपने तम्बू में आमंत्रित किये जाने पर, बहुत प्रसन्न थे। उत्सव के ये तम्बू, एक आश्चर्यजनक चित्र प्रस्तुत करते हैं। इनको पदवी के हिसाब से, पास–पास गाड़ा जाता है, और उनमें से हर एक, उसके स्वामी के ओहदे के अनुसार, ढंग से सजाया हुआ होता है। उनमें से अनेक, रेशम और उभरी हुई कढ़ाइयों, कसीदाकारियों से लपेटे होते हैं और भव्य आभूषणों से सुसज्जित होते हैं। उनके साथ आदमियों और औरतों की धनी पोशाकें शामिल की जाती हैं और आपको रंगों का एक वास्तविक मेल दिखाई देता है। चौथी और उससे ऊपर की पदवी के नागरिक अधिकारी, अपनी चमकदार पीली रेशमी पोशाक को, लम्बी प्लेट की आकृति के अपने टोप के साथ और नीली लोमड़ी की फर की खाल की किनारियों के साथ पहिनते हैं। (फर की ये खालें, हाम्बर्ग[11] (Hamberg), जर्मनी से आती हैं! तिब्बती समझते हैं कि उनकी खुद की लोमड़ियॉ काफी

11 अनुवादक की टिप्पिणी : हाम्बर्ग (Hamberg) जर्मनी का दूसरे नंबर का सबसे बड़ा शहर तथा उत्तरी जर्मनी का एक बड़ा बंदरगाह है। 1871 से पहले एकीकृत जर्मनी में ये स्वतंत्र राज्य था। द्वितीय विश्वयुद्ध की अवधि में हाम्बर्ग पर मित्र देशों के द्वारा अत्यधिक संख्या में हवाई हमले किये गये, जिसके कारण शहर का अधिकांश भाग और बंदरगााह तहस–नहस हो गये। हाम्बर्ग में यहूदियों की संख्या, जर्मनी में सर्वाधिक है। 18 अक्टूबर 1941 को यहूदियों का जर्मनी से निष्कासन प्रारंभ हुआ। 3 मई 1945 को हाम्बर्ग में, बिना किसी प्रतिरोध के, ब्रिटिश सेनाओं के आगे घुटने टिका दिये। 1960 से 1962 के बीच, बीटल्स ने अपना संगीत का भविष्य, यहीं से प्रारंभ किया था। 16 फरवरी 1962 को उत्तरी महासागर में भयंकर बाढ़ आई, जिसमें हम्बर्ग का पॉचवॉ हिस्सा अधिक प्रभावित हुआ और 300 से अधिक लोग मारे गये। हाम्बर्ग की भाषा, मानक जर्मन (Standard German) है। हाम्बर्ग में वास्तुकला की दृष्टि से कॉफी महत्वपूर्ण इमारतें हैं परंतु गगनचुंबी (skyscrapers) इमारतें सीमित संख्या में ही है। हाम्बर्ग का हवाई अड्डा जर्मनी में सबसे पुराना है और अभी भी संचालन में है।

अच्छी नहीं होतीं।)

परिधान की शोभा (smartness) की प्रतियोगिता, केवल औरतों तक सीमित नहीं होती। आदमी भी इसमें भाग लेते हैं। सौंदर्य के प्रति उनका सात्विक प्रेम, उनको विश्व के विभिन्न भागों के साथ सम्पर्क में रखता है। इस प्रकार नीली लोमड़ियॉ हाम्बर्ग से, कल्चर किये हुए मोती जापान से, नीलम (terquoise) बम्बई होते हुए भारत से, मूंगा (coral) इटली से, और अम्बर (amber), बर्लिन[12] (Berlin) और कोनिक्सबर्ग[13] (Konigsberg) से आते हैं। मैंने, धनी भद्रपुरुषों की तरफ से, इस या उस डीलक्स चीज का आदेश देते हुए, अक्सर, विश्व भर के पतों पर पत्र लिखे हैं। धूमधाम और सजावट, यहॉ एक आवश्कता है। उसको कपड़ों और साजसज्जा के लाभ के लिए, प्रदर्शित किया जाना जरूरी है। सामान्य व्यक्ति, अपने आप में विलासिता का कोई आनन्द नहीं ले सकता परंतु इसकी सराहना अपने अच्छे तरीके से करता है।

महान उत्सव, वास्तव में, धूमधाम और शक्ति को दिखाने का एक समय होता है और उच्च गरिमामय लोग, उच्च पदाधिकारी, जानते हैं कि ये उन्हें, जनता के लिए, उनका प्रदर्शन अच्छा बनाने के लिए, करना है। मंत्री परिषद् के चार मंत्री, त्यौहार के अंतिम दिन, जब जनता के साथ अपनी समानता दिखाने के लिए, एक क्षण के लिए, अपने नौकरों के लाल पट्टियों वाले टोपों से, अपनी कीमती पगड़ियों की अदला–बदली करते हैं, जनता का उत्साह और उसकी सराहना, किसी सीमा को नहीं मानती।

घुड़साल, या घोड़ों का प्रदर्शन, सभी प्रदर्शनों में सबसे अधिक प्रचलित है। ये शायद, पूर्व भव्य सैनिक परेडों का अवशेष है। भूतकाल में, सामन्त स्वामी, अपने आधिपत्य का प्रदर्शन करते हुए, कुछ निश्चित समयों पर अपनी टुकड़ियों का प्रदर्शन करते थे और इस प्रकार, युद्ध के लिये, अपनी तैयारियों का प्रदर्शन करते थे, परंतु ये महत्व, काफी लम्बे समय से समाप्त सा हो गया है। फिर भी, इन खेलों की अनेक विशेषतायें हैं, जो मंगोल प्रभाव के युद्ध जैसे दिनों की याद दिलाते हैं, जब घुड़सबारी के अत्यधिक भव्य करतब, उस समय की शान थी।

हमें तिब्बती घुड़सबारों के द्वारा, अविश्वसनीयरूप से कुशलतापूर्ण प्रदर्शनों की प्रशंसा करने के कुछ अवसर प्राप्त हुए। हर भद्र परिवार, इन खेलों में, निश्चित संख्या में प्रतियोगियों और वास्तव में, उनमें से सर्वोत्तम आदमियों को चुनने के लिये प्रविष्टियॉ लेता है, ताकि अंतिम वर्गीकरण में, पूरा दल अच्छा कर सके, एक सर्वाधिक उत्सुकता होती है। प्रतियोगियों को, घुड़सबारी और निशानेबाजी की अपनी कुशलताओं को दिखाना पड़ता है। जब मैंने देखा कि वे क्या कर सकते थे, मैं इसको सरलता पूर्वक समझ नहीं सका! वे एक लटकते हुए लक्ष्य से गुजरते हुए, अपनी बंदूक को हिलाते हुए और लक्ष्य पर निशाना साधते हुए, रकावों के ऊपर, ऊपर की ओर सीधे खड़े हो जाते थे, जबकि उनके घोड़े टाप मार कर दौड़ रहे होते थे। अपने अगले लक्ष्य से बीस गज पूर्व पहुॅचने से पहले, वे अपनी बंदूकों को, तीरों और कमानों से बदलते थे। आनन्द के शोर, उन घुड़सबार धनुर्धारियों का स्वागत करते थे, जो लक्ष्य पर निशाना साधते थे। एक हथियार को दूसरे हथियार से बदलने में, तिब्बती कितने माहिर होते हैं, ये अविश्वसनीय है।

इन त्यौहारों पर, तिब्बती सरकार, विदेशियों के साथ भी, विशेष प्रकार की सौहार्द्रता प्रदर्शित करती है। सभी विदेशी दूतावासों के लिए, आदर पूर्वक भव्य तम्बू लगाये जाते हैं, और नौकर तथा सम्पर्क अधिकारी इसको देखते हैं, ताकि अतिथियों को हर चीज, जो वे चाहें, मिल जाए। मैंने खेल के मैदान पर, एक असामान्य संख्या में चीनियों को देखा। वे आसानी से तिब्बती लोगों से अलग पहिचान लिये जाते हैं, यद्यपि वे उसी प्रजाति के परिवार के होते हैं। तिब्बती लोग, चिन्हित रूप से झिरी वाली ऑखों के नहीं होते; उनके चेहरे सुंदर, परिष्कृत और गाल लाल होते हैं। अनेक मामलों में, भूतकाल के धनी चीनी परिधान, यूरोपियन सूट के साथ, छोड़ दिये गये और इस

12 अनुवादक की टिप्पिणी : बर्लिन (Berlin) जर्मनी का सबसे बड़ा शहर तथा जर्मनी की राजधानी है। बर्लिन संस्कृति, राजनीति, समाचार माध्यम का वैश्विक शहर है। इसका क्षेत्रफल लगभग 892 वर्ग किलोमीटर और आवादी लगभग 37,00,000 है। अल्बर्ट आइंस्टाइन (Albert Einstein), जिन्हें 1921 में भौतिकी में नोबेल पुरुस्कार मिला, बर्लिन में ही रहते थै और कार्यरत थे।1945 की अवधि में, द्वितीय विश्वयुद्ध में बर्लिन का बहुत बड़ा भाग, हवाई हमलों के कारण ध्वस्त हेा गया था। इसमें लगभग 1,25,000 नागरिक मारे गये। विजेता शक्तियों ने शहर को चार प्रखंडो में बॉट दिया था। पश्चिमी गठबंधन (अमेरिका, इंग्लैंड और फ्रांस') ने पश्चिम बर्लिन बनाया, जबकि सोवियत पक्ष ने पूर्व बर्लिन बनाया और 1961 में, शहर के बीचोबीच, पूर्व और पश्चिम बर्लिन नगर की विभाजक दीवार खड़ी कर दी गई, जिसे 1989 में तोड़ दिया गया और 1990 के बाद, बर्लिन फिर से संयुक्त जर्मनी की राजधानी बना। 2006 में बर्लिन में फीफा वर्ल्ड कप का फाइनल (FIFA world cup final) हुआ।

13 अनुवादक की टिप्पिणी : कोनिग्सबर्ग (Konigsberg) प्रूसिया (बर्तमान में रूस का एक भाग) राज्य का एक शहर है। कोनिग्सबर्ग की स्थापना 1255 में हुई थी। ये 9 अप्रैल 1945 के पहले तक जर्मनी का एक पूर्वी सीमान्त शहर था, जबकि द्वितीय विश्वयुद्ध की लगभग समाप्ति पर इसे सोवियत संघ में मिलाया गया। 1930 के दशक में नाजियों ने यहुदियों की दुकानों पर कब्जा कर लिया और शेष जर्मनी की भांति पुस्तकों की होली जलाई गई। 1944 में ब्रिटेन की भारी बमबारी के फलस्वरूप कोनिग्सबर्ग ने भारी नुकसान उठाया और कई दिनों तक जलता रहा। पुराने शहर के कैथेड्रल, महल, और सभी चर्च बुरी तरह तहस–नहस कर दिये गये।

मामले में, अनेक चीनी, तिब्बतियों की तुलना में, अधिक प्रगतिशील हैं और चश्मा पहनते हैं। ल्हासा में, अधिकांश व्यापारी चीनी हैं, जो अपने खुद के देश के साथ, व्यापारिक सम्बन्धों को प्रचुरता से बनाये रखते हैं। वे तिब्बत में रहने का आनन्द लेते हैं और अनेक वहॉ ल्हासा में स्थाई रूप से बस जाते हैं। इसका एक कारण है कि अधिकांश चीनी, विलासी, और अफीमची होते हैं और उनके लिए, तिब्बत में अफीम फूंकने की कोई वर्जना नहीं है। कई बार चीनी उदाहरण के द्वारा सताया हुआ कोई तिब्बती, अफीम के पाइप को पीता है। यदि वह ऐसा करता है, तो उसे दण्डित होने की सम्भावना है। इस बात का कोई खतरा नहीं है कि अफीम का पीना, एक राष्ट्रीय बुराई बन सकती है (क्यों कि) अधिकारियों की निगरानी एकदम कठोर है। वे पहले से ही, धूम्रपान को एक बुरी आदत समझते हैं और अधिक कठोरता के साथ इस पर नियंत्रण करते हैं और यद्यपि ल्हासा में कोई भी, किसी भी प्रकार की सिगरेट को खरीद सकता है, वहॉ कार्यालयों, गलियों, या सार्वजनिक उत्सवों में कोई धूम्रपान नहीं होता। जब अग्नि स्वान वर्ष (Fire-Hound year) में, भिक्षु नियंत्रण अपने हाथ में लेते हैं, वे सिगरेटों की बिक्री भी वर्जित करा देते हैं।

यही कारण है कि सभी तिब्बती नसबार (snuff) सूंघते हैं। जनसाधारण और भिक्षु, अपनी खुद की तैयार की हुई नसबार का उपयोग करते हैं। जिसे वे उत्तेजक पाते हैं। हर एक अपने खुद के मिश्रण पर गर्व करता है, और जब दो तिब्बती मिलते हैं, पहली चीज, जो वे करते हैं, वह है अपनी नसबार के डिब्बे को बाहर निकालना और थोड़ी सी नसबार को आपस में बदलना। नसबार के डिब्बे भी गर्व का विषय होते हैं। कोई उन्हें, याक के सींगों से लेकर हरिताश्म (jade) तक, सभी चीजों में पा सकता है। नसबार के कठोर व्यसनी, अपनी खुराक को अपनी हथेली के ऊपर, फैला देते हैं, इसे ऊपर सूंतते हैं, और तब उनके मुंह से, धूल का एक बादल फूंका जाता है और वे कभी छींकने की नहीं सोचते। और यदि कोई भयानक छींक के साथ फूट पड़े, जैसे कि मुझे हमेशा होता था, तब साथी लोग हॅसने में कभी पीछे नहीं रहते।

ल्हासा में, धनाढ्य पहनावे वाले और शरीर से मजबूत, नेपाली भी हैं। कोई दूर से भी देख सकता है कि वे खुशहाल हैं। एक पुरानी संधि के कारण, उन्हें कराधान (taxation) से छूट मिली हुई है, और आने वाली परिस्थितियों को पूरी तरह से अपनी पक्ष में दोहन करने के लिये, उनके पास साधन हैं। पारखोर में, सबसे अच्छे व्यापारी, उनमें से ही होते हैं। वे एक अच्छे सौदे के लिए, छठीं इन्द्रियज्ञान वाले, विशेषज्ञता प्राप्त व्यापारी होते हैं। उनमें से अधिकांश, अपने परिवारों को घर पर छोड़ देते हैं और समय–समय पर, वापस जाते हैं। चीनियों के विपरीत, वे तिब्बती महिलाओं से, जिनके लिए वे आदर्श पति बनते हैं, शादी करने में कुशल होते हैं।

शासकीय उत्सवों पर, नेपाल के प्रतिनिधि, परिधान की प्रखरता और गोरखाओं, जो उनके अंगरक्षक होते हैं, की लाल ट्यूनिक (tunic) के मामलों में, अच्छे परिधान वाले तिब्बतियों से भी आगे निकल जाते हैं, और दूर से ही दिखाई देते हैं। इन गोरखा लोगों ने, ल्हासा में एक निश्चित साख बना ली है। वे अकेले ही, मछली मारने के विरुद्ध वर्जना की अवहेलना करने की जोखिम उठाते हैं। जब सरकार को, कानून के इस प्रकार उल्लंघन करने का पता चलता है, वह नेपाली दूतावास को, मात्र एक विरोधपत्र भेज देती है। इससे एक सुंदर, लघु, हास्य नाटिका जन्म लेती है। दोषी लोग, वास्तव में, दण्डित किये जाने चाहिए, जैसा कि दूतावास, तिब्बती सरकार के साथ अच्छे सम्बन्ध बनाये रखने के लिए व्यवस्था करता है परंतु वास्तविकता में, अक्सर, इसमें उनके सैनिकों की तुलना में अधिक महत्वपूर्ण व्यक्ति,–वास्तव में, अनेक उच्चवर्गीय तिब्बती सम्मिलित होते हैं, जब कभी भी वे ऐसा कर सकते हों, मछली की प्लेट का आनन्द उठाते हैं। बेचारे दोषी, भयानक दण्ड पाते हैं और उन्हें कोड़े खाने की सजा दी जाती है, परंतु यहॉ सजा का अर्थ, घायल करना नहीं है।

ल्हासा में, कोई भी आदमी मछली का शिकार करने का दुस्साहस नहीं कर सकता। पूरे तिब्बत में केवल एक स्थान है, जहॉ मछली मारने की इजाजत है, और वह वहॉ है, जहॉ सांगपो (Tsangpo) नदी, एक बालू भरे मरुस्थल से हो कर गुजरती है। यहॉ कोई फसलें नहीं होती और जानवरों के चारागाह नहीं हैः वास्तव में, यहॉ खाने के लिए, मछली को छोड़ कर कुछ भी नहीं है और इसलिए कानून में शिथिलता प्रदान की गई है। इस क्षेत्र के लोग, कसाइयों और लुहारों की तरह से नीचे समझे जाते हैं।

संख्या के विचार से, मुसलमान, ल्हासा की आबादी के सराहनीय अंश को बनाते हैं। उनकी अपनी मस्जिदें हैं और उन्हें अपने धर्म को मानने की पूरी आजादी है। (दूसरी प्रजातियों के प्रति, उनकी पूरी सहिष्णुता, तिब्बतियों के सर्वोत्तम लक्षणों में से एक लक्षण है) उनके मठीय धर्मतंत्र ने, कभी भी, दूसरे धर्म के लोगों का धर्म परिवर्तन नहीं कराना चाहा। अधिकांश मुसलमान भारत से आए हैं और तिब्बती लोगों के साथ घुलमिल गए हैं। उनकी

धार्मिक भावनाओं ने, उनको ये पहली मांग दी है कि उनकी तिब्बती पत्नियों का धर्म परिवर्तन कराया जाए परंतु, यहॉ तिब्बती सरकार आगे आयी, प्रतिबन्ध लगाया कि देशी औरत को मुसलमान से केवल तभी शादी करनी चाहिए, जब वे अपने धर्म को बना कर रखें।

जिमखाना पर, आबादी के सभी प्रकार के समूहों के उदाहरणों को ढूंढ़ पाना संभव है। कोई भी लद्दाखी, भूटानी, मंगोलियाई, सिक्किमी, कजाकिस्तानी और अड़ौसपड़ोस की सभी जातियों के प्रतिनिधियों को देख सकता है, जिनके बीच कोई, कूकू–नोर (Kuku-Nor) के प्रांत से, हुई–हुइस (Hui-Huis)–चीनी मुसलमानों को पाता है। इन लोगों के, लिंगखोर के बाहर, विशेष तबकों में स्थित अपने कट्टीखाने हैं। बौद्ध लोग इनको टेढ़ी नजर से देखते हैं क्योंकि, वे पशुओं का जीवन लेते हैं, परंतु उनको अपने पूजा स्थलों में जाने की इजाजत है।

त्यौहार के अंत में, भद्र और उल्लेखनीय लोग, एक जगमगाते हुए जलूस के रूप में, शहर में वापस चले जाते हैं। सामान्य व्यक्ति, सड़क के किनारे खड़े होते हैं और वे अपने अंशावतारों की भव्यता की प्रशंसा करते हैं। और उत्तेजना तथा नाटक की उनकी भूख शांत हो जाती है, और वफादार लोग, इन भव्य उत्सवों की यादगार में, जिसमें देवी राजा ने अपने आपको उन्हें प्रदर्शित किया, लंबे समय तक के लिए अच्छी दावत करते हैं। एक दो दिन में, फिर से नीरस जीवन शुरू हो जाता है। दुकानें खुल जाती हैं और हमेशा की तरह मोलभाव चलने लगता है। जुआ खेलने वाले, गली के कोनों में दिखाई देने लगते हैं और कुत्ते, जो ''लेनटेन (Lenten)'' उपवास की अवधि में, लिंगखोर की बाहरी परिधि पर चले गये थे, अब तेजी से, फिर से वापस शहर में आ जाते हैं।

हमारा जीवन शांति से चलता रहा। गर्मियॉ समीप आ गईं थीं। मेरी स्याटिका कुछ हद तक ठीक हुई, और हमारे निष्कासन के संबंध में कुछ भी नहीं कहा गया। मैं अंग्रेज डॉक्टर से नियमित रूप से इलाज प्राप्त कर रहा था, परंतु अच्छे दिनों में, मैं बगीचे में काम करने में सक्षम था और मेरे पास, करने के लिए काफी काम था, जैसे ही ये पता चला कि मैं त्सारोंग के फुब्बारे और उसके मैदानों में दूसरी अनेक पुनर्व्यवस्थाओं के लिए उत्तरदायी हूँ, एक एक करके अनेक भद्रपुरुष आए, और उन्होंने मुझे पूछा और मुझे अपने लिए भी वैसा ही करने के लिए कहा।

आउफसनाइटर अपनी नहर को बनाने में बहुत व्यस्त था। एकदम सुबह भोर से रात तक वह अपने काम के स्थान पर ही रहता था, क्योंकि केवल त्योहारों के अवसरों पर ही काम बंद होता था। यह एक भाग्यशाली बात थी कि उसे भिक्षुओं द्वारा काम में लगाया गया था, क्योंकि यद्यपि, निम्न भद्रपुरुष, देश के प्रशासन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते थे, भिक्षुओं का एक छोटा समूह, हर चीज में अपना अंतिम मत रखता था। इस बजह से जब एक दिन मुझे त्सेद्रुंग (Tsedrung) के बगीचे में बुलाया गया, मुझे कोई कम संतोष नहीं हुआ।

इस संस्था के भिक्षु, वे अधिकारी हैं, जो एक प्रकार का मठीयक्रम बनाते हैं। उन्हें अपने खुद के समाज के प्रति कठोर वफादारी के लिए पोषित किया गया है, धर्म निरपेक्ष अधिकारियों की तुलना में, वे अत्यधिक शक्तिशाली हो चुके हैं। वे दलाईलामा को, परिचारक आदि तत्काल उपलब्ध कराते हैं और युवा देवराजा के सभी निजी सेवक, इसी क्रम के होते हैं। उनके महल का वरिष्ठ प्रबंधक, उनके शिक्षक, और उनके निजी संरक्षक, सभी त्सेद्रुंग के उच्चस्तरीय भिक्षु होते हैं। इसके अतिरिक्त, दलाईलामा, उन बैठकों में भी उपस्थित होते हैं, जिसे वे अपने समाज के हितों पर, प्रतिदिन चर्चा करने के लिए बाध्य हैं।

इस क्रम के अधिकारी, निरपवादरूप से, कठोरता पूर्वक प्रशिक्षित किये गये होते हैं। इनका स्कूल, पोटाला की पूर्व दिशा की एक शाखा में स्थित है, और उनके शिक्षक, परम्परानुसार, प्रसिद्ध बिहार, मोंद्रोलिंग (Mondroling) मठ, जो तिब्बती सुलेख और व्याकरण में विशिष्टता रखता है, से आते हैं। स्कूल में कोई भी प्रवेश ले सकता है, परंतु उसका क्रम में शामिल होना बहुत मुश्किल है। शताब्दियों से चला आ रहा एक नियम, ये बताता है कि त्सेद्रुंग के सदस्यों की संख्या एक सौ पिचहत्तर से अधिक नहीं होगी।

जब विद्यार्थी अपनी अठारह वर्ष की आयु में पहुँचता है और अपनी परीक्षाओं को पास कर लेता है, वह शक्तिशाली संरक्षण के साथ, निचले क्रम में प्रारम्भ करते हुए, क्रम में प्रविष्ट हो सकता है, यदि वह पर्याप्त सक्षम है तो तीसरी कक्षा में शामिल हो सकता है। त्सेद्रुंग के भिक्षु, सामान्य लाल रंग की अपनी टोपी के अलावा, विशिष्टरूप से अपनी श्रेणी के लिए निर्धारित परिधान, पहनते हैं। त्सेद्रुंग के स्कूल में अधिकांश विद्यार्थी जनता से आते हैं, और वे परंपरागत भद्र पुरुषों के प्रभाव को एक लाभदायक संतुलन प्रदान करते हैं। उनकी गतिविधियॉ अधिक विस्तृत क्षेत्र में होती हैं, चूँकि वहॉ ऐसा एक भी सरकारी कार्यालय नहीं हैं, जिसमें प्रत्येक एक सामान्य व्यक्ति के लिए, कम से कम एक, मठीय अधिकारी न हो। दोहरे नियंत्रण वाला यह तंत्र, तानाशाही शक्तियों के चलन में आने के विरुद्ध, जो जागीरदारी में, हमेशा उपस्थित खतरों में से एक, होता है, बीमा की तरह से समझा

जाता है।

यह उच्चस्तरीय अधिकारी ही था, जिसने मुझे बुलावा भेजा। उसने मुझे प्रस्तावित किया कि मुझे त्सेद्रुंग के बगीचे को फिर से व्यवस्थित करना चाहिए। यह मेरे लिए एक बड़ा अवसर था। मुझे कहा गया था कि इसी तरह की कुछ चीजें दलाईलामा के बगीचे में भी की जानी चाहिए और यदि मेरा काम संतोषजनक पाया गया तो मुझे नियुक्त किया जा सकता है। मैंने सर्वाधिक उमंग के साथ तुरंत ही काम को शुरू कर दिया। उन्होंने मेरी अर्दली में काफी संख्या में आदमियों को रख दिया और शीघ्र ही, सभी काम चलने लगे। मेरे पास, अंग्रेजी और गणित के निजी शिक्षणों के लिए, जो मैं कुछ नवयुवक भद्र पुरुषों को दे रहा था, अब कोई समय नहीं था।

अचानक, जैसे ही मैंने शक्तिशाली संरक्षण, जिसका हम आनंद ले रहे थे, को दृष्टि में रखते हुए, अपनी स्थिति में निश्चिंतता को अनुभव करना शुरू किया, मुझे एक भयानक झटका लगा। एक सुबह, विदेश मंत्रालय में उच्च अधिकारी, और चार तिब्बतियों, जो बहुत साल पहले रुगबी में शिक्षित किए गए थे, में से अंतिम, श्रीमान् क्यीबूब (Kyibub), हमसे मिलने आए। वह अपने मिशन से स्पष्टरूप से व्यथित थे। कई बार खेद प्रकट करने और माफी के बाद, उन्होंने बताया कि अंग्रेजी डॉक्टर ने यह प्रमाणित कर दिया है कि मैं यात्रा करने में सक्षम था और सरकार हमसे तुरंत ही यहॉ से चले जाने की आशा करती है, उसकी पुष्टि में उन्होंने हमें प्रमाणपत्र दिखाया, जिसमें कहा गया था कि यद्यपि मैं पूरी तरह ठीक नहीं हुआ था, मैं अपने जीवन को खतरे में डाले बिना यात्रा कर सकता था।

ये मुझे और आउफस्नाइटर को, एक अप्रत्याशित और भौंचका करने वाला झटका था। हमने एक दूसरे को आपस में खींचा और नम्रता तथा शांति के साथ, प्रश्न के अपने पक्ष को प्रस्तुत करने का प्रयास किया। हमने समझाया कि मेरी बीमारी, किसी भी क्षण दुबारा उभर सकती है। मैं दुरूह यात्रा के बीच में क्या करूँगा, यदि मैंने पाया कि मैं एक कदम आगे नहीं चल सकता ? इसके अतिरिक्त, भारत में गरम मौसम ठीक अभी शुरू हुआ था। उनमें से कोई भी, जो वहॉ इतने लंबे समय तक, तिब्बत की स्वस्थ उच्चदेशीय हवा में रह रहे थे, अपने स्वास्थ्य को खतरे में डाले बिना, ऐसे परिवर्तन को नहीं झेल सकता था और उन कामों का, जिसका प्रभार उच्चतम अधिकारियों के द्वारा हमें दिया गया था, जिनके पूरे होने तक हम बंधा हुआ महसूस करते थे, क्या होने वाला था ? हमने शासन को दूसरी याचिका प्रस्तुत करने की प्रतिज्ञा की।

इस दिन के बाद, हमने निष्कासन के संबंध में, कभी भी एक शब्द नहीं सुना, यद्यपि थोड़े समय के लिए, हम नियमितरूप से रोजाना इसकी आशा में रहे।

इस बीच, हमने ल्हासा में घर जैसा महसूस करना शुरू किया, और लोग हमारे प्रति अभ्यस्त हो चुके थे। उत्सुक लोगों में से अब हमारे पास, और अधिक मिलने वाले नहीं होते थे—केवल हमारे मित्र। ब्रिटिश दूतावास इससे सहमत हुआ दिखाई देता था कि हम खतरनाक नहीं हैं, क्योंकि यद्यपि देहली ने हमारे समर्पण के लिए कहा था, परंतु इस बिन्दु पर जोर नहीं दिया गया। तिब्बती अधिकारियों ने हमें आश्वासन दिया कि हम अवांछित नहीं समझे जा रहे थे।

अब हम इतना कमा रहे थे कि हम त्सारंग की सौहार्द्रता पर अब और अधिक निर्भर नहीं थे। अपने काम की अवधि में, हमने अनेक मित्र बनाए, और समय बहुत तेजी से गुजर गया। मात्र कोई चीज, जिसके लिए हम लालायित थे, वह थे घर से पत्र। अब हम दो वर्ष से अधिक समय तक बिना खबर के थे। फिर भी, हमने अपने इस विचार के साथ कि हमारा जीवन बहुत सहन करने योग्य था और हमारे पास संतुष्ट होने के कई कारण थे, हमने अपने आपको आराम में रखा। हमारे सिरों के ऊपर एक अच्छी छत थी और अब हम अस्तित्व के लिए, और अधिक संघर्षरत नहीं थे। हमने पश्चिमी सभ्यता के उपकरणों को याद नहीं किया। यूरोप, उखाड़ पछाड़ वाले जीवन से दूर होता दिखाई दिया। अक्सर जब हम बैठते और रेडियो को अपने देश से विवरण लाते हुए, बुरी खबरों के प्रति अपने सिरों को हिलाते हुए सुनते, हमें घर जाने का कोई कारण नहीं दिखाई देता था।

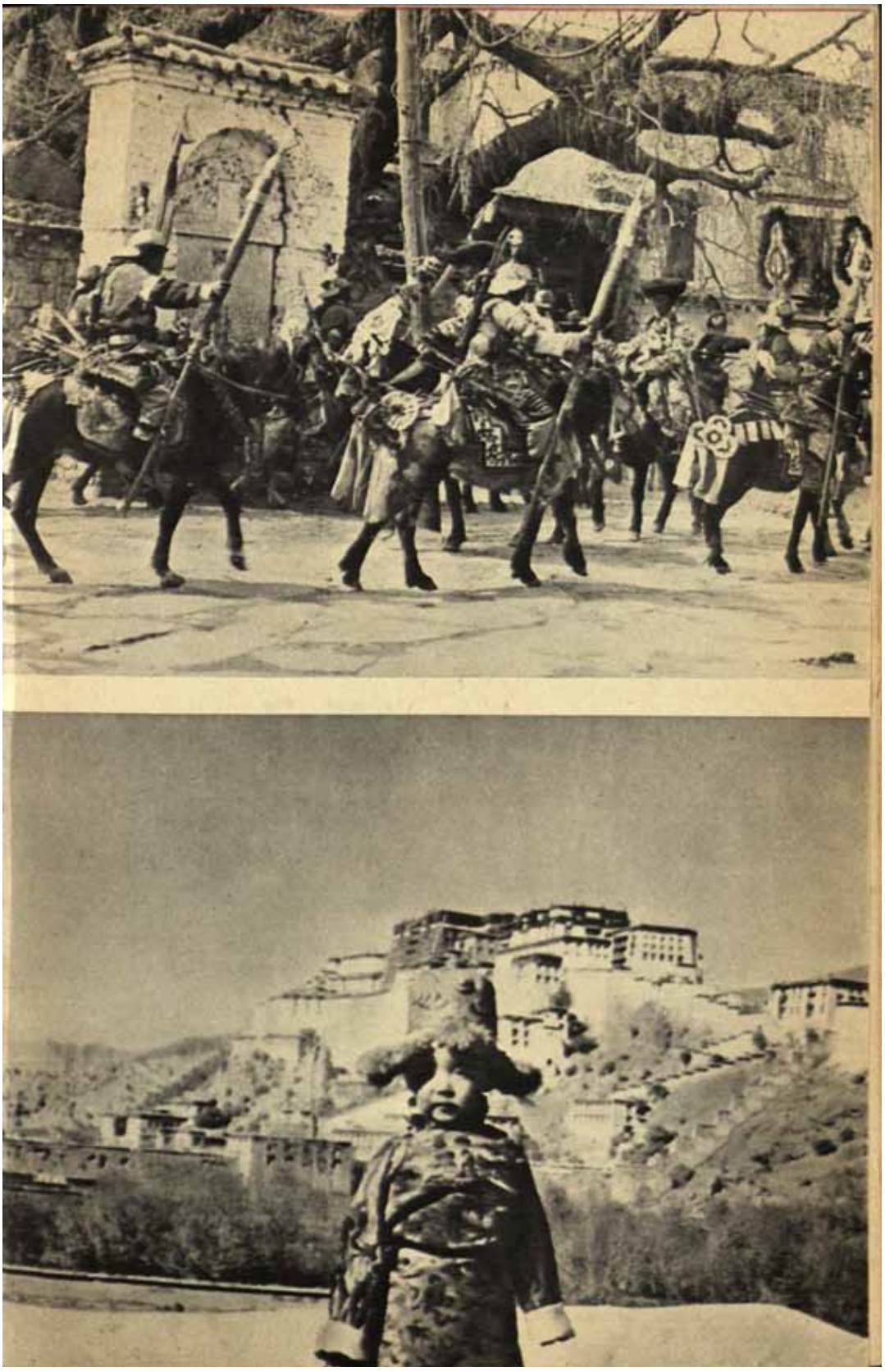

Guests in Lhasa are served beer by such fabulously-dressed girls as these.

The Monks' Dance at the foot of the Potala, during the New Year's festivities.

ल्हासा का जीवन – प्रथम

पहली आधिकारिक पार्टी, जिसमें मैं दलाईलामा के मातापिता के घर पर शामिल हुआ, के द्वारा, मेरे सभी अनुभव काफी अच्छे दिख रहे थे। ये केवल एक संयोग ही था कि मैं वहॉ था। मैं बगीचे में काम कर रहा था, जहॉ कुछ करने के लिए, मेरे पास कुछ नए विचार थे, जब पवित्र मां ने मुझे बुला भेजा और मुझे अपना काम छोड देने और अपने अतिथियों के साथ शामिल होने के लिए कहा। कुछ स्तब्धता के साथ, मैं स्वागत कक्ष में प्रखर भीड़ के साथ शामिल हुआ। लगभग तीस भद्र पुरुष वहॉ इकट्ठे हुए थे, सभी अपने सबसे अच्छे परिधानों में थे और दृश्य गरिमामय, भव्यतापूर्ण दृश्यों में से एक था। स्वागत समारोह, हमारे मेजबान के सबसे छोटे लड़के के जन्म का उत्सव मनाने के लिए, जो तीन दिन पहले ही पैदा हुआ था, आयोजित किया गया था। मैंने रुकते हुए, हकलाते हुए, अपनी बधाइयॉ दीं और एक सफेद रूमाल पेश किया, जिसे मैंने उधार लेने की व्यवस्था कर ली थी। पवित्र मां, भव्यता के साथ मुस्कराई। उसे कमरे में बेफिकरी से टहलते और अपने अतिथियों की खातिर करते हुए देखना, आश्चर्यचकित करने वाला था। यहॉ महिलायें अपनी प्रसूति से चमत्कारिक तीव्रता से उबरती हैं और बच्चे के जन्म के मामले में, बहुत हलका सा ही झमेला होता है। कोई डॉक्टर नहीं बुलाया जाता परंतु औरतें ही एक दूसरे की मदद करती हैं। हर स्त्री को काफी सारे स्वस्थ बच्चों के होने पर गर्व होता है। सामान्यरूप से, मां अपने खुद के बच्चों की देखभाल करती है और कई बार, उन्हें तीन या चार साल तक लगातार दूध पिलाती जाती है।

जब किसी भद्र परिवार में बच्चे का जन्म होता है, शिशु को तुरंत ही एक विशेष देखभाल करने वाली आया मिल जाती है, जो उसे दिन और रात कभी नहीं छोड़ती। बच्चे के जन्म के बाद महान उत्सव होते हैं, परंतु हमारे यहॉ जैसा बपतिस्मा (baptismal) समारोह नहीं होता, और वहॉ कोई धर्म–पिता (godfather) नहीं है। चूँकि हर बच्चे के कई नाम होते हैं, बच्चे को अपना नाम (या अनेक नाम) दिए जाने से पहले, मां–बाप एक लामा से सलाह करते हैं, जो केवल ज्योतिषीय परिणामों का अध्ययन करने के बाद, निर्णय करता है कि बच्चे को किस नाम से पुकारा जाएगा। यदि इसके बाद, आपका बच्चा गंभीर बीमारियों से पीड़ित होता है, तो उसे नया नाम देना सामान्य होता है। मेरे अनवरत भ्रम के अनुसार, मेरे वयस्क दोस्तों के एक समूह में से एक दोस्त ने, दस्तों का हमला होने के बाद, अपना नाम बदला था।

दलाईलामा के छोटे भाई के जन्मोत्सव पर, हमको खर्चीली दावत का, जिसमें हम वरीयता के उचित क्रम से, छोटी मेजों पर, गद्दियों पर बैठे, आथित्य कराया गया। लगातार दो घण्टों तक, नौकर एक के बाद दूसरा व्यंजन प्रस्तुत करते रहे–मैंने गिने चालीस, परंतु अभी यह अंत नहीं था। ऐसे रात्रिभोज में काफी खाने के लिए, एक विशेष प्रशिक्षण की आवश्यकता थी। मुझे सभी सुस्वादु भोजनों, जो हमें पेश किए गए थे, का उल्लेख न करने के लिये क्षमा कर दिया जाना चाहिए, परंतु मुझे याद है कि उनमें एक प्रकार का मसालेदार भारतीय खाना शामिल था और वह नूडल्स के सूप के साथ समाप्त हुआ। हमें दूसरी चीजों के साथ–साथ, बीयर, व्हिस्की और एक पुर्तगाली शराब, पोर्त (port) पीने के लिए मिली। खाने के अंत तक, अतिथियों में से अनेक, मदमत्त हो गए थे परंतु यहॉ तिब्बत में, ये कोई शर्मनाक बात नहीं होती; ये सामान्य मस्ती में अपना योगदान देता है।

दावत के साथ, पार्टी शीघ्र ही समाप्त हो गई। मेजबान द्वारा उपलब्ध कराये गये घोड़े और नौकर, अतिथियों को उनके घर ले जाने के लिए, घर के बाहर प्रतीक्षा में थे। दूसरी पार्टियों के आमंत्रण, अंधाधुंध तरीके से भेजे गये, और इसके लिए, उनके बीच फर्क करने के लिए, जो अधिक गंभीर थे, और जो मात्र नम्रता का एक स्वरूप थे, एक समझदार कान की जरूरत थी।

आउफस्नाइटर और मैं, अक्सर इस घर में आमंत्रित किए जाते थे और मैं शीघ्र ही लोबसांग सामटेन के साथ, हार्दिक मित्रता में आ गया। ये आकर्षक युवक, भविष्य के भिक्षु के रूप में, ठीक प्रवेश करता ही जा रहा था। दलाईलामा के भाई के रूप में, उसके सामने एक चमकीला भविष्य था। एक दिन उसे अपने भाई और सरकार के बीच, मध्यस्थ के रूप में महान भूमिका निभानी थी। परंतु इस महान पद के बोझ ने, उसे पहले से ही बोझ से लादना शुरू कर दिया था। वह अपनी पहचान के लोगों को स्वतंत्रतापूर्वक नहीं चुन सकता था। जो कुछ भी वह करता या जहॉ कहीं भी वह जाता, सभी के बारे में मंतव्य निकाले जाते। जब वह किसी आधिकारिक अवसर पर, उच्चअधिकारी से मिलने गया, उसके कक्षप्रवेश ने एक विस्मययुक्त खामोशी को उत्पन्न कर दिया और हर आदमी, मंत्रीमंडल के मंत्री तक भी, देवीय राजा के भाई को सम्मान देने के लिए, अपने बैठने के स्थानों पर खड़े हो

गए। ये सब एक नौजवान के दिमाग को बदल सकता था, परंतु लोबसांग सामटेन ने, कभी भी, अपनी नम्रता और आचरण को नहीं खोया।

वह अक्सर, अपने छोटे भाई के संबंध में, जो पोटाला में एकांत जीवन व्यतीत करता था, मुझसे बात करता था। मैंने पहले ही ध्यानपूर्वक देख लिया था कि, जैसे ही दलाईलामा की आकृति, महल की सपाट छत के ऊपर टहलती हुई दिखाई दी, पार्टियों में सभी अतिथियों ने अपने आप को छिपा लिया। लोबसांग ने हमको इसका एक मर्मस्पर्शी स्पष्टीकरण दिया। युवा देवीय राजा के पास, काफी संख्या में, बहुत अच्छे प्रकार के दूरदर्शी (telescope) और क्षेत्र को देखने वाले कॉच थे, और अपनी जनता के जीवन और कामों को देखना, उन्हें आनंदित करता था। उनके अनुसार पोटाला एक स्वर्णिम जेल थी। वह दिन–प्रतिदिन प्रार्थनाओं तथा अंधेरे महल के कमरों में अध्ययन करते हुए, अनेक घण्टे गुजारते थे। उन्हें काफी कम खाली समय और बहुत कम आनंद मिलता था। जब एक आनंद पार्टी में, अतिथियों ने स्वयं का देखा जाना अनुभव किया, वे जितना जल्दी संभव हुआ, उस दृष्टिक्षेत्र में से गायब हो गए। वे कभी भी, अपने युवा राजा, से ऐसे पागलपन से आनन्दित होने की आशा नहीं रखते थे, और उसके दिल को दुःखी नहीं करना चाहते थे।

लोबसांग सामटेन उनका एकमात्र दोस्त और विश्वासपात्र था, और वह हर समय वहॉ पहुॅच सकता था। वह उनके और बाहरी दुनियॉ के बीच, एक सम्पर्क कड़ी के रूप में काम करता था और हर चीज जो चल रही थी, अपने भाई को बताता था। मुझे लोबसांग से पता लगा कि वह हमारी गतिविधियों में काफी रुचि रखते थे और जब मैं बगीचे में काम करता था, उन्होंने अक्सर, अपने दूरदर्शी में हो कर मुझे देखा था। उसने मुझे ये भी बताया कि उसका भाई, बाद में, नोरबुलिंगा के ग्रीष्मकालीन निवास में रहने का विचार रखता था। सुहाना मौसम आ चुका था, और उन्होंने स्वयं पोटाला में परेशान अनुभव किया और घर से बाहर, अभ्यासों को देने योग्य बनने की अभिलाषा की।

अब धूल भरे तूफानों का मौसम समाप्त हो चुका था और नाशपाती के पेड़ों में फूल आने लगे थे। बसंत में उस विशिष्ट मादकता को देते हुए, जो मुझे अपने पहाड़ी घर के दृश्यों में याद है, समीप की चोटियों पर, गर्म धूप में बर्फ के अंतिम अवशेष, एकदम सफेद चमकते थे। एक दिन, गर्मी का मौसम आधिकारिक रूप से प्रारंभ हुआ घोषित किया गया, गर्मी के कपड़े पहने जा सकते थे। यदि कोई ऐसा चाहे, तो भी किसी को अपने खाल के कपड़े छोड़ देने का अधिकार नहीं था। हर साल, शगुनों का विचार करने के बाद, एक दिन नियत किया जाता है, जिस पर भद्रपुरुष और भिक्षु, गर्मी के कपड़े पहनते हैं, भले ही मौसम पहले से ही गर्म हो चुका हो, या बर्फीले तूफान अभी भी चल रहे हों। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। गर्मी के कपड़े, केवल उस दिन से ही पहनने शुरू किए जा सकते थे। यही बात बसंत के अंत में होती थी, जब सर्दी के कपड़े आधिकारिक रूप से दुबारा पहने जाते थे। मैं लगातार शिकायतें सुनता रहा कि बदलाव काफी जल्दी या काफी बाद में आया है और लोग या तो उमस में उनका दम घुट रहा था या आधे जमे हुए थे।

कपड़ों का ये परिवर्तन, एक समारोह के साथ, जो घण्टों तक चलता है, होता है। नौकर, अपनी पीठों पर बंडलों में बंधे हुए नए कपड़े लाते हैं। भिक्षुओं का तरीका सरल होता है। वे मात्र, अपने फर के किनारीदार टोपों को, प्लेट की आकृति के पेपर मैशे (papier-mache) की टोपों से बदलते हैं। जब हर कोई अचानक ही नए कपड़ों में दिखाई देता है, पूरे शहर का प्रदर्शन बदल जाता है।

तथापि, परिधान परिवर्तन के लिये, एक दूसरा मौका भी होता है, और ये तब होता है जबकि पूरा आधिकारिक विश्व, ग्रीष्मकालीन बगीचे के लिए, एक भव्य जलूस के रूप में, दलाईलामा के साथ होता है। आउफस्नाइटर और मैंने इसे देखने के लिए आगे की तरफ देखा। हमने महसूस किया कि हम जीवित बुद्ध के दर्शन अधिक समीप से पा सकते हैं।

ये ग्रीष्म का, एक भव्यतापूर्ण दिन था और पूरा शहर, दो मील लंबे फैले हुए विस्तार के साथ, जो पोटाला और नोरबूलिंगका महल को अलग करता है, पश्चिमी द्वार से हो कर बाहर आ गया था। यहॉ बिना कुचले जाते हुए, चलने के लिए जगह तलाशना भी एक काम था।

मुझे खेद था, कि इस विचित्र भीड़ के फोटो लेने के लिए, मेरे पास कोई कैमरा नहीं था। वास्तव में, केवल एक रंगीन फिल्म ही इसके साथ न्याय कर सकती थी। ये प्रत्येक के लिए हर्षोल्लास का दिन था। गर्मी के प्रारंभ होने का दिन और मैं उस बच्चे के लिए प्रसन्न था, जो अपनी उदास जेल को, एक सुंदर ग्रीष्म उद्यान के साथ, बदलने जा रहा था। उसके जीवन में पर्याप्त कम धूप थी।

पोटाला महल, बाहर से जैसा भव्य और प्रभावकारी है, निवासस्थान के रूप में, ये अंदर से उतना ही खराब, अंधेरा और असुखद है। संभव है कि सभी देव राजा, जितना जल्दी संभव हो, यहॉ से बाहर, नोरबुलिंगा के ग्रीष्मकालीन उद्यान वाले निवास में जाने के लिए प्रसन्न होते रहे हों। लंबे समय पहले, सातवें दलाईलामा के शासनकाल में, निवास की योजना बनाई गई थी परंतु ये तेरहवे दलाईलामा तक जा कर ही पूरी हो पाई।

पश्चात्वर्ती शासक, एक महान सुधारक और साथ ही साथ, आधुनिक विचारों वाले थे। उन्होंने, वास्तव में, अपने निजी उपयोग के लिए, तीन मोटर वाहन आयात किए थे। सीमा पर, ये टुकड़ों–टुकड़ों में बॉटे गए थे और कुलियों और याकों के द्वारा, पर्वतों के ऊपर, राजधानी तक लाए गए थे, जहॉ भारत में प्रशिक्षित एक मैकेनिक ने उन्हें दुबारा जोड़ा था। तब इस आदमी को, ड्रायवर के रूप में, राजा के साथ जोड़ दिया गया था। वह अक्सर मुझसे, अपनी तीनों कारों के संबंध में, जो अभी एक सायबान में बेकार, परंतु बिना संतरी के नहीं, खड़ी थीं, दुःख के साथ बातें करता था। उनमें से दो आस्टिन (Austin) थीं और एक डौज। थोड़े समय के लिए, वे तिब्बत में सनसनीखेज रहीं थीं, अब वे अपने मृत मालिक के लिए दुःख मना रही थीं और सम्माननीय तरीके से जंग खा कर खराब हो रहीं थीं। तेरहवें दलाईलामा, अपने इन वाहनों का, सर्दियों की जेल से भागने के लिए, कैसे उपयोग करते थे, ये कहानी, अभी भी हास्य पैदा कर देती हैं। बसंत के अंत में, वह प्रदर्शन और परिस्थितियों के साथ, पोटाला में वापस लौटते थे, परंतु जितनी जल्दी भीड़ अपने रास्ते से हटती, वह अपनी कारों में से एक में बैठ जाते और वापस नोरबूलिंगा पहुॅच जाते।

हमने तुरइयों और हड्डी की तुरइयों की गूंज सुनी। जलूस समीप आया। भीड़ की बड़बड़ाहटों को दबा दिया गया या वे दब गईं और सम्मानजनक खामोशी का साम्राज्य स्थापित हुआ, क्योंकि पंक्तियों का प्रमुख, नजर में था। सेवा करने वाले भिक्षुओं के एक दस्ते ने, सेना की अग्रगामी टुकड़ी बनाई। उन्होंने दैवीय राजा के निजी सामानों को, अपने साथ, बंडलों में बांधा, हर बंडल को पीले रेशमी कपड़े में लपेटा गया। पीला रंग, संस्कारित लामा चर्च, जिसे पीला चर्च भी कहा जाता है, का रंग है। एक प्राचीन जनश्रुति बताती है कि ये रंग क्यों चुना गया।

त्सोंग कापा (Tsong Kapa), तिब्बत में बौद्धधर्म का महान सुधारक, शाक्य मठ में अपने प्रवेश के दिन नौसिखियों की पंक्ति में पीछे की तरफ खड़ा हुआ था। जब कपड़े पहनाने की उसकी बारी आई, लाल टोपियों की आपूर्ति खत्म हो गई। इसलिए कि उसको बिना टोपी के नहीं होना चाहिए, किसी ने पहली टोपी, जो उसके हाथ में आई, को उठा लिया और उसके सिर पर रख दिया। संयोग से यह पीली थी। त्सोंग कापा ने इसको पहनना कभी नहीं छोड़ा, इसीलिए पीला रंग, संस्कारित चर्च का स्वीकृत रंग हो गया। दलाईलामा स्वागतों और उत्सवों पर, हमेशा एक पीली रेशमी टोपी पहनते हैं और नियमित उपयोग में लाई जाने वाली सभी चीजें इसी रंग की होती हैं। पीले रंग का उपयोग एक विशेषाधिकार था, जो केवल उनको मिला हुआ है।

शीघ्र ही, हमने, अपने पिंजरों में ले जाते हुए, देवीय राजा के पसंदीदा पक्षी देखे। यदाकदा एक तोते ने, तिब्बती भाषा में, स्वागत का कुछ शब्द कहा, जिसको वफादार भीड़ ने, मौज के साथ आह भरते हुए, अपने ईश्वर की तरफ से व्यक्तिगत संदेश, के रूप में प्राप्त किया। नौकरों के पीछे कुछ अंतराल के बाद, लिखावट के साथ सजे हुए झण्डे लिए हुए भिक्षु आए। इसके बाद, पुराने ढंग के चमकदार रंगीन परिधान पहने हुए, और पुराने ढंग के उपकरणों को बजाते हुए, स्थापित संगीतज्ञों का एक बैंड, जिसमें से उन्होंने उत्सुकतापूर्ण खिजाने वाली धुनें निकालीं, आया। इसके बाद त्सेद्रुंग (Tsedrung) के भिक्षुओं की, घोड़े की पीठ पर सवार फौज आई और अपनी पदवी के हिसाब से चली। उनके पीछे, साईसों ने, दलाईलामा के पसंदीदा घोड़ों को, श्रेणी के अनुसार व्यवस्थित करते हुए, भव्य तरीके से चलाया। उनके साज पीले थे और उनकी रकाबें और दूसरी चीजें शुद्ध सोने की थीं।

तब उच्चवर्ग के शिष्टजनों का एक समूह और देवराजा के घरेलू वरिष्ठ सदस्य आये, बाद में मठाध्यक्ष की श्रेणी के सभी भिक्षु थे। अपने मातापिता, भाइयों और बहनों के अलावा ये केवल वे ही लोग होते हैं, जिनको दलाईलामा से बात करने का अधिकार मिला हुआ है। उनके साथ–साथ, अपने आकार और शक्ति के कारण चुने गए– बड़े–बड़े आदमी, काफी लंबे अंगरक्षकों की आकृतियॉ, पैदल चलीं। मुझे बताया गया था कि उनमें से कोई भी, ऊॅचाई में छै फुट छै इंच से कम नहीं है और उनमें से एक, आठ फुट की नाप का था। उनके गद्देदार कंधे, उन्हें और अधिक डरावना बना देते हैं, और वे अपने हाथों में लंबे कोड़े लिये होते हैं। उनमें से गहरे बास (Bass) के समान सुनाई देने वाली एकमात्र आवाज, तब आई, जब वे भीड़ से रास्ता बनाने और अपने टोपों को उतारने के लिए कह रहे थे। चूॅकि लोग पहले से ही, सिर झुकाए और हाथ जोड़े हुए, एकदम मृत खामोशी में, सड़क के

किनारे खड़े हुए थे, स्पष्टरूप से ये उत्सव परेड का एक हिस्सा था।

तब सेना का मुख्य कमाण्डर आया। उसने सलामी के रूप में अपनी तलवार को उठाया। दूसरे श्रेष्ठ पुरुषों की रेशमी और उभरी कढ़ाई वाले परिधानों की तुलना में, उसकी खाकी वर्दी काफी हद तक शालीन दिखाई दी। तथापि, चूँकि वह वर्दी के अपने अलंकरणों को चुनने के लिए स्वतंत्र था, उसके कन्धे पर लगाये हुए बैज और पदवीधारी बिल्ले, शुद्ध सोने के थे। वह अपने सिर पर, सूर्य धूप को बचाने वाला एक टोप पहने हुए था।

और अब जीवन्त बुद्ध की, धूप की रोशनी में सूर्य की तरह चमकती हुई, पीले रंग के रेशमी अस्तर लगी पालकी पहुँची। लाने वाले, अपने हरे रेशमी लवादे में, लाल पट्टीदार शक्ल की टोपियाँ पहने हुए, छत्तीस आदमी थे। एक भिक्षु, एक बड़े आनन्ददायक छाते को, जो मोर पंखों से बना हुआ था, पालकी के ऊपर तानकर पकड़े हुए था। पूरा दृश्य, आँखों के लिए अच्छी दावत थी–लम्बे समय से भुलाई हुई पूर्व की परियों की कहानियों में से एक चित्र, पुनः सजीव हो उठा।

हमारे आसपास, सभी सिर अभिवादन में एकदम नीचे झुके हुए थे, और किसी ने भी अपनी आँखों को उठाने का दुस्साहस नहीं किया। अपने केवल थोड़े से झुके हुए सिरों के साथ, आउफस्नाइटर और मैं, ध्यान दिये जाने योग्य था। हमें दलाईलामा को पूरी तरह देखना था। और वह–अपनी पालकी के सामने वाले कॉच के पीछे, एक मुस्कान के साथ हमारे सामने सिर झुकाते हुए, वहाँ थे। उनके चेहरे के अच्छी तरह तराशे हुए अंग, मोहक और गरिमामय थे, परंतु उनकी मुस्कान एक लड़के की थी, और हमने अनुमान किया कि वह भी हमें देखने के लिए उत्सुक थे।

जलूस अपने शिखर पर पहुँच चुका था। अब धर्मनिरपेक्ष अधिकारी आये। मंत्रिमण्डल के चार मंत्री, भव्य घोड़ों के ऊपर सवार हो कर, महाराज के दोनों तरफ चले। उनके पीछे आई, कुछ वाहकों द्वारा ले जायी जाती हुई, एक दूसरी भव्य कुर्सी, जिसमें ''चीते की चट्टान (the Tiger Rock)'' की शैली में, तिहत्तर वर्ष के एक बूढ़े सज्जन, राज्याधिकारी ताग्त्रा ग्येलत्साब रिम्पोचे (Tagtra Gyeltsab Rimpoche) बैठे थे। उन्होंने कठोरता से अपने सामने देखा और अभिवादन के लिए कोई मुस्कान नहीं दी। अपने कर्त्तव्यों के निर्वहन में कठोर, और कर्तव्यनिष्ठ–वह लोगों को देखते हुए नहीं लगे। उनके उतने ही दुश्मन थे, जितने कि दोस्त। उनके बाद, राज्य के तीन स्तम्भों के प्रतिनिधि, सेरा, ड्रेबुंग, तथा गांडेन मठों के मठाध्यक्ष, सवार हो कर चल रहे थे। तब कनिष्ठ क्रम के भद्रपुरुष, अपने उचित क्रम में, प्रत्येक समूह, अपने पद के अनुसार उचित परिधान पहने हुए, आये। कनिष्ठ क्रम, बकवास छोटी सी टोपियाँ पहने थे, जो मात्र उनकी चोटी को ढकती थीं और रिबन से उनकी ठोढ़ियों के नीचे, बांधी गईं थीं।

दर्शक के गहरे ध्यान में, मैंने सहसा ही सुपरिचित संगीत की आवाज सुनी। हॉ–इस सम्बन्ध में कोई गलती नहीं, ब्रिटेन का राष्ट्रीय गान! अंगरक्षकों के बैण्ड ने, रास्ते में आधी दूरी के साथ अपना ठहराव ले लिया था, और शाही कुर्सी उनके सामने, ठीक आई ही होगी, इसलिए, देवराज को सम्मान देने के लिए, उन्होंने बजाया ''प्रभु महारानी की रक्षा करें (God Save the Queen)।'' मैं इसे सामान्यतः अच्छा बजाये जाते हुए सुन चुका हूँ, परंतु इसने मुझे कभी इतनी भ्रान्ति पैदा नहीं की। मुझे बाद में पता लगा कि बैण्ड मास्टर को भारतीय सेना में प्रशिक्षण दिया गया था। उसने देख लिया था कि ये संगीत, सभी उत्सवों का प्रमुख भाग है, इसलिए वह अपने साथ इस संगीत को वापस लाया। विरली हवा के कारण तुरहियों के कुछ गलत सुरों के सिवाय, इसको तिब्बतीय शब्दों के अनुसार बनाया गया और तब पुलिस के अलगोजेवाजों (pipers) ने चुनी हुई स्कॉटी (Scottish) धुनें बजाईं।

तिब्बती संगीत प्रसंवादियों (harmonics) से अपरिचित है, परंतु उसके तराने (melodies) हमारे कानों को आनन्ददायी होते हैं। उसी टुकड़े में वे आसानी से, उदास से आनन्द में गुजर जाते हैं, और लय का बदला जाना, बहुत तेजी से होता है।

जलूस, ग्रीष्मकालीन महल के दरवाजों के पीछे गायब हो गया, और भीड़, शेष दिन को अधिकांशतः खुली हवा में गुजारने के लिये तितर–बितर हो गई। नोमाडों ने, भेड़ की खाल के अपने गरम चोगों में पसीना बहाते हुए, अपने तम्बुओं को उखाड़ा और चांगतांग के अपने उच्चदेशीय देशों के घरों को जाने के लिए चले। गर्मी में कोई भी तिब्बती, भारत में तीर्थयात्रा करने के लिए उत्सुक नहीं होता, और कोई भी नोमाड, गर्मी के मौसम में स्वेच्छा से ल्हासा नहीं आता। राजधानी समुद्रतल से केवल बारह हजार फुट ऊपर है, और नोमाडों में से अधिकांश, पन्द्रह हजार फुट से ऊपर रहते हैं, वे गर्मी को उमस भरी (opressive) महसूस करते हैं।

हम उस सबसे, जो हमने देखा, प्रभावित होते हुए, गम्भीरता के साथ, घर को चले। हमने, तिब्बत में अधिकारों के वितरण का, जलूस जो हमारे सामने गुजरा था–दलाईलामा और राज्याधिकारी उच्चशिखर पर, और आगे और पीछे, नीचे की तरफ उतरती हुईं और भिन्न–भिन्न श्रेणियों के साथ की तुलना में, एक अच्छा उदाहरण नहीं देखा होता। ये राज्य में उनकी शक्ति का महत्व था कि भिक्षु सामने चले।

धर्म, राज्य के तानेबाने का दिल है। तीर्थयात्री, अपनी धार्मिक आस्थाओं की इस भव्यता का साक्ष्य बनने के लिए, वर्ष में एक बार, चांगतांग के दूरस्थ भागों से, इसको देखने आने के लिये, अनगिनित कठिनाइयों को झेलते हैं, और वे अपने कठिन और एकान्त जीवनों के बीच, अपनी स्मृति को पोषित करते हैं। तिब्बतियों का दैनिक जीवन, धार्मिक आस्थाओं के कारण व्यवस्थित होता है। पवित्र पाठ लगातार उनके ओठों पर रहते हैं; प्रार्थनाचक्र बिना रुके घूमते रहते हैं। प्रार्थनाध्वज घरों की छतों और पहाड़ी दर्रों की चोटियों पर लहराते रहते हैं, देवताओं की सार्वत्रिक उपस्थिति का साक्ष्य बनते हैं, जिनका क्रोध ओलों के रूप में प्रकट होता है, और जिनका आशीर्वाद जमीन की उपज और उसकी उपयोगिता के रूप में दिखाई देता है। जनता का जीवन, देवीय इच्छा के द्वारा नियंत्रित होता है, लामा, उसे शब्दों में बताने वाले होते हैं। किसी भी चीज को हाथ में लेने से पहले, हमको शकुनों की जॉच करनी चाहिए। देवताओं से अनवरतरूप से विनती की जानी चाहिए, उन्हें मनाया जाना चाहिए, या धन्यवाद दिया जाना चाहिए। भद्रपुरुषों के घरों, और नोमाडों के तम्बुओं में, हर जगह प्रार्थना के दीपक जलाये जाते हैं–एक ही आस्था उनको प्रकाशित करती है। तिब्बत में, पार्थिव अस्तित्व, बहुत कम मूल्यवान है, और मृत्यु का कोई भय नहीं है। लोग जानते हैं कि वे फिर से पैदा होंगे और इस जीवन में कमाये गये पवित्र सदाचरण के द्वारा, अगले जीवन में, उच्चस्तरीय अस्तित्व की आशा करते हैं। धर्म व्यवस्था, दुबारा सुनवाई की आखिरी अदालत है और व्यक्तियों द्वारा, सर्वाधिक सरल भिक्षु का आदर किया जाता है और कुशो (Kusho) की पदवी के साथ सम्बोधित किया जाता है, मानो कि वह भद्र समुदाय का एक सदस्य हो। धर्म के प्रति आदर के प्रतीक के रूप में, और बच्चे के जीवन का, अच्छा प्रारम्भ करने के लिए, हर परिवार में से कम से कम एक बेटा, मठ को समर्पित किया जाता है।

इन सभी वर्षों में, मैं कभी किसी से नहीं मिला, जिसने बुद्ध की शिक्षाओं की सत्यता के विषय में, हल्का सा भी संदेह व्यक्त किया हो। ये सत्य है कि वहॉ अनेक सम्प्रदाय (sects) हैं, परंतु वे बाहरी रूप से ही अलग दिखाई देते हैं। कोई भी, धार्मिक उत्साह, जो कि हर एक में से विकीर्णित (radiate) होता है, के लिये, अपने दिल को बन्द नहीं कर सकता। देश में थोड़े समय के बाद, एक मक्खी को भी विवेकहीन तरीके से मारना, किसी के लिए भी अब और सम्भव नहीं था और मैंने कभी किसी कीड़े को, जिसने मुझे परेशान किया हो, किसी तिब्बती की उपस्थिति में, मसले जाते हुए नहीं देखा। इस मामले में, लोगों का रवैया वास्तव में, हृदयस्पर्शी होता है। यदि किसी पिकनिक में, कोई चींटी किसी के कपड़ों पर चढ़ जाती है तो उसे हल्के से पकड़ कर, नीचे व्यवस्थित करके रखा जाता है। इस आपदा को भी, जब कोई मक्खी किसी चाय के कप में गिर जाये, किसी भी कीमत पर उसे डूबने से बचाया जाना चाहिए, क्योंकि ये किसी की बूढ़ी दादी का अवतार हो सकती है। मछलियों को बचाने के लिए, इससे पहले कि वे जम कर मर जायें, सर्दियों में वे तालाबों की बर्फ को तोड़ते हैं और गर्मियों में, इससे पहले कि तालाब सूख जायें, वे उन्हें बचाते हैं। ये प्राणी, जब तक कि वे पानी में, अपने घर में, वापस नहीं जा सकें, डोल या कनस्टरों में रखे जाते हैं। इस बीच, उनको बचाने वाले, अपनी आत्मा की भलाई के लिए कुछ कर चुके होते हैं। कोई जितने ज्यादा जीवनों को बचा सकता है, वह उतना ही ज्यादा प्रसन्न होता है।

अपने मित्र, वांग्डुला के साथ एक अनुभव को, मैं कभी नहीं भूलूंगा। हम एक दिन, एकमात्र चीनी रेंस्तरा में गये, और वहॉ हमने एक बतख को, स्पष्टरूप से पकाने वाले बर्तन के रास्ते पर, आंगन के आसपास दौड़ते हुए देखा। बांग्डुला ने, जल्दी से, अपनी जेब में से एक बड़े मूल्य का नोट दिया और बतख को रेस्टोरेंट के मालिक से खरीद लिया। तब उसने अपने नौकर से, इस बतख को ले जा कर, अपने घर में छुड़वाया, और उसके वर्षों बाद तक, मैं इसे सौभाग्यशाली जीव के रूप में, अपने स्थान के आसपास, ठूंसठूंस कर पेट भरते हुए देखता रहा।

देश के सभी भागों में, भवन निर्माण के कार्य से जुड़े हुए लोगों के लिए, सभी जीवित प्राणियों के प्रति, इस विशिष्ट रवैये का–पिछले तीन सालों की अवधि में, दलाईलामा द्वारा ध्यान में व्यतीत तीन वर्षों की अवधि में, ये एक पुनःर्लिखित बिन्दु था। ये बताया गया था कि भवन निर्माण के कार्य में, कीट और पतंगे आसानी से मारे जा सकते हैं और इनको बचाने की सर्वोच्च परवाह रखने का, कि ऐसा किसी के साथ न हो, उत्तरदायित्व सबके ऊपर था। बाद में, जब मैं जमीन के कामों का प्रभारी था, मैंने खुद अपनी ऑखों से देखा कि कुली लोग, बेलचों में मिट्टी

भरने के साथ–साथ जिंदा चीजों को बाहर हटा देने के लिए, किस प्रकार अभ्यस्त थे ।

इस सिद्धान्त से ये समझ में आता है कि तिब्बत में कोई मृत्युदण्ड नहीं है। हत्या को नृशंस अपराधों में गिना जाता है, परंतु हत्यारे को केवल कोड़े लगाये जाते हैं और उसके टखनों में, ढली हुईं लोहे की बेड़ियॉ डाली जाती हैं। ये सही है कि मृत्युदण्ड, जैसे कि यह पश्चिमी देशों में लागू होता है, की तुलना में, लगाये गये कोड़े, वास्तव में, कम मानवीय होते हैं। अपराधी, दंड पाने के बाद, अक्सर, पीड़ादायक मृत्यु से मर जाता है परंतु इसमें धार्मिक सिद्धांत का उल्लंघन नहीं हुआ। आजीवन, जंजीरों में बांधे जाने के दंडित अपराधी, या तो श्यो (Sheo) की राष्ट्रीय जेलों में बंद कर दिये जाते हैं या किसी जिला राज्यपाल को भेज दिये जाते हैं, जो उनकी हिरासत के लिए उत्तरदायी होता है। उनका भाग्य, निश्चित रूप से, जंजीर से बंधे हुए उन साथी बंदियों की तुलना में, प्राथमिकता देता है, जिन्हें बुद्ध के जन्म और मृत्यु दिवस पर, जब वे लिंगखोर में भीख मांग सकते हैं, छोड़े जाने का आदेश दिया जाता है।

चोरी और अन्य छोटे अपराध, सार्वजनिकरूप से कोड़ा लगाकर दण्डित किये जाते हैं। एक बोर्ड, जिसके ऊपर उसका अपराध लिखा हुआ होता है, अपराधी के गले में लटका दिया जाता है, और तब उसे कुछ दिनों के लिए एक छोटी टिखती (pillory) में खड़ा रहना पड़ता है। फिर धर्मार्थी लोग यहॉ आते हैं और उसे खाना और पीना देते हैं। जब राष्ट्रीयपथ पर लूटने वाले लोग पकड़े जाते हैं, सामान्यतः, उनका एक हाथ या एक पैर काटा जाता है। मैं ये देख कर आतंकित था कि घाव किस तरीके से इतने फैल गये थे, और घावों को किस तरह जीवाणुरहित किया जाता था। काटे हुए हाथ या पैर को उबलते हुए मक्खन में डाल दिया जाता था और वहॉ पकड़ कर रखा जाता था। ये भी, कुकर्मियों को रोक नहीं पाता था। राज्यपाल ने मुझे अपराधियों के बारे में बताया जिनके हाथ, गुस्ताखी के संकेत के रूप में, दण्डस्वरूप काट दिये गये थे और कुछ ही सप्ताहों बाद, उन्होंने फिर से अपराधी जीवन में प्रवेश पा किया। ल्हासा में, इस प्रकार के दण्ड देने के दुष्ट, खराब, तरीके, अब समाप्त कर दिये गये हैं।

राजनैतिक अपराधों के लिए दण्ड बहुत कठोर हैं। लोग अभी भी, तेलग्येलिंग (Telgyeling) के भिक्षुओं की चर्चा करते हैं, जिन्होंने चालीस साल पहले, चीनियों के साथ, सम्बन्ध रखने चाहे। उनके मठ को गिरा दिया गया था और उनके नामों को मिटा दिया गया था।

तिब्बत में, विधि न्यायालयों का कोई संगठित तंत्र नहीं है। अपराधों की जॉच करने का काम, भद्र श्रेणी के दो या तीन लोगों को सौंप दिया जाता है, परंतु दुर्भाग्यवश, यहॉ अत्यन्त भ्रष्टाचार व्याप्त है; वास्तव में, केवल कुछ ही भद्र पुरुषों की सत्यनिष्ठा (integrity) उच्चश्रेणी की होती है। सामंतवादी तंत्र में, रिश्वत के रूप में प्राप्त हुई राशि को, बहुत से लोग, अतिरिक्त सुविधा के रूप में मानते हैं। यदि कोई बचाव करने वाला सोचता है कि, उसे अन्यायपूर्वक दण्डित किया गया है, तो वह दलाईलामा से पुनर्विचार की प्रार्थना करने के लिए जा सकता है। इस प्रकार, यदि वह निर्दोष सिद्ध हुआ, तो उसे क्षमा दिया जाता है, और यदि नहीं, तो उसके दण्ड को दुगना कर दिया जाता है।

नववर्ष के बाद, इक्कीस दिनों के सिवाय, जबकि सारे अधिकार भिक्षुओं द्वारा अभ्यास में लाये जाते हैं, ल्हासा में नगर दण्डाधिकारी, स्थाईरूप से, न्यायाधीशों का कार्य करते हैं। दण्डाधिकारी को, कुछ जोड़े आकलन कर्ताओं के द्वारा, सहायता दी जाती है, और उनको बहुत कुछ व्यस्त रखा जाता है, क्योंकि, तब तीर्थयात्रियों के अतिरिक्त, अनेक दुश्चरित्र लोग भी राजधानी में आ जाते हैं।

दलाईलामा के, गर्मी के अपने निवास में पहुॅच जाने के बाद, मौसम बहुत गर्म, परंतु उतना अधिक दुःखदायी नहीं हुआ। इस मौसम में, दिन का तापमान, कभी भी पिचासी डिग्री फारेनहाइट से ऊपर नहीं जाता, और रातें ठण्डी होती हैं। हवा बहुत सूखी होती है, और बरसात कभीकभार ही गिरती है। शीघ्र ही, हर आदमी बरसात के लिए प्रार्थना करने लगता है। ल्हासा के आसपास अनेक झरने हैं, परंतु लगभग हर वर्ष, वे सभी सूख जाते हैं। जब ऐसा होता है तो लोगों को अपना पानी क्यी चू नदी से लाना पड़ता है, जो हिमनदों से नीचे की ओर, साफ और ठण्डी बहती है।

जब झरने बहना बन्द कर देते हैं और जौ के खेत मुरझा जाते हैं और सूख जाते हैं, तब सरकार आदेश देती है कि जब तक कि आदेश को वापस न लिया जाये, हर नागरिक को गलियों में पानी ड़ालना चाहिए। अचानक ही पूरा का पूरा शहर, व्यस्त हो जाता है, और जगों और बाल्टियों के साथ, हर आदमी नदी में जाने की जल्दी करता है और पानी को, वापस शहर में लाता है। भद्र लोग, पानी लाने के लिए, अपने नौकरों को भेज देते

हैं, परंतु जब वे इसे लाते हैं, तो वे इसको गलियों और अपने अड़ौसपड़ोस में उडेल़ने में अपना हाथ लगाते हैं।

वहॉ पानी का एक नियमित मेला होता है, जिसमें, किसी प्रकार की श्रेणी या स्थिति के विचार के भेदभाव के बिना प्रत्येक आदमी भाग लेता है। खिड़कियों और छतों से बहती हुईं पानी की धाराऐं राहगीरों के सिर पर गिरतीं हैं और यदि कोई एकदम भी भीग जाये तो उसका बुरा मानना, बुरी शक्ल ले लेता है। ये बच्चों के जीवन का अपना समय होता है। मेरे लम्बे और प्रसिद्ध होने के कारण, मेरे हिस्से में, अपने हिस्से से अधिक भीगना आता था। हर कोई समझता था कि ''जर्मन हैंरिगला (German Henrigla)'' एक अच्छा खेल था।

जबकि पानी की लड़ाई सड़कों पर चल रही होती, गैडांग का राज्यज्योतिषी, तिब्बत में वर्षा कराने वाला सर्वाधिक प्रसिद्ध व्यक्ति, दलाईलामा के उद्यान में बुलाया जाता। यहॉ सरकार के सर्वोच्च अधिकारी एक साथ एकत्रित होते हैं और बड़ा लामा (Grand Lama) स्वयं ही समारोह की अध्यक्षता करता है। वर्षा कराने वाला, एक भिक्षु, शीघ्र ही समाधि तन्द्रा (trance) में चला जाता। उसके हाथपैर झटकों के साथ चलने लगते, वह अजीब से उच्चारण और आहें भरने लगता। उस क्षण, भिक्षु अधिकारियों में से कोई एक अधिकारी, उस राज्यज्योतिषी से बरसात प्रदान किये जाने और इस प्रकार फसल को बचाने की प्रार्थना करता है। बरसात कराने वाले के मिर्गी की तरह के झटके बढ़ जाते हैं, और उसके मुॅह से, ऊॅचे स्वर में, उन्मत्त शब्द निकलने लगते हैं। एक लिपिक उन संदेशों को ग्रहण करता है और उन्हें मंत्रीमण्डल के मंत्रियों को सौप देता है। इस बीच, सम्मोहन में गये हुए माध्यम का शरीर, जो देव के द्वारा, अब और अधिक धारण नहीं किया जाता, बेहोश हो कर जमीन पर गिर पड़ता है और उसे बाहर ले जाया जाता है।

इस कार्यनिष्पादन के बाद, ल्हासा का हर एक व्यक्ति, उत्सुकता के साथ बरसात की प्रतीक्षा करता है और बरसात होती है। चाहे इसे कोई चमत्कार कहे या किसी प्रकार का तर्क पूर्ण स्पष्टीकरण दे, तथ्य ये है कि जैसे ही ये नाटक पूरा होता है, उसके तुरंत बाद, हमेशा बरसात होती है। तिब्बती लोग शक नहीं करते कि उनके संरक्षक देवता ने माध्यम, जब वह सम्मोहन में है, के शरीर में प्रवेश किया है और वह लोगों की प्रार्थनाओं को सुनता है और उन्हें स्वीकृत करता है।

स्वाभाविकरूप से, इस स्पष्टीकरण ने मुझे संतुष्ट नहीं किया, और मैंने और अधिक वैज्ञानिक हल निकालने का प्रयास किया। मुझे आश्चर्य हुआ कि शायद, सड़कों पर बहुत ज्यादा जल छिड़काव की वजह से वाष्पीकरण हुआ या शायद तिब्बत के उच्चदेशीय क्षेत्रों में, मानसून की बरसात ने बहुत अधिक पानी बिखरा दिया। ब्रिटिश दूतावास ने वहॉ मौसम विभाग का एक स्टेशन बनाया है और वैज्ञानिकरूप से बरसात को नापा है। ये औसतन लगभग चौदह इंच प्रतिवर्ष होती है और अधिकांशतः इसी मौसम में होती है। बाद में, आफस्नाइटर ने, बरसात के पानी को नापने का एक यंत्र बनाया और उसे क्यी चू में लगाया और प्रतिवर्ष लगभग उसी दिन, नदी में जलस्तर के बढ़ने पर, प्रथम स्तर को नापा। यदि उसने बरसात कराने वालों के तरीके का उपयोग किया होता तो उसे एक सफल राज्यज्योतिषी के रूप में स्थापित किया जा सकता था।

पुराने समयों में, ल्हासा में, बरसात काफी अधिक रही होगी। वहॉ बहुत अधिक घने जंगल होते थे, जिन्होंने अधिक बरसात और अधिक ठण्डा मौसम कराया होगा। शताब्दियों तक, जंगल के काटे जाने ने, प्रान्तों में अपना काम किया। क्यी चू की वृक्षहीन घाटी में, ल्हासा, स्वयं में, चारागाहों और विल्लो (willow) और पोपलर (poplar) के झुरमुटों के साथ, एक खरा नखलिस्तान (oasis) था।

हमको ल्हासा में लगातार बुलाया जाता था और अक्सर, हमसे सलाह मांगी जाती थी। इस प्रकार नगर का जीवन, हर कोण से, हमारी जानकारी में आया। हमारे पास, सार्वजनिक प्रशासन के विस्तार के साथसाथ, उनके पारिवारिक जीवन, दृष्टिकोण, तौरतरीकों, और नैतिकता का अध्ययन करने के अवसर थे। प्रतिदिन कुछ न कुछ नया होता था, और अनेक परंतु सभी नहीं, रहस्य सामान्य हो गये थे। एक चीज ने, निश्चितरूप से, हमारी स्थिति को बदल दिया था। हम अब किसी प्रकार से विदेशी नहीं थे, हम वहीं के रहने वाले हो गये थे।

नहाने का मौसम आ चुका था। बूढ़े और जवान, महान और क्षुद्र, सभी नदी के किनारे वाले बागों में इकट्ठे हुए और उन्होंने स्वयं में तैराकी और उथले पानी में पैर से नाव चलाने का आनंद लिया। चुस्त लोगों ने, वहॉ सुखदायक पिकनिक पार्टियॉ मनाईं और अपने खुद के तम्बू गाड़े। आप भारत में पढ़ी हुई, अनेक नौजवान औरतों को देख सकते थे, जो स्नान के अपने आधुनिक परिधानों को सगर्व दिखाती थीं। पानी उछालने के अंतरालों में, पानी में स्नान करने वाले, पिकनिक मना रहे थे और जुआ खेल रहे थे, और शाम को हर दल, उस सुंदर दिन के लिये देवों को आभार देने के लिये, नदी के किनारे अगरबत्ती जलाता था।

मैं तैराकी के अपने साहस के लिए अत्यधिक प्रशंसित होता था। तिब्बती लोग, तैराकी के सम्बन्ध में अधिक नहीं जानते क्योंकि सीखने के लिए पानी अत्यधिक ठण्डा होता है। वे जो तैर सकते हैं, कुल मिला कर, मात्र अपने आपको, पानी पर तैरते हुए बनाये रख सकते हैं। अब मैं, उनके बीच में एक विशेषज्ञ था। वास्तव में, इस विचार के साथ कि मैं अपनी दक्षता के कौशल का प्रदर्शन करूँगा, मुझे हर जगह बुलाया जाता था, परंतु मेरे सियाटिका के दर्द ने, तैराकी को समय गुजारने का एक कष्टमय साधन बना दिया था, चूँकि पानी बहुत ठण्डा होता था, पचास डिग्री फेरेनहाइट से ऊपर कभी नहीं। कई बार, परंतु अक्सर नहीं, मैं अपने मित्रों को आनंद देने के लिए, डुबकी लगाता था। फिर भी, वहॉ कई मौके आये, जब मेरी उपस्थिति सेवा करने योग्य थी। मैंने तीन लोगों को डूबने से बचाया, क्योंकि नदी में वहॉ कुछ खतरनाक स्थान थे, जहॉ रुकावटों ने कुछ भंवरें (whirlpools) और धारा के नीचे के प्रवाह (undercurrents) पैदा कर दिये थे।

एक दिन, मैं विदेश मंत्री, सुरखांग और उसके परिवार, जिसने अपने तम्बू नदी के किनारे लगाये थे, का अतिथि था। मंत्री का इकलौता लड़का जिग्मे (Jigme) (आशय ''किसी से न डरने वाला'') भारत के स्कूल से, वहॉ एक छुट्टी बिताने आया था। उसने तैरा कैसे जाये, कमोवेश, स्कूल में सीखा था। मैं नदी में, नीचे की धार में तैर रहा था, जब मैंने अचानक ही चीखों की आवाजें सुनीं और लोगों को अजीब तरीके से, किनारे पर और पानी की तरफ इशारा करते हुए देखा। मैं जल्दी से तैर कर जमीन पर आया और तम्बू की तरफ दौड़ा। जहॉ मैंने देखा कि, एक भंवर ने जिग्मे को अपनी भंवरों में फंसा लिया था। मैं तुरंत ही गोता लगा कर अंदर गया और यद्यपि भंवरों ने मुझे भी पकड़ लिया, मैं मजबूत तैराक था और मैने उस अचेत बालक को पकड़ कर बाहर लाने की व्यवस्था की और उसे किनारे पर लाया। पहले से प्रशिक्षित होने के कारण, मैं जानता था कि उसको पुनर्जीवित कैसे किया जाये, और अपने पिता, जो ऑसू बहा रहा था, के महान आनंद के लिए, एक छोटे से समय में, वह फिर से सांस लेने लगा और जिसने मुझे अतिरेक से आभार के प्रदर्शन के भावों के साथ लिया। मैंने एक जीवन बचाया था और उसने मुझे बहुत लाभ दिलाया।

इस घटना के परिणाम स्वरूप, सुरखांग परिवार के साथ मेरे सम्बन्ध, अभिन्न बन गये, और मैं एक योद्धा के संयोजन को अध्ययन करने का मौका पा सका, जो तिब्बत भर में, सामान्य से अलग हट कर था।

मंत्री का, अपनी पहली पत्नी से अलगाव हो गया था। दूसरी, जिग्मे की मॉ, मर गई थी। सुरखांग, अब अपने से निचली श्रेणी के एक भद्रपुरुष की जवान पत्नी को साझा करता था। शादी के अनुबंध में, जिग्मे को तीसरे पति के रूप में लाया गया था, क्योंकि उसका पिता, अपने पूरे सौभाग्य को, उसकी विधवा के लिए नहीं चाहता था। अनेक परिवारों में इसी प्रकार की जटिलतायें पाई गईं। एक बार, मेरे सामने एक प्रकरण आया, जिसमें एक मां, अपनी खुद की लड़की की भाभी थी। तिब्बत में, कोई भी वहुपति और वहुपत्नी प्रथा को पा सकता है, परंतु अधिकांश लोग एक पति/पत्नी गामी होते हैं।

जब किसी आदमी की अनेक पत्नियॉ होती हैं तो उनके साथ, उसके सम्बन्ध, उसकी तुलना में, जो कि एक मुस्लिम हरम में पाये जाते हैं, अलग तरह के होते हैं। एक आदमी का, एक घर की अनेक पुत्रियों के साथ विवाह करना, जिसमें कोई पुत्र और वारिस नहीं है, सामान्य व्यवहार है। ये व्यवस्था परिवार के भाग्य को खराब होने से बचा लेती है। हमारे मेजबान त्सारोंग ने तीन बहिनों से शादी की थी और उसने दलाईलामा से, उनका पारिवारिक नाम लेने की आज्ञा प्राप्त की थी।

जल्दी–जल्दी, इस प्रकार से जुड़ाव के द्वारा पैदा हुए, ऐसे असामान्य सम्बन्धों के होने के बावजूद, हमारी तुलना में, तिब्बत में, टूटी हुई शादियॉ, उतनी सामान्य नही हैं। ये बड़े रूप से, इस तथ्य के कारण होता है कि, ये लोग, अपनी भावनाओं के प्रति, उनसे पलायन की ओर झुके हुए नहीं होते। जब अनेक भाई, एक ही पत्नी को साझा करते हैं, तब सबसे बड़ा, घरेलू मामलों में, हमेशा स्वामी होता है और दूसरों को केवल तभी, जब वह बाहर हो या कहीं दूसरी जगह आनंद ले रहा हो, अधिकार होता है परंतु, कोई भी, इसके लिए ओछा कदम नहीं उठाता क्योंकि वहॉ औरतों की बहुतायत है। अनेक लोग, मठों में ब्रह्मचर्य का जीवन जीते हैं। हर गॉव में एक मठ या बिहार होता है। अनियमित सम्बन्धों के बच्चों को वंश परम्परा चलाने का अधिकार नहीं होता, और सभी सम्पत्ति वैधानिक पत्नी के बच्चों को जाती है। यही कारण है कि ये इतना महत्वपूर्ण नहीं है कि भाईयों में से कौन सा, बच्चे का बाप है। बड़ी बात तो यह है कि सम्पत्ति अभी भी, परिवार में बनी रहती है।

तिब्बत, जनसंख्या के वाहुल्य के कारण होने वाली बुराइयों को नहीं जानता। शताब्दियों से, निवासियों की संख्या लगभग उतनी ही बनी हुई है। इसके अतिरिक्त, बहुपत्नी प्रथा और मठ की प्रथा के अभ्यास के, शिशु मृत्यु

दर, इस तरह की बात के लिए, अपना सहयोग प्रदान करती है। मैं गणना करता हूँ कि तिब्बतियों के बीच, औसत जीवन की आशा, लगभग तीस वर्ष के आसपास है। छोटे बच्चों की बहुत बड़ी संख्या, मर जाती है, और अधिकारियों के पूरे झुंड में से, सत्तर वर्ष की आयु वाला केवल एक ही है।

मैंने तिब्बत के सम्बन्ध में, कई पुस्तकों में पढ़ा है कि मेजबान, अपनी पत्नी या पुत्री को, अपने अतिथि को प्रस्तुत करने का अभ्यस्त होता है। यदि मैंने इसके ऊपर विश्वास किया होता, तो मुझे बुरी तरह निराश होना पड़ता। कई बार ऐसा हुआ कि एक सुंदर नौजवान नौकरानी, हल्के दिल से, किसी को दी गई, परंतु लड़कियॉ बिना साथ–साथ घूमे फिरे, बिना मंगनी के, अपने आपको प्रस्तुत नहीं करतीं। वास्तव में, ढीली लड़कियॉ, संसार में हर जगह पाई जा सकतीं हैं, और ल्हासा में भी, कुछ निश्चित सुन्दरियॉ हैं, जो व्यावसायिक आधार पर प्रेम करती हैं। पहले समयों में, शादियॉ मातापिताओं के द्वारा व्यवस्थित की जाती थीं, परंतु आजकल नौजवान अपने जोड़ों को खुद ही चुन लेते हैं। वे छोटेपन में ही ब्याह कर लेते हैं, लड़कियॉ सोलह साल की, और लड़के कम से कम सत्रह या अठारह साल के। शासनतंत्र के लोग, केवल अपने ही वर्ग में शादियॉ करते हैं, और ये नियम कठोरता से लागू होता है। आंतरिक प्रजनन को वंचित करने के लिए, रिश्तेदार, सात पीढ़ियों के बाद के अलावा, आपस में शादी नहीं कर सकते। केवल दलाईलामा ही इन नियमों में अपवाद की आज्ञा दे सकते हैं। कभी कभार, जनता के समर्थ लोग, भद्रता को प्रोन्नत किये जाते हैं, और यह, लगभग दो सौ परिवारों, जो कि शालीन कहे जाते हैं, के इस छोटे से वृत्त में, नये खून को शामिल करता है।

तलाक विरले ही होते हैं और उन्हें सरकार के द्वारा अनुमोदित होना पड़ता है। किसी बेवफा साथी को, अत्यन्त कठोर दण्ड, उदाहरण के लिए नाक काटना, दिये जाते हैं। परंतु वास्तविकता में, मैंने कभी किसी मामले में नहीं सुना, जिसमें ये दण्ड दिया गया हो। उन्होंने एक बार मुझको बिना नाक की, एक बूढ़ी औरत दिखाई थी, जो बेवफाई में आरोपित की गई थी और पहचानी गई थी–परंतु ये शायद, सिफलिस (syphilis) का भी कोई मामला हो सकता था।

तिब्बत में, संसर्गजन्य रोग (veneral desease) बहुत सामान्य हैं। ल्हासा में अनेक मामले होते हैं, परंतु उनको बहुत महत्व नहीं दिया जाता। सामान्यतः उनकी उपेक्षा की जाती है, और जब बहुत देर हो चुकी होती है, तब अच्छा करने के लिए डॉक्टर को बुलाया जाता है। चिकित्सा की पाठशाला के भिक्षुओं को, पारे की एक पुरानी दवा ज्ञात है।

यदि चिकित्सीय और सफाई की अवस्थाऐं सुधारी गईं होती, तो तिब्बत के भविष्य के लिए कितना कुछ और अधिक किया जा सकता था! देश में, शल्यक्रिया, पूरी तरह से अज्ञात है। आउफस्नाइटर और मैं, महामारी के आक्रमण के विचार के ऊपर, हंगामा किया करते थे। हर संदेहास्पद दुःख हमें चेतावनी देता था। बीसवीं शताब्दी में, इस बीमारी से मरना, बकवास लगता है। तिब्बती लोग, मानव शरीर परं शल्यक्रिया के सम्बन्ध में, फोड़ों को चीरने के अतिरिक्त कुछ भी नहीं जानते। इसीप्रकार से, नजरबंदी में उपकरणों का उपयोग, अज्ञात है। तिब्बती लोग, एकमात्र सम्बन्ध, जो वे शल्यक्रिया के साथ रखते हैं, वह है उन लोगों की गतिविधियॉ, जो मुर्दों की चीड़फाड़ करते हैं, डोम लोग (Domdens) । वे अक्सर, रिश्तेदारों को मृत्यु का कारण बताते हैं या जब वे किसी लाश में, कोई दिलचस्प चीज देखते हैं, चिकित्सा के अभिरुचि रखने वाले विद्यार्थियों को सूचित करते हैं।

चिकित्सा के स्कूल, दुर्भाग्यवश, सभी प्रकार की उन्नतियों के विरोध में है। बुद्ध और उनके सुधारकों के द्व ारा सिखाया गया तरीका, सभी नियमों के ऊपर होता है। जिनको बिगाड़ा नहीं जा सकता। शिक्षा की दो शाखायें हैं, एक चांगपोरी (Changpori) में या ''लोह पहाड़ी (iron mountain) पर,'' स्थित है और दूसरी, बड़ी, नीचे शहर में। हर मठ, काफी संख्या में विद्वान नौजवानों को इन स्कूलों में भेजता है। पाठ्यक्रम दस से पन्द्रह सालों के बीच पूरा होता है। विद्वान वृद्ध भिक्षु, बच्चों को प्रशिक्षण देते हैं, जो अपनी पुस्तकों को घुटनों पर रखे हुए, पालथी मार कर जमीन पर बैठते हैं। रंगीन चित्र, अक्सर, दीवालों पर बनाये जाते हैं। जब एक शिक्षक, एक चित्र के माध्यम से, एक निश्चित पौधे के द्वारा उत्पन्न हुए विष दिये जाने के लक्षणों को समझा रहा था, मैं एक बार उपस्थित था। शिष्यों को पौधे के चित्र, संकेत, लक्षण, और विषनाशक और उनकी प्रतिक्रियायें दिखायी गयी–ठीक वैसे ही जैसे कि, हमारे स्कूलों के बच्चों को भित्ति चित्र (दिखाये जाते हैं)।

ज्योतिष, चिकित्सा विज्ञान का एक अभिन्न अंग है। चिकित्सा के स्कूलों में, शिक्षा के पुराने कामों की सलाह लेने के बाद, वार्षिक चन्द्र पंचाग (lunar calendar), को साथ रखा जाता है। सूर्य और चन्द्रग्रहणों का लेखा, सावधानी पूर्वक रखा जाता है, और मासिक और वार्षिक मौसमों की भविष्यवाणियॉ तैयार की जाती हैं।

बसन्त के अंत में, पूरा स्कूल जड़ीबूटियों की खोज में पहाड़ों में चला जाता है। लड़के अभियान को, अत्यधिक उत्साह के साथ, आनन्द से लेते हैं, यद्यपि उनको काफी अधिक व्यस्त रखा जाता है। हर दिन वे एक नये स्थान में शिविर करते हैं, और अपनी बाह्य यात्रा के अंत में, वे अत्यधिक लदे हुए याकों को, ट्रा येरपा (Tra Yerpa) के लिए चला कर लाते हैं। ये तिब्बत के पवित्रतम स्थानों में से एक है। इसमें एक प्रकार का मंदिर है, जिसमें जड़ीबूटियों को छांटा और सुखाया जाता है। सर्दियों में, इन कनिष्ठ भिक्षुओं में से सबसे कनिष्ठ, इन सुखाई हुई जड़ीबूटियों को चूर्ण के रूप में पीसते हैं, जिसको उस स्कूल के प्रभारी मठाध्यक्ष के द्वारा, सावधानी पूर्वक लेबिल लगाये हुए, हवा बंद चमड़े के थैलों में रखा जाता है। उसी समय, ये स्कूल भेषजशाला की तरह भी काम करते हैं, जिसमें से, कोई भी, बिना मूल्य या एक छोटी सी भेंट के साथ, दवाईयाँ पा सकता है। तिब्बती लोग, वास्तव में, जड़ीबूटियों और उनके स्वास्थ्य सम्बन्धी गुणों की जानकारी में, बहुत बढ़े–चढ़े होते हैं और मैं हमेशा उनके साथ साधन करता रहा हूँ। उनकी गोलियों ने मेरे सियाटिका के दर्द में, अधिक फायदा नहीं पहुँचाया परंतु उनकी जड़ीबूटियों की चाय से, मैंने कई बार, जुकाम और बुखार को स्थगित कर दिया। ल्हासा के चिकित्सीय विद्यालय के मठाध्यक्ष, साथ ही साथ, दलाईलामा के व्यक्तिगत वैद्य भी होते है–एक आदरपूर्ण परंतु खतरनाक प्रभार। चउअन साल की उम्र में, जब तेरहवें दलाईलामा की मृत्यु हुई, सब प्रकार के शक, खुले रूप में उभरे, और उस समय के मठाध्यक्ष ने, अपनी पदवी को नुकसान से बचाने में, अपने आपको सौभाग्यशाली समझा। उसे शारीरिक दण्ड, कोड़े लगाने की सजा, भी हो सकती थी।

शहर और मठों में, कोई भी चेचक के लिए टीकाकरण करा सकता है, परंतु टीकाकरण का कोई दूसरा तरीका व्यवहार में नहीं है, और महामारी में रोगनिरोधी इलाज की चाह में अनेक जीवन अनावश्यक रूप से गंवा दिये जाते हैं। तिब्बत को जो बचाता है, वह है, उसका ठण्डा वातावरण और शुद्ध पर्वतीय हवा। परंतु उनके लिए सार्वभौमिक धूल और स्वास्थ्य की सबसे खराब अवस्थायें, निश्चितरूप से, उनको अनर्थकारी महामारी के खतरे में डालती हैं। हमने मौसम में और उसके बाहर अच्छी सफाई की आवश्यकता को सिखाया और ल्हासा में एक निकासी योजना (drainage scheme) बनाने की सोची। अंधविश्वास शत्रु है। हमने देखा कि लोग, चिकित्सा के स्कूल के भिक्षुओं की परिचर्या की तुलना में, हाथ रखने और आस्था के इलाज में अधिक विश्वास रखते थे। लामा अक्सर, अपने मरीजों को अपने पवित्र थूक से पोत देते हैं। त्सम्पा, मक्खन, और किसी साधु, सात्विक आदमी का मूत्र, किसी के दलिया में मिलाया जाता है और बीमार को दे दिया जाता है। प्रार्थना के लकड़ी के ठप्पे, जो पवित्र जल में डुबाये जाते हैं और तब दर्द के स्थान पर लगाये जाते हैं, जो किसी को नुकसान नहीं पहुँचाते। इलाज के रूप में, दलाईलामा के सामान की तुलना में, कोई भी चीज, उच्चश्रेणी की नहीं मानी जाती। सभी भद्रपुरुषों ने मुझे, गर्व के साथ, अपने छोटे से रेशमी थैलों में सावधानी पूर्वक सिले गये, तेरहवें दलाईलामा के अवशेषों को दिखाया। त्सारोंग के पास, अपनी पसन्दीदा चीजों के रूप में, उनके व्यक्तिगत उपयोग की अनेक चीजें, थीं, और ये मुझे आश्चर्यचकित कर देता था कि त्सारोंग और उसका लड़का, जो भारत में पढे लिखे थे, उन अवशेषों को जमा करके रखने में, काफी अंधविश्वासी थे।

अनेक आदमी और औरतें, भविष्य कथन और जन्मपत्रियॉ बनाने के सहारे जीवनयापन करते हैं। ल्हासा की गलियों की एक विशेषता है कि वहॉ थोड़ी बूढ़ी महिलायें, जो सड़क पर, तीर्थयात्रियों के बगल से दीनता पूर्वक झुकती हैं और एक छोटी सी फीस के लिए भविष्य बताती हैं। वे आपसे आपका जन्म दिन पूछती हैं, अपनी मालाओं की सहायता से थोड़ी सी गणना करती हैं और आप रहस्यमय शब्दों के साथ सांत्वना प्राप्त करके, अपने रास्ते पर चले जाते हैं। लामाओं और अवतारों की, सांत्वना देने वाली शक्तियों में, सर्वाधिक विश्वास निहित होता है। कोई भी, शकुन विचार किये बिना काम नहीं करता। कोई भी, ये विचार किये हुए बिना कि कौन सी तारीख या दिन, उसको प्रारम्भ करने के लिए भाग्यशाली होगा, तीर्थयात्रा पर जाने या एक नया कार्यालय बनाने के बारे में, नहीं सोच सकता।

ल्हासा में, बहुत समय पहले नहीं, एक बहुत प्रख्यात लामा रहता था, जिसके आमंत्रण और सलाह, महीनों पहले बुक कराये जाते थे। वह स्थान–स्थान पर सौहार्द्रता प्राप्त करता हुआ, अपने शिष्यों के साथ यात्रा करता था। उसके मरीज उसे इतनी भेंट देते थे कि उन पर वह और उसका समूह, बहुत आराम से रहता था। उसकी इतनी अधिक साख थी कि अंग्रेज रेडियो संचालक मिस्टर फॉक्स, जो वर्षों तक गठिया के शिकार रहे थे, ने लामा को अपने यहॉ बुलाने की व्यवस्था की। परंतु, बेचारे फॉक्स ने अपनी बारी को चुका दिया क्योंकि वह बूढ़ा आदमी, इससे पहले कि वह आ सकता, मर चुका था।

बूढ़ा लामा, मूलतः एक साधारण भिक्षु था। महान मठों में से एक में बीस साल तक पढ़ने के बाद, उसने अच्छी तरीके से परीक्षाओं को पास किया और अनेक वर्षों तक किसी साधु की कुटी में रहा। वह एक स्थान पर एकान्त कुटी में रहा, कुटियॉ, जिन्हें कोई पूरे देश में सर्वत्र बिखरी हुई पा सकता है, और जिनमें ध्यान की अवधि में, भिक्षु बस जाते हैं। उनमें से अनेक, स्वयं को अपने चेलों के द्वारा, दीवारों के अन्दर बंद करा लेते हैं और चाय और त्सम्पा को छोड़ कर, किसी भी दूसरी चीज के ऊपर जिंदा नहीं रहते। ये भिक्षु, अपने अनुकरणीय जीवन से सम्मानित हो गया। उसने कभी वह खाना नहीं खाया, जिसके लिये जीवन का लिया जाना आवश्यक होता है, और अण्डों तक से दूर रहा। वह न सोने के लिए और कभी भी बिस्तर का उपयोग न करने के लिए आदर प्राप्त था। चूँकि वह एक बार, मेरे पास तीन दिन के लिए रहा था, मैं इन बाद वाली चीजों की, पुष्टि कर सकता हूँ। उसे चमत्कार करने के लिए भी जाना जाता था। एक बार उसकी माला ने, शक्तिशाली किरणों से आग पकड़ ली, जो उसके खुद के हाथ में से प्रकट हुई थी। उसने ल्हासा के शहर को, सोने का पतरा चढ़ी हुई बुद्ध की एक मूर्ति भेंट दी थी, जिसके लिए उसने अपने उपहारों और दानों में से, जो उसने अपने मरीजों और प्रशंसकों से प्राप्त किये थे, भुगतान किया था।

तिब्बत में, केवल एक ही महिला अवतार हुआ है। उसका नाम, जैसा कहा जाता है, ''थंडरबोल्ट सो (Thunderbolt Sow)'' था। मैं उसे अक्सर, उत्सवों के अवसर पर, पारखोर में देखा करता था। तब वह लगभग सोलह साल की, एक भिक्षुणी का परिधान पहने हुए, महत्वहीन दिखने वाली विद्यार्थी, होती थी। तथापि, वह तिब्बत में पवित्रतम महिला थी, और जहॉ भी वह जाती थी, लोग उससे आशीर्वाद पाने की इच्छा रखते थे। बाद में वह, ल्हासा की यामड्रोक (Yamdrok) झील के पास एक मठ में मठाध्यक्ष हो गई।

ल्हासा में, साधु भिक्षुणियों और लामाओं के सम्बन्ध में कहानियॉ और अफवाहें, हमेशा फैली रहती थीं, और मैंने प्रसन्नता पूर्वक, उनके चमत्कारों में से कुछ की जॉच की होगी। परंतु किसी को, जनता के विश्वास पर चोट नहीं करनी चाहिए। तिब्बती लोग, अपने खुद की आस्थाओं में प्रसन्न थे और उन्होंने कभी भी, अपने आपको आउफस्नाइटर या मेरे साथ बदलने की कोशिश नहीं की। हम उनकी परम्पराओं का अध्ययन करने में, दर्शकों के रूप में उनके मंदिरों में जाने में, और निर्दिष्ट शिष्टाचार को निभाने में, सफेद रूमालों की भेंट पाने में, अपने आप में संतुष्ट थे।

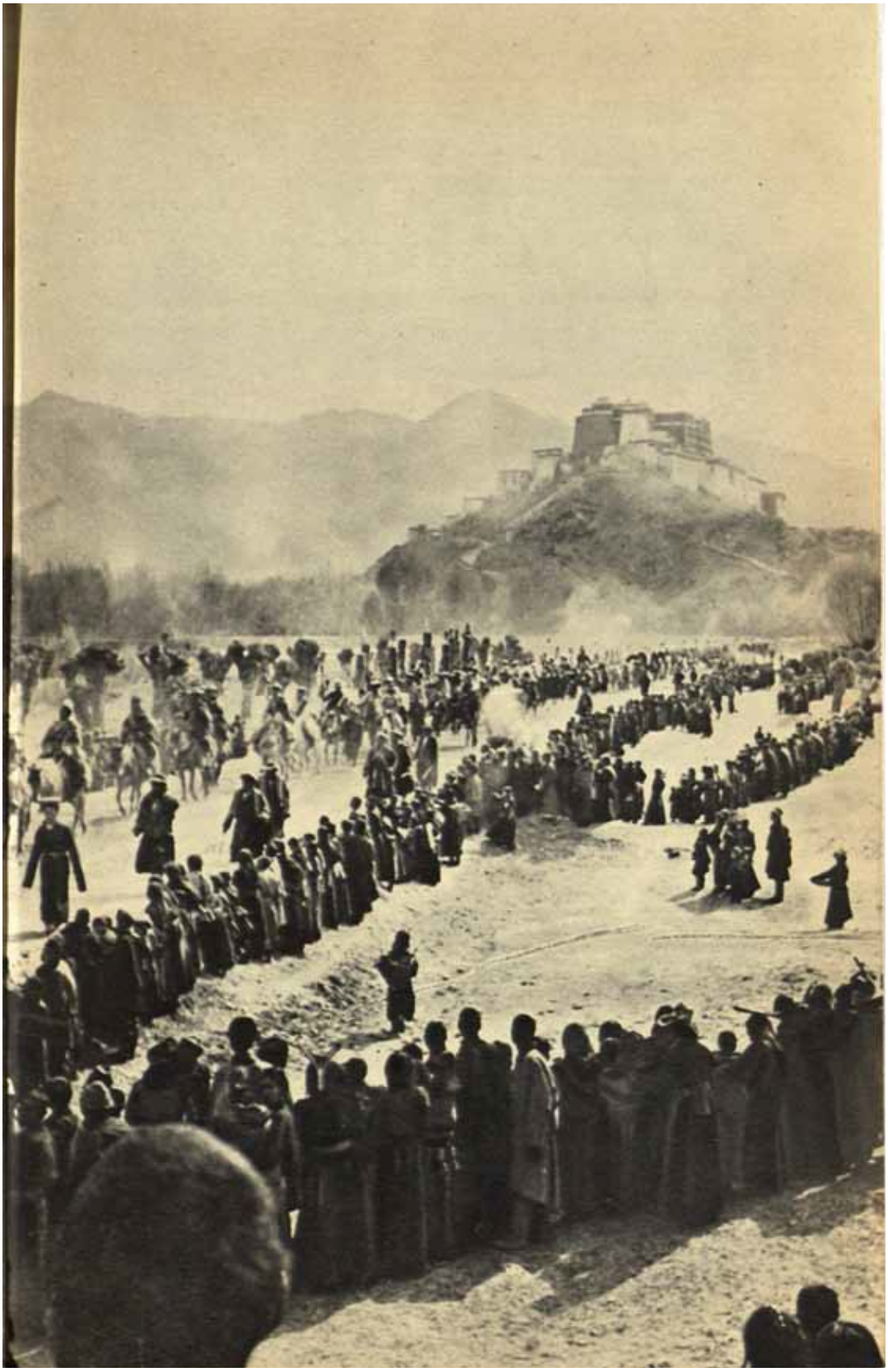

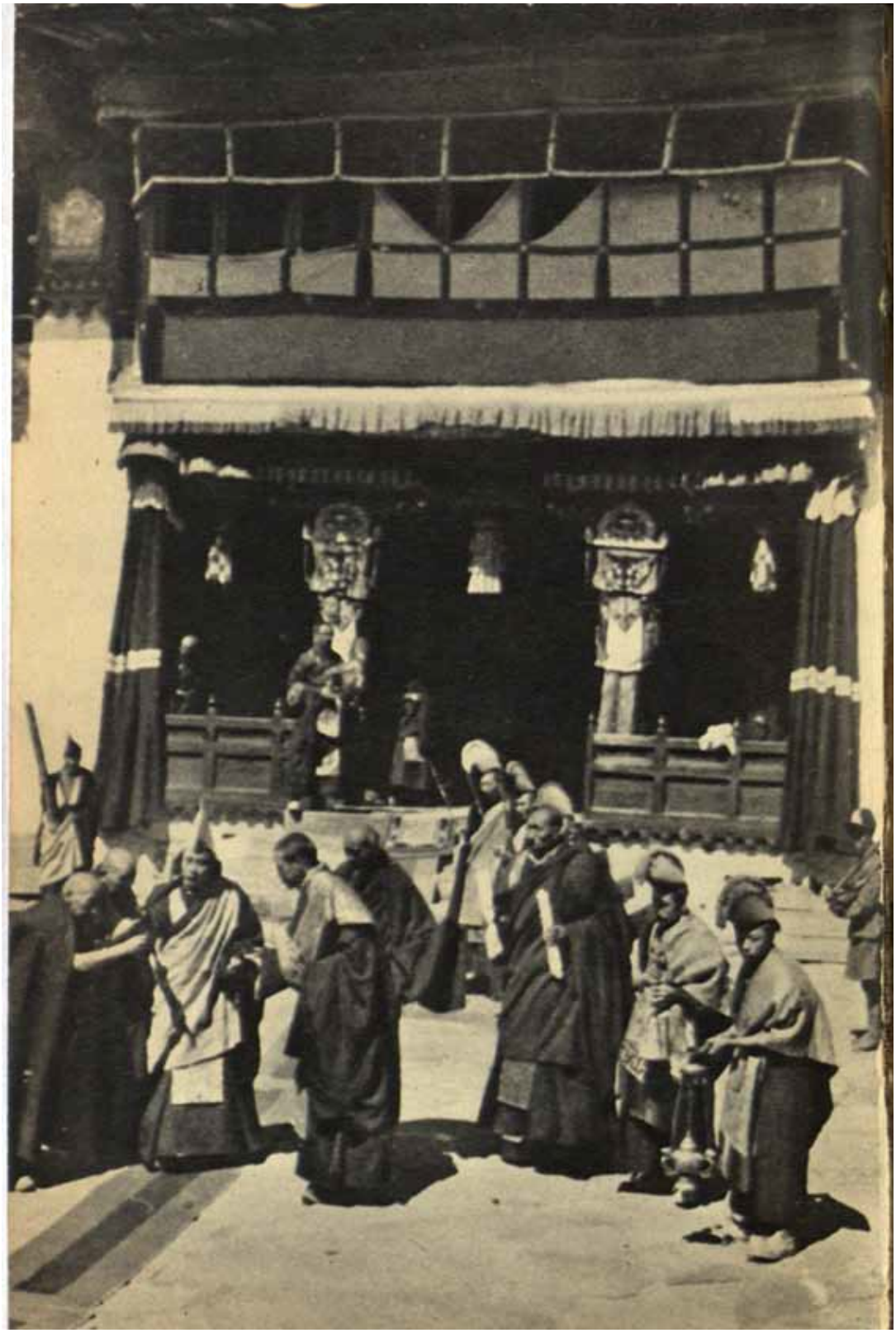

ठीक वैसे ही, जैसे कि लोग लामाओं और शांति वचन कहने वालों के पास, सलाह और अपने दैनिक जीवन में मदद मांगने के लिए जाते हैं, महत्वपूर्ण निर्णय लेने से पहले सरकार राजकीय ज्योतिषी से परामर्श करती है। एक बार, एक आधिकारिक मशविरा लेने के लिए, मैंने अपने मित्र वांग्दुला से कहा, और इसलिए एक सुबह सवार हो कर हम नेचुंग (Nechung) मठ में पहुॅचे। उस समय, उन्नीस साल का एक भिक्षु, राज्यज्योतिषी का प्रवक्ता था। वह सामान्य परिस्थितियों में पला बढ़ा था परंतु उसने माध्यम के रूप में उपहारित (gifted) होने के कारण, अत्यधिक ध्यान आकर्षित कर लिया था। उसकी तकनीक उतनी अच्छी प्रभावकारी नहीं थी, जितनी कि उससे पहले वाले की थी, (जिसने वर्तमान दलाईलामा की खोज में काफी सहयोग किया था), परंतु उससे और अधिक अपेक्षा की जाती थी। मैं अक्सर आश्चर्य करता था कि क्या ये एकाग्रता के अनसुने प्रभाव के कारण था, कि वह अपने आपको लोगों की बड़ी भीड़ के सामने, शीघ्र ही, सम्मोहन की निद्रा में डाल सकता था, या क्या कि वह दवाब अथवा किन्ही दूसरे उपायों का उपयोग करता था। राज्यज्योतिषी के रूप में कार्य करने के लिए, मंदिर के देवता को अपने ऊपर कब्जा जमाने के योग्य बनाने के लिए और अपने मुंह से माध्यम के बोलने देने के लिए, भिक्षु को अपनी आत्मा को अपने शरीर से निकालने में समर्थ होना पड़ता है। उस क्षण, उसमें देवता प्रकट होता है। ये तिब्बतियों का विश्वास है, और वांग्डुला इस सत्य से सहमत था।

हमने, मठ की तरफ पॉच मील की अपनी यात्रा के दौरान, इन चीजों के बारे में बात की। मंदिर के दरवाजे पर, उथले, अद्भुत संगीत ने हमारा स्वागत किया। अंदर का नजारा डरावना था। हर दीवाल से नीचे की तरफ देखते हुए, खौफनाक चेहरे दिखाई देते थे और हवा अगरबत्ती की दमघौंटू गंध से भरी थी। नौजवान भिक्षु को अपनी निजी कोठरी से उदास मंदिर की ओर ले जाया गया था। वह अपनी छाती पर धातु का गोल दर्पण पहिने हुए था। सेवकों ने उसे मस्त रेशम का परिधान पहिनाया। तब हर एक उसके आसपास से हट गया। उथले संगीत के अतिरिक्त कोई भी आवाज नहीं सुनी जा सकती थी। उसने ध्यानमग्न होना प्रारम्भ किया। अपनी ऑखों को कभी भी, उसके चेहरे से न हटाते हुए, मैंने उसे नजदीक से देखा। उसके चेहरे का कोई भी हावभाव, हल्की सी भी गति भी मुझसे बच नहीं सकी। वह ऐसा दिखाई दे रहा था, मानो जीवन उसमें से बाहर निकल रहा था। अब वह पूरी तरह से गतिहीन था, उसका चेहरा, एक चौकाने वाला मुखौटा था। तब अचानक, मानो कि उस पर तड़ित गिरी हो, उसका शरीर एक कमान की तरह ऊपर की तरफ मुड़ गया। देखने वालों ने सांस रोक ली, देवता उस पर आ चुका था। माध्यम ने कांपना शुरू कर दिया, उसका पूरा शरीर हिल रहा था और उसके माथे पर पसीने की बूंदें आ गई थीं। नौकर उसके पास गये और एक अति सुंदर बड़ा टोप उसके सिर पर रख दिया। ये इतना भारी था कि इसको उठाने में दो आदमी लगे। उस दैत्याकार टोप के बजन के कारण, भिक्षु की दुबली पतली काया, सिंहासन के अंदर, और गहरी धंस गई। मैंने सोचा, कि ये कोई आश्चर्य नहीं था, इस प्रकार के माध्यम, जवानी में ही मर जाते हैं। इन बैठकों के आध्यात्मिक और भौतिक तनाव, उनको मारने के जिम्मेदार होंगे।

कांपना और अधिक तेज हो गया। माध्यम का भारी लदा हुआ सिर, एक बगल से दूसरी बगल को हिलता रहा, और उसकी ऑखें अपने गोलकों में से शुरू हुईं। उसका चेहरा सूजा हुआ और दुःखदायक लाल धब्बों से भरा हुआ था। उसके बंद दांतों में से हिस्स की आवाजें निकलीं। सहसा वह उछला। नौकर उसे सहायता करने के लिए दौड़े, परंतु वह उनसे फिसल गया और स्थूलकाय का विलाप उसे एक अनोखे, उत्तेजक नृत्य के रूप में घुमाने लगा। मंदिर में, संगीत के सिवाय, उसकी ठुड्डी और दांत किटकिटाने की आवाजें ही सुने जाने वाली थीं। अब उसने अंगूठे के एक बड़े बलय से, अपनी छाती की प्लेट के ऊपर, धातु की आवाज करते हुए, जिसने ढोल –तासों की धुंधली आवाज को दबा दिया, पीटना प्रारम्भ किया। तब वह, उस दैत्याकार टोप, जिसको दो आदमी मुश्किल से ही ला सके थे, के बजन के प्रभाव में सीधा खड़ा होता हुआ एक पैर पर नाचा। नौकरों ने उसके हाथों को जौ के फूलों से, जो उसने विस्मयाभिभूत दर्शकों के ऊपर फैंक दिये, भर दिया। सभी लोग, उसके सामने झुक गये और मैं नहीं डरा क्योंकि मुझे घुसपैठिये के रूप में उल्लेखित किया जाना था। माध्यम शांत हो गया, नौकरों ने उसको कसकर पकड़ लिया, और मंत्रिमण्डल के एक मंत्री ने उसके सामने घुटने टेके और उसके सिर पर एक रूमाल डाला। तब उसने एक राज्यपाल की नियुक्ति, एक नवीन अवतार की खोज, युद्ध और शांति से जुड़े हुए मामलों के सम्बन्ध में, मंत्रिपरिषद के द्वारा सावधानी पूर्वक तैयार किये गये प्रश्नों को पूछना प्रारम्भ किया।

राज्य ज्योतिषी को इन सब चीजों में निर्णय लेने के लिए कहा गया। अक्सर कई बार, माध्यम के मुंह के बोलने से पहले, प्रश्नों को दोहराना पड़ा। मैंने बोधगम्य शब्दों में समझना चाहा परंतु ध्वनियों के बीच कुछ नहीं कर सका। जबकि उत्तरों को समझने का प्रयास करते हुए, उड़ते हुए पेन के साथ, एक मंत्री नम्रतापूर्वक वहॉ खड़ा था, एक बूढ़ा भिक्षु, उन्हें ले गया। चूंकि वह स्वर्गीय राज्यज्योतिषी का सचिव भी था, वह इसे अपने जीवन में सैंकड़ों बार कर चुका था। मैं अपने आपको संदेह करने से रोक नहीं सका कि शायद सचिव वास्तविक राज्यज्योतिषी था। उत्तरों, जो उसने लिखे, यद्यपि संदेहास्पद थे, ने एक दिशा का अनुगमन किये जाने का सुझाव भी दिया और मंत्रिपरिषद को उत्तरदायित्व के भारी बोझ से मुक्त कर दिया। जब राज्यज्योतिषी खराब सलाह देता जाता है, वे प्रवक्ता के काम को थोड़ा कम कर देते हैं। उसे अपने दायित्व से मुक्त कर दिया जाता है। मुझे ये हमेशा तर्कहीन दिखाई देता है कि क्या देवता, माध्यम के मुंह से बोला था या नहीं ?

खतरों के बावजूद, राजकीय ज्योतिषी का पद, बहुत अधिक चाहा जाता है। इसके साथ में इसे भद्र पुरुषों की श्रेणी में तीसरी श्रेणी से संगत, दालामा (Dalama) का कार्यालय भी मिलता है, और उसको धारण करने वाला, अपनी सभी शुभेच्छाओं के साथ, नेचुंग मठ का मठाधिकारी भी होता है।

मंत्री द्वारा ज्योतिषी से पूछा गया अंतिम प्रश्न अनुत्तरित बना रहा। क्या माध्यम थक गया था, या देवता ने ठहाके लगाना बंद कर दिया था ?

मैंने मंदिर को छोड़ दिया और जो मैंने देखा था उसके द्वारा, चौंधियाती धूप में, एकदम लकवा मारे हुए जैसा, खड़ा रहा। मेरी यूरोपीय मानसिकता, अनुभव के ऊपर चकरा गई थी। मैं उसके बाद भी, राज्यज्योतिषी के कई परामर्शों में उपस्थित हुआ, परंतु कभी भी, पहेली के स्पष्टीकरण की, लगभग स्थिति तक भी, पहुॅचने में सफल नहीं हो सका।

राज्यज्योतिषी से सामान्य जीवन में मिलना, हमेशा ही एक उत्सुकतापूर्ण अनुभव होता था। मैं कभी भी, उसके साथ, एक ही मेज पर बैठने और उसके नूडल्स के सूप को बड़ी आवाज के साथ गटकते हुए सुनने का, एकदम अभ्यस्त नहीं हो सका। जब हम एक सड़क पर मिलते, मैं अपना टोप उतार लिया करता था, और वह बदले में, झुक कर नमन करता और मुस्कराता। उसका चेहरा अच्छे दिखते हुए नौजवान का था, और फूले हुए, लाल धब्बे वाले, टेढ़े–मेढ़े मुंह बनाते हुए उन्मत्त माध्यम के साथ, उसकी कोई समानता नहीं थी।

दूसरा मौका, जिसमें राजकीय ज्योतिषी एक अहम भूमिका निभाता है, वह है तथाकथित महान जलूस, जब दलाईलामा को शहर में, विहार में घुमाने के लिए ले जाया जाता है। ये उत्सव, ग्रीष्मकालीन बाग में जाने वाले जलूस से अलग करने के लिए, महान जलूस कहलाता है, जिसका मैं पहले ही वर्णन कर चुका हूॅ।

इस अवसर पर पूरा ल्हासा शहर नंगे पैर होता है; कहीं भी खड़े होने की जगह मुश्किल से ही होती है। जमीन के खुले हुए टुकड़े के ऊपर एक तम्बू गाड़ा जाता है और इसके आसपास भिक्षु जैसे प्रहरी तैनात किये जाते हैं, जो सामान्य की तरह, उत्सुक लोगों को अपने कोड़ों द्वारा पीछे करते रहते हैं। इस तम्बू के पीछे एक बड़ा रहस्य छिपा होता है। इसमें नेचुंग का डालमा, तन्द्रा में जाने के लिए तैयार हो रहा होता है। इसी बीच, देवीय राजा, पालकी में, अपने छत्तीस सहायकों के साथ, धीमे धीमे समीप पहुॅचता है। अब, पवित्र व्यक्ति तम्बू, जिसमें से देवता चढ़ा हुआ भिक्षु, लड़खड़ाते हुए कदमों से लुढ़कता हुआ बाहर आता है, के सामने आकर रुकता है। उसका चेहरा सूजा होता है, मुंह में से सिसकारी की आवाज आती है, और टोप का बजन, उसे लगभग जमीन तक ले आता है। सहायकों को एक तरफ हटाते हुए, वह लाइन को तोड़ देता है और अपने कंधों को शाफ्टों (shafts) के नीचे घुसाता है और कुछ एक कदमों के लिए दौड़ता है। वह ऐसे दिखता है मानो कि वह अपने पवित्र भार से परेशान हो, परंतु सब ठीक होता है। दूसरे उठाने वाले कष्ट झेलते हैं और दालमा, बेहोशी में जमीन पर गिर जाता है और एक डोली में ले जाया जाता है, जो उसके स्वागत में पहले से प्रतीक्षा कर रही होती है। पूरा जलूस स्थिरता से अपने रास्ते पर चलता जाता है। मैं कभी इस विधि का एकदम ठीक अर्थ समझने में सफल नहीं हो सका। शायद ये संरक्षक देव की, सजीवबुद्ध की उच्चशक्तियों के प्रति पराधीनता स्वीकार करने के प्रतीक के रूप में, इसको सूचित करने के लिए, बना है।

राजकीय ज्योतिषी और वर्षा की भविष्यवाणी करने वालों के अतिरिक्त, एक बूढ़ी औरत को जोड़ते हुए, जो संरक्षकदेवी (protecting Godess) के प्रकटन के अवतार के रूप में जानी जाती है, ल्हासा में कम से कम छः माध्यम हैं। वह एक छोटे शुल्क के लिए, एक तन्द्रा में जाने और देवी को बोलने देने के लिए तैयार थी। वह कुछ दिनों में, चार बार इस प्रस्तुति के लिए गई।

वहॉ ऐसे माध्यम भी हैं, जो तन्द्रा की स्थिति में, लम्बी तलवारों को छल्लों के रूप में मोड़ देते हैं। मेरे अनेक दोस्त, अपने घर की बेदियों के सामने, ऐसी तलवारों को रखते हैं। मैंने इस कमाल को, उत्साह में करने के, कई प्रयास किये परंतु ऐसा करना शुरू भी नहीं कर सका।

राज्य ज्योतिषियों का परामर्श, मूलतः बुद्ध के समय से पहले प्रारम्भ हुआ, जब देवताओं ने नरवलियों (human sacrifices) की मॉग की, और मैं सोचता हूँ कि ये रिवाज, प्रारम्भिक दिनों से अब तक, अपरिवर्तित रूप से चला आ रहा है। मैं इन अस्वाभाविक कार्यों में, हमेशा गम्भीरता से प्रभावित होता था परंतु ये सोच कर प्रसन्न था कि मेरे खुद के निर्णय राज्यज्योतिषी के बताये अनुसार नहीं होंगे।

जब तक बसन्त का अंत आया, हम पहले से ही, कई महीनों तक ल्हासा में रह चुके थे और पूरी तरह से वातावरण और जलवायु के अभ्यस्त हो चुके थे। ये वर्ष का सबसे अच्छा मौसम होता है। फूलों के बाग, जिनमें मैंने इतना अधिक काम किया था, पूरी तरह पुष्पित थे, और पेड़ों ने अपना रंग बदलना प्रारम्भ ही किया था। फल बहुतायत में थे–नाशपातियॉ, सेव, दक्षिणी प्रान्तों से अंगूर। भव्य टमाटर और कुम्हड़े (marrows) बाजार में प्रदर्शित किये गये थे, और ये इस मौसम में ही था कि कुलीन पुरुषों ने अपनी महान पार्टियॉ दी थीं, जिनमें स्वादों के अविश्वसनीय विकल्प, अपने अतिथियों को प्रस्तुत किये गये थे।

ये बाहर निकलने के लिए वर्ष का ठीक समय था। परंतु दुर्भाग्यवश, कोई भी तिब्बती मात्र आनन्द के लिए पहाड़ पर नहीं चढ़ता। खास दिनों में भिक्षु, कुछ पवित्र पहाड़ी चोटियों पर तीर्थयात्रा के लिये जाते हैं, और भद्र पुरुष, उनके साथ देवताओं को अनुकूल बनाने के लिए, अपने नौकरों को भेजते हैं, जिनके लिए वे चोटियों पर अगरबत्तियॉ जलाते हैं। हवादार पहाड़ी चोटियॉ प्रार्थनाओं से गूँजने लगती हैं और नए झण्डे लगाये जाते हैं, जबकि त्सम्पा के प्रसाद को खाने की प्रतीक्षा में कौए आसपास उड़ते हैं। ये कहा जाना चाहिए कि दो या तीन दिन बाद पहाड़ों में से नगर में वापस आता हुआ हर व्यक्ति प्रसन्न होता है।

आउफस्नाइटर और मैंने, आसपड़ोस की सभी चोटियों पर, एक पहाड़ पर चढ़ने का विचार बनाया। उन्होंने आकर्षण के रूप में कोई अधिक तकनीकी परेशानियॉ प्रस्तुत नहीं की, परंतु उनके दृश्य भव्य थे। दक्षिण की तरफ, हम हिमालय देख सकते थे, और हमारे एकदम समीप तेईस हजार फुट ऊँची न्येनचेन थंगला श्रेणी की चोटी खड़ी थी, ल्हासा में आने से पहले, जिसके ऊपर हम, रास्ते में, आठ महीने तक संघर्ष करते रहे थे।

शहर से देखे जा सकने योग्य कोई हिमनद नहीं थे। ये अनुमान कि कोई भी, तिब्बत में हर जगह बर्फ और कच्ची बर्फ पा सकता है सही नहीं है। परंतु य़द्यपि दूरियॉ बहुत अधिक थीं, हमने घरेलू बनाई हुई स्कीज के साथ अपना प्रयोग दोहराया होता, हमें बर्फ पर फिसलने से प्रेम हुआ होता। हमको घोड़े, तम्बू और नौकर चाहिए होते थे, आबादी विहीन क्षेत्र में, खेलकूद एक महंगा कार्य है।

इसलिए हमें अपने आपको पर्वतारोहण के अभियानों से संतुष्ट कराना पड़ा। हमारे उपकरण एकदम व्यावसायिक नहीं थे। हम सेना के जूते और कपड़े, पहनने के दूसरे सामान–अमरीकी व्यापारियों द्वारा बचा खुचा सामान, जो तिब्बत को बेचा जाता है, पहनते थे। हमारे उद्देश्य के लिए ये पर्याप्त अच्छे थे। तिब्बती, गति जिसके साथ हमने अपने यात्राओं को पूरा किया, के ऊपर आश्चर्य से उबर नहीं सके। एक बार, हमारे दोस्तों को, अपने घरों की छतों से, हमें देखने के लिए, मुझे एक पहाड़ी चोटी के ऊपर, अपनी अगरबत्तियों का अलाव जलाना पड़ा, अन्यथा कोई भी विश्वास नहीं कर सकता था कि हम यहॉ थे। आउफस्नाइटर और मैं, एक दिन में उतना दूर जाया करते थे, जितना कि हमारे मित्रों के नौकर, तीन दिन में जाते थे। पहला तिब्बती, जिसमें मैं पहाड़ी टहल के लिए कुछ उत्साह पैदा करने की व्यवस्था कर सका, मेरा दोस्त वांगदुला था, जिसमें झेलने की क्षमता बहुत अधिक थी। बाद में दूसरे दोस्त भी हमारे साथ आ गये, और सभी ने, महान रूप से विचारों का आनन्द लिया और पर्वतीय फूलों का, जिनका हमने पता लगाया, में आश्चर्यजनक आनन्द लिया।

मेरा पसन्दीदा अभियान, ल्हासा से एक दिन से कम की दूरी पर स्थित एक छोटी पर्वतीय झील की ओर था। बरसात के बीच, जब मैं पहली बार वहॉ गया, तब ये डर लग रहा था कि अत्यधिक मात्रा में पानी बहेगा और शहर में बाढ़ आ जायेगी। एक पुरानी जनश्रुति के अनुसार, ये झील, एक भूमिगत झील से जो कैथेड्रल के बगल से होनी बताई जाती है, एक गुप्त भूमिगत मार्ग से जुड़ी हुई है। प्रार्थनाओं और चढ़ावे के द्वारा, झील की आत्माओं को संतुष्ट करने के लिए, सरकार हर वर्ष, भिक्षुओं को यहॉ भेजा करती है। तीर्थयात्री भी यहॉ जाते रहते हैं और अपनी अंगूठियॉ और सिक्के पानी में फैंकते हैं। झील के बगल से पत्थर की कुछ झौंपड़ियॉ खड़ी हैं, जिनमें कोई भी आदमी शरण ले सकता है। मैंने पाया कि झील, न्यूनतम अंशों तक भी, नगर की सुरक्षा के लिए खतरा नहीं है।

यद्यपि ये बहने लगती है, फिर भी कोई खतरा नहीं होता। ये शांत मोहक छोटा सा स्थान था। यहॉ जंगली भेड़ों के झुण्ड, चिंकारा मृग, एक प्रकार की गिलहरी, और लोमड़ियॉ मटरगस्ती करती हुई कभी कभार दिख जाती हैं, और लेंमरगीयर (lammergeier)[14], आकाश में अपनी ऊँची उड़ान को गति देता है। इन सभी प्राणियों के लिए मनुष्य दुश्मन नहीं होता। पवित्र शहर के पड़ोस में कोई भी आदमी शिकार करने का दुस्साहस नहीं कर सकता। झील के आसपास की वनस्पतियॉ, किसी भी वनस्पतिशास्त्री की नब्ज को बढ़ाने के लिए काफी है। अति सुंदर पीले और नीले अफीम के फूल (poppies), किनारे पर उगते हैं ये तिब्बत की विशेषतायें हैं, जो आप केवल क्यू (Kew) में ही दूसरी जगह पा सकते हैं।

ये अभियान, खेलकूद के प्रति मेरी भूख को पूरी तरह से संतुष्ट नहीं कर सके। मैं आश्चर्य करता रहा कि मुझे और क्या करना चाहिए, और टेनिस का कम से कम एक मैदान बनाने का विचार मेरे मन में आया। मैंने इस विचार के साथ, काफी लोगों में रुचि जगाने की व्यवस्था की और ल्हासा के सम्भावित टेनिस खिलाड़ियों की सूची तैयार की। मैंने अग्रिम रूप से कुछ धन भी जमा किया। सदस्यों की सूची बहुत प्रभावकारी थी और उसमें सभी अन्तराष्ट्रीय विशेषताओं के लोग थे। उसमें भारतीय, सिक्किम के लोग, नेपाली और वास्तव में, काफी संख्या में ल्हासा के नौजवान सभ्य पुरुष थे। जुड़ने के बारे में, फुटबॉल के सम्बन्ध में सरकारी रवैये को देखते हुए, पहले तो ये झिझके। परंतु मैं, ये बताते हुए कि टेनिस एक ऐसा खेल था, जो दर्शकों को आकर्षित नहीं करता या झगड़ा पैदा नहीं करता, उनके भयों को शान्त करने में समर्थ रहा। धार्मिक लोगों को भी ये महसूस करना चाहिए कि ये एक भोला खेल था। इसके अलावा, वहॉ ब्रिटेन के दूतावास में भी, एक टेनिस कोर्ट था।

तब मैंने लोगों को काम पर लगाया और उनको नदी के पास, जमीन के एक टुकड़े को समतल बनाने में लगाया। कोर्ट की ऊपरी सतह पर ड़ालने के लिए, ठीक तरह की मिट्टी को पाना आसान काम नहीं था परंतु एक महीने में ये सब तैयार हो गया। मैं इस काम के ऊपर बहुत गर्व करता था। हमने जाड़ों के पहले ही रेकेटों और गेंदों को भारत से मंगाने के आदेश दे दिये थे, और ल्हासा के टेनिस क्लब के प्रारम्भ होने पर, हमने एक छोटी पार्टी की भी व्यवस्था की।

बच्चों में, गेंद लाने के लिए, एक अच्छी प्रतियोगिता थी। वे भय के साथ फूहड़ और अनगढ़ थे, इससे पहले कभी उन्होंने हाथों में गेंद नहीं ली थी। परंतु जब हमने ब्रिटिश दूतावास के सदस्यों को अपने साथ खेलने के लिए आमंत्रित किया, तो नेपाली मिशन के अंगरक्षक दस्ते के सैनिक आये और उन्होंने हमारे लिए गेंदें फैंकीं। उन्हें अपनी भव्य वर्दियों में, आसपास दौड़ते हुए देखना मारक था ।

शीघ्र ही, हमें काफी संख्या में खिलाड़ी मिल गये। निर्विवाद रूप से, चीनी दूतावास के सचिव, मिस्टर ल्यू (Mr. Liu), उनमें से सबसे अच्छे थे; एक दुबले पतले, मरियल से, और अपने व्यावसायिक कामों में कठोर, स्कॉटलैण्ड के निवासी, ब्रिटेन के मंत्री, श्रीमान् रिचार्डसन (Richardson), उसके बाद आते थे। उनका केवल एक ही शौक था–उनका अपना फूल और वनस्पति का भव्य बगीचा। जब हम उनसे मिले, कोई भी, अपने आपको परी लोक के बगीचों में होने की कल्पना कर सकता था।

टेनिस के खेल ने हमें आनंददायक सामाजिक समागमों के नये अवसर प्रदान किये। अब हमारे कोर्टों पर और अब ब्रिटेन के दूतावास पर पार्टियॉ जमाईं गईं, जिसके बाद हमने चाय ली और ब्रिज खेला। मैं इन बैठकों को अपनी रविवासरीय सामाजिक बाहरी यात्राओं के रूप में लेता था और आनन्द के साथ उन्हें आगे देखने का अभ्यस्त था। किसी को, स्वयं को अच्छी तरह के कपड़े पहनाने होते हैं और उस क्षण के लिए, उस परिवेश में वापस लाने के लिए, जहॉ से वह आया है, उस भावना को रखना हेाता है। मेरे मित्र वांगदुला ने, क्षेत्र में, इसके मूल्य को सिद्ध किया। वह एक मंजे हुए टेनिस खिलाड़ी और ब्रिज के खेल में एक अत्युत्तम साथी थे।

हमारे टेनिस कोर्ट का एक दूसरा फायदा भी था। हम पूरे साल इस पर खेल सकते थे। परंतु धूल भरे तूफानों के मौसमों में हमको सावधान रहना पड़ता था। जब हमने देखा कि धूल के बादल पोटाला पर घिर रहे हैं, तार की जालियों के बजाय, हम पूरे कोर्ट को ऊँचे ऊँचे पर्दों से ढ़कते थे, इससे पहले कि हवा उन्हें उड़ा कर ले जाये, हमें उनको तेजी से देखना पड़ता था और उन्हें नीचे गिराना पड़ता था।

बसन्त के अन्त में, तिब्बती लोग अपने युगों पुराने, समय गुजारने के तरीके, पतंग उड़ाने का अभ्यास करते थे। जब बरसात समाप्त हो जाती है, बसन्तान्त (autmn) का साफ मौसम आ जाता है, बाजार, चमकीली रंगीन पतंगों से, पूरे भर जाते हैं। खेल, आठवें महीने के पहले दिन, समय पर, प्रारम्भ होता है। परंतु, जैसा हम समझते

14 अनुवादक की टिप्पिणी : लेंमरगीयर, एक पक्षी होता है, जो पहाड़ी क्षेत्रों में पाया जाता है, जिसकी उड़ान बाज से मिलती जुलती होती है।

हैं, ये बच्चों का खेल मात्र नहीं है। पहले दिन एक लोकप्रिय उत्सव होता है, और समय गुजारने में भद्रपुरुष भी उतने ही उत्सुक होते हैं, जितने कि सामान्य लोग। पहली पतंग, पोटाला से उड़ती है और शीघ्र ही पूरा आकाश, उनसे पूरा भर जाता है। बच्चे और बड़े, शतरंज या टेनिस के चेम्पियनों जैसी अत्यधिक एकाग्रता के साथ, अपनी–अपनी पतंग उड़ाते हुए, घंटों छतों पर खड़े रहते हैं। पंक्तियों में, बंटे हुए धागे से, जिस पर सरेस और चूरा किया हुआ महीन कॉच लपेटा रहता है, पतंग उड़ाई जाती है। खेल का मुख्य उद्देश्य होता है, अपने विरोधी की पतंग को, उसकी पंक्ति में रहते हुए, काटना। जब ऐसा होता है, तो वहॉ छतों पर से, आनन्द की चीखें होती हैं। उड़ने वाली कटी पतंग, धीमे से नीचे उतरती है और बच्चे उस पर टूट पड़ते हैं। अब ये उनकी हो गई। एक महीने तक ये खेल, फुरसत के हर घंटे में खेला जाता है। तब मौसम पूरी तरह रुक जाता है, और पतंगें अचानक वैसे ही गायब हो जाती हैं, जैसे वे प्रकट हुई थीं।

एक दिन, जब मैं पतंगों को देखते हुए, बाजार में चहलकदमी कर रहा था, एक बहुत विचित्र बात हुई। एक पूरी तरह अनजान व्यक्ति ने मुझे टोका और मुझे एक घड़ी–अर्थात् एक घड़ी के अवशेष बेचने का प्रस्ताव दिया। वह पुरानी और जंग लगी थी और उसका डायल गुम गया था। आदमी ने बताया कि वह टूट गई थी और वह इसके साथ कुछ नहीं कर सका। यूरोपियन हेाने के नाते, शायद मैं उसकी कुछ मरम्मत कर सकूं। मैं उसे कुछ दे नहीं सका परंतु मैं उसको पसन्द करता था। मैंने वह चीज अपने हाथ में ली और मैंने पहली बार में ही इसको पहचान लिया। ये आउफस्नाइटर की कलाई घड़ी–एक जलावरोधी रोलेक्स (waterproof Rolex) थी, जो उसने तब बेची थी, जब हम पश्चिमी तिब्बत में थे। नांगा पर्वत अभियान में, वह उसके पास थी। आउफस्नाइटर ने इससे दुःखी मन से छुटकारा पाया था। मैंने सोचा कि वह उसे वापस पाना चाहेगा, यद्यपि ये कभी दुबारा नहीं चली, तथापि ये उत्सुकता होगी। सफलता की थोड़ी उम्मीद के साथ, मैंने इसको सुधारने के लिए, इसे एक चतुर मुसलमान कारीगर को दिया। वह यंत्रों के बारे में उद्यमशील था और शीघ्र ही उसने इसे चालू कर दिया। मैंने इसे, जन्मदिन के उपहार के रूप में, आउफस्नाइटर को वापस किया। आपने उसका चेहरा देखा होता, जब उसने इसको देखा!

बसन्तान्त में, घोड़ों के बड़े–बड़े बाजार लगाये जाते हैं। घोड़ों के सैकड़ों काफिले, शिलोंग (Shilong) से उत्तर पश्चिमी चीन में आते हैं। वहॉ सुंदर सा सजीव मोलभाव, जिस में तिब्बती लोग बहुत माहिर हैं, होता है, और अच्छे जानवरों के लिए ऊॅची कीमतें अदा की जाती हैं। भद्रपुरुष अच्छे अस्तबल बनाकर रखना चाहते हैं और हर वर्ष के एक निष्कलंक, अच्छी नस्ल के घोड़े को रखने के ऊपर जोर देते हैं। वास्तव में, केवल धनाढ्य लोग ही ऐसा करना बर्दाश्त कर सकते हैं। सामान्य व्यक्ति, यदि कुल मिला कर वे सवार होते हैं तो तिब्बती पोनियों का उपयोग करते हैं परंतु भद्रपुरुषों से अपेक्षा की जाती है कि वे अच्छे घोड़ों के ऊपर अपना धन व्यय करेंगे। जब वे बाहर घुड़सबारी के लिए जाते हैं, तो वे अपने साथ, घुड़ चढ़े नौकरों को ले जाते हैं। उदाहरण के लिए, मंत्रिमण्डल के एक मंत्री से, उसके साथ छः वर्दीधारी आदमियों के होने की अपेक्षा की जाती है। कोई भद्रपुरुष कितने घोड़े रखता है, यह उसके स्तर के अनुसार बदलता है–कुछ लोग बीस तक रखते हैं।

मैंने अक्सर, औरतों को घोड़ों पर चढ़ते देखा था। उनके घाघरे इतने चौड़े होते हैं कि वे घोड़ों पर दोनों तरफ पैर करके बैठ सकती हैं। जब वे तीर्थयात्रा पर जाती हैं या किसी उनके पति नये पद पर जाते हैं, यात्रा में, जो हफ्तों तक चलती है, वे अक्सर, अपने पतियों के साथ होती हैं। अपने आपको धूप से बचाने के लिए, वे छत जैसी एक टोपी को पहनती हैं और एक पौधे के गहरे भूरे रंग का रस, अपने चेहरे पर रगड़ती हैं और अपने मुंह को शॉल के द्वारा ढ़कती हैं। जब वे सजीसंवरी गलियों में हो कर गुजरती हैं, एक औरत ठीक दूसरी जैसी दिखाई देती है और मुझे डर है कि ऐसे मौकों पर, दोस्तों को न पहचानने के कारण, मैंने अनेक नकली मुद्रायें बनाई हैं।

लम्बी–लम्बी घुड़सबारी के इन अभियानों के दौरान, छोटे बच्चे अपनी आया की गोदी में बैठते हैं, और बड़े बच्चे, लकड़ी के डण्डे लगी हुई, एक प्रकार की काठी में, जिसे वे बाहर गिरने से बचने के लिए पकड़ लेते हैं।

हमें दिसम्बर के प्रारम्भ में एक उत्तेजक समय मिला। चन्द्रग्रहण की भविष्यवाणी पहले से ही की जा चुकी थी और इस दृश्य को देखने के लिए, उत्सुक लोगों के द्वारा, शुरू शाम से ही, छतों को घेर लिया गया था। ज्यों ही पृथ्वी की छाया ने, चन्द्रमा के चेहरे के ऊपर स्पष्ट रूप से रेंगना प्रारम्भ किया, पूरे शहर में एक चर्चा शुरू हुई। सभी लोग, शीघ्र ही, चन्द्रमा को दुष्ट राक्षस, जो चन्द्रमा के सामने खड़ा था, से छुड़ाने के लिए, अपने हाथों से तालियॉ बजाने लगे और जोर से चिल्लाने लगे। जब चन्द्रग्रहण समाप्त हुआ, लोग प्रसन्नतापूर्वक अपने अपने घरों को लौटे और दैत्य के ऊपर विजय का उत्सव मनाने के लिए खेल खेले।

क्रिसमस का दिन नजदीक आता जा रहा था, और मैंने एक आश्चर्य के लिए सोचा था। मैं बड़े दिन की एक वास्तविक पार्टी पर, एक पेड़ और उपहारों के साथ, अपने मित्रों का मनोरंजन करना चाहता था। मैंने इतनी अधिक कृपा और सौहार्द्रता पाई थी कि मैं अपने दोस्तों को, बदलाव का आनन्द देना चाहता था। तैयारियों ने मुझे बहुत व्यस्त रखा। मेरे दोस्त त्रेथोंग (Trethong), जिसके स्वर्गीय पिता एक मंत्री रहे थे, ने कुछ दिनों के लिए, मुझे अपना घर दे दिया। मैंने कुछ प्रशिक्षित नौकरों और रसोइयों को काम पर लगाया और अपने अतिथियों के लिए छोटे उपहार, जैसे कि बिजली की टॉर्च, पेन वाले चाकू, टेबिल टेनिस का सेट, और पारिवारिक खेल खरीदे। मैंने अपने मेजबान त्सारोंग और उसके परिवार के लिए, विशेष भेंट के ऊपर विचार किया। मुख्य आकर्षण था, क्रिसमस का पेड़। श्रीमती त्सारोंग ने मुझे, एक गमले में रखकर, जूनीपर का एक पेड़ दिया और मैंने उसे मोमबत्तियों, सेवों, मेवाओं और मिठाईयों से सजाया। ये बहुत कुछ हद तक यथार्थ जैसा दिखाई दिया।

पार्टी सुबह शुरू हुई, जो ल्हासा में सामान्य है। चूँकि मैं अभी भी, सामाजिक बर्बता करने वाले कुछ लोगों से डरा हुआ था, वांगदुला ने उत्सवों के स्वामी के रूप में, मुझे समर्थन दिया। मेरे अतिथि, उत्सुकता से पूरे भरे हुए थे। उन्होंने सभी तरफ से पेड़ की जॉच की और इनके नीचे ढेर लगाते बण्डलों को देखा। ठीक बच्चों की तरह से, हर कोई उत्तेजनाओं और अपेक्षाओं से भरा हुआ था। हमने अपना दिन घर पर खाने में, पीने में और खेल खेलने में गुजारा, और जब अंधेरा हुआ, तब मैंने अपने दोस्तों को दूसरे कमरे में बुलाया। तब मैंने अपने क्रिसमस के पौधे को रोशन किया और वांगदुला ने अपने फर के कोट को उल्टा करके पहन लिया और सेन्टा क्लॉस (Santa Claus) की भूमिका अदा की। हमने *"Stille Nacht, heilige Nacht"* का रिकॉर्ड बजाया, दरवाजा खुला और मेरे अतिथियों ने आश्चर्य चकित हो कर, खुली ऑखों के साथ, पेड़ के आसपास जमाबड़ा किया। श्रीमान् ल्यू ने गाने का नेतृत्व किया, और अतिथियों में से कुछ, जो कभी अंग्रेजी स्कूलों में रहे थे, इस धुन को जानते थे और वे इसमें शामिल हो गये। ये एक अजीब सा दृश्य था। एशिया के दिल में प्रजातियों की खिचड़ी, क्रिसमस के पेड़ के आसपास और हमारे प्रिय क्रिसमस के पुराने घरेलू स्तोत्रों (hymns) को गाती हुई एकट्ठी हुई। मैं अपनी भावनाओं को नियंत्रण करने में बहुत अच्छा हो चुका था, परंतु मुझे स्वीकार कर लेना चाहिए कि इस क्षण, मैं अपनी ऑखों से अपने ऑसुओं को नहीं रोक सका, और मुझे तुरंत ही घर की याद आई।

अपने अतिथियों की प्रसन्नता और–थोड़ी सी शराब के साथ, क्रिसमस के उपहारों में उनके आनन्द ने मुझे घर की याद से उबरने में मदद की। जब मेरे दोस्त गये, उन्होंने मुझे बारबार बताया कि उन्होंने हमारे जर्मनी के नववर्ष का कितनी अच्छी तरह से आनन्द लिया था।

एक वर्ष पहले, चांगतांग की वीरान जंगली जमीन के ऊपर, हमने सफेद रोटी के कुछ टुकड़ों को क्रिसमस के अनोखे उपहार के रूप में माना था। आज हम, मित्रवत् आत्माओं की मंडली में, अच्छी चीजों के साथ लदी हुई एक मेज के चारों तरफ बैठे थे, हमें अपने भाग्य के ऊपर शिकायत करने का कोई अधिकार नहीं था।

हमने 1947 का नववर्ष मनाने के लिए विशेष रूप से कुछ नहीं किया था। आउफस्नाइटर ने नहर का अपना काम पूरा कर लिया था और अब एक महत्वपूर्ण नये काम का प्रारम्भ करना था। ल्हासा में एक पुराना बिजली का संयत्र था, जो पुराने रग्बियों (फुटबॉल के नोसिखिये खिलाड़ियों) के द्वारा पच्चीस साल पहले लगाया गया था। अब ये भयंकर रूप से उपेक्षित अवस्था में था और व्यावहारिक रूप से कोई बिजली नहीं देता था। कार्यकारी दिनों में इसमें इतनी बिजली पैदा होती थी, जो कि टकसाल की मशीनों को चालू रखने के लिए पर्याप्त होती थी, परंतु इसमें केवल शनिवारों को, निजी घरों की आवश्यकताओं के लिए, काफी बिजली होती थी ।

तिब्बत, अपना स्वयं का कागजी नोट और सिक्के बनाता है। टकसाल की इकाई सेंग है। इसे दाशमलिक प्रणाली से, *शो* और *कर्मा* में, विभाजित और उपविभाजित किया जाता है। कागजी मुद्रा, देशी, मजबूत चमकदार रंगीन और पानी के चिन्ह (watermark) वाले कागज से बनायी जाती है। संख्यायें, अत्यधिक दक्षतापूर्वक, हाथ से चित्रित की जाती हैं, और जालसाझी के यहॉ तक के सभी प्रयास, नंबरों की नकल करने में होने वाली कठिनाइयों के कारण, बेकार हो गये थे। बैंक के नोट की दिखावट बहुत अच्छी थी। सोने, चांदी और तॉबे के सिक्के उपयोग में लाये जाते हैं। उनके ऊपर तिब्बत के चिन्ह–पर्वतों और शेरों की, मोहर लगाई जाती है, जो डाक टिकिटों पर भी, उगते हुए सूरज के बगल से दिखाई देती है।

चूँकि टकसाल का संचालन बिजली के ऊपर अत्यधिक निर्भर था, आउफस्नाइटर को पहुँच की गई और कहा गया कि वह पुराने जमाबड़े को सुधारने के लिए, कुछ देखे। वह अधिकारियों को ये मनवाने में सफल हुआ कि इसमें, यह अथवा वह करके, पाने को कुछ नहीं था, और सही तरीका था क्यी चू नदी की जलशक्ति का

उपयोग करना। वर्तमान संयत्र, हल्के हल्के बह रही, पानी की एक छोटी सहायक नदी की मुख्यधारा का उपयोग कर रहा था। ये आशंका बतायी गयी कि यदि पवित्र नदी का जल, ऐसे किसी उद्देश्य के लिए दुरुपयोग किया गया, तो देवता लोग, ल्हासा को दण्डित करेंगे, और आउफस्नाइटर को महान श्रेय दिया जाता है, जो अधिकारियों का दिल जीतने में सफल हुआ। उसे तत्काल ही, एक सर्वेक्षण प्रारम्भ करने का निर्देश दिया गया और एक लम्बी यात्रा पर आने–जाने का हर दिन बचाने के लिए, उसने देशी जागीर में, शहर के बाहर, एक उद्यान के घर में, एक कमरा लिया।

अब हम एक दूसरे से कभी कभार ही मिल पाते थे। मेरा शिक्षण कार्य, मुझे शहर में ही रखता था, और मैं टेनिस के पाठ भी सिखा रहा था। मेरे शिष्य, बड़े और छोटे सभी, काफी अच्छी तरक्की कर रहे थे, परंतु दुर्भाग्यवश, तिब्बती लोग अपनी अटलता के लिए नहीं जाने जाते। प्रारम्भ में लगन से भरे हुए और हर नई चीज को करने के लिए तैयार, परन्तु काफी लम्बे समय से पहले ही, उनकी दिलचस्पी डगमगाने लगती है। इस कारण से मैं अपने शिष्यों को खोता और जो मेरे लिए बहुत संतोषजनक नहीं थे, उन्हें बदलता चला गया। अच्छे परिवारों के बच्चे, जिन्हें मैं पढ़ाता था, निरपवादरूप से प्रखर और बहुत कुछ हद तक जागरूक थे, और किसी भी तरह, समझदारी में, हमारे बच्चों से कम नहीं थे। भारतीय स्कूलों में, प्रखरता में, तिब्बती बच्चे, यूरोपियों के साथ वर्गीकृत किये जाते हैं। किसी को स्मरण रखना चाहिए कि उन्हें, अपने शिक्षकों की भाषा को सीखना पड़ता है। इस अपंगता के बावजूद, वे अक्सर कक्षा में शीर्ष पर ही होते हैं। सेंट जॉसफ कॉलेज, दार्जिलिंग में, ल्हासा का एक लड़का था, जो न केवल स्कूल का सबसे अच्छा विद्यार्थी था, वरन् वह सभी खेलों में विजेता भी था।

मैंने अपने पाठों के अलावा, अपनी आमदनी को बढ़ाने के, दूसरे विविध तरीके खोज लिये थे। ल्हासा में कोई भी व्यक्ति, सड़क से हट कर, धन लगभग पकड़ सकता है। किसी को केवल थोड़े से उद्यम की आवश्यकता होती है। मैं, उदाहरण के लिए, ताजे दूध और मक्खन के लिए एक डेयरी खोल सकता था या खाने के लिए बर्फ उत्पादित करने की, बर्फ जमाने की, एक मशीन भारत से मंगा सकता था। घड़ी सुधारने वाले, जूता सुधारने वाले, और मालियों की बहुत अच्छी मांग थी, और यदि कोई अंग्रेजी जानता हो, तो उद्योग घरानों में नौकरियॉ पाना बहुत आसान था। परंतु हम दुकानदार बनने या केवल पैसा कमाने का इरादा नहीं रखते थे। हमें ऐसा काम चाहिए था, जो साथ–साथ हमें संतुष्टि भी दिला सके और हमने स्चयं को, किसी भी दूसरी चीज की तुलना में, सरकार के लिए अधिक उपयोगी बनने और इस प्रकार कुछ हद तक, उनकी सौहार्द्रता को वापस करने की इच्छा की। सभी प्रकार के मामलों में हमसे परामर्श किया जाता था और उपयोगी होने पर हमें बहुत आनन्द मिलता था। परंतु, हमें सभी कामों के लिए, घरेलू नौकर की तरह समझा जाता था, और कई बार, ऐसे मामलों में, जिनमें हम उस से बहुत कम जानते थे, जिसकी हमसे अपेक्षा की जाती थी, सलाह के लिए बुलाया जाना, हमको स्तब्ध करने वाला होता था।

एक बार हमको, एक मंदिर में, प्रतिमाओं पर दुबारा जाली लगाने के लिए बुलाया गया। सौभाग्य से, हमें त्सारोंग के पुस्तकालय की एक पुस्तक में, सोने की धूल से, कभी न मिट पाने वाले, सोने का पेन्ट तैयार करने की एक विधि मिल गयी। इसके लिए, हमें विभिन्न रसायनों को, भारत से मंगाना पड़ा, क्योंकि ल्हासा के नेपाली, जिनमें दक्ष सुनार और चॉदी का काम करने वाले होते हैं, अपने रहस्यों को बताने के लिए बहुत ही ईष्यालु होते हैं।

तिब्बत में, काफी हद तक स्वर्ण के भण्डार हैं, परंतु खदान खोदने के आधुनिक तरीके अज्ञात हैं। चांगतांग में, पुराने जमाने से, वे पशुओं के सींगों के द्वारा, मिट्टी में से सोना खोदते रहे हैं। मुझे एक अंग्रेज ने एक बार बताया था कि मिट्टी, जो पहले से ही तिब्बतियों द्वारा छान ली गई है, का आधुनिक तरीकों से शोधन, शायद लाभकारी होगा। अनेक प्रान्तों को आज भी, स्वर्ण की धूल के रूप में, अपना कर अदा करना पड़ता है परंतु अब उसकी तुलना में, जो कि एकदम आवश्यक है, पृथ्वी के देवताओं को परेशान करने के भय के कारण और बदले को आकर्षित करने के लिए, और अधिक खुदाई नहीं होती और इस प्रकार एक बार फिर प्रगति मंद पड़ गई है।

एशिया की अनेक महान नदियों के स्रोत तिब्बत में हैं और वे पहाड़ों में से सोना बहा कर, अपने साथ लाती हैं। परंतु जब तक ये नदियॉ पड़ौसी देशों तक नहीं पहुॅच जातीं, उनके सोने का दोहन कर लिया जाता है।

सोने का धोना, केवल तिब्बत के कुछ भागों में होता है। यहॉ ये विशेष रूप से लाभदायक होता है। पूर्वी तिब्बत में नदियॉ हैं, जहॉ धारायें, गुसलखाने की शक्ल में, गुफाओं में रुक जाती हैं। इन स्थानों में अपने आप सोने की धूल इकट्ठी हो जाती है, और उसे कोई केवल समय–समय पर वहॉ जा कर ला सकता है। नियम के रूप में,

जिले का राज्यपाल, सोने धोने के ऐसे प्राकृतिक स्थानों को, शासन के लिए, अपने कब्जे में ले लेता है।

मैं हमेशा आश्चर्य करता था कि, अपने व्यक्तिगत लाभों के लिए इन खदानों का दोहन करने का, अब तक किसी ने क्यों नहीं सोचा। जब आप ल्हासा के आसपास, इनमें से किसी भी धारा के पानी में तैरते हैं, आप सोने के कणों को धूप में चमकते हुए देख सकते हैं, परंतु जैसा कि देश के अनेक दूसरे स्थानों में होता है, ये प्राकृतिक सम्पदा, प्रमुख रूप से इस कारण से कि तिब्बती लोग, इस अपेक्षाकृत आसान काम को उनके लिए अत्यधिक श्रम साध्य समझते हैं, बिना दुही रह जाती है।

तिब्बत में हमारे दूसरे नये साल के ठीक पहले, हमें घर से, तीन साल बाद, अपना पहला पत्र मिला। रास्ते में उसे बहुत समय लग गया। एक लिफाफे के ऊपर रेकजाविक[15] डाक की मोहर लगी थी और वह पूरी दुनियॉ में घूमता रहा था। अब इसे जानने पर, आप हमारे आनंद की कल्पना कर सकते हैं कि अंततः, हमारे बिना भूले हुए दूरस्थ स्वदेश और दुनियॉ की छत, जहॉ हम रहते थे, के बीच संवाद की एक पंक्ति स्थापित हुई थी। दुर्भाग्यवश, यह पंक्ति बहुत पतली थी, और तिब्बती डाक के खराब व्यवहार ने, पिछले कुछ वर्षों में हमारे पड़ाव के दरमियान, इसे सुधारा नहीं। यूरोप से आने वाली खबर, साहस बढ़ाने वाली नहीं थी। वास्तव में, इसने हमारे यहॉ, जहॉ हम थे, रहने की और ल्हासा में एक स्थाई घर बनाने की, इच्छा को और मजबूत किया। हम दोनों में से किसी का भी, अपने पुराने घरों के साथ नजदीकी रिश्ता नहीं था। समय, जो हमने दुनियॉ के इस शांतिपूर्ण कोने में व्यतीत किया, ने हमारे चरित्र को बनाने में प्रभावशाली भूमिका अदा की। हम, प्रकृति और तिब्बतियों की मानसिकता की, इस समझदारी तक पहुॅचे और हमारे भाषा के ज्ञान ने हमको, स्वयं को समझने मात्र के चरण से परे तक, प्रगति करा दी थी। अब हम, नम्र सम्भाषण के सभी सूत्रों को, भली भॉति उपयोग में ला सकते थे।

एक छोटा रेडियो सेट, हमको बाहरी दुनियॉ के सम्पर्क में रखता था। ये मुझे एक मंत्री द्वारा भेंट दिया गया था, जिसने मुझे दिलचस्प राजनैतिक, विशेष रूप से मध्य एशिया से सम्बन्धित, समाचारों को उसे देने के लिए कहा था। इसने मुझे, इस छोटे से डिब्बे में से, ऐसे स्पष्ट और बिना परेशानी के आवाज प्राप्त करने की, एक अयथार्थ भावना दी। किसी को, स्वयं को याद दिलाना पड़ता था कि ल्हासा में कोई दंत चिकित्सक नहीं है। अपने बिजली चालित भ्रमों के साथ, न कोई माल ढोने वाली कारें हैं, बिजली से चलने वाले उपकरणों से काम करने वाले कोई नाई भी नहीं–वास्तव में, रेडियो सुनने वालों को परेशान करने वाला कुछ भी नहीं।

मैं प्रतिदिन पहली चीज, खबरें सुनता था और मैं स्वयं को अक्सर सिर हिलाता हुआ और उन चीजों के ऊपर, जिनको यहॉ के लोग महत्वपूर्ण सोचते हुए दिखते हैं, आश्चर्य करता हुआ पाता था। यहॉ, ये याक की चाल ही है, जो जीवन की गति को निर्देशित करती है, और इसलिए यह हजारों वर्षों से रही है। क्या तिब्बत, बदले जाने पर खुशहाल हो सकेगा। एक अच्छी मोटर की सड़क, निश्चितरूप से, भारत में, लोगों के जीवनस्तर को काफी हद तक बढ़ा देगी, परंतु अस्तित्व की गति को त्वरित कर देने से, ये लोगों को अपनी शांति और आराम से वंचित कर देगा। किसी को लोगों पर, उन आविष्कारों को लागू करने का, जो उनकी उन्नयन की अवस्था से काफी आगे हैं, दवाब नहीं देना चाहिए। वहॉ एक अच्छी कहावत हैः ''आधारतल से प्रारम्भ किये बिना, कोई भी, पोटाला की पॉचवी मंजिल पर नहीं पहुॅच सकता (one can not rech the fifth story of the Potala without starting at the ground floor)।''

यह एक प्रश्न है कि तिब्बती संस्कृति और जीवन शैली, क्या आधुनिक तकनीकों के लाभों को संतुलित करने से अधिक नहीं करती। जहॉ पश्चिम में, क्या कोई भी चीज, तिब्बती लोगों की सौहार्द्रता के समान होती है ? यहॉ किसी को मुॅह नहीं छिपाना पड़ता, और आक्रामकता पूरी तरह अज्ञात है। राजनैतिक शत्रु भी, एक दूसरे से विचार और भलमनसाहत तथा नम्रता के साथ मिलते हैं, और जब वे सड़क पर मिलते हैं, एक दूसरे का अभिवादन करते हैं। उच्चवर्ग की महिलायें, सुसंस्कृत और सभ्य हैं। उनके कपड़े, उनकी अच्छी पसंद को बताते हैं, और वे एक पूर्ण मेजबान हैं। लोगों ने इसको सामान्य बात समझा होगा कि हम दो कुंवारे, एक या अधिक महिलाओं के साथ, अपने घर की देखभाल के लिए, गृहप्रबन्ध से परिचित हुए। हमारे दोस्तों ने, वास्तव में, सुझाव दिया था कि हमको कम से कम एक महिला साथी, अपने साथ में रखनी थी। अकेलेपन के क्षणों में, मैं अक्सर इस विचार के साथ खेल किया करता था, परंतु जैसे कि मैंने अनेक आकर्षक लड़कियॉ पायीं, मैं स्वयं को बांधने के लिए, अपने मन को तैयार नहीं कर सका। वहॉ आध्यात्मिक सम्पर्क के काफी कम बिन्दु थे, जिसके बिना संयुक्त जीवन, मुझे संतुष्ट नहीं कर सकेगा। मैं घर से बाहर से पत्नी लाने में प्रसन्न हुआ होता परंतु पहले तो मैं ऐसा करना बर्दाश्त

15 अनुवादक की टिप्पिणी : रेकजाविक, आइलैण्ड के समुद्रतट पर, एक लाख बीस हजार आबादी वाला बड़ा शहर और देश की राजधानी है।

नहीं कर सकता था और बाद में, राजनीति ने हस्तक्षेप कर दिया।

इसलिए मैं अकेला रहा, और मेरी स्वतन्त्रता मुझे एक अच्छा लाभ सिद्ध हुई, जब बाद में, मैं दलाईलामा के साथ, निकट सम्पर्क में आया।

यदि मैं शादीशुदा होता, शायद, काफी हद तक, भिक्षुओं ने उनके साथ हमारी बैठकों को अनुमोदित नहीं किया होता। वे कठोर ब्रह्मचर्य में रहते हैं और उनको औरतों के साथ कुछ भी करने से वर्जित किया जाता है। दुर्भाग्यवश, समलैंगिता बहुत सामान्य है। प्रमाण देने के बावजूद भी, इस को अनदेखा किया जाता कि औरतें उन भिक्षुओं के जीवन में कोई भूमिका अदा नहीं करतीं, जो इसमें शामिल होते हैं। ये भी अक्सर होता है कि भिक्षु, किन्हीं अन्य भिक्षु महिलाओं के प्यार में पड़ जाते हैं और अपने को मुक्त किये जाने की प्रार्थना करते हैं ताकि वे उनके साथ शादी कर सकें। ये बिना परेशानी के स्वीकृत की जातीं हैं। पवित्रक्रम को छोड़ देने पर, एक भिक्षु, यदि वह भद्र परिवार का है, उस श्रेणी को प्राप्त कर लेता है, जो उसे मठ में मिली हुई थी; यदि वह नम्र मूल का है, तो उसे अपनी पदवी छोड़नी पड़ती है परंतु, सामान्यतः व्यापार में, वह अपनी जीविका चला सकता है। उन भिक्षुओं पर कठोर दण्ड लगाये जाते हैं, जो अपनी श्रेणी को छोड़ने की आज्ञा प्राप्त किये बिना, औरतों के साथ फंस जाते हैं।

अपनी स्वैच्छिक एकान्तता के बावजूद, मैंने पाया कि समय बहुत तेजी से गुजरता था। मेरा खाली समय पढ़ने और मिलने जुलने में जाता था। जब से हमने साथ–साथ रहना समाप्त कर दिया था, आउफस्नाइटर और मैं, एक दूसरे से नियमितरूप से मिलते थे। हमें आपस में विचार विनमय की जरूरत पड़ती थी। हम अपनी गतिविधियों से पूरी तरह संतुष्ट नहीं होते थे और कई बार आश्चर्य करते थे कि हम अपने समय का सदुपयोग नहीं कर सके। वहॉ इस लगभग कुंवारे देश में, खोज के क्षेत्र में, बहुत कुछ किया जाना था। जैसा कि हमने एक बार, पूरे देश में गरीब तीर्थयात्रियों की तरह, एक स्थान से दूसरे स्थान तक घूमते हुए और इस प्रकार तिब्बत को जानने के लिये किया था, चूँकि किसी यूरोपियन ने, इससे पहले, ऐसा कभी नहीं किया, हम अक्सर, ल्हासा और घुमक्कडपन को छोड़ देने की सोचते थे। आउफस्नाइटर, हमेशा महान रहस्यमय अन्तर्देशीय समुद्र (inland sea), नामत्सो (Namtso) के पास एक साल गुजारने और उसके ज्वारों का अध्ययन करने का सपना देखा करता था।

तिब्बत में हमारे जीवन ने, धीमे–धीमे अपनी भद्रता के संज्ञान को खो दिया, परंतु ये हमको ये महसूस करने से कि यहॉ होने पर, हम कितने सौभाग्यशाली थे, रोक नहीं सका।

सरकारी दफ्तर, अक्सर, विश्व के सभी भागों से आने वाले और भिन्न–भिन्न व्यवसायों से जुड़े हुए व्यक्तियों द्वारा लिखे गये पत्र, हमें अनुवाद करने के लिए दे देते थे। इनमें से अधिकांशतः, देश में अनुमति प्राप्त करने के प्रार्थनापत्र होते थे। अनेक अभ्यर्थियों ने, केवल खाने और रहने की सुविधा के बदले में, देश को जानने के विचार के साथ, सरकार के लिए काम करने का प्रस्ताव दिया। दूसरे लोग, तपैदिक से पीड़ित लोग होते थे, जो तिब्बत की पहाड़ी हवा से इलाज पाने की आशा करते थे। इन पत्रों का जवाब, और कई बार भेंट के रूप में कुछ धन भी, हमेशा दिया जाता था और उत्तर दलाईलामा के शुभाशीर्वाद और शुभकामना को सूचित करता था। दूसरे प्रार्थना पत्रों पर, कभी भी कोई उत्तर नहीं भेजा जाता था, इसलिए कोई भी, कभी तिब्बत में आने की आज्ञा प्राप्त नहीं कर सका। ये अपरिवर्तनीय नीति, तिब्बत को वर्जित भूमि (forbidden land) के रूप में बनाये रखने के लिए थी।

अपने पॉच वर्ष के ल्हासा के पड़ाव में, जिन विदेशियों से मैं मिला, संख्या में सात से अधिक नहीं थे। 1947 में, ब्रिटिश दूतावास की सिफारिश पर, अमोरी द रियनकोर्ट (Amoury de Riencourt) नामक एक फ्रांसीसी संवाददाता को, आधिकारिक रूप से आमंत्रित किया गया था। वह ल्हासा में हफ्तों तक रुका। एक वर्ष बाद, रोम से, विख्यात तिब्बतज्ञानी (Tibetologist), प्रोफेसर टूसी (Professor Tucci), आ पहुॅचे। ये तिब्बत के लिए, उनकी सातवीं, परंतु ल्हासा के लिए पहली यात्रा थी। वह इतिहास के क्षेत्र में और तिब्बती सभ्यता के सम्बन्ध में, महान अधिकारी (authority) माना जाता था तथा काफी संख्या में अपने मूलकार्यों के प्रकाशित करने के साथसाथ, उसने अनेक तिब्बती पुस्तकों का अनुवाद किया था। अपने विभिन्न देशों के इतिहास के अपने ज्ञान के द्वारा, वह हमेशा नेपालियों, भारतियों, तिब्बतियों, और चीनियों को आश्चर्यचकित कर देता था। मैं उसे अक्सर पार्टियों में मिलता था, और एक बार एक बड़े एकत्रीकरण से पहले, उसने पृथ्वी की आकृति के सम्बन्ध में, मेरे विरुद्ध बहस में, तिब्बतियों का पक्ष लेते हुए, मुझे एक भ्रामक स्थिति में ड़ाल दिया। तिब्बत में, पारम्परिक विश्वास यह है कि पृथ्वी एक सपाट चकती है। पार्टी में इस पर बहस हो रही थी, और मैं गोलीय सिद्धान्त के समर्थन में खड़ा हुआ। मेरे तर्क, तिब्बतियों की समझ में आते हुए प्रतीत हुए और मैंने प्रोफेसर टूसी से अपना समर्थन करने की प्रार्थना

की। मेरे बड़े आश्चर्य के लिए, उन्होंने यह कहते हुए कि उनके विचार से, सभी वैज्ञानिकों के द्वारा, अपने सिद्धान्तों का लगातार पुनः संशोधित किया जाना अपेक्षित होते हुए, किसी दिन तिब्बत का मत सत्य होना सिद्ध हो सकता है, एक शंकालु रवैया अपनाया और चूँकि, यह ज्ञात था कि मैं भूगोल पढ़ाता हूँ, हर आदमी, दबी जुबान से मुस्करा रहा था। प्रोफेसर तूसी, ल्हासा में आठ दिन रुके और तब, तिब्बत के एक अत्यधिक प्रसिद्ध मठ, साम्ये (Samye) की यात्रा पर गये, उसके बाद, वैज्ञानिक नमूनों और पोटाला प्रेस से अनेक बहुमूल्य पुस्तकों को अपने साथ ले जाते हुए, उन्होंने देश को छोड़ दिया।

ल्हासा के लिए दूसरे मजेदार यात्री थे, अमरीकी लोबेल थॉमेस (Lowell Thomas) और उसका पुत्र, जो 1949 में आये। वे भी यहाँ एक सप्ताह रहे और वे अपने सम्मान में दिये गये अनेक स्वागतों में उपस्थित हुए। उन्होंने दलाईलामा के सामने भी अपनी सुनवाई कराई। दोनों के पास, मूवी फोटो कैमरा थे और उन्होंने कुछ भव्य फोटो लिये। उनके पुत्र ने एक दिलचस्प पुस्तक लिखी, जो सर्वाधिक विक्री वाली (best-seller) बनी, और यू. एस. ए. में, एक रेडियो समीक्षक, पिता ने, अपनी भविष्य की वार्ताओं के लिए ध्वन्यांकन (sound recording) कराया। मैं उनके भव्य फोटोग्राफी उपकरणों के प्रति और विशेष रूप से उनके पास फिल्मों की बहुतायत होने पर, बड़ी ईर्ष्या रखता था। उस समय के करीब, मैं एक लाईका (Leica) (कैमरा) खरीदने के लिये मैं वांगडुला से जुड़ा हुआ था, परंतु हमें फिल्मों की कमी हमेशा झेलनी पड़ती थी। अमरीकियों ने मुझे दो रंगीन फिल्मों, मेरी पहली और मात्र अकेली का उपहार दिया।

राजनैतिक परिस्थिति, इस मोड़ पर, दो अमरीकियों की, उन्हें तिब्बत में आने देने की आज्ञा प्रदान किये जाने की याचिका पर देने के लिए, हमारे समर्थन में एक उत्तर पैदा कर चुकी थी। चीन का धमकी भरा रवैया, यद्यपि पारम्परिक, अब फिर से तीव्र हो गया था। हर चीनी सरकार, चाहे साम्राज्यवादी, राष्ट्रवादी, या साम्यवादी, कोई भी क्यों न हो, सदैव ही, तिब्बत के ऊपर, चीनी प्रांत के रूप में दावा करती थीं। ये झूठा दावा, पूरी तरह से, तिब्बती जनता की इच्छाओं के विरुद्ध था, जो अपनी स्वतन्त्रता को प्यार करती थी और स्पष्ट रूप से उसका आनन्द लेने की हकदार थी। परिणामस्वरूप, तिब्बती सरकार ने दो अमरीकियों, जिन्होंने तिब्बत की स्वतंत्रता के सम्बन्ध में, एक विश्वव्यापी प्रचार अभियान चलाना, अपने जिम्मे लिया, को प्रवेश देने का निर्णय लिया।

सरकार के इन चार अतिथियों के अलावा, एक अंग्रेज इंजीनियर और एक मैकेनिक, व्यावसायिक उद्देश्य के साथ, तिब्बत में आया। इंजीनियर, जनरल इलेक्ट्रिक कम्पनी में नौकर था, और बिजली के कामों के लिए, नई मशीनें जमाना, उसका काम था। वह आउफस्नाइटर के काम के बारे में, जो वह पहले ही कर चुका था, बहुत अच्छा बोलता था। मैकेनिक, नेडवेलोफ (Nedvailoff), एक श्वेत रूसी था, जो क्रान्ति के समय से, एशिया के आसपास घूमता रहा था। अंतिम रूप से वह, देहरादून में, हमारे बंदी शिविर में ठहरा और 1947 में उसे रूस को वापस भेजा जाना था। अपने जीवन को बचाने के लिए, वह तिब्बत को भाग आया था परंतु सीमा पर उसे फिर से गिरफ्तार कर लिया गया। चूँकि वह एक कुशल कारीगर था, अंत में, उसे सिक्किम में रहने देने का निर्णय किया गया। वहाँ से उसे पुराने बिजली संयत्र की मशीनों को सुधारने के लिये, ल्हासा बुलाया गया। कुछ महीनों बाद, जब वह पहुँचा, चीनी लालसेना तिब्बत में अतिक्रमण कर चुकी थी, और एक बार फिर, उसे भागना पड़ा। मेरा विश्वास है कि अंत में वह आस्ट्रेलिया में मर गया। उसका जीवन, एक लगातार भगोड़े का था। वह एक स्वाभाविक साहसी अभियान करने वाला था और उसने खतरों और परेशानियों के विरुद्ध अच्छा प्रमाण दिया।

भारत की स्वतंत्रता की घोषणा ने, ब्रिटिश दूतावास, ल्हासा, के भाग्य को भली भाँति व्यवस्थित कर दिया। ब्रिटेन के कर्मी, भारतियों के द्वारा बदल दिये गये, परंतु श्रीमान् रिचार्डसन, चूंकि उनके पद के लिए, कोई भारतीय प्रशिक्षित प्रत्याशी नहीं था, 1950 के सितम्बर तक रुके रहे। रेगिनाल्ड फॉक्स को, तिब्बती सरकार द्वारा, उनके रेडियो चालक के रूप में ले लिया गया था। चीन की लालसेना के द्वारा अचानक अतिक्रमण के रोजना बढ़ते हुए खतरे को देखते हुए, उसे सभी महत्वपूर्ण आवश्यक स्थानों पर, रेडियो स्टेशन स्थापित करने के निर्देश दिये गये थे। पूर्वी तिब्बत के एक महत्वपूर्ण स्थान, चाम्डो (Chamdo) के लिए, एक विश्वासपात्र व्यक्ति की आवश्यकता थी, और फॉक्स, रॉबर्ट फोर्ड (Robert Ford) नाम के एक नौजवान अंग्रेज को अन्दर लाये। मैं उन्हें, ल्हासा में, थोड़ा सा जानता था। वह नाचने का शौकीन था और उसने ल्हासा में, सांबा[16] नृत्य की शुरूआत की। तिब्बती पार्टियों में

16 अनुवादक की टिप्पिणी : सॉबा, ब्राजील के संगीत और नृत्य की एक शैली है, जिसका मूल अफ्रीका में है। इसे अफ्रीकी धार्मिक परम्पराओं में प्रदर्शित किया जाता है। आजकल सांबा की विभिन्न लोकप्रिय लयों और क्षेत्रीय नृत्यों में नगाड़ों का उपयोग किया जाता है, जबकि ब्राजील की राजधानी रियो –डी–जनेरियों (Samba-de- Janerio) में इसके संस्कारित और भिन्न भिन्न रूप देखे जाते हैं। विश्व भर में इसे ब्राजील के आनन्द उत्सवों (carnibals) के

काफी अच्छा नृत्य होता था। राष्ट्रीय नृत्य, जो उत्तरी घास के मैदान की तरह, अत्यधिक लोकप्रिय नहीं होते थे परंतु फॉक्र्स ट्रोट (Forx Trod) को भी इसका समर्थन मिला, यद्यपि इसके ऊपर, अधिक आयु के लोगों के द्वारा, जो सोचते थे कि नृत्य में भाग लेने वाले सहयोगी, एक दूसरे से इतना अधिक चिपक जाते हैं, नाक भोंह चढ़ाईं गईं।

फोर्ड एक बड़े काफिले के साथ चामडो गया, और कोई, शीघ्र ही, उसके साथ वायरलेस टैलीफोन पर बात कर सकता था। ऐसा लगता है कि विश्व भर के नोसिखिये रेडियाधारकों में, अपनी दूरस्थ चौकियों पर पदस्थ, अकेले यूरोपियनों से बात करने के विशेषाधिकार की प्रतियोगिता थी और फोर्ड और फोक्स को बड़ी संख्या में पत्र और भेंटें प्राप्त हुईं। दुर्भाग्यवश, वे विवरण, जो फोर्ड ने इन हानिरहित वार्तालापों के बाद बनाये थे, बाद में उसे अनकिये (undone) सिद्ध हुए। चीनी अतिक्रमणकारियों के आने से पहले, वह अकेला पड़ गया था और पकड़ लिया गया। उसके खिलाफ, सबसे खूंख्वार अभियोग लगाये गये। दूसरी चीजों के साथसाथ, उसे एक लामा को जहर देने, और उसकी पुस्तक में कुछ प्रविष्टियॉ, जो गुप्त अतिथि के रूप में मानी गई, करने का दोषी माना गया। 1953 में, ये सहानुभूतिमय और पूरीतरह से भोला आदमी, पेकिंग में ब्रिटेन के राजदूत के उसे छुड़ाने के सभी प्रयासों के बावजूद, अभी भी, लाल लोगों के हाथों के बीच, जेल में था।

मैं अपने तिब्बत में रुकने की अवधि में, एक और श्वेत अमरीकी आदमी–बैसाक (Bessac) से मिला। मैं ये बाद में बताऊॅगा कि उसने साथ क्या हुआ।

प्रतीक के रूप में जाना जाता है, यहॉ तक कि ये ब्राजील के राष्ट्रीय चिन्ह के रूप में माना जाता है। सन् 2005 में बाहियों के सांबा–डि–रोडा (Samba-de-roda) को, यूनेस्को द्वारा पुरासंपदा के रूप में स्वीकार किया गया है। पुर्तगाली मूल की ब्राजीलियन नायिका, कारमेन मिरान्डा (Carmen Miranda) ने, सांबा को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर लोकप्रिय बनाने के लिए काफी प्रयास किया है। अपने ब्राजीलियन सांबा के मूल तत्वों के साथ, सांबा का एक दूसरा रूप, अंतर्राष्ट्रीय बालरूम डांस (ballroom dance) के रूप में दिखाई देता है।

विद्रोह का प्रयास

जब ल्हासा में, मेरा दूसरा तिब्बती नववर्ष समीप आया, मैं प्रारम्भ से ही, त्यौहार के सभी समारोहों में उपस्थित हुआ। दसियों हजार लोग, शहर में झुंड बना कर इकट्ठे हुए और ल्हासा एक बड़े शिविर की भांति दिखाई दिया। इस वर्ष उन्होंने ''अग्नि–शूकर–वर्ष (Fire-Pig- Year)'' का प्रारम्भ मनाया। उत्सवों की भव्यता, पिछले वर्ष से कम नहीं थी, और मैं, वास्तव में, विशेष रूप से उन दृश्यों में रुचि रखता था, जिन्हें अपनी बीमारी के कारण, मैं पिछले वर्ष चूक गया था। उस दृश्य की मुझे कुछ सजीव याददाश्त है, वह ऐतिहासिक परिधानों में, हजार सैनिकों का एक जलूस था। ये रिवाज, एक ऐतिहासिक घटना की स्मृति में मनाया जाता है। काफी पहले, एक मुसलमान सेना, ल्हासा की ओर बढ़ते हुए भयंकर बर्फीले तूफानों के द्वारा, न्येनशेगथांगला की पहाड़ियों के चरणों में, पछाड़ दी गई थी, और पूरी तरह से बर्फ में दब गई थी। उस क्षेत्र के बोन्पो, उनके जमे हुए सैनिकों और उनके हथियारों को, विजय के रूप में ल्हासा लाये थे। अब वे हर साल बाहर निकाले जाते हैं और हजारों लोगों द्वारा प्रदर्शित किये जाते हैं। पुराने मानकों को अंजाम दिया जाता है; कोई जंजीरों में बंधे, घोड़ों के ऊपर सबार, आदमियों की झनझनाहट सुनता है; खोदी हुई उर्दू लिपि के साथ, उनके टोप धूप को परावर्तित करते हैं; मध्यकालीन समय के एक विरले प्रदर्शन के इस पुराने फैशन वाले शहर के साथसाथ, पतली गलियों में पुराने बंदूक भरने वालों की सूचनायें, सुनी जाती हैं। परेड इतनी सुंदरता के साथ प्रदर्शित की गई थी कि एक सही ऐतिहासिक पुनरावृत्ति की तुलना में, इसने परम यथार्थ का प्रभाव डाला। शहर के किनारे खुले स्थानों पर, पारखोर के आरपार खुले मैदान में, सेनाओं का नेतृत्व, दो जनरलों के द्वारा किया जा रहा था। दसियों हजार लोग, वहॉ एक बड़ी आग की गर्मी में, जहॉ ज्वालाओं को मक्खन और अनाज की, असीम आहुतियों के द्वारा हवा दी जा रही थी, प्रतीक्षा कर रहे थे। भीड़, मोहित हो कर देख रही थी, जबकि भिक्षु, मृत्यु के सिरों, और दुष्ट आत्माओं के सांकेतिक पुतलों को आग में फैंक रहे थे। जमीन में गढ़ी हुई टोपों ने, भिन्न–भिन्न पहाड़ी चोटियों की तरफ, सेल्यूट के निशाने साधे। पराकाष्ठा पर पहुॅचने वाला क्षण तब था, जब राज्य ज्योतिष केन्द्र के भिक्षुओं ने, आग की तरफ लड़खड़ाना शुरू किया और थोड़े से समय के बाद, जंगली नृत्य ने जमीन पर दम तोड़ दिया। ये लोगों के लिए, अपनी जमी हुई अचलता से, उन्मादपूर्ण चीखों और संकेतों में फूट पड़ने का क्षण था।

1939 में, जर्मनी के एक मात्र पर्वतारोही अभियान के सदस्य, जो कभी तिब्बत में आये थे, उत्सव के इस अवसर पर मौजूद थे। वे बमुश्किल अपने जीवनों को बचा सके, क्योंकि उन्होंने राज्यज्योतिषी की फिल्म बनाने की दृष्टता की थी और भीड़ के द्वारा, अचानक ही, उनके ऊपर पथराव किया गया। उन्हें उद्यान की दीवारों और छतों पर चढ़ते हुए, परिदृश्य से भागना पड़ा। भीड़ के इस रवैये में कुछ भी राजनैतिक नहीं था और न ही विदेशियों के प्रति कोई लेशमात्र घृणा थी। ये लोगों की, पागलपन की हदतक, धर्म के प्रति बफादारी के कारण, जो हमेशा ही इस प्रकार के शांति भंग करने के मौके पैदा करने में समर्थ होता है, प्रेरित किया गया था। बाद में, जब मैं दलाईलामा के लिए फिल्म बना रहा था, मुझे बहुत सावधान रहना पड़ा। वहॉ लगभग हर समय, उत्तेजित दृश्य थे, और जब मैं अपने खुद के लिए कुछ चित्र लेने में सफल हुआ, मैं बहुत प्रसन्न था।

नव वर्ष के उत्सव के इस अवसर पर, सर्वोच्च अधिकारी ने हमें सूचित किया कि हम पवित्रतम के अतिथियों की सूची में शामिल थे। यद्यपि हमने युवा देवीय राजा को, कई बार देखा था और जलूस के बीच पहचानने के साथ–साथ, उसकी मुस्कान के द्वारा हमारा स्वागत किया गया था, हम उनके पोटाला के महल में, सामने दिखाई देने के इस भविष्य पर बहुत उत्तेजित थे। मैंने अनुभव किया कि हमारे लिए ये आमंत्रण, अत्यधिक महत्वपूर्ण होगा। वास्तव में, ये सड़क पर टकटकी लगाने वाला प्रतीत हुआ, जिसने मुझे युवा ईश्वरीय राजा के अत्यन्त समीप ला दिया।

तय किये गये दिन को, हमने खाल के अपने ऊनी कोट पहने, सबसे अधिक महंगे रूमाल, जो हमें शहर में मिल सकते थे, खरीदे, और, खुशी के मध्य भिक्षुओं के मुकुट पहने हुए, अपने उत्सवीय परिधानों में नोमाड, और उनकी महिलायें, पोटाला की सीढ़ियों पर काफी दूर तक चढ़ गये। ज्यों ही हम चढ़े, शहर का दृश्य और अधिक प्रभावशाली हो गया। वहॉ से हमने उद्यानों और महलनुमा घरों की तरफ नीचे देखा। हमारी सड़क, हमको असंख्य प्रार्थनाचक्रों, जिन्हें गुजरने वालों ने, घुमा कर, गति में बनाये रखा था, से गुजारती हुई ले गई। तब हम महल के आंतरिक भागों में, एक बड़े प्रमुख द्वार से गुजरे। अंधेरे गलियारे, रक्षा करने वाले अज्ञात संरक्षक देवों के द्वारा पेंट

से सजाई गईं उनकी दीवारें, हमें आधार तल पर भवनों के ऑगन की तरफ ले गईं। वहॉ से तीखी सीढ़ियॉ, किसी को, कई मंजिल ऊॅची, सीधी, सपाट छत तक ले गईं। आगन्तुक उन पर, सावधानीपूर्वक और खामोशी के साथ चढ़े। ऊपर, पहले से ही एक घनी भीड़ जुड़ी हुई थी, क्योंकि प्रत्येक को, नव वर्ष पर महान से आशीर्वाद प्राप्त करने का अधिकार है। वहॉ छत पर, सोने चढ़ी छतों के साथ, कई छोटी छोटी इमारतें थीं। वहॉ दलाईलामा के कमरे थे। आगे चलते हुए भिक्षुओं के साथ, आस्थावान लोगों की एक लम्बी पंक्ति, धीमेधीमे एक दरवाजे की तरफ चली। जब हम भाषण वाले हॉल के अंदर आये, हम दोनों, भिक्षुओं के बाद सीधे ही, पंक्ति में आ गये। सिरों के जंगलों के बीच, सजीव बुद्ध की एक झलक पाने के लिए, हमने अपनी गर्दन उचकाई और उन्होंने भी, दो अनजान लोगों की झलक पाने के लिए, जिनके बारे में उन्होंने बहुत कुछ सुन रखा था, अपनी गरिमा को क्षण भर के लिए भुला कर, उत्साह के साथ ऊपर की तरफ देखा।

दलाईलामा, बुद्ध की मुद्रा में, एक महंगी, उभरी कढ़ाई वाली (brocade) चादर से ढ़के हुए सिंहासन के ऊपर, थोड़ा आगे की तरफ झुके हुए बैठे थे। उन्हें घंटों तक बैठना था और स्वामिभक्त भीड़ को, ज्यों ही वे गुजरें, देखना और आशीर्वाद देना था। सिंहासन के पैरों में, बटुओं, और रेशम के थानों और सैंक़ड़ों सफेद रूमालों का एक पहाड़ पड़ा था। हम जानते हैं कि हमको, अपने रूमालों को सीधे ही, दलाईलामा को नहीं देना चाहिए था; एक मठाध्यक्ष को उसे हमसे लेना था। जब हमने स्वयं को, झुके हुए सिरों से, दलाईलामा के सामने खड़े हुए पाया, मैं ऊपर देखने के लालच को रोक नहीं सका। दलाईलामा के मोहक चेहरे के ऊपर, लड़कपन की एक उत्सुक मुस्कान चमकी और उनका हाथ, आशीर्वाद के रूप में उठा और एक क्षण के लिए, मेरे सिर पर आ गया। हर चीज बहुत तेजी से हुई; एक या दो क्षण में, हम सिंहासन, जिस पर राज्य अधिकारी बैठा था, के सामने, कुछ नीचे खड़े थे। उसने भी, आशीर्वाद के लिए अपना हाथ हमारे ऊपर रखा, और तब एक मठाध्यक्ष ने, एक लाल, गंदा रूमाल हमारी गर्दन में डाला और हमें एक गद्दी पर बैठने के लिए कहा गया, चावल और चाय परोसी गई और रिवाज के मानने वाले हमने, देवताओं के प्रसाद के रूप में, कुछ अनाज जमीन पर फेंका।

अपने शांत कोने में से हमने, उस सब का, जो गुजरा, एक आश्चर्यजनक दृश्य देखा। हमने, युवा दैवीय राजा से आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए, असीम आदमियों से भरपूर एक झुंड देखा। नम्र अभिवादन में अपने सिरों को झुकाये हुए और अपनी जीभों को बाहर निकाले हुए, वे एक अजीब चित्र प्रस्तुत कर रहे थे। कोई ऊपर देखने का दुस्साहस नहीं कर सकता था। रेशमी पौंछे की तरह की प्रकाश की एक मशाल, जिसके साथ भिक्षु और हम सम्मानित किये गये थे, ने हाथों में रखे जाने को बदल दिया। आगन्तुकों में से कोई भी, खाली हाथ नहीं आया। कुछ केवल सूती रूमालों को लाये, परंतु वहॉ अपने ठाठवाट के साथ, उपहारों से लदे हुए, तीर्थयात्री थे। खजांची के द्वारा, हर एक भेट तुरंत ही पंजीकृत कर ली जाती है और यदि उपयोगी हो, तो पोटाला के घरेलू भण्डारों में डाल दी जाती है। असंख्य रेशमी रूमाल, बाद में, बेच दिये जाते हैं या कुश्ती की प्रतियोगिताओं में इनाम जीतने वालों को दे दिये जाते हैं। चढ़ावे के दिये गये धन, दलाईलामा की व्यक्तिगत सम्पत्ति बने रहते हैं। वे पोटाला के स्वर्ण और रजत कक्षों में चले जाते हैं। जिनमें शताब्दियों से बहुत बड़े–बड़े खजाने इकट्ठे हो गये हैं और एक अवतार से दूसरे अवतार को, अनुवांशिकता/परम्परा में दे दिये जाते हैं।

इन सब लोगों के चेहरे के ऊपर, उपहारों की तुलना में, तीव्र समर्पण के भाव, अधिक प्रभावशाली होते हैं। अनेक लोगों के लिए, ये उनके जीवन का महानतम क्षण होता है। वे सैकड़ों मील दूर से, अपने आपको धूल में झौंकते हुए और कई बार अपने घुटनों के बल चलते हुए, अपनी तीर्थयात्रा पर आये हुए हो सकते हैं। देवीय राजा का आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए, कुछ ने महीने और वर्ष व्यय किये हैं और अपनी यात्रा में, महान सर्दी और धूप की पीड़ा झेली है। मुझे ऐसा लगा कि ऐसे समर्पण के लिए, रेशमी झाड़े का एक स्पर्श, एक छोटा इनाम था परंतु जब एक भिक्षु ने, हल्के रूमाल को, प्रत्येक तीर्थयात्री की गर्दन पर रखा, उसके सर्वोत्कृष्ट आनन्द की अभिव्यंजना, जिसने उनके चेहरों को चमका दिया, को छोड़ कर कोई कुछ नहीं पहचान सकता था। वे इन रूमालों को, अपने जीवन के अन्त तक गले में पहनने के लिए या बटुओं में सीने के लिए और दुष्टात्माओं से अपने बचाव के लिए ले जाते हैं। रूमाल की गुणता, पाने वाले की हैसियत पर निर्भर करती है, परंतु इनमें से हर एक को, एक रहस्यमय तिहरी गांठ मिलती है। ये गांठ बंधे हुए रूमाल, भिक्षुओं द्वारा तैयार किये जाते हैं, परंतु मंत्रियों और अत्यधिक उच्च स्थितियों के मठाध्यक्षों के लिए, दलाईलामा स्वयं, गांठें बांधते हैं। जैसे–जैसे समय गुजरता गया, अगरबत्ती की सुगंधों और घी के दियों की गंध से भरे हुए, इस भीड़ भरे कमरे का वातावरण, अधिक दमनकारी हो गया और जब उत्सव समाप्त हुआ, हम काफी प्रसन्न थे।

जैसे ही तीर्थयात्रियों में से अंतिम ने कमरा छोड़ा, दलाईलामा उठे और जबकि हम झुके हुए सिरों के साथ निश्चल खड़े रहे, अपने सेवकों द्वारा समर्थित हो कर, अपने निजी कक्ष की ओर से चले। जब हम जा रहे थे, एक भिक्षु आया और उसने हम में से हर एक को, *''ग्यालपो लिंगपोचे की सोरे रे''* (''ये भद्र राजा की ओर से उपहार है'') कहते हुए, सौ सेंग के भुरभुरे, नये नोट दिये।

इस संकेत के द्वारा, और अधिक विशिष्टरूप से, जब हमें पता लगा कि किसी और को अब तक उपहार इस रूप में नहीं मिले हैं, हम अत्यधिक आश्चर्यचकित हुए। ये ल्हासा के लिए, एक विशिष्टता थी कि इससे पहले कि हम इसे किसी आत्मा को बताते, शहर में हर एक आदमी, उस आदर को जो हमें मिला था, जानता था। हमने इस उपहार को, अनेक वर्षों तक, तालिसमान (talisman) के रूप में रखा और जब हमने तिब्बत को अंतिम रूप से छोड़ा, हमें ये स्वीकार करना पड़ा कि उन्होंने हमें निराश नहीं किया।

सुनवाई के बाद हमने, तीर्थयात्रियों के साथ–साथ, पोटाला के अनेक पवित्र स्थानों को देखने के इस मौके का लाभ उठाया। विश्व के सर्वाधिक प्रभावशाली भवनों में से एक, पोटाला को, पॉचवें दलाईलामा के द्वारा वर्तमान रूप में बनबाया गया था। इससे पहले यहॉ, इस स्थल पर, तिब्बत के राजा से सम्बन्धित, एक छोटा महल हुआ करता था, जिसको मंगोलों के द्वारा, उनके अतिक्रमणों में से एक में नष्ट कर दिया गया था। बंधुआ मजदूरों का एक गैंग, एक बहुत दूर स्थित खान से, पत्थरों के बाद पत्थर, अपनी पीठों पर लाद कर, भवन स्थल तक ढ़ोकर लाया था; पत्थर के कुशल कारीगरों के द्वारा, बिना किसी भी तकनीकी युक्ति की सहायता के, वर्तमान महल तैयार किया गया। जब पॉचवे दलाईलामा अचानक स्वर्गवासी हुए, एक खतरा था कि काम कभी पूरा नहीं हो सकेगा, परंतु राज्याधिकारी, जो अपने लिए इस कार्य को करने में, जनता की बफादारी के ऊपर विश्वास नहीं कर सका, ने अपने पवित्रतम दलाईलामा की मृत्यु की घोषणा को रोके रखा। पहले ये घोषणा की गई कि वे गम्भीर रूप से बीमार हैं और तब ये कि उन्होंने ध्यान करने के लिए, स्वयं को विश्व से अलग कर लिया है। ये धोखा, जब तक कि राजभवन पूरी तरह पूरा नहीं हो गया, दस वर्षों तक जारी रहा। आज जब कोई इस अद्वितीय भवन की तरफ देखता है, कोई समझ सकता है और उसे धोखे को माफ कर सकता है, जिसने इसके पूरे होने को सम्भव बनाया।

पोटाला की छत के ऊपर, हमने उस राजा की समाधि को पाया, जिसके कारण यह भवन अपना अस्तित्व धारण करता था। पॉचवें दलाईलामा के अवशेष, दूसरे ईश्वरीय राजाओं के समीप एक समाधि में रखे हैं। इनमें से सात, वे समाधियॉ हैं, जिनके सामने भिक्षु बैठते हैं और नगाड़ों की दबी हुई आवाज में प्रार्थना करते हैं। यदि कोई (बौद्ध समाधि) स्तूप तक पहुॅचना चाहता है, तो उसे तीखी खड़ी सीढ़ियॉ चढ़नी पड़तीं हैं–एक खतरनाक साहस। वहॉ, देखने के लिए बहुत हल्का प्रकाश होता है और डंडे (railing) शताब्दियों की धूल के साथ फिसलन भरे हैं। सबसे बड़ा स्तूप, तेरहवें दलाईलामा का है, जो महल में कई मंजिल नीचे से बनाया गया है। उस स्वर्ण की प्लेट को बनाने में, जिसके साथ इस मीनार की दीवारें सामने पड़ती हैं, एक टन से अधिक सोना उपयोग में लाया गया था।

अनेक मंदिरों को देखने के बाद, हम पोटाला के पश्चिमी भाग में आये, जहॉ दो सौ पचास भिक्षु रहते थे, नामग्येत्रात्सांग (Namgyetratsang), जैसा कि इस खण्ड को कहा जाता है, संकीर्ण और कोनों से भरा हुआ और यूरोपीय ऑख को आमंत्रित करने वाला नहीं है, परंतु छोटी खिड़कियों में से इसका दृश्य, उदासी और आंतरिक भाग की असुविधाओं का श्रंगार करता है। मैं ये सोचने में मदद नहीं कर सका कि अपनी छोटी–छोटी कोठरियों वाले घरों और सपाट छतों से, ल्हासा इतना आकर्षक, इतना अधिक बढ़िया दिखाई देता है। हम उन संकरी गलियों में धूल को देख पाने के लिए, अत्यधिक ऊॅचे चढ़ गये थे।

बाद वाले वर्षों में, मुझे उन मित्रों के अतिथियों के रूप में, जो वहॉ रहते थे, पोटाला में रुकने के अनेक अवसर मिले। इस धार्मिक किले में, जीवन जिसकी कोई कल्पना कर सकता है, एक मध्यकालीन किले के साथ मिलता जुलता है, मुश्किल से ही कोई चीज, वर्तमान से सम्बन्धित हो सकती है। शाम को भण्डारी की निगरानी में, सारे दरवाजे बंद कर दिये जाते हैं, जिसके बाद गश्त लगाने वाले, पूरे महल में ये देखने के लिए जाते हैं कि सारी चीजें ठीकठाक हैं। भारी खामोशी के बीच, उनकी जोर से चीखने की आवाजें, और गलियारों में से घंटी बजाने की आवाजें ही, केवल मात्र आवाजें होती हैं। रात्रियॉ लम्बी और शान्त होती हैं। हर आदमी जल्दी सो जाता है। शहर के भगदड़ पूर्ण सामाजिक जीवन के विपरीत, यहॉ कोई पार्टियॉ या मनोरंजन नहीं होते। पवित्र मृत समाधि में से मृत्यु का एक धुंधला और पवित्र, वातावरण निकलता है, जो पूरे महल को एक बड़ी समाधि के रूप में

प्रस्तुत करता है। मैं अच्छी तरह समझ सका कि युवा शासक, जब वह अपने ग्रीष्मकालीन उद्यानों को जाता था, प्रसन्न होता था। मां–बाप या किसी साथी खिलाड़ी के साथ के बिना, पोटाला में एक उदास जीवन गुजारता हुआ एक अकेला बच्चा। वह केवल अपने भाई लोबसांग सामटेन, जो अपने मातापिता से शुभकामनायें लाता था और पूरे शहर की खबरें उसे बताता था, की विरली यात्राओं के बीच, कुछ अन्यमनस्कता पा सकता था।

पूरे देश में, केवल दलाईलामा के पास, एक हाथी है, जो उसे नेपाल के महाराजा, जिसके देश में देवीय राजा के अनेक धार्मिक अनुयायी हैं, के द्वारा भेंट में दिया गया था। अनेक नेपाली, तिब्बत के मठों में प्रवेश करते हैं और अपने जीवनों को धर्म को समर्पित करते हैं। मठों में, वे अलग प्रकार का समाज बनाते हैं और अच्छे शिष्यों के रूप में सम्मानित किये जाते हैं। दलाईलामा के प्रति अपने सम्मान प्रदर्शन के रूप में, महाराजा ने मूलतः, दो हाथी दिये थे परंतु उनमें से एक, हिमालय की यात्रा में बच नहीं सका, यद्यपि ल्हासा की सात सौ मील लम्बी सड़क पर से पत्थर, सावधानीपूर्वक साफ कर दिये गए थे। रुकने वाले स्थानों पर, इन पशुओं के लिए, अनेक अस्तबल बनाये गये थे। हर एक के महान संतोष के लिए, कम से कम इनमें से एक तो, राजधानी में अच्छी हालत में पहुॅचा। किसी ने भी इतने भारी भरकम जानवर को कभी नहीं देखा था। उन्होंने इसे ''लांगशेन रिम्पोचे (Langchen Rimpoche)'' कहा। उसे अपने लिए पोटाला के उत्तरी भाग में, एक घर मिला और पवित्र कसीदाकारी के द्वारा बंदनवार बांधा गया। अक्सर, वह जलूसों में भाग लेता था। सबार, जिनके घोड़े, ऐसे बड़े जीव के लिए अभ्यस्त नहीं थे, उसे विस्तृत स्थान देते थे।

नव वर्ष के उत्सवों की अवधि के दौरान, दलाईलामा के पिता गुजर गये। उन्हें जिंदा रखने के लिए, समझ में आने वाली हर चीज की गई। भिक्षुओं और चिकित्सकों ने हर प्रकार के इलाज का प्रयास किया। उन्होंने एक गुड़िया भी बनाई थी, जिसमें उन्होंने बीमार की बीमारी को बंद किया था और उसे अत्यधिक पवित्रता के साथ, नदी के किनारे जला दिया था। इस सबका कोई मतलब नहीं था। मेरे चिंतन के ढंग के अनुसार, उन्होंने किसी अंग्रेजी डॉक्टर को बुलाकर, कुछ अच्छा किया होता परंत वास्तव में, दलाईलामा का परिवार, हमेशा ही परम्परा का आदर्श होता था और विपत्ति के समयों में, उसको अपने पारम्परिक अभ्यासों से भटकना नहीं चाहिए था।

लाश को सामान्य तरीके से, नगर के बाहर, एक प्रतिष्ठित स्थान पर ले जाया गया, जहॉ उसे तोड़ दिया गया और समाप्त करने के लिए पक्षियों को दे दिया गया। तिब्बती लोग, हमारे विश्व की तरह से, मृतकों के लिए शोक नहीं करते हैं। जाने वाले के प्रति, पुनर्जन्म की उम्मीद के साथ, दुःख से निजात पाई जाती है और बौद्ध लोगों के लिए मृत्यु कोई आतंक नहीं है। उनन्चास दिनों तक, घी के दिये जला कर रखे गये, जिसके बाद मृतक के घर के अंदर प्रार्थना सभा होती है और ये कहानी का अंत होता है। विधुर या विधवा, थोड़े समय बाद, दुबारा विवाह कर सकते हैं, और जीवन फिर से अपने रास्ते पर चलने लगता है।

1947 में, ल्हासा में एक छोटा गृहयुद्ध हुआ, पहले का राज्याधिकारी, रेटिंग रिम्पोचे (Reting Rimpoche), जिसने स्वेच्छा से अपने अधिकार को छोड़ दिया था, एक बार फिर से, शक्ति पाने के लिए महत्वाकांक्षी दिखाई दिया। जनता और अधिकारियों के बीच, रेटिंग के अनेक अनुयायी थे, जिन्होंने उसके उत्तराधिकारी के प्रति बुरी खलबली महसूस की। वे रेंटिंग को वापस अपने स्थान पर देखना चाहते थे। उन्होंने कार्यवाही करने का निर्णय किया। क्रांति, आधुनिक बम के तरीके से प्रभाव में लाई जानी थी। ये एक अज्ञात प्रशंसक द्वारा एक उच्च मठीय अधिकारी की भेंट के रूप में भेजा गया परंतु इससे पहले कि पार्सल राज्याधिकारी तक पहुॅचता, अंदरूनी मशीन फट गई। सौभाग्यवश, कोई मरा नहीं। इस असफल हिंसात्मक कदम के बाद, षडयंत्र खुल गया। ऊर्जावान तागत्रा रिम्पोचे (Tagtra Rimpoche) ने तेजी से कार्य और निर्णय किये। मंत्रियों द्वारा नेतृत्व की गई एक छोटी पैदल सेना, रेटिंग के मठ को चली और पहले वाले राज्याधिकारी को गिरफ्तार कर लिया गया। सेना के मठ के भिक्षुओं ने, इस कार्यवाही के विरोध में क्रांति की, और शहर में भगदड़ टूट पड़ी। व्यापारियों ने अपनी दुकानों को नाकाबंदी करके बंद कर दिया और सुरक्षा के लिए अपने सामानों को बाहर ले गये। नेपालियों ने अपने सभी कीमती सामानों को ले जाते हुए, अपने दूतावास में शरण ली। भद्रपुरुषों ने अपने–अपने घरों के दरवाजे बंद कर लिये और अपने नौकरों को हथियार दे दिये। पूरा शहर, एक चौकसी की अवस्था में था।

आउफस्नाइटर ने, टुकड़ियों को रेटिंग की तरफ जाते हुए देख लिया था और वह तेज गति से शहर में अपने देहाती घर की तरफ आया, जहॉ उसने और मैंने, त्सारोंग के भवन के बचाव की व्यवस्था की। लोग, इस डर की तुलना में कि सेरा के भिक्षु, जो संख्या में कई हजार हैं, ल्हासा पर टूट पड़ेंगे और शहर को नष्ट कर देंगे, राजनैतिक विपत्ति से कम घिरे हुए थे और वहीं दूसरे लोग थे, जिनको सेना, जो कुछ सीमा तक आधुनिक

हथियारों से सुसज्जित थी, में कोई विश्वास नहीं था। ल्हासा के इतिहास में सैनिक क्रांतियॉ अज्ञात नहीं थीं।

कैदी के रूप में, रेटिंग के पहॅुचने की, उत्तेजना के साथ प्रतीक्षा थी, परंतु इस बीच उसे गुप्त रूप से पोटाला को ले जाया गया। भिक्षु, जिन्होंने उसको मुक्त कराने की योजना बनाई थी, इस क्रिया से धोखे में पड़ गये, परंतु, वास्तव में, उस क्षण से ही, जबकि उनका नेता गिरफ्तार कर लिया गया था, उनका उद्देश्य नष्ट हो गया था। अपनी सनक में मजबूत, उन्होंने समर्पण करने से मना कर दिया और शीघ्र ही अंधाधुंध गोलीबारी शुरू हो गई। ये तब तक नहीं हुआ था, जब तक कि सरकार ने शहर और सेरा के मठ के ऊपर, छोटी तोप से बमबारी की और कुछ घरों को गिरा ड़ाला ताकि, प्रतिरोध समाप्त हो जाये। सेना, भिक्षुओं को काबू में करने में सफल हुई, और राजधानी में शांति वापस लौटी। हफ्तों तक अधिकारीगण, दोषियों का न्याय करने में व्यस्त रहे, और अनेक गम्भीर शारीरिक दण्ड दिये गये।

यद्यपि शहर में गोलियॉ अभी भी सनसना रही थीं, मरे हुए विद्रोही भूतपूर्व राज्याधिकारी की खबर, जनता के बीच, जंगली आग की तरह फैली। उसकी मृत्यु के ढंग के सम्बन्ध में फुसफुसाहट भरी अफवाहें आसपास छा गईं। अनेक लोगों ने सोचा कि वह राजनैतिक हत्या का शिकार हुआ, परंतु ज्यादातर लोगों का विश्वास था कि उसने एकाग्रता के भार और अपनी अनमनीय (inflexible) इच्छाशक्ति के कारण, अपने आपको, मरने की औपचारिकता के बिना ही, अगले विश्व में प्रक्षिप्त किया था। शीघ्र ही शहर, अचानक उससे सम्बन्धित चमत्कारों और अतिमानवीय शक्तियों, जो उसके पास थीं, की अविश्वसनीय कहानियों से भर गया। एक अवसर पर, जब किसी तीर्थयात्री के खाना पकाने के मिट्टी के बर्तन उबल रहे थे, ऐसा कहा जाता है कि उसने इसे अपने हाथ से, बगलों को अपने हाथ से चोटी के ऊपर खींचते हुए, ठीक वैसे ही, मानो कि मिट्टी उतनी ही मुलायम और प्लास्टिक की तरह नमनीय हो, बंद कर दिया।

सरकार ने इन अफवाहों का खण्डन और मंडन करने से मना कर दिया। शायद, कुछ लोग जानते थे कि वास्तव में क्या हुआ था। भूतपूर्व राज्याधिकारी ने, अपने पद पर रहते हुए, अपने अनेक दुश्मन बना लिये थे। एक अवसर पर, उसने एक मंत्री को पैदा किया, जो उसकी ऑखों को बाहर निकालने के लिए, विद्रोह की योजना बना रहा था। अब उसे इस अपराध के लिए भुगतान करना पड़ा। जैसा कि सामान्यतः राजनैतिक परिवर्तनों में होता है, भोली जनता को, अक्सर दूसरों के दोषों के लिए दण्ड भुगतना पड़ता है। रेटिंग के भूतपूर्व समर्थकों को अपने पदों से बर्खास्त कर दिया गया। उसकी पार्टी के एक प्रमुख व्यक्ति ने, वास्तव में, स्वयं को मार ड़ाला। आत्महत्या का, यह एक मात्र मामला था, जो मैंने अपने तिब्बत प्रवास के दौरान सुना।

सभी दंडित व्यक्तियों को रखने के लिए, जेल में काफी कमरे नहीं थे, इसलिए भद्रपुरुषों को, उन्हें अपनी हिरासत में रखने की जिम्मेदारी लेनी पड़ी। परिणामस्वरूप, हर घर में, जंजीरों में बंधा हुआ एक दोषी, जिसकी गर्दन में लकड़ी की एक तिखटी पड़ी हुई हो, मिल जाता था। ये तब तक नहीं हुआ, जब तक कि दलाईलामा ने आधिकारिकरूप से, एक शासक के अधिकार अर्जित किये और राजनैतिक लोगों और सामान्य कानून तोड़ने वालों को, क्षमादान दिया गया। सेरा के अधिकांश भिक्षु, चीन भाग गये थे। सामान्यतः ऐसा हुआ कि जब भी तिब्बत में उठाव हुआ, चीनियों ने उसमें दखल दिया। विद्रोहियों की सभी सम्पत्ति, सरकार के द्वारा जप्त कर ली गई और सार्वजनिक नीलामी के द्वारा बेच दी गई। रेटिंग रिम्पोचे के घर और ठिकाने गिरा दिये गये, और उसके फलों के सुंदर वृक्ष, दूसरे बागों में लगा दिये गये। सैनिकों के द्वारा मठ को पूरी तरह से छान ड़ाला गया, और बाद के अनेक सप्ताहों तक, स्वर्ण कप, कसीदाकारी, और दूसरी मूल्यवान चीजें, बाजार में अस्तव्यस्त होती रहीं। रेटिंग की सम्पत्ति की विक्री से, खजाने में दसियों लाख रुपये प्राप्त हुए। प्रभावितों में अंग्रेजी, ऊनी सामानों की सैंकड़ों गाठें थीं और रेशम और कसीदाकारी के आठ सौ परिधान थे। ये प्रदर्शित करता है कि तिब्बत में, कोई भी, कितना भी धनी हो सकता है। रेटिंग जनता का आदमी था, जिसके पीछे कोई आधार नहीं था। उसका भविष्य तब शुरू हुआ, जब वह लड़का था और उसे एक अवतार के रूप में पहचाना गया था।

शासन में नियुक्ति

तिब्बती वर्ष के चौथे महीने में, बुद्ध के जन्म और मृत्यु के स्मृति समारोहों के उत्सवों की धार्मिक अवधि में, विप्लव की स्मृति, धीमेधीमे मिटती गई। बसन्तान्त में, हमें सरकार के द्वारा, शहर का नया नक्शा बनाने के लिए, आमंत्रित किया गया। आउफस्नाइटर ने अपने कार्य को रोक दिया, और हमने सर्वेक्षण करना प्रारम्भ किया। शहर की, कभी कोई ठीक योजना नहीं बनी थी। पिछली शताब्दी में, भारत के गुप्तचर, अपने साथ कुछ कच्चे नक्शे लाये थे परंतु ये याददाश्त से बनाये गये थे और एकदम गलत थे। अब हम त्सारोंग के थियोडोलाइट (theodolite) का उपयोग करने में सक्षम थे और हम, नापने वाली अपनी जरियों (chains) के साथ, पवित्र शहर के सभी हिस्सों में गये। हम केवल जल्दी सुबह (early morning) में ही काम कर सकते थे क्योंकि जैसे ही गलियॉ भरनी शुरू होतीं, हमको उत्सवी लोगों की भीड़ के द्वारा घेर लिया जाता। चूँकि हम लोगों को अपने से दूर नहीं रख सकते थे, सरकार के द्वारा हमें पुलिस के दो सिपाही दिये गये थे। परंतु फिर भी, हमें परेशानियॉ थीं। वास्तव में, राहगीर आउफस्नाइटर के सर्वेक्षण कॉच में से गलत सिरे से, देखने में दिलचस्पी रखते थे, और हमारे कामकाज बुरी तरह प्रभावित होते थे। सुबह की कड़कड़ाती सर्दी में, गन्दी गलियों में हो कर पैर घसीट कर चलना भी आनन्ददायक नहीं था और अपने सर्वेक्षण के लिए सामग्री जमा करने के लिए, हमें पूरी सर्दियों की आवश्यकता थी। हमें छतों पर जाना पड़ता था, ताकि हम विभिन्न खण्डों में बने हुए घरों को चिन्हित करने में सफल हो सकें, और मुझे, मकान मालिकों के एक हजार से अधिक नाम इकट्ठे करने थे और वह भी तिब्बती लिपि में। जब दलाईलामा और सभी महत्वपूर्ण सरकारी कार्यालयों के लिए, प्रतियॉ तैयार हो गईं, खेलों के लिए, एक नया प्रतीक्षागृह प्रारम्भ किया गया। लोगों ने सीखा कि नक्शे को कैसे पढ़ा जाये और उसमें, अपने आप अपना घर पहचान कर आनंदित हुए।

इस समय सरकार का विचार, एक आधुनिक नाली तंत्र और बिजली का तंत्र लगाने का था, जिसके लिये वे आउफस्नाइटर और मुझे काम पर लगाना चाहते थे। हम दोनों में से किसी ने भी, इस विषय में तकनीकें नहीं सीखी थीं, परंतु मेरा सहयोगी गणित में बहुत अच्छा ज्ञान रखता था, जो उसने कृषि अभियांत्रिकी के अध्ययन में प्राप्त किया था। वास्तव में, जब कभी भी हम शक में होते, हमको उचित पाठ्य पुस्तकों का सहारा लेना पड़ता। आउफस्नाइटर को मासिक वेतन, पहले से ही रुपयों में दिया जा रहा था, और वैतनिक अधिकारी के रूप में, मुझे अपनी नियुक्ति, 1948 में प्राप्त हुई। मैंने अपना नियुक्ति पत्र संभाल कर रखा है और इसके ऊपर, अभी भी, मुझे गर्व है।

दलाईलामा से सुनवाई के कुछ महीनों बाद, मुझे रात के मध्य में नोरबूलिंगा महल में बुलाया गया और सूचित किया गया कि नदी में बढ़ता हुआ पानी, ग्रीष्मकालीन महल के लिए खतरा था। मानसून की वर्षा ने, नदी की मंद प्रवाहित धारा को, कई स्थानों पर एक मील से भी अधिक चौड़ी, दौड़ती हुई नदी की मनहूस चाल के रूप में परिवर्तित कर दिया था। जब मैं मौके पर पहुँचा, मैंने पुराने किनारों को टूटने के कगार पर पाया। मूसलाधार वर्षा और लालटेनों की धुंधली रोशनी में, मेरे निर्देशन में, एक नया तटबंध बनाने के लिए, रक्षक काम पर लगाये गये। हमने, कुछ समय के लिए, इसको बिना टूटे हुए बचाये रखने के लिए, पुराने किनारे को मजबूत करने की व्यवस्था की और अगले दिन, मैं जूट के सारे बोरे, जो बाजार में मिले, लाया और उन्हें मिट्टी और दूब की घास से भरवाया। पॉच सौ सैनिक और कुली, उच्चदबाब में काम करते रहे, और हम पुराना बांध टूटने से पहले, नई सीमाओं को खड़ा करने में सफल हुए।

उसी समय, गाडोंग से मौसम के भविष्यवक्ता को बुलाया गया, और बाद के दिनों में वह, महल के मैदान पर घरों में से एक में, मेरा पड़ोसी था। हम दोनों का एक ही उद्देश्य था–बाढ़ को नियंत्रित करना। सौभाग्य ये था कि, हमको पूरी तरह से भविष्यवक्ता के ऊपर निर्भर नहीं रहना था और हमारे पास, काम पर, एक हजार हाथों का एक वैकल्पिक बल था। जब हम मिट्टी के अंतिम बेलचे भर कर बांध पर फेंक रहे थे, भविष्यवक्ता किनारे पर लंगड़ा कर चला और उसके अपने नाच को पूरा किया। उसी दिन, बरसात रुक गई, बाढ़ उतर गई, और हम दोनों को ही, दलाईलामा के द्वारा सराहना प्राप्त हुई।

मुझे बाद में पूछा गया कि क्या मैं बाढ़ से, जो हर साल ग्रीष्मकालीन महल को खतरे में ड़ालती है, उस बांध को बचाने के लिये, कुछ स्थाई व्यवस्था कर सकता हूँ। चूँकि मैं आउफस्नाइटर की सहायता से आत्मविश्वास

महसूस कर रहा था कि मैं बाढ़ के पानी को नियंत्रित करने के लिए, कुछ जरिया निकाल सकता हूँ, मैंने इच्छा सहित स्वीकृति दे दी। मैं जानता था कि तिब्बती, हमेशा अपने तटबंधों को लांबिक दीवारों के द्वारा बनाते हैं और महसूस किया कि यही कारण था कि वह उसे आसानी से तोड़ देती है।

हमने 1948 के बसन्त में काम प्रारम्भ किया, और इसे मानसून के पहले पूरा करना था। मुझे पॉच सौ सैनिकों और एक हजार कुलियों का कार्यबल दिया गया था। तिब्बत का कोई भी ठेकेदार, कभी भी इतने अधिक हाथों के साथ नहीं था। मैंने एक और तरीके के ऊपर जोर दिया और सरकार को समझाया कि यदि लोगों को जबरिया मजदूरी पर न लगाया जाये, काम काफी तेजी से पूरा किया जा सकता है। इसलिए हर आदमी को, उसका वेतन रोजाना प्राप्त होता था, और काम पर काफी अधिक हॅसी होती थी। वास्तव में, कोई तिब्बती लोगों की उत्पादकता की तुलना, यूरोपियन लोगों के साथ, नहीं कर सकता। मूल लोगों की शारीरिक शक्ति, हमारे कामगारों की तुलना में काफी कमजोर थी। जब मैं अधीरता के साथ फावड़े को उठाता और उन्हें दिखाता कि कैसे खोदा जाता है, वे आश्चर्य के साथ मुझे देखते थे। वहॉ काफी अवरोध और विराम भी हुए। यदि किसी को किसी फावड़े के ऊपर, कोई कीड़ा मिल जाता, उसके ऊपर चीख पुकार होती। मिट्टी एक बगल से फैंकी जाती और प्राणियों को सुरक्षित स्थानों पर रखा जाता।

लागों की कम उत्पादकता, उनकी अपर्याप्त खुराक के कारण हो सकती थी। गरीब लोग, सामान्यतः त्सम्पा, मक्खन वाली चाय, और कुछ शिमला मिर्चों के साथ कुछ मूलियों पर जिंदा रहते थे। वे पूरे दिन मक्खन वाली चाय पीते थे, काम पर :हर आदमी को अपना हिस्सा मिलता था, और पेय को दोपहर में बांटा जाता था।

मेरे सैनिकों और कुलियों के अतिरिक्त, मेरे पास याक की खाल की चालीस नावों का एक काफिला था। नाविक–जो जानवरों की खालों से संबद्ध होते हैं, और परिणामस्वरूप, बौद्धधर्म के नियमों के साथ, विवाद में चमारों की तरह, द्वितीय श्रेणी के नागरिक माने जाते हैं। जिस तरीके से उनके साथ व्यवहार किया जाता है, उसका एक उदाहरण मेरी याद में बचा हुआ है। दलाईलामाओं में से एक, साम्ये के जाने माने मठ की ओर, अपने रास्ते पर थे, वे एक दर्रे में से गुजर चुके थे, जिसमें से नाविक, नदी की तरफ अपने रास्ते पर, हमेशा जाया करते थे। दर्रा देवीय राजा के गुजरने से शुद्ध हो गया, और उस समय के बाद से आगे, किसी नाविक को, अपनी नावों के साथ, उसका उपयोग करने की इजाजत नहीं दी गई और उनको नावों को अपनी पीठ पर लादे हुए, संगत समय और ऊर्जा के अपव्यय के साथ, एक कठिन दर्रे पर, काफी ऊॅचाई पर चढ़ना पड़ता था। नावों का बजन दो सौ पाउंड से अधिक होता था और दर्रे हमेशा सोलह हजार फुट से ऊॅचे होते हैं। इसने मुझे, तिब्बत में लोगों के दैनिक जीवन के ऊपर, धर्म की अत्यधिक शक्ति का अनुमान दिया। अपनी पीठों पर लदी हुई अपनी नावों के साथ, पैदल चलते हुए लोगों को देखना, मुझे हमेशा दुःखी करता था। वे धीमे और सधे हुए कदमों से, किनारे–किनारे नदी के चढ़ाव की ओर जाते थे; वे कभी भी, बहाव के विपरीत नाव को नहीं खे सकते थे। हर नाविक के साथ, अपनी पीठ पर लदान लादे हुए, एक भेड़ होती थी। कुत्ते की तरह भलीभांति प्रशिक्षित भेड़ को, ले जाये जाने की आवश्यकता नहीं होती थी, और जब उसका मालिक पानी में जाता, दुबारा वह स्वयं ही नाव में कूद जाती थी।

मेरे बांध को बनाने में चालीस नावें, जिनको खदान से ग्रेनाइट लाना पड़ा, जो हमारे स्थान से नदी के चढ़ाव की तरफ, ऊपर पड़ा था, उपयोग में लाई गईं। नावों के लिए, ये कोई आसान काम नहीं था; तख्तों, पत्थरों से उन्हें टूटने से बचाने के लिए, उनके किनारों को मजबूत बनाना पड़ा। नाविक, अच्छे तंदुरूस्त शरीर के थे और उनकी तनख्वाह किसी दूसरे कामगार की तुलना में अधिक थी। मैंने ध्यान दिया कि वे द्वितीय श्रेणी के अन्य नागरिकों की तुलना में, उतने नम्र नहीं थे। उन्होंने अपना खुद का एक संघ बना लिया था और उसमें शामिल होने पर उन्हें गर्व था।

एक सुखद अवसर ने, ट्रेडून के बोन्पो को निर्देशित किया कि वह मेरे सहयोगियों में से एक हो। उसका कर्तव्य था हर शाम को पगार बॉटना। हम एक दूसरे का अच्छा ध्यान रखते थे और अक्सर, उन समयों–मेरे लिए तत्कालीन, एक अति दुःखी! समय, जब हम ट्रेडून में थे, की बातें किया करते थे। आज मैं उसके ऊपर हॅस सकता था। जब हम उसे पहले मिले, बीस नौकरों के साथ, वह निरीक्षण की यात्रा पर था और उसने हमारे साथ मित्रता और सौहार्द्रता का व्यवहार किया। किसने सोचा होगा कि, एक दिन हम कंधे से कंधा मिला कर काम कर रहे होंगे और मैं कमोवेश उसका प्रमुख होऊॅगा ? मैं अक्सर ये महसूस नहीं कर सका कि हमारी पहली मुलाकात के बाद चार साल गुजर चुके थे। चार साल, जिनमें मैं आधा तिब्बती होता हुआ प्रतीत होता था। मैं अक्सर, अपने आपको, विशिष्ट तिब्बती मुद्राओं, जिनको मैं एक दिन में सौ बार देखता था और अवचेतन मन से उसकी नकल करता था,

को बनाते हुए, पकड़ लेता था। चूँकि मेरे काम ने, पवित्रतम के बाग को बचाने का काम किया था, मेरा प्रमुख सर्वोच्च श्रेणी के भिक्षुओं में से एक था। सरकार ने भी, मेरी गतिविधियों में बड़ी रुचि ली। कई मौकों पर, पूरा मंत्रिमण्डल अपने सचिवों और सेवकों के साथ सवार हो कर, काम को देखने के लिए आया और हमारी सफलताओं के ऊपर, हमें सम्मान के रुमाल और धन के उपहार दिये जाने के अतिरिक्त, हम दोनों का अभिनंदन किया। इन अवसरों पर कामगारों को भी धन दिया जाता था और आधे दिन की छुट्टी दी जाती थी।

मेरे तटबंध, वास्तव में, जून में तैयार हो चुके थे; ठीक समय पर, चूँकि तत्काल बाद ही पहली बाढ़ आई। उस साल नदी बहुत चढ़ी हुई थी, परंतु तटबंधों ने अपना काम किया। जमीन पर, जो बाढ़ में घिर जाया करती थी, हमने फर के पौधे लगाये, जिसकी ताजी हरी पत्तियॉ, ग्रीष्मकालीन बाग को अतिरिक्त सुंदरता प्रदान करती थीं।

जब मैं नगीना पार्क के तटबंधों को बचाने के लिए काम कर रहा था, मुझे अक्सर, उच्च मठीय अधिकारियों के द्वारा, रात्रि के शानदार खाने और रात को रुकने के लिये आमंत्रित किया जाता था। निश्चितरूप से, मैं पहला यूरोपियन था, जिसे पोटाला और ग्रीष्मकालीन बाग के निवास में, रुकने की इजाजत मिली। इस प्रकार मुझे, उस सुंदर जमीन और भव्य फलों के पेड़ों और शंकुवृक्षों (conifers), जो तिब्बत के सभी भागों से लाये गये थे, की प्रशंसा करने के अधिक मौके मिले। मालियों का एक समूह, फूलों और पेड़ों की देखभाल करता था और रास्तों को व्यवस्थित रखता था। उद्यान, ऊँची दीवार से घिरा है परंतु, ये तिब्बती परिधान पहनने वाले आगन्तुकों के लिए खुला हुआ है। अंगरक्षकों के दो आदमी, द्वार पर आने वालों का निरीक्षण करते है और देखते हैं कि कोई यूरोपियन टोप या जूते, उद्यान में अपना रास्ता न पा जायें। उद्यान की पार्टियों को छोड़ कर, जब मैं खाल का अस्तर लगे हैट के बजन से, पसीने से लद जाया करता था, उन्होंने कृपापूर्वक मुझे इस नियम से बरी कर दिया था। संतरी, चतुर्थक्रम और ऊपर के भद्रपुरुषों को, हथियारों की सशस्त्र सलामी देते हैं और मुझे भी सलामी दी जाती थी।

पार्क के बीच में, एक ऊँची पीली दीवार से घिरा हुआ, सजीव बुद्ध का अपना निजी उद्यान है। इसमें सैनिकों के द्वारा सख्ती से पहरा दिये जाते हुए, दो दरवाजे हैं, जिनमें से पवित्रतम के अलावा, केवल मठाध्यक्ष, जो उनका संरक्षक नियुक्त किया गया है, ही गुजर सकता है। मंत्रिमण्डल के मंत्री भी, उनमें से नहीं जा सकते। कोई पत्तियों के गुच्छों में से मंदिर की स्वर्णिम छतों का नजारा ले सकता है, परंतु मोरों का चीखना ही, एकमात्र आवाज है, जो बाहरी दुनियॉ को सुनाई देती है। कोई नहीं जानता कि अंदर के इस अभयारण्य में क्या होता है। अनेक तीर्थयात्री, इस दीवार को देखने आते हैं और एक रास्ते पर चलते हैं जो उन्हें उसके चारों ओर, दक्षिणावर्ती ले जाता है। थोड़े–थोड़े अंतराल के बाद यहॉ दीवार में बने हुए कुत्ता घर हैं, जिनके दैत्याकार, लम्बेलम्बे बालों वाले रहवासी, जब कोई एकदम करीब आ जाता है, भौंकते हैं। याक के बालों के कोड़े, कुत्तों को हमला करने से रोकते हैं, परंतु उनकी कर्कश गुर्राहट, इस शांतिमय विश्व में, एक प्रतिकूल ध्वनि प्रतीत होती है। बाद में, जब मुझे पीली दीवार के दरवाजों में हो कर, इस गुप्त उद्यान में प्रवेश का विशेषाधिकार मिला, मैंने इन भौंतरे दोस्तों के साथ, उनसे दोस्ती कर ली, जैसा कि कोई भी कर सकता था।

हर वर्ष, अंदर के उद्यान के बाहर की तरफ, पत्थर के बड़े मंच पर, नाटकीय कार्य सम्पन्न किये जाते हैं। नाटकों को देखने के लिए, जो सूर्योदय से सूर्यास्त तक सात दिन चलते हैं, लोगों की भारी भीड़ आती है। वे आदमियों के समूहों के द्वारा, नायकों के द्वारा पूरे किये जाते हैं और पूरी तरह से लगभग धार्मिक चरित्र के होते हैं। नाटककर्मी व्यावसायिक नहीं होते, वे जनता में से आते हैं और सभी प्रकार के व्यवसायों से जुड़े होते है। जब नाटक सप्ताह समाप्त हो जाता है, वे अपने निजी जीवन में वापस लौटते हैं। साल दर साल, वही नाटक किये जाते हैं। शब्द सस्वर प्रकार से कहे जाते हैं, और ढ़ोल और बांसुरियों का एक ऑरकेस्ट्रा (orchestra), नृत्य के लिए धुन प्रस्तुत करता है। कही जाने वाली लाइनें, केवल हास्य भागों में, होती हैं। सुंदर और मूल्यवान परिधान, शासन के होते हैं और ग्रीष्मकालीन महल में रखे जाते हैं।

कलाकारों के सात समूहों में से एक, ग्यूमालुंगमा (Gyumalungma), अपने व्यंगकाव्यों (parodies) के लिए प्रसिद्ध हैं। ये एकमात्र समूह था, जिसकी मैं वास्तव में, प्रशंसा कर सकता था। कोई भी उनके बेवाकपन पर, आश्चर्य को छोड़ कर कुछ नहीं सकता था। ये मजाक और लोगों के भलेपन का एक अच्छा सबूत है कि वे अपनी खुद की कमजोरियों और अपनी धार्मिक संस्थाओं का भी मजाक बना सकते हैं। इस प्रस्तुति को देने के लिए वे राज्य ज्योतिषी के नृत्य और सम्मोहन की तंद्रा आदि के साथ, इतनी दूरी तक जाते हैं, जो भवन को नीचे गिरा देता है। आदमी, भिक्षुणियों की तरह के कपड़े पहने हुए दिखाई देते हैं और परिहासपूर्ण ढंग से, औरतों के भीख

मांगने के उत्साह की नकल बनाते हैं। जब भिक्षु और भिक्षणियॉ, मंच पर एक दूसरे को छेड़ते हैं, कोई हॅसी को नहीं रोक सकता और दर्शकों में से कठोरतम मठाध्यक्षों के गालों पर ऑसू लुढ़क आते हैं।

दलाईलामा, पीली दीवार के पीछे के अंदर के बाग में से, अपने खेमे की पहली मंजिल से, एक खिड़की पर एक पर्दे के पीछे से, इन प्रस्तुतियों को देखते हैं। अधिकारी मंच के एक तरफ तम्बू में बैठते हैं। वे दोपहर में, पंक्तिबद्ध हो कर, दलाईलामा की रसोई में तैयार किये हुए अपने सार्वजनिक खाने की ओर जाते हुए, शासक की खिड़कियों से गुजरते हैं।

जब गर्मियों के बाग में नाटक सप्ताह समाप्त हो जाता है, कलाकारों को भद्रपुरुषों के घरों और मठों में नाटक करने के लिए आमंत्रित किया जाता है। इस विधि से नाटकीय मौसम एक महीने तक चलता है। प्रस्तुतियॉ जनसाधारण के द्वारा बाधित की जाती हैं और व्यवस्था बनाये रखने के लिए, अक्सर, पुलिस को हस्तक्षेप करना पड़ता है।

इस साल के दौरान, मेरी व्यक्तिगत परिस्थितियॉ, काफी हद तक सुधर गई थीं, मैं आत्मनिर्भर था और मैंने अपने लिए एक घर, जिसमें मैं स्वतंत्र जीवन जी सकूॅ, बनाने की सोची। मैं त्सारोंग, जिसने अपना घर हमारे लिये खोल दिया था और ल्हासा में हमारे पैर जमाने में मदद की थी, के प्रति अपने ऋणी होने को कभी नहीं भूल सका। चूॅकि मैं धन कमाने लगा था, मैंने उसे किराया दिया। हाल में ही, मुझे दूसरे प्रान्तों में स्थानान्तरित होने वाले अपने दोस्तों से, कुछ नौकरों के साथ, उनके घर और उद्यान, अस्थाईरूप से किराये पर देने के लिए, अनेक प्रस्ताव मिले।

मैंने अंतिमरूप से, विदेशमंत्री सरखांग के एक घर, जो तिब्बती विचारों के अनुसार, शहर की अत्याधुनिक इमारतों में से एक थी, का निर्णय किया। इसमें बडी–बड़ी दीवारें, और कॉच की छोटी खिड़कियों के पल्लों वाला एक पूरा सामना था, परंतु कमरे मेरी आवश्यकता से बहुत अधिक थे। इस समस्या का शीघ्र ही समाधान कर लिया गया, मैंने उनको, जिनकी मुझे आवश्यकता नहीं थी, बंद कर दिया, और दूसरों में रहा। मैंने उस कमरे को चुना, जिसमें, मेरे शयनकक्ष में एकदम सुबह की धूप आती थी। मेरे बिस्तर के बगल से मेरा रेडियो रखा था, और दीवार के ऊपर, मैंने आल्पाइन कलेण्डर से एक रंगीन चित्र चिपका दिया था। एक कलेण्डर, जो शायद, कैसे भी, स्विजरलैंण्ड की घड़ियों की खेप के साथ, ल्हासा में आ गया था। आलमारियॉ और खजाने चमकदार पेंट किये हुए और कढ़ाई किये हुए थे, जो कोई भी, किसी यूरोपियन किसान के घर में पा सकता है। सभी फर्श पत्थर के थे, और मेरा नौकर उनको, जब तक कि वे दर्पण की भांति चमकने न लगें, चमकाने में गर्व महसूस करता था। वह उनको चमकाने के लिए, मोम के साथ रगड़ा करता था और तब काम को आनंद के साथ जोड़ते हुए, ऊनी मौजों में कमरों में फिसलता था। हर कमरे में रंगीन कम्बल थे। ल्हासा में छतें अलग–अलग खम्भों पर खड़ी होती हैं, गलीचे सामान्यतः छोटे ही होते हैं। ल्हासा में प्रसिद्ध कालीन बुनने वाले भी हैं, जो भद्रपुरुषों के घर आते हैं और उसी स्थान पर, वांछित आकार और आकृति के कालीन बुनते हैं। वे लकड़ी के एक चौखटे को अपने सामने रखे हुए जमीन पर बैठते हैं और चटकीले रंगे गये, हाथ से कते हुए ऊन को, प्राचीन डिजायनों में गांठ लगाते हैं; ड्रेगन, अजगर, मोर, फूल, और अधिकांशतः सजावट के विभिन्न प्रकार, उनकी अभ्यस्त उंगलियों के नीचे उगते जाते हैं। ये गलीचे पीढ़ियों तक चलते हैं। ऊन अविश्वसनीयरूप से टिकाऊ होती है और भूटान से लायी गई छाल, हरे पिस्तों, और वानस्पतिक रसों से बनाये हुए रंग, युगों तक ताजे बने रहते हैं।

मेरे पास एक लिखने वाली मेज और एक बड़ा ड्राइंगबोर्ड, जो मेरे रहने के कमरे के लिए बना था, था। पुराने फर्नीचर की चीजों को सुधारने में स्थानीय बढ़ई बहुत चतुर होते हैं परंतु जब कभी नई चीज बनाने का मौका आता है वे दयनीयरूप से अपर्याप्त होते हैं। सभी कला और व्यवसायों में रचनात्मक सामर्थ्य की उपेक्षा की जाती है, और न तो स्कूलों में न ही निजी उद्योगों में प्रयोगों का प्रोत्साहन दिया जाता है।

मेरे रहने के कमरे में एक घरेलू वेदी थी, जिसे मेरे नौकर विशिष्ट समर्पण के साथ तैयार रखते थे। हर दिन, देवताओं के लिए ताजे पानी के सात कटोरे रखे जाते थे, और मक्खन के दीपक कभी भी बुझने नहीं दिये जाते थे। चूॅकि प्रतिमायें, शुद्ध सोने और नीलमों के आभूषण पहनती थीं, मैं हमेशा चोरों के भय में रहता था। सौभाग्यवश, मेरे नौकर बहुत विश्वसनीय थे, और इन सभी वर्षों में, मेरी कोई चीज, कभी नहीं खोई।

सभी दूसरे घरों की तरह से, मेरी छत पर, हर कोने में, प्रार्थना का ध्वज लगाने के लिए एक पेड़ था। मैंने इनमें से एक पर अपने रेडियो का एरियल लगाया। हर घर में, सुगन्ध जलाने के लिए एक अंगीठी और दूसरी सौभाग्य लाने वाली पूरक सामग्रियॉ होती हैं, और मैं विशिष्ट देखभाल किया करता था कि हर चीज ठीक तरीके

से रखी जाये और कोई भी राष्ट्रीय रिवाज तोड़ा या उपेक्षित न किया जाये।

मेरा घर शीघ्र ही एक वास्तविक घर हो गया, और काम से वापस लौट कर आना या मिलने जाना, ये हमेशा मेरे लिए महान आनन्द होता था। मेरा नौकर न्यीमा (Nyima), गर्म पानी और चाय के साथ मेरी प्रतीक्षा करता और हर चीज सुव्यवस्थित, शांत और सुखदायक थी। चूँकि तिब्बत में नौकर, बुलाये जाने की सीमा में रहने या बिना बताये घुस आने और चाय उंडेलने के आदी होते हैं, मुझे अपनी निजता को बनाये रखने में थोड़ा कष्ट था। न्यीमा ने मेरी इच्छाओं का सम्मान किया, परंतु उसने स्वयं को मेरे बहुत करीब जोड़ लिया और जब कभी भी, मैं रात में बाहर जाता, वह मेरे मेजबान के घर के दरवाजे पर, मेरी प्रतीक्षा किया करता था फिर भी, मैं उससे सोने जाने के लिए कहता। उसे डर था कि ज्यों ही मैं घर लौटूंगा, मुझ पर कोई टूट पड़ेगा और यही कारण था कि वह हमेशा एक रिवॉल्वर और एक तलवार के साथ आता था और अपने जीवन को, अपने मालिक के लिए न्यौछावर करने के लिए तैयार रहता था। मैं उसके समर्पण से नाराज नहीं हो सकता था।

उसके पत्नी और बच्चे घर में रहते थे और उसने मुझे, तिब्बतियों के अपने बच्चों के प्रति प्रेम का ताजा लक्ष्य पाठ सिखाया। यदि उनमें से एक बीमार पड़ता, न्यीमा, सबसे अच्छे लामा को उसके पलंग की बगल में लाने में किसी खर्चे को छोड़ता नहीं था। चूँकि मैं हमेशा खुशनुमा चेहरे को अपने आसपास देखना चाहता था, मैंने वह किया, जो मैं अपने नौकरों को अच्छे स्वास्थय में बनाये रखने के लिये कर सकता था। टीकाकरण और इलाज के लिए, मैं उन्हें भारतीय विदेश मिशन तक भेजने में सफल हुआ परंतु मैं हमेशा उनके पीछे रहता था चूँकि तिब्बती लोग, सामान्यतः बीमार पड़े व्यक्तियों के ऊपर ध्यान नहीं देते।

मेरे निजी नौकर के अतिरिक्त, जो लगभग पॉच पाउंड की मासिक पगार पाता था, सरकार ने मुझे एक हकरारा और एक साईस दिया था। चूंकि मैं नोरबूलिंगा पर काम कर रहा था, जब कभी मुझे आवश्यकता हो, मैं शाही अस्तबल में से एक घोड़े पर सवार होने के लिए अधिकृत था। ठीक से कहने के लिये, चूंकि अस्तबल का स्वामी ये देखने के लिए सावधान रहता था कि कोई भी घोड़ा अधिक काम न करे, मुझसे हर दिन एक नये घोड़े पर सवार होने की आशा की जाती थी। उससे अपना पद छीना जा सकता था, यदि उनमें से किसी की हालत खराब हो जाये। जैसे कि कोई अनुमान कर सकता है, मैंने लगातार परिवर्तन को असहमत होने योग्य पाया। घोड़े हमेशा बाहर, नोरबूलिंगा के घास के सुंदर मैदानों पर, घास चरते रहते थे और जब वे नगर की तंग गलियों और परिवहन के बीच आते, वे हर चीज पर, जो उन्हें दिखती, भड़क जाते थे। अंत में मैंने, इस परिवर्तन को केवल तीन घोड़ों तक सीमित करने, और पूरे सप्ताह तक एक ही घोड़ा, वही घोड़ा, खुद को चढ़ने देने के लिये मना लिया, ताकि वह और उसके सबार, एक दूसरे से परिचित हो सकें। मेरे घोड़ों की लगाम पीली–शाही रंग–की थी और जब मैं उनमें से किसी एक के ऊपर चढ़ता, सैद्धान्तिकरूप से, मैं मंत्रियों तक के लिए वर्जित पोटाला में या परिक्रमापथ के चारों ओर, चढ़ कर जाने के लिए अधिकृत था।

मेरा अस्तबल, रसोईघर, और नौकरों के क्वार्टर मेरे घर के दरवाजे के बगल में–एक ऊँची दीवार के द्वारा घेरे गये, एक बाग में स्थित थे। बाग बड़े आकार का था, और मैं उसमें फूलों और सब्जियों की अनेक क्यारियॉ लगा सकता था। वहॉ लॉन में, बेडमिंटन और लकड़ी की गेंद बल्ले के खेल के लिए जगह भी थी, और मैंने वहॉ एक पिंगपोंग की मेज भी लगा रखी थी। मैं एक छोटे ग्रीन हाउस में सब्जियॉ उगाता था। मेरे सभी अतिथियों को, मेरी क्यारियों की, जिनके ऊपर मुझे बहुत गर्व था, प्रशंसा करनी पड़ती थी।

श्री रिचार्डसन ने मुझे अपने अनुभवों का लाभ दिया, और मैंने अपनी सुबह और शाम, बागवानी में लगा दी, परंतु मेरे उद्योग ने मुझे शीघ्र ही पारितोषिक दिया। मैं अपने पहले साल में टमाटर, फूलगोभी, लेटूस (lettuce), और बंदगोभी उगा सका। गुणता को गंवाये बिना, हर चीज कैसे इतनी बड़ी उगी, ये सामान्य से अधिक था परंतु, स्पष्टीकरण, वास्तव में, सरल था। ये देखना आवश्यक था कि जड़ों को पर्याप्त नमी मिले। सूखी हवा और गर्म धूप, गर्म घर जैसा वातावरण प्रदान कर रही थी, इसमें हर चीज अधिकता से पोषित होती थी। चूँकि वहॉ कोई दबाब वाले नल नहीं हैं और कोई बागों में फुब्बारों का उपयोग नहीं कर सकता, पानी देने की समस्या उतनी आसान नहीं है। किसी को अपनी क्यारियॉ इस प्रकार लगानी पड़ती हैं कि पानी की नलियॉ, उनके बीच में हो कर गुजरें। मेरे पास बाग में दो नियमित महिला सहायक थीं। वे सभी निराई करती थीं और ये अच्छा काम था, चूंकि इस मिट्टी में घास–पतवार, उसी प्रकार फूल और फल भी, तेजी से उगती है और उद्योग के पारितोषिक महान होते हैं।

मैंने सत्तर वर्ग गज की एक क्यारी से, चार सौ पाउंड से ज्यादा टमाटर लिये, जिनमें से कुछ, आधे पाउंड

बजन के थे, दूसरी सब्जियॉ समान ढंग से बढ़ीं। यद्यपि गर्मियॉ छोटी होती हैं, मैं विश्वास नहीं करता कि वहॉ यूरोपियन सब्जियों में से किसी प्रकार की, पैदा हो सकती थीं, जो यहॉ सफल नहीं होतीं।

इस समय तक, हमने ल्हासा के शांति प्रिय शहर में भी, विश्व राजनीति की प्रतिध्वनि अनुभव करना शुरू कर दिया था। चीन की जल क्रान्ति ने अधिक चर्चा का परिदृश्य दिखाया और ये भय लगा कि ल्हासा के चीनी निवासियों के बीच, कष्ट बढ़ सकते हैं। ये दिखाने के लिए कि तिब्बत अपने आपको चीनी राजनीति से मुक्त समझता था, सरकार ने, चीनी मिनिस्टर को चले जाने का नोटिस देने के लिये एक दिन तय किया। लगभग सौ लोग इस निर्णय से, जिसके खिलाफ कोई अपील नहीं थी, प्रभावित होते थे।

तिब्बती अधिकारियों ने, विशेष कला के साथ काम किया। उन्होंने एक क्षण को चुना, जब चीनी रेडियो संचालक, अपने घर जाने के लिए टेनिस खेल रहा था और उसने अपने ट्रांसमिटिंग सेट (transmitting set) को अपने पास रख लिया था। जब उसने जाने के आदेश को सुना, जो उसके प्रमुख को प्राप्त हुआ था, वह इसे चीनी सरकार को नहीं भेज सका। शहर में, डाक और तार विभाग, एक पखबाड़े के लिये बंद थे, और विश्व ने सोचा कि तिब्बत, दूसरी जनक्रांति में था।

बहिष्कृत चीनी कूटनीतिकों से, अत्युत्तम सौहार्द्रता के साथ व्यवहार किया गया और उनको विदाई पार्टियों में बुलाया गया। उन्हें तिब्बती धन को, एक पसंदीदा दर पर, रुपयों में बदलने के लिए इजाजत दी गई और उन्हें भारतीय सीमा तक जाने के लिए यातायात का मुफ्त साधन दिया गया। वे ठीक से ये नहीं समझ पाये कि उनके साथ क्या हुआ था परंतु सभी को जाने का दुःख था। उनमें से अधिकतर, चीन या फारमोसा (ताईवान) को लौटे, कुछ सीधे पीकिंग को गये, जहॉ माओ–त्से–तुंग ने, पहले से ही, अपने शासन की पीठ स्थापित कर ली थी।

इस प्रकार चीन और तिब्बत के बीच, शताब्दी पुराना झगड़ा फिर फूट पड़ा। साम्यवादी चीन ने मंत्री और उसके स्टाफ के निकाले जाने को, एक अपमान के रूप में माना, निरपेक्षता, जो तिब्बती होना समझते थे, के संकेत के रूप में नहीं। ल्हासा में, पूरी तरह ये महसूस किया गया कि लाल चीन, तिब्बत की स्वतन्त्रता और तिब्बती क्षेत्र के लिए, एक गम्भीर खतरा उत्पन्न करेगा। लोगों ने, अपने राज्यज्योतिषी के कथनों का सन्दर्भ दिया और अनेक स्वाभाविक घटनाओं की ओर संकेत किया, जो कि उनके डर की पुष्टि करती हुई दिखती थीं। 1948 का बड़ा पुच्छल तारा (commet), एक अनहोने खतरे के रूप में समझा गया, और घरेलू जानवरों के भीतर डर की एक लहर, अशिष्ट अमंगल सूचक मानी गई। मैंने भी, डरा हुआ अनुभव किया, परंतु मेरी आशंका, शांत परिस्थिति के अनुमान के ऊपर आधारित थी। एशिया का भविष्य अंधकार में दिखाई दिया।

इस समय के करीब, सरकार ने, चार उच्च अधिकारियों को, एक विश्व यात्रा पर भेजने का निश्चय किया। इस मिशन के सदस्य, सावधानीपूर्वक, उनकी संस्कृति और प्रगतिशील विचारों के लिए चुने गये थे, चूँकि विश्व को ये दिखाना कि तिब्बत एक सभ्य देश था, वांछित था।

इस मिशन का नेता वित्त सचिव, शेकाब्कापा (Shekabpa) था और दूसरे सदस्य थे चांगखिम्पा (Changkhyimpa) नाम का एक भिक्षु; पांग्दात्सांग (Pangdatsang), एक धनी व्यापारी; जनरल सुरखांग, एक विदेशमंत्री का पुत्र। बाद के दो नाम वाले, थोड़ी अंग्रेजी बोल सकते थे और उन्हें पश्चिमी आदतों और रिवाजों का कुछ अनुमान था। सरकार ने देखा कि वे, सर्वोत्तम गुणता (quality) और बनाव (cut) के यूरोपियन सूट और ओवरकोटों में तैयार हैं; इसके अतिरिक्त, उन्होंने आधिकारिक स्वागत अवसरों पर पहनने के लिए, रेशम के भव्य परिधान, अपने साथ लिये क्योंकि उन्हें राष्ट्रीय शिष्टमण्डल के रूप में यात्रा करनी थी। वे पहले भारत गये, और उसके बाद वे चीन को उड़े। कुछ समय उस देश में रुकने के बाद, वे फिलिप्पाईंस (Philippines) और हवाई (Hawai) होते हुए, वायुयान से सेनफ्रांसिस्को गये। अमेरिका में वे अनेक स्थानों पर रुके और उन्होंने अनेक कारखानों, विशेष रूप से उनका, जो तिब्बती कच्चे मालों से काम करते थे, का निरीक्षण किया।

यूरोप में उनका कार्यक्रम वैसा ही था। उनकी पूरी यात्रा, लगभग दो सालों में समाप्त हुई और उनसे प्राप्त होने वाला हर एक पत्र, ल्हासा में उत्तेजना पैदा करता था। जब तक वे वापस लौटे, उन्हें तिब्बती ऊन के नये खरीददार मिल गये थे और वे अपने साथ, कृषि सम्बन्धी मशीनरी, करघे, गलीचे बनाने की मशीनें, और ऐसी ही अनेक सम्भावनाओं को लाये। उनके सामान में एक तोड़ी हुई जीप भी थी, जिसको तेरहवें दलाईलामा के ड्राइवर ने दुबारा जोड़ा। ये एक बार चलाई गई, तब इसे जनता की नजरों से हटा दिया गया। अनेक भद्रपुरुषों ने, ठीक तभी, मोटर वाहन खरीदने की इच्छा की होगी, परन्तु तब, समय पूर्णतः परिपक्व नहीं लगता था। अमरीका में मिशन ने सोने की सिलें खरीदीं, जो कड़ी सुरक्षा में ल्हासा में लायी गयीं।

जब चारों शिष्टगण (delegates) अपनी विश्व यात्रा का आनन्द ले रहे थे, एशिया में राजनैतिक परिस्थितियॉं, एकदम बदल चुकी थीं। भारत को स्वतन्त्रता मिल गई थी, साम्यवादियों (communists) ने पूरे चीन को जीत लिया था, परंतु इन सब घटनाओं का ल्हासा में बहुत थोड़ा प्रभाव पड़ा, जहॉं विश्व की राजनीति की तुलना में, दलाईलामा की, मठों के लिए पारम्परिक यात्रा, कहीं अधिक महत्वपूर्ण समझी जाती थी।

हर जवान दलाईलामा को, अपनी आधिकारिक वयस्कता प्राप्त करने से पहले, ड्रेबुंग और सेरा के मठों की यात्रा करनी होती है, जहॉं एक धार्मिक वाद–विवाद (शास्त्रार्थ) में सहभाग करते हुए, वह अपनी वयस्कता का प्रमाण देता है। यात्रा की तैयारियॉं, महीनों तक वार्तालाप का मुख्य विषय रहीं। पवित्रतम को, स्वाभाविकरूप से, भद्रपुरुषों और ड्रेबुंग के भिक्षुओं के साथ रुकना था, उन्हें और उनके ठाठबाट को ठहराने के लिये, एक विशिष्ट स्थान बनाया गया था।

जलूस ने, एक दिन, पॉच मील लम्बी सड़क पर, मठ की ओर, परम्परागत भव्य यात्रा शुरू की, जहॉं ड्रेबुंग के चार कुटिल मठाध्यक्षों ने, एक भड़कीले ठाठबाट के साथ, देवीय आगन्तुकों का स्वागत किया और उन्हें उनके महल की तरफ ले गये। उसी दिन, मैं भी ड्रेबुंग के लिये सवार हुआ, भिक्षुओं में से कुछ, जिनके साथ मैं दोस्ती बना चुका था, ने मुझे उत्सवों की अवधि में वहॉं रुकने के लिए आमंत्रित किया। मैंने हमेशा मठों के जीवन को, अंदर से जानना चाहा था। अब तक, दूसरे तीर्थयात्रियों की तरह, मैंने मंदिरों पर और बागों में केवल उड़ती हुई नजर का आनन्द लिया था। मेरे दोस्त मुझे, बहुस्तरीय नमूने के पत्थर वाले घरों में ले गये, जहॉं मुझे सादा निवास दिया गया। पेमा (Pema), एक भिक्षु, जो शीघ्र ही, उनकी अंतिम परीक्षा लेने वाला था और पहले से ही उसके अपने शिष्य थे, ने मठीय शहर में, मेरे पथप्रदर्शक के रूप में कार्य किया और मुझे संगठन की संरचना को स्पष्ट किया। इसके और किसी दूसरे धार्मिक संस्थान के बीच कोई तुलना नहीं की जा सकती थी। इन मठों के पीछे की दीवार घड़ियों की सुईयॉं, हजारों साल पीछे की गईं दिखाई देती थी। वहॉं यह दिखाने के लिए, कि कोई बीसवीं शताब्दी में रह रहा है, कुछ नहीं था। इमारत की मोटी भूरी दीवारें, एक युग पुराना प्रदर्शन करती थी, और सड़े हुए मक्खन और बिना नहाये भिक्षुओं की गंध, पत्थर के काम में गहराई तक अंदर घुस गई थी।

हर घर में पचास से साठ निवासी थे और ये छोटे छोटे प्रकोष्ठों में विभाजित था। हर तल पर एक रसोई घर और खाने के लिए ढेर सारा खाना है। औसत भिक्षु को, दुनियॉदारी का कोई दूसरा संतोष नहीं था, परंतु अधिक प्रखर (भिक्षु), अपने आपको उच्चस्थिति तक पहुँच जाने की सम्भावना को, अपने पुरजोर अध्ययन के पारितोषिक के रूप में मानते थे। उनके पास, उनके मक्खन के दीपकों और एक प्रतिमा, या हो सकता है, एक ताबीज के सिवाय, कोई निजी सम्पत्ति नहीं थी। मात्र एक साधारण पलंग, आराम की एक सुविधा थी। पूर्ण आज्ञाकारिता, एक नियम है। विद्यार्थी, बचपन में ही मठ में प्रवेश करते थे और तुरंत ही, उनके सिर पर लाल टोपी रख दी जाती थी, जो उसे अपनी पूरी जिंदगी पहननी होती थी। पहले पॉच वर्षों की अवधि में, उन्हें अपने शिक्षकों के लिए, अत्यन्त निम्नस्तरीय सेवायें देनी पड़ती थी। प्रखर (भिक्षु), पढ़ना और लिखना सीखते थे, और उनको परीक्षा में शामिल किया जाता था। वहॉं केवल कुछ ही, एक श्रेणी से दूसरी श्रेणी में सफल होते थे, और उनमें से अधिकांश, जीवन भर नौकरों की श्रेणी में बने रहते थे। कुछ चुनिंदा लोग, वे होते थे, जो बुद्ध की शिक्षाओं को पढ़ने के बाद, तीस या चालीस साल तक, अंतिम परीक्षा को पास कर सकें। तब वे धर्म के सर्वोच्च पदों पर नियुक्ति के पात्र होते थे। मठ, धार्मिक शिक्षाओं की उच्च पाठशालायें होती थीं, और धार्मिक संस्था का स्टाफ, शुद्ध रूप से उनके स्नातकों में से चुना जाता था। शासन के मठीय अधिकारी, त्सेद्रुंग के स्कूल में, अपनी शिक्षा प्राप्त करते थे।

मठीय स्कूलों की अंतिम परीक्षा, सार्वजनिकरूप से, वर्ष में एक बार, कैथेड्रल में ली जाती थी। पूरे तिब्बत में से बाईस विद्यार्थी, परीक्षा में सम्मिलित किये जाते थे। दलाईलामा के खुद के शिक्षकों के पवित्र निर्देशन में, एक कठोर मौखिक परीक्षा के बाद, सर्वश्रेष्ठ पॉच विद्यार्थी, सर्वोच्च मठीय स्तर पर पदोन्नत किये जाते थे। विद्यार्थी जो प्रथम आता था, एक साधु हो सकता था और अपने आपको धार्मिक अभ्यासों के लिए समर्पित कर सकता था, या वह एक दिन शासनाधिकारी होने की सम्भावनाओं के साथ, सार्वजनिक जीवन में प्रवेश कर सकता था।

ये विरले ही होता था, क्योंकि वह उच्चपद, सामान्यतः अवतारों के लिए सुरक्षित है, परंतु ऐसे मामले भी हैं, जिनमें जनता के आदमी, न तो भद्रपुरुष और न ही सजीव बुद्ध–को इस महान पद पर नियुक्त किया गया। पिछली बार 1990 में ऐसा तब हुआ, जब तेरहवें दलाईलामा, चीन के अतिक्रमण से पहले भारत भाग गये थे, और उनका प्रतिनिधित्व करने के लिए, एक प्रतिनिधि को नियुक्त करना पड़ा था।

ड्रेबुंग के दस हजार भिक्षु, समूहों में विभाजित हैं, उनमें से प्रत्येक का अपना मंदिर और उद्यान है। यहॉ वे अपने सुबह के समय को, सामाजिक, धार्मिक अभ्यासों में व्यतीत करते हैं, जिसके बाद, दोपहर बाद अपने अध्ययन के लिए अपने घरों में लौटते हुए, वे अपनी मक्खन वाली चाय और सूप लेते हैं। तथापि, टहलने और साधारण खेलों को खेलने के लिए, उन्हें काफी खाली समय मिलता है। उनको किसी पूरक खाद्य, जो वे अपने खुद के समाजों से प्राप्त करें, को पकाने की इजाजत भी दी जाती है। जहॉ तक सम्भव हो, समूहों को उनके मूल के स्थानों के अनुसार व्यवस्थित किया जाता है। कुछ निवासों में आपको केवल मंगोली, नेपाली या किसी विशिष्ट नगर, जैसे शिंगस्ते के विद्यार्थी ही मिलेंगे।

लामामठ में, वास्तव में, कोई भी जीवित प्राणी, मारा नहीं जा सकता, परंतु ठण्डा वातावरण, कुछ मांस खाने को आवश्यक बना देता है, इसलिए, समाज सूखे हुए याक के मांस की पूर्ति भेजता है और ये कहा जाना चाहिए, कि ताजा मांस अक्सर, केवल समीपवर्ती गॉव में ही मिल सकता है।

मुफ्त खाने और रहने के अतिरिक्त, भिक्षु, सरकारी अनुदानों और तीर्थयात्रियों के उपहारों से थोड़ा जेब खर्च भी प्राप्त करते हैं तथापि, जब एक भिक्षु, कुछ विशिष्ट उपहार प्राप्त करता है, सामान्यतः उसे भद्रपुरुषों या धनाढ्य व्यापारियों के बीच, संरक्षण मिल जाता है। तिब्बत का धर्मतन्त्र काफी धनी है, और यह अधिकांश जमीनों और बड़ी–बड़ी जागीरों का स्वामित्व धारण करता है, जिनका राजस्व, मठों के द्वारा भोगा जाता है। हर मठ का अपना एक व्यापारी होता है, जो किरानों के सामानों और दूसरी आवश्यकताओं को उपार्जित करता है। कोई मुश्किल से ही विश्वास करेगा कि मठों के संधारण और उनके निवासियों के लिए, कितनी बड़ी–बड़ी धनराशियॉ व्यय की जाती हैं। मैंने एक बार, एक भिक्षु को, उसके खातों के सम्बन्ध में सहायता की थी और ये पाया कि साल के पहले महीने की अवधि में, जिसे सभी भिक्षु ल्हासा में व्यतीत करते हैं, सरकार ने उनको, उनके जेबखर्च के अलावा, तीन टन चाय और पचास टन मक्खन, जिसकी कीमत लगभग चालीस हजार पाउंड होती है, दिया था।

सभी लाल टोपी वाली आकृतियॉ, सभ्य और विद्वत्जन नहीं होतीं। उनमें से अधिकांश, रूखे और कठोर लोग होते हैं, जिनके अनुशासन के लिए कोड़ा काफी नहीं है। उनमें से निकृष्टतम, डोबडोबों (Dob-Dobs) के अनाधिकृत परंतु सहनशील संगठन, या भिक्षुसेना से जुड़े होते हैं। वे भुजा में एक लाल बंधन पहनते हैं और काजल के साथ, अपने चेहरों को काला करते हैं। वे अपनी बैल्ट में एक बड़ी चाबी बांधते हैं, जिसका उपयोग वे ,एक सोटे या प्रक्षेपास्त्र (missile) के रूप में कर सकते हैं, और वे अक्सर, अपनी जेबों में, मोची का एक तेज चाकू रखते हैं। उनमें से अनेक, प्रसिद्ध दादा हैं। उनकी चालढ़ाल उत्तेजक है, और वे झगड़ा करने पर अमादा रहते हैं। समझदार लोग, उनको कुछ छूट दे देते हैं। चीनी साम्यवादियों के विरुद्ध युद्ध में, उन्होंने एक बटालियन बनाई थी, जिसने साहस के लिए अपनी साख बनाई थी। शांतिकाल में भी, उन्हें अपनी अतिरिक्त ऊर्जा से मुक्त होने के अवसर मिलते हैं, जैसे कि विभिन्न मठों के डोबडोब, हमेशा एक दूसरे के साथ, युद्ध में रहते हैं। ये कहना उचित होगा कि उनके मतभेद, हमेशा हिंसा के द्वारा ही नहीं सुलझते हैं और झगड़ों की उर्जा में से कुछ, प्रतिद्वंदी मठों के बीच, कुश्ती की प्रतियोगिता के उदास क्षणों में व्यय हो जाती है। सामान्यतः, अपने प्रतियोगियों की तुलना में, खिलाड़ियों को बड़ी संख्या में चुनते हुए, ड्रेबुंग विजेता होता है। एक पूर्व खेल प्रशिक्षक के रूप में, मैं अक्सर ड्रेबुंग जाया करता था, और उनके प्रशिक्षण में मेरे भाग लेने पर, भिक्षु हमेशा प्रसन्न होते थे। तिब्बत में, यही एकमात्र स्थान था, जहॉ मुझे खिलाड़ियों की आकृति और प्रशिक्षित मांसपेशियों वाले लोग मिले।

राज्य के तीन स्तम्भों, ड्रेबुंग, सेरा, और गाडेंन के महान मठ, तिब्बत के राजनैतिक जीवन में निर्णयात्मक भूमिका अदा करते हैं। उनके मठाध्यक्ष, आठ सरकारी अधिकारियों के साथ, राष्ट्रीय परिषद में अध्यक्षता करते हैं। इन धार्मिक नेताओं, जो स्वाभाविक रूप से, पहले और सबसे पहले, अपने मठों की सर्वोच्चता में रुचि रखते हैं, की सहमति के बिना कोई निर्णय नहीं लिया जाता। उनके हस्तक्षेप ने, अनेक प्रगतिशील विचारों को, लागू कराने से रोक दिया था। एक समय, उन्होंने आउफरस्नाइटर और मुझे, अपने शरीर में कांटों की तरह से देखा, परंतु जब उन्होंने देखा कि हमारी कोई राजनैतिक महत्वकांक्षा नहीं है और हमने अपने आपको, देश की परम्पराओं में मिला लिया था और उन कार्यों को पूरा किया था, जिससे वे भी लाभ प्राप्त करते थे, उन्होंने हमारे प्रति विरोध को वापस ले लिया।

जैसा मैंने कहा, मठ, धर्म तन्त्र की उच्च पाठशालायें हैं। उस कारण से, हर एक लामा–और तिब्बत में इस तरह के एक हजार से अधिक है–किसी मठ में शिक्षा प्राप्त किये हुए होने चाहिए। ये अवतार, तीर्थयात्रियों के लिये एक निश्चित आकर्षण हैं, जो उनसे मिलने और उनका आशीर्वाद प्राप्त करने के लिये, हजारों की संख्या में यात्रा

करने आते हैं।

दलाईलामा की ड्रेबुंग यात्रा के दौरान भी, ये अवतार, सभी उत्सवों में उपस्थित हुए और आगे के स्थानों में बैठे, देवताओं[17] का एक नियमित जमघट! इस बीच, मठ के छायादार बगीचों में, शासक और मठाध्यक्षों में से एक के बीच, हर दिन एक धार्मिक वाद विवाद रखा गया। ये लामामत के जीवन के अधिकांश अभिन्न कार्यों में से एक है और मुझे, इसको देखने की आज्ञा प्रदान किये जाने की, कभी तनिक भी आशा नहीं थी।

तथापि, एक दिन, मैं लोबसांग के साथ नाश्ता कर रहा था, उसने मुझे पूछा क्या मैं उसके साथ आना चाहूंगा। मैंने उसके द्वारा, अपनी तरफ से अनपेक्षित मुद्रा में दिये गये प्रस्ताव कि क्या मैं एक नाटक का, जिसे निश्चितरूप से, किसी भी दूसरे धर्म का व्यक्ति, नहीं देख सकता, साक्षी बनने में स्वयं को विशेषाधिकार प्राप्त महसूस किया। चूँकि मैं दलाईलामा के भाई के साथ था, किसी ने मुझे, उस निर्जन बाग में प्रवेश करने से रोकने का विचार नहीं किया। एक अजीब से दृश्य ने, अपने आपको प्रकट किया। जब एक ऊँचे स्थान से, दलाईलामा ने पवित्र याचिका की शिक्षा दी, उनमें से लगभग दो हजार भिक्षु, लाल टोपी वाले भिक्षुओं का जमावड़ा, पेड़ों के अंधेरे झुण्ड के सामने, बजरी के ऊपर, पालथी मार कर बैठे थे। मैंने उनकी लड़कपन की आवाज, पहली बार, स्पष्ट सुनी। वे बिना किसी स्तब्धता के और एक बड़े आदमी के आश्वासन के साथ बोले। ये उनका पहला सार्वजनिक प्रदर्शन था। चौदह साल का लड़का, वर्षों तक पढ़ता रहा था, और अब आलोचनाकारी श्रोताओं के बीच, उसके ज्ञान की परीक्षा होनी थी। पहला प्रदर्शन, भाग्य निर्णायक हो सकता था। ये सत्य है कि उन्हें कभी भी, अपने विहित जीवन को छोड़ने नहीं दिया जायेगा, परंतु उस दिन का उनका प्रदर्शन, ये दिखायेगा कि, वह भिक्षुओं के उपकरण मात्र के रूप में भाग्यशाली थे या उनके शासक के रूप में। उनके सभी पूर्ववर्ती, जैसे कि पाँचवे और तेरहवें दलाईलामा उतने सफल नहीं रहे थे। उनमें से अनेक, अपने जीवन भर, उन आदमियों की कठपुतली बन कर रहे, जिन्होंने उन्हें प्रशिक्षण दिया था, और देश का भाग्य, शासनाधिकारियों के द्वारा नियंत्रित किया गया। लोगों ने लड़के की बुद्धिमत्ता को चमत्कारपूर्ण बताया। ये कहा गया कि उसे किसी पुस्तक को कंठाग्र करने के लिए, केवल एक बार पढ़ना पड़ता है, और ये ज्ञात था कि उसने उस सब में रुचि ली थी, जो उसके देश में हुआ था और राष्ट्रीय परिषद के निर्णयों की आलोचना या सराहना किया करता था।

अब वादविवाद की बारी आई, मैंने देखा कि उसकी शक्तियाँ बढ़ाई गई नहीं थी। दलाईलामा बजरी पर बैठे, ताकि वह अपनी जन्म की सर्वोच्चता पर जोर नहीं ड़ाल सके, जबकि मठाध्यक्ष, जिसके मठ में निर्णय लिया जा रहा था, उसके सामने खड़ा हुआ और अपने प्रश्नों को पारम्परिक तरीकों से उसके सामने रखा। दलाईलामा ने ''खिजाने वाले (teasing)'' सभी प्रश्नों का भी, जो उसके सामने रखे गये, तत्परता और अच्छे हास्य के साथ, उत्तर दिया, और वह कभी भी, एक क्षण के लिए भी परेशान नहीं हुए।

थोड़े समय के बाद, प्रतिद्वंदियों ने अपने स्थान बदल लिये, और अब दलाईलामा ने, बैठे हुए मठाध्यक्ष से प्रश्न पूछे। कोई देख सकता था कि ये नौजवान बुद्ध की प्रखरता को दिखाने के लिए नाटक नहीं था; ये हाजिरजवाबी की एक वास्तविक प्रतियोगिता थी, जिसमें मठाध्यक्ष को, अपनी खुद की शान बचाये रखने की परेशानी में ड़ाल दिया था।

जब वादविवाद समाप्त हुआ, युवा दैवीय राजा, एक बार फिर, अपने स्वर्णिम सिंहासन पर बिराजमान हुआ और एकमात्र उपस्थित महिला, उनकी माँ, ने उसको सोने के कप में चाय दी। मानो कि अपने प्रदर्शन के प्रति, मेरे अनुमोदन से, अपने आपको आश्वासित करने के लिए, उसने चोरी से, मेरी तरफ एक मित्रवत् निगाह ड़ाली क्योंकि मेरी भूमिका, जो मैंने सुना और देखा था, और एक नम्र परिवार से ईश्वरीय बच्चे की उसके दिमाग की हाजिरजवाबी की असली प्रशंसा से, गम्भीर रूप से प्रभावित थी। उसने लगभग मेरा पीछा किया और स्वयं के अवतार होने में विश्वास करने के लिए जोर ड़ाला।

धार्मिक वादविवाद की समाप्ति पर, हर आदमी ने समूह में प्रार्थना की। ये गिरजाघर की एक साधारण प्रार्थना की तरह दिखाई दी और लम्बे समय तक चली। इसके बाद, अपने मठाध्यक्षों के द्वारा समर्थित दलाईलामा, महल में लौटे। मैंने दलाईलामा की बढ़ी हुई चाल के ऊपर, हमेशा आश्चर्य किया था और अब जाना कि ये रिवाज का एक भाग है और ये सभी विभिन्न गतिविधियाँ नियत हैं। ये बुद्ध की चालढ़ाल की नकल समझी जाती है, और

17 अनुवादक की टिप्पिणी : वैदिक धर्म के धर्मग्रन्थों में, हिमालय क्षेत्र को स्वर्ग अथवा देवलोक कहा जाता है, और वहाँ के वासी देवता कहे जाते हैं। प्राचीन साहित्य में मानवों और देवजनों के बीच मित्रता और सहयोग के अनेक उदाहरण मिलते हैं। राजा दशरथ ने एक बार युद्ध में देवताओं की सहायता की थी। अर्जुन ने कैलास क्षेत्र में तपस्या करके शिव से शस्त्र प्राप्त किये थे।

उसी समय दलाईलामा की गरिमा को बढ़ाने के लिए रचित की गई हैं।

मैंने इस अद्वितीय उत्सव के चित्र लेना अत्यधिक पसंद किया होता परंतु इसके लिये मना कर दिया गया, मैं अपने कैमरे को अपने साथ न लाकर भाग्यशाली था। अगले दिन, वहॉ एक बड़ी फुसफुसाहट थी, जब मेरे मित्र वांगडुला (मेरी इस सम्बन्ध में किसी जानकारी के बिना) ने, जब वह मठों में से एक के आसपास जा रहे थे, दलाईलामा के कुछ फोटो लेने का प्रयत्न किया। वह पहले से ही एक सफल फोटो ले चुका था, जब ईर्ष्यालु भिक्षु ने उनको टोका। वांगडुला को राज्याधिकारी के सचिव के सामने लाया गया और कड़ी जॉच पड़ताल की गई। उसके अपराध के लिए, दण्ड के रूप में, उसे पदावनत कर दिया गया और कहा गया कि वह सौभाग्यशाली था कि उसे मठीय क्रम से नहीं निकाला गया। इसके अतिरिक्त उसका कैमरा जप्त कर लिया गया–ये सब इस तथ्य के बावजूद कि, वह पॉचवीं श्रेणी का भद्रपुरुष और पहले शासनाधिकारी का भतीजा था। कुछ समय के लिए भिक्षुओं ने इस घटना के सिवाय, इस सम्बन्ध में कोई बात नहीं की, परंत वांगडुला ने स्वयं, इसे काफी शान्ति के साथ लिया। वह आधिकारिक जीवन की ऊॅच–नीच के सम्बन्ध में सब कुछ जानता था।

दलाईलामा के कार्यक्रम की अगली कड़ी थी, गोम्पे उत्से (Gompe Utse) पर्वत की चोटी–सत्रह हजार फुट से ऊॅची एक चोटी, जो ड्रेबुंग के मठ से भी ऊॅची है, पर प्रगति करना।

एक सुबह जल्दी, कम से कम एक हजार आदमियों और कई सैकड़े घोड़ों के साथ, घुड़सबारों का एक बड़ा काफिला यात्रा पर चला। पहला लक्ष्य था, पहाड़ के अधबीच में पड़ाव करना। दलाईलामा का घोड़ा, दो प्रमुख साईसों के द्वारा ले जाया जा रहा था। रास्ते में, आराम के अनेक स्थान तैयार किये गये थे। इनमें से हर एक को एक गलीचे बिछे हुए सिंहासन से सजाया गया था। शाम तक, काफिला अधबीच के पड़ाव पर पहुॅचा। सुरक्षित पहुॅच के धन्यवाद के रूप में सुगन्धियॉ जलाई गईं, चढ़ावा चढ़ाया गया और प्रार्थनायें गाई गईं। इस स्थान पर, तंबू गाड़े गये थे और यहॉ दल ने अपनी रात गुजारी। याकों को, अगले दिन की यात्रा के लिए तैयार किया गया, और भोर से पहले ही दलाईलामा और उसके उच्चअधिकारी लोग, चोटी पर चढ़ाई करने के लिए तैयार हुए। ड्रेबुंग के भिक्षुओं ने, इस तीर्थयात्रा के लिए, पहले से ही कुछ प्रकार के रास्ते तैयार कर लिये थे। जब दल चोटी पर पहुॅचा, प्रार्थनायें उच्चारी गईं और देवों पर चढ़ावे चढ़ाये गये।

नीचे घाटी में, लोग भीड़ बना कर उस क्षण की प्रतीक्षा कर रहे थे, जब चोटी पर से अगरबत्ती का धुंआ ऊपर उठेगा। वे जानते थे कि उनका शासक, जनता की भलाई के लिए प्रार्थना करने के लिए ऊपर था। मैं स्वयं एक दिन पहले चोटी पर चढ़ा था और अब उत्सव को, दूर के एक स्थान से देख रहा था। दूसरे दर्शकों में थे, कौओं और बकरियों के झुण्ड, जो त्सम्पा और मक्खन के चढ़ावों को सूंघते थे और टर्रटर्र करते हुए, अवशेषों पर एकाएक टूट पड़ने के लिए, प्रतीक्षा करते थे।

उन अधिकांश लोगों के लिए, जो दलाईलामा के साथ थे, ये पहला अवसर था कि वे पर्वत की चोटी पर थे। दल के नौजवान सदस्य, अनुभव में अधिक आनन्द लेते हुए दिखाई दिये और उन्होंने भिन्न भिन्न सुंदर कार्यक्रमों को, विस्तार के साथ एक दूसरे को बताया। इसके विपरीत, अपेक्षाकृत बूढ़े भिक्षु और अधिकारी, अधिकांशतः स्थूलकाय वरिष्ठों के पास, भूदृश्य की इस सुंदरता को देखने के लिए, कोई ऑखें नहीं थी परंतु वे थके हुए बैठे रहे, जबकि उनके नौकर उनके लिए व्यवस्थाऐं करते रहे।

उसी दिन, दल ने, पूरे रास्ते भर, मठ के लिए वापसी की सबारी की। कुछ दिन बाद, दलाईलामा ने सेरा मठ की यात्रा की और इसी प्रकार के सार्वजनिक शास्त्रार्थ में शामिल हुए। उनके सलाहकारों में, भिक्षुओं की अध्यतन जनक्रान्ति को दृष्टिगत रखते हुए, उनकी सेरा यात्रा के सम्बन्ध में, कुछ गलतफहमियॉ थीं, परंतु इस मठ में उनको दिया गया उद्यमपूर्ण स्वागत एक प्रमाण था, यदि किसी की आवश्यकता हो, कि वह सभी गुटों और दल के झगड़ों से ऊपर खड़ा हुआ था।

इस बीच मेरा जीवन, बिना किसी परेशानी के आगे चलता रहा। मैं सरकार की सेवा में था, जिसके लिए मैंने समाचारपत्रों से कई चीजें अनुवादित कीं, और यदा कदा छोटे बांध और सिंचाई के फाटक बनाये। मैं नियमित रूप से, आउफस्नाइटर से, शहर के बाहर, उसके नहर वाले काम के स्थल पर मिलता रहता था। अपनी खुदाई के दौरान, उसने कुछ सर्वाधिक दिलचस्प अन्वेषण किये थे। खुदाई में, कामगारों को बर्तनों के कुछ टुकड़े मिले थे, जिनको आउफस्नाइटर ने सावधानी से इकट्ठा किया और टुकड़े–टुकड़े जोड़ कर, एक साथ रखना शुरू किया। उसकी इस मरम्मत के परिणाम स्वरूप, उसके पास वास्तव में, सुंदर गुलदानों और आज के दिन बनाये जाने वाले जगों से अलग आकृति के जगों का संकलन हो गया था। इसके लिए, उसने उन कामगारों को इनाम दिया, जिन्हें

वह मिला था और उन्हें और अधिक सावधानी के साथ खोदने और जब कभी भी उन्हें खुदाई में कोई दिलचस्प चीज मिले, उसे तत्काल बुलाने के लिए आदेश दिया। वहॉ हर सप्ताह खोजें होती थीं। कब्रों के नर कंकालों को पूरी तरह से सुरक्षित रखते हुए, उनके बगल से रखे कटोरों और अर्द्धमूल्यवान पत्थरों को खोला गया। मेरे सहयोगी को, अपने फालतू समय में, एक नया व्यवसाय मिल गया था। उसने हजारों साल पुराने इस संग्रह को बनाने में बहुत परेशानियॉ उठाईं। उसे उनके ऊपर बहुत गर्व था और ऐसा करने का कारण भी था, चूँकि वह पूर्ववर्ती तिब्बती सभ्यता के प्रमाण जुटाने वाला पहला व्यक्ति था। लामाओं में से कोई भी, जिससे उसने सलाह की, उसकी खोजों पर प्रकाश नहीं ड़ाल सका, और इतिहास की पुरानी किताबों में, उस युग का, जिसमें तिब्बती लोग अपने मुर्दों को गाड़ा करते थे और उनकी कब्रों में उपहार रखते थे, कोई उल्लेख नहीं था।

आउफस्नाइटर अपनी खोजों को, भारत के पुरातत्व संग्रहालय के विवेकाधीन रखना चाहता था और जब चीनियों ने तिब्बत में अतिक्रमण किया, हमने संग्रहों को, सावधानी पूर्वक पैक करा कर, अपने साथ बाहर ले लिया।

उसके बहुत बाद नहीं, मुझे ल्हासा से बाहर जाने और देश के नये भागों के सम्बन्ध में कुछ जानने का एक अप्रत्याशित अवसर मिला। कुछ मित्रों ने मुझे, उनकी जागीरों की देखभाल करने और उनके सुधार में कुछ सुझाव देने के लिए कहा था। उन्होंने सरकार से, मेरी अनुपस्थिति की छुट्टी को स्वीकार किए जाने के लिए, कहने के लिए व्यवस्था कर ली थी, और मैं उनकी जागीरों के लिये, एक–एक करके, यात्रा करने में सफल हुआ। परिस्थितियॉ, जो मुझे मिलीं, पूरी तरह से मध्यकालीन थीं। किसान अभी भी, लोहे के अंश के साथ लकड़ी के हलों को, जोतने में काम में लाते थे। ये दजोओं (dzos) के द्वारा खींचे जाते थे। (दजो, मादा याक और बैल के बीच, एक वर्णसंकर होता है और बहुत अच्छा भार वाहक पशु होता है। ये बहुत कुछ याक जैसा दिखता है और गायों का दूध, जो बहुत अधिक वसायुक्त होता है, बहुत कीमती होता है।

तिब्बती लोगों की समस्याओं में से एक, जिसको हल करने के लिए, तिब्बतियों ने कम ही किया है, वह उनके खेतों को पानी देने की है। सामान्यतः बसन्त का समय बहुत शुष्क होता है, परंतु कोई भी, बर्फ से ढ़के हुए नालों और नदियों में से, भूमि के ऊपर पानी को ढोने की सोच भी नहीं सकता।

अक्सर, देशी भले लोगों की जागीरों में से, अधिकतर जागीरें बहुत बड़ी होती हैं। कई बार, पूरी सम्पत्ति के ऊपर से गुजरने के लिए, घुड़सबारी का पूरा दिन निकल जाता है। अनेक खेतिहर मजदूर, ऐसी जागीरों के साथ जुड़े रहते हैं; उन्हें फसल उगाने के लिए, अपने स्वयं के लाभ के लिए, कुछ खेत दे दिये जाते हैं, परंतु उनसे, अपने भूस्वामियों के काम करने के लिये कुछ निश्चित समय देने की अपेक्षा की जाती है। जागीरों के प्रबन्धक, जो अक्सर, जागीरदार के विश्वासपात्र नौकर मात्र होते हैं, खेतीहर मजदूरों के ऊपर, छोटे बादशाहों की तरह अफसरी दिखाते हैं। उनका खुद का मालिक ल्हासा में रहता है, जो सरकार के लिए काम करता है, और उसके पास अपनी जागीर की चिंता करने के लिए, बहुत थोड़ा समय होता है। तथापि, उसकी सार्वजनिक सेवायें, भूमियों के उपहार से, जल्दी जल्दी पारितोषित की जाती हैं, और वहॉ ऐसे भद्र अधिकारी भी थे, जिनको उनके कार्यकाल में, बीस तक बड़े बड़े फार्म दिये गये थे। समानरूप से, अधिकारी, जो भव्यता से पतित हो जाता है, उसको अपनी सभी जागीरों, जो सरकार के हाथ में चली जाती हैं, से बेदखल कर दिया जाता है। फिर भी, वहॉ अनेक परिवार हैं, जो सदियों से अपने छोटे किलों में रहते हैं और अपने पार्थिव नामों को धारण करते हैं। उनके पुरखों ने, अक्सर इन गढ़ियों, जो घाटी में अपना बर्चस्व रखती हैं, को स्वाभाविक चट्टानी चढ़ाईयों पर बनाया था। यदि पठार पर बनाई गई हों तो उनको खाईयों से घेरा जाता है, परंतु अब ये सूखी और खाली हैं। गढ़ियों में सुरक्षित रखे गये पुराने हथियार, अपने पूर्ववर्ती स्वामियों, जो मुगल लोगों के आक्रमण के विरुद्ध, अपने आपको बचाने की लगातार तैयारी में रहते थे, की योद्धा जैसी भावना को प्रमाणित करते हैं।

मैं दिनों और हफ्तों तक, अपनी यात्रा में रहा और अज्ञात देश में घुड़सबारी करना, ल्हासा में जीवन के बाद, एक और स्वागत योग्य परिवर्तन था। मैं हमेशा घोड़े की पीठ पर नहीं रहता था। समय के एक भाग में, मैं याक की खाल की नाव में, शक्तिशाली ब्रह्मपुत्र, जो मेरी मठों की यात्रा को रोकते हुए, और अधिक, फोटो लेने के लिये आकर्षित करती थी, में नीचे की ओर, तैरता रहता था।

जब मैं ल्हासा वापस लौटा, पहले से ही सर्दी आ गई थी। क्यी चू की छोटी सहायक नदी, पहले ही जम चुकी थी–और उसने हमें कुछ नया सोचने के लिए प्रेरित किया। दलाईलामा के भाई को सम्मिलित करते हुए, मित्रों के अपने छोटे समूह के साथ, हमने एक स्केटिंग क्लब बनाया। तिब्बत में इस खेल को अपनाने वाले, हम पहले व्यक्ति नहीं थे। देशी लोगों के बहुत बड़े आश्चर्य के साथ, ब्रिटिश दूतावास का स्टाफ, स्केटिंग का अभ्यास

करता था। वास्तव में, हम उनके उत्तराधिकारी थे, क्योंकि हमने उनकी स्केट्स को प्राप्त किया था, जो उन्होंने बाद में, जब वे गये, अपने नौकरों को दे दी थीं। हमारे पहले प्रयास बहुत हास्यप्रद होते थे, और हमको, हमेशा अपने ऊपर हॅसने के लिए, और ये आश्चर्य करने के लिए कि अपने सिर के बल गिरने वाला या बर्फ को तोड़ने वाला, अगला कौन होगा, काफी संख्या में दर्शक मिल जाते थे। मातापिता, हर कीमत पर, दृढ़ निश्चय बनाये रखते हुए सीखने के लिये कि किस तरह स्केट किया जाये, अपने बच्चे के उद्यमों का, भय के साथ उल्लेख करते थे।

पुराने तरीके के, न खेलनेवाले भद्र परिवार, ये विचार नहीं अपना सके कि कोई भी आदमी, अपनी आत्मा के लिए, निर्भयता पूर्वक, अपने जूते के तले में एक चाकू बांध सकता है और इसके आसपास फिसल सकता है।

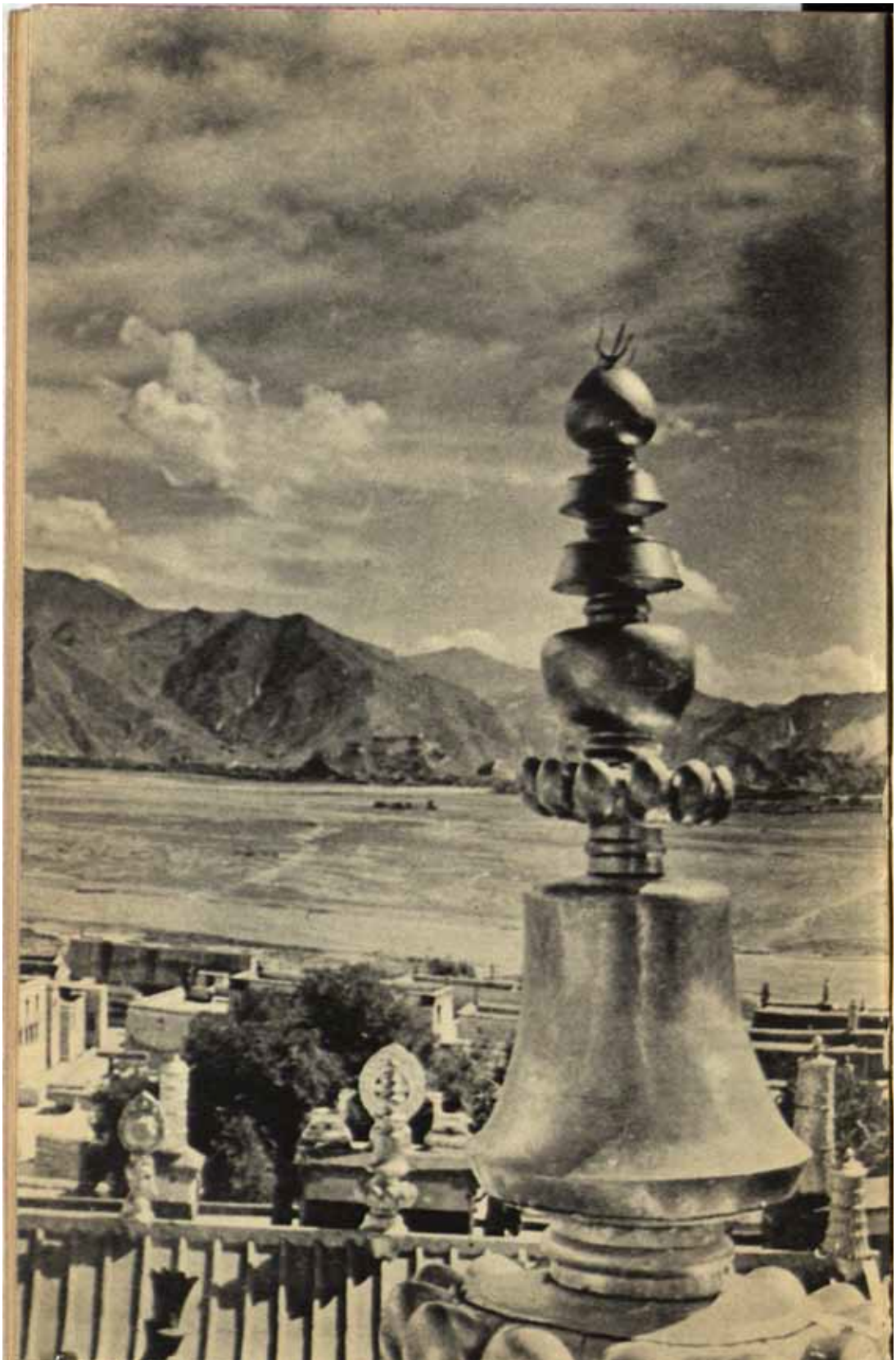

कष्ट के लिए तैयार तिब्बत

दलाईलामा ने हमारे नये खेल के सम्बन्ध में अपने भाई से सुना, परंतु दुर्भाग्यवश हमारा बर्फ का मैदान (rink) पोटाला की छतों से दिखाई नहीं देता था। उन्होंने हमें प्रेम पूर्वक, बर्फ पर आनन्द लेते हुए देखना चाहा होगा परंतु चूँकि ये असम्भव था, उन्होंने मुझे अपने लिए, रिंक और स्केट्स करने वालों की फोटो लेने के निर्देशों के साथ, एक चलचित्र कैमरा भेजा। चूँकि मैंने कभी भी, फिल्म फोटो नहीं लिये थे मैंने काम पर जाने से पहले, सम्भावनाओं और निर्देशों का सावधानी पूर्वक अध्ययन किया। तब मैंने अपनी पिक्चर बनाई और अपनी फिल्म, विदेश मंत्रालय के माध्यम से, विकसित करने के लिए, भारत को भेजी। दो महीने में, ये दलाईलामा के हाथ में थी। मैं सही सिद्ध हुआ था। इस फिल्म के माध्यम से, तिब्बत के नौजवान शासक के साथ, मैंने अपने प्रथम व्यक्तिगत सम्पर्क बनाये। ये उत्सुकतापूर्ण दिखाई देता है कि बीसवीं शताब्दी का एक उत्पाद (product), अपने सभी समारोहों के साथ, प्रारम्भ के बिन्दु पर हो। अंत में, ये एक प्रगाढ़ मित्रता बन गई। इसके तुरंत बाद, लोबसांग सामटेन ने मुझे बताया कि उसके भाई ने, विभिन्न उत्सवों और त्यौहारों के दृश्यों की, अपने लिए, फिल्मांकन की इच्छा जाहिर की है। मुझे ये देख कर आश्चर्य हुआ कि इन चित्रों में उनकी रुचि कितनी बड़ी थी। लोबसॉग सामटेन के माध्यम से, मुझे उन्होंने हमेशा अच्छे शुद्ध निर्देश दिये, कई बार लिखित में और कई बार मौखिक। उसने मुझे सलाह दी की कि विभिन्न स्थितियों में प्रकाश का सर्वाधिक उचित उपयोग किस प्रकार किया जाये, या सम्भव है, वह कुछ शब्दों को कहलवाते कि सही समय पर यह और वह उत्सव शुरू होनेवाला है। मैं भी, उनको यह बताने के लिए, कि जलूस के बीच, कब अपनी नजर को, मेरे कैमरे की दिशा में, स्थिर बना कर रखना है, एक संदेश भेजने में सफल रहा था।

स्वाभाविक रूप से, इन उत्सवों के बीच मशहूर होने से बचने के लिये, मैंने अपना सर्वोत्तम किया। उन्होंने भी, इसको उतना ही महत्वपूर्ण समझा और मुझे पर्दे के पीछे रहने के लिए, और यदि मैं ऐसा नहीं कर सकूँ तो चित्र को लेने से हट जाने के लिये कहा। स्पष्ट रूप से, मैं दिखने से बच नहीं पाया, परंतु जैसे ही ये ज्ञात हो गया कि मैं पवित्रतम के निर्देशों के अनुसार, फिल्म बना रहा हूँ और फोटो ले रहा हूँ, मुझे रोका नहीं गया। वास्तव में, खतरनाक डोब–डोब, मेरे दृष्टिक्षेत्र को मुक्त कराते हुए, अक्सर भीड़ को रास्ता दे देते थे और जब मैं उन्हें अपने लिए पोज देने को कहता, वे मेमने की तरह से मेरी बात मानते। इस तरह से, मैं धार्मिक समारोहों के अद्वितीय चित्रों की एक बड़ी संख्या बनाने में समर्थ था। चलचित्रों के कैमरे के अतिरिक्त, मैं हमेशा अपना लायका कैमरा अपने साथ रखता था और मैंने अपने लिए, असामान्य दृश्यों के कई फोटोग्राफ लिये।

मैंने सुंदर कैथेड्रल के कुछ सुंदर चित्र लिये। त्सुग लाग खांग (Tsug Lag Khang), जैसी ये कहलाती है, सातवीं शताब्दी में बनायी गयी था और तिब्बत में बुद्ध की सर्वाधिक मूल्यवान प्रतिमा कही जाती है। इस मंदिर का प्रारम्भ, प्रसिद्ध राजा स्रोंगत्सेन गम्पो (Srongtsen Gampo) के राज्यकाल से सम्बन्धित है। उसकी दो पत्नियॉं, राजकुमारियां थीं और दोनों बौद्ध धर्म से जुडी हुईं थीं। उनमें से एक नेपाल की थीं और उन्होंने ल्हासा का दूसरा सबसे बड़ा मंदिर, रम्पोचे स्थापित किया; जबकि दूसरी चीनी थी और चीन से अपने साथ सोने की प्रतिमा लाई थी। राजा को, जो पुराने धर्म को मानता था, उसकी पत्नियों के द्वारा बौद्ध धर्म में परिवर्तित करा दिया गया, जो राज्य का धर्म बन गया। तब उसने बनाये जाने वाले कैथेड्रल को, उस स्वर्णिम प्रतिमा का घर बना दिया। इस भवन में, उसी प्रकार के दोष हैं, जैसे कि पोटाला में। बाहर से ये भव्य और प्रभावशाली है परंतु, ये अंदर से, कोनों से, अंधेरे से भरा हुआ और अमित्रवत् है। ये खजानों से भरा हुआ है, जो ताजे चढ़ावे के द्वारा, रोजाना बढ़ता जाता है। नियुक्ति पर हर मंत्री को, साधुओं की प्रतिमाओं के लिए, रेशमी कामगारी के परिधान, और मक्खन के लिये सोने की एक ठोस तश्तरी खरीदनी चाहिए। मक्खन के भार, कभी समाप्त न होने वाले दीपकों में जलाये जाते हैं, और गर्मियों और सर्दियों में, हवा सड़े हुए बदबूदार धुंए से भरी रहती है। चढ़ावे से जो प्राणी लाभान्वित होते हैं वे है केवल चूहे, जो हजारों की संख्या में भारी रेशमी पर्दों के ऊपर–नीचे चढते रहते हैं और मक्खन और कटोरों में त्सम्पा पर लालची की तरह टूट पड़ते हैं। मंदिर में अंधेरा होता हैः बाहर से प्रकाश की एक किरण भी नहीं घुस सकती, और वेदी के मक्खन के दीपक ही, टिमटिमाते हुए अपनी रोशनी को बिखेरते हैं। पवित्रों में भी पवित्र की प्रविष्टि, सामान्यतः एक भारी लोहे के पर्दे के द्वारा, जिसको केवल बताये गये समयों पर ही उठाया जाता है, बंद कर दी जाती है।

एक अंधेरे संकरे गलियारे में, मैंने छत से लटकती हुई घंटी देखी। मैं मुश्किल से ही अपनी ऑखों पर विश्वास कर पाया, जब मैंने इसके ऊपर ''*ते डियूम लाउडामस (Te Deum Laudamus)*'' खुदा हुआ देखा। ये शायद, प्रार्थनालय, जिसे ल्हासा में कई शताब्दियों पहले, कैथोलिक मिशनरियों ने बनाया था, बचने वाला अंतिम स्मृतिचिन्ह था। वे अपने आपको, यहॉ तिब्बत में बचाये रखने में सफल नहीं हो सके थे और छोड़ने को मजबूर हुए। हो सकता है कि अपने कैथेड्रल में इस घंटी के संरक्षण में, ये उनकी गहरी आस्था के कारण ही है कि तिब्बती सभी धर्मों के प्रति सम्मान रखते हैं। मैंने जेस्यूट्स (Jesuits) के प्रार्थनाघर के बारे में आनन्द के साथ कुछ अधिक जान लिया होता, परंतु इमारत का कोई भी अवशेष अब शेष नहीं है।

शाम को कैथेड्रल पूजा करने वालों से भर जाता है। पर्दा उठा दिया जाता है और लम्बी कतारें बुद्ध की वेदी के सामने आने की प्रतीक्षा करती हैं। हर पूजा करने वाला, झुके हुए सिर से मूर्ति का स्पर्श करता है और थोड़ा चढ़ावा चढ़ाता है। एक भिक्षु के द्वारा, केशर से रंगा गया पवित्र जल, उसके पसों बनाये हुए हाथों पर ड़ाला जाता है। इसके एक अंश को वह पी लेता है और शेष को वह, अपने सिर पर छिड़क लेता है। अनेक भिक्षु, अपना पूरा जीवन, कैथेड्रल में व्यतीत करते हैं। उनका कर्तव्य भण्डारों के ऊपर निगरानी करना और मक्खन के दीपकों को भरते रहना होता है।

एक बार, बिहार में बिजली लगवाने का प्रयास किया गया था, परंतु शॉर्ट सर्किट (short circuit) की बजह से आग लग गई, और बिजली लगाने के काम से जुड़े हर व्यक्ति को बर्खास्त कर दिया गया। इसलिए, अब कृत्रिम प्रकाश की कोई और अधिक बात नहीं थी।

कैथेड्रल के सामने, दर्पणों की तरह पॉलिश किये हुए और हजारों साल से उपासकों की दण्डवत् के द्वारा खोखले हो चुके प्रार्थना के पत्थरों की एक छत है। जब कोई इन खोखलों को देखता है और उपासकों के चेहरों पर गहरे समर्पण के प्रभाव को पहचानता है, कोई भी समझ सकता है कि कोई ईसाई मिशन, ल्हासा में कभी क्यों नहीं सफल हो सका। कैथोलिकों को बदलने के लिए, ड्रेबुंग का कोई लामा, रोम की यात्रा पर, अपने मिशन की व्यर्थता को पहचान लेगा, जब वह असंख्य तीर्थयात्रियों के घुटनों के द्वारा घिसी हुई अपने पवित्र जीनों की सीढ़ियों को देखेगा, और वेटिकन (Vatican) को त्याग के साथ छोड़ देगा। ईसाईयत (christianity) और बौद्धधर्म (Buddhism), दोनों में काफी कुछ समान है। वे दोनों, दूसरे विश्व में आनन्द के आधार पर स्थापित हुए हैं, और दोनों ही जीवन में नम्रता का उपदेश करते हैं। परंतु, जैसी कि चीजें आज हैं, एक अंतर है। तिब्बत में, कोई सुबह से रात तक, ''सभ्यता'' की पुकारों से घायल नहीं होता। यहॉ किसी के पास, स्वयं को धर्म में लगाने के लिये, और अपनी आत्मा को अपना कहने के लिए समय होता है। यहॉ ये धर्म ही है, जो व्यक्तियों के अधिकांश जीवन को घेरे रखता है जैसा कि ये मध्ययुगों के दौरान, पश्चिम करता था।

भिखारी, कैथेड्रल के दरवाजे के बगल से अपना पड़ाव जमाते हैं। वे अच्छी तरह जानते हैं कि मनुष्य धर्मार्थी है और जब वह भगवान की उपस्थिति में होता है, काफी विचारशील होता है। तिब्बत में, दूसरे अनेक स्थानों की भांति, भिखारी सार्वजनिक उत्पात (nuisance) होते हैं। जब मैं अपना बांध बना रहा था, सरकार ने मजबूत भिखरियों को काम पर लगाने का प्रयास किया। ल्हासा के एक हजार भिखारियों को इकट्ठा किया गया और उनमें से सात सौ, जो काम करने के योग्य थे, लिये गये। उन्हें काम पर लगाया गया, और उनको काम के लिए खाना, वेतन प्राप्त हुआ। अगले दिन, उनमें से केवल आधे ही लौटे, और कुछ दिन बाद, वे सभी गायब हो गये। ये काम की कमी या नितान्त आवश्यकता नहीं है और न ही अधिकांश मामलों में, शारीरिक असमर्थता है, जो कि लोगों को भिखारी बनाती है। ये शुद्ध आलसीपन है। भीख मांगना, तिब्बत में, अच्छी जीविका दिलाता है, और कोई भी अपने दरवाजे से भिखारी को वापस नहीं लौटाता और यदि एक भिखारी, कुछ त्सम्पा और एक पैनी या ऐसा ही कुछ, हर घर से प्राप्त करे, तो दो घंटे के ''काम'' की कमाई, उसको पूरे दिन बनाये रखने के लिए काफी होती है। तब वह दीवार के सहारे आलसीपन से बैठता है और आनन्द से धूप में सोता है। अनेक भिखारियों को भयानक बीमारियॉ होती हैं, जिनके लिये वे सहानुभूति के पात्र होते हैं, परंतु वे अपनी विकृतियों को दिखा कर, गुजरने वाले यात्रियों के ध्यान में लाते हुए हुए, उनका दोहन करते हैं।

तिब्बती जीवन का एक सर्वाधिक आकर्षण है, मिलने के लिए जाने और अपने मित्रों को विदाई देने की आदत। जब कोई बाहर जाता है, तो उसके दोस्त अक्सर, नगर से कई मील दूर, उसकी सड़क पर एक टेन्ट लगाते हैं और अपने रास्ते पर गति प्रदान करने के लिए, खाने के साथ, वहॉ उसकी प्रतीक्षा करते हैं। जाने वाले मित्र को, तब तक जाने नहीं दिया जाता, जब तक कि वह, सफेद रूमालों और शुभकामनाओं से लद नहीं जाता।

जब वह वापस आता है, वही समारोह फिर होता है। कई बार ऐसा होता है कि अपने घर के रास्ते पर, कई स्थानों पर, उसका स्वागत किया जाता है। हो सकता है, वह सुबह, पोटाला पर पहली नजर ड़ाल सके, परंतु उसके रास्ते पर, उसके स्वागत करने वाले मित्रों के द्वारा, शहर में लगाए गये तम्बू के बाद तम्बुओं में, उसे रोका जाता है और उसको ल्हासा पहुॅचने से पहले शाम हो जाती है। उसका सामान्य सा काफिला, उसके दोस्तों और उनके नौकरों के द्वारा, राज्यशाही (stately) अनुपात में फैल जाता है। वह एक प्रसन्नता की भावना के साथ घर आता है कि लोगों ने उसे भुलाया नहीं है।

जब विदेशी पहुॅचते हैं, विदेश मंत्रालय के एक प्रतिनिधि के द्वारा उनका स्वागत किया जाता है, जो उन्हें मंत्री की ओर से शुभकामनायें देता है और उनके मनोरंजन और निवास की व्यवस्था करता है। नये राजदूत का स्वागत, सैनिक सम्मान के साथ किया जाता है और मंत्रिमण्डल के शिष्टमण्डल के द्वारा रेशमी रूमालों का उपहार दिया जाता है। ल्हासा में, अतिथियों के लिए उनके आने पर, प्रतीक्षा करता हुआ एक विशिष्ट खेमा (quarter) है। ये कहना सही होगा कि विश्व के किसी भी देश में, यात्रियों का स्वागत, इस तरीके से बड़े ध्यान और सौहार्द्रता के साथ नहीं किया जाता है।

युद्ध की अवधि में, भारत से चीन की ओर जाने वाले वायुयान, अपने रास्ते पर अक्सर अपना रास्ता भटक जाते थे। शायद, ये विश्व में सबसे अधिक मुश्किल वायुमार्ग है, चूॅकि हिमालय से गुजरना, वायुयान चालकों की कुशलता और उनके अनुभवों पर, भारी तनाव डालता है। तिब्बत में नक्शों की अपर्याप्तता के कारण, जिसने एक बार अपनी सहनशक्ति को गंवा दिया, उसे अपने आपको ठीक करना बहुत मुश्किल लगता है।

एक रात को मोटरों का काफिला पवित्र शहर के ऊपर घूमता हुआ सुना गया और उसने सामान्य खतरा उत्पन्न किया। दो दिन बाद, साम्ये से खबर आई कि पॉच अमरीकन, पैराशूट से वहॉ उतरे हैं और सरकार ने, वापस भारत जाने के रास्ते पर, उन्हें ल्हासा आने का निमंत्रण दिया। शहर से कुछ दूर, बाहर तम्बुओं में स्वागत पाते हुए, और हमारी मक्खन वाली चाय के साथ रूमालों को लेते हुए, हार्दिक स्वागत पाते हुए, वायुसैनिक बहुत अधिक आश्चर्य में पड़े होंगे। उन्होंने ल्हासा में कहा कि उन्होंने अपनी सहनशक्ति पूरी तरह खो दी थी और न्येनशेनथांग ला पर, उनके हवाई जहाजों के पंख, बर्फ की ढ़लानों पर घिस गये थे। इसके बाद वे वापस लौटे, लेकिन ये पता लगते ही कि उनके पास काफी कम ईंधन है, उन्होंने अपने जहाजों को नष्ट करने और खुद कूदने का निर्णय लिया और वे, सिवाय एक या दो मोच खाये हुए घुटनों, और एक टूटी हुई बांह के, सुरक्षा के साथ नीचे उतर आये। ल्हासा में थोड़ी देर रुकने के बाद, उनको सरकार के द्वारा, घोड़ों पर चढ़ाते हुए और उतने आराम के साथ, जितना कि कोई तिब्बत में पहाड़ों पर चल सकता है, भारतीय सीमा तक भेजा गया।

अमरीकी जहाजों के उड़नदस्ते के दूसरे सदस्य, जो युद्ध के दौरान तिब्बत में उतरे, उतने अधिक भाग्यशाली नहीं थे। टकराये हुए दो जहाजों के अवशेष, पूर्वी तिब्बत में पाये गये थे; बेड़े के सदस्य सभी मर गये थे। एक दूसरा जहाज भी, हिमालय के दक्षिण में, एक प्रान्त में, जिसके निवासी गंदे जंगली जीव थे, टकराया हुआ होना चाहिए। ये लोग बौद्धधर्मी नहीं हैं परंतु नंगे, अधम, जहर के बुझे हुए तीरों का उपयोग करने के लिए कुख्यात हैं। समय–समय पर, वे खालों और कस्तूरी को, नमक और मोतियों के साथ अदला बदली करने के लिए, जंगल से बाहर निकलते हैं। ऐसे ही एक मौके पर, उन्होंने चीजें प्रस्तुत कीं, जो केवल एक अमरीकी जहाज से ही प्राप्त हो सकती थीं। इस दुर्घटना के बारे में, इससे अधिक कुछ नहीं सुना गया। मैंने दुर्घटनास्थल पर जा कर खोज करने के लिए जाना चाहा होता परन्तु दूरी बहुत अधिक थी।

तिब्बत की राजनैतिक स्थिति, धीमे–धीमे खराब होती जा रही थी। पीकिंग में, चीनियों ने पहले से ही घोषणा कर दी थी कि वे तिब्बत को ''मुक्त कराने'' जा रहे हैं। इस धमकी की गम्भीरता के विषय में, ल्हासा में भी लोग किसी भ्रम में नहीं थे। चीन में, लालसेना ने, जो कुछ उन्होंने हाथ में लिया, पहले से ही, सदैव पूरा किया था।

तिब्बती सरकार, सेना को पहचानने के लिए, मंत्रिमण्डल के एक मंत्री के पर्यवेक्षण में, उत्तेजनापूर्वक काम पर लग गई। तिब्बत में, तैयार फौज होती थी, जिसके कोटे में, हर जिला, अपनी जनसंख्या के अनुपात में, योगदान करता था। जबरन सैनिक सेवाओं का ये विचार, इस मामले में हमसे अलग होता है कि राज्य, केवल संख्या में रुचि रखता है, व्यक्ति विशेषों में नहीं। नौकरी के लिए चुना गया व्यक्ति, अपना स्थानापन्न (substitute) दे सकता है। पर्याप्त अक्सर, ये स्थानापन्न, अपने जीवनों भर सेना में रहते हैं।

सैनिक शिक्षकों ने भारत में सेवायें दी हैं और वे आधुनिक हथियारों के उपयोग को समझते हैं। इसलिए

कमान के आदेश, उर्दू और अंग्रेजी के साथ तिब्बती भाषा के मिश्रण में दिये जाते हैं। नये रक्षामंत्री का पहला निर्णय था कि आदेश केवल तिब्बती भाषा में दिये जायें। ''ईश्वर रानी की रक्षा करे,'' को एक नया राष्ट्रीयगान बनाया गया जिसकी धुन, अनेक महत्वपूर्ण सैनिक परेडों में अब तक बजाई जाती है। इसके पाठ में, तिब्बत की स्वतन्त्रता को भव्यता प्रदान की जाती है और उसके समझदार शासक, दलाईलामा, के प्रति श्रद्धांजलि दी जाती है।

ल्हासा के आसपास के चराई के सपाट मैदान, सेनाओं के प्रशिक्षण स्थलों के रूप में बदल गये। नये रेजीमेन्ट बनाये गये, और दूसरे हजार लोगों को पूरा करने और साधन जुटाने के लिए, राष्ट्रीय परिषद ने, धनाढ्य लोगों को बुलाना तय किया। लोगों की सूची बनाना या उनके बदले में पता लगाना, उन पर छोड़ दिया गया। भिक्षु अधिकारियों और लोक अधिकारियों के प्रशिक्षण के लिए, पाठ्यक्रम व्यवस्थित किये गये। वहॉ राष्ट्रीय देशभक्ति का काफी अधिक प्रयास हुआ।

पहले के दिनों में, लोग सेना के बारे में अधिक चिंता नहीं करते थे। जिले के समाज को उन्हें अपनी टुकड़ियों को खाने का सामान और पूरक वेतन देना होता था। अब अधिकारियों ने नियमित व्यवस्था के महत्व को, समझ लिया और वेतन की नियत दरों पर अधिकारियों तथा सैनिकों की स्थापना की।

प्रारम्भ में, नई फौज की आवश्यकताओं की आपूर्ति करना आसान नहीं था। यातायात का पूरा का पूरा तंत्र काम के बोझ से बुरी तरह लदा हुआ था। आवश्यक अनाज को अक्सर, दूर के भण्डारों से लेना पड़ता था। जहॉ फसल बहुतायत से होती है, ये भण्डारगृह, सभी क्षेत्रों में पाये जाते हैं। दीवारों में छेद बना कर, वातानुकूलित किये हुए, बिना खिड़कियों के, पत्थर के ये भवन, काफी बड़े होते हैं। यहॉ अनाज, हवा की शुष्कता के कारण, खराब हुये बिना, दशकों के लिए रह सकता है। परंतु अब वे तेजी से खाली कराये गये थे, क्योंकि यदि युद्ध होता है, किराने के सामान, लड़ाई की पंक्तियों के पड़ोस में ही रखे जाने थे। फिर भी, देश में खाने की सामान की कमी का कोई खतरा नहीं था। यदि तिब्बत के चारों ओर एक दीवार बनाई गई होती, तो कोई भी आदमी सर्दी या भूख से नहीं मरता, चूँकि तीस लाख निवासियों की आवश्यकताओं के लिए, हर आवश्यक चीज, एक या दूसरी शक्ल में, देश में मिलती थी। सैनिक रसोईघर, बहुतायत में खाना आपूर्ति करते थे, और सैनिकों की तनख्वाह, उन्हें सिगरेट और चांग खरीदने के लिए काफी होती थी। सेनायें संतुष्ट थीं।

तिब्बत की फौज में, सिपाहियों और अधिकारियों के बीच का अन्तर पहचानना आसान है। कोई अधिकारी, जितना अधिक जिसकी पदवी, वह उतने ही अधिक सोने के अलंकरण, पहनता है। वहॉ परिधान के सम्बन्ध में, कोई निश्चित नियम नहीं होते थे। मैंने एक बार एक जनरल को देखा, जो अपनी छाती पर पिन से लगाये हुए, अपने सोने के अलंकरणों के साथ–साथ, चमकदार वस्तुओं का एक खजाना अपने कंधों पर धारण किये हुए था। चूँकि तिब्बत में कोई सैनिक पदक नहीं होते, उसने विदेशी सचित्र पत्रिकाओं को देखने में, शायद, अपना बहुत अधिक समय गुजारा था और तदनुरूप अपने आपको समर्पित किया था। उल्लेखों और विशिष्टताओं के बदले में, तिब्बती सैनिक, अधिक ठोस इनामों को प्राप्त करता है। विजय के बाद, उसको लूट करने का अधिकार होता है और इसलिए लूटपात सामान्य नियम है। तथापि, वह हथियारों को, जो उसने पकड़े, सौंपने के लिए बाध्य होता है। इस तंत्र के उपयोग का एक अच्छा उदाहरण, डाकुओं के खिलाफ युद्ध में पाया जा सकता है। स्थानीय बोन्पो, जब वे डकैतों से दो चार न कर सकते हों, सरकार से सहायता के लिए मिलने के पात्र हैं। तब उनकी मदद करने के लिए छोटी–छोटी सैनिक टुकड़ियॉ भेजी जाती हैं। खराब तरीके के बावजूद, जिसमें वे डाकू लड़ते हैं, इन कमाण्डो में सेवा करना अधिक प्रचलित है। सैनिक अपनी नजर लूट के माल पर रखते हैं और वे खतरे को अनदेखा कर देते हैं। युद्ध की बेकार वस्तुओं पर सैनिक का अधिकार, परेशानियों को बुलाने का एक बड़ा कारण रहा है। एक मामले में, जिसके साथ मैं व्यक्तिगतरूप से जुड़ा हुआ था, अनेक लोगों की जानें गईं थीं।

जब चीनी साम्यवादियों ने तुर्कस्थान पर कब्जा कर लिया, अमरीकी राजदूत, मैचिरमेन (Machierman), बेसाक (Bessac) नामक एक नौजवान अमरीकी विद्यार्थी और तीन श्वेत रूसियों के साथ, पहले भारत में अमरीकी दूतावास से, तिब्बती सरकार से पर्यटन सुविधाऐं दिये जाने के लिए कहलवाते हुए, तिब्बत को भाग गया। सीमान्त चौकियों और गश्ती दलों को सूचित करने के लिए, ल्हासा से, सभी दिशाओं में संदेश वाहक भेजे गये, ताकि भागने वालों को कोई दिक्कतें न हों। दल ने एक छोटे काफिले के रूप में, कुएन लुन (Kuen Lun) पहाड़ियों पर यात्रा की। उनके ऊँट यात्रा में ठीक बने रहे, और उन्होंने जंगली गधों का शिकार करके ताजा मांस प्राप्त किया। दुर्भाग्यवश, सरकारी संदेशवाहक, उस स्थान, जहॉ से पार्टी को सीमा को पार करनी थी, पर पहुँचने में विलम्बित

हो गया। बिना चेतावनी दिये हुए या बिना ये पता किये हुये कि उनकी तरफ कौन आ रहा था, एक दर्जन भारी तरह से लदे ऊँटों के दृश्य से ललचाये हुए, चौकी के सिपाहियों ने, उसी स्थान पर अमरीकी दूत और दो रूसी लोगों को मारते हुए, काफिले के ऊपर तत्काल गोलीबारी कर दी। तीसरा रूसी घायल हुआ था, और केवल बेसाक बिना घायल हुए भाग सका। उसे बंदी बना लिया गया और घायल आदमी के साथ, समीपवर्ती जिला राज्यपाल के पास लाया गया। रास्ते में, दोनों लोग, सैनिकों, जिन्होंने पहले कुछ खराब चीजों को बॉटा था और जो क्षेत्र के देखने वाले कॉच (field lens) और कैमरा जैसी मूल्यवान चीजों को पा कर अति प्रसन्न थे, के द्वारा बेइज्जत किये गये और धमकाये गये। अगले बोन्पो तक पहुँचने के पहले, सरकारी संदेश वाहक, अमरीकी दूत और उसकी पार्टी के लोगों के साथ, सरकारी अतिथि के रूप में व्यवहार किये जाने और उन्हें छुड़ाने वाले आदेश के साथ आया। इसने रवैये को बदल दिया। सैनिकों ने, एक दूसरे से बढ़ चढ़ कर नम्रता में, काम किया, परंतु नुकसान की भरपाई नहीं की जा सकी। राज्यपाल ने ल्हासा को एक विवरणी भेजी, और खबरों से डरे हुए अधिकारी ने हर सम्भव तरीके से अपना खेद व्यक्त करने की, अपनी भरपूर कोशिश की। बेसाक और उसके घायल साथी से मिलने के लिए, भारत में प्रशिक्षित अस्पताल के एक कर्मचारी को, उपहारों के साथ, भेजा गया। उन्हें ल्हासा आने और अभियोजन के सैनिकों के खिलाफ, जो पहले ही गिरफ्तार किये जा चुके थे, साक्षी बनने के लिए आमंत्रित किया गया। एक उच्च अधिकारी, जो थोड़ी सी अंग्रेजी बोल सकता था, समीप आते हुए यात्रियों से मिलने के लिए, घोड़े पर चढ़ कर चला। मैंने अपने आपको, ये सोचते हुए कि बातचीत के लिए एक श्वेत आदमी का मिलना, उस नौजवान अमरीकी को कुछ आरामदायक होगा, उसके साथ जोड़ लिया। मैंने उसे समझाने की भी आशा रखी कि इस घटना के लिये, जिसका गम्भीरता के साथ खेद है, सरकार को दोषी नहीं ठहराया जा सकता। हम, घनघोर वर्षा के बीच, नौजवान से मिले। वह पतले लम्बे खम्बे (bean pole) और अपने पूरी तरह से बोने तिब्बती खच्चर, से थोड़ा लम्बा था। मैं अच्छी तरह अनुमान कर सकता था कि उसने कैसा महसूस किया होगा। हमेशा दुश्मनों से भागता हुआ और खतरों से खेलता हुआ छोटा काफिला, महीनों तक सड़क पर रहा और अपने दल के तीन मृत लोगों को लाते हुए, उनकी पहली मुलाकात, देश, जिसमें वे शरण चाहते थे, के लोगों के साथ हुई।

सड़क के किनारे के एक तम्बू में, नये कपड़े और जूते, उनकी प्रतीक्षा कर रहे थे और ल्हासा में, एक किताब और उनकी देखभाल के लिए एक नौकर के साथ, उन्हें उद्यान के एक घर में रखा गया। सौभाग्यवश, रूसी, वासिलीएफ (Vassilieff), खतरनाक ढंग से घायल नहीं हुआ था और वह शीघ्र ही, अपनी बैसाखियों के सहारे, बाग में लड़खड़ा कर चलने में समर्थ हो गया। वे एक महीने तक ल्हासा में रहे, इस अवधि में मैंने बेसाक से दोस्ती कर ली। उसे देश, जिसने उसे पहली बार में उसे इतना बीमार पाया, के विरुद्ध कोई दुश्मनी नहीं थी। उसने केवल ये कहा कि सैनिकों, जिन्होंने जिला राज्यपाल तक आते हुए, रास्ते में उनके साथ बुरा व्यवहार किया था, उनको दण्डित किया जाना चाहिए। सजा के लागू होने के अवसर पर, उससे उपस्थित रहने की प्रार्थना की गई, ताकि ये सुनिश्चित किया जा सके कि वहॉ कोई धोखा नहीं था। जब उसने कोड़े लगते हुए देखे, उसने कहा कि कोड़ों की संख्या को घटा दिया जाये। उसने दृश्य के फोटो लिये, जो लाईफ (Life) पत्रिका में, तिब्बती सरकार के ठीक रवैये के प्रशंसापत्र के रूप में, प्रकाशित हुए। मृत व्यक्तियों को अंतिम सम्मान देने के लिए, पश्चिमी रीति रिवाजों के अनुसार हर काम किया गया। ऐसा है कि लकड़ी के तीन क्रॉस, अभी भी, चांगतांग में, उनकी समाधियों के पास खड़े हैं। बेसाक का दलाईलामा के द्वारा स्वागत किया गया, और बाद में वह सिक्किम को चला गया जहॉ वह अपने साथी देशवासियों के साथ मिला।

संकटकाल अनेक भगोड़ों को तिब्बत लाया, परंतु कोई भी, इस दल की तुलना में, इतना दुर्भाग्यशाली नहीं था। ऊंट का दूसरा काफिला, जो चांगतांग हो कर आया, मंगोलियन राजकुमार का था, जो अपने साथ अपनी दो पत्नियों, एक पोलेंड की और दूसरी मंगोलियन को लाया था। मैं इन दोनों औरतों, जो इतनी बड़ी यात्रा कर चुकी थीं, के प्रति प्रशंसा से परिपूर्ण था और मेरा आश्चर्य कम नहीं हुआ, जब मैंने उनके दो प्यारे प्यारे बच्चों को देखा, जिन्होंने सड़क की उतनी ही भारी परेशानियॉ झेलीं।

स्पष्ट है कि इन नाजुक समयों में सरकार, न केवल सुरक्षा के यथार्थ साधनों, वल्कि लोगों की आध्यात्मिक शक्ति को भी गतिशील बनाना चाहती थी। इस प्रयोजन के लिए, देश के जीवन के सर्वाधिक शक्तिशाली तत्व, धर्म, का आह्वान करना पड़ा। इस नीति की सेवा में, नये हथियार और नये अधिकारी काम पर लगाये गये। अभियान को संगठित करने के लिए, अधिकारियों को अत्यधिक धनराशि और मुक्तहस्त प्रदान किया गया। तिब्बत के सभी खाली बैठे भिक्षुओं को, सार्वजनिक प्रार्थना, जिस में तिब्बती बाईबिल, कानग्योर, जोर से पढ़ी जानी थी, में उपस्थित

होने का आदेश दिया गया। हर जगह नये प्रार्थनाध्वज और प्रार्थनाचक्र लगाये गये। पुराने खजानों में से दुर्लभ और शक्तिशाली ताबीज लाये गये, चढ़ावे दुगने कर दिये गये, और सभी पहाड़ियों पर सुगन्धित अग्नियॉ जलाई गईं, जबकि प्रार्थनाचक्रों को घुमाने वाली हवायें, विनती करते हुए, स्वर्ग के सभी कोनों में से, संरक्षक देवों को लाईं। लोग चट्टान की तरह पूरा विश्वास रखते थे कि, उनकी स्वतन्त्रता के लिए, धर्म की शक्ति काफी होगी। इस बीच, ये वायदा करते हुए कि तिब्बत को, शीघ्र ही स्वतंत्र कर दिया जायेगा, रेडियो पीकिंग, पहले से ही, तिब्बती भाषा में बराबर संदेश भेज रहा था।

हमेशा से अधिक लोग, धार्मिक उत्सवों, जो 1950 के प्रारम्भिक दिनों में, ठाटवाट और भव्यता में, हर चीज से, जो कभी मैने देखी थी, ऊॅचे निकले, में प्रवाह की तरह आये। ऐसा लगा मानो कि तिब्बत की पूरी जनता ल्हासा की तंग गलियों में, इस पवित्र प्रयास में इकट्ठी हो गई है। परंतु मैं इस विचार को, कि उनका मर्मस्पर्शी विश्वास, स्वर्णिम देवों को कभी नहीं हिलायेगा, भगा नहीं सका। यदि बाहर से कोई सहायता नहीं आई, मोटेतौर पर, तिब्बत शीघ्र ही, अपने शांतिमय सोने वाले लोगों से जाग जायेगा।

दलाईलामा ने, फिर मुझे उत्सवों के चित्र लेने का भार दिया, इसलिए मैं हर चीज को लाभ की दृष्टि से देखने में समर्थ था। नववर्ष के ''महान'' उत्सव, के चार सप्ताह बाद, जिसमें एक ''छोटी'' प्रार्थना का उत्सव होता है, जो केवल दस दिन चलता है, परंतु ''महान'' उत्सवों की भव्यताओं से सबसे बढ़–चढ कर होता है। इस क्षण, बसन्त की खुशहाली दिखना प्रारम्भ होती है, और नगर, एक अविस्मरणीय झलक प्रस्तुत करता है। उत्सव, शो के निवासियों के लिए, वर्ष की एक झलकी होता है। पोटाला से नीचे, शो के क्वार्टर पर, दो घंटों तक, एक बड़ा बेनर (banner) लटका रहता है। ये बेनर, निश्चितरूप से विश्व भर में सबसे बड़ा होता है। इसको ढ़ो कर ले जाने में पचास भिक्षु लगे थे, जो इसे महल तक ले गये और वहॉ इसे खोला गया। ये सुंदर, भारी रेशम से बना था और चमकदार रंगों में, दैवीय आकृतियों से सजाया गया था। जब अंत में, ये पोटाला से शहर के ऊपर लहराता है, आनन्दमय जलूस त्सुग लाग खांग से शो (sheo) की तरफ चलता है, और वहॉ, कुछ पवित्र समारोहों के बाद बिखर जाता है। इसके बाद उत्सुकताजनक रीतियॉ सम्पन्न होती हैं। भिक्षुओं के समूह, नगाडों की थाप पर, धीमे धीमे झूमते हुए, पुराने नृत्य प्रस्तुत करते हैं। वे मुखोटे पहनते हैं और नक्काशी किये हुए, हड्डी के बिरले आभूषण लटकाते हैं। लोग बड़े ध्यान से उन रहस्यमय आकृतियों के ऊपर घूरते हैं। कई बार, भीड़ में एक अफवाह चलती है। कोई सोचता है कि उसने दलाईलामा को, अपने सिर से तीन सौ फुट ऊपर, पोटाला की छत पर खड़े हुए और अपने दूरदर्शी से नीचे की ओर प्रदर्शन को देखते हुए, देखा है।

शो, जो पोटाला के चरणों में है, राजकीय मुद्रणालय का गृह है–एक ऊॅची, अंधेरी इमारत, जिसमें से कभी बाहर की दुनियॉ में आवाज नहीं निकलती। उसमें मशीनों की घड़घड़ाहट नहीं होती, और केवल भिक्षुओं की आवाज हॉल में हो कर गूंजती रहती है। लम्बे खानों (shelves) में, ढेर सारे लकड़ी के ब्लॉक भरे पड़े रहते हैं। उनका उपयोग केवल तभी किया जाता है, जब कोई नई किताब छापी जाती है। नई पुस्तक की तैयारी, असीम कार्य चाहती है। चूॅकि यहॉ कोई आरा मशीन नहीं है, भिक्षुओं को, पहले लकड़ी के छोटे बोर्ड, हाथ से काटने पड़ते हैं–और तब बर्चबुड (birch wood) के उन बोर्डों पर, एक–एक कर के टेड़ेमेड़े अक्षर गढ़े जाते हैं। जब वे तैयार हो जाते हैं, टिकियों (blocks) को सावधानी से व्यवस्थित ढंग से रखा जाता है। छपाई की स्याही के बदले में, वे कालोंच, जिसे भिक्षु, याक के योकोबर को जला कर बनाते हैं, का एक मिश्रण उपयोग में लाते हैं। इस काम में, उनमें से अधिकांश, सिर से पैर तक काले हो जाते हैं। अंत में, हाथ से बनाये हुए तिब्बती कागज पर, अलग–अलग प्लेटें छापी जाती हैं। इनमें दोनों तरफ छपे हुए, खुले पन्ने होते हैं और लकड़ी के दो नक्काशीदार आवरणों द्वारा, जिल्द बंद होते हैं। पुस्तकों के लिए, कोई या तो प्रेस में आदेश दे सकता है या उन्हें पारखोर में, किसी पुस्तक विक्रेता से खरीद सकता है। घर में उन्हें सामान्यतः रेशमी कपड़े में लपेट कर रखा जाता है, सावधानी से उनकी देखभाल की जाती है। चूॅकि उनके विषय, हमेशा धार्मिक होते हैं, उन्हें अत्यधिक सम्मान के साथ देखा जाता है और सामान्यतः घर की वेदी पर रखा जाता है। एक अच्छी श्रेणी के हर घर में, कोई, टिप्पणियों के साथ–साथ, पूरी बाइबिल के दो सौ अंक, पा सकता है। पुस्तकों को इतना अधिक सम्मान दिया जाता है कि कोई भी, एक अंक की एक प्रति को भी, कुर्सी पर रखने का विचार भी नहीं कर सकता। दूसरी तरफ, वे उन पुस्तकों के बारे में कम ही सोचते हैं, जो हमारी रुचि की हैं। एक बार मुझे, एक अत्यधिक अनुपयुक्त स्थान में, तिब्बती भाषा की एक मूल्यवान पुस्तक मिली। शुरू के पन्ने खो गये थे। मैं पुस्तक को बाहर ले गया और दूसरी प्रतिलिपि से गुमे हुए पन्नों को लिखा। मैं अपनी खोज से अत्यधिक प्रसन्न हुआ।

तिब्बती पुस्तकों का मूल्य, उनमें उपयोग में लाये गये कागज की गुणता पर निर्भर करता है। टिप्पणियों सहित बाइबिल, की कीमत इतनी हो सकती है, जितनी कि एक दर्जन याकों वाले घरों की।

शिगस्ते के पड़ोस में, नारथांग (Narthang) में, एक दूसरा बड़ा मुद्रणालय है, और लगभग हर मठ के पास, स्थानीय साधुओं और अपने लामामठों के इतिहास के ऊपर पुस्तकें छापने के उपकरण होते हैं।

जैसा कि पश्चिमी सभ्यता के प्रारम्भिक दिनों में हुआ करता था, तिब्बत की पूरी संस्कृति धर्म से प्रेरित है। वास्तुकला (architecture) और मूर्तिकला (sculpture), कविता (poetry) और चित्रकला (painting) की, सर्वश्रेष्ठ कृतियॉ, आस्था को भव्यता प्रदान करती हैं और धार्मिक व्यवस्था की शक्ति और सम्मान को बढ़ाती हैं। यहॉ धर्म और विज्ञान के बीच कोई विवाद नहीं है, और परिणाम स्वरूप अधिकांश पुस्तकों का विषय, धार्मिक नियम और दार्शनिक ज्ञान और अनुभव से प्राप्त बुद्धि का मिश्रण होता है। कवितायें और गाने, मुख्य रूप से, एक साथ इकट्ठे नहीं गए खुले पन्नों पर, हाथ से लिखे जाते हैं। छठवें दलाईलामा की कवितायें इस नियम का अपवाद हैं उन्हें एक अंक के रूप में छापा गया। मैं बाजार से एक प्रति लाया और उसे पूरा पढ़ ड़ाला। वे प्रेम के प्रति, कवि की ललक को पूर्ण अभिव्यक्ति प्रदान करती हैं। इस एकान्त कैदी की इन कविताओं को सराहने वाला, मैं केवल मात्र आदमी नहीं थाः अनेक तिब्बती, अपने बहुत पहले मरे हुए शासक की कविताओं से प्रेम करते हैं। वह दलाईलामाओं की श्रंखला में, एक मूल आकृति थी। वह स्त्रियों को प्यार करता था और उनसे मिलने के लिए, स्वयं का वेश बदल कर शहर में घूम आता था। उसकी जनता, उसकी कवि आत्मा की आवश्यताओं को संतुष्ट करने की उसकी इस इच्छा पर, इर्ष्या नहीं करती थी।

हस्तलिपियों की प्रतिलिपियॉ, कुशल भिक्षुओं, जो वहॉ बड़ी संख्या में हैं, के द्वारा बनाई जाती हैं, जिनकी लागत बहुत अधिक, पुस्तकों की कीमत से भी बहुत अधिक होती है। उनकी विषयवस्तु, सामान्यतः, विनम्र और उपाख्यानात्मक (anecdotal) होती है। उनमें सुविख्यातों में से एक है, सर्वाधिक प्रसिद्ध, अगू थोन्पा (Agu Thonpa) नामक, हास्यप्रद चित्रकथा लेखक, द्वारा लिखा गया तिब्बती उपाख्यानों का संकलन, जिसने अपने समय के राजनैतिक और धार्मिक जीवन पर हास्यप्रद ढंग से टिप्पिणियॉ कीं और जो अभी भी अत्यधिक लोकप्रिय है। हर पार्टी में, मेहमानों का मनोरंजन करने के लिये, कोई न कोई, उसकी कहानियों में से किसी को सुनाता है। हास्य और चित्रकथाओं की हास्यप्रद परिस्थितियों के लिये तिब्बतियों के स्वाद ने, अगू थोन्पा को उत्कृष्ट लेखक की तरह प्रशंसा किये जाने योग्य बना दिया है और जब मैं ल्हासा में रहता था, शहर के प्रमुख हास्य कलाकार, उसके नाम को धारण करते थे।

हर वर्ष बसन्तान्त में, (पोटाला को भी सम्मिलित करते हुए) ल्हासा के सभी निजी घर और मंदिर, पोते और व्यवस्थित किये जाते हैं। पोटाला की ऊॅची, खड़ी दीवारों की पुताई करना, एक खतरनाक कार्य है और वे ही कामगार, हर वर्ष, हर जगह, काम पर लगाये जाते हैं। ये लोग, याक की ऊन के रस्सों पर लटक़ते हैं और मिट्टी के छोटे बर्तनों से दीवारों पर रंग उंडेलते हैं। कोई उन्हें, अपनी गर्दन को मरोड़ कर, बैठी हुई स्थिति में घुड़ सवार की तरह, दोनों तरफ पैर फंसा कर बैठे हुए, और किसी कंगूरे की मगजी, पर ताजा पॉलिश करते हुए, देख सकता है। अनेक स्थान, जहॉ से बरसात आसानी से रंग को नहीं धो पाती, अक्सर, चूने की मोटी–मोटी पपड़ी बन जाती है। पोटाला की, ल्हासा से ऊपर खड़ी, सफेद दीवारों को देखना, चकाचोंध करने वाला दृश्य होता है।

जब दलाईलामा ने, मुझे इस काम के चलते, एक फिल्म बनाने का निर्देश दिया, मैं बहुत प्रसन्न हुआ। इसने मुझे, निश्चितरूप से, इस विश्व में किसी अद्वितीय चीज के फिल्मांकन करने का मौका दिया। जल्दी सुबह, मैं श्यो गॉव की, चूने के भरे हुए ड़ोलों को उठाये हुई औरतों की भीड़ के बीच में, पत्थर के जीने में, ऊपर चढ़ जाया करता था। दीवारों पर अपना नया पर्त चढ़ाने में, सौ कुलियों को, चौदह दिन लगते थे। ये मुझे शॉटों को फिल्माने में काफी समय और हर सम्भव दिशा से प्रयोग करने के अवसर दिया करता था ताकि सबसे अधिक प्रभावशाली चित्र पाया जा सके। मैं पृथ्वी और आकाश के बीच, रस्सों पर झूलते हुए, काम करने वाले आदमियों पर अपने दृश्यों को फिल्माने में, विशेष आनन्द लेता था। मेरे काम के उद्देश्य के लिए, मुझे महल के किसी भी कमरे में घुसने की आज्ञा थी। उनमें से अनेक, शताब्दियों की अवधि में इकट्ठे हुए काठ–कबाड़ के ढेर के द्वारा, अपनी अनेक खिड़कियों को बंद किये हुये, एकदम गहरे अंधेरे थे, जिसमें हो कर मैं, प्रकाश के रास्ते के लिए लड़ता रहता था। प्रयास, करने लायक था। मुझे पुरानी, भुलाई हुई, बुद्ध की एक प्रतिमा, जिसके सामने अब कोई मक्खन के दीपक नहीं जलाये जाते थे और अत्यधिक संख्या में, धूल की मोटी पर्तों के बीच छिपी हुई, भव्य *टंकाऐं* [18]*(tonkas)*

18 अनुवादक की टिप्पिणी : रेशमी कपड़ों पर बनाई गयी चित्रकारी को, तिब्बती भाषा में टंका (Tanka) कहते है। सामान्यतः इन्हें दरवाजों पर परदों

मिली। विश्व के संग्रहालय, वहॉ सड़ते हुए खजाने के एक अंश भर को पा कर, अपने आपको भाग्यशाली समझते। मेरे गाइड ने, महल के तलघर में, इस अद्वितीय इमारत की एक और उल्लेखनीय विशेषता दिखायी। खम्भों में, जो छत को टिकाते हैं, पच्चड़ें ठोकी गईं थीं। बुलन्द इमारत, शताब्दियों की अवधि में, डूब गई थी परंतु ल्हासा के कुशल कारीगर, उसे अपने मूल स्तर तक, फिर से स्थापित करने में सफल हुए। किसी भी आधुनिक तकनीक के बिना, उन लोगों के द्वारा एक प्रखर प्रदर्शन। मैं पोटाला की पेन्टिंग का एक अच्छा चित्र बनाने में सफल हुआ, और मैंने फिल्म को विकसित करने के लिए भारत भेजा।

एक दिन लोबसांग सामटेन ने मुझे ये पूछ कर कि, क्या मैं फिल्मों को दिखाने के लिए, एक कमरे को बनाना अपने हाथ में लेना चाहूँगा, आश्चर्य चकित कर दिया। उसके भाई ने अपनी इच्छा जाहिर की है, कि मैं ऐसा करूँ। ल्हासा में, जीवन ने मुझे सिखाया था कि किसी को, तब भी, ना नहीं कहना चाहिए, जब उसको ऐसे काम करने के लिए कहा जाये, जिससे कोई पूरी तरह अपरिचित है। आउफस्नाइटर और मैं, ''सभी कामों में माहिर'' माने जाते थे और हमने पहले ही, काफी कठिन समस्याओं का निदान किया था। जब मैंने निश्चय कर लिया कि दलाईलामा का प्रोजेक्टर, आवश्यक रूप से कितनी करेंट लेगा और स्क्रीन को, प्रोजेक्टर से कितनी दूर बनाना चाहिए, तो मैंने स्वयं को इस काम को हाथ में लेने के लिए तैयार बताया। तब मुझे दलाईलामा के मठाध्यक्षीय संरक्षकों के द्वारा, आधिकारिक रूप से नियुक्त कर दिया गया। उस समय से, नोरबूलिंगा के अंदरूनी बगीचे के दरवाजे, मेरे लिए हमेशा खुले रहे। मैंने, युवा राजा के, पहले से ही पोटाला में लौट चुकने के बाद, अपना काम 1949–50 की सर्दियों में शुरू किया था। सभी भवनों को देखने के बाद, मैंने उद्यान के अंदर की तरफ वाली दीवार के पड़ोस में, कभी न प्रयोग किये गये एक घर को चुना, जिसे मैंने सोचा, मैं चलचित्र थियेटर के रूप में बदल सकता हूँ। ल्हासा के सबसे अच्छे चिनाई वाले कारीगर और अंगरक्षक टुकड़ी के सैनिक, मेरे विवेकाधीन रखे गये थे। मुझे स्त्रियों, जिनकी उपस्थिति ने पवित्र महल को दूषित कर दिया होता, को काम पर लगाने की इजाजत नहीं थी। मैं पेच से कसी हुई, लोहे की छोटी लम्बाईयों को आपस में जोड़ कर, छत को समर्थन देने वाले गरडरों (girders) में उपयोग करता था, ताकि, परम्परागत खम्भों के बिना काम चलाया जा सके। थियेटर साठ फुट लम्बा था और मुझे प्रोजेक्टर के लिए एक प्लेटफॉर्म बनाना था। इस पर, कमरे के अंदर से और भवन के बाहर से, दोनों तरफ से पहुँचा जा सकता था। मैंने, मोटर और जनरेटर के लिए, थियेटर से कुछ दूरी पर, एक बिजलीघर खड़ा किया। चूँकि वह पुराने शासनाधिकारी के परेशान होने से आशंकित थे (नोरबूलिंगा में चलचित्रों का लगाया जाना, पहले से ही पर्याप्त क्रांतिकारी था), मैंने इसे दलाईलामा की तीव्र इच्छा के अनुरूप बनाया, जो नहीं चाहते थे कि मोटर की आवाज, थियेटर में किसी को सुनाई पड़े। मैंने निकास पाइपों के लिए, जिनकी आवाजों को प्रभावी रूप से समाप्त कर दिया गया था, एक विशेष कमरा बनाया। चूँकि गैसोलीन (पेट्रोल) के पुराने मोटर उतने अच्छे और विश्वस्त नहीं थे, मैंने प्रस्तावित किया कि आवश्यकता के समय, जनरेटर को बाहर निकालने के लिए, जीप के इंजन को उपलब्ध करा दिया जाये। दलाईलामा ने इस सुझाव का अनुमोदन किया, और चूँकि उनकी इच्छा कानून थी, जीप को इस उद्देश्य के लिए, तदनुरूप कर लिया गया। प्रारम्भ में, वहॉ कुछ परेशानी थी क्योंकि, उद्यान का दरवाजा, जीप के अंदर घुसने के लिये अत्यधिक तंग था तथापि, नौजवान शासक ने, परम्पराओं को छोड़ते हुए, द्वार को चौड़ा करने का आदेश दिया। नये द्वार ने पुराने को बदल दिया और जितना जल्दी सम्भव हुआ, कार्य संचालन के सभी चिन्हों को मिटा दिया गया, ताकि, प्रतिक्रियावादी आत्माओं की आलोचना को आकर्षित करने का कोई प्रगट कारण न मिले। इस लड़के के सम्बन्ध में मजबूत बिन्दु ये था कि वह, अपने आसपास के लोगों की सुहानुभूति गॅवाये बिना, अपने विचारों को कार्यरूप में परिवर्तित करने में सफल था।

इसलिए जीप को अपना खुद का घर मिल गया और जब पुराना मोटर हड़ताल करता, वह अक्सर मुक्ति दिलाती। तेरहवें दलाईलामा के ड्राइवर ने तार बिछाने में मेरी मदद की, और शीघ्र ही, पूरी मशीन घड़ी की तरह चलने लगी। मैंने बाग से, भवन निर्माण की अपनी गतिविधियों के सभी चिन्हों को मिटाने में महान कष्ट झेला और फूलों की नई क्यारियॉ तथा जमीन पर रास्ते, जो कामगारों के द्वारा पैरों तले कुचल दिये गये थे, बनाये और, वास्तव में, मैंने इस अद्वितीय अवसर को, थोड़ा ये सोचते हुए कि मैं भविष्य में, एक अतिथि के रूप में, अक्सर, इसके अंदर जाऊँगा, इस बंद उद्यान को पूरी तरह से खोजने में लगाया।

के रूप में तथा नाटकों में यवनिकाओं के रूप में टांगा जाता हैं इन पर बौद्ध धर्म से संबंधित धार्मिक घटनाओं, धार्मिक स्थलों अथवा जातक कथाओं से संबंधित चित्र बनाये जाते हैं।

जब बसन्त आया, नोरबूलिंगा प्रेम (loveliness) की एक दृष्टि था। नाशपाती और खुरमानी के फूल पूरी तरह खिले हुए थे, मोर गर्व से नाचते थे, और सैंकड़ों दुर्लभ पौधे, धूप में, गमलों में लगे थे। उद्यान के एक कोने में, एक छोटा अजायबघर था, परंतु ज्यादातर पिंजरे खाली थे। केवल थोड़ी सी जंगली बिल्लियॉ और वनविलाव (lynxes) शेष रहे थे। पहले यहॉ चीते और भालू भी थे, परंतु ये अपने संकीर्ण कटघरों में मर गये थे। दलाईलामा को जंगली जानवरों के, विशेषकर, घायल जानवरों के, अनेक उपहार प्राप्त हुए, जिन्हें नगीना उद्यान में सुरक्षित शरण मिली।

मंदिरों के अलावा वहॉ पेड़ों के आसपास छितरे हुए अनेक छोटे घर थे। प्रत्येक का, एक खास उद्देश्य के लिए उपयोग किया जाता था–एक ध्यान करने के लिए, दूसरा पढ़ने और अध्ययन के लिए था, तथा अन्य भिक्षुओं के लिए मिलने के स्थान की तरह उपयोग में लाये जाते थे। कई मंजिल ऊॅची, सबसे बड़ी इमारत, उद्यान के केन्द्र में खड़ी थी और आधा मंदिर और आधा निवास, पवित्रतम के लिए था। खिड़कियॉ मेरी नापसंदगी के साथ, अत्यधिक छोटी थीं और इस साधारण घर की तुलना में, मैं उस शीर्षक ''महल'' को काफी बेकार समझता था। ये निश्चित रूप से, निवास के रूप में, पोटाला, जो महल की तुलना में, जेल की तरह अधिक था, से अधिक आकर्षक था, परंतु यह पूरी तरह अंधेरा था। उद्यान भी वैसा ही था। पेड़ों को उपेक्षितरूप से, कई वर्षो तक बढ़ने दिया गया था और महल में वे घने जंगल की तरह दिखते थे। किसी ने भी उन्हें साफ करने का प्रयास नहीं किया था। माली शिकायत करते थे कि बड़े पेड़ों की छाया में फल और फूल सरलता से नहीं उगेंगे। मुझे बहुत खुशी हुई होती यदि उन्होंने मुझे, अंदर वाले उद्यान को संवारने और पुनः व्यवस्थित करने के लिए जाने दिया होता। वहॉ काफी माली थे परंतु कोई भी शैली के प्रति जानकार नहीं था। मैं राजमहल के बड़े अफसर को समझाने में सफल रहा कि कुछ पेड़ों को काट दिया जाना चाहिए, और मुझे उनको गिराने के काम का निरीक्षण करने की आज्ञा दी गई। मालियों को इस प्रकार के काम की बहुत कम समझ थी, और वे अपने आपको, विशेष रूप से, गमलों में फूल उगाने में, जो पूरे दिन बाहर खुले में छोड़ दिये जाते थे और रात को ढ़क कर रखे जाते थे, लगाये रखते थे।

आंतरिक उद्यान की दीवार के दरवाजों में से एक, सीधा अस्तबलों में जाता था, जिसमें दलाईलामा के पसंदीदा घोड़े और एक जंगली गधा, जो उन्हें उपहार में मिला था, रहते थे। कई साईसों के द्वारा सेवित ये जानवर, ध्यानमग्न, शांत, जीवन बिताते थे। चूॅकि उनका स्वामी, उन पर कभी सवार नहीं हुआ और न ही कभी उन्हें चलाया गया, वे मोटे और नाजुक हो गये थे।

दलाईलामा के शिक्षक और व्यक्तिगत सेवक, नोरबूलिंगा पार्क में पीली दीवार के बाहर रहते थे। वे और पॉच सौ मजबूत अंगरक्षक, विशेषरूप से (तिब्बत के लिए), मकानों के साफ खण्डों में आराम से रहते थे। तेरहवें दलाईलामा ने अपनी सेनाओं के कल्याण में व्यक्तिगत दिलचस्पी ली थी। उन्होंने उन्हें यूरोपियन कट की बर्दियॉ पहनाई थीं और उन्हें अपने खेमों में से एक में से, व्यायाम करते हुए देखा करते थे। मैं इस तथ्य से प्रभावित हुआ था कि इन सैनिकों के बालों की कटिंग, दूसरे तिब्बती लोगों से अलग हट कर, पश्चिमी शैली की थी। अपने भारत में रुकने की अवधि में, तेरहवें दलाईलामा, शायद, ब्रिटेन और भारत की सेनाओं के गणभेष के पक्ष में प्रभावित हुए थे और अपने अंगरक्षकों को उन्होंने इसी तरह से बनाया था। अधिकारी, सब तरफ, आसपास खिलते हुए फूलों की क्यारियों वाले छोटे, सुंदर बंगलों में रहते थे। अधिकारियों और आदमियों के कर्तव्य सरल थे। ये मुख्यतः, उनके उत्सवीय जलूसों के मार्च में, प्रहरियों की सबारी और उनको बाहर निकालने में (turn out) में निहित थे।

दलाईलामा के अपने ग्रीष्मकालीन आवास में जाने से काफी पहले, मैंने अपने भवन को पूरा कर लिया था। मुझे आश्चर्य हुआ कि क्या वह नाट्यशाला से प्रसन्न होंगे। मैं लोबसांग सामटेन से, उनके विचार के बारे में अनुमान कर रहा था। वह निश्चित रूप से पहले प्रदर्शन में उपस्थित रहने वाला था। दलाईलामा, शायद फिल्म देखने आयेंगे और उपकरण पर काम करने के लिए भारतीय दूतावास के लोगों को बुलायेंगे। दूतावास, अपनी आनन्द पार्टियों में, जल्दी–जल्दी भारतीय और अंग्रेजी फिल्में दिखाया करता था और उस बचकाने उत्साह को, जिसके साथ तिब्बती लोग इन प्रदर्शनों, विशेष रूप से, दूसरे देशों के दृश्यों को दिखाने वाली फिल्मों को देखते थे, देखना आनन्ददायक था। प्रश्न ये था कि युवा शासक, चित्रों पर किस प्रकार की प्रतिक्रिया करेंगे।

स्वाभाविक रूप से, मैं पोटाला से नोरबूलिंगा तक जलूस को देखने के लिए अपने चलचित्र कैमरा के साथ उपस्थित था। मेरे सामने, एक उचित स्थान, जहॉ से समारोह की फिल्म बनाई जा सके, का पता करने की एक सामान्य परेशानी थी, परंतु चेचक के दागयुक्त, विकट दर्शन वाले मेरे एक सेवक ने, मेरे लिए चीजों को अपेक्षाकृत

सरल बना दिया। वह मेरे कैमरों को ढ़ोकर ले गया, और भीड़ ने, हमारे लिए खुला रास्ता दे दिया। वह डरावना दिखाई देता था परंतु, वास्तव में, एक अत्यन्त साहसी व्यक्ति था, जैसेकि एक निम्नलिखित घटना प्रदर्शित करती है।

कई बार ऐसा होता है कि, ल्हासा के बागों में चीते घूमते हैं। उनको मारा नहीं जाना चाहिए, इसलिए लोग उन्हें जाल में ललचाने का प्रयास करते हैं, या किसी अन्य प्रकार की युक्ति के द्वारा उन्हें पकड़ लेते हैं। एक दिन एक चीता सीधे नगीना उद्यान में घुस गया। सब तरफ से परेशान और पैर में एक गोली के द्वारा घायल, उसे एक कोने में खदेड़ दिया गया, जहॉ किसी पर भी, जो उसके पास पहुॅचने का दुस्साहस करता, गुर्राते हुए, वह खाड़ी पर खड़ा हुआ। अचानक मेरा सेवक, अपने खाली हाथों के साथ उस तक गया और जब तक कि दूसरे सैनिक, एक बोरे के साथ, जिसमें उन्होंने उसे बलपूर्वक ड़ाला, नहीं दौड़ पड़े, उसे पकड़ा। उस आदमी को बुरी तरह चबा ड़ाला गया था, और चीते को दलाईलामा के प्राणी उद्यान में रखा गया, जहॉ वह शीघ्र ही मर गया।

जब दलाईलामा, अपनी पालकी में मेरे बगल से गुजरे और उन्होंने मुझे फिल्म बनाते हुए देखा, वे मेरे ऊपर मुस्कराये। मेरा निजी विचार ये था कि वह अपनी छोटी चलचित्र नाटकशाला के लिए, अपने आपको बधाई दे रहे थे परन्तु मैं निश्चिंत हूॅ कि जब मैंने किया, तब किसी ने नहीं सोचा; यद्यपि चौदह साल के एक अकेले बच्चे के लिए और अधिक स्वाभाविक क्या हो सकता था ? तब मेरे सेवक के नम्र और आल्हादकारी चेहरे के ऊपर एक नजर ने मुझे याद दिलाया कि मुझे छोड़ कर, हर एक के लिए वह एक अकेला लड़का नहीं था परंतु, भगवान था।

दलाईलामा का शिक्षक

नोरबूलिंगा में दृश्यों को फिल्माने के बाद, जब मैं सवार हो कर धीमे धीमे घर जा रहा था, ल्हासा से थोड़ा दूर रास्ते में, मुझे एक उत्तेजित सैनिक अंगरक्षक के द्वारा आगे बढ़ कर रोका गया, जिसने मुझे बताया कि वे मुझे हर जगह तलाश रहे थे और मुझे सवार हो कर, सहसा ही, पीछे ग्रीष्मउद्यान की ओर लौटना चाहिये। मेरा पहला ख्याल था कि चलचित्र दिखाने वाला यंत्र खराब हो गया होगा और चूँकि मैं मुश्किल से ही कल्पना कर सकता था कि अभी भी अवयस्क, युवा शासक, सभी परम्पराओं को तोड़ देगा और खुद से मिलने के लिए मुझे सीधा बुलायेगा। मैं तुरंत ही वापस लौटा और शीघ्र ही नोरबूलिंगा में वापस आ गया, जहॉ अब हर चीज शांत और स्थिर थी। पीले द्वार के दरवाजे पर, थोड़े से भिक्षु प्रतीक्षा कर रहे थे। जैसे ही उन्होंने मुझे देखा, उन्होंने मुझे जल्दी करने का संकेत दिया, और जैसे ही मैं वहॉ अंदर के उद्यान में, जहॉ लोबसांग सामटेन मेरी प्रतीक्षा कर रहा था, पहुँचा, उन्होंने मेरा स्वागत किया। उसने फुसफुसा कर मुझसे कुछ कहा और एक सफेद रूमाल मेरे हाथ में रखा। इस सम्बन्ध में कोई संदेह नहीं था कि उसका भाई मेरा स्वागत कर रहा था।

मैं तुरंत ही, चलचित्र के मंच की ओर गया, परंतु इससे पहले कि मैं प्रवेश कर सकूँ, दरवाजा अंदर से खुला, और मैं सजीवबुद्ध के सामने खड़ा हुआ था। अपने आश्चर्य को वश में करते हुए, मैं गम्भीरता से झुका और उन्हें रूमाल भेंट किया। उन्होंने इसे अपने बांये हाथ में लिया और एक आवेगयुक्त संकेत से मुझे दांयी ओर से शुभाशीर्वाद दिया। ये उत्सवीय ढंग से हाथ रखने की तुलना में, उस बच्चे की तरफ से, भावनाओं की प्रबल अभिव्यक्ति, जिसने अंततः अपने रास्ते को पा लिया था, कम दिखाई दिया। रंगमंच पर–पवित्रतम के तीन संरक्षक मठाध्यक्ष, झुके हुए सिरों से मेरी प्रतीक्षा कर रहे थे। मैं उन्हें ठीक तरह से जानता था और मैं ये समझने में गलत नहीं हुआ कि उन्होंने मेरे अभिनंदन को कितने ठण्डेपन से लौटाया। वे निश्चित रूप से, अपने क्षेत्र में, घुसपैठ को अनुमोदित नहीं करते थे, परंतु उन्होंने दलाईलामा की इच्छा का खुले रूप से विरोध करने का दुस्साहस नहीं किया।

नौजवान शासक कुल मिला कर अधिक हार्दिक था। उन्होंने मेरे पूरे चेहरे के ऊपर नजर डाली और प्रश्नों की झड़ी लगा दी। वे मुझे एक ऐसे व्यक्ति की तरह दिखाई दिये, जो विभिन्न समस्याओं के ऊपर, एकांत में, वर्षों तक, विचार करते रहे हैं और अब बातचीत के लिए उन्हें कम से कम कोई चाहिए था, और वह सभी उत्तरों को एक साथ जान लेना चाहते थे। उन्होंने मुझे अपने उत्तरों पर सोचने के लिए कोई समय नहीं दिया बल्कि, मेरे ऊपर, प्रोजेक्टर पर जाने और एक फिल्म, जिसे वह लम्बे समय से देखना चाह रहे थे, लगाने का दवाब बनाया। ये जापान के एक संधि पत्र का समाचार चलचित्र था। वह मेरे साथ उपकरण तक आये और मठाध्यक्षों को रंगमंच पर दर्शक के रूप में भूमिका निबाहने के लिए भेज दिया। चूँकि उन्होंने मुझे अधीरता के साथ एक ओर धकेल दिया, और फिल्म को अपने हाथ में पकड़ लिया, और मुझे दिखाया कि मेरी तुलना में वह अधिक अच्छा अभ्यास करने वाले चालक थे, मैं उद्दण्ड प्रोजेक्टर से काम लेने के मामले में, सुस्त दिखाई पड़ रहा होऊँगा। उन्होंने मुझे बताया कि वह, पूरी सर्दियों भर, ये सीखने के लिए कि उपकरण से कैसे काम लिया जाये, व्यस्त रहे थे और कि उन्होंने प्रोजेक्टर को टुकड़ों में कर लिया था और दुबारा से इसको तैयार किया था। तब मैंने, पहली बार निरीक्षण किया कि चीजों को, मान लेने की तुलना में, वे उन्हें तले तक देखते थे। और इस प्रकार, बाद में, दूसरे अनेक अच्छे पिताओं की भॉति, जो अपने बच्चों से सम्मान पाना चाहता है, मैं अक्सर, अपनी शाम, अपनी आधी भूली हुई चीजों का ज्ञान प्राप्त करने में या कुछ नया सीखने में व्यतीत करता था। चूँकि ये मुझे स्पष्ट था कि मेरे उत्तर, उनके पश्चिमी विश्व के ज्ञान के आधार बनेंगे, मैंने हर प्रश्न का गम्भीरता और वैज्ञानिक ढंग से समाधान करने में सर्वाधिक कष्ट उठाया।

अपनी पहली मुलाकात में, तकनीकी चीजों के लिए उनकी स्पष्ट बुद्धि ने, मुझे आश्चर्यचकित किया। किसी प्रोजेक्टर को टुकड़ों में तोड़ना और तब उसे बिना किसी सहायता के वापस जोड़ देना, ये चौदह साल के बच्चे का स्वामित्वपूर्ण प्रदर्शन था, क्योंकि वह अँग्रेजी की विवरणिका को नहीं पढ़ सकता था। अब चूँकि फिल्म अच्छी तरह चल रही थी, वह व्यवस्थाओं से प्रसन्न थे और मेरी कार्य की अत्यधिक ऊँचाई तक प्रशंसा नहीं कर सकते थे। हम प्रक्षेपण कक्ष में साथ–साथ बैठे और दीवार में झांकने के मोखलों में से हो कर चलचित्र को देखा, और जो उन्होंने देखा और सुना, उसका उन्होंने, जवानी की उत्तेजना में, अक्सर मेरे हाथ को पकड़ते हुए, सजीव जिंदादिली के

साथ, सर्वाधिक आनन्द उठाया। यद्यपि, ये उनके जीवन में पहला मौका था कि वह किसी श्वेतव्यक्ति के साथ अकेले थे, वह किसी भी प्रकार से, इससे स्तब्ध या शर्मसार नहीं थे। जब वह दूसरी फिल्म को, चलाने के लिए तैयार कर रहे थे, उन्होंने माइक्रोफोन को मेरे हाथ में दबाया और मुझ पर उसमें कुछ कहने के लिए जोर ड़ाला। उसी समय, उन्होंने झांकने के झरोखों में से, बिजली से प्रकाशित थियेटर में देखा, जिसमें उनके शिक्षक, कालीन पर बैठे थे। मैं देख सकता था कि वह, जब लाउडस्पीकर में से अचानक एक आवाज आती देख कर, सुयोग्य मठाध्यक्षों के आश्चर्य करते हुए चेहरों को देखने के लिए कितने व्यग्र थे। मैं उन्हें निराश नहीं करना चाहता था, इसलिए मैंने, अस्तित्वहीन जनता को, चूँकि अगली फिल्म तिब्बत के भावुक दृश्यों को प्रस्तुत करेगी, अपने अपने स्थानों पर बैठने देने के लिए आमंत्रित किया। जब उन्होंने मेरे प्रफुल्लित असम्मानजनक स्वरों को सुना, वे भिक्षुओं के आश्चर्य चकित और झटके खाये हुए चेहरों पर, उत्साह के साथ हॅसे। देवीय शासक, जिसकी चमकती हुई ऑखें ये दिखा रही थी कि उन्होंने परिस्थितियों का किस प्रकार आनन्द लिया, की उपस्थिति में, ऐसी हल्की, अनौपचारिक भाषा, कभी उपयोग में नहीं लाई गई थी।

जिस बीच, उन्होंने स्विचों की देखभाल की, उन्होंने मुझे उस फिल्म को बदलने के लिए कहा, जो मैंने ल्हासा में बनाई थी। परिणामों को देखने के लिए, मैं उतना ही उत्सुक था, जितने कि वह थे। चूँकि ये पूरी लम्बाई की, मेरी पहली फिल्म थी, कोई भी विशेषज्ञ, इसमें दोष निकाल सकता था, परंतु हमें ये काफी संतोषजनक दिखाई दी। इसमें ''छोटे'' नववर्ष के त्यौहार के, मेरे फोटो भी थे। औपचारिक मठाध्यक्ष भी, जब उन्होंने लहराते हुए पर्दे पर स्वयं को पहचाना, अपनी गरिमा को भूल गये। वहॉ, जब एक मंत्री की, पूरी लम्बाई की पिक्चर प्रस्तुत हुई, जिसमें वह उत्सवों के दौरान सो गये थे, हॅसी फूट पड़ी। चूँकि प्रत्येक मठाध्यक्ष ने, इन अंतहीन समारोहों में जगे हुए बने रहने के लिए, कई बार संघर्ष किया था, उनकी हॅसी में कोई दुर्भावना नहीं थी। इसके बावजूद, कि दलाईलामा ने इस मंत्री की कमजोरी को देख लिया था, उच्चवर्ग इसे जान गया होगा, क्योंकि बाद में, जब कभी मैं अपने चित्रों के साथ प्रकट होता, हर आदमी उठकर बैठ जाता और पोज देता।

स्वयं दलाईलामा ने, दूसरे किसी की तुलना में, चलचित्रों में अधिक आनन्द लिया। उनकी सामान्यतः मंदी हलचलें जवान और सजीव हो गईं, और उन्होंने उद्यमता पूर्वक हर चित्र के ऊपर टिप्पणी की। थोड़ी देर बाद, मैंने उन्हें एक फिल्म बदलने के लिए कहा, जो उन्होंने स्वयं बनाई थी। उन्होंने बड़ी नम्रता से कहा कि वह उस चित्र के बाद, जो हम पहले ही देख चुके हैं, अपने नौसिखियेपन के प्रयासों को दिखाने का दुस्साहस नहीं कर सकते। परंतु मैं ये देखने के लिए आतुर था कि चलचित्र बनाने के लिए, उन्होंने क्या विषय चुना होगा और अपनी भूमिका (roll) को पर्दे पर दिखाने के लिए, उन पर दवाब ड़ाला। वास्तव में, उनके पास विषयों के बड़े चुनाव नहीं थे। उन्होंने ल्हासा की घाटी का, एक बड़ा समेटता हुआ सा भूदृश्य बनाया था, जिसको उन्होंने अत्यधिक तेजी से बदल दिया। तब कुछ घुड़सबार भद्रपुरुषों और श्यो में हो कर गुजरते हुए काफिलों के, कम रोशनी और, लम्बी दूरी वाले चित्र आये। उनके रसोइये का एक समीप चित्र (close up) दिखाता था कि वह फिल्म में चेहरे का फोटो (पोर्ट्रेट) लेना पसंद करते थे। फिल्म, जो उन्होंने मुझे दिखाई, निश्चित रूप से उनका पहला प्रयास था और बिना निर्देशों या मदद के बनाई गई थी। जब ये समाप्त हुआ, उन्होंने मुझे माइक्रोकोन में घोषणा करने के लिए कहा कि प्रदर्शन पूरा हो चुका है। तब उन्होंने रंगमंच में जाने वाला दरवाजा खोला, मठाध्यक्षों का कहा कि उनकी अब और आवश्यकता नहीं है, और उन्हें हाथ हिला कर बर्खास्त किया। ये मुझे, फिर से, स्पष्ट हो गया था कि वह कोई जान ड़ाली हुई कठपुतली नहीं थे, परंतु स्पष्ट रूप से, अपनी इच्छा को दूसरों पर लादने में समर्थ, एक व्यक्ति थे।

जब हम अकेले थे, हमने फिल्मों को दूर हटा दिया और मशीन को पीले कवर से ढक दिया। तब हम, खुली खिड़कियों में से धूप आते हुए रंगकक्ष में, भव्य कालीन पर बैठे। चूँकि कुर्सियॉ और गद्दे, दलाईलामा के घरेलू फर्नीचर में सम्मिलित नहीं थे, भाग्यवश ऐसा था कि, मैंने लम्बे समय तक, पालथी मारकर बैठने की आदत बना ली थी। प्रारम्भ में, ये जानते हुए कि मंत्रियों से भी, उनकी उपस्थिति में बैठने की कल्पना नहीं की जाती थी, मैंने उनके जमीन पर बैठने के आमंत्रण को ठुकराने की इच्छा की थी, परंतु उन्होंने केवल मुझे कनखियों से देखा और मुझे नीचे खींच लिया, जिसने मेरी आशंका को समाप्त कर दिया।

उन्होंने मुझे बताया कि वह लम्बे समय से इस मुलाकात की योजना बना रहे थे, चूँकि वह, बाहरी दुनियॉ से परिचित होने के, किसी दूसरे तरीके पर सोचने में सफल नहीं थे। उन्होंने शासनाधिकारी से आपत्तियॉ उठाने की अपेक्षा की थी, परंतु वह अपने तरीके से चलने पर अड़े थे और विरोध के मामले में, एक प्रत्युत्तर उनके पास

पहले से ही तैयार था। वह शुद्धरूप से, अपने ज्ञान को धार्मिक विषयों के परे ही बढ़ाने के लिये दृढ़ संकल्पित थे, और उन्हें ऐसा लगा कि केवल मैं ही एक ऐसा व्यक्ति था, जो उन्हें ऐसा करने में मदद कर सकता था। उन्हें ये ख्याल नहीं था कि मै एक पात्रता प्राप्त शिक्षक था, यदि उन्हें ऐसा पता होता तो वह शायद मुझसे इतने अधिक प्रभावित नहीं हुए होते। उन्होंने मेरी आयु पूछी और उन्हें ये जान कर आश्चर्य हुआ कि मैं केवल सैंतीस साल का था। अनेक दूसरों तिब्बतियों की तरह उन्होंने सोचा कि मेरे ''पीले (भूरे)'' बाल, उम्र की पहचान थे। उन्होंने बचकानी उत्सुकता के साथ मेरे नाकनक्शों का अध्ययन किया और मुझे अपनी लम्बी नाक के लिए छेड़ा, जो यद्यपि, जैसे कि हम नाकों को पहचानते हैं, सामान्य आकार की थी, अक्सर, चपटी नाक वाले मंगोलियन लोगों का ध्यान आकर्षित करती थी। अंत में उन्होंने ध्यान दिया कि मेरे हाथों में, पीछे की तरफ बाल उग रहे थे और एक चौड़ी मुस्कान के साथ कहा, ''हेनरिग, तुम्हारे बाल बंदरों जैसे हैं,'' चूँकि मैं इस किंवदती से परिचित था कि तिब्बती अपने आपको, अपने भगवान शेन्रेजी (chenrezi) और एक मादा राक्षस की संतान के उत्तराधिकारी के रूप में मानते थे, मेरे पास एक उत्तर तैयार था। अपनी दैत्य प्रेमिका से समागम से पहले, शेनरेजी ने बंदर की शक्ल को स्वीकार कर लिया था, और चूँकि दलाईलामा अपने देवताओं के अवतारों में से एक हैं, मैंने समझा कि एक बंदर के साथ मेरी तुलना करने में, वास्तव में, उन्होंने मेरी चापलूसी की थी।

इस प्रकार की टिप्पणियों के साथ, हमारे वार्तालाप, शीघ्र ही बेरोकटोक के हो गये, और हम दोनों ने अपनी–अपनी शर्म छोड़ दी। मैंने उसके व्यक्तित्व के आकर्षण को अनुभव किया, जो अपने पहले के अस्थाई सम्पर्क पर, मैं केवल अनुमान कर सका था। उनका रंग किसी औसत तिब्बती की तुलना में काफी हल्का था। उनकी पूरी तरह जीवन्तता, और सजीवता के प्रभावों से भरी हुई ऑखें, अधिकांश यूरोपियों की तुलना में, मुश्किल से ही, सॅकरी थीं। उनके गाल उत्तेजना में चमक उठते थे और जैसे ही वह बैठते, वह बगलें बदलते रहते। उनके कान, उनके सिर से थोड़े बाहर थे। ये बुद्ध का एक लक्षण था, जैसा मैंने बाद में समझा, ये उन एक चिन्हों में से एक था, जिनके द्वारा बालकपन में उन्हें अवतार के रूप में स्वीकार किया गया था। उनके बाल, परम्परागतों की तुलना में लम्बे थे। वह शायद इन्हें रखे हुए थे ताकि पोटाला की सर्दी के विरुद्ध बचाव हो सके। वह अपनी उम्र के अनुसार लम्बे थे और लगता था, मानो कि वह अपने कद को, अपने मां बाप के कदों के समान प्राप्त कर लेंगे, जो दोनों बहुत जोरदार आकृतियॉ थीं। दुर्भाग्यवश, बैठी हुई मुद्रा में अपने शरीर को आगे मोड़ते हुए, अत्यधिक अध्ययन के परिणामस्वरूप, उन्होंने अपने आपको खराब तरीके से कर लिया था। लम्बी उंगलियों के साथ, जो सामान्यतः शांति की मुद्रा में मोड़ी जा सकती थीं, उनके हाथ सुंदर, भव्य, और अभिजातीय थे। मैंने ध्यान दिया कि वह अक्सर मेरे हाथों पर आश्चर्य के साथ देखते थे, जब मैं जोर देता कि मैं अनुमान की भंगिमा के साथ, जो कह रहा था, वह तिब्बती लोगों के लिए, जो अपने आरामदायक रवैये से एशिया की शांति को व्यक्त करते हैं, पूर्णतः विदेशी है। वह हमेशा एक भिक्षु की लाल पोशाक, जो कभी बुद्ध के द्वारा निश्चित की गई थी, पहनते थे और उनका[19] पहनावा, किसी भी प्रकार से, मठ के अधिकारियों से अलग नहीं था।

समय तेजी से गुजर गया। प्रश्नों, जो उन्होंने मेरे सामने रखे, की बाढ़ इतनी लगातार और तत्काल थी, ऐसा लगा जैसे एक बांध टूट गया। मैं ये देख कर घबरा गया कि उन्होंने पुस्तकों और समाचार पत्रों से, कितना असंबद्ध ज्ञान प्राप्त कर लिया था। उनके पास, द्वितीय विश्वयुद्ध से सम्बन्धित, सात अंकों में एक अंग्रेजी का कार्य (रचना) था, जिसे उन्होंने तिब्बती भाषा में अनुवादित किया था। वह जानते थे कि विभिन्न प्रकार के हवाई जहाजों, मोटर वाहनों और टेंकों में कैसे अंतर किया जाये। व्यक्तियों के नाम, जैसे चर्चिल (Churchill)[20], आईजनहोबर

---

19 अनुवादक की टिप्पिणी : सर विंस्टन लियोनार्ड स्पेंसर–चर्चिल (Sir Winston Leonard Spencer-Churchill) (30 नवम्बर 1874–24 जनवरी 1965) एक ब्रिटिश राजनेता थे, जो 1940 से 1945 तक तथा 1951 से 1955 तक, ब्रिटेन के प्रधान मंत्री रहे। चर्चिल के समय में ब्रिटेन के सम्राट जॉर्ज षष्टम थे। वे एक गैर–शैक्षणिक इतिहासवेत्ता (non-academic historian) तथा लेखक भी थे। उन्हें 1953 में, उनकी जीवनपर्यन्त सभी गतिविधियों के लिए साहित्य का नोबेल पुरुस्कार दिया गया था। 1963 में, वे संयुक्त राज्य अमेरिका के आठ मानद नागरिकों में से एक थे। चर्चिल, ब्रिटेन की सेना में एक अफसर भी रहे थे, 1896 के प्रारंभ में, उन्हें परतंत्र भारत के बम्बई में स्थानांतरित किया गया था। चर्चिल नवयुवक फौजी के रूप में बैंगलोर में भी रहे। प्रथम विश्व युद्ध में चर्चिल का योगदान रहा। वे पोलो के बहुत अच्छे खिलाड़ी थे।

20 अनुवादक की टिप्पिणी : अमेरिका के 34 वें राष्ट्रपति, ड्वाइट डी, आईजनहावर (Dwieght D.Eisenhower) (14 अक्टूबर 1890–28 मार्च 1969) का जन्म 14 अक्टूबर 1890 में डेनीसन टेक्सास (Denison, Texas) में हुआ था। इन्हें इनके संक्षिप्त नाम आइक से जाना जाता था। 1945 में उन्हें अमेरिकी सेना का प्रमुख सेनाध्यक्ष नियुक्त किया गया। 1951 में उन्हें नाटो (NATO) का, मित्र देशों की सेनाओं का सर्वोच्च कमांडर नियुक्त किया गया। 1952 में वे अमेरिका के राष्ट्रपति बने। वे लगातार दो सत्रों के लिए राष्ट्रपति बने रहे। वे रिपब्लिकन पार्टी के सदस्य थे। इन्हे विश्वयुद्ध प्रथम और विश्वयुद्ध द्वितीय के विजय पदक (World War First And Second Victory Medal) प्राप्त हुए। 1948 में आइजनहावर, न्यूयार्क सिटी में, कोलंबिया विश्वविद्यालय के अध्यक्ष बने। नवम्बर 1955 में, जब सोवियत संघ ने हाइड्रोजन बम का सफल परीक्षण किया, आइजनहावर ने सोवियत संघ के सामने निशस्त्रीकरण का प्रस्ताव प्रस्तुत किया। सोवियत संघ इससे मना न कर सके, इसलिए उन्होंने स्वयं ही प्रस्तावित किया कि दोनों पक्ष, संगलनीय पदार्थो (fission materials) का उपयोग हथियारों

(Eisenhower), और मोलोतोव (Molotov)[21] उन्हें परिचित थे, परंतु उनके पास कोई आदमी नहीं था, जिसके सामने वे प्रश्न रख पाते। वह अक्सर नहीं जानते थे कि व्यक्ति और घटनायें, आपस में किस प्रकार एक दूसरे से सम्बन्धित थीं। अब वे प्रसन्न थे, क्योंकि उन्हें कोई मिल गया था, जिससे वे सभी प्रश्नों को पूछ सकते थे, जिनके सम्बन्ध में वे वर्षों से उलझन में थे।

ये लगभग तीन बजे का समय होगा, जब सोपोन खेन्पो (Sopon khenpo) ये बताने के लिए आये कि ये खाने का समय था। ये वह मठाध्यक्ष था, जिसका कर्तव्य दलाईलामा की शारीरिक देखभाल करना था। जब उन्होंने ये संदेश दिया, मैं विदाई का आदेश समझते हुए, तुरंत अपने पैरों पर खड़ा हुआ परंतु देवीय राजा ने मुझे पुनः खींच कर नीचे बैठा दिया और मठाध्यक्ष को फिर से, बाद में आने के लिए कहा। तब उन्होंने अत्यधिक नम्रता के साथ, मुख्य पृष्ठ पर सभी प्रकार के चित्रांकनों के साथ, एक अभ्यास पुस्तिका उठाई और मुझे अपने काम को देखने के लिए कहा। मेरे आश्चर्य के लिए मैंने देखा कि वह अंग्रेजी वर्णमाला के केपीटल अक्षरों का अनुवाद कर रहे थे। क्या प्रतिभा और क्या पहल! जटिल यांत्रिकी उपकरणों के साथ, श्रमसाध्य धार्मिक अध्ययन, और अब आधुनिक भाषायें। उन्होंने जोर दिया कि मुझे तुरंत ही उन्हें, तिब्बती अक्षरों के साथ भव्य उच्चारणों में बदलते हुए, अंग्रेजी पढ़ाना शुरू करना चाहिए। अगला घंटा गुजर चुका होगा, जब सोपोन खेन्पो फिर आये और इस बार जोर ड़ाला कि उनका स्वामी अपने रात्रिभोज को ले ले। उनके पास, अपने हाथ में, चकतियों की एक डिश, सफेद रोटी और भेड़ का पनीर था, जो उन्होंने जबरदस्ती मुझे दे दिया। चूँकि मैं इसे मना करना चाहता था, उन्होंने खाने को, मुझे अपने घर जाने के लिए, एक सफेद कपड़े में लपेट कर बांध दिया।

परंतु दलाईलामा अभी भी, हमारे वार्तालापों को समाप्त नहीं करना चाहते थे। खुशामद करते हुए स्वर में, उन्होंने अपने कप लाने वाले को थोड़ा और इंतजार करने के लिए कहा। अपने प्रभार की एक प्रेमपूर्ण निगाह के साथ, मठाध्यक्ष सहमत हुआ और हमें छोड़ गया। मुझ में ये भावना आई कि वह बच्चे के प्रति इतना लगाव रखता था और उनके प्रति इतना समर्पित था, मानो कि वह उनका पिता हो। इस सफेद बाल वाले पुरखे ने तेरहवें दलाई लामा की, उसी सामर्थ्य के साथ सेवा की थी और सेवा में बना रहा था। चूँकि तिब्बत में, जब कभी भी, स्वामी का परिवर्तन होता है, नौकरों का भी परिवर्तन होता है, ये उसके विश्वासपात्र और बफादार होने लायक, एक महान श्रद्धांजलि थी। दलाईलामा ने प्रस्तावित किया कि मैं उनके परिवार से मिलूं, जो गर्मियों में नोरबूलिंगा में रहता था। उन्होंने मुझे, जब तक कि वह मुझे बुला नहीं लें, उनके घर में प्रतीक्षा करने के लिए कहा, जब मैंने उनसे विदा ली, उन्होंने मुझसे गरमजोशी के साथ हाथ मिलाया–उनके लिए एक नया संकेत।

जैसे ही मैं खाली बाग में हो कर चला और प्रवेश द्वार की चटकनियों को वापस बन्द किया, मैं मुश्किल से ही अनुभव कर सका कि मैंने लामा भूमि के देवीय शासक के साथ, मात्र पॉच घंटे वहॉ व्यतीत किये हैं। एक माली ने मेरे पीछे का दरवाजा बंद किया, और प्रहरी ने, जो जब से मैं आया, एक से अधिक बार बदल दिया गया था, कुछ आश्चर्य में सशस्त्र सलामी दी। मैं धीमे से सवार हो कर ल्हासा की तरफ वापस चला और, परन्तु चकतियों के बण्डलों, जिन्हें मैं ढ़ो रहा था, के लिये मैंने सोचा कि ये सब एक सपना था। जिस पर मेरे मित्रों और मुझे विश्वास करना था, यदि मैं उन्हें बताता कि मैं अभी, कई घंटे, दलाईलामा के साथ, एकान्त में, वार्तालाप में अकेला बिता कर आया हूँ ?

ये कहना अनावश्यक होगा, कि मैं अपने नये कर्तव्यों से, जो मुझ पर थोक में आ गये थे, बहुत प्रसन्न था। इस चतुर लड़के को–उस देश के राजा को, जो फ्रांस, स्पेन, और जर्मनी को एक साथ मिला कर भी, उनसे बड़ा था–ज्ञान और पश्चिमी विश्व के विज्ञान को पढ़ाना, कम से कम, कहने के लिए तो एक महत्वपूर्ण काम दिखाई दिया।

के रूप में न करके, केवल शांति, जैसे कि विद्युत उत्पादन, के लिए करेंगे। इस प्रस्ताव को ''शान्ति के लिये परमाणु (Atom for Peace) ''नाम दिया गया। 1954 में आइजनहावर ने डोमिनो थ्योरी (Domino Theory), जिसका उद्देश्य दक्षिण–पूर्व एशिया तथा मध्य–अमेरिका में साम्यवाद का विस्तार रोकना था, प्रस्तावित की। उनका विश्वास था कि यदि साम्यवादियों को वियतनाम में अपनी गतिविधियां जारी रखने दी जायें तो उनका विस्तार मलेशिया, इंडोनेशिया और भारत में होते हुए लाओस तक हो जायेगा और इस तरह साम्यवाद का विस्तार, विश्व के अधिकांश देशों में हो जायेगा। इसलिए वियतनाम में अमेरिकी लड़ाई, वर्षों तक चलती रही। दिसम्बर 1954 में ताइवान के साथ ''सिनो अमेरिकन म्युचल डिफेंस ट्रीटी''(Sino American Mutual Defense Treaty) की। उनका निधन 28 मार्च 1969 को, वॉल्टर रीड आर्मी हॉस्पीटल वाशिंगटन डी.सी.(Walter Reed Army Hospital Washington D.C.) में हुआ था।

21 अनुवादक की टिप्पिणी : व्याचेस्लाव मोलोतोव (Vyacheslav Molotov) (9 मार्च 1890–8 नबंवर 1986) एक सोवियत नेता और कूटनीतिज्ञ थे। वे सोवियत कम्यूनिस्ट पार्टी के प्रमुख तथा 1939 सें 1949 तक और 1953 से 1956 तक, सोवियत संघ के विदेश मंत्री रहे। बाद में इन्हें सोवियत राष्ट्रपति निकिता खुश्चेव (Nikita Khrushchev) द्वारा हटा दिया गया। मोलोतोव ने नाजी–सोवियत अनाक्रमण संधि 1939 (मोलोतोव–रिबनट्रोव संधि, (Molotov Ribbentrop Pact)) पर हस्ताक्षर किये थे। द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद, पश्चिमी मित्र राष्ट्रों के साथ बातचीत करने में मोलोतोव की विशेष भूमिका रही।

उसी शाम को, मैंने कुछ समीक्षाओं को देखा जो कि जेट विमानों के निर्माण की विस्तृत जानकारी से भरी हुईं थीं, जिसके सम्बन्ध में, मेरे युवा शिष्य ने एक दिन प्रश्न पूछा था, जिनका उत्तर मुझे उस दिन पता नहीं था। मैंने उन्हें अपनी अगली मुलाकात में, पूरा स्पष्टीकरण देने का वायदा किया था। जैसे जैसे समय गुजरता गया, चूँकि मैं इस चतुर विद्यार्थी की पढ़ाई में कुछ पद्धति लागू करना चाहता था, मैंने हमेशा अगले पाठ की सामिग्री तैयार की।

मुझे, उनकी कभी संतुष्ट न होने वाली उत्सुकता, जो उन्हें मुझसे ऐसे प्रश्न, जो हर बार नये क्षेत्रों को खोल देते, के कारण, पूछने के लिए संचालित करती थी, कई बार धक्के लगे। इन प्रश्नों में से अनेक के उत्तर, मैं अपने सर्वाधिक ज्ञान के अनुसार, दे सकता था। उदाहरण के लिए, परमाणु बम के ऊपर चर्चा करने में समर्थ बनाने के लिये, मुझे उन्हें तत्वों के सम्बन्ध में बताना पड़ा, जो उनको धातुओं की औपचारिक चर्चा के ऊपर ले गया, जिसके लिए तिब्बती भाषा में कोई प्रारम्भिक शब्द नहीं है, इसलिए मुझे विभिन्न प्रकार की धातुओं के सम्बन्ध में विस्तार में जाना पड़ा–एक ऐसा विषय जो, वास्तव में, प्रश्नों की बर्फीली चट्टान नीचे लाया।

ल्हासा में मेरे जीवन ने, एक नया चरण प्रारम्भ कर दिया था। मेरे अस्तित्व का एक लक्ष्य था। मैं अब और अधिक असंतुष्ट या अपूर्ण महसूस नहीं करता था। मैंने अपने पहले के कर्तव्यों को नहीं छोड़ा। मैं अभी भी, मंत्रिमण्डल के लिये समाचार एकत्रित करता था; मैं अभी भी नक्शे बनाता था। परंतु अब, दिन अत्यधिक छोटे हो गये थे, और मैं अक्सर रात में देर तक काम करता था। मेरे पास आनन्द और शौकों के लिए बहुत थोड़ा समय था, क्योंकि जब भी दलाईलामा मुझे बुलाते, मुझे मुक्त होना पड़ता। सुबह पार्टियों में जाने के बजाय, जैसा कि दूसरे लोग करते थे, मैं दोपहर बाद, देर से आता था। परंतु ये कोई त्याग नहीं था। मैं अपनी चेतना में प्रसन्न था, कि मेरे जीवन का कुछ लक्ष्य था। घंटे, जो मैं अपने शिष्य के साथ गुजारता, मेरे लिए भी उतने ही शिक्षाप्रद होते थे, जितने कि उनके लिए। उन्होंने मुझे तिब्बत के इतिहास और बुद्ध की शिक्षाओं के सम्बन्ध में, बहुत कुछ पढाया। वह इन विषयों के ऊपर वास्तविक अधिकारी व्यक्ति थे। हम धार्मिक विषयों पर, अक्सर घंटों तक बहस करते थे और वह आश्वस्त थे कि वह मुझे बौद्ध धर्म में परिवर्तित करने में सफल होंगे। उन्होंने मुझे बताया कि वह पुरातन रहस्यों की जानकारी वाली पुस्तकों का अध्ययन कर रहे थे, जिनके द्वारा शरीर और आत्मा को पृथक किया जा सकता था। तिब्बत का इतिहास, ऐसे संतों के बारे में कहानियों से भरा पड़ा है, जिनकी आत्मा, अपने भौतिक शरीरों से सैंकड़ों मील दूर रह कर, कार्यों को सम्पन्न करती थी। दलाईलामा सहमत थे कि उनके धर्म में विश्वास के कारण, और पूर्व निश्चित रीति रिवाजों को पूरा करने के साथ–साथ, वह साम्ये जैसे सुदूर स्थान में, इन चीजों को करने में सफल होंगे। जब उन्होंने पर्याप्त प्रगति कर ली, उन्होंने मुझे बताया कि वे मुझे वहॉ भेजेंगे और ल्हासा से मुझे निर्देशित करेंगे। मुझे हॅसी के साथ, उन्हें ये कहा हुआ याद है, ''ठीक है कुन्दुन, जब तुम इसे कर सकोगे, मैं भी एक बौद्ध बन जाऊँगा।''

दुर्भाग्यवश, वह इस प्रयोग को कभी पूरा नहीं कर सके। हमारी मित्रता की शुरूआत, राजनैतिक बादलों के कारण, अंधेरे में छा गई थी। पीकिंग रेडियो का स्वर लगातार गर्वीला और कठोर होता गया और च्यिांग काई–शेक (chiang Kai-shek)[22], फोरमोसा (Formosa) की अपनी सरकार से, पहले ही हट चुका था। ल्हासा की राष्ट्रीय परिषद ने, एक के बाद एक, बैठकें कीं, नई सेनायें खड़ीं की जा रही थीं, श्यो में परेड और सैनिक अभ्यास किये जा रहे थे, और स्वयं दलाईलामा ने, सेना के नये ध्वज प्रतिष्ठित किये।

चूँकि हर सैनिक इकाई को, कम से कम एक प्रसारण सेट रखना आवश्यक था, अंग्रेज रेडियो विशेषज्ञ, फॉक्स, को बहुत कुछ करना पड़ा।

तिब्बत की राष्ट्रीय परिषद, जिसके द्वारा सभी महत्वपूर्ण राजनैतिक निर्णय लिये जाते हैं, पचास धर्म निरपेक्ष और भिक्षु अधिकारियों से बनती है। परिषद की अध्यक्षता, ड्रेबुंग, सेरा और गांडेन लामामठों के चार मठाध्यक्षों

---

22 अनुवादक की टिप्पिणी : च्यिांग काई–शेक (Chiang Kai-Shek) (31 अक्टूबर 1887–5 अप्रैल 1975), एक चीनी राजनेता और सैनिक अधिकारी था, जो 1928 से 1975 के बीच, चीनी गणराज्य का प्रमुख रहा था। वह चीनी राष्ट्रवादी पार्टी का प्रभावशाली सदस्य था। 1928 से 1948 के बीच उसने चीनी राष्ट्रीय सैनिक परिषद् के अध्यक्ष के रूप में कार्य किया। च्यिांग काई–शेक की शिक्षा जापान में हुई थी और उसने 1909 से 1911 तक, जापानी राजशाही सेना (Imperial Japanese Army) में नौकरी की थी। 1949 में, चीनी जनक्रान्ति (Chinese Civil War) में चीनी साम्यवादी दल (Chinese Communist Party, CCP) ने राष्ट्रवादियों को मात देते हुए, पीपल्स रिपब्लिक ऑफ चाइना (People's Republic of China) की सरकार स्थापित की और चीन की सरकार और सेना को ताइवान खदेड़ दिया। 1975 में, 26 वर्ष बाद, च्यिांग काई–शेक ताईवान आया और वहॉ ताईपेल (Taipel) में 87 वर्ष की आयु में उनका निधन हुआ। इस अवसर पर एक माह का राष्ट्रीय शोक घोषित किया गया और चीनी संगीत रचयिता च्यांग यायु ताइ ने च्यिांग काई–शेक की स्मृति (Chiang Kai-shek Memorial Song) में गायन किया। ताइवान को, वहॉ की जनता, अभी भी स्वतंत्र राष्ट्र मानती है जबकि चीन उस पर अपना अधिकार जताता है।

के द्वारा की जाती है, इनमें से एक भिक्षु और एक वित्तीय सचिव, उनके साथ जुड़ा हुआ होता है। राष्ट्रीय परिषद के दूसरे सचिव, भले ही वे धर्मनिरपेक्ष या धार्मिक हों, विभिन्न सरकारी कार्यालयों से संबद्ध होते हैं, परंतु चार मंत्रिमण्डलीय मंत्रियों में से कोई भी, सदस्य नहीं होता। संविधान प्रावधान करता है कि मंत्रिमण्डल को बगल से लगे हुए प्रकोष्ठ में मिलना चाहिए और उसे अपने वीटो (veto) के अधिकार धारण किये बिना, मंत्रिपरिषद के सभी निर्णयों को देखना चाहिए। सभी प्रश्नों में, अंतिम निर्णय दलाईलामा का अथवा, उसके बदले में शासनाधिकारी का, यदि वह अभी भी अवयस्क है, होगा। वास्तव में, ऐसे एक उच्च अधिकारी से आने वाले किसी प्रस्ताव पर, कोई भी चर्चा करने का दुस्साहस नहीं कर सकता था।

कुछ वर्ष पहले तक, तथाकथित महान राष्ट्रीय परिषद, हर वर्ष आयोजित की जाती थी। ये संस्था, अधिकारियों के साथसाथ, दस्तकारों– दर्जी, राजमिस्त्री, बढ़ई आदि के संघों के प्रतिनिधियों को मिला कर बनी होती थी। लगभग पॉच सौ लोगों की ये वार्षिक बैठकें, चुपचाप विछिन्न कर दी गईं। वास्तव में, कानून के शब्दों को संतुष्ट करने के अतिरिक्त, उनका कोई मूल्य नहीं था। वास्तव में, शासनाधिकारी की शक्तियॉ सर्वोपरि थीं।

इन कठिन समयों में, राजकीय ज्योतिषी से अनेक बार परामर्श किया जाता था। उसके भविष्य कथन अंधकारमय थे और लोगों के मनोबल को बढ़ाने में मदद नहीं करते थे। वह कहा करता था, ''उत्तर और पूर्व की तरफ से, एक शक्तिशाली दुश्मन, हमारी पवित्र भूमि को धमका रहा है'' अथवा, ''हमारा धर्म खतरे में है,'' सभी परामर्श गुप्त रखे जाते थे, परंतु राज्यज्योतिषी की उक्तियॉ, जनता में रिस जाती थीं और अफवाहों के द्वारा चारों तरफ फैल जाती थीं। जैसा कि युद्ध और संकट के समय में सामान्य होता है, पूरा शहर मधुमक्खियों की तरह अफवाहों से गूंज उठता, और दुश्मन की ताकत, सभी आयामों में, आश्चर्यजनक रूप से, बढ़ जाती थी। भाग्य बताने बालों का अच्छा समय था, चूँकि न केवल देश का भाग्य तुला पर था, परंतु हर व्यक्ति अपनी खुद की भलाई के सम्बन्ध में जानना चाहता था। सदा से अधिक, लोग देवताओं की सलाह चाहते थे, शकुनियों से परामर्श करते थे, और हर घटना से अच्छा या बुरा अर्थ निकालते थे। दूरदृष्टि वाले लोगों ने पहले से ही अपने खजानों को दक्षिण में या किन्हीं दूर के राज्यों में, बाहर भेजना शुरू कर दिया था। परंतु कुल मिला कर, लोग विश्वास करते थे कि देवता लोग उनकी सहायता करेंगे और तब कोई चमत्कार, देश को युद्ध से बचा लेगा।

राष्ट्रीय परिषद के विचार गम्भीरतर थे। अंत में, उनको ये स्पष्ट हो चुका था कि अलगथलग पड़े रहना, देश के लिए एक गम्भीर संकट प्रस्तुत कर सकता था। ये विदेशी राज्यों के साथ कूटनीतिक सम्बन्ध स्थापित करने और पूरी दुनियॉ को बताने के लिए कि तिब्बत स्वतंत्र रहना चाहता था, ऊँचा समय था। यहॉ तक, चीन का दावा कि तिब्बत उसका एक राज्य था, बिना किसी विवाद के बना रहा। समाचार पत्र और रेडियो, देश के बारे में, जो वे चाहें, कह सकते थेः तिब्बत से इस सम्बन्ध में कभी कोई उत्तर नहीं मिला। सरकार ने, अपनी पूर्णतः उदासीनता की नीति की पुष्टि में, स्वयं को दुनियॉ को समझाने से मना कर दिया था। अब इस रवैये का खतरा पहचान लिया गया था, और लोग प्रचार के महत्व को समझने लगे थे। ल्हासा रेडियो, हर दिन तिब्बती, चीनी और अंग्रेजी भाषाओं में विचारों को प्रसारित करता था। सरकार के द्वारा, पेकिंग, दिल्ली, वाशिंगटन, लंदन की यात्रा करने के लिए, शिष्टमण्डल नियुक्त किये जा चुके थे। मठीय अधिकारी और नोजवान भद्रपुरुष, जिन्होंने भारत में रह कर अंग्रेजी सीखी थी, उनके सदस्य थे परंतु, वे कभी भारत से बाहर नहीं गये। उनकी खुद की सरकार के अनिश्चय और महान शक्तियों की कूटरचना के लिये धन्यवाद।

नौजवान दलाईलामा ने परिस्थितियों की गम्भीरता को भॉपा, परंतु उन्होंने एक शांतिपूर्ण निष्कर्ष के आने की आशा करना बंद नहीं किया। अपनी यात्रा के दौरान मैंने निरीक्षण किया कि आगामी शासक राजनैतिक मामलों में कितनी जीवन्त रुचि लेगा। हम हमेशा, छोटे से सिनेमा वाले थियेटर में अकेले मिलते थे, और मैं अक्सर आते हुए संकेतों से, ये समझने में समर्थ था कि मेरे आने को, वह कितना आगे तक देखते थे। कई बार वह मेरा अभिवादन करने के लिए, प्रसन्नता से भरे हुए और अपने हाथ को पकड़े हुए, उद्यान के आरपार दौड़ते हुए आते। उनके प्रति गर्मजोशी की मेरी भावनाओं और इस तथ्य, कि उन्होंने मुझे अपना मित्र कहा, के बावजूद, और तिब्बत का भविष्य का राजा होने के कारण, मैं हमेशा उन्हें सम्मान प्रदर्शित करने की चिंता करता था। उन्होंने मुझे, खुद को अंग्रेजी, भूगोल और गणित पढ़ाने का प्रभार दिया था। इसके अतिरिक्त, मैं उनके चलचित्रों की भी देखभाल करता था और उन्हें विश्व की घटनाओं में परिचित बनाये रखता था। उन्होंने अपनी तरफ से ही मेरे वेतन को बढ़ा दिया था, यद्यपि वह अभी भी, संवैधानिक रूप से, आदेश जारी करने के लिये अधिकृत नहीं थे, उन्हें उन लोगों को कार्यपालन करने के लिए, केवल अपनी इच्छा जाहिर करनी थी।

उन्होंने अपनी समझने की शक्तियों, अपनी जिद, और अपने उद्योगके द्वारा, लगातार मुझे आश्चर्य में ड़ाला। जब मैं उन्हें, दस वाक्यों का अनुवाद करने का गृहकार्य देता, वे अक्सर बीस दिखाते थे। जैसे कि अधिकांश तिब्बती होते हैं, वह भाषाओं को सीखने में बहुत तेज थे। उच्चवर्ग के लोगों और व्यापारियों के लिए मंगोलियन, चीनी, नेपाली, और हिन्दी भाषाओं में बोलना, काफी सामान्य है। अक्षर एफ, जो तिब्बती भाषा में नहीं मिलता, का उच्चारण करना, मेरे शिष्य की सबसे बड़ी परेशानी थी। चूँकि मेरी अंग्रेजी, पूर्णतः अलग थी, हम एक उठाऊ (portable) रेडियो के ऊपर, अंग्रेजी खबरों को सुना करते थे और इमला की गति से बोले गये गद्यांशों का लाभ उठाते थे।

मुझे बताया गया था कि सरकारी कार्यालयों में से एक में, अंग्रेजी की स्कूल पुस्तकें, काफी संख्या में पेटियों में सीलबंद थीं। मंत्रिमण्डल को एक संकेत दिया गया, और उसी दिन, पुस्तकों को नोरबूलिंगा में भेज दिया गया। हमने नाट्यघर में, उनके लिए एक छोटा पुस्तकालय बनाया। मेरा शिष्य, इस आविष्कार, जो ल्हासा के लिए सामान्य से कुछ अलग हट कर था, पर प्रसन्न था। जब मैंने ऐसी भावना और ज्ञान की प्यास देखी, मुझे अपने खुद के बचकानेपन पर, काफी शर्म महसूस हुई। वहाँ बड़ी संख्या में कुछ अंग्रेजी पुस्तकें और तेरहवें दलाईलामा के राज्य के नक्शे भी थे, परंतु मैंने ध्यान दिया कि वे एकदम नई दिखाई देती थीं और स्पष्टरूप से, पढ़ी नहीं गई थीं। बाद के शासक ने, अपनी भारत और चीन की यात्रा के दौरान, इनको काफी पढ़ लिया था और सर चार्ल्स बैल्स[23] के साथ, ये उनकी मित्रता ही थी कि उनके पास पश्चिमी विश्व का इतना ज्ञान था। मैं इस अंग्रेज के नाम से पहले से ही परिचित था और अपनी नजरबंदी के दौरान, उनकी पुस्तकों को पढ़ चुका था। वह तिब्बती स्वतंत्रता के बड़े हिमायती थे। सिक्कम, तिब्बत और भूटान के राजनैतिक सम्पर्क अधिकारी के रूप में, उन्होंने दलाईलामा को भारत भाग जाने की सलाह दी। ये दो व्यक्तियों के बीच, एक प्रगाढ़ मित्रता, जो अनेक वर्षों तक चली, की शुरूआत थी। निस्संदेहरूप से, सर चार्ल्स बैल, दलाईलामा के सम्पर्क में आने वाले, पहले श्वेत व्यक्ति थे।

मेरा नौजवान शिष्य, अभी भी यात्रा करने की स्थिति में नहीं था, परंतु इसने, उनकी विश्व के भूगोल, जो शीघ्र ही, उनका पसन्दीदा विषय बन गया था, में अभिरुचि को कम नहीं किया। मैंने उनके लिए विश्व, एशिया और तिब्बत के बड़े नक्शे बनाये। हमारे पास एक गोला था, जिसकी सहायता से मैं उन्हें स्पष्ट करता था कि, रेडियो न्यूयोर्क, ल्हासा से ग्यारह घंटे पीछे क्यों था। उन्होंने शीघ्र ही, सभी देशों में घर जैसा अनुभव किया और वे काकेसस (Caucasus) से उतने ही परिचित थे, जितने कि हिमालय से। वह इस तथ्य पर विशेषरूप से गर्व करते थे कि विश्व की सर्वोच्च चोटी, उनके सीमान्त पर थी, और दूसरे अनेक तिब्बतियों की भाँति, ये जान कर चकित थे कि क्षेत्रफल में केवल कुछ देश ही, उनके राज्य से बड़े थे।

उस गर्मी में, हमारे शांतिमय पाठ, एक अवांछित घटना से प्रभावित हुए। पन्द्रह अगस्त को, एक भयंकर भूचाल ने, पवित्र शहर में भगदड़ पैदा कर दी। एक दूसरा बड़ा अपशगुन! जनता, एक पुच्छल तारे (comet) के दिखने के प्रभाव से, जो पिछले वर्ष, एक चमकते हुए घोड़े की पूछ की तरह से, रात दिन, आकाश में दिखाई पड़ा था, मुश्किल से ही, अपने भय से उबर सकी। पुराने लोगों को याद था कि, पुच्छल तारे का पिछला दर्शन, चीन के साथ युद्ध के, पूर्वलक्षण के रूप में रहा था।

भूचाल, पूरी तरह से किन्हीं पूर्वाभासी झटकों के बिना और आश्चर्य के रूप में आया। अचानक ही ल्हासा के मकान हिलने लगे और किसी ने दूरी पर, कुछ चालीस, हल्के से विस्फोट सुने, पृथ्वी की चोटियों की दरारों के सम्बन्ध में कोई संदेह नहीं रहा। पूर्व की तरफ, बादल रहित आकाश में, एक काफी तीव्र चमक दिखाई पड़ी। बाद के झटके कई दिनों तक चले, भारतीय रेडियो ने, आसाम राज्य, जो तिब्बत की सीमा से लगा हुआ था, में भयंकर

---

23 अनुवादक की टिप्पिणी : सर चार्ल्स बैल (Sir Charles Alfred Bell) (31 अक्टूंबर 1870–8 मार्च 1945) भूटान, सिक्कम और तिब्बत के लिये ब्रिटेन के राजनैतिक अधिकारी थे। उन्हें ''तिब्बत के लिये ब्रिटेन का राजदूत'' कहा जाता था। उनका जन्म कलकत्ता में हुआ था। उनके पिता हैनरी बैल, एक आइ. सी. एस. (ICS) अधिकारी थे चार्ल्स बैल की शिक्षा विनचेस्टर स्कूल और न्यू कालेज, ऑक्सफोर्ड में हुई। चार्ल्स बैल, 1891 में आइ. सी. एस. (ICS) अधिकारी बने और उनके अगले नौ वर्ष, बंगाल बिहार और उड़ीसा में विभिन्न पदों पर गुजरे। 1900 में उन्हें दार्जिलिंग में स्थान्तरित कर दिया गया और यहीं वे तिब्बती लोगों के सम्पर्क में आये और उन्होंने तिब्बती भाषा सीखी। 1904–05 में उन्हें चुम्बीघाटी, जिसे यंगहसबैंड संधि के अंतर्गत अस्थाई रूप से ब्रिटेन को सौंप दिया गया था, का प्रशासनिक प्रभार दिया गया। इस समय में बैल की मुलाकात तेरहवें दलाईलामा और उनके प्रतिनिधि, प्रधानमंत्री शात्रा (Shatra) से हुई। 1920 में, बैल को, तिब्बत की विदेश नीति पर परामर्श देने के लिये, तिब्बत की राजधानी ल्हासा जाने के लिये सरकार से आज्ञा मिली। 1921 में ल्हासा से वापस आने के बाद उन्होंने आइ. सी. एस. छोड़ दी और तिब्बत के विषयों पर पुस्तकें लिखना प्रारम्भ किया उन्होंने "Past and Present (1920)," "People of Tibet (1928)," "Religion of Tibet (1931)," लिखीं उनकी अंतिम पुस्तक "Portrait of Dalai Lama (1931)," कनाड़ा में उनके निधन से कुछ दिन पहले ही पूरी हुई थी। दलाईलामा से उनका पत्रव्यवहार काफी लम्बे समय तक जारी रहा। बैल ने मध्यएशिया, मंगोलिया, मंचूरिया, और साइबेरिया में भी अपनी यात्रायें कीं।

भूस्खलनों (landslides) की सूचना दी। पहाड़ और घाटियॉ विस्थापित हो गईं, और ब्रह्मपुत्र, जो गिरे हुए पहाड़ों द्वारा रोक दी गई थी, ने भारी तबाही पैदा की। अगले कुछ हफ्तों बाद तक ऐसा नहीं था, कि तभी स्वयं तिब्बत से, गम्भीर आपदा की खबर, ल्हासा में आई। भूकम्प का केन्द्र दक्षिण तिब्बत में रहा होगा। सैंकड़ों भिक्षु और भिक्षुणियॉ, अपने चट्टानी मठों में दफन हो गये और इन खबरों को समीपवर्ती जिला अधिकारियों तक ले जाने के लिए भी, अक्सर वहॉ कोई जीवित नहीं बचा था। आकाश की ओर इंगित करती हुई मीनारें, खण्डहर दीवारों को छोड़ते हुए, बीच में टूट गईं और मानो कि दैत्य के हाथों से खींचे गये मनुष्य प्राणी, सहसा फटती हुई धरती के अंदर गायब हो गये।

बुरे शकुन बहुगणित हो गये थे। दैत्य पैदा हो गये थे। एक सुबह, पत्थर के प्रमुख स्तम्भों में से एक, पोटाला के तले, जमीन पर टुकड़ों में पड़ा हुआ पाया गया। एक दिन, सरकार ने, उनकी प्रार्थनाओं से दुष्टात्माओं को भगाने के लिए, अपशकुनों के केन्द्रों में, बेकार में ही भिक्षु भेजे और लपट भरी गर्मी के मौसम में, जब एक दिन, प्रार्थनाघर के एक परनाले से पानी बहना शुरू हुआ, ल्हासा की आतंकग्रस्त जनता, उनके बगल से आ गई थी। निस्संदेह, इन सब घटनाओं के लिए, प्राकृतिक स्पष्टीकरण ढूंढ़ा जा सकता था परंतु यदि तिब्बती अपने अंधविश्वास को खो देते, तो वे अपनी एक पूंजी को खो देते। किसी को याद रखना चाहिए कि यदि अपशकुन, उन्हें भय के साथ, नैतिक रूप से काफी हद तक गिरा सकते हैं, तो शुभ शकुन उन्हें शक्ति और आत्मविश्वास के साथ प्रेरणा भी देते हैं। दलाईलामा को, इन सब अशुभ घटनाओं के बारे में, पूरी तरह से सूचित रखा गया। यद्यपि स्वाभाविकरूप से, वे भी उतने ही अंधविश्वासी थे, जितनी कि उनकी जनता, वह इन चीजों पर, हमेशा मेरे दृष्टिकोण को सुनने के लिए उत्सुक रहते थे। वार्तालाप के लिए, हमें कभी विषयों की कमी नहीं होती थी, और हमारा पढ़ने का समय काफी कम था। वह वास्तव में, अपना फालतू समय मेरे साथ गुजारते थे, और कुछ लोग ही ये अनुभव करते थे कि वह आगे की पढ़ाई के लिए, अपने खाली समय का उपयोग कर रहे हैं। वह अपने कार्यक्रमों के लिए समयनिष्ठ होते थे, और यदि वह आनन्द के साथ, मेरे आने की प्रतीक्षा करते, तो जैसे ही घड़ी उन्हें बताती कि हमारा वार्तालाप पूरा हो गया है, और कि धर्म का शिक्षक, किसी एक खेमे में, उसके लिए प्रतीक्षा कर रहा है, ये उन्हें टूटने से रोक नहीं पाता था।

मैंने संयोगवश, एक बार समझा कि उन्होंने हमारे पाठों में से क्या भंडारित किया। एक दिन, जिस दिन अनेक समारोह होने वाले थे, मैं नोरबूलिंगा में बुलाये जाने की आशा नहीं करता था और इसलिए मैं दोस्तों के साथ, टहलने के लिए, शहर के नजदीक एक पहाड़ी पर, चला गया। अपना टहलना शुरू करने से पहले, मैंने अपने नौकर को, यदि दलाईलामा मुझे बुला भेजें, एक दर्पण से, एक संकेत देने के लिए कहा। सामान्य समय पर, संकेत आया, और मैं अपनी सबसे तेज चाल से वापस लौटा। मेरा नौकर, एक घोड़े के साथ, प्रतीक्षा कर रहा था। तेजी से, जैसे ही मैं नाव पर चढ़ा, मैं दस मिनट विलम्ब से था। दलाईलामा मुझसे मिलने के लिए दौड़े और उन्होंने उत्तेजित हो कर यह कहते हुए, मेरे दोनों हाथ पकड़ लिये, ''इस पूरे समय आप कहॉ थे ? मैं लम्बे समय से आपकी प्रतीक्षा कर रहा था, हैनरिग।'' मैंने उन्हें, उनको परेशान करने के लिए, खुद को क्षमा करने के लिए कहा। ये केवल तभी था, तब मैंने ये अनुभव किया कि उनके लिए ये घंटे क्या अर्थ रखते हैं।

उसी दिन, उनकी मां और छोटा भाई उपस्थित थे, और मैंने उन्हें अस्सी फिल्मों से एक दिखाई, जो दलाई लामा के पास थीं। मुझे मां और बेटे को साथ–साथ देखकर बहुत दिलचस्पी हुई। मैं जानता था कि आधिकारिक रूप से, बुद्ध के अवतार के रूप में लड़के को पहचान लिये जाने के क्षण से, पुत्र या भाई के रूप में उसके ऊपर परिवार का कोई दावा नहीं होता। इस कारण से उसकी मां की यात्रा, एक प्रकार से आधिकारिक घटना जैसी थी, जिसके लिए वह अपने पूरे अलंकारों और नगीनों के साथ आई। जब वह गई, उसने उनके सामने नमन किया, और उन्होंने उसके सिर के ऊपर, आशीष में अपना हाथ रखा। इस हावभाव ने, इन दो व्यक्तियों के आपसी सम्बन्धों को, अच्छी तरह व्यक्त किया। मां दोनों हाथों से आशीष भी प्राप्त नहीं कर सकी, जो केवल भिक्षुओं और उच्च अधिकारियों को दिये जाते थे।

ये कभी कभार ही होता था कि जब हम साथ हों, हम परेशान हों। एक बार अंगरक्षक टुकड़ी का एक सैनिक, उनके लिए एक महत्वपूर्ण पत्र लाया। भारी भरकम व्यक्ति ने, अपने आपको तीन बार जमीन पर पटका, कराहने की एक आवाज के साथ, अपनी सांस को खींचा, जैसी कि शिष्टाचार की मांग थी, और पत्र को उन्हें दिया। तब वह पीछे की तरफ चलते हुए, कमरे में से चले गये और शांति से, अपने पीछे वाले दरवाजे को बंद किया। ऐसे क्षणों में, मैं अधिक सावधान रहता था कि मैंने खुद ही, शिष्टाचार पालन के विरोध में, कैसे आक्रमण

किया।

पत्र, जिसका मैंने उल्लेख किया है, दलाईलामा के सबसे बड़े भाई, चीनी राज्य के शंघाई में कुम्बुम (Kumbum) के मठाध्यक्ष, की ओर से आया था। वहॉ लाल पहले से ही शासन में थे और वे अब दलाईलामा को, उसके भाई ताग्त्सेल रिम्पोचे (Tagtsel Rimpoche) के माध्यम से, अपने पक्ष में प्रभावित करने की आशा रखते थे। पत्र में घोषणा की गई थी कि ताग्त्सेल ल्हासा के रास्ते पर था।

उसी दिन, मैं दलाईलामा के परिवार से मिलने गया। जब मैं पहुॅचा, उसकी मां ने मुझे फटकार लगाई। जब वह मेरे आने की प्रतीक्षा करते थे, ये देख कर कि वे मेरे ऊपर कितने निर्भर थे और कितनी जल्दी–जल्दी वह घड़ी को देखते थे, उनकी मां का प्यार असफल नहीं हुआ था। मैंने स्पष्ट किया कि मैं समय पर क्यों नहीं पहुॅच पाया और उन्हें ये समझाने में सफल हुआ कि मेरी असमयबद्धता, अनियमितता के कारण नहीं थी। जब मैं उनसे विदा हुआ, उन्होंने मुझसे उन्हें कभी न भूलने के लिए कहा क्योंकि उन्हें, उनके एक पुत्र को, अपने तरीके से स्वयं आनन्द प्राप्त करने के कितने कम अवसर होते हैं। शायद, ये एक अच्छी बात हुई कि उसने स्वयं देख लिया था कि हमारे पाठों के घंटे, दलाईलामा के लिए क्या अर्थ रखते हैं। कुछ महीनों बाद, ल्हासा में हर व्यक्ति जान गया मैं दोपहर के करीब, सवार हो कर, कहॉ जा रहा होऊॅगा। चूॅकि मेरे आने की आशा होती थी, भिक्षु मेरी नियमित यात्राओं की आलोचना करते थे, परंतु उनकी मां, अपने बच्चे की इच्छाओं के लिए, अड़ कर खड़ी रहती थी।

अगली बार, जब मैं पीले दरवाजे में से आंतरिक उद्यान में आया, मैंने सोचा, मैंने दलाईलामा को, अपने लिए, अपनी छोटी खिड़की में से बाहर देखते हुए देख लिया है, और ऐसा लगा कि वह चश्मा पहने हुए थे। इसने मुझे आश्चर्य चकित कर दिया क्योंकि मैंने उन्हें कभी चश्मा पहने हुए नहीं देखा था। मेरे प्रश्न के उत्तर में उन्होंने मुझे बताया कि कुछ समय के लिए उनकी ऑखों में परेशानी थी और इसलिए उन्होंने अध्ययन के समय चश्मा लगाना प्रारम्भ किया था। उनका भाई, भारतीय दूतावास के माध्यम से उन्हें लाया था। शायद उन्होंने अपनी ऑखों को खराब कर लिया था। जब वे बच्चे थे, जब उसका एकमात्र आनन्द, घंटों तक ल्हासा में, अपने दूरदर्शकों में हो कर देखते रहना था। पोटाला की सांझ में, और अधिक, लगातार अध्ययन और पठन, उनकी ऑखों में ठीक से सुधार लाते हुए नहीं समझे गये। इस अवसर पर, वह अपनी भिक्षु की पोशाक के ऊपर, एक लाल जैकेट पहने हुए थे। उन्होंने स्वयं ही इसकी डिजाइन बनाई थी और उन्हें इसके ऊपर बहुत गर्व था। उन्होंने इसको केवल अपने फालतू क्षणों में पहनना चाहा। इस पोशाक के सम्बन्ध में प्रमुख भद्रता, ये तथ्य था कि, इसमें जेबें थीं। तिब्बती कपड़ों में वे नहीं होतीं, परंतु डिजाइन बनाने वाले ने, सचित्र समाचार–पत्रों और मेरी जेबों में, जेबों का अस्तित्व देख लिया था कि और ये महसूस किया था कि वे कितनी उपयोगी हो सकती हैं। अब अपनी उम्र के प्रत्येक दूसरे लड़कों की भॉति, वे अपने साथ एक चाकू, एक पेचकस, मिठाईयॉ इत्यादि ले जाने में सक्षम हुए। अब वह अपनी रंगीन पेंसिलों और फाउन्टेन पेनों को भी अपनी जेब में रखते थे और, निस्संदेह, ऐसी चीजों में आनन्द लेने वाले, वह पहले दलाईलामा थे। वह अपनी घड़ियों और दीवाल घड़ियों के संग्रह में भी अत्यधिक रुचि रखते थे, जिनमें से कुछ उन्हें तेरहवें दलाईलामा से मिली थीं। उनकी एक पसंदीदा घड़ी थी, तारीख वाली दीवाल घड़ी, ओमेगा, जो उन्होंने अपने खुद के पैसे से खरीदी थी। अल्पवयस्कता में, वह केवल उस धन का अपने विवेक से उपयोग कर सकते थे, जो उनके सिंहासन पर चढ़ाया जाता था। बाद में, पोटाला के भण्डार, खजाने, तहखाने और नगीना उद्यान, उनके लिए खोल दिये गये थे। तिब्बत के शासक के रूप में, वह दुनियॉ के धनाढ्यतम व्यक्तियों में से एक बन गये थे।

अब पहली बार, किसी ने, आवाजों को सार्वजनिक रूप से, यह कहते हुए सुना कि दलाईलामा की वयस्कता, इससे पहले कि वे अपनी सामान्य अवस्था को पहुँचें, आधिकारिक रूप से घोषित की जायेगी। इन मुश्किल समयों में, जनता एक युवा, दोष रहित शासक को सिंहासन पर चाहती थी और भ्रष्ट और अलोकप्रिय गुट, जो उसके शासनाधिकारी के आसपास था, की दया पर और अधिक नहीं रहना चाहती थी। वर्तमान शासन, किसी भी विचार से, समर्थन के लिये सही नहीं बैठ रहा था, और जनता, जिस के ऊपर, जबरन युद्ध थोपा जा रहा था, के लिये एक उदाहरण नहीं था।

इस समय के करीब, ल्हासा में, कुछ अभूतपूर्व अनौपचारिक घटना घटी। एक सुबह हमने, नोरबूलिंगा की तरफ जाने वाली सड़क की दीवारों पर, ''दलाईलामा को शक्ति दो (give the Dalai Lma the power),'' इस लिखावट के साथ पोस्टर लगे हुए पाये। इस अपील के समर्थन में, शासनाधिकारी के पक्षधर लोगों के खिलाफ, अभियोगों की एक श्रृंखला आई। स्वभावतः, हमने पवित्रतम् के साथ अपनी अगली मुलाकात में, इन पोस्टरों के सम्बन्ध में बातचीत की। वह अपने भाई से, पहले से ही, इनके बारे में सुन चुके थे। ये अनुमान लगाया गया कि इसके लिए, सेरा के भिक्षु उत्तरदायी थे। दलाईलामा, बदली हुई चीजों से, जैसी वे करबट ले रहीं थीं, बिल्कुल भी प्रसन्न नहीं थे; वे अपने आपको सिंहासन के लिए परिपक्व नहीं समझते थे। वह जानते थे कि उन्हें अभी बहुत कुछ सीखना है। इस बजह से, उन्होंने इन पोस्टरों को अधिक महत्व नहीं दिया और वे अपने अध्ययन कार्यक्रम को जारी रखने में अधिक रुचि ले रहे थे। उनकी सबसे बड़ी चिंता थी कि क्या उनका ज्ञान, उनकी ही उम्र के, पश्चिमी स्कूल के किसी विद्यार्थी के बराबर है, या क्या उन्हें, यूरोप में, पिछड़े हुए तिब्बती के रूप में वर्गीकृत किया जायेगा। मैं उन्हें पूरी ईमानदारी के साथ आश्वस्त करने में सफल रहा कि, बुद्धिमत्ता में वह औसत से ऊपर थे और उनके लिए, यूरोपियन बच्चों के ज्ञान से अधिक पा लेना, आसान होगा। ये केवल दलाईलामा ही नहीं थे, जिनमें हीनता का दुर्गुण था। कोई तिब्बतियों को अक्सर ये कहते हुए सुन सकता है, ''हम कुछ नहीं जानते, हम इतने मूर्ख हैं!'' परंतु, वास्तव में, तथ्य ये है कि जो वे कहते हैं, उसका उल्टा सिद्ध होता है। तिब्बती कुछ भी हों परंतु हाजिरजवाब नहीं होते, और बुद्धि के साथ शिक्षा को मिलाते हुए, वे अपना निर्णय लेने में भ्रमित रहते हैं।

भारतीय दूतावास की सहायता से, मैं समय–समय पर, नाटक फिल्मों को, अपने सिनेमाघर के लिए प्राप्त करने मे सफल हुआ। दलाईलामा को प्रसन्न करने के लिए, मैं और अधिक विशाल कोष बनाना चाहता था। पहली नाटक फिल्म, जो मुझे प्राप्त हुई, हेनरी (पंचम) (Henry V)[24] थी और मैं ये देखने के लिए उत्सुक था कि इसके प्रति, युवक राजा की प्रतिक्रिया क्या होगी। उन्होंने अपने मठाध्यक्षों को, इसके प्रदर्शन के अवसर पर उपस्थित रहने को कहा, और जब अंधेरा हो गया, माली और रसोइये, जो पीली दीवाल के पीछे काम करते थे, सिनेमाघर में अंदर खिसक आये। जनता, सिनेमा के फर्श पर, पालथी मार कर गलीचों पर बैठी, जबकि दलाईलामा और मैं, सामान्य की तरह हॉल से प्रोजेक्शन कक्ष तक जाने वाली सीढ़ियों पर बैठे। मैंने उन्हें फुसफुसाकर, एक पाठ का अनुवाद जैसा कि बोला गया था बताया और उनके प्रश्नों के उत्तर देने का प्रयास किया। सौभाग्यवश, मुझे अपने आपको तैयार करने में, कुछ कष्ट हुआ, क्यों एक जर्मन के लिए, शेक्सपियर की अंग्रेजी को तिब्बती भाषा में अनुवाद करना आसान नहीं है। जनता, प्रेमदृश्यों, जो मैंने बाद में, जब अगली बार फिल्म को दिखाया, काट दिये थे, के द्वारा, कुछ हद तक स्तब्ध हुई। कुंदुन, सिनेमा के सम्बन्ध में उत्साहपूर्ण थे। वे महान व्यक्तियों की जीवनियों में गहराई से रुचि रखते थे और उनकी रुचि राजाओं तक सीमित नहीं थी। उन्होंने जनरलों और वैज्ञानिकों, और उनके पराक्रमों के सम्बन्ध में सब कुछ जानना चाहा। उन्होंने महात्मा गांधी के सम्बन्ध में एक समाचारवृत्त भी कई बार देखा। महात्मा, तिब्बत में उच्च आदर प्राप्त व्यक्ति थे।

मेरे पास, पहले से ही, उनके सौहार्द्र का अनुमोदन करने के कारण थे। एक बार जब हम, फिल्मों के मिले जुले गट्ठर में से फिल्में चुन रहे थे, उन्होंने हास्यकथाओं और शुद्धरूप से मनोरंजन वाली फिल्मों को एक तरफ रख दिया और उन्हें बदलने के लिए कहा। उनकी रुचि शैक्षणिक, सैनिक, और सांस्कृतिक चलचित्रों में थी। एक बार

24 अनुवादक की टिप्पिणी : हैनरी पंचम (Henry V), (9 अगस्त 1386–31 अगस्त 1422), सन् 1413 ईसवी से अपनी मृत्यु पर्यन्त इंग्लैंड के सम्राट रहे थे। 20 मार्च 1413 को पिता हैनरी चतुर्थ (Henry IV) के निधन के बाद, 9 अप्रैल 1413 को इनकी ताजपोशी हुई। अपने शासन काल में इन्होंने अंग्रेजी भाषा को बढ़ावा दिया। अपने पिता हैनरी चतुर्थ (Henry IV) के साथ इनके राजनैतिक मतभेद रहते थे। 36 वर्ष की अल्पायु में आकस्मिक निधन होने बाद, इनके पुत्र हैनरी षष्टम (Henry VI) को राजगद्दी दी गयी।

मैंने उन्हें प्रसन्न करने के लिए, घोड़ों के सम्बन्ध में उन्हें एक सुंदर फिल्म दिखाने के लिए सोचा, परंतु मुझे ये स्वीकार करना पड़ा कि इस विषय ने उनको आकर्षित नहीं किया, ''ये क्या मजाक है,'' उन्होंने कहा, ''कि पहले वाला शरीर''—जिसका तात्पर्य था, तेरहवॉ दलाईलामा—''घोड़ों का इतना अधिक शौकीन था, और जो मेरे लिए इतना कम अर्थ रखते हैं।

इस समय वह तेजी से बढ़ रहे थे, और उन्होंने नाजुक आयु के सामान्य लक्षणों को प्रदर्शित किया। एक बार उनसे एक अनावरणमापी (exposure meter) गिर गया और वह इस सम्बन्ध में, एक बेचारे बच्चे की तरह, जिसने अपना एकमात्र खिलौना तोड़ दिया हो, इतने दुःखी थे। मुझे उन्हें ये ध्यान दिलाना पड़ा कि वह एक बड़े राज्य के शासक हैं और यदि वे चाहें, वह ऐसे अनेक अनावरणमापी खरीद सकते हैं। उनकी नम्रता, मेरे लिए अनन्त आश्चर्यों का स्रोत थी। उनकी तुलना में, एक धनी व्यापारी का औसत लड़का, निश्चित रूप से, बहुत अधिक बिगड़ैल हो सकता था। उनके जीवन का रंगढंग सात्विक और एकाकी था, और अनेक दिन होते थे, जिनमें वह व्रत रखते थे और मौन रखते थे।

उनका भाई लोबसांग सामटेन, मात्र व्यक्ति, जो स्वतंत्ररूप से उनके साथ रह सकता था, यद्यपि उनसे बड़ा, परन्तु मानसिकरूप से उनकी तुलना में काफी कम विकसित था। हमारे पाठों के प्रारम्भ में, दलाईलामा ने अपने भाई पर, हमारे साथ आने के लिए, जोर ड़ाला, परंतु लोबसांग के लिए ये कर्तव्य बहुत भारी था, और उसने लगातार, मुझसे अनुपस्थिति के बहाने बनाने के लिए पूछा। उसने मेरे सामने स्वीकार किया कि वह मुश्किल से ही हमारे वार्तालाप की कोई चीज समझ सकेगा और उसे जगे रहने के लिए हमेशा संघर्ष करना पड़ता था। दूसरी तरफ, उसे सरकारी कार्यों की अधिक व्यावहारिक समझ थी और वह पहले से ही, अपने आधिकारिक कर्तव्यों के निष्पादन में, अपने भाई की मदद करने में समर्थ था।

कुंदुन ने, अपने भाई के बारम्बार के बहानों को, त्याग के रूप में लिया, जिस पर मैं आश्चर्यचकित था। जैसे कि लोबसांग ने मुझे बताया था कि वे बचपन में कितनी जल्दी गुस्सा होने वाले थे। उनके इस गुण का कोई चिन्ह भी नहीं बचा, वास्तव में वह अपनी आयु के लिए अत्यधिक उत्तेजनाहीन और गम्भीर थे। परंतु जब वह हॅसते थे, वह सामान्य बच्चे की तरह, दिल खोल कर हॅसते थे, और वह हानि रहित हास्यों के बहुत शौकीन थे। कई बार वह मेरे साथ कुश्ती लड़ने के बहाने बनाते और अक्सर, मुझे चिढ़ाने में आनन्द लेते थे।

चूंकि वह पश्चिमी विचारों के प्रभाव के लिए खुला हुए थे, फिर भी, उन्हें अपने कार्यालय की सदियों पुरानी परम्पराओं का पालन करना पड़ता था। सभी चीजें, जो दलाईलामा के व्यक्तिगत उपयोग में आती हैं, बीमारी के विरुद्ध पवित्र औषधियॉ या दुष्टात्माओं के विरुद्ध ताबीज मानी जाती थीं। केक और फल, जो मैं पवित्रतम के रसोईघर से, अपने साथ, घर लाया करता था, के लिये वहॉ भारी प्रतियोगिता होती थी और मैं अपने मित्रों को इन चीजों को उनके साथ साझा करने की तुलना में, अधिक आनन्द नहीं दे सकता था।

मैं जानता था कि वे एक दिन, अंधविश्वास के उदास कोहरे के बाहर, अपनी जनता का नेतृत्व करने के लिये कितने इच्छुक थे। हमने, अनन्त रूप से ज्ञानप्राप्ति और भविष्य के सुधारों के सम्बन्ध में सपने देखे और बातचीत की। हमने पहले ही एक योजना बना ली थी। हमने, छोटे गुटहीन देशों से, जिनकी एशिया में कोई रुचि नहीं थी, तिब्बत के लिए एक विशेषज्ञ लाने का प्रस्ताव किया था। उनकी सहायता से हम, शिक्षा और सार्वजनिक स्वास्थ्य का तंत्र बनाते और तिब्बतियों को काम पर लगाने के लिये प्रशिक्षित करते। मेरे मित्र आउफस्नाइटर के लिए, बड़ा काम सुरक्षित किया गया था। कृषि अभियंता के रूप में, उसके शेष जीवन भर के लिए, करने के लिए तिब्बत में, आवश्यकता से अधिक काम था। वह इन विचारों के प्रति, स्वयं उद्यमशील थे और उन्होंने यहॉ काम करते रहने की तुलना में, किसी भी अच्छी चीज के लिए नहीं कहा। मेरी तरफ से, वह शिक्षा को व्यवस्थित करने के प्रति, स्वयं समर्पित थे और उन्होंने विभिन्न संकायों के साथ, एक विश्वविद्यालय प्रारम्भ करने के महान कार्य को अपने हाथ में लेने का सपना देखा था। परंतु, भविष्य में हमारे लिए, अपनी दृष्टियों (visons) को लागू करने के लिए, कोई भावी योजना नहीं थी, और आउफस्नाइटर और मैं, पर्याप्त रूप से स्पष्ट दृष्टिवाले थे, झूठी आशाओं के ऊपर पोषित होने वाले नहीं। ये अपरिहार्य था कि लाल चीन तिब्बत पर आक्रमण करेगा, और वहॉ हमारे लिए, तिब्बत की स्वतंत्रता के दो मित्रों के लिए, कोई स्थान नहीं होगा।

जब हम पहले से ही, एक दूसरे के साथ, अभिन्न सम्बन्धों में थे, मैंने कुंदुन से पूछा, क्या वह हमें अपने अवतार के रूप में पहचाने जाने के सम्बन्ध में कुछ नहीं बतायेंगे, मैं पहले से ही जानता था कि वह 6 जुलाई, 1935 को कुकूनोर (Kuku-nor) झील के पड़ोस में पैदा हुए थे, परंतु जब मैंने उन्हें उनके जन्मदिन की बधाई दी,

मैं एकमात्र व्यक्ति था, जिसने ऐसा किया। तिब्बत में जन्मदिन महत्वहीन तिथियॉ होती हैं। सामान्यतः वे ज्ञात नहीं होती और वे कभी मनाई नहीं जाती। जनता के लिए, उनके शासक की जन्मतिथि पूरी तरह रुचिहीन है। वह व्यक्तिगत रूप से, एक चेनरेजी के पृथ्वी पर वापस लौटने को निरूपित करता है। भव्यता का ईश्वर, हजार जीवित बुद्धों में से एक, जिसने मानवता की मदद करने के लिए, निर्वाण का भी त्याग किया। चेनरेजी तिब्बत का संरक्षक देवता था, और उसके अवतार हमेशा बो (Bo) –जैसा कि वहॉ के मूलनिवासी, तिब्बत को कहते हैं, के राजा होते थे। मंगोलियाई शासक, अलतान खान (Altan Khan), जिसने बौद्धधर्म को स्वीकार किया था, ने अवतारों को दलाईलामा की पदवी दी। वर्तमान दलाईलामा चौदहवॉ अवतार था। लोग उसे एक शासक के बजाय, जीवित बुद्ध मानते थे और उनकी प्रार्थनायें, राजा के रूप में उतनी नहीं, जितनी कि देश के संरक्षक देवता के रूप में, उनकी तरफ निर्देशित की जाती थीं।

नवयुवक शासक के लिए, उनसे की गई मांगों को संतुष्ट करना, आसान नहीं था। वह जानते थे कि उनसे देवीय निर्णय लेने की आशा की जाती है, और कि जो आदेश उन्होंने दिये और जो कुछ भी उन्होंने किया, अचूक समझा जाता था और ऐतिहासिक परम्पराओं का एक अंग बन जाता था। वह पहले से ही, एक हफ्ते लम्बे ध्यान के माध्यम से उपवास, और अपने पद के भारी कर्तव्यों के पालन हेतु स्वयं को तैयार करने के लिए, गहन धार्मिक अध्ययन कर रहे थे। वह तेरहवें अवतार की तुलना में, काफी हद तक कम, आत्मविश्वस्त थे। त्सारोंग ने एक बार, मुझे उनमें, स्वर्गीय शासक के वर्चस्व के लक्षण को दिखाने वाला, एक खास तरह का उदाहरण दिया था। उन्होंने नये कानूनों को लागू करना चाहा परंतु उन्हें अपने परम्परागत वातावरण से, जिसने समान सन्दर्भ में, पॉचवें दलाईलामा के शब्दों का उद्धरण दिया था, कटु विरोध झेलना पड़ा। इस सम्बन्ध में तेरहवें दलाई लामा ने उत्तर दिया, ''और पॉचवॉ पूर्व शरीर कौन था ?'' इस पर, भिक्षुओं ने उसके सामने दण्डवत् किया, क्योंकि उनका उत्तर, उन्हें निरुत्तर बना चुका था। अवतार के रूप में, वह वास्तव में, न केवल तेरहवें, बल्कि पॉचवें और वैसे ही, दूसरे–दूसरे दलाईलामा भी थे। जब मैंने इस कहानी को सुना, मेरे विचार में ये आया कि तिब्बती लोग, नीरो (Nero)[25] या इवान (Ivan)[26] जैसे भयानक शासकों को न पाते हुए, कितने भाग्यशाली रहे होंगे। परंतु तिब्बतियों के लिए, ऐसा विचार कभी घटित नहीं हुआ होगा, क्योंकि ईश्वर के अशीर्वाद का अवतार, कैसे ऐसा हो सकता है, भले होने के अलावा दूसरी तरह का ?

दलाईलामा, मेरे प्रश्न का, कि उन्हें कैसे खोजा गया था, कोई संतोषजनक उत्तर नहीं दे सके। जब यह हुआ, तब वह केवल एक छोटे बच्चे थे और उनके पास, इस घटना की केवल एक धुंधली सी याददाश्त है। जब उन्होंने देखा कि मैं इस विषय में कितनी गहराई से रुचि ले रहा था, उन्होंने मुझे किसी भी एक भद्रपुरुष, जो उनके पहचाने जाने के अवसर पर उपस्थित रहे हों, से पूछ लेने की सलाह दी।

उस घटना के कुछ जीवित चश्मदीद गवाहों में से एक, सेना के प्रमुख कमाण्डर, दाज्सा कुनसांगत्से (Dzasa Kunsangtse) थे। एक शाम को, उन्होंने मुझे इस रहस्यमय घटना की कहानी सुनाई। अपनी मृत्यु से कुछ समय पहले, 1933 में, अपने पुनर्जन्म के ढंग के सम्बन्ध में, तेरहवें दलाईलामा ने ये संकेत दिये थे। उनकी मृत्यु के बाद, पारम्परिक बुद्ध की मुद्रा में, दक्षिण की ओर देखता हुआ, शरीर पोटाला में बैठा। एक सुबह यह देखा गया कि उसका सिर पूर्व की ओर घूम गया। राज्य के ज्योतिषी को, तत्काल ही, सीधे परामर्श किया गया और जब वह ध्यान में था, भिक्षु ज्योतिषी ने उगते हुए सूरज की दिशा में एक सफेद रूमाल फैंका। परंतु दो वर्षों तक, कोई भी और अधिक निश्चित चीज निर्देशित नहीं हुई। तब शासनाधिकारी, परामर्श लेने के लिए, एक प्रसिद्ध झील पर, तीर्थयात्रा के लिए गया। ये कहा जाता है कि हर व्यक्ति, जो चो खोर ग्ये (Cho Khor Gye) के पानी में देखता है, भविष्य का एक अंश देख सकता है। शासनाधिकारी, लम्बी प्रार्थनाओं के बाद, पानी की तरफ आया और उसने

---

25 अनुवादक की टिप्पिणी : नीरो (Nero) (15 दिसम्बर 0037–9 जून 0068), ईसवी सन् 0054 से 0068 के बीच रोम का एक सम्राट था। नीरो ने अपना ध्यान कूटनीति, व्यापार और सांस्कृतिक उन्नति में लगाया था। उसके समय में अनेक नाटकघर और खेलकूद तथा व्यायामशालायें स्थापित हुईं। 64 ईस्वी में, रोम का अधिकांश भाग, आग में जल गया था। कुछ लोगों का मानना है कि अपने महल के लिए जमीन साफ करने के लिए, नीरो ने ये आग खुद ही लगवाई थी। ये आग 18 जुलाई और 19 जुलाई 0064 की मध्यरात्रि में लगी थी, जो लगातार पॉच दिन तक जलती रही। इसने रोमन साम्राज्य के 14 जिलों में से 3 जिलों को पूरी तरह से जला दिया था। नीरो के संबंध में कहावत प्रसिद्ध है कि ''रोम जल रहा था और नीरो वायलिन बजा रहा था (Nero Fiddled while Rome Burned)'', जिसका अर्थ है कि सम्राट नीरो अपने आप में इतना मगन था कि उसने रोम के जलने पर अपने कर्तव्य का निर्वाह नहीं किया, और वायलिन बजाने में तल्लीन रहा।

26 अनुवादक की टिप्पिणी : ईवान (Ivan) ईवान गुलामों की भाषा में पुरुष नाम होता है, जिसका अंग्रेजी समतुल्य जॉन (John) होता है। ईवान नाम रूस, यूक्रेन, सर्बिया, बुल्गारिया, क्रोशिया आदि क्षेत्रों में काफी प्रचलित है। द्वितीय विश्वयुद्ध में, ईवान नाम का उपयोग, रूसियों को सूचित करता था। बुल्गारिया और क्रोशिया में ये नाम सर्वाधिक प्रचलित है।

दर्पण में देखा। उसे सुनहरी छतों के साथ, एक तीन मंजिला मठ, जिसके पास, चीनी किसान का एक छोटा घर, नक्काशीदार त्रिकोणात्मक शिखर (goble) खड़ा था, दिखाई दिया। दैवीय निर्देशों के आभार से भरा हुआ, वह ल्हासा लौटा और खोज के लिए तैयारी करना शुरू कर दिया। अपने अपको अनाथ महसूस करते हुए, उन्हें बचाने के लिए कोई भी दैवीय संरक्षक नहीं, इस कार्य में पूरे राष्ट्र ने, हमारे साथ सामान्यतः, परंतु गलती से, ये विश्वास करते हुए कि हर जन्म, पिछले वाले जीवन की मृत्यु के क्षण में होता है, सजीव रुचि ली। ये बौद्धधर्म की शिक्षाओं, के समर्थन में नहीं था; जो घोषणा करता है कि वर्षों गुजर सकते हैं, जबकि भगवान एक बार फिर, स्वर्ग के क्षेत्र को छोड़ते हैं और एक मनुष्य का चोला धारण करते हैं। पता लगाने के लिए 1937 के साल में फौजी दल भेजे गये। प्रदत्त संकेत चिन्हों को समझते हुए, वे पवित्र बच्चे की तलाश में पूर्व की ओर चलते गये। इन समूहों के सदस्य भिक्षु थे, और हर समूह में एक धर्मनिरपेक्ष अधिकारी था। वे सभी, अपने साथ उन चीजों को, जो तेरहवें दलाईलामा से सम्बन्धित थीं, ले जा रहे थे।

वह समूह, जिससे मुझे सूचना देने वाला सम्बन्धित था, जब तक वह चीन के शिंघाई (Chinghai) प्रान्त के आमडो (Amdo) जिले में पहुॅचा, क्येत्सांग रिम्पोचे (Kyetsang Rimpoche) के नेतृत्व में यात्रा कर रहा था। इस क्षेत्र में काफी मठ थे, लामाधर्म का महान सुधारक, त्सोंग कापा (Tsong Kapa)[27], यहॉ पैदा हुआ था। आबादी, आंशिक रूप से तिब्बती है और मुसलमानों के साथ शांति के साथ रहती है। समूह को काफी संख्या में बच्चे मिले, परंतु उनमें से कोई भी विशेषताओं के साथ संलग्न नहीं हो सका। उनको भय लगना प्रारम्भ हुआ कि वे अपने उद्देश्य में असफल हो सकते हैं। अंत में, लम्बी दूरी तक घूमने फिरने के बाद, वे सुनहरी छतों वाले एक तीन मंजिले मठ पर पहुॅचे। प्रसन्नता की एक चमक के साथ, उन्हें शासनाधिकारी की दृष्टि याद आई, और तब उनकी नजरें, एक झौंपड़ी के नक्काशीदार त्रिकोणीय शिखर के ऊपर पड़ीं। उत्तेजना से भरे हुए, उन्होंने अपने आपको, नौकरों की पोशाक में तैयार किया। ये तरीका परम्परागत है। ऐसी खोजों की अवधि में, चूंकि उच्च अधिकारियों के रूप में पहनावे वाले व्यक्ति, अत्यधिक ध्यान आकर्षित करते हें और लोगों के सम्पर्क में आने को मुश्किल बना देते हैं। नौकरों ने अपने मालिकों के कपड़े पहने, वे सबसे अच्छे कमरे की ओर ले जाये गये। जबकि वेश बदले हुए भिक्षु, रसोईघर में गये, जहॉ ये सम्भावना थी कि वे घर के बच्चे को ढूंढ लेंगे।

जैसे ही वे घर में घुसे, उन्हें निश्चित रूप से महसूस हुआ कि वे शीघ्र ही, इसमें पवित्र बच्चे को पा जायेंगे, और उन्होंने तनाव में रह कर, ये देखने की कि, क्या होता है, प्रतीक्षा की और पर्याप्त निश्चय के साथ, दो साल का एक बच्चा, उनसे मिलने के लिए दौड़ता हुआ आया और उसने लामा की स्कर्ट को पकड़ लिया, जो अपने गले में तेरहवें दलाईलामा की माला पहने हुए था। बच्चा अदम्य रूप से चिल्लाया, ''सेरा लामा, सेरा लामा!'' ये पहले से ही आश्चर्य का एक विषय था कि शिशु ने, एक नौकर की पोशाक में एक लामा को, पहचान लिया और कि उसने कहा कि वह सेरा के मठ से आया है–जो कि सही था। तब बच्चे ने माला को पकड़ लिया और तब तक उसे खींचा, जब तक कि लामा ने उसे दे नहीं दी। उसके बाद, उसने वह अपनी गर्दन में ड़ाल ली। भद्र खोजकों ने, इस बच्चे के सामने, जमीन पर अपने आपको न फेंकना (दण्डवत करना) मुश्किल पाया। चूॅकि उन्हें अब और अधिक कोई संदेह नहीं था। उन्हें अवतार मिल गया था परंतु उन्हें निर्देशित ढंग से आगे बढ़ना था।

उन्होंने कृषक परिवार से विदाई ली और कुछ दिन बाद लौटे–इस बार वेश छपाये हुए नहीं। उन्होंने पहले मां बाप से बात की, जो पहले से ही अपने बच्चों में से एक को, अवतार के रूप में धर्म को दे चुके थे, और तब वह छोटा बच्चा अपनी नींद से जगा हुआ था और शिष्टमण्डल के चार सदस्य, उसके साथ, वेदी वाले कमरे तक गये। यहॉ बच्चे की निर्धारित तरीके से परीक्षा की गई। पहले उसे चार अलग–अलग मालायें दिखाई गईं, जिनमें

27 अनुवादक की टिप्पिणी : त्सोंगखापा का सामान्य अर्थ होता है, ''प्याज की घाटी का आदमी (The Man from onion valley)''। जे त्सोंगखापा (Je Tsongkhapa) (1358 ईसवी से 1419 ईसवी) तिब्बती बौद्ध धर्म का प्रमुख शिक्षक था, जिसने गेलुग (Gelug) परंपरा का प्रारंभ किया। उसकी मां तिब्बती और पिता मंगोलियाई मूल के थे। जे त्सोंगखापा, आम्डो शहर में नोमाड परिवार में पैदा हुआ था। ऐसा कहा जाता है कि शाक्यमुनि बुद्ध ने, बोधिसत्व मंजूश्री के अवतार के रूप में आने की पूर्व घोषणा कर दी थी। वह विनय, जो व्यवहार की शिक्षा है, और उसके बाद नोरपा के छः योग, कालचक्र तंत्र और महामुद्रा के अभ्यास, का प्रसिद्ध विद्यार्थी हुआ। 24 साल की आयु में, उसे शाक्य परंपरा में भिक्षु के रूप में, पूर्ण शिष्यत्व प्राप्त हुआ। अपने अध्ययन के साथ–साथ, उसने अपने आपको गहरे ध्यान से जोड़ा। तिब्बती प्रार्थना का वार्षिक समारोह, ''मोन्लाम प्रार्थना पर्व (Monlam Prayer Festival)'' त्सोंगखापा द्वारा स्थापित किया गया था। उसने उसमें 10000 भिक्षुओं को अपनी सेवायें दी। महान प्रार्थना पर्व की स्थापना, उसके चार महान कार्यों में से एक मानी जाती है। इसमें गौतम बुद्ध के चमत्कारिक कार्यों को मनाया जाता है। त्सोंगखापा ने धर्म के अध्ययन में, तर्क के योगदान को प्रोत्साहित किया और अपने शिष्यों को गुह्य समाज, कालचक्र और हेवज्र (Hevajra) तंत्रों की शिक्षा दी। त्सोंगखापा का लेखन 18 खंडों में है, जिसमें से गुह्य समाज तंत्र सबसे बड़ा है। त्सोंगखापा ने गांडेन मठ की स्थापना की, उसके बाद ड्रेबुंग मठ की स्थापना, जामयांग चोजे (Jamyang Choje) तथा सेरा मठ की स्थापना, च्योजे शाक्य येशे (Choje Shakya Yeshe) द्वारा की गई। प्रथम दलाईलामा द्वारा ताशिलहुम्पो मठ की स्थापना की गई। न केवल पूरे तिब्बत में वल्कि चीन और मंगोलिया में भी अनेक गंलुग मठों की स्थापना हुई। उसने ल्हासा से लगभग आठ किलोमीटर दूर पबोन्का, जो आजकल सेरा मठ का भाग है, में भी कुछ समय बिताया।

से एक–सबसे अधिक पहनी गई, तेरहवें दलाईलामा की थी। लड़के ने, जो पूरी तरह बेरोकटोक था और उसमें थोड़ी सी भी झिझक नहीं थी, और बिना संकोच के उसने सही माला उठाई और उसके साथ कमरे में नाचने लगा। उसने अनेक नगाड़ों में से एक चुना, जिसे पिछला अवतार अपने नौकरों को बुलाने के लिए, उपयोग करता था। तब, देने के लिए एक नजर उस पर न डालते हुए, उसने टहलने की एक पुरानी लाठी ली, जो भी उसकी थी, उसमें हाथी दांत और चांदी का एक हेंडिल लगा था। जब उन्होंने इसके शरीर की जॉच की, उन्होंने वे सभी चिन्ह पाये, जो कि चेनरेजी के किसी अवतार में होने की अपेक्षा की जाती है; बड़े, फैले हुए कान, गर्दन पर तिल के निशान, जो चतुर्भुजी देवता की दूसरी भुजाओं के जोड़े के चिन्हों के रूप में माने जाते हैं।

शिष्टमण्डल के सदस्य अब सुनिश्चित थे कि उन्हें वह मिल गया है, जिसे वे चाह रहे थे। उन्होंने चीन और भारत के रास्ते, गुप्त कोड में, ल्हासा को भेजे जाने के लिए, बेतार का संदेश भेजा और तुरंत ही विपत्ति, जो उनके मिशन के सफल होने के कारण उन पर आ सकती थी, को बचाते हुए, उन्हें अत्यधिक गोपनीयता बरतने के निर्देश प्राप्त हुए। एक टंका, जिस पर कसीदाकारी से चेनरेजी का चित्र बनाया गया था, के सामने, चार काफिलों ने खामोशी की एक पवित्र शपथ ली, और तब, अंधे के रूप में, दूसरे बच्चों को देखने के लिए गये। किसी को ये याद रखना चाहिए कि ये खोज चीनी क्षेत्र में की जा रही थी, जिसमें सावधानी रखना आवश्यक था। इस तथ्य, कि दलाईलामा को खोज लिया गया है, को झुठला देना घातक हो सकता था क्योंकि, तब चीनियों ने एक रक्षक टुकड़ी को ल्हासा भेजने के लिए जोर दिया होता। तद्नुसार, शिष्टमण्डल के सदस्यों ने राज्य के राज्यपाल मा पुफांग (Ma Pufang) से, एक निश्चित बच्चे को ल्हासा, जहॉ अनेक प्रत्याशियों में से दलाईलामा को पहचाना जायेगा, ले जाने की आज्ञा प्रदान करने के लिए कहा। मा पुफांग ने, बच्चे को समर्पित करने के लिए, एक लाख चीनी डॉलरों की मांग की और ये राशि तुरंत ही अदा कर दी गई। ये गलती थी, चूॅकि चीनियों को अब विश्वास हो गया था कि इस बच्चे को तिब्बती लोग कितना महत्व देते थे। तब उन्होंने, फिर अतिरिक्त तीन लाख डॉलरों की मांग की। शिष्टमण्डल के सदस्यों ने अपनी पिछली गलती के प्रति सचेत होते हुए, इस राशि का एक अंश ही दिया, जो जब वे ल्हासा आये, उन्होंने स्थानीय मुसलमान व्यापारियों से, जो काफिले के साथ थे, शेष राशि के भुगतान का वायदा करते हुए, उधार लिये थे। राज्यपाल ने इस व्यवस्था के प्रति सहमति व्यक्त की।

1939 के बाद की गर्मियों में, शिष्टमण्डल के चार सदस्यों ने, अपने नौकरों, व्यापारियों, पवित्र बच्चे और उसके परिवार के साथ, ल्हासा की तरफ यात्रा शुरू की। उन्होंने तिब्बती सीमान्त, जहॉ मंत्रिमण्डल का एक मंत्री अपने स्टाफ के साथ, उनकी प्रतीक्षा कर रहा था, तक पहुॅचने से पहले, महीनों यात्रा की। उसने शासनाधिकारी की तरफ से, बच्चे को, उसकी पहचान की आधिकारिक पुष्टि करते हुए एक पत्र दिया। तब पहली बार, उसे दलाईलामा के रूप में श्रद्धा प्रदान की गई। उसके मातापिता भी, जिन्होंने निश्चित रूप से अनुमान कर लिया था कि उनका बच्चा, एक उच्च अवतार होना चाहिए, केवल अब समझे कि वह, तिब्बत के भावी शासक से कम नहीं था।

इस दिन से, छोटे दलाईलामा, उतने ही स्वाभाविकरूप से आशीर्वादों को वितरित करते थे, मानो कि उन्होंने कभी भी कोई दूसरी चीज की ही नहीं हो। उनको अभी भी, अपनी सुनहरी पालकियों में, ल्हासा में पैदा होने की स्पष्ट स्मृति थी। उन्होंने कभी इतने लोग नहीं देखे थे। पूरा शहर, नवीन शरीर धारी चेनरेजी, जो इतने वर्षों बाद, अंत में पोटाला और अपनी अनाथ जनता तक लौटे थे, का अभिनंदन करने के लिए, वहॉ था। पुराने शरीर को गुजरे हुए छै वर्ष गुजर गये थे और इनमें से, इससे पहले कि भगवान, एक मानव शरीर में, फिर से प्रविष्ट हुए, लगभग दो गुजर गये। नव वर्ष के महान उत्सवों की अवधि में, फरवरी 1940 में, दलाईलामा का सिंहासन पर बैठना, समारोह पूर्वक मनाया गया तब उसे, ''पवित्रतम (The Holy One),'' ''कोमल (Tender),'' ''भव्य (Glorious One),'' ''शक्तिशाली वक्ता (The Mighty of Speech),'' ''सर्वोत्कृष्ट समझदार (The Excellent Understanding),'' ''परम बुद्धिमत्ता (The Absolute Wisdom),'' ''धर्मरक्षक (The Defender of The Faith),'' और ''महासागर (The Ocean),'' जैसे नये नाम दिये गये।

हर व्यक्ति, बच्चे की अविश्वसनीय गरिमा और घंटों तक बनी रही गम्भीरता, जिसके साथ उसने उत्सवों में भाग लिया, के ऊपर आश्चर्यचकित था। अपने पूर्ववर्ती के सेवकों के साथ, जिनके प्रभार में वह थे, वह इतना विश्वासयुक्त और प्रेमपूर्ण था, मानो कि वह उन्हें हमेशा से जानता हो।

कमोवेश पहले आदमी से इस विवरण को सुन कर मैं बहुत प्रसन्न था। समय गुजरने की अवधि में, इन सर्वोत्कृष्ट घटनाओं के आसपास, अनेक किंवदंतियॉ जमा हो गईं और मैं पहले ही अनेक विकृत व्याख्याओं को सुन

चुका था।

बसन्तान्त आने के साथ–साथ, हमारे साथ रहने के घंटों में, अधिक, और अधिक, जल्दी–जल्दी हस्तक्षेप किया गया। नगीना उद्यान का हमारा शांत कोना भी, आने वाले तूफान की सांस को महसूस करता था। जैसे ही विपत्ति गहराई, सरकारी कामकाज में नौजवान शासक का दीक्षा समारोह, शीघ्रता से किया गया। राष्ट्रीय परिषद ने स्वयं को नोरबूलिंगा में स्थांतरित कर लिया ताकि वह महत्वपूर्ण घटनाओं को बिना विलम्ब के पवित्रतम को प्रेषित कर सके। युवा शासक ने, पूरे अधिकारी विश्व को, उनके अनुभवी होने के बावजूद, अनुचित नीतियों के विरोध में, अपनी भविष्यदर्शिता और चतुराई से आश्चर्य में ड़ाल दिया। इसमें कोई संदेह नहीं था कि राज्य का भाग्य शीघ्र ही उनको सौंप दिये जायेगा।

परिस्थितियॉ पहले से और अधिक गम्भीर हो गईं। पूर्वी तिब्बत से खबरें आईं कि चीनी घुड़सबार सेना (cavalry) और तोपखाना (infantry), हमारी सीमाओं पर जमाबड़ा कर रहे थे। यद्यपि ये स्पष्ट रूप से पहचान लिया गया था कि वे दुश्मन को रोकने में अत्यधिक कमजोर हैं, फिर भी, सैनिक टुकड़ियॉ पूर्व की ओर भेजी गईं। कूटनीतिक तरीकों से संधि तक पहुॅचने के शासकीय प्रयास व्यर्थ थे। शिष्टमण्डल, जो प्रचार के उद्देश्य से बाहर भेजा गया था, भारत में जा कर अटक गया। तिब्बत को बाहर से कोई सहायता नहीं मिल सकी। कोरिया (Korea) के उदाहरण ने, पर्याप्त स्पष्टरूप से प्रदर्शित किया कि लाल सेनाओं के विरुद्ध, संयुक्त राष्ट्र संघ का समर्थन प्राप्त करना भी अनिश्चित था। जनता ने हार के भविष्य के प्रति अपना उदासीन रुख बना लिया।

7 अक्टूबर, 1950 को, दुश्मन ने तिब्बती सीमा पर एक साथ छै स्थानों पर आक्रमण किया। पहले घेरे ने अपना स्थान ग्रहण किया परंतु दस दिनों तक, जबकि पहले तिब्बती अपने देश के लिए मर रहे थे, ल्हासा ने लड़ाई की कोई खबर नहीं सुनी। ल्हासा में त्यौहार मनाये जा रहे थे, और जनता चमत्कार की प्रतीक्षा कर रही थी। हार की पहली खबरों के बाद, सरकार ने सभी सर्वाधिक प्रसिद्ध ज्योतिषियों को तिब्बत में बुला भेजा। नोरबूलिंगा में नाटकीय दृश्य उपस्थित हुए। भूरे बाल वाले मठाध्यक्षों और अनुभवी मंत्रियों ने आवश्यकता के समय में, उनका समर्थन करने के लिए, राज्य ज्योतिषियों के सामने चिरौरियॉ कीं। दलाईलामा की उपस्थिति में, बूढ़े लोगों ने अपने आपको भविष्यदर्शी भिक्षुओं के चरणों में, उनसे एक बार ये भीख मांगते हुए कि वे उन्हें विद्वतापूर्ण सलाह दें, गिरा दिया। तन्द्रा के इस सर्वोच्च शिखर पर, राजकीय ज्योतिषी पीछे खड़े हुए और तब ''उसे राजा बनाओ!'' चीखते हुए, दलाईलामा के सामने गिर गये। दूसरे ज्योतिषियों ने भी लगभग वही बात कही और जैसा महसूस किया गया था कि देवताओं की आवाज सुने जाने की अपेक्षा की जानी चाहिए, दलाईलामा को उच्च पद के सिंहासन पर आसीन कराने के लिए तैयारियॉ प्रारम्भ कीं गयीं और तत्काल ही हाथ में ले ली गईं।

इस बीच, चीनी सेनायें, तिब्बत में सैंकड़ों मील अंदर तक घुस चुकी थीं। कुछ तिब्बती कमाण्डरों ने पहले ही समर्पण कर दिया था, और दूसरों ने, उमड़ती हुई सेनाओं के सामने लड़ाई के विरुद्ध कोई भविष्य न देखते हुए, प्रतिरोध करना बंद कर दिया था। चूॅकि प्रतिरोध निरर्थक था, पूर्व तिब्बत में, नगर के मुख्य राज्यपाल ने, समर्पण की आज्ञा मांगते हुए, ल्हासा को बेतार का एक संदेश भेजा था। राष्ट्रीय परिषद ने उसकी प्रार्थना को ठुकरा दिया, इसलिये अपनी तोपों और विस्फोटकों के जमींदस्त भण्डारों को, विस्फोट कराते हुए, वह अंग्रेजी रेडियो चालक फोर्ड के साथ, ल्हासा की दिशा में भागा। दो दिन बाद, उसने अपने रास्ते को चीनी टुकड़ियों द्वारा रोका हुआ पाया, और दोनों लोगों को गिरफ्तार कर लिया गया। रॉबर्ट फोर्ड के भाग्य के बारे में, मैं पहले से ही बता चुका हूॅ।

अब राष्ट्रीय परिषद ने, ये दावा करते हुए कि उनका देश, शांति के समय में, इस बहाने के साथ कि लाल लोगों की सेना, तिब्बत में साम्राज्यवादियों (imperialistic) के प्रभाव को सहन नहीं कर सकती, अतिक्रमण के खिलाफ मदद पाने के लिए, एक अत्यावश्यक अपील, संयुक्त राष्ट्र संघ को भेजी। पूरा विश्व जानता था, उन्होंने संकेत किया कि तिब्बत, किसी भी विदेशी प्रभाव से पूरी तरह से स्वतंत्र था। यहॉ किसी प्रकार के साम्राज्यवादी प्रभाव नहीं थे और कुछ भी मुक्त नहीं कराया जाना था। यदि कोई राष्ट्र, संयुक्त राष्ट्र संघ की सहायता के योग्य था, तो वह तिब्बत था। उनकी प्रार्थना नामंजूर कर दी गई और संयुक्त राष्ट्र संघ ने आशा जताई कि चीन और तिब्बत शांतिपूर्वक एक हो जायेंगे।

अब सबसे नीचे की बुद्धि को भी ये स्पष्ट था कि चूॅकि कोई भी बाहरी मदद आने वाली नहीं थी, तिब्बत को समर्पण कर देना चाहिए। हर आदमी अपना सामान बांधने लगा। आउफस्नाइटर और मैं जानते थे कि हमारा

जाने का समय आ गया है और अब हमने अपने दूसरे घर को खो दिया है। जाने का विचार कड़वा था, परंतु हम जानते थे कि हमें जाना चाहिये। तिब्बत ने हमारे प्रति अच्छा, सौहार्द्रतापूर्ण व्यवहार किया था और हमें, करने के लिए, काम दिये थे, जिनमें हमने अपना पूरा मन लगा दिया था। दलाईलामा को पढ़ाने का समय, जिसकी अवधि में मुझे विशेषाधिकार मिले थे, मेरे जीवन का सबसे अच्छा समय था। हमारे पास, तिब्बत की सैनिक गतिविधियों के साथ करने के लिए, जैसा कि अनेक यूरोपीय समाचार पत्रों ने जोर ड़ाल कर कहा था, कभी कुछ नहीं था।

दलाईलामा, हमारे व्यक्तिगत भविष्य के ऊपर आशंकित दिखाई दिये। मैंने उनके साथ लम्बी बातचीत की, जिसके परिणामस्वरूप, सहमति इस बात पर हुई कि मुझे चला जाना चाहिए, जैसा कि मैंने पहले से ही करने की लम्बी योजना बनाई थी। ये मुझे घूमने फिरने की अधिक स्वतंत्रता प्रदान करेगा और बिना किसी टिप्पणी के बाहर निकल जाने देगा। कुछ दिनों में, दलाईलामा पोटाला में जाने वाले थे, जहॉ कुछ समय के लिए, उन्हें मेरे पाठों के लिए, कोई समय नहीं मिलेगा। मेरी योजना पहले दक्षिणी तिब्बत में और तब शिंगस्ते की यात्रा करने की थी, जिसके बाद मुझे भारत जाना चाहिए था।

समारोह, जिसमें दलाईलामा को वयस्क घोषित किया जाना था, करीब था। सरकार ने इसे जल्दी में करने का पसंद किया होता, परंतु अनुकूल तिथियॉ, शकुनों के आधार पर निश्चित की जाने वाली थीं। उसी समय, ये निर्धारित करना कि युवा शासक के साथ क्या किया जाये, दवाब देने वाले महत्व का था। क्या उसे ल्हासा में रखा जाये या भागने दिया जाये ? अब मुश्किल प्रश्न का निर्णय पिछले अवतारों द्वारा प्रदर्शन से संचालित होते हुए किया जाना है, ये सामान्य था। इसलिए यह याद करना उचित दिखाई दिया कि चालीस साल पहले, तेरहवें दलाईलामा, आक्रमणकारी चीनियों के आने के पहले पलायन कर गये थे और उनके लिए बाद में वह चीज ठीक हुई थी परंतु, सरकार अकेले ही ऐसे क्रान्तिक (critical) निर्णय को नहीं ले सकती थी। देवताओं के शब्दों को अंतिम माना जाना चाहिए, इसलिए दलाईलामा और शासनाधिकारी की उपस्थिति में, गुथे हुए त्सम्पा में दो गोलियॉ तैयार की गईं और ये निश्चय करने के लिए कि वे दोनों एकदम समान भार की थीं, सोने के तराजू पर जॉच कर लेने के बाद, उन्हें एक सुनहरे बर्तन में रखा गया। इनमें से हर गोली के अंदर एक कागज की पर्ची ड़ाली गई थी, जिनमें से एक पर ''हॉ,'' और दूसरी पर ''ना'' शब्द लिखे थे। इस बीच, राजकीय ज्योतिषी ने अपने आपको सम्मोहित किया और वह अपना नाच कर रहा था। बर्तन को उसके हाथ में रखा गया और उसने हमेशा बढ़ने वाली चाल के साथ तब तक इसे घुमाया, जब तक कि एक गोली उसमें से कूद कर बाहर नहीं आ गई और जमीन पर नहीं गिरी। जब उसे खोला गया उसमें हॉ लिखा हुआ मिला कागज, और इसलिए ऐसा निर्णय किया गया कि दलाईलामा को ल्हासा छोड़ देना चाहिए।

चूँकि पहले मैं दलाईलामा की योजनायें जानना चाहता था, मैंने अपनी यात्रा, कुछ समय के लिए स्थगित कर दी थी। किसी भी खराब समय में, मैं उनको छोड़ देने से घृणा करता था, परंतु उन्होंने मेरे जाने के ऊपर जोर दिया और ये कहते हुए सांत्वना दी कि हम दक्षिण में फिर मिलेंगे। उनके खुद के भागने के सम्बन्ध में तैयारियॉ तेज की जा रही थीं, परंतु जनता को सजग होने से बचाने के लिए अत्यधिक गोपनीयता रखी गई थी। चीनी अभी भी, ल्हासा से करीब सौ मील दूर, पूर्व की ओर थे और उस क्षण गतिशील नहीं थे, परंतु यह भय हुआ कि उनका अप्रत्याशित आगे बढ़ना, दलाईलामा के दक्षिण की ओर भागने के अवसर को समाप्त कर सकता है।

खबरें कि शासक देश छोड़ने के लिए तैयार हो रहा था, फूट जाने के लिए बाध्य थीं। सत्य, कि उनके निजी खजाने निकाले जाने लगे थे, को छिपाया नहीं जा सका। अंगरक्षकों की टुकड़ी के प्रभार में, हर दिन, बुरी तरह लदे हुए खच्चरों के काफिले, नगर को छोड़ते हुए देखे गये। परिणाम स्वरूप, भद्र लोगों ने और अधिक हिचकिचाहट नहीं की और अपने परिवारों और खजानों को सुरक्षित स्थानों में हटाना शुरू कर दिया।

बाहरी रूप से, ल्हासा में जीवन अपनी सामान्य गति से चल रहा था। ये केवल यातायात के साधनों की कमी के कारण था कि किसी ने देखा कि अनेक लोग, अपने खुद के कामों के लिए, अपने लदे हुए जानवरों को वापस ला रहे हैं। बाजार में कीमतें थोड़ी सी चढ़ गईं। तिब्बती सैनिकों के साहसी कार्यों के व्यक्तिगत विवरण आये, परंतु ये सामान्यरूप से ज्ञात था कि सेना को बढ़ा दिया गया था। थोड़ी सी इकाईयॉ, जो अभी भी अपना आधार वहॉ रखती थीं, शीघ्र ही, दुश्मन के उत्तम तरीकों से भिड़ने के लिए भेज दी गईं।

1910 में, आक्रमणकारी चीनियों ने, जब वे ल्हासा में आये, लूटपाट की थी और उसे जलाया था और निवासी इस आक्रमण के भय के कारण, कि यही फिर दुहराया जाना है, मानो लकवाग्रस्त हो गये। तथापि, ये कहना उचित होगा कि इस वर्तमान युद्ध में, चीनी सेनायें, अपने आपको अनुशासित और सहनशील घोषित कर रही थीं और तब तिब्बती, जो पकड़ लिये गये थे उन्हें ये कहने के लिये कि उनके साथ कितने भले तरीके से व्यवहार किया गया था, छोड़ दिये गये थे।

मेरा तिब्बत छोड़ना

मैंने नवम्बर 1950 के मध्य में तिब्बत छोड़ दिया। मैं जाने के सम्बन्ध में हिचकिचा रहा था, तभी सुरक्षित यातायात के एक अवसर ने, मेरे विचार को, मेरे लिए बना दिया। आउफस्नाइटर, जो शुरू में मेरे साथ जाने का विचार रखता था, अंतिम क्षण में हिचकिचाया, इसलिए उसको अपने पीछे कुछ दिनों बाद आने के लिए छोड़ते हुए, मैंने उसका सामान अपने साथ लिया। ये भारी दिल से था कि मैंने घर, जो इतने लम्बे समय तक मेरा घर रहा था, को छोड़ा। मेरा प्रिय उद्यान, और मेरे नौकर, जो रोते हुऐ मेरे आसपास खड़े रहे। मैंने अपने साथ केवल अपनी किताबें और खजाने लिये और बाकी हर चीज, मैंने नौकरों के लिए छोड़ दी। मित्रों ने भेंट देते हुए आना जारी रखा, जिसने मेरा जाना और कठिन बना दिया। ये सोच कर थोड़ी सांत्वना थी कि उनमें से अनेक को, मैं फिर दक्षिणी तिब्बत में मिलूंगा। उनमें से अनेक अभी भी, पक्का विश्वास करते थे कि चीनी कभी ल्हासा नहीं आयेंगे और कि मेरे छोड़ने के बाद, मैं शान्तिकाल में वापस लौटने में सफल होऊँगा। मैंने उनकी आशाओं को साझा नहीं किया। मैं जानता था कि ये काफी पहले होगा कि मैं ल्हासा को देख पाऊँ, इसलिए मैंने स्थानों को, जिनसे मैं प्रेम करता आया था, सबको अलविदा कहा। एक दिन, मैं अपने कैमरे के साथ सवार हुआ और ये महसूस करते हुए कि वे भविष्य में सुखद स्मृतियों की याद दिलायेंगे और इस सुन्दर और अनजान भूमि के लिए, शायद दूसरों की सहानुभूति प्राप्त करेंगे, जितने फोटो में ले सकता था, मैंने लिये। जब मैं याक की खाल की अपनी छोटी नाव में चढ़ा, जो मुझे क्यी चू नदी में नीचे की तरफ, जहॉ तक कि ब्रह्मपुत्र के साथ अपने संगम पर ले जाने वाली थी। आसमान ऊपर था। छै घंटे की नदी की एक यात्रा ने, मुझे दो दिनों की सबारी से बचाया। मेरा सामान सड़क द्वारा आगे चला गया था। मेरे दोस्त और नौकर, किनारे पर खड़े रहे और सबने मुझे दुःख के साथ हाथ हिला कर विदाई दी। जैसे ही मैंने उनका एक आशुचित्र (snap) लिया, बहाव ने नाव को चला दिया, और नदी में नीचे की ओर तैरते हुए, मैं शीघ्र ही नजर से ओझल हो गया। मैं अपनी नजरों को पोटाला से हटा नहीं सका; मैं जानता था कि अपने दूरदर्शी में से मुझे देखते हुए, दलाईलामा, ऊपर छत पर हैं।

उसी दिन, मैंने लदे हुए चौदह जानवरों, और मेरे तथा मेरे नौकर के लिए, दो घोड़ों से बनाये हुए अपने काफिले को पकड़ लिया। बफादार नीमा ने, साथ चलने के लिए मुझ पर जोर ड़ाला। एक बार फिर, ऊँचे और नीचे खड्डों में, पहाड़ों और दर्रों पर, मैं पहाड़ी पर पैदल चला, जब तक कि एक सप्ताह बाद, भारत के लिए बड़े काफिले के रास्ते पर, हम ग्यांगस्ते (Gyangtse) नहीं पहुँचे।

काफी पहले नहीं, मेरे मित्रों में से सबसे अच्छा, इस क्षेत्र का राज्यपाल नियुक्त किया गया था। उसने अपने अतिथि के रूप में, घर में मेरा स्वागत किया, और वहॉ हमने दलाईलामा के राज्यारोहण के उत्सव को मनाया, जो पूरे तिब्बत में, बड़े भोज का दिन रखा गया था। धावकों के द्वारा इस घटना की खबरें, पूरे देश में प्रसारित की गई थीं। सभी रास्तों पर नये प्रार्थनाध्वज लहरा रहे थे, और थोड़े समय के लिए, जनता दारुण भविष्य के सम्बन्ध में विचार करना भूल गई और नाची, गाई और शराब पी। पुराने जमाने की प्रसन्नता फूट पड़ी। नये दलाईलामा ने किसी भी समय, आत्मविश्वास और आशाओं की इतनी प्रेरणा नहीं दी थी। युवा शासक, सबसे ऊपर, सभी गुटों और षडयंत्रों के ऊपर, खड़ा हुए और वे अपनी स्पष्टदृष्टि और संकल्पों के तमाम साक्ष्य दे चुके थे। अपने सलाहकारों के चुनने और खुद को धूर्त आदमियों से बचाने में, उनकी जन्मजात अन्तःप्रेरणा, उनका मार्गदर्शन करती थी।

दुःख! जैसा मैं जानता था, ये अत्यन्त विलम्ब हो चुका था। वे सिंहासन पर उस विशेष क्षण में आये थे जबकि भाग्य ने उसके विरुद्ध निर्णय कर लिया था। यदि वे कुछ वर्ष और बड़े होते, तो उनके नेतृत्व ने देश के इतिहास को बदल दिया होता।

इस महीने में मैंने, महान मठ त्राशिलहुन्पो (Trashilhumpo) के कारण प्रसिद्ध, तिब्बत के दूसरे सबसे बड़े शहर, शिंगस्ते की यात्रा की, वहॉ मैं अनेक मित्रों से मिला, जो राजधानी से आने वाली खबरों के प्रति आशंकित थे। चूँकि यह बिहार पंचेन लामा (Panchen Lama) का स्थान था, इस स्थान के लोगों ने भागने के सम्बन्ध में कम सोचा।

दलाईलामा के प्रतिद्वन्द्वी के रूप में, ये उच्च अवतार, पीढ़ियों तक चीनियों का समर्थक रहा है। वर्तमान लाभार्थी, दलाईलामा से दो साल छोटा था। उसकी शिक्षा चीन में हुई थी और उसने पींकिंग में, तिब्बत का

अधिकार सम्पन्न शासक होने की घोषणा कर दी थी। वास्तव में, उसके पास इस स्थिति का न्यूनतम दावा भी नहीं था। उसके पास मठ और अपनी भूमि में वैधानिक अधिकार थे परंतु इससे अधिक नहीं। ये सत्य है कि जीवन्त बुद्धों की श्रेणी में, ओ–पा–मे (O-pa-me), चेनरेंजी से ऊपर आता था, परंतु वास्तव में, पहला अवतार, मूलतः केवल पॉचवे दलाईलामा का शिक्षक था, जिसने उनके प्रति आभार के कारण, उन्हें एक अवतार होना घोषित कर दिया था और पर्याप्त लाभों के साथ मठ को उन्हें दे दिया था।

अंतिम पंचेनलामा के चुनाव के समय, प्रत्याशी बड़ी संख्या में थे। चीन में एक बच्चा खोजा गया था, और उस अवसर पर चीनी अधिकारियों ने, बिना किसी सैनिक संरक्षण के उसे ल्हासा ले जाये जाने के लिए मना कर दिया था। तिब्बती सरकार, इस प्रस्ताव का प्रतिरोध करने में असफल रही थी, और एक दिन, चीनियों ने साधारणरूप से, इस बच्चे को ओ–पा–मे का वास्तविक अवतार और अधिकार सम्पन्न पंचेन लामा होना घोषित कर दिया था।

इस प्रकार तिब्बत के साथ अपने राजनैतिक खेल में, उन्होंने स्वयं ही एक महत्वपूर्ण कार्ड अपने आपको बॉट लिया था और अपनी तुरप (trump) को सर्वाधिक सम्भव उपयोगी बनाना चाहते थे। चीनियों को, ये तथ्य कि वे साम्यवादी थे, अपने पक्ष में धार्मिक और अस्थाई दावों के आक्रमणकारी रेडियो प्रचार से रोक नहीं सका; फिर भी, तिब्बत में उसके थोड़े से ही समर्थक थे। ये मुख्यरूप से शिंगस्ते के निवासी और वहॉ के मठ के भिक्षु ही थे, जिन्होंने उसमें अपने प्रमुख को देखा और वे तिब्बत से स्वतंत्र होना चाहते थे। ये लोग बिना किसी भय के ''मुक्ति सेना (Army of Libration)'' की प्रतीक्षा कर रहे थे। वास्तव में, अफवाह ये थी कि पंचेन लामा, चीनियों के लिये सामूहिक कारण (common cause) होगा। चूँकि बुद्ध के अवतार के रूप में, वह अत्यधिक सम्मानित स्थान प्राप्त है, इसमें कोई संदेह नहीं है कि, तिब्बती लोग, उसके आशीर्वादों को पा कर प्रसन्न होंगे। परंतु फिर भी, यदि वह चीनियों के द्वारा, बलपूर्वक हमारे ऊपर लादा जाता है, तो तिब्बती उसे कभी अपने शासक के रूप में मान्यता नहीं देंगे।

अविवादितरूप से, ये पद तिब्बत के संरक्षक देवता दलाईलामा के लिए सुरक्षित है। इसलिए ऐसा हुआ कि, जब अपने कार्ड को खेलने का क्षण आया, चीनी लोग, तिब्बती जनता पर, पंचेनलामा को एक शासक के रूप में थोपने के अपने प्रयास में असफल रहे। पहले की भॉति, उनका अधिकार क्षेत्र, त्राशिलहुम्पो मठ तक ही सीमित बना रहा।

शिंगस्ते की अपनी यात्रा की अवधि में, मुझे मठ की यात्रा करने का मौका मिला और मैंने एक और बड़ा नगर, हजारों भिक्षुओं से आबाद पाया। सहज रूप से मैंने, कुछ फोटो लेने की व्यवस्था की। दूसरी उत्सुकताओं के साथ, मैंने एक मंदिर में, एक अत्यधिक प्रभावशाली शानदार प्रतिमा, उतनी ऊॅची जैसे कि एक नौ मंजिला भवन, एक दैत्याकार सिर के साथ पायी।

शिंगस्ते का नगर, ब्रह्मपुत्र के किनारे पर, मठ से बहुत अधिक दूर नहीं था। ये एक घड़ी के द्वारा वर्चस्व बनाते हुए, किसी को ल्हासा की थोड़ी याद दिलाता था। यहॉ दस हजार निवासी थे, जिनमें से सबसे अच्छे कलाकार तिब्बत में मिलते थे। ऊन, सहयेागी धागा उद्योग उपलब्ध कराता है। ये चांगतांग के समीपवर्ती स्थानों से, काफिले के द्वारा लाई जाती है। शिंगस्ते ल्हासा से अधिक ऊॅचा है, और वहॉ की जलवायु, विशेष रूप से ठण्डी है। फिर भी, देश में सबसे अच्छा अनाज यहॉ से आता है, और दलाईलामा तथा ल्हासा के भद्रपुरुष, अपना पूरा आटा इसी स्थान से प्राप्त करते हैं।

कुछ दिन बाद, मैंने वापस ग्यांगस्ते की ओर सबारी की। वहॉ मेरे राज्यपाल मित्र, मुझे ये खुशखबरी कि, काफी लम्बे समय पहले, दलाईलामा की ग्यांगस्ते में हो कर गुजरने की आशा की जाती थी, सुनाने के लिए मेरी प्रतीक्षा कर रहे थे। काफिले के सभी पड़ावों पर, अतिथियों का स्वागत करने के लिए तैयार रहने का निर्देश देते हुए, एक आदेश आ चुका था और एक अर्थ में, तैयारियों में सहायता करने के लिये, मैंने अपने आपको राज्यपाल के निर्णय पर छोड़ दिया।

सरायों में, जानवरों के चारे के रूप में, मटर और जौ की बहुत बड़ी आपूर्तियॉ भण्डारित की गई थीं और भीड़ भरी सड़कों को सुधारने के लिए, कामगारों की सेना एकत्रित की गई थी। मैं, राज्य में उसकी अनेक निरीक्षण यात्राओं में से एक पर, राज्यपाल के साथ गया। जब हम ग्यांगस्ते लौटे, हमने सुना कि उन्नीस दिसम्बर को दलाईलामा ने ल्हासा छोड़ दिया है और अब वह, यहॉ के लिये अपने रास्ते पर थे। ग्यांगस्ते के अपने रास्ते पर, हम लोबसांग, जो राजा के साथ यात्रा कर रहा था, को छोड़ कर, उनकी माता, सभी भाई और बहनों से मिले। मैं

तीन वर्षों में पहली बार, ताग्तसेल रिम्पोचे से भी मिला। उसको चीनियों के द्वारा, चीनी सेना का संरक्षण लेने और अपने भाई को संदेश देने के लिए, मजबूर किया गया था। चीनियों को इससे कोई लाभ नहीं हुआ, और ताग्तसेल दलाईलामा को प्रभावित करता हुआ दिखाई नहीं दिया। ताग्तसेल, चीनियों से बच कर भाग जाने पर, अत्यधिक प्रसन्न था। उसके संरक्षक को पकड़ लिया गया, और वायरलेस सम्प्रेषक (transmitter), जो वे ले जा रहे थे, उसको जप्त कर लिया गया।

पवित्र परिवार का काफिला अत्यन्त शालीन था। मां, अब अपनी जवानी के पहले चरण में, और अधिक नहीं थी और पालकी में ले जाये जाने का अधिकार रखती थी परंतु वह दूसरे लोगों की तरह सवार हुई और उसने हर दिन लम्बी दूरी तय की और मैं, दक्षिण की तरफ, अपनी यात्रा को जारी रखते हुए दलाईलामा, और अपने बच्चों और नौकरों के साथ पवित्र मां से मिलने के लिए, राज्यपाल के पहले सवार हुआ।

मेरा मित्र और मैं, (घोड़े पर) सवार हो कर लगभग तीन दिनों तक ल्हासा की सड़क पर चलते रहे, और हम कारो दर्रे (Karo pass) पर दौड़ कर पवित्रतम के काफिले के अग्रदल में शामिल हो गये। दर्रे से नीचे देखते हुए, हम लम्बी पंक्ति को, धूल के मोटे बादलों के बीच, सड़क पर घिसटते हुए देख सकते थे। दलाईलामा के पास, चालीस भद्रपुरुषों तथा मशीन गनों और छोटी (howitzers) तोपों से लैस, दो सौ चुने हुए प्रहरी सैनिकों का, एक संरक्षक दल था। नौकरों और रसोइयों की फौज पीछे चली, और पन्द्रह सौ लदे हुए जानवरों का समाप्त न होने वाला एक काफिला पीछे लाया गया।

पंक्तियों के मध्य में दो झण्डे, तिब्बत का राष्ट्रीय झण्डा और चौदहवें दलाईलामा का व्यक्तिगत झण्डा, लहरा रहे थे। झण्डे शासकीय उपस्थिति को प्रदर्शित करते थे। जब मैंने युवा देवीय शासक को, अपने स्लेटी घोड़े पर, धीमे धीमे दर्रे पर चढ़ते हुए देखा, मैंने न चाहते हुए भी एक पुरानी भविष्यवाणी के ऊपर सोचा कि जिसे ल्हासा में कई बार, लोग अपनी दबी जुबान से कहते रहते थे। एक ज्योतिषी ने काफी पहले घोषणा कर दी थी कि तेरहवॉ दलाईलामा, इस पंक्ति का आखिरी होगा। ऐसा लगता था कि भविष्यवाणी अपने आपको पूरा कर रही है। उनके राज्यारोहण के चार हफ्ते गुजर चुके थे, परंतु युवा राजा ने अपनी राज्य की बागडोर नहीं संभाली थी। शत्रु, देश में था और शासक का पलायन, महान दुर्भाग्यों की तरफ, एकमात्र पहला चरण था।

जैसे ही वह मेरे साथ चले, मैंने अपना टोप उतार लिया, और उन्होंने अपने हाथ को हिला कर मेरा मित्रवत् अभिनंदन किया। युवा दैवीय शासक का अभिनंदन करने के लिए, दर्रे के शिखर पर, सुगंधित अग्नियॉ जल रहीं थीं परंतु अमित्रवत् गूंजते हुए विस्फोट, प्रार्थनाध्वजों को उत्तेजित कर रहे थे। बिना देरी के, काफिला अपने अगले रुकने वाले स्थान तक चलता गया, जहॉ सब कुछ तैयार था और गर्म खाना यात्रियों का इंतजार कर रहा था। दलाईलामा ने पड़ोस के एक मठ में रात गुजारी, और सोने के लिये जाने से पहले मैंने, धूल चढ़ी प्रतिमाओं के साथ, एक अमित्रवत् अतिथिकक्ष में बैठे हुए, उनके बारे में सोचा। उन्हें अपने आपको गर्म करने के लिए कोई सिगड़ी नहीं मिलेगी, और कागज से ढ़के हुए खिड़कियों के ढ़ॉचे, तूफानों और ठंड के विरुद्ध, उनके लिए, केवल मात्र बचाव होगें, जबकि मक्खन के थोड़े से दीपक, आसपड़ोस में देखने के लिए पर्याप्त, रोशनी दे रहे होंगे।

युवा शासक, जो अपने छोटे से जीवन में, पोटाला और नगीना उद्यान के सिवाय, किसी घर को नहीं जान पाया था परंतु उसे, देश जिस पर वह शासन करता था, के बारे में कुछ सीखने के लिए, दुर्भाग्य के द्वारा मजबूर किया गया था। जिस कठोर आवश्यकता में वह आराम और समर्थन से उठा! परंतु, बेचारा लड़का! और उसे अपने आपको, अपनी पूरी शक्ति का उपयोग करके, अनगिनत भीड़, जो उससे सुख और आत्मविश्वास पाने के लिए आई थी, को आशीर्वाद देते हुए, अपनी सभी परेशानियों से ऊपर, ऊॅचा उठाना था।

एक ह्दयाघात से गम्भीर रूप से बीमार, उनका भाई लोबसांग, एक डोलची में काफिले के साथ यात्रा कर रहा था। मैं ये सुन कर हैरान हुआ कि डॉक्टरों ने उसके लिये, वही बेकार सा तरीका उपयोग किया, जिसे वह बीमार घोड़े के साथ करते थे। उस दिन काफिले को जाना था, वह बेहोशी की चाल में घंटों फॅसा रहा। इसलिए दलाईलामा का चिकित्सक, उसके मांस पर एक लोहा दागते हुए, उसे जीवन में वापस लाया। बाद में, उसने मुझे इस स्मरणीय यात्रा के सभी विवरणों को बताया।

दलाईलामा का पलायन, अत्यधिक गुप्त रखा गया था। अधिकारी जनता को परेशान नहीं करना चाहते थे और डरते थे कि कहीं ऐसा न हो कि महान मठों के भिक्षु, उनको अपने संकल्प से रोकने के लिये, कठोर कदम उठाऐं। तदनुसार, केवल उन उच्च अधिकारियों को, जो उनके साथ जाने के लिए चुने गये थे, देर शाम को सूचना दी गई कि काफिला, अगले दिन दो बजे जल्दी सुबह चलना प्रारम्भ करेगा। उन सभी ने, अंतिम बार, पोटाला में

मक्खन वाली चाय पी, और तब उनके कप दुबारा भरे गये और उनके जल्दी से वापस लौटने की प्रत्याशा में वैसे के वैसे ही रखे छोड़ दिये गये। किसी भी कमरे में, जिसमें जाने वाला राजा रहा था, अगले दिन झाड़ू नहीं लगाई गई, क्योंकि वह दुर्भाग्य ला सकता था।

भगोड़ों की टुकड़ी, खामोशी से रात में, पहले नोरबूलिंगा की तरफ, जहॉ युवा शासक, प्रार्थना करने के लिए रुका था, चली। काफिला एक दिन के लिये भी सड़क पर नहीं रह सका था कि इससे पहले उनके भागने की खबरें दांये बांये फैल चुकी थीं। हजारों की संख्या में, जांग (Jang) के लामामठ के भिक्षु, दलाईलामा से मिलने के लिए भीड़ बनाकर इकट्ठे हो गये। उन्होंने अपने आपको घोड़ों की टापों के नीचे झौंक दिया और चीखते पुकारते, उनसे छोड़े नहीं जाने की भीख मांगी, कि यदि वह चले गये तो वे चीनियों की कृपा के ऊपर, बिना नेता के रह जायेंगे। अधिकारियों को डर था कि भिक्षु, दलाईलामा को आगे जाने से रोकने का प्रयास करेंगे, परंतु इस क्रांतिकारी क्षण में, उन्होंने अपने व्यक्तित्व की शक्ति का प्रदर्शन किया और भिक्षुओं को समझाया कि यदि वह शत्रुओं के हाथ में नहीं पड़े, तो वह अपने देश के लिए और अधिक कर पायेंगे और जैसे ही उन्होंने एक उचित संधि को उनके साथ पूरा किया, वह शीघ्र ही लौटेंगे। भिक्षुओं ने, प्रेम और बफादारी के प्रदर्शन के बाद, काफिलों के आगे बढ़ने के लिए रास्ता साफ कर दिया।

दलाईलामा के पहुॅचने की खबर, शीघ्र ही शिंगस्ते पहुॅची। दुष्टात्माओं को दूर रखने के लिए, गलियों के बगल से, छोटे सफेद पत्थर रखे गये। भिक्षु और भिक्षुणियॉ, अपने मठों से निकल कर झुण्ड बना कर जमा हो गए, और पूरी आबादी, अपने राजा के आने की प्रतीक्षा करते हुए, घंटों तक खड़ी रही। अधिक दूरी पर पड़ाव न डाले हुए, भारतीय सेनायें, सवार हो कर, दलाईलामा के सम्मान में, काफिले की ओर आगे बढ़ीं। सभी बड़े स्थानों पर पहुॅचते ही काफिले ने जलूस का रूप ले लिया। दलाईलामा घोड़े से उतरे और अपनी पालकी में बैठे। वे, धूल भरी आंधियों से बचने के लिए, जो असुरक्षित पठार के ऊपर पूरे दिन चलती थीं, रास्ते में, नियमित रूप से, आधी रात के बाद, जल्दी यात्रा प्रारम्भ करते थे। रातें बर्फीली ठण्डी थीं। दलाईलामा ने अपने आपको, फर का अस्तर लगे अपने रेशमी आवरण में चुस्ती से लपेट लिया और भालू की खाल की एक बड़ी टोपी, जो उनके कानों को ढ़कती थी, सिर पर पहनी। भोर से पहले, वहॉ अक्सर, कुहासे की पचास डिग्री हो जाती थी, यद्यपि हवा शांत रहती, घुड़ सबारी करना एक तपस्या थी।

दलाईलामा, इससे पहले कि उनके मठाध्यक्ष उनकी मदद कर सकें, अक्सर अपने घोड़े से कूद जाते और अपने लम्बे कदमों से दूसरों से काफी आगे जाने की जल्दी करते थे। स्वाभाविक रूप से, सभी दूसरे सबारों को भी घोड़े से उतरना पड़ता और अनेक मोटे भद्रपुरुष, जो अपनी जिंदगी में कभी चले नहीं थे, मीलों पीछे छूट जाते। दो दिनों तक, हम एक बर्फानी तूफान में हो कर, कांपते हुए कटु शीत में चले, और जब हमने हिमालय के दर्रों को अपने पीछे छोड़ा और अच्छी तरह पेड़ों वाले देश में, गर्मतर इलाकों में उतरे, हमने बहुत बड़ी राहत महसूस की।

राजधानी को छोड़ने के सोलह दिन बाद, काफिला अपने अस्थाई ठिकाने, चुंबी (Chumbi) के जिला राज्यपाल के मुख्यालय पर पहुॅचा। पहुॅचने पर, दलाईलामा को अपनी पीली कुर्सी में घनी भीड़ के बीच हो कर, राज्यपाल के सामान्य से घर में ले जाया गया, जिसने अचानक ही, ''स्वर्गीय महल, ब्रह्माण्ड का प्रकाश और शान्ति (Heavenly Palace, the Light and peace of the Universe)'' का ओहदा पा लिया था। चूॅकि हर स्थान, जिसमें दलाईलामा ने एक रात गुजारी हो, स्वतः ही एक मठ को समर्पित हो जाता था, कोई भी मृत्य मनुष्य, कभी भी, फिर इसमें नहीं रह सकेगा। अब से आगे, वहॉ स्वामिभक्त लोग, उनके लिए चढ़ौतियॉ लायेंगे और भगवान से शुभाशीर्वाद की प्रार्थना करेंगे।

अधिकारी, समीपवर्ती गॉव के किसानों के घरों में टिके हुए थे और उन्हें स्वयं को, अपने सामान्य सुखों के बिना काम चलाने के अनुरूप बनाना था। अधिकांश सैनिकों को, आंतरिक स्थानों में वापस भेज दिया गया था क्योंकि चुम्बी में उनके लिए रहने की व्यवस्था नहीं थी। घाटी में आने वाले सभी रास्ते, सैनिक नाकों के द्वारा सुरक्षित किये गये थे, और केवल एक विशेष पास धारण करने वाले लोग ही अंदर आ या जा सकते थे। वहॉ दलाईलामा के कमरे में, हर सरकारी कार्यालय का कम से कम एक प्रतिनिधि था और इस प्रकार एक प्रावधिक सरकार स्थापित की गई, जिसमें रोजमर्रा के कार्यालय के समय का पालन किया गया और उसमें नियमित बैठकें हुईं। ल्हासा और अस्थाई सरकार के बीच, सम्वाहकों की एक सेवा स्थापित की गई। दलाईलामा अपने साथ अपनी महान मुद्रा को लाये थे, जिसके द्वारा वे ल्हासा में अधिकारियों के द्वारा लिये गये निर्णयों को वैधता प्रदान करते थे। संदेशवाहक, उनमें से एक वाहक, नौ दिन में, (लगभग 500 मील पहाड़ी देश के ऊपर) दुहरी यात्रा करता

हुआ, ल्हासा और चुम्बी के बीच की दूरी को अविश्वसनीय गति से तय करता था। संदेशवाहक, जो ल्हासा और बाहरी विश्व के साथ एकमात्र सम्पर्क थे, चीन के आगे बढ़ने के नवीनतम समाचार लाते थे। बाद में, फॉक्स अपने उपकरणों के साथ पहुॅचा और उसने एक रेडियो स्टेशन स्थापित किया।

अधिकारियों की पत्नियॉ और बच्चे, जो उनके साथ थे, यात्रा करके सीधे ही भारत आ गये। चुम्बी में उनके रहने के लिए कोई जगह नहीं थी। उनमें से अनेक ने, इसे भारत और नेपाल के पवित्र बौद्ध स्थलों की तीर्थयात्रा करने के अवसर के रूप में लिया। लोबसांग सामटेन के अपवाद के साथ, दलाईलामा का परिवार भी, दक्षिण को चला गया था और अब कलिंगपोंग (Kalingpong) हिल स्टेशन पर, एक बंगले में रह रहा था। शरणार्थियों में से अनेक ने पहली बार, जब वे भारत में आये, रेल, हवाई जहाज, और मोटर कारें देखीं, परंतु इन चीजों को देखने की पहली उत्तेजना के बाद, उन्होंने अपने खुद के देश, जो यद्यपि सभ्यता के उपकरणों में पिछड़ा हुआ था, तथापि, उनके लिए अस्तित्व के मजबूत आधार का प्रतिनिधित्व करता था, में वापस जाने की इच्छा की।

इन दिनों की अवधि में, मैं एक अधिकारी मित्र के अतिथि के रूप में चुंम्बी में रहा। मेरा काम समाप्ति पर था, और मैं अक्सर ऊब महसूस करता था, परंतु मैं अपने दोस्तों को अलविदा कहने के लिए, स्वयं को तैयार नहीं कर सका। नाटक में, मैंने स्वयं को एक दर्शक, जिसने दुःखमय आक्षेप को पहले से देख लिया था और उसके अपरिहार्य अंत से दुःखी था, परंतु जिसे नाटक के अंतिम दृश्य तक बैठना था, के रूप में अनुभव किया। अपने भय को मारने के लिए, मैं रोजाना पहाड़ों में ऊपर जाया करता था, और मैंने अनेक रेखा मानचित्र (sketch maps) बनाये।

मेरे पास केवल एक ही आधिकारिक कर्तव्य था और वह था विदेशमंत्री को खबरों, जो मैं अपने छोटे रेडियो से पाता था, की आपूर्ति करते रहना। मैंने जाना कि चीनी और आगे नहीं बढ़े और अब वे, तिब्बती सरकार को पीकिंग बुलाने और एक राजीनामे पर पहुॅचने के लिए, उनसे मिलने आ रहे थे। दलाईलामा और उनकी सरकार इस निष्कर्ष पर पहुॅची कि आमंत्रण को स्वीकार करना अच्छी नीति होगी और समग्र शक्तियों के साथ, एक शिष्टमण्डल भेजा गया। चूॅकि सैनिक प्रतिरोध अर्थहीन होता, सरकार ने मोलभाव के रूप में, दलाईलामा के व्यक्तित्व का उपयोग किया चूॅकि वे जानते थे कि लालसेना उन्हें तिब्बत में वापस पाने के लिए बहुत अत्यधिक आतुर थी। शिष्टमण्डल के सदस्य जनता के सभी वर्गों में से लिये गये, जो शासक से, वापस आने की विनय करते हुए, चुम्बी में आते रहते थे। पूरा तिब्बत, अवसाद में डूब गया था और मैं अब पूरी तरह से अनुभव करने लगा था कि, जनता और उनके राजा, कितने समीप से एक दूसरे के साथ बॅधे थे। उनकी उपस्थिति के शुभाशीर्वाद के बिना, देश कभी उन्नति नहीं कर सकता था।

अंत में, दलाईलामा के पास, चीनियों की शर्तों को स्वीकार करने और ल्हासा लौटने के अलावा, कोई विकल्प नहीं बचा था। लम्बे वार्तालाप के बाद, पींकिंग में संधि की शर्तें तैयार की गईं। इसने देश के आंतरिक प्रशासन को दलाईलामा के लिए सुरक्षित रखा और इस बात की गारंटी दी कि, धर्म का सम्मान किया जायेगा और उपासना की स्वतंत्रता दी जायेगी। इन रियायतों के बदले में, चीनियों ने तिब्बत के विदेशी सम्बन्धों को हथियाने और देश की सुरक्षा की जिम्मेदारी उठाने पर जोर दिया। उनको, जितने चाहें उतने सैनिक, देश में भेजने का अधिकार मिलेगा, ताकि वे भविष्य में कोई भी अगली मांग कर सकें।

चूॅकि राज्यपाल का घर, ठण्डी और धूप रहित घाटी में स्थित था, दलाईलामा रोमांटिक लगने वाले डुंगखार (Dungkhar) मठ में चले गये। वहॉ, भिक्षुओं और अपने खुद के नौकरों के द्वारा सेवित, वह विश्व से कटे हुए रहे और मुझे उनके साथ एकांत में वार्तालाप का मुश्किल से ही कभी कोई मौका मिलता। लोबसांग सामटेन एक मठ में, एक कमरे मे रहते थे, जहॉ मैं उन्हें अक्सर मिलता था। हम अक्सर जल्दी–जल्दी, दलाईलामा के साथ लम्बी सैर पर निकलते थे। वह समीपवर्ती मठों के लिये पैदल यात्रा करते थे, और हर कोई उनकी चाल पर, जिससे वे चलते थे, आश्चर्य करता था। कोई उनके साथ चल नहीं सकता था। ये पहला मौका था कि उन्हें शारीरिक व्यायाम करने के अवसर मिले, और उन्होंने इसका पूरा उपयोग किया। इसके अतिरिक्त, उनकी ऊर्जा, उनके स्टाफ की सेहत के लिये अच्छी थी, जिनको, उनके साथ गति बनाये रखने का प्रशिक्षण दिया जाता था। भिक्षुओं ने नसबार (snuff) और सैनिकों ने तम्बाकू और शराब छोड़ दीं। सामान्य अवसाद के बावजूद, धार्मिक सहभोज नियमितरूप से आयोजित किये थे, परंतु सामिग्रियॉ, ल्हासा के उत्सवों के समारोहों के प्रदर्शन और ठाठबाठ को पुनस्थापित करने में पिछड़ रही थीं। एक भारतीय विद्वान की यात्रा के द्वारा, जो स्वर्ण के एक जलपात्र में, शासक के पास, बुद्ध के असली अवशेषों को लाया, एक सहमतिपूर्ण मध्यान्तर प्रदान किया गया। इस अवसर पर, मैंने

दलाईलामा का, अपना अंतिम और सर्वोत्तम फोटो लिया।

भद्रपुरुषों के जीवन स्तर घट गये, और नीचे चले गये, जब हम लम्बे समय तक चुंम्बी घाटी में रुके। चूँकि, थोड़े से अपवादों के साथ, सभी घोड़े वापस भेज दिये गये थे, लगभग हर व्यक्ति पैदल चलता था। ये सही है कि उनके पास अभी नौकर थे और उन्हें अपने लिए, कुछ भी करने की आवश्यकता नहीं थी परंतु उन्हें अपने सुखों, अपने वैभवशाली घरों, अपनी पार्टियों, और अपने मनोरंजनों के बिना जीना पड़ता था। वे एक छोटे तरीके से साजिश कर लेते थे और गप्प लगाने में और अफवाहें फैलाने में आराम महसूस करते थे। उन्होंने ये अनुभव करना प्रारम्भ कर दिया था कि सर्वोच्चता का वक्त अब समाप्ति पर है। वे अपने आप, अब और अधिक निर्णय नहीं ले सकते थे और उन्हें हर चीज को दलाईलामा को सन्दर्भित करना पड़ता था। इसके अतिरिक्त, वे निश्चित नहीं कर सकते थे कि जब वे लौटेंगे, चीनी लोग उन्हें अपनी सम्पत्ति वापस कर देंगे, यद्यपि, उन्होंने ऐसा करने का वायदा किया था। सामन्तशाही के ऊपर पर्दे पड़ चुके थे और वे उन्हें जानते थे।

मैं मार्च 1951 तक चुंम्बी घटी में रहा, और तब भारत जाने का निर्णय लिया। मैंने काफी पहले अनुभव कर लिया था कि मैं ल्हासा में वापस जाने के योग्य नहीं हो सकूँगा, परंतु मैं अभी भी तिब्बती सरकार का एक अधिकारी था और दूर जाने के लिए, अनुपस्थिति के लिए, मुझे पूछना पड़ता था, ये तुरंत ही प्रदान कर दी जाती थी। मंत्रिमंडल द्वारा मुझे दिया गया पासपोर्ट, छै महीने के लिए वैध था और उसमें भारतीय सरकार से, मेरी मदद करने के लिये कहने के लिए, एक प्रावधान था ताकि मैं तिब्बत को लौट सकूं, परंतु मैं जानता था कि मैं इसका उपयोग करने में कभी सफल नहीं होऊँगा। मैं सुनिश्चित था कि छै महीने में दलाईलामा वापस ल्हासा में होंगे, जहॉ उन्हें चेनरेजी के अवतार के रूप में मान्य कर लिया जायेगा परंतु कभी भी, उन्हें स्वतंत्र जनता के शासक के रूप में, और अधिक प्रतिष्ठा नहीं दी जायेगी।

मैं काफी लम्बे समय से, अपनी व्यक्तिगत समस्याओं के हल तलाश करने के लिए, अपने मस्तिष्क को सताता रहा था और सावधानीपूर्ण विचार के बाद, मैंने भारत जाना तय किया। मैं आउफस्नाइटर से, कुछ समय के लिए, पत्रव्यवहार करता रहा था और वास्तव में, ग्यांगत्से में उससे मिला था, जिसने मुझे आश्वस्त किया था कि जहॉ तक सम्भव हो सके, वह तिब्बत में रहना चाहता था और तब भारत जाना चाहता था। जब हम चले, हमें कोई ख्याल नहीं था कि, हम वर्षों तक एक दूसरे को नहीं देख सकेंगे। मैंने कलिंगपोंग जाने के लिए, उसका सामान अपने साथ लिया और उसे वहॉ जमा करा दिया। उसके बाद एक साल तक मैंने उसकी कोई खबर नहीं सुनी। ऐसा लगा मानो वह पूरी तरह गायब हो गया। सभी प्रकार की अफवाहें, आसपास फैलती रहीं और अनेक लोगों ने विश्वास किया कि वह मर चुका था। ये तब तक नहीं हुआ, जब तक कि मैं दुबारा यूरोप में नहीं गया और मैंने सुना किया वह, हमारे परी देश के क्यिरोंग गॉव में रुकने के लिए जा चुका है और उसने तब तक प्रतीक्षा की, जब तक कि चीनी लोग नहीं आ गये। वह वस्तुतः, अंतिम मिनट तक रुका और वह एक और भी बड़ी परेशानी के साथ बाहर आया, जहॉ से मैं छः साल पहले आ चुका था। मैं, मुझे ये बताते हुए कि वह जिंदा था, नेपाल से ड़ाक में डाले गये, उसके पत्र को पा कर बहुत खुश हुआ।

वह अभी भी, सुदूरपूर्व में, अपनी असंतुष्ट रहने वाली खोज की प्यास को संतुष्ट करने के प्रयास में, एक स्वेच्छिक बनवास में है। वहॉ, हिमालय और वर्जित भूमि के ऐसे पूर्ण ज्ञान, जैसा कि वह धारण करता है, के साथ, कुछ लोग जीवित हैं। क्या वह नहीं बतायेगा, जब वह, इन सब वर्षों के बाद, यूरोप को वापस लौटेगा ?

मैंने दुःखी मन से छोड़ दिया परंतु, और अधिक, नहीं रह सका। मैंने युवा शासक के भविष्य के सम्बन्ध में गहरी चिंता अनुभव की। मैं जानता था कि माओ–त्से–तुंग की छाया के द्वारा, पोटाला में जीवन अंधकारमय होगा। शान्तिपूर्ण प्रार्थनाध्वजों के बदले में, मैंने हथौड़े और हांसियों वाले लाल झण्डों, और उसके विश्व पर राज करने के हवा में उड़ते हुए दावे के सम्बन्ध में सोचा। इस आत्माहीन राज्य में, शायद, भव्यता का शाश्वत भगवान, चेनरेजी, ही जीवित बचेगा, चूँकि वह अनेक चीनी अतिक्रमणों के बाद भी बचा हुआ है। मैं केवल ये आशा कर सकता था कि इस पृथ्वी पर सर्वाधिक शान्तिपूर्ण राष्ट्र को, अत्यधिक और अधिक अत्यधिक अपमान तथा क्रान्तिकारियों के द्व ारा परिवर्तन नहीं झेलना पड़ेगा। मेरे तिब्बत में प्रवेश से लगा कर, आज के दिन तक लगभग सात साल हो गये हैं, जब मैंने स्वयं को, सीमान्त दर्रों, जो भारत की तरफ आते हैं, के स्तूपों और प्रार्थनाध्वजों पर देखते हुए पाया था। तब, उस देश में पहुँचते हुए, जिसके लिए मैं तरसता था, मैं भूखा और थका, परंतु आनन्द से भरा हुआ था। अब मेरे पास नौकर, घोड़े और अपने निकट भविष्य पर सवार कराने के लिए पर्याप्त बचत हैं। परंतु मैं गम्भीरतम

अवसाद का शिकार हो गया था और किसी प्रकार की खुजली भरी आशाओं को नहीं महसूस करता था, जो मुझ पर, एक नये देश के सीमान्त तक, अधिकार रखा करतीं थीं। मैंने शोकपूर्ण ढंग से, पलट कर तिब्बत को देखा। दूरी पर चढ़ता हुआ चोमोलहारी (Chomolhari) का दैत्याकार पिरामिड, मुझे विदाई का अभिनंदन करते हुए दिखाई दिया।

मेरे देखने के लिए, हिमालयी दैत्य के अंतिम भाग, किंचिनजंगा (Kinchinjunga) के अत्यधिक भार के वर्चस्व वाला सिक्किम, मेरे सामने था। मैंने अपने घोड़े की लगामें अपने हाथ में लीं और भारतीय पठार में, नीचे की तरफ, धीमे–धीमे पैदल चला।

थोड़े दिन बाद, मैं कलिंगपोंग में था और अनेक वर्षों बाद, एक बार फिर, यूरोपीय लोगों के बीच था। वे मुझे अनजान दिखाई दिये, और मैंने उनके साथ में अजीब महसूस किया। दुनियॉ की छत से समाचार पाने के भूखे, अनेक समाचारपत्रों के संवाददाता, मुझसे मिलने की जल्दी करने लगे। मुझे अपने आपको वातावरण के अनुकूल ढ़ालने में और सभ्यता की निजी सामग्रियों के लिये दौड़धूप करते हुए, लम्बा समय लगा। परंतु मुझे वे मित्र मिले, जिन्होंने सेतु के ऊपर मेरी सहायता की थी। मैं अभी भी, भारत, जहॉ मैंने, अपने आपको तिब्बत के भाग्य के सम्पर्क में अनुभव किया, छोड़ने के लिये, खुद का सामंजस्य नहीं बैठा पाता, और अपने यूरोप जाने के कार्यक्रमों को स्थगित करता रहता हूॅ।

उस साल की गर्मी में, दलाईलामा और तिब्बती परिवार भी, जो भारत को पलायन कर गये थे, अपने घरों को ल्हासा वापस लौटे। मुझे कलिंगपोंग से गुजरते हुए, रास्ते में, ल्हासा में अपना पदग्रहण करने के लिए जाते हुए, तिब्बत के चीनी गवर्नर–जनरल से मिलने का अनुभव हुआ। 1951 में, बसन्तान्त के बाद तक, पूरा तिब्बत चीनी सेनाओं के द्वारा घेर लिया गया था, और उस देश की खबरें अत्यल्प और अस्पष्ट थीं। जब मैं इन अंतिम पंक्तियों को लिख रहा हूॅ मेरी अनेक आशंकायें अनुभव में आ चुकी हैं।

देश, जो आक्रमणकारियों की सेना के साथ–साथ, अपने निवासियों को खिला नहीं सकता, में अकाल है। मैंने यूरोप के समाचारपत्रों में, पोटाला की तलहटी में चिपकाये हुए, माओ–त्से–तुंग के फोटो लगे हुए, असंख्य पोस्टरों के चित्रों को देखा है। सैनिक कारें पवित्र शहर में घूमती फिरती हैं। दलाईलामा के बफादार मंत्री, पहले से ही बर्खास्त कर दिये गये हैं, और पंचेनलामा ने, चीनी सैनिक संरक्षकों के साथ, ल्हासा में प्रवेश कर लिया है। सरकार के आधिकारिक प्रमुख के रूप में, दलाईलामा को स्वीकार करने में, चीनी सदैव ही चालाक रहे परंतु कब्जा जमाने वाली शक्ति की इच्छा, सर्वोच्च होती है। उन्होंने अपने आपको बड़े आराम के साथ तिब्बत में जमा लिया है और अपने शक्तिशाली संगठन के साथ, पहले से ही सैंकड़ों मील लम्बी सड़कें बना ली हैं, जो कभी पगडंडी रहित इस देश को, उनके अपने देश के साथ जोड़ती हैं।

चूॅकि मेरे अस्तित्व का एक भाग, अटूट रूप से, उस प्रिय देश के साथ सम्बद्ध है, मैं, जो कुछ तिब्बत में घटित हुआ, उसे गम्भीरतम रुचि के साथ में समझता हूॅ। मैं जहॉ कहीं भी रहूं, हमेशा तिब्बत के घर की याद करता रहूंगा। मैं अक्सर सोचता हूॅ कि मैं अभी भी, उन हंसों और सारसों की चीख पुकार और उनके पंखों के फड़फड़ाने को, जैसे वे स्पष्ट ठण्डी चांदनी में ल्हासा में उड़ते हैं, सुन सकता हूॅ। मेरी हार्दिक आकांक्षा ये है कि ये पुस्तक जनता में कुछ समझ पैदा कर सके, जिसकी शान्ति और स्वतंत्रता में रहने की इच्छा, इस उदासीन विश्व से इतनी कम सहानुभूति अर्जित कर सकी है।

जब उसने इस मूल विवरण को 1952 में समाप्त किया, हेनरिक हेरर (Heinrich Harrer) ने सोचा था कि कोई भी, तिब्बत की जनता के विरले गुणों के, उनके इस अनुभव को साझा करने के लिए कभी समर्थ नहीं हो सकेगा। 1959 से तथापि, उन्होंने पाया कि भारत, यूरोप और अमरीका में तिब्बतियों का प्रवास सिद्ध करता है कि उसकी प्रशंसा बढ़ी–चढ़ी नहीं थी। स्विजरलैण्ड के छोटे से गॉव के एक मेयर ने हेरर से कहा, ''काश मैं अपने सभी अतिथि कामगारों को तिब्बत के लोगों से बदल पाता।'' यद्यपि दुनियॉ की छत से आने वाले समाचारों ने उन्हें निरन्तर दुःखी किया, हेरर, इस तथ्य में कि दलाईलामा और उसके परिवार के साथ उसकी खुद की दोस्ती, वास्तव में, उनके पलायन के बाद ही गहरी हुई है, कड़वी मिठाई का सुख लेते रहे। वियना में हेरर द्वारा व्यवस्थित की गई, तिब्बती प्रदर्शनी के उद्घाटन के अवसर पर, दलाईलामा ने उन्हें, पेज नंबर 323 पर, एक पत्र भेजा था

तिब्बत का कार्यालय
जेनेवा (स्विटज़्रलैंड) 8–10 रियू डु पोर्ट टेलीफोन (022) 258952

मेरे मित्र हेनरिक हेरर को,

तिब्बत की प्रदर्शनी के उद्घाटन के अवसर पर, मैं अपने खुले दिल से आपकी हर सफलता की कामना करता हूँ। इस अवसर पर मैं अपने व्यक्तिगत प्रतिनिधि थुबतेन फाला (Thubten Phala), अपनी बहिन दिचेत्सुएन पेमा (Dschetsuen Pema), और अपने भाई लोबसांग सामटेन (Lobsang Samten) को यूरोप में, भेज रहा हूँ। आप सात वर्ष तक तिब्बत में रहे और उस समय आप हम में से एक हो गये। उस बजह से आपको हमारे देश की सबसे अधिक जानकारी है, इसलिए आप, तिब्बती कला और संस्कृति को, जितने सुंदर तरीके से सम्भव हो, आस्ट्रिया (Austria) की जनता के बीच लाने स्थिति में हैं।

मैं अपनी प्रार्थनाओं में, ये इच्छा कि प्रदर्शनी पूरी सफलता के साथ समाप्त हो, शामिल करता हूँ।

दलाई लामा
11वां महीना, 20वां दिन, काष्ठ–सर्पों के वर्ष का
(1 जनवरी, 1966)

उपसंहार : 1996

आधी शताब्दी से अधिक पहले, उस समय, जब ये एक सुखी और स्वतंत्र देश था, मुझे तिब्बत में रहने का विशेषाधिकार मिला। इसके परिचयों में से एक में, पवित्रतम दलाईलामा ने कहा था मैं ''हम में से एक हो चुका हूँ।'' उन्होंने जारी रखा : ''अब, जैसे–जैसे हम बूढ़े हो रहे हैं, हम उन खुशहाल दिनों को याद करते हैं, जो हमने खुशहाल देश में साथ–साथ गुजारे थे। पक्की दोस्ती का एक चिन्ह ये है कि वह बदलती नहीं है, चाहे जो हो। एक बार जब आप एक दूसरे को जान जाते हैं, आप अपनी मित्रता को बनाये रखते हैं और अपने शेष पूरे जीवन के लिए, एक दूसरे को मदद करते हैं। हेरर हमेशा, तिब्बत के ऐसे ही मित्र रहे हैं। हमारे हित में उनका सबसे अधिक महत्वपूर्ण योगदान, ये पुस्तक ''तिब्बत में सात वर्ष,'' थी, जिसने लाखों लोगों को मेरे देश के साथ परिचित कराया। आज, तिब्बत की जनता की स्वतंत्रता और अधिकारों के संघर्ष में, वह अभी भी सक्रिय हैं और हम इसके लिए उनके आभारी हैं।''

जब पीटर आउफस्नाइटर और मैं, बीस हजार फुट तक ऊँचाई पर, पहाड़ी दर्रों में होते हुए, लगभग दो वर्षों की पैदल यात्रा के बाद, ल्हासा पहुँचे, हम तुषार के मारे हुए और फफोले पड़े हुए थे, तथा हम भूखे और बीमार थे। ल्हासा को वर्जित शहर कहा जाता था, इसलिए ये आश्चर्यजनक नहीं होता यदि तिब्बती सरकार हमको सीमा पर वापस ला देती। तथापि, विपरीत हुआ, उन्होंने हमारे ऊपर दया की; उन्होंने हमें खाना, नये और गर्म कपड़े, घर, और काम दिया और हम दोस्त बन गये।

उस समय, इस पृथ्वी पर किसने सोचा होगा कि हमको पृथ्वी की छत के ऊपर, उस शांतिपूर्ण देश से भागना पड़ेगा? तथापि, चीनियों ने बर्फ की भूमि को अतिक्रमित किया और दलाईलामा को, एक लाख से अधिक लोगों के साथ, भारत और स्वतंत्र विश्व में दूसरी जगहों पर, शरण के लिए जाना पड़ा। तब से तिब्बत में जो हुआ है, विश्वास करने में अति कठिन है। बारह लाख से अधिक तिब्बती लोगों ने अपने जीवन खो दिये और लगभग छै हजार मठ, मंदिर, तीर्थस्थल, निन्यानवे प्रतिशत या तो लूटे गये या पूरी तरह नष्ट कर दिये गये।

इन दिनों में जब तिब्बत पीड़ित है और उसे सहायता की आवश्यकता है, मैं अपनी अधिकतम सीमा तक उसके लिए, दलाईलामा और उनके देश के शरणार्थियों के लिए, समर्थन पाने की प्रयत्न करता हूँ। मैंने पैसा जमा करने के लिए व्याख्यान दिये हैं और पुराने काले–सफेद चित्रों को प्रकाशित किया है, चूँकि लगभग सभी तिब्बती, भले ही वे तिब्बत में या शरणार्थी के रूप में कहीं दूसरी जगह हों, ने कभी नहीं देखा है कि उनका देश, एक समय में, कितना सुंदर और सुखद था। ये मुझे अत्यन्त गर्वशाली बनाता है कि ये पुस्तक तिब्बती शब्दों में भी वैसे ही छापी गई है। जो तथ्य, तिब्बत के शरणर्थियों के मामले में, अभी भी अधिक ध्यानाकर्षित करेगा, वह ये है कि ''तिब्बत में सात वर्ष'' एक फिल्म के रूप में फिल्मांकित की जायेगी। तिब्बत में अतिक्रमण, विनाश और नरसंहार के ऊपर जोर ड़ालने का निर्माणकर्ता का आशय, चीनियों के द्वारा, सभी पड़ोसी राष्ट्रों को, ''तिब्बत में सात वर्ष'' के फिल्मी अनुवाद के लिए, अपने देश में फिल्म बनाने की आज्ञा देने से मना करने का दवाब ड़ालने के रूप में परिणामित हुआ है।

डर, विश्व मानवाधिकार आयोग के समाधान की इस सम्भावना के साथ, आगे बढ़ता जाता है, जिसने जिनेवा में, अप्रेल, 1996 की अपनी पिछली बैठक में, चीन को छोड़ कर अन्य सभी राष्ट्रों की निंदा की। निर्माणकर्ता अब दूसरे देशों में बर्फ से ढ़के हुए पहाड़ों की फिल्म की शूटिंग करेंगे और एशिया में कुछ दोस्त इस विचार के हैं कि पहले की तुलना में, ये चलचित्र, और अधिक रुचि और ध्यान आकर्षित करेगा।

अपने स्वयं के लिए, मैं पाठकों को, ये सूचित करना चाहूँगा कि जैसे–जैसे हम बूढ़े होते हैं, अनेक दशकों के बाद और हमारे विश्व के दूसरे दूरस्थ क्षेत्रों में, कई अभियानों के उद्देश्य बदल जाते हैं।

तथापि, एशिया के साथ, और विशेष रूप से तिब्बत में, ये अलग है। सैकड़ों वर्षों से, इसने मिशनरियों, खोजियों, और व्यापारियों को मोहित किया है। अपने सभी रहस्यों के साथ, पूर्व का और वर्तमान समय तक भी, वर्जित शहर–शंगरिला (Shangrila) का–प्रलोभन, प्रबद्ध लोगों के साथसाथ साहसी अभियान करने वालों के विचारों को मंत्रमुग्ध और आकर्षित करता है।

दो युद्धों के बीच के समय में, ब्रिटेन के एक उपनगरीय अधिकारी ने कहा था कि हवाई जहाज के आविष्कार के बाद, विश्व में रहस्य नहीं बचे हैं। तथापि, उसने कहा, एक अंतिम रहस्य है। पृथ्वी की छत के ऊपर

एक बड़ा देश है, जहॉ अजीब–ओ–गरीब चीजें होती हैं। वहॉ भिक्षु हैं, जिनमें विचार को शरीर से अलग करने की सामर्थ्य है, ओझा और ज्योतिषी हैं, जो सरकारी निर्णयों को करते हैं, और है, एक देवीय राजा, जो ल्हासा जैसे वर्जित शहर में, एक गगनचुम्बी महल में रहता है।

तब से, जब मैं जवान था, मैं केवल भूगोल की पुस्तकें पढ़ता था, और मेरा चरित्र नायक था, स्वीडन का अन्वेषक स्वेन हेडिन (Sven Hedin), जिसने तिब्बत में अपने अभियानों के ऊपर, मोहित करने वाली किताबें लिखी हैं। जब भारत का मेरा युद्धबंदी शिविर, हिमालय श्रंखला की पहाड़ियों की तलहटी में विस्थापित किया गया, स्वभावतः, मेरी पलायन की इच्छा, तिब्बत के उत्तरी भाग में, जो मैंने सोचा था'' इस विश्व के बाहर'' होना चाहिए, केन्द्रित हुई।

एक चीज को स्पष्ट कर दें कि, ब्रिटेन ने हमारे साथ, ठीक जनेवा संधि के अनुसार व्यवहार किया। कांटेदार तारों के बीच में ठहरना, वास्तव में, एकदम आनन्दमय था। पुस्तकें और खेलकूद की गतिविधियॉ हमारे पास थीं, और हमें किसी चीज की कमी, दबाव, या भूख नहीं थी। भय या कुछ असहनीय चीज से, वहॉ से भागने का कोई कारण नहीं था। मैं भागना चाहता था, कुछ प्राप्त करने के लिए, हो सकता है उस वर्जित देश में पहुॅचने के लिए, जो विश्व के सर्वोच्च पहाड़ों के परे था ।

ये पुस्तक 1951 के बसन्त में समाप्त हुई, जब मैंने अपने नौजवान दोस्त, दलाईलामा और अपने गृहदेश तिब्बत, को अलविदा कहा। भागना, इस बार ये मेरी खुद की स्वतंत्र इच्छा नहीं थी, ये पूरी तरह विपरीत था। अंतिम चित्र, जो मैंने सिक्कम और भारत में सीमा को पार करते हुए पवित्रतम् का लिया, स्वतंत्र तिब्बत में लिया हुआ अंतिम चित्र था। उसके तुरंत बाद, रंगीन रूप में, ये लाइफ पत्रिका का पहला कवर चित्र बन गया और इसने इस समाचार को फैलाया कि तिब्बत पर चीनियों के द्वारा लूटपाट की गई है। दलाईलामा अपने मंत्रियों के साथ, इस विश्वास में ल्हासा लौटे कि चीनी लोग, अपने वचन पर, सत्रह बिन्दुओं वाले समझौते पर, टिकेंगे।

संक्षेप में, ये वह है जो हुआ : विजेताओं के साथ जीवन, बद से बदतर होता चला गया। मार्च 1959 में ल्हासा में बगावत की अवधि में, दलाईलामा रात को भाग गये और अंतिमरूप से, अनेक सप्ताहों के बाद, सुरक्षित रूप से भारत पहुॅचे। ये ठीक पन्द्रह साल बाद था, जब मैं भारत से तिब्बत को भागा था और दलाईलामा तिब्बत से भागे और भारत पहुॅचे। भारतीय सरकार ने, अत्यन्त उदारता पूर्वक, तिब्बती लोगों के लिए, शरण का विस्तार किया और दलाईलामा की सरकार का अनाधिकृत निष्कासन, भारतीय पर्वतीय स्थान, धर्मशाला में जा कर व्यवस्थित हुआ।

पवित्रतम् की महान माताजी वहॉ 1962 में गुजर गईं, और कुछ समय बाद, केवल पचास वर्ष आयु का उनका बड़ा भाई, लोबसांग सामटेन, जो ल्हासा में मेरा मित्र रहा था, नई दिल्ली में, संक्रमण के कारण मर गया। इन दो पारिवारिक सदस्यों को खो देने के बाद, पवित्रतम् के लिए एक अत्यन्त तगड़ा झटका था।

पिछले वर्षों में, विश्व भर में, दलाईलामा के लिए प्रशंसा और श्रद्धा बहुत तेजी से बढ़ी है। चीनियों के भय के लिए, मुख्यरूप से प्रयासों के कारण और दलाईलामा के करिश्मे के द्वारा, विश्व भर में, तिब्बत की स्वतंत्रता की लोकप्रिय मांग बढ़ती रही है। धीमे–धीमे, विश्व उस सीमा को, जिस तक तिब्बत की संस्कृति तहस नहस की गई है, अनुभव करने लगा है।

निस्संदेह दलाईलामा की सबसे बड़ी पहचान, 1989 में इस कारण हुई, जब उन्हें शांति का नोबल पुरुस्कार मिला।

अपने समय के वास्तविक महान आदमियों में से एक को, मित्र के रूप में, और उतने ही महान राष्ट्र, जिसने मुझे प्रवेश दिया जबकि मैं, बिना पैसे वाला एक भगोड़ा था, के साथ चिरस्थायी सम्पर्क के रूप में, पाने में, मेरे व्यक्तिगत गर्व और आभार की कल्पना करना मुश्किल नहीं है।

ये आश्चर्यजनक संयोग है कि हम दोनों की जन्मतिथि 6 जुलाई है और निश्चित रूप से, ये मेरे जन्मस्थान, हट्टेनवर्ग (Huttenburg), केरिंथिया (Carinthia) राज्य, ऑस्ट्रिया में, मेरे महान दिनों में से एक थी, कि पवित्रतम्, चौदहवें दलाईलामा, मुझे शुभकामनायें देने और एच. एच. संग्रहालय का उद्घाटन करने के लिए आये।

आज भी, तिब्बत में विनाश जारी है। ल्हासा का पवित्र शहर, एक चीनी नगर बन चुका है; पुराने प्रकार के केवल दो प्रतिशत तिब्बती घर बचे हैं। तथापि, अधिकार करने वाली सेना के सैनिकों को खुश करने के लिए, हजारों चीनी दुकानें और सैकड़ों वैश्यागृह, जुए के अड्डे और मनोरंजन के संस्थान स्थापित हुए थे, जो अब गायब

हो गए हैं। विनाश, दमन, नरसंहार, बंध्याकरण और राजनैतिक विचारधारा के दशक, तिब्बतियों की स्वतंत्रता की इच्छा, या गहरे में जड़ जमायी हुई, उनकी धार्मिक आस्थाओं को तोड़ नहीं सके।

दलाईलामा ने, 10 मार्च 1996 को, ल्हासा की रक्तक्रांति की सेंतीसवीं वर्षगॉठ के अवसर पर, नई दिल्ली में, कहा कि उन्हें खेद है कि तिब्बत में उत्पीड़न जारी है। मानवाधिकार आयोग ने जोर दे कर कहा है कि चीनी अधिकारकर्ता अधिकारियों के लिए, प्रताड़ना और बच्चों के प्रति क्रूरता, एक दैनिक कार्य है। तिब्बत के हित के लिए समर्थन बढ़ रहा है, और दलाईलामा और उनके लोग, कभी इस मुद्दे को नहीं छोड़ेंगे। मेरा विचार है कि वे सभी, जो तिब्बत और स्वतंत्रता को प्यार करते हैं, दलाईलामा, जब वे तिब्बती ज्ञानकेन्द्र, पोटाला के ऐतिहासिक भवनों को लौटेंगे, के साथ होंगे।

यद्यपि, तिब्बत की स्वतंत्रता के लिए, समर्थन के स्वर, सम्पूर्ण विश्व में गूंज रहे हैं, मानवाधिकारों की तुलना में, अधिकांश देशों में भौतिकवादी उद्देश्यों को प्राथमिकता दी जाती है।